ISBN 81-901291-0-4

माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं 5

माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं

ग्रन्थ 5

★

दुनिया के मजदूरो, एक हो!

माओ त्सेतुङ
की
संकलित रचनाएं

ग्रन्थ 5

प्रोग्रेसिव पब्लिकेशन्स
दिल्ली

Mao Tsetung kee Sankalit Rachanayen, Granth 5
(सेलेक्टेड वर्क्स ऑफ माओ त्सेतुङ, वाल्यूम 5 का अनुवाद)

पहला हिन्दी संस्करण : 22 अप्रैल 2001
(लेनिन के जन्म तिथि पर प्रकाशित)

प्रतियां : 1000

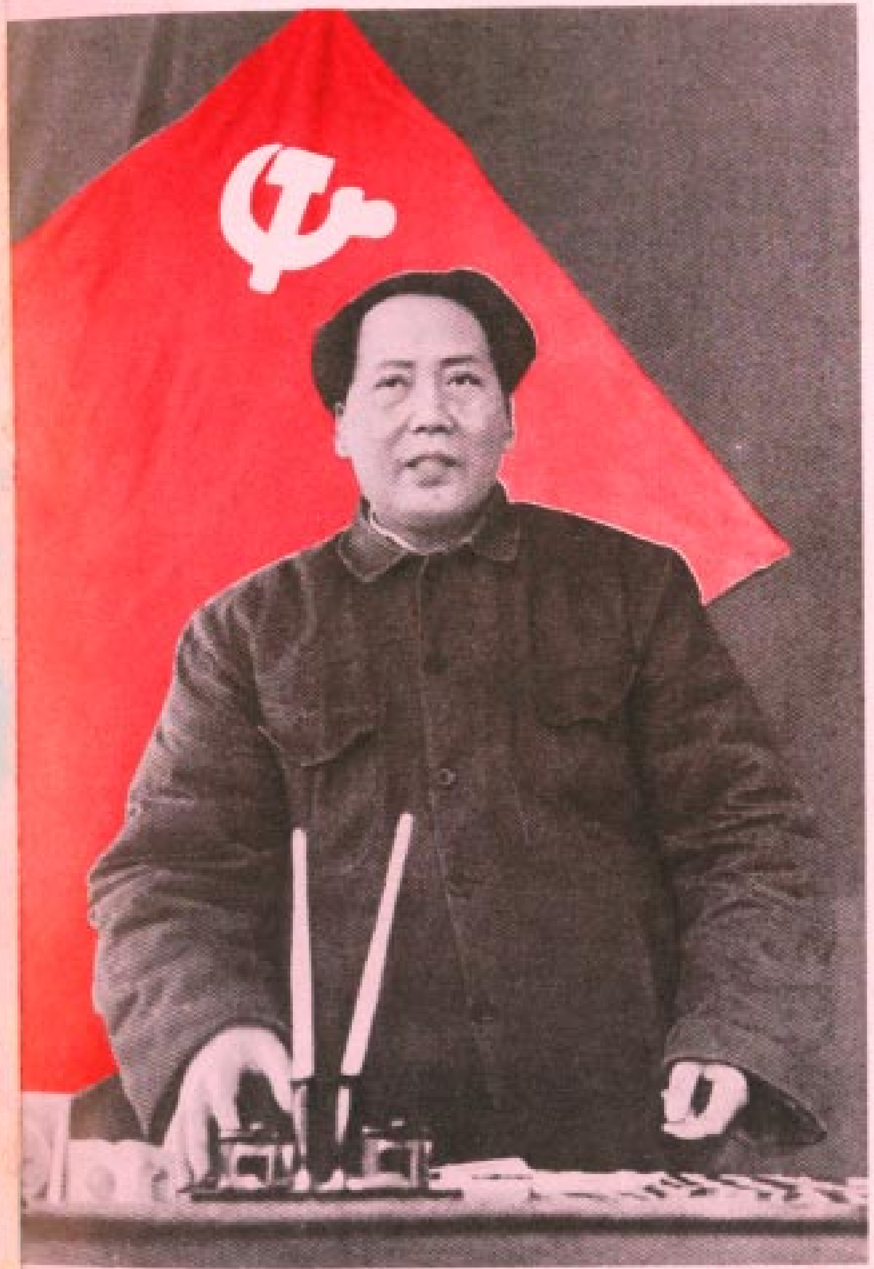
ISBN 81-901291-0-4

मूल्य : (पेपर बैक) 110 रुपए
(हार्ड बाउंड) 250 रुपए

प्रकाशक :
प्रोग्रेसिव पब्लिकेशन्स
यू-96, गुरुद्वारा लेन,
शकरपुर,
दिल्ली-110092

मुद्रक : आर. के. आफसेट, दिल्ली-110032

प्रिय पाठकों !
इस पुस्तक के अनुवाद, डिजाइन, छपाई और मूल्य के सन्दर्भ में अपनी आलोचना व सुझाव भेजकर हमारे प्रयास में सुधार करने में सहयोग करें। मुद्रित मूल्य के अतिरिक्त या स्टीकर लगे मूल्य पर भुगतान न करें। कृपया हमें ऐसी स्थिति की सूचना दें।
प्रोग्रेसिव पब्लिकेशन्स



प्रकाशक की ओर से

महान नेता और शिक्षक, कामरेड माओ त्सेतुङ की रचनावली मार्क्सवाद लेनिनवाद की शाश्वत स्मारक है। माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाओं के पहले चार खंडों में मार्च 1926 से 16 सितम्बर 1949 तक की महत्वपूर्ण रचनाएं शामिल हैं, जिन्हें उन्होंने चीन की नव जनवादी क्रान्ति के विभिन्न कालों में लिखा था। विदेशी भाषा प्रकाशन गृह, पेकिङ ने 1969-1976 के दौरान इन चार खंडों को प्रकाशित किया था।

सितम्बर 1976 में कामरेड माओ त्सेतुङ की मृत्यु के बाद अप्रैल 1977 में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने माओ त्सेतुङ की कुछ रचनाओं का पांचवां खण्ड अंग्रेजी में प्रकाशित किया। इस खंड के 'प्रकाशकीय नोट' में लिखा कि और भी रचनाएं आने वाले खंडों में प्रकाशित होंगी, लेकिन, चूंकि विश्वासघाती तङ श्याओ पिङ के नेतृत्व में पूंजीवादी गद्दियों ने सत्ता पर कब्जा कर लिया और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी संशोधनवादी बन गई, उन्होंने शेष खंडों का प्रकाशन बन्द कर दिया। पांचवें खंड का हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित नहीं किया। फिर भी, 1990-1994 तक माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाओं का खंड छः से खंड नौ तक भारत में 'क्रान्ति प्रकाशन' तथा 'श्रमिक प्रकाशन' ने अंग्रेजी में प्रकाशित किया, क्योंकि माओ त्सेतुङ की रचनाएं अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग तथा सभी देशों की क्रान्तिकारी जनता के लिए साझी अमूल्य निधि हैं।

यह खण्ड, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, पेकिङ द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित 'सेलेक्टिड वर्क्स ऑफ माओ त्सेतुङ' के पांचवें खण्ड का हिन्दी अनुवाद है। इस खण्ड में सितम्बर 1949 से 1957 तक लिखी गई महत्वपूर्ण रचनाएं शामिल हैं जो समाजवादी क्रान्ति व समाजवादी निर्माण का काल है। इस काल के दौरान सिद्धान्त के क्षेत्र में कामरेड माओ त्सेतुङ की महानतम देन हैं – भौतिकवादी द्वन्द्ववाद के मौलिक सिद्धान्त – विपरीत तत्वों की एकता द्वारा समाजवादी समाज में अन्तरविरोधों, वर्गों तथा वर्ग संघर्ष का विश्लेषण; समाजवादी समाज के विकास के नियम की खोज; और, सर्वहारा की तानाशाही के मातहत क्रान्ति जारी रखने के महान सिद्धान्त की रचना। इन रचनाओं में कामरेड माओ त्सेतुङ ने पहली बार इस वैज्ञानिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया कि उत्पादन के साधनों की मिल्कियत को बुनियादी तौर पर समाजवादी रूपान्तर पूरा हो जाने के लम्बे अर्से बाद भी सर्वहारा और पूंजीपति वर्गों के बीच का संघर्ष, समाजवादी रास्ते और पूंजीवादी रास्ते के बीच का संघर्ष मौजूद रहेगा।

समाजवादी क्रान्ति और समाजवादी निर्माण को आगे ले जाने, चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर संशोधनवादी विचारों का विरोध करने, स्तालिन के बाद के सोवियत संघ के दलत्यागी गिरोह और आधुनिक संशोधनवाद के विरुद्ध, और साम्राज्यवाद व सभी देशों के प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ संघर्षों की शृंखला में कामरेड माओ ने चीन की कम्युनिस्ट पार्टी व चीनी जनता

का नेतृत्व किया। इन तमाम संघर्षों से प्राप्त व्यावहारिक अनुभवों के आधार पर विकसित कामरेड माओ त्सेतुङ की विचारधारा ने दर्शनशास्त्र, राजनीतिक अर्थशास्त्र और वैज्ञानिक समाजवाद के क्षेत्र में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के खजाने को और भी समृद्ध किया है। यह महान, स्थायी, वैज्ञानिक व सार्थक माओ विचारधारा हमेशा जीवित रहेगी।

प्रोग्रेसिव पब्लिकेशन्स
22 अप्रैल 2001

विषय-सूची

समाजवादी क्रान्ति और समाजवादी निर्माण का काल (I)

समाजवादी क्रान्ति और समाजवादी निर्माण का काल (I)

चीनी जनता उठ खड़ी हुई है !

21 सितम्बर 1949

डेलीगेट महानुभावो,

राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन का, जिसकी प्रतीक्षा समूचे देश की जनता बड़ी उत्सुकता के साथ कर रही थी, अब उद्घाटन हो गया है।

हमारे इस सम्मेलन में कुल 600 से अधिक डेलीगेट भाग ले रहे हैं, जो चीन की सभी जनवादी पार्टियों व जन-संगठनों, जन-मुक्ति सेना, विभिन्न प्रदेशों व राष्ट्रीयताओं तथा प्रवासी चीनियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इससे पता चलता है कि हमारा यह सम्मेलन समूचे देश की जनता की महान एकता को मूर्त रूप देने वाला सम्मेलन है।

समूची जनता की यह महान एकता हम इसलिए कायम कर सके हैं क्योंकि हमने प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार को, जिसका पृष्ठपोषण अमरीकी साम्राज्यवाद करता था, परास्त कर दिया है। तीन साल से कुछ अधिक समय में, बहादुर चीनी जन मुक्ति सेना ने, एक ऐसी सेना ने जिसकी मिसाल दुनिया में बहुत कम देखने को मिलती है, अमरीका समर्थित प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार के बीसियों लाख सैनिकों के सभी आक्रमणों को शिकस्त दे दी और की रणांगन सेनाओं ने, जिनके सैनिकों की तादाद बीसियों लाख है, अपना प्रत्याक्रमण व आक्रमण शुरू कर दिया। अब जन-मुक्ति सेना युद्ध को थाइवान, क्वाङतुङ, क्वाङशी, क्वेइचओ, सछ्वान और सिनच्याङ के निकटवर्ती क्षेत्रों में फैला दिया है, तथा चीनी जनता की भारी बहुसंख्या को मुक्ति प्राप्त हो चुकी है। तीन साल से कुछ अधिक समय में समूचे देश की जनता ने एकजुट होकर जन मुक्ति सेना का समर्थन किया है, दुश्मन से लोहा लिया है तथा बुनियादी विजय प्राप्त कर ली है और इसी के आधार पर वर्तमान जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

हमारे सम्मेलन का नाम राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन इसलिए रखा गया है क्योंकि कोई तीन साल पहले हमने च्याङ काई-शेक की क्वोमिन्ताङ के साथ एक राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन का आयोजन किया था।[1] उस सम्मेलन के फल च्याङ काई-शेक की क्वोमिन्ताङ और उसके सह-अपराधियों द्वारा नष्ट कर दिए गए थे; फिर भी उस सम्मेलन ने जनता पर एक अमिट छाप छोड़ दी थी। उसने यह साबित कर दिया था कि च्याङ काई शेक की क्वोमिन्ताङ के साथ, जो साम्राज्यवाद की पिछलग्गू है, और उसकी सह-अपराधियों के साथ मिलकर जनता के हित में कोई भी काम पूरा नहीं किया जा सकता। यहां तक कि जिन

चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रथम पूर्ण अधिवेशन में उद्घाटन भाषण।

प्रस्तावों को उनके द्वारा बेमन से स्वीकार भी किया जाता था वे भी उपयोगी सिद्ध नहीं होते थे, क्योंकि ज्योंही अवसर परिपक्व होता, वे लोग तमाम प्रस्तावों को रद्दी की टोकरी में फेंक देते थे और बवंडर के साथ युद्ध छेड़कर जनता का विरोध करते थे। सम्मेलन की एकमात्र उपलब्धि यह थी कि उससे जनता को गहरी शिक्षा मिली और यह समझ में आ गया कि च्याङ काई-शेक की क्वोमिन्ताङ के साथ, जो साम्राज्यवाद की पिछलग्गू है, और उसके सह-अपराधियों के साथ समझौता-वार्ता करने की कोई गुंजाइश नहीं है – जनता या तो इन दुश्मनों का तख्ता उलट दे, अथवा स्वयं इन दुश्मनों द्वारा किए जाने वाले कत्लेआम और उत्पीड़न का शिकार बन जाए, दोनों में से सिर्फ एक ही रास्ता अपनाया जा सकता है, कोई अन्य रास्ता नहीं। तीन साल से कुछ अधिक समय में, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चीनी जनता बड़ी तेजी से जाग उठी है और उसने अपने आपको साम्राज्यवाद, सामन्तवाद, नौकरशाही-पूंजीवाद और उनके आम प्रतिनिधि प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार के खिलाफ एक राष्ट्रव्यापी संयुक्त मोर्चे में संगठित कर लिया है, जन मुक्ति युद्ध का समर्थन किया है, प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार को बुनियादी तौर पर शिकस्त दे दी है, चीन में साम्राज्यवाद के शासन का तख्ता उलट दिया है और राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन को बहाल कर दिया है।

वर्तमान चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन का आयोजन एक बिल्कुल नए आधार पर किया जा रहा है; यह समूचे देश की जनता का प्रतिनिधित्व करता है और इसे उसका विश्वास व समर्थन प्राप्त है। अतएव यह सम्मेलन ऐलान करता है कि वह राष्ट्रीय जन-प्रतिनिधि सभा के कर्तव्यों व प्राधिकारों का निष्पादन करेगा। अपनी कार्यसूची के अनुसार, वर्तमान सम्मेलन चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन का संगठन सम्बन्धी कानून और चीन लोक गणराज्य की केन्द्रीय जन सरकार का संगठन सम्बन्धी कानून बनाएगा तथा चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन का मुश्तरका प्रोग्राम निर्धारित करेगा; वह चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की राष्ट्रीय कमेटी और चीन लोक गणराज्य की केन्द्रीय जन सरकार परिषद को निर्वाचित करेगा, वह चीन लोक गणराज्य का राष्ट्रीय झण्डा और राष्ट्रीय चिह्न स्वीकार करेगा, वह चीन लोक गणराज्य की राजधानी का स्थान निर्धारित करेगा तथा दुनिया के अधिकतर देशों द्वारा अपनाई जाने वाली कालक्रम प्रणाली को चीन लोक गणराज्य में भी अपनाने का निर्णय करेगा।

डेलीगेट महानुभावो, हम सबको यह पक्का विश्वास है कि हमारे कार्य का मानव जाति के इतिहास में उल्लेख किया जाएगा, और उससे यह जाहिर हो जाएगा कि चीनी जनता, जो मानव जाति का एक चौथाई भाग है, अब उठ खड़ी हुई है। चीनी राष्ट्र हमेशा से एक महान, साहसी और परिश्रमी राष्ट्र रहा है; सिर्फ आधुनिक काल में ही वह पीछे रह गया है। और यह पूर्णतया विदेशी साम्राज्यवाद और घरेलू प्रतिक्रियावादी सरकारों के उत्पीड़न व शोषण का ही परिणाम है। एक शताब्दी से अधिक समय में हमारे पूर्वजों ने घरेलू व विदेशी उत्पीड़कों के खिलाफ अपने अविचल संघर्षों को कभी बन्द नहीं किया था, जिनमें चीनी क्रान्ति के महान अग्रगामी डा. सुन यात सेन के नेतृत्व में की गई 1911 की क्रान्ति भी शामिल है। हमारे पूर्वजों ने हमसे आग्रह किया है कि हम उनकी अधूरी आकांक्षा को पूरा करें। और हमने इसके अनुरूप काम किया है। हमने एकजुट होकर जन-मुक्ति युद्ध और महान जन क्रान्ति के जरिए घरेलू

व विदेशी उत्पीड़कों का तख्ता उलट दिया है, और आज हम चीन लोक गणराज्य की स्थापना की घोषणा कर रहे हैं। अब से हमारा राष्ट्र दुनिया के विभिन्न शान्तिप्रिय व स्वतंत्रता प्रेमी राष्ट्रों के महान परिवार का सदस्य बन जाएगा तथा अपनी सभ्यता व सुख-समृद्धि का संवर्धन करने और साथ ही दुनिया की शान्ति व स्वतंत्रता को प्रोत्साहन देने के लिए साहस के साथ और परिश्रमपूर्वक काम करता रहेगा। अब से हमारा राष्ट्र एक ऐसा राष्ट्र कभी नहीं रहेगा जिसका दूसरों द्वारा अपमान व तिरस्कार किया जा सके। हम उठ खड़े हुए हैं। हमारी क्रान्ति को सभी देशों की जनता की सहानुभूति व सराहना प्राप्त हुई है। हमारे दोस्त दुनिया के कोने-कोने में मौजूद हैं।

हमारा क्रान्तिकारी कार्य अभी पूरा नहीं हुआ, जन-मुक्ति युद्ध और जनता का क्रान्तिकारी आन्दोलन आगे बढ़ते जा रहे हैं और हमें अपना प्रयास जारी रखना चाहिए। यह निश्चित है कि साम्राज्यवादी और घरेलू प्रतिक्रियावादी अपनी पराजय को चुपचाप स्वीकार नहीं करेंगे तथा वे मरते दम तक हाथ-पांव मारते रहेंगे। देशभर में शान्ति व व्यवस्था कायम हो जाने के बाद भी, वे विभिन्न तरीकों से तोड़फोड़ करते रहेंगे तथा गड़बड़ी पैदा करते रहेंगे, और दिन-प्रतिदिन व क्षण-प्रतिक्षण फिर से सत्ता हथियाने की कोशिश करते रहेंगे। ऐसा होना अनिवार्य है तथा इसमें सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं है, और हमें किन्हीं भी परिस्थितियों में अपनी सतर्कता में कमी नहीं आने देनी चाहिए।

हमारी राज्य व्यवस्था, यानी जनता का जनवादी अधिनायकत्व, जनता की क्रान्ति की विजय के फलों की हिफाजत करने तथा घरेलू व विदेशी दुश्मनों द्वारा पुनर्स्थापना के हेतु की जानेवाली साजिशों को विफल बनाने के लिए एक शक्तिशाली हथियार है, और यह जरूरी है कि हम इस हथियार को मजबूती से पकड़े रहें। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में यह जरूरी है कि हम सभी शान्तिप्रिय व स्वतंत्रताप्रेमी देशों और जनता के साथ, और सबसे पहले सोवियत संघ और नई लोकशाही वाले देशों के साथ एकता कायम करें, ताकि हम जनता की क्रान्ति की विजय के फलों की हिफाजत करने तथा घरेलू व विदेशी दुश्मनों द्वारा पुनर्स्थापना के हेतु की जाने वाली साजिशों को विफल बनाने के संघर्ष में अलगाव की स्थिति में न पड़ जाएं। जब तक हम जनता के जनवादी अधिनायकत्व पर डटे रहेंगे और अपने विदेशी दोस्तों के साथ एकता बनाए रखेंगे, तब तक हमेशा विजयी होते रहेंगे।

जनता का जनवादी अधिनायकत्व और विदेशी दोस्तों के साथ हमारी एकता हमें इस काबिल बना देंगे कि हम अपने निर्माण कार्य को शीघ्रता से सम्पन्न कर सकें। हमारे सामने एक राष्ट्रव्यापी आर्थिक निर्माण का कार्य मौजूद है। हमारी परिस्थितियां अत्यन्त अनुकूल हैं : 47 करोड़ 50 लाख की आबादी और 96 लाख वर्ग-किलोमीटर की विशाल प्रादेशिक भूमि। हमारे सामने कठिनाइयां अवश्य हैं, और वे बहुत ज्यादा भी हैं। किन्तु हमें पक्का विश्वास है कि समूचे देश की जनता के वीरतापूर्ण संघर्ष के जरिए इन सभी कठिनाइयों को दूर कर दिया जाएगा। चीनी जनता को कठिनाइयों पर काबू पाने का अत्यन्त समृद्ध अनुभव प्राप्त है। अगर हमारे पूर्वज, और खुद हम भी, एक लम्बे अरसे तक अत्यन्त कठिन परिस्थितियों से गुजर सके हैं और शक्तिशाली घरेलू व विदेशी प्रतिक्रियावादियों को शिकस्त दे सके हैं, तो भला विजय के बाद आज हम एक फलते-फूलते व खुशहाल राज्य का निर्माण क्यों नहीं कर

सकते ? हम जब तक सादा जीवन व कठोर परिश्रम की अपनी कार्यशैली पर कायम रहेंगे, जब तक एकताबद्ध रहेंगे तथा जब तक जनता के जनवादी अधिनायकतन्त्र पर डटे रहेंगे और अपने विदेशी दोस्तों के साथ एकता बनाए रखेंगे, तब तक हमें आर्थिक मोर्चे पर तेजी से विजय प्राप्त होती रहेगी।

आर्थिक निर्माण के उभार के साथ साथ अनिवार्य रूप से एक सांस्कृतिक निर्माण का उभार भी आएगा। वह जमाना अब लद चुका है जब चीनी जनता को असभ्य माना जाता था। दुनिया में हमारा अभ्युदय एक समुन्नत संस्कृति से लैस राष्ट्र के रूप में होगा।

हमारी राष्ट्रीय प्रतिरक्षा को सुदृढ़ बनाया जाएगा और साम्राज्यवादियों को हमारी भूमि पर फिर से आक्रमण करने की हरगिज इजाजत नहीं दी जाएगी। हमारी जनता की सशस्त्र सैन्य-शक्तियों को बहादुर व जांची-परखी जन-मुक्ति सेना को आधार मानकर अनुरक्षित व विकसित किया जाना चाहिए। हमारे पास न सिर्फ एक शक्तिशाली स्थलसेना होगी बल्कि एक शक्तिशाली वायुसेना और एक शक्तिशाली नौसेना भी होगी।

घरेलू व विदेशी प्रतिक्रियावादियों को हमारे सामने थरथर कांपने दो ! उन्हें कहने दो कि हम न तो इस काबिल हैं और न उस काबिल। हम चीन के लोग अपने अदम्य प्रयासों के जरिए मजबूती से कदम बढ़ाते हुए अपना लक्ष्य अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

जन-मुक्ति युद्ध और जन-क्रान्ति के दौरान शहीद हुए जन-वीर अमर रहें !

जन मुक्ति युद्ध और जन क्रान्ति की विजय का अभिनन्दन !

चीन लोक गणराज्य की स्थापना का अभिनन्दन !

चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की सफलता का अभिनन्दन !

नोट

[1] देखिए : 'आत्म-रक्षात्मक युद्ध के जरिए च्याङ काई-शेक के आक्रमण को चकनाचूर कर डालो', नोट 2, 'माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं, ग्रन्थ 4 ।

चीनी जनता की महान एकता जिन्दाबाद !

30 सितम्बर 1949

देशबन्धुओ,

चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रथम पूर्ण अधिवेशन ने अपने कार्यों को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर लिया है।

इस सम्मेलन में चीन की सभी जनवादी पार्टियों व जन-संगठनों, जन-मुक्ति सेना, देश के विभिन्न प्रदेशों व राष्ट्रीयताओं, प्रवासी चीनियों और अन्य देशभक्त जनवादी व्यक्तियों के प्रतिनिधि सम्मिलित थे; इसने समूचे देश की जनता की इच्छा का प्रतिनिधित्व किया है और उसकी अभूतपूर्व महान एकता का प्रदर्शन किया है।

समूची जनता की यह महान एकता केवल तभी कायम हुई है जब चीनी जनता और जन-मुक्ति सेना ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में, लम्बे समय तक वीरतापूर्वक संघर्ष करने के बाद, अमरीकी साम्राज्यवाद द्वारा समर्थित च्याङ काई-शेक की प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ सरकार को शिकस्त दे दी। एक शताब्दी से भी अधिक समय तक, चीनी जनता के अग्रगामियों ने, जिनमें 1911 की क्रान्ति के रहनुमा महान क्रान्तिकारी डा. सुन यात-सेन जैसे असाधारण व्यक्ति भी शामिल थे, साम्राज्यवादियों और प्रतिक्रियावादी चीनी शासकों के उत्पीड़न का तख्ता उलट देने के लिए किए गए अनवरत संघर्षों के दौरान व्यापक जन-समुदाय का नेतृत्व किया; उनके निर्भीकतापूर्ण और अविचल प्रयत्नों के जरिए अब आखिरकार यह उद्देश्य प्राप्त हो गया है। इस अधिवेशन का आयोजन हम एक ऐसे समय कर रहे हैं जबकि चीनी जनता ने अपने दुश्मनों को पराजित कर दिया है, अपने देश का रूप बदल डाला है और चीन लोक गणराज्य की स्थापना कर ली है। आज हम, 47 करोड़ 50 लाख चीन के लोग उठ खड़े हुए हैं और हमारे राष्ट्र का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है।

हमारी जनता के नेता अध्यक्ष माओ त्सेतुङ की रहनुमाई में, हमारे अधिवेशन ने एकदिल होकर काम करते हुए और नव-जनवाद के उसूल के मुताबिक, चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के संगठन सम्बन्धी कानून, चीन लोक गणराज्य की केन्द्रीय जन सरकार के संगठन सम्बन्धी कानून और चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के मुश्तरका प्रोग्राम को तैयार किया है; पेकिङ को चीन लोक गणराज्य की राजधानी बनाने का निर्णय किया है;

यह एक घोषणापत्र है, जिसका मसौदा तैयार करने का काम चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के प्रथम पूर्ण अधिवेशन द्वारा कामरेड माओ त्सेतुङ को सौंपा गया था। "हमारी जनता के नेता अध्यक्ष माओ त्सेतुङ की रहनुमाई में" वाला वाक्यांश घोषणा पत्र को स्वीकार करते समय डेलीगेटों के प्रस्ताव पर जोड़ दिया गया था।

लाल पृष्ठभूमि पर पांच सितारे वाले झण्डे को चीन लोक गणराज्य के राष्ट्रीय झण्डे के रूप में और 'स्वयंसेवकों का अभियान-गीत' को चीन लोक गणराज्य के वर्तमान राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकार किया है; ईसवी कालक्रम प्रणाली को चीन लोक गणराज्य में अपनाने का निश्चय किया है; चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की राष्ट्रीय कमेटी और चीन लोक गणराज्य की केन्द्रीय जन सरकार परिषद का चुनाव किया है। इस प्रकार चीन के इतिहास में एक नए युग का सूत्रपात हो गया है।

देशबन्धुओ, चीन लोक गणराज्य की स्थापना की घोषणा की जा चुकी है, और अब चीनी जनता की अपनी केन्द्रीय सरकार कायम हो चुकी है। मुश्तरका प्रोग्राम के मुताबिक यह सरकार चीन की समूची भूमि पर जनता का जनवादी अधिनायकत्व लागू करेगी। वह क्रान्तिकारी युद्ध को अन्त तक चलाने, दुश्मन की बचीखुची टुकड़ियों का सफाया करने, देश की समूची प्रादेशिक भूमि को मुक्त कराने तथा चीन का एकीकरण करने के महान कार्य को पूरा करने के लिए जन मुक्ति सेना का मार्गदर्शन करेगी। वह पुराने चीन द्वारा छोड़ी गई गरीबी व अज्ञानता को दूर करने और कदम-ब-कदम जनता के भौतिक व सांस्कृतिक जीवन में सुधार करने के उद्देश्य से सभी कठिनाइयों को दूर करने तथा आर्थिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में बड़े पैमाने का निर्माण-कार्य करने में समूचे देश की जनता का नेतृत्व करेगी। वह जनता के हितों की हिफाजत करेगी और प्रतिक्रान्तिकारियों की सभी षड्यंत्रकारी कार्यवाहियों का दमन करेगी। वह जनता की स्थलसेना, नौसेना व वायुसेना को मजबूत बनाएगी, राष्ट्रीय प्रतिरक्षा को सुदृढ़ बनाएगी, हमारी प्रादेशिक अखण्डता और प्रभुसत्ता की रक्षा करेगी तथा किसी भी साम्राज्यवादी देश के आक्रमण का विरोध करेगी। वह सभी शान्तिप्रिय व स्वतंत्रताप्रेमी देशों, राष्ट्रों व जनगण के साथ, सबसे पहले सोवियत संघ और नई लोकशाही वाले देशों के साथ एकता व सहयोग कायम करेगी तथा युद्ध भड़काने की साम्राज्यवादी साजिशों का उनके साथ मिलकर विरोध करेगी और इस प्रकार स्थायी विश्वशान्ति के लिए संघर्ष करेगी।

देशबन्धुओ, हमें और ज्यादा अच्छी तरह संगठित हो जाना चाहिए। हमें चीनी जनता की विशाल बहुसंख्या को राजनीतिक, फौजी, आर्थिक, सांस्कृतिक व अन्य प्रकार के संगठनों में संगठित कर लेना चाहिए और असंगठन की स्थिति को, जो पुराने चीन की विशिष्टता रही है, समाप्त कर देना चाहिए, जिससे जन-समुदाय की महान सामूहिक शक्ति को जन सरकार व जन-मुक्ति सेना का समर्थन करने और एक स्वाधीन, जनवादी, शान्तिपूर्ण, एकीकृत, समृद्ध व शक्तिशाली नए चीन का निर्माण करने के कार्य में जुटाया जा सके।

जन मुक्ति युद्ध और जन-क्रान्ति के दौरान शहीद हुए जन-वीर अमर रहें !

चीनी जनता की महान एकता जिन्दाबाद !

चीन लोक गणराज्य जिन्दाबाद !

केन्द्रीय जन सरकार जिन्दाबाद !

जनवीर अमर रहें

30 सितम्बर 1949

पिछले तीन वर्षों में जन-मुक्ति युद्ध और जन-क्रान्ति के दौरान शहीद हुए जनवीर अमर रहें !

पिछले तीस वर्षों में जन-मुक्ति युद्ध और जन-क्रान्ति के दौरान शहीद हुए जनवीर अमर रहें !

घरेलू व विदेशी दुश्मनों के खिलाफ तथा राष्ट्रीय स्वाधीनता और जनता की स्वतंत्रता व उसके कल्याण के लिए 1840 से अब तक चलाए गए अनेक संघर्षों के दौरान शहीद हुए जनवीर अमर रहें !

जनवीर स्मारक पर अंकित शिलालेख, जिसका मसौदा कामरेड माओ त्सेतुङ ने तैयार किया था।

सादा जीवन व कठोर परिश्रम की कार्यशैली पर हमेशा के लिए कायम रहो

26 अक्तूबर 1949

येनान के कामरेडो और शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के देशबन्धुओ :

आपका अभिनन्दन-सन्देश पाकर मुझे बड़ी खुशी हुई और मैं आपका बहुत आभारी हूं। येनान और शेनशी कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र 1936 से 1948 तक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की सीट और चीनी जनता के मुक्ति-संघर्ष का आम पृष्ठभाग रह चुके हैं। येनान और शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र की जनता ने समूचे राष्ट्र के लिए महान योगदान किया है। मैं कामना करता हूं कि आप लोग अपनी एकता कायम रखें, युद्ध के घाव शीघ्रता से भर दें और अपने आर्थिक व सांस्कृतिक निर्माण में प्रगति करें। और मुझे उम्मीद है कि येनान और शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के कर्मचारियों द्वारा पिछली एक दशाब्दी से भी अधिक समय से अपनाई गई सादा जीवन व कठोर परिश्रम की कार्यशैली पर समूचे देश के क्रान्तिकारी कर्मचारी हमेशा के लिए कायम रहेंगे।

माओ त्सेतुङ

26 अक्तूबर 1949

धनी किसानों से निपटने की कार्यनीति के बारे में राय लेने के लिए अनुरोध

12 मार्च 1950

प्रान्तीय नेतृत्वकारी कामरेडों को वर्तमान मीटिंग में आप लोग कृपया धनी किसानों से निपटने की कार्यनीति के बारे में लोगों की राय एकत्रित करें और तार के जरिए हमें भेज दें। जिस कार्यनीति की यहां चर्चा की जा रही है, वह यह है कि योजना के अनुसार इस साल जाड़ों में दक्षिणी प्रान्तों और उत्तर पश्चिम के कुछ इलाकों में होने वाले भूमि-सुधार आन्दोलन में न सिर्फ पूंजीवादी धनी किसानों को बल्कि अर्ध-सामन्ती धनी किसानों को भी अछूता नहीं रहने दिया जाएगा तथा अर्ध सामन्ती धनी किसानों की समस्या के समाधान को कुछ वर्षों के लिए टाल दिया जाएगा। कृपया इस बात पर विचार करें कि क्या ऐसा करना अधिक लाभदायक होगा या नहीं। ऐसा करने के कारण ये हैं : पहले, भूमि-सुधार आन्दोलन अभूतपूर्व बड़े पैमाने पर चलाया जाएगा और उसमें अति-वामपंथी रुझान आसानी से पैदा हो जाएंगे। अगर हम सिर्फ जमींदारों को ही छूते हैं और धनी किसानों को अछूता छोड़ देते हैं, तो हम जमींदारों को अलगाव की स्थिति में डालने, मध्यम किसानों की हिफाजत करने तथा अन्धाधुन्ध मारपीट व हत्या से बचने में, जिनसे बचना अन्यथा बहुत मुश्किल होगा, अधिक कारगर साबित होंगे। दूसरे, उत्तर में भूमि-सुधार युद्धकाल में किया गया था, और युद्ध का वातावरण भूमि-सुधार के वातावरण पर हावी था, मगर आज जबकि लड़ाई आम तौर पर समाप्त हो चुकी है, भूमि सुधार विशेष रूप से उभर कर सामने आ जाएगा तथा समाज को विशेष रूप से भारी धक्का लगेगा और जमींदारों की चीख-पुकार विशेष रूप से तेज हो जाएगी। अगर हम अर्ध सामन्ती धनी किसानों को कुछ समय के लिए अछूता छोड़ देंगे और उनसे कुछ वर्षों के बाद ही निपटेंगे, तो हम और ज्यादा मजबूत आधार पर खड़े हो जाएंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि राजनीतिक तौर पर हमारे हाथ में और अधिक पहल आ जाएगी। तीसरे, हमने राजनीतिक, आर्थिक और संगठनात्मक दृष्टि से राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के साथ एक संयुक्त मोर्चा कायम किया हुआ है तथा चूंकि राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग का भूमि समस्या से घनिष्ट सम्बन्ध है, इसलिए यह बेहतर मालूम होता है कि राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग को राहत की सांस लेने देने के उद्देश्य से अर्ध-सामन्ती धनी किसानों को कुछ समय के लिए अछूता छोड़ दिया जाय।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के मध्य दक्षिणी ब्यूरो के नाम और साथ ही पूर्वी चीन ब्यूरो, दक्षिणी चीन उप ब्यूरो, दक्षिण पश्चिमी ब्यूरो और उत्तर पश्चिमी ब्यूरो के नाम जारी किया गया सरकुलर।

हमारे देश में वर्तमान परिस्थिति इस प्रकार है : चीन लोक गणराज्य की केन्द्रीय जन सरकार की और सभी स्तरों पर स्थानीय जन सरकारों की स्थापना की जा चुकी है। सोवियत संघ, जनता की लोकशाही वाले देशों और कुछ पूंजीवादी देशों ने एक के बाद एक हमारे देश के साथ राजनयिक सम्बन्ध कायम कर लिये हैं। मुख्य भूमि पर युद्ध बुनियादी तौर पर समाप्त हो चुका है, और सिर्फ थाइवान व तिब्बत को मुक्त कराना ही बाकी रह गया है, लेकिन यह काम पूरा करने के लिए अब भी गम्भीरता से संघर्ष करना होगा। मुख्य भूमि के कुछ इलाकों में क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने डकैतों की छापामार लड़ाई का सहारा लिया है और कुछ पिछड़े हुए तत्वों को जन सरकार के खिलाफ उकसाया है। उन्होंने जन सरकार का विरोध करने के लिए बहुत से खुफिया एजेंटों व जासूसों को जुटाया है, तथा कम्युनिस्ट पार्टी व जन सरकार की प्रतिष्ठा को धूल में मिलाने और विभिन्न राष्ट्रीयताओं, जनवादी वर्गों, जनवादी पार्टियों व जन-संगठनों की एकता व सहयोग को नष्ट करने की कुचेष्टा करने के लिए जनता में अफवाहें फैलाई हैं। ये खुफिया एजेंट व जासूस जनता के आर्थिक उद्यमों में तोड़फोड़ करने, पार्टी और सरकार के संगठनों के कर्मचारियों की गुप्त रूप से हत्या करने तथा साम्राज्यवादियों व क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों के लिए गोपनीय सूचना बटोरने में जुटे हुए हैं। इन तमाम प्रतिक्रान्तिकारी गतिविधियों का संचालन पर्दे के पीछे से साम्राज्यवादियों ने और विशेष रूप से अमरीकी साम्राज्यवादियों ने किया है। ये सब डाकू, खुफिया एजेंट और जासूस साम्राज्यवादियों के गुर्गे हैं। याङत्सी नदी पार करने की मुहिम से, जिसकी शुरुआत 1948 के जाड़ों में ल्याओशी-शनयाङ, ह्वाए-हाए और पेकिङ-थ्येनचिन नामक तीन बड़ी मुहिमों में निर्णायक विजय प्राप्त करने के पश्चात 21 अप्रैल 1949 को हुई थी, अब तक साढ़े तेरह महीनों में जन-मुक्ति सेना ने तिब्बत, थाइवान और कुछ अन्य समुद्री द्वीपों को छोड़कर, चीन की तमाम प्रादेशिक भूमि पर अधिकार कर लिया है तथा प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ के 18,30,000 सैनिकों और 9,80,000 छापामार डाकुओं का सफाया कर दिया है; इसी अवधि में जनता के सार्वजनिक सुरक्षा संगठनों ने प्रतिक्रियावादी खुफिया ग्रुपों वह एजेंटों का बड़ी तादाद में पता लगा लिया है। नए मुक्त क्षेत्रों में जन-मुक्ति सेना के सामने फिलहाल यह कार्य मौजूद है कि वह बचे-खुचे डाकुओं का सफाया करना जारी रखे और जनता के सार्वजनिक सुरक्षा संगठनों के सामने फिलहाल यह कार्य मौजूद है कि वे दुश्मन के खुफिया ग्रुपों पर लगातार प्रहार करते रहें। समूचे देश की जनता की भारी बहुसंख्या कम्युनिस्ट पार्टी, जन सरकार और जन-मुक्ति सेना का हार्दिक समर्थन करती है। हाल के कुछ महीनों में, जन सरकार ने राष्ट्रव्यापी पैमाने पर वित्तीय व आर्थिक काम पर एकीकृत नियंत्रण व एकीकृत नेतृत्व लागू किया है तथा बजट से सम्बन्धित आय-व्यय में सन्तुलन लाने, मुद्रास्फीति को रोकथाम करने और मूल्यों में स्थिरता लाने में सफलता प्राप्त की है। समूची जनता ने अनाज प्रदान करके, टैक्स अदा करके और राजकीय बौंड खरीदकर जन सरकार का समर्थन किया है। पिछले साल हमारे देश के व्यापक क्षेत्रों में प्राकृतिक विपत्तियों का सामना करना पड़ा था; करीब 12 करोड़ मू खेतों और 4 करोड़ लोगों को कम या ज्यादा मात्रा में सूखे या बाढ़ से पीड़ित होना पड़ा था। जन सरकार ने अकाल-पीड़ितों को राहत देने का कार्य बड़े पैमाने पर संगठित किया और बहुत से स्थानों में विशाल जल-संरक्षण परियोजनाओं का निर्माण किया। पिछले साल के मुकाबले इस साल

अच्छी फसल होने की उम्मीद है और मोटे तौर पर देखा जाय तो गरमियों की फसल अच्छी होने जा रही है। अगर शरद की फसल भी अच्छी हुई, तो यह अनुमान किया जा सकता है कि अगले साल की स्थिति इस साल की तुलना में बेहतर होगी। साम्राज्यवादियों और प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ के दीर्घकालीन शासन ने हमारी अर्थव्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर दिया है और बेरोजगारों का एक विशाल समुदाय पैदा कर दिया है। क्रान्ति की विजय के पश्चात, सम्पूर्ण पुराने आर्थिक ढांचे को कम या ज्यादा मात्रा में पुनर्गठित किया जा रहा है, तथा बेरोजगारों की संख्या और भी बढ़ गई है। यह एक गम्भीर मसला है और जन सरकार ने बेरोजगारों को राहत देने और काम दिलाने के उपाय अपनाने शुरू कर दिए हैं, ताकि इस मसले को कदम-ब-कदम हल किया जा सके। सांस्कृतिक व शैक्षणिक क्षेत्रों में जन सरकार ने बड़े पैमाने पर काम किया है, और बुद्धिजीवी व नौजवान विद्यार्थी बड़ी तादाद में नए ज्ञान का अध्ययन करने में जुट गए हैं या क्रान्तिकारी कार्य में हिस्सा लेने लगे हैं। उद्योग व वाणिज्य को युक्तियुक्त रूप से पुनर्व्यवस्थित करने तथा अर्थव्यवस्था में राजकीय क्षेत्र और निजी क्षेत्र के बीच के तथा श्रम और पूंजी के बीच के सम्बन्धों को सुधारने की दिशा में जन सरकार ने कुछ कदम उठाए हैं, और इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह लगातार भारी प्रयास कर रही है।

चीन एक विशाल देश है और उसकी परिस्थितियां अत्यन्त पेचीदा हैं; क्रान्ति ने पहले कुछ इलाकों में और फिर समूचे देश में विजय प्राप्त की है। तदनुरूप पुराने मुक्त क्षेत्रों में (जिनकी आबादी करीब 16 करोड़ है) भूमि-सुधार का कार्य पूरा किया जा चुका है, सार्वजनिक व्यवस्था कायम की जा चुकी है, आर्थिक निर्माण का काम सही लीक पर चलने लगा है, अधिकतर मेहनतकश लोगों की जीवन स्थिति में सुधार हुआ है, तथा बेरोजगार मजदूरों व बुद्धिजीवियों की समस्या हल की जा चुकी है (जैसे उत्तर-पूर्व में) या लगभग हल होने वाली है (जैसे उत्तर चीन और शानतुङ प्रान्त में)। खास तौर पर उत्तर-पूर्व में योजनाबद्ध आर्थिक निर्माण भी शुरू हो गया है। दूसरी तरफ, चूंकि नए मुक्त क्षेत्रों को (जिनकी आबादी करीब 31 करोड़ है) मुक्त हुए या तो सिर्फ कुछ ही महीने हुए हैं अथवा आधा वर्ष या एक वर्ष, इसलिए उनमें दूर-दूर तक के इलाकों में बिखरे हुए 4 लाख से अधिक डाकुओं का सफाया करने का काम अभी बाकी है, भूमि समस्या अभी हल नहीं हो पाई, उद्योग व वाणिज्य को अभी युक्तियुक्त रूप से पुनर्व्यवस्थित नहीं किया जा सका, बेरोजगारी अभी गम्भीर रूप से मौजूद है, सार्वजनिक व्यवस्था अभी कायम नहीं हो पाई। संक्षेप में, योजनाबद्ध आर्थिक निर्माण के लिए आवश्यक स्थितियों का अभी अभाव है। यही कारण है कि कुछ समय पहले मैंने कहा था कि हमने आर्थिक मोर्चे पर कुछ उपलब्धियां अवश्य प्राप्त की हैं, मिसाल के लिए आय-व्यय में लगभग सन्तुलन कायम हो गया है, मुद्रास्फीति रुक गई है और मूल्य स्थिर होते जा रहे हैं – इन सब बातों से यह पता चलता है कि वित्तीय व आर्थिक स्थिति बेहतरी की ओर मुड़ती जा रही है, लेकिन यह बुनियादी रूप से बेहतरी की ओर मुड़ना नहीं कहला सकता। वित्तीय व आर्थिक स्थिति को बुनियादी रूप से बेहतरी की ओर मोड़ने के लिए तीन शर्तें आवश्यक हैं, यानी (1) भूमि-सुधार का काम पूरा करना; (2) वर्तमान उद्योग व वाणिज्य को युक्तियुक्त रूप से पुनर्व्यवस्थित करना; और (3) सरकारी संस्थानों के व्यय में भारी कटौती करना। इन तीन शर्तों को पूरा करने के लिए काफी समय, अर्थात् तीन वर्ष या इससे कुछ

ज्यादा समय लगेगा। समूची पार्टी और समूचे राष्ट्र को चाहिए कि वे इन शर्तों को पूरा करने के लिए भरसक प्रयास करें। मुझे और आप सब लोगों को यह विश्वास है कि हम लगभग तीन वर्ष की अवधि में यह काम निश्चित रूप से पूरा कर लेंगे। तब हम यह देख सकेंगे कि हमारी समूची वित्तीय व आर्थिक स्थिति को बुनियादी रूप से बेहतरी की ओर मोड़ने में सफलता प्राप्त हो चुकी है।

इस उद्देश्य के लिए, यह जरूरी है कि समूची पार्टी और समूची जनता एकजुट हो जाय और निम्नलिखित कार्यों को पूरा करे :

(1) भूमि-सुधार का काम कदम-ब-कदम और व्यवस्थित रूप से किया जाना चाहिए।[3] इस समय मुख्य भूमि पर युद्ध आम तौर पर समाप्त हो चुका है और परिस्थिति 1946 से 1948 तक के काल (जबकि जन मुक्ति सेना क्वोमिनताङ प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ जीवन-मरण का संघर्ष कर रही थी और हार जीत का फैसला अभी नहीं हुआ था) की परिस्थिति से एकदम भिन्न है, तथा अब यह सम्भव है कि राज्य गरीब किसानों को ऋण देकर उनकी कठिनाइयां दूर करने में उनकी मदद करे और कम जमीन पाने के कारण उन्हें होने वाली क्षति की पूर्ति करे। तदनुसार, धनी किसानों के प्रति हमारी नीति में परिवर्तन करना जरूरी है, अर्थात् उनकी अतिरिक्त जमीन-जायदाद का अधिग्रहण करने की नीति को धनी-किसान अर्थव्यवस्था बनाए रखने की नीति में बदल देना चाहिए, ताकि ग्रामीण उत्पादन को यथासम्भव कम समय में बहाल किया जा सके तथा जमींदारों को अलगाव की स्थिति में डालने और मध्यम किसानों व जमीन के छोटे पट्टेदारों की रक्षा करने में मदद मिल सके।

(2) हमारे वित्तीय व आर्थिक कार्य में एकीकृत प्रबन्ध व एकीकृत नेतृत्व को सुदृढ़ बनाया जाना चाहिए, तथा बजट सम्बन्धी आय-व्यय में सन्तुलन और मूल्यों में स्थिरता को बनाए रखा जाना चाहिए। इस उसूल के मुताबिक करों को पुनर्व्यवस्थित किया जाना चाहिए और जनता के बोझ को उचित रूप से हल्का किया जाना चाहिए। सर्वांगीण नियोजन और चौतरफा बन्दोबस्त के उसूल की रोशनी में, आर्थिक काम में दिशाहीनता व अराजकता को कदम-ब-कदम दूर किया जाना चाहिए, वर्तमान उद्योग व वाणिज्य को युक्तियुक्त रूप से पुनर्व्यवस्थित किया जाना चाहिए, राजकीय क्षेत्र और निजी क्षेत्र के बीच के और श्रम और पूंजी के बीच के सम्बन्धों को कारगर रूप से और समुचित ढंग से सुधारा जाना चाहिए, इस प्रकार समाजवादी राजकीय क्षेत्र के नेतृत्व में अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्र काम के समुचित विभाजन के आधार पर एक दूसरे के साथ सन्तोषजनक रूप से सहयोग करेंगे तथा सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को बहाल करने और उसका विकास करने के काम को प्रोत्साहन देंगे। कुछ लोगों का यह विचार कि समय से पहले ही पूंजीवाद को खत्म करना और समाजवाद की स्थापना करना सम्भव है बिल्कुल गलत है; यह चीन की स्थितियों से मेल नहीं खाता।

(3) जन मुक्ति सेना को चाहिए कि वह अपनी मुख्य सैन्य-शक्तियों को सुरक्षित रखने के साथ-साथ 1950 में अपना आंशिक सैन्य विघटन कर ले, बशर्ते कि उसकी सैन्य-शक्तियां थाइवान व तिब्बत को मुक्त कराने, अपनी राष्ट्रीय प्रतिरक्षा को सुदृढ़ बनाने और प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने के लिए पर्याप्त हों। यह जरूरी है कि सैन्य-विघटन का यह काम बड़ी सावधानी से किया जाए, ताकि विघटित सैनिक अपने घर वापस जाकर निश्चिन्त होकर उत्पादन कार्य

में जुट जाएं। प्रशासनिक संगठनों को भी पुनर्गठित करने की आवश्यकता है, और वहां भी अतिरिक्त कर्मचारियों के मसले को समुचित ढंग से निपटाया जाना चाहिए, ताकि उन्हें काम करने अथवा अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हो सके।

(4) पुरानी विद्यालयी शिक्षा का और हमारे समाज में मौजूद पुराने सांस्कृतिक प्रतिष्ठानों का रूपान्तर करने का काम बड़ी सावधानी से कदम-ब-कदम किया जाना चाहिए, तथा सभी देशभक्त बुद्धिजीवियों को जनता की सेवा में लगाने के लिए अपने पक्ष में कर लेना चाहिए। इस प्रश्न के बारे में न तो रूपान्तर को टालना अथवा उसके प्रति अनिच्छा रखना उचित है और न उसे जल्दबाजी से या भौंड़े तरीके से लागू करने का प्रयत्न करना।

(5) यह जरूरी है कि बेरोजगार मजदूरों व बुद्धिजीवियों को राहत देने का काम बड़ी संजीदगी के साथ किया जाए, और बेरोजगारों को रोजगार प्राप्त करने में योजनाबद्ध रूप से मदद दी जाए। अकाल-पीड़ितों को राहत देने का काम भी लगातार बड़ी संजीदगी के साथ जारी रखा जाना चाहिए।

(6) हमें सभी दायरों के गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों के साथ सच्चे दिल से एकता कायम करनी चाहिए, उनके काम व अध्ययन से सम्बन्धित समस्या को हल करने में उनकी मदद करनी चाहिए, तथा संयुक्त मोर्चे के काम में उदारवाद रूढ़द्वारवाद अथवा जरूरत से ज्यादा रियायतें देने के रुझान को दूर कर देना चाहिए। हमें सभी दायरों की जनता के सम्मेलनों[4] को सफल बनाने का भरसक प्रयास करना चाहिए, जिससे एक मुश्तरका कार्य के लिए सभी दायरों की जनता को एकजुट किया जा सके। जन सरकारों के सभी महत्वपूर्ण मामलों को विचार-विमर्श करने और फैसला करने के लिए इन सम्मेलनों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इन सम्मेलनों के सभी प्रतिनिधियों को अपनी राय देने का पूरा अधिकार दिया जाना चाहिए, उन्हें अपनी राय देने से रोकने की हर कोशिश गलत है।

(7) यह जरूरी है कि सभी डाकुओं, खुफिया एजेंटों, स्थानीय निरंकुश तत्वों और अन्य प्रतिक्रान्तिकारियों का, जो जनता को हानि पहुंचाते हैं, दृढ़ता के साथ सफाया कर दिया जाए। इस प्रश्न के बारे में दमन को नरमी के साथ मिलाने की नीति अपनाना, अर्थात मुख्य अपराधियों को अवश्य सजा देने, दबाव में आकर काम करने वाले सह-अपराधियों को सजा न देना, और सकारात्मक सेवा करने वाले लोगों को पुरस्कार देने की नीति अपनाना जरूरी है, तथा इनमें से किसी भी पहलू की उपेक्षा न की जाए। समूची पार्टी और समूचे राष्ट्र को चाहिए कि वे प्रतिक्रान्तिकारियों की षड्यंत्रकारी गतिविधियों के प्रति अपनी सतर्कता को बुलन्द रखें।

(8) पार्टी संगठन को सुदृढ़ बनाने व विकसित करने, पार्टी और जन-समुदाय के बीच के सम्बन्धों को मजबूत बनाने, आलोचना व आत्म-आलोचना करने, तथा समूची पार्टी में एक दोष-निवारण आन्दोलन चलाने के बारे में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के निर्देशों को दृढ़तापूर्वक अमल में लाया जाना चाहिए। चूंकि हमारी पार्टी की सदस्यता बढ़कर 45 लाख तक पहुंच गई है, इसलिए आगामी काल में हमें पार्टी संगठन का विकास करते समय सावधानी बरतने की नीति अपनानी चाहिए, राजनीतिक सट्टेबाजों को पार्टी में घुसने से दृढ़तापूर्वक रोकना चाहिए और पार्टी में घुसे हुए राजनीतिक सट्टेबाजों को निष्कासित करने के लिए सही कदम

उठाने चाहिए। हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि राजनीतिक रूप से जागरूक मजदूरों को योजनाबद्ध ढंग से पार्टी में शामिल किया जाए, ताकि पार्टी-संगठनों में मजदूरों का अनुपात बढ़ाया जा सके। पुराने मुक्त क्षेत्रों में, आम तौर पर देहातों के अन्दर पार्टी में दाखिल करने का काम बन्द कर दिया जाना चाहिए। नए मुक्त क्षेत्रों में, भूमि-सुधार का काम पूरा होने से पहले आम तौर पर देहातों के अन्दर पार्टी-संगठनों का विकास नहीं किया जाना चाहिए, ताकि राजनीतिक सट्टेबाजों को पार्टी में घुसने का मौका न मिल सके। 1950 के ग्रीष्म, शरद और शीत काल में, समूची पार्टी में एक बड़े पैमाने का दोष-निवारण आन्दोलन चलाया जाना चाहिए; इस आन्दोलन को पार्टी के दूसरे कार्यों के साथ गहरा तालमेल कायम करते हुए चलाया जाना चाहिए; न कि उनसे पृथक करके। इस आन्दोलन में, कार्यकर्ताओं व आम पार्टी सदस्यों के विचारधारात्मक व राजनीतिक स्तर को उन्नत करने, काम के दौरान हुई गलतियों को दुरुस्त करने, अपने को भारी योगदान करने वाला व्यक्ति समझने की अहंकार व खुशफहमी की भावना को दूर करने, नौकरशाही व फरमानशाही को खत्म करने तथा पार्टी और जनता के बीच के सम्बन्धों को सुधारने के लिए, चुने हुए दस्तावेजों को पढ़ने, काम का सारांश निकालने, परिस्थिति का विश्लेषण करने, और आलोचना व आत्म-आलोचना करने जैसे तरीके अपनाए जाने चाहिए।

नोट

[1] यहां तात्पर्य 'चीन सोवियत मैत्री, संश्रय व पारस्परिक सहायता सन्धि' से है, जिस पर 14 फरवरी 1950 को हस्ताक्षर किए गए थे।

[2] यहां तात्पर्य 1950 में केन्द्रीय जन सरकार द्वारा जारी किए गए 'लोक विजय सममूल्य बॉंडों' से है।

[3] 1950 के जाड़ों से शुरू करके, एक के बाद एक नए मुक्त क्षेत्र में बड़े पैमाने का भूमि सुधार आन्दोलन चलाया गया। 1952 के जाड़ों तक अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के कुछ क्षेत्रों को छोड़कर भूमि-सुधार का काम बुनियादी तौर पर पूरा कर लिया गया। समूचे देश के पुराने और नए मुक्त क्षेत्रों में करीब 30 करोड़ किसानों को, जिनके पास या तो जमीन बिल्कुल नहीं थी या बहुत कम थी, लगभग 70 करोड़ मू जमीन प्राप्त हुई।

[4] विभिन्न स्तरों की स्थानीय जन प्रतिनिधि सभाओं के चुने जाने और बुलाए जाने से पहले सभी दायरों की जनता के सम्मेलनों का आयोजन किया गया था, जो 1949 के चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के मुस्तरका प्रोग्राम में किए गए प्रावधान के अनुसार जन-प्रतिनिधि सभाओं के कर्तव्यों व प्राधिकारों का कदम-ब-कदम निष्पादन करते थे।

चारों दिशाओं में प्रहार न करो

6 जून 1950

पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन के बाद हमारी पार्टी के नेतृत्व में नव-जनवादी क्रान्ति को राष्ट्रव्यापी विजय प्राप्त हो चुकी है और चीन लोक गणराज्य की स्थापना हो गई है। यह एक महान विजय है, चीन के इतिहास में एक अभूतपूर्व महान विजय है, और अक्तूबर क्रान्ति के बाद प्राप्त की गई एक ऐसी महान विजय है, जिसका विश्व-व्यापी महत्त्व है। कामरेड स्तालिन और बहुत से अन्य विदेशी कामरेड यह समझते हैं कि चीनी क्रान्ति की विजय एक अत्यन्त महान विजय है। किन्तु हमारे बहुत से कामरेड ऐसा महसूस नहीं करते, क्योंकि वे ऐसे संघर्ष के आदी हो चुके हैं। हमें चाहिए कि हम चीनी क्रान्ति की विजय के भारी महत्त्व का पार्टी के भीतर और जन-समुदाय के बीच व्यापक रूप से प्रचार करें।

इस महान विजय की स्थिति में भी हमें अत्यन्त जटिल संघर्षों और अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

हमने देश के उत्तरी भाग के 16 करोड़ आबादी वाले इलाकों में भूमि-सुधार का काम पूरा कर लिया है, और इस महान सफलता की पुष्टि करना जरूरी है। हमारे मुक्ति युद्ध की विजय मुख्य रूप से इसी 16 करोड़ जनता के भरोसे प्राप्त हुई है। भूमि-सुधार की विजय से ही च्याङ काई-शेक का तख्ता पलट देने में विजय प्राप्त करना सम्भव हो सका है। इस वर्ष शरद में हम सम्पूर्ण जमींदार वर्ग का तख्ता पलट देने के लिए लगभग 31 करोड़ आबादी वाले विशाल इलाकों में भूमि-सुधार शुरू करेंगे। भूमि सुधार के काम में हमारे दुश्मन काफी अधिक और काफी शक्तिशाली हैं। हमारे विपक्ष में ये लोग हैं : पहले, साम्राज्यवादी; दूसरे, थाइवान और तिब्बत के प्रतिक्रियावादी; तीसरे, क्वोमिन्ताङ की बचीखुची शक्तियां, खुफिया एजेंट और डाकू; चौथे, जमींदार वर्ग; और पांचवें, साम्राज्यवादियों द्वारा चीन में स्थापित मिशनरी स्कूलों और धार्मिक दायरों में मौजूद प्रतिक्रियावादी शक्तियां, तथा उन सांस्कृतिक व शैक्षणिक प्रतिष्ठानों में मौजूद प्रतिक्रियावादी शक्तियां जिनका हमने क्वोमिन्ताङ से अधिग्रहण किया है। ये सब हमारे दुश्मन हैं। हमें इन सब दुश्मनों से जूझना होगा और पहले से कहीं अधिक विशाल इलाकों में भूमि-सुधार का काम पूरा करना होगा। यह एक अत्यन्त तीक्ष्ण और इतिहास में अभूतपूर्व संघर्ष है।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी के तीसरे पूर्ण अधिवेशन में दिए गए भाषण का एक अंश। इसमें 'राष्ट्र की वित्तीय व आर्थिक स्थिति को बुनियादी रूप से बेहतरी की ओर मोड़ने के लिए संघर्ष करो' शीर्षक लिखित रिपोर्ट पर प्रकाश डाला गया है और उसमें व्यक्त किए गए रणनीतिक व कार्यनीतिक विचारों की व्याख्या की गई है।

क्रान्ति की विजय से हमारी अर्थव्यवस्था का पुनर्गठन भी सम्भव हो सका है। यह पुनर्गठन आवश्यक है, लेकिन फिलहाल इसने हमारे ऊपर बहुत भारी बोझ डाल दिया है। अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन के कारण और युद्ध के परिणामस्वरूप उद्योग व वाणिज्य के कुछ विघटन के कारण बहुत से लोग हमसे असन्तुष्ट हैं। आजकल राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के साथ हमारे सम्बन्ध काफी तनावपूर्ण हैं; वे कांटों पर लोट रहे हैं और बहुत असन्तुष्ट हैं। बेरोजगार बुद्धिजीवी और बेरोजगार मजदूर तथा कुछ छोटे दस्तकार भी हमसे असन्तुष्ट हैं। अधिकांश देहाती इलाकों में किसान भी शिकायत कर रहे हैं, क्योंकि अभी तक वहां भूमि सुधार लागू नहीं किया गया और ऊपर से उन्हें राज्य को अनाज भी देना पड़ता है।

इस समय हमारी आम नीति क्या है ? वह है क्वोमिन्ताङ की बचीखुची शक्तियों, खुफिया एजेंटों और डाकुओं का सफाया करना, जमींदार वर्ग का तख्ता पलट देना, थाइवान व तिब्बत को मुक्त कराना तथा साम्राज्यवाद के खिलाफ अन्त तक लड़ाई जारी रखना। अपने फौरी दुश्मनों को अलगाव में डालने और उन पर प्रहार करने के लिए यह जरूरी है कि हम जनता के बीच उन लोगों को अपने समर्थकों में बदल दें जो हमसे असन्तुष्ट हैं। हालांकि इस समय यह काम अनेक कठिनाइयों से भरा हुआ है, फिर भी हमें हर सम्भव उपाय से इन कठिनाइयों को दूर कर लेना चाहिए।

हमें उद्योग व वाणिज्य को युक्तियुक्त रूप से पुनर्व्यवस्थित करना चाहिए, ताकि कारखानों में फिर से उत्पादन शुरू हो सके और बेरोजगारी की समस्या का समाधान किया जा सके, तथा हमें बेरोजगार मजदूरों की खाद्य-समस्या को हल करने के लिए 1 अरब किलोग्राम अनाज मुहय्या करना चाहिए, ताकि हम उनका समर्थन प्राप्त कर सकें। जब हम लगान व सूद में कटौती करेंगे, डाकुओं व स्थानीय निरंकुश तत्वों का उन्मूलन करेंगे और भूमि-सुधार करेंगे, तो व्यापक किसान समुदाय हमारा समर्थन करने लगेगा। हमें गुजर-बसर के साधन खोजने में छोटे दस्तकारों की भी मदद करनी चाहिए। हमें राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के साथ अपने सम्बन्धों को बहुत अधिक तनावपूर्ण बनाने के बजाय उद्योग व वाणिज्य को और कर-निर्धारण को युक्तियुक्त रूप से पुनर्व्यवस्थित करके इन सम्बन्धों को सुधार लेना चाहिए। हमें बुद्धिजीवियों के लिए नाना प्रकार के ट्रेनिंग कोर्स, फौजी व राजनीतिक कालेज और क्रान्तिकारी प्रतिष्ठान चलाने चाहिए, तथा उनकी सेवाओं को इस्तेमाल करने के साथ-साथ उन्हें शिक्षित करना चाहिए और उनका नव रूपान्तर करना चाहिए। हमें चाहिए कि उनके लिए सामाजिक विकास के इतिहास, ऐतिहासिक भौतिकवाद और अन्य विषयों के अध्ययन की व्यवस्था करें। यहां तक कि आदर्शवादियों को भी हम ऐसे व्यक्ति बना सकते हैं जो हमारा विरोध न करें। उन्हें यह कहने दें कि मानव की सृष्टि ईश्वर द्वारा की गई है, जबकि हम यह कहते हैं कि मानव का विकास कपि से हुआ है। कुछ बुद्धिजीवी बूढ़े हो चुके हैं, उनकी उम्र सत्तर साल से भी ज्यादा हो चुकी है; जब तक वे पार्टी और जन सरकार का समर्थन करते रहें, तब तक हमें उनका पोषण करते रहना चाहिए।

समूची पार्टी को इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि वह अपना संयुक्त मोर्चे का काम बड़ी संजीदगी के साथ बखूबी करती रहे। हमें निम्न-पूंजीपति वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग को मजदूर वर्ग के नेतृत्व में और मजदूर किसान संश्रय के आधार पर गोलबन्द कर लेना

चाहिए। अन्ततोगत्वा राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा, लेकिन वर्तमान मंजिल में हमें उसे अपने इर्दगिर्द गोलबन्द कर लेना चाहिए और दूर नहीं धकेल देना चाहिए। एक तरफ हमें उसके खिलाफ संघर्ष करना चाहिए और दूसरी तरफ उसके साथ एकता कायम करनी चाहिए। हमें अपने कार्यकर्ताओं को साफ तौर पर समझा देना चाहिए और तथ्यों के जरिए साबित कर देना चाहिए कि राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग, जनवादी पार्टियों, गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों और बुद्धिजीवियों के साथ एकता कायम करना सही और आवश्यक है। उनमें से अनेक लोग पहले हमारे दुश्मन थे, लेकिन अब दुश्मन के खेमे से नाता तोड़कर हमारे पक्ष में आ गए हैं; इनमें ऐसे सभी लोगों के साथ एकता कायम कर लेनी चाहिए जिनके साथ एकता कायम करने की कम या ज्यादा सम्भावना हो। उनके साथ एकता कायम करना मेहनतकश जनता के हित में है। इस समय हमें यही कार्यनीति अपनानी चाहिए।

अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के साथ एकता कायम करना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। समूचे देश में उनकी आबादी करीब 3 करोड़ है। उनके क्षेत्रों में सामाजिक सुधार का मामला एक बहुत महत्त्वपूर्ण मामला है और उसे सावधानी से निपटाया जाना चाहिए। हमें किसी भी हालत में उतावलेपन से काम नहीं लेना चाहिए, क्योंकि उतावलेपन से गड़बड़ी पैदा हो जाएगी। जब तक स्थितियां परिपक्व नहीं हो जातीं, तब तक सुधार नहीं किया जाना चाहिए। और न ऐसी हालत में ही भारी सुधार किया जाना चाहिए जिसमें सिर्फ एक स्थिति ही परिपक्व हुई हो और अन्य स्थितियां परिपक्व न हुई हों। बेशक, इसका मतलब यह नहीं है कि सुधार किया ही न जाय। जैसा कि मुश्तरका प्रोग्राम में प्रावधान किया गया है, अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के क्षेत्रों के रीति-रिवाजों में सुधार किया जा सकेगा। किन्तु ऐसा सुधार खुद अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं द्वारा ही किया जाना चाहिए। जन समर्थन प्राप्त किए बिना, जनता की सशस्त्र सैन्य-शक्तियों के बिना और अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के अपने कार्यकर्ताओं के बिना जन-व्यापी स्वरूप वाला कोई भी सुधार नहीं किया जाना चाहिए। हमें अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को उनके अपने कार्यकर्ता प्रशिक्षित करने में मदद देनी चाहिए और अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के व्यापक जन-समुदाय के साथ एकता कायम करनी चाहिए।

सारांश रूप में, हमें चारों दिशाओं में प्रहार नहीं करना चाहिए। चारों दिशाओं में प्रहार करना बिलकुल अनुचित है और इससे देशव्यापी तनाव पैदा होता है। हमें बहुत अधिक लोगों को अपना दुश्मन हरगिज नहीं बना लेना चाहिए। हमें कुछ क्षेत्रों में रियायतें देनी चाहिए और तनाव में थोड़ी शिथिलता लानी चाहिए तथा अपना प्रहार सिर्फ एक ही दिशा में केन्द्रित करना चाहिए। हमें अपना काम अच्छी तरह करना चाहिए, ताकि मजदूर, किसान और छोटे दस्तकार सभी हमारा समर्थन करें, तथा राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग और बुद्धिजीवियों की भारी बहुसंख्या हमारा विरोध न करे। इस प्रकार, क्वोमिन्ताङ की बचीखुची शक्तियां, खुफिया एजेंट व डाकू, तथा साथ ही जमींदार वर्ग और थाइवान व तिब्बत के प्रतिक्रियावादी अलगाव की स्थिति में पड़ जाएंगे, तथा साम्राज्यवादियों को भी यह लगने लगेगा कि वे हमारे देश की जनता के सामने अकेले हैं। यही हमारी नीति है, हमारी रणनीति व कार्यनीति है, तथा यही पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी के तीसरे पूर्ण अधिवेशन की कार्यदिशा है।

एक सच्चे क्रान्तिकारी बनो

23 जून 1950

वर्तमान अधिवेशन में विगत काल के हमारे अनुभवों का सारांश निकाला गया है और विभिन्न निदेशक उसूल निर्धारित किए गए हैं।

यह काम हमने विभिन्न राष्ट्रीयताओं, जनवादी वर्गों, जनवादी पार्टियों, जन संगठनों और अलग-अलग दायरों के गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों के प्रतिनिधियों के इस सम्मेलन में संयुक्त रूप से किया है। सम्मेलन में किए गए विचार-विमर्श में न सिर्फ जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की राष्ट्रीय कमेटी के सदस्यों ने भाग लिया, बल्कि केन्द्रीय जन सरकार के और वृहद प्रशासनिक क्षेत्रों की जन सरकारों (अथवा सैनिक व प्रशासनिक कमीशनों)[1] और प्रान्तों व म्युनिसिपलटियों की जन सरकारों के बहुत से कार्यकर्ताओं, और साथ ही सभी दायरों की जनता के प्रान्तीय व म्युनिसिपल सम्मेलनों[2] की सलाहकार समितियों के प्रतिनिधियों तथा विशेष रूप से निमंत्रित अनेक देशभक्त व्यक्तियों ने भी भाग लिया। इस प्रकार हम सभी क्षेत्रों की राय इकट्ठी करने, विगत कार्य का सिंहावलोकन करने और भविष्य के लिए निदेशक उसूल निर्धारित करने में कामयाब हो सके हैं। मुझे उम्मीद है कि इस तरीके को लगातार इस्तेमाल करते रहेंगे और वृहद प्रशासनिक क्षेत्रों की जन सरकारें (अथवा सैनिक व प्रशासनिक कमीशन) तथा प्रान्तों और म्युनिसिपलटियों की जन सरकारें भी यही तरीका अपनाएंगी। अब तक हमारी कमेटी के अधिवेशनों का स्वरूप केवल परामर्शदायी रहा है। लेकिन वास्तव में हमारे अधिवेशनों में किए गए फैसलों को केन्द्रीय जन सरकार जरूर स्वीकार करेगी और जरूर अमल में लाएगी, तथा उसे ऐसा करना भी चाहिए।

हमने राष्ट्रीय कमेटी के काम के बारे में प्रस्तुत रिपोर्ट को तथा केन्द्रीय जन सरकार के काम के बारे में प्रस्तुत विविध प्रकार की रिपोर्टों को एकमत से स्वीकार कर लिया है। ये रिपोर्ट भूमि-सुधार के बारे में, राजनीतिक, सैनिक, आर्थिक व वित्तीय काम के बारे में, कर-निर्धारण के बारे में, सांस्कृतिक व शैक्षणिक काम के बारे में तथा न्यायालय के काम के बारे में हैं। ये सभी रिपोर्टें अच्छी हैं। इन रिपोर्टों में विगत काल के हमारे काम के अनुभवों का समुचित रूप से निचोड़ निकाला गया है और भविष्य के काम के लिए निदेशक उसूल निर्धारित किए गए हैं। अधिवेशन की कार्यसूची में इतने अधिक मुद्दे इसलिए शामिल किए गए हैं क्योंकि हमारे नए राज्य की स्थापना के बाद हमारा कार्य हर क्षेत्र में शुरू हो रहा है या विकसित हो रहा है। समूचे देश की जनता सभी मोर्चों पर बड़ी ओजस्विता के साथ जनता का एक महान

चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की पहली राष्ट्रीय कमेटी के दूसरे अधिवेशन में समापन भाषण।

और सच्चा क्रान्तिकारी संघर्ष चला रही है; यह सैनिक, आर्थिक, विचारधारात्मक तथा भूमि-सुधार सम्बन्धी मोर्चों पर चलाया जाने वाला एक अभूतपूर्व और अत्यन्त महान संघर्ष है, तथा सभी क्षेत्रों में काम का सारांश निकालना और निदेशक उसूल निर्धारित करना आवश्यक है। यही कारण है कि कार्यसूची में हमने इतने अधिक मुद्दे शामिल किए हैं। कानून के मुताबिक हमें हर साल दो अधिवेशन बुलाने होंगे, एक की कार्यसूची में अधिक मुद्दे शामिल किए जाएंगे और दूसरे की कार्यसूची में कम। परिस्थिति का यही तकाजा है, चूंकि चीन एक विशाल देश है और उसकी वास्तविक जनसंख्या 47.5 करोड़ को भी पार कर चुकी है, तथा साथ ही यह जन क्रान्ति के एक महान ऐतिहासिक काल से गुजर रहा है। इसीलिए हमने यह सब किया है और मेरा खयाल है कि हमने ठीक ही किया है।

हमारे वर्तमान अधिवेशन में विचार-विमर्श के लिए बहुत से विषय रखे गए हैं, जिनमें केन्द्रीय विषय है पुरानी भूमि-व्यवस्था का रूपान्तर करने का प्रश्न। हमने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा प्रस्तावित 'भूमि-सुधार कानून के मसौदे'[1] की पुष्टि कर दी है तथा उसमें अनेक उपयोगी संशोधन और परिवर्धन किए हैं। यह बहुत अच्छी बात है। मैं प्रसन्न हूं और इस बात का अभिनन्दन करता हूं कि नए चीन की दसियों करोड़ ग्रामीण जनता को मुक्ति का अवसर प्राप्त हो गया है और हमारे राष्ट्र को औद्योगीकरण के लिए बुनियादी शर्त उपलब्ध हो गई है। चीन की आबादी में अधिकांश लोग किसान हैं। उन्हीं की मदद से क्रान्ति में विजय प्राप्त हो सकी है तथा देश के औद्योगीकरण में सफलता प्राप्त करना भी सिर्फ तभी सम्भव होगा जब फिर एक बार किसानों की मदद मिले। इसलिए मजदूर वर्ग को भूमि-सुधार के कार्य में किसानों की सक्रिय रूप से मदद करनी चाहिए; शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग को भी इस कार्य का समर्थन करना चाहिए, तथा सभी जनवादी पार्टियों व जन-संगठनों के लिए तो ऐसा करना और भी ज्यादा जरूरी है। युद्ध और भूमि-सुधार दो ऐसी अग्नि परीक्षाएं हैं जिनसे नव-जनवाद के ऐतिहासिक काल में चीन के हर व्यक्ति को और हर राजनीतिक पार्टी को गुजरना है। जो कोई व्यक्ति क्रान्तिकारी जनता का साथ देता है, वह एक क्रान्तिकारी है। जो कोई व्यक्ति साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद का साथ देता है, वह एक प्रतिक्रान्तिकारी है। जो कोई व्यक्ति केवल कथनी में ही क्रान्तिकारी जनता का साथ देता है किन्तु करनी में ऐसा नहीं करता, वह केवल जबानी जमा-खर्च करने वाला क्रान्तिकारी है। जो कोई व्यक्ति कथनी और करनी दोनों में क्रान्तिकारी जनता का साथ देता है, वही एक सच्चा क्रान्तिकारी है। युद्ध की अग्नि-परीक्षा आम तौर पर समाप्त हो चुकी है, तथा हम सब लोग उससे अच्छी तरह गुजर चुके हैं और समूचे देश की जनता इस बात से सन्तुष्ट है। अब हमें भूमि-सुधार की अग्नि-परीक्षा से गुजरना है, और मुझे उम्मीद है कि जिस तरह हम युद्ध की अग्नि परीक्षा में खरे उतरे हैं उसी तरह इस अग्नि-परीक्षा में भी खरे उतरेंगे। आइए, हम इस मसले पर और अधिक सोच-विचार करें, और अधिक विचार-विमर्श करें, अपने विचारों को दुरुस्त कर लें, कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ें तथा एक महान सामन्तवाद-विरोधी संयुक्त मोर्चा कायम कर लें, तब कहीं हम इस अग्नि परीक्षा में खरे उतरने में जनता का नेतृत्व कर सकेंगे और उसकी मदद कर सकेंगे। जब हम युद्ध और भूमि-सुधार की अग्नि-परीक्षाओं में खरे उतर चुकेंगे, तो एक और अग्नि-परीक्षा, यानी समाजवाद की

अग्नि-परीक्षा, राष्ट्रव्यापी पैमाने पर समाजवादी रूपान्तर करने की अग्नि-परीक्षा में भी आसानी से खरे उतर सकेंगे। जिन लोगों ने क्रान्तिकारी युद्ध में और भूमि व्यवस्था का क्रान्तिकारी रूपान्तर करने में योगदान किया है, तथा जो आगामी वर्षों में आर्थिक व सांस्कृतिक निर्माण में लगातार योगदान करते रहेंगे, उन्हें निजी उद्योगों के राष्ट्रीकरण और कृषि के सामाजिकीकरण के समय (जो अभी काफी दूर की बात है) जनता नहीं भूलेगी, और उनका भविष्य उज्ज्वल है। इस प्रकार हमारा देश मजबूती से आगे कदम बढ़ाता जा रहा है; वह युद्ध से गुजर चुका है और नव-जनवादी रूपान्तर से गुजर रहा है, तथा भविष्य में जब हमारी अर्थव्यवस्था व संस्कृति खूब फलेगी-फूलेगी, जब स्थितियां परिपक्व हो जाएंगी और जब समूची जनता अच्छी तरह सोच-विचार कर अपनी सहमति प्रकट कर देगी, तब वह बिना किसी जल्दबाजी के और सुव्यवस्थित रूप से समाजवाद के नए काल में प्रवेश करेगा। मेरा विचार है कि इस बात की स्पष्ट रूप से व्याख्या करना जरूरी है, ताकि लोगों में विश्वास पैदा हो जाए और वे यह चिन्ता करना छोड़ दें : "न जाने कब मुझे ठुकरा दिया जाएगा और चाहने पर भी जनता की सेवा करने का मौका नहीं दिया जाएगा।" नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा। अगर कोई व्यक्ति सचमुच जनता की सेवा करना चाहता हो, अगर वह कठिन समय में सचमुच जनता की सहायता कर चुका हो, अच्छे काम कर चुका हो और उन कामों को बीच में ही छोड़े बगैर लगातार करता रहा हो, तो कोई वजह नहीं कि जनता और जन सरकार उसे ठुकरा दें, या अपनी रोजी कमाने और अपनी सेवाएं देश के लिए अर्पित करने का अवसर प्रदान न करें।

इस महान उद्देश्य को लेकर, हमें अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सोवियत संघ, जनता की लोकशाही वाले देशों और सभी स्थानों की शान्ति व जनवाद की शक्तियों के साथ दृढ़ता से एकता कायम करनी चाहिए, तथा इसके बारे में जरा भी हिचकिचाहट या ढुलमुलपन प्रदर्शित नहीं करनी चाहिए। देश में, हमें सभी राष्ट्रीयताओं, जनवादी वर्गों, जनवादी पार्टियों, जन संगठनों और देशभक्त गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों के साथ एकता कायम करनी चाहिए तथा उस महान व प्रतिष्ठित क्रान्तिकारी संयुक्त मोर्चे को सुदृढ़ बनाना चाहिए जिसे पहले ही कायम किया जा चुका है। जो कोई भी व्यक्ति इस क्रान्तिकारी संयुक्त मोर्चे को सुदृढ़ बनाने में योगदान करता है वह सही है, और हम उसका स्वागत करते हैं; जो कोई भी व्यक्ति इस सुदृढ़ीकरण को नुकसान पहुंचाता है वह गलत है, और हम उसका विरोध करते हैं। क्रान्तिकारी संयुक्त मोर्चे को सुदृढ़ बनाने के लिए यह जरूरी है कि हम आलोचना व आत्म-आलोचना का तरीका अपनाएं। इस तरीके को लागू करते समय हमारा मापदण्ड होगा, हमारा वर्तमान बुनियादी कानून – मुश्तरका प्रोग्राम। इस अधिवेशन में हमने मुश्तरका प्रोग्राम के मुताबिक आलोचना व आत्म-आलोचना का तरीका अपनाया है। यह एक बेहतरीन तरीका है, जो हम सभी को सच्चाई पर डटे रहने और अपनी गलती को सुधार लेने के लिए प्रोत्साहन देता है, तथा एकमात्र सही तरीका है जिसे जनता के राज्य में समूची क्रान्तिकारी जनता अपने आपको शिक्षित करने और अपना नव रूपान्तर करने के लिए अपनाती है। जनता का जनवादी अधिनायकत्व दो तरीके इस्तेमाल करता है। दुश्मनों के प्रति वह अधिनायकत्व का तरीका इस्तेमाल करता है, अर्थात्, जितने समय के लिए आवश्यक हो, उन्हें राजनीतिक गतिविधियों में भाग नहीं लेने

देता तथा जन सरकार के कानूनों का पालन करने और श्रम के जरिए नए इन्सान के रूप में अपना नव रूपान्तर करने के उद्देश्य से श्रम में भाग लेने के लिए बाध्य करता है। इसके विपरीत, जनता के प्रति वह मजबूर करने का तरीका नहीं बल्कि जनवाद का तरीका इस्तेमाल करता है, अर्थात्, उसे अनिवार्य रूप से राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने देता है और कोई भी काम करने के लिए मजबूर करने के बजाय उसे शिक्षित करने तथा समझाने-बुझाने का जनवादी तरीका इस्तेमाल करता है। ऐसी शिक्षा जनता के लिए एक तरह की आत्म-शिक्षा है, और आलोचना व आत्म-आलोचना इसका बुनियादी तरीका है। मुझे उम्मीद है कि समूचे देश की सभी राष्ट्रीयताएं, जनवादी वर्ग, जनवादी पार्टियां, जन-संगठन और देशभक्त गण्यमान्य जनवादी व्यक्ति यही तरीका अपनाएंगे।

नोट

[1] उस समय देश को छः बृहद् प्रशासनिक क्षेत्रों में बांटा गया था, अर्थात्, उत्तर-पूर्व, उत्तरी चीन, पूर्वी चीन, मध्य-दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम। प्रत्येक बृहद प्रशासनिक क्षेत्र में एक ब्यूरो था, जो चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का प्रतिनिधित्व करता था। उत्तरी चीन को छोड़कर, बाकी पांच क्षेत्रों में अपने-अपने प्रशासनिक संगठन थे। उसे उत्तर पूर्व में जन सरकार के नाम से और अन्य चारों क्षेत्रों में सैनिक व प्रशासनिक कमीशन के नाम से पुकारा जाता था। नवम्बर 1952 में फिर एक बार इन सबका नामकरण प्रशासनिक परिषद के रूप में किया गया और ऐसी ही एक परिषद उत्तरी चीन में भी स्थापित कर दी गई। 1954 में इन सब प्रशासनिक परिषदों को भंग कर दिया गया।

[2] सभी दायरों की जनता के प्रान्तीय व म्युनिसिपल सम्मेलनों की सलाहकार समितियों का चुनाव सभी दायरों की जनता के समानान्तर स्तर के सम्मेलनों द्वारा किया जाता था। जब सभी दायरों की जनता के सम्मेलनों का अधिवेशन नहीं होता था, तो उनकी सलाहकार समितियां सम्मेलनों में स्वीकृत प्रस्तावों को लागू करने में जन सरकारों को सहायता देने के कार्य का निष्पादन करती थीं।

[3] यहां तात्पर्य 'चीन लोक गणराज्य के भूमि-सुधार कानून के मसौदे' से है, जिसे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने 14 जून 1950 को चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की पहली राष्ट्रीय कमेटी के दूसरे अधिवेशन के समक्ष विचार विमर्श के लिए प्रस्तुत किया था। अधिवेशन में विचार-विमर्श और अनुमोदन होने के पश्चात, केन्द्रीय जन सरकार परिषद ने इसे अपनी स्वीकृति दे दी। उसी वर्ष 30 जून को केन्द्रीय जन सरकार के अध्यक्ष माओ त्सेतुङ ने 'चीन लोक गणराज्य का भूमि सुधार कानून' जारी किया।

आप लोग समूचे राष्ट्र के लिए आदर्श हैं

25 सितम्बर 1950

युद्धवीरों के राष्ट्रीय सम्मेलन तथा उद्योग व कृषि के क्षेत्र में और सेना में काम करने वाले आदर्श श्रमिकों के राष्ट्रीय सम्मेलन के डेलीगेट साथियो !

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी आपके इन सम्मेलनों का हार्दिक अभिनन्दन करती है और आप लोगों द्वारा किए गए काम के लिए आपको धन्यवाद देती है और आपका अभिवादन करती है।

दुश्मन का सफाया करने के संघर्ष में और औद्योगिक उत्पादन व कृषि-उत्पादन को पुनर्स्थापित व विकसित करने के संघर्ष में, आप लोगों ने बहुत सी कठिनाइयों व विघ्न-बाधाओं को दूर किया है और असाधारण साहस, बुद्धिमत्ता व सक्रियता का परिचय दिया है। आप लोग समूचे चीनी राष्ट्र के लिए आदर्श हैं, जनता के कार्य को हर पहलू से विजयपूर्वक आगे बढ़ाने वाले मेरुदण्ड हैं, जन सरकार के विश्वसनीय आधार-स्तम्भ हैं तथा जन सरकार और साथ ही आप लोगों का, सभी प्रिय डेलीगेट साथियों का, तथा देश के सभी युद्ध-वीरों व आदर्श श्रमिकों का आवाहन करती है कि आप लोग संघर्ष के जरिए और जन-समुदाय से लगातार सीखते रहें। केवल घमण्ड व खुशफहमी से परे रहने और अनवरत व अथक रूप से सीखते रहने से ही आप लोग महान चीन लोक गणराज्य के लिए लगातार योगदान कर सकेंगे और इस प्रकार अपनी गौरव-गरिमा बनाए रख सकेंगे।

यह जरूरी है कि चीन में एक शक्तिशाली राष्ट्रीय प्रतिरक्षा सेना और एक शक्तिशाली अर्थव्यवस्था का निर्माण किया जाए – ये दोनों ही भारी महत्व के कार्य हैं। इन दोनों कार्यों की पूर्ति इस बात पर निर्भर है कि आप लोग जन-मुक्ति सेना के सभी कमाण्डरों व योद्धाओं के साथ तथा सभी मजदूरों, किसानों और जनता के अन्य तबकों के साथ घनिष्ठ एकता कायम करें और मिलकर प्रयास करें। आज जबकि चीन लोक गणराज्य की स्थापना की पहली जयन्ती जल्दी ही आने वाली है, यहां आयोजित आपके सम्मेलनों की भारी अहमियत है। हम कामना करते हैं कि आपके सम्मेलन सफल हों और आने वाले काल में आपको अपने काम में भारी जीतें हासिल हों।

युद्ध वीरों के राष्ट्रीय सम्मेलन तथा उद्योग व कृषि के क्षेत्र में और सेना में काम करने वाले आदर्श श्रमिकों के राष्ट्रीय सम्मेलन के संयुक्त उद्घाटन समारोह में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की ओर से प्रस्तुत अभिनन्दन सन्देश।

चीनी जन स्वयंसेवकों को आदेश

8 अक्तूबर 1950

चीनी जन-स्वयंसेवकों के सभी स्तरों के नेतृत्वकारी कामरेडो !

1. कोरियाई जनता के मुक्ति-युद्ध में सहायता करने और अमरीकी साम्राज्यवाद व उसके पालतू कुत्तों के आक्रमण का प्रतिरोध करने, तथा इसके जरिए कोरियाई जनता, चीनी जनता और पूर्व के अन्य सभी देशों की जनता के हितों की हिफाजत करने के उद्देश्य से, मैं यह आदेश देता हूं कि चीनी जन स्वयंसेवक तेजी से कोरिया में प्रवेश करें तथा कोरियाई कामरेडों के साथ तालमेल कायम करते हुए आक्रमणकारियों से लोहा लें और गौरवमय विजय प्राप्त करें।

2. कोरिया में प्रवेश करने के बाद, चीनी जन स्वयंसेवकों के लिए यह जरूरी है कि वे कोरिया की जनता, जन सेना, जनवादी सरकार, श्रमिक पार्टी व अन्य जनवादी पार्टियों तथा कोरियाई जनता के नेता कामरेड किम इल सुङ के प्रति बिरादराना भावना प्रदर्शित करें और उनका सम्मान करें, तथा फौजी व राजनीतिक अनुशासन का सख्ती से पालन करें। यह आपके फौजी कार्य को पूरा करने की गारण्टी करने वाला एक अत्यन्त महत्वपूर्ण राजनीतिक आधार है।

3. यह जरूरी है कि आप लोग विभिन्न सम्भावित व अनिवार्य कठिनाइयों का पूरी तरह पहले से ही अनुमान लगा लें और उन्हें दूर करने के लिए भारी उत्साह, दिलेरी, सावधानी और सहनशक्ति से काम लेने को तैयार रहें। सम्पूर्ण रूप से देखा जाए तो इस समय अन्तर्राष्ट्रीय व घरेलू परिस्थिति हमारे लिए अनुकूल और आक्रमणकारियों के लिए प्रतिकूल है। यदि आप सब कामरेड दृढ़ता व बहादुरी दिखाते रहेंगे तथा वहां की जनता के साथ एकता कायम करने और आक्रमणकारियों से जूझने में निपुण बने रहेंगे, तो अन्तिम विजय हमें ही प्राप्त होगी।

माओ त्सेतुङ
अध्यक्ष, चीनी जन क्रान्तिकारी फौजी कमीशन
8 अक्तूबर 1950, पेकिङ

चीनी जन स्वयंसेवकों के नाम एक आदेश के कुछ अंश।

चीनी जन स्वयंसेवकों को कोरिया के हर पहाड़, हर नदी, हर पेड़ और घास के हर तिनके की कद्र करनी चाहिए

19 जनवरी 1951

चीनी और कोरियाई कामरेडों को सगे भाइयों की तरह घनिष्ठ रूप से एकताबद्ध हो जाना चाहिए, सुख दुख में एक दूसरे का हाथ बटाना चाहिए और जीवन-मरण में एक दूसरे का साथ देना चाहिए, तथा अपने मुश्तरका दुश्मन को पराजित करने के लिए अन्त तक लड़ते रहना चाहिए। यह जरूरी है कि चीनी कामरेड कोरिया के कार्य को खुद अपना ही कार्य समझें तथा कमाण्डरों व योद्धाओं को यह शिक्षा दी जाय कि वे कोरिया के हर पहाड़, हर नदी, हर पेड़ और घास के हर तिनके की कद्र करें तथा कोरियाई जनता की एक सुई भी या एक टुकड़ा धागा भी न उठाएँ, ठीक उसी तरह जैसे हम अपने देश में इन चीजों की कद्र करते हैं और अपनी जनता के साथ बरताव करते हैं। यह विजय प्राप्त करने का राजनीतिक आधार है। यदि हम ऐसा करेंगे, तो हमें अन्तिम विजय अवश्य प्राप्त होगी।

चीनी जन स्वयंसेवकों को दिया गया एक निदेश।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के राजनीतिक ब्यूरो की विस्तृत मीटिंग में स्वीकृत प्रस्ताव के मुख्य मुद्दे

18 फरवरी 1951

राजनीतिक ब्यूरो ने फरवरी के मध्य में एक मीटिंग का आयोजन किया, जिसमें केन्द्रीय कमेटी के सभी ब्यूरोओं के जिम्मेदार कामरेड उपस्थित थे और विभिन्न महत्वपूर्ण सवालों पर विचार-विमर्श किया गया। अब हम आपको प्रस्ताव के मुख्य मुद्दों से अवगत करा रहे हैं।

1. तैयारी के लिए बाईस महीने

''तैयारी के लिए तीन वर्ष और योजनाबद्ध आर्थिक निर्माण के लिए दस वर्ष'' का यह विचार प्रान्तीय और म्युनिसिपल स्तर और उसके ऊपर के स्तर के सभी कार्यकर्ताओं को स्पष्ट रूप से समझा दिया जाना चाहिए। अब से तैयारी के लिए सिर्फ बाईस महीने बाकी रह गए हैं और इसलिए काम के सभी क्षेत्रों में हमें अपनी रफ्तार बढ़ा लेनी चाहिए।

2. अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने के लिए प्रचार व शिक्षा आन्दोलन

यह जरूरी है कि इस आन्दोलन को देशव्यापी पैमाने पर चलाने के लिए निरन्तर प्रयास किया जाय, जहां यह आन्दोलन शुरू हो चुका है वहां इसमें गहराई लाई जाय, और जहां यह आन्दोलन अभी शुरू नहीं हुआ वहां इसे फैलाया जाय, ताकि यह शिक्षा देश के सभी भागों में हर व्यक्ति तक पहुंचाने की गारण्टी की जा सके।

3. भूमि-सुधार

1. खेतीबाड़ी के व्यस्त मौसम में, सभी जगहों में भूमि-सुधार को कुछ समय के लिए

यह एक अन्तःपार्टी सरकुलर है, जिसका मसौदा कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था।

स्थगित कर दिया जाय और अनुभवों का सारांश निकाला जाय।

2. इस वर्ष एक अच्छी फसल काटने के लिए प्रयास करो।

3. किसान प्रतिनिधियों के काउण्टी स्तर के सम्मेलनों पर और प्रशिक्षण कक्षाओं पर निर्भर रहो।

4. आवश्यक परिस्थितियां तैयार करने के लिए सक्रिय रूप से काम करो। जब भी और जहां भी परिस्थितियां परिपक्व न हों, भूमि-सुधार को जबरन लागू न करो।

5. जैसे ही भूमि-सुधार का काम पूरा हो जाए, उत्पादन और शिक्षा के इन दो मुख्य कामों में जुट जाओ।

6. जमानत की रकम किस्तों में वापस लौटने[1] का पूर्वी चीन का तरीका मंजूर कर लिया गया है।

7. किसानों को समझा दो कि शारीरिक यातनाएं, जो नाजायज हैं, न देना हमारे हित में है।

8. भूमि-सुधार के बाद ज्यादा संख्या में जिलों व श्याङों की स्थापना करो और प्रत्येक जिले व श्याङ के अधीन क्षेत्र को छोटा रखो।

4. प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन

1. आम तौर पर, किसी को प्राणदण्ड देने का फैसला करने से पहले उसके मामले को जन-समुदाय के सामने पेश किया जाना चाहिए और उसके बारे में गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों से परामर्श किया जाना चाहिए।

2. इस काम पर कड़ा नियंत्रण रखो, अन्धाधुन्ध कार्यवाही का विरोध करो और गलतियों से बचो।

3. "दरमियानी परत"[2] पर ध्यान दो, तथा पुराने कर्मचारियों और हमारे काम में अभी-अभी शरीक हुए बुद्धिजीवियों के बीच से छिपे हुए प्रतिक्रान्तिकारियों को सावधानी से बाहर निकाल दो।

4. "अन्दरूनी परत" पर ध्यान दो, तथा उन प्रतिक्रान्तिकारियों को जो मौका पाकर पार्टी के भीतर घुस आए हैं, सावधानी से बाहर निकाल दो, और गोपनीय बातों की हिफाजत करने के काम को अत्यधिक सुदृढ़ बनाओ।

5. साथ ही, कार्यकर्ताओं को शिक्षित करो और काम में उनका समर्थन करो।

5. शहरी काम

1. केन्द्रीय कमेटी के प्रत्येक ब्यूरो व उपब्यूरो को तथा प्रान्त, म्युनिसिपलटी व प्रशासनिक क्षेत्र के स्तर की प्रत्येक पार्टी-कमेटी को चाहिए कि वह इस साल के अन्दर केन्द्रीय कमेटी द्वारा प्रस्तुत कार्यसूची के अनुसार शहरी काम के बारे में दो मीटिंगों का आयोजन करे, तथा इस सम्बन्ध में दो बार रिपोर्ट दे।

2. शहरी काम में पार्टी-कमेटियों के नेतृत्व को सुदृढ़ बनाओ और सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन के प्रस्ताव को अमल में लाओ।

3. कार्यकर्ताओं को शिक्षित करो, ताकि उनके दिमाग में मजदूर वर्ग पर भरोसा रखने का विचार स्पष्ट हो जाए।

4. कारखानों में, पार्टी को चाहिए कि वह उत्पादन-योजनाओं की पूर्ति को केन्द्रीय कार्य बनाते हुए, पार्टी-संगठन, प्रशासन, ट्रेड यूनियन और नौजवान संघ के काम पर अपना एकीकृत नेतृत्व लागू करे।

5. उत्पादन में बढ़ोतरी के आधार पर मजदूरों के रहन-सहन की स्थिति को कदम-ब-कदम सुधारते जाने की भरसक कोशिश करो।

6. उत्पादन और मजदूरों की आवश्यकताओं की सेवा करने के विचार को शहरी निर्माण की योजना में समाविष्ट कर दिया जाना चाहिए।

7. अखिल चीन ट्रेड यूनियन फेडरेशन और उच्चतर स्तर की प्रत्येक ट्रेड यूनियन को निचले स्तरों की ठोस समस्याओं को हल करने पर बल देना चाहिए।

8. पार्टी कमेटियों और ट्रेड यूनियनों के लिए यह आवश्यक है कि वे आदर्श इकाइयों की स्थापना पर जोर दें और उनके अनुभवों को शीघ्र ही दूसरे स्थानों में फैला दें।

6. पार्टी-सुदृढ़ीकरण और पार्टी निर्माण

1. हमारी पार्टी एक महान, गौरवशाली और सही पार्टी है, यह एक मुख्य पहलू है, जिसका निश्चयपूर्वक ऐलान किया जाना और जिसे सभी स्तरों के कार्यकर्ताओं को स्पष्ट रूप से समझाया जाना जरूरी है। लेकिन साथ ही उन्हें यह भी स्पष्ट रूप से समझा दिया जाना चाहिए कि पार्टी के सामने अब भी ऐसी समस्याएं मौजूद हैं जिन्हें हल किया जाना चाहिए और यह कि नए मुक्त क्षेत्रों में पार्टी-निर्माण करते समय सावधानी का रुख अपनाया जाना चाहिए।

2. पार्टी के सुदृढ़ीकरण व निर्माण का काम केन्द्रीय कमेटी और उसके ब्यूरोओं के कड़े नियंत्रण में किया जाना चाहिए, तथा निचले स्तरों के संगठनों को मनचाहे ढंग से हरगिज कार्यवाही नहीं करनी चाहिए।

3. पार्टी के सुदृढ़ीकरण का काम तीन साल में पूरा कर लिया जाना चाहिए। इसके लिए निम्नलिखित कदम उठाए जाएं : एक साल का समय (1951) इस बात की व्यापक रूप से शिक्षा देने के लिए इस्तेमाल किया जाए कि एक कम्युनिस्ट को कैसा होना चाहिए, ताकि सभी सदस्य यह जान लें कि एक कम्युनिस्ट के लिए निर्धारित प्रतिमान क्या हैं, तथा इस दौरान संगठनात्मक कार्य के लिए कार्यकर्ताओं को ट्रेनिंग भी दी जाए। इसी अवधि में नमूना पेश करने वाली आदर्श इकाइयों को प्रयोग के तौर पर कायम किया जाय। इसके पश्चात उनके अनुभवों की रोशनी में पार्टी का सुदृढ़ीकरण किया जाय; लेकिन शहरों में यह काम 1951 में शुरू किया जा सकता है। पार्टी का सुदृढ़ीकरण करते समय, सबसे पहले 'चौथी श्रेणी के व्यक्तियों'[3] को छांटकर निकाल दिया जाय। इसके बाद 'दूसरी श्रेणी के व्यक्तियों' और 'तीसरी श्रेणी के व्यक्तियों' के बीच फर्क किया जाय, तथा उन व्यक्तियों को जो शिक्षित किए जाने के बावजूद

पार्टी-सदस्य के मापदण्ड तक न पहुंच सकें, यह सलाह दी जाय कि वे पार्टी से अलग हो जाएं, लेकिन यह पक्का कर लिया जाय कि वे लोग स्वेच्छा से अलग हों और उन्हें ठेस न लगे। 1948 की तरह 'चट्टानें हटाने'[4] की कार्रवाहियों को न दोहराया जाय।

4. यह जरूरी है कि शहरों और नए मुक्त क्षेत्रों में पार्टी का निर्माण करते समय सावधानी की नीति अपनाई जाय। शहरों में पार्टी-संगठन मुख्य रूप से औद्योगिक मजदूरों के बीच कायम किए जाने चाहिए। देहाती इलाकों में पार्टी-शाखाएं सिर्फ भूमि सुधार का काम पूरा होने के बाद ही ऐसे लोगों को दाखिल करके कायम की जा सकेंगी, जो शिक्षित होने के फलस्वरूप पार्टी सदस्य बनने योग्य साबित हो चुके हों, तथा शुरू के दो वर्षों में एक देहाती पार्टी शाखा के सदस्यों की संख्या आम तौर पर दस से अधिक न हो। चाहे शहर हो या गांव, पार्टी की शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक सक्रिय तत्वों को शिक्षित किया जाना चाहिए कि वे एक कम्युनिस्ट कैसे बनें, तथा ऐसी शिक्षा देने के बाद उन व्यक्तियों को पार्टी में शामिल कर लिया जाना चाहिए जो सचमुच पार्टी-सदस्य बनने के योग्य हों।

7. संयुक्त मोर्चे का काम

1. केन्द्रीय कमेटी के ब्यूरोओं व उपब्यूरोओं और प्रान्त, म्युनिसिपलटी व प्रशासनिक क्षेत्र के स्तर की पार्टी कमेटियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे संयुक्त मोर्चे के काम पर विचार-विमर्श करने के लिए 1951 में दो मीटिंगों का आयोजन करें, तथा इस सम्बन्ध में केन्द्रीय कमेटी को दो बार रिपोर्ट दें।

2. कार्यकर्ताओं को स्पष्ट रूप से समझा दिया जाना चाहिए कि संयुक्त मोर्चे के काम को सुदृढ़ बनाना क्यों जरूरी है।

3. यह जरूरी है कि साम्राज्यवाद और सामन्तवाद के खिलाफ संघर्ष के आधार पर बुद्धिजीवियों, उद्योगपतियों व व्यापारियों, धार्मिक नेताओं, जनवादी पार्टियों और गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों के साथ एकता कायम की जाय तथा उन्हें शिक्षित किया जाय।

4. अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के बीच बड़ी संजीदगी के साथ काम किया जाय; प्रादेशिक स्वायत्त शासन लागू करना और अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के अपने कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करना, ये दो केन्द्रीय कार्य हैं।

8. दोष-निवारण आन्दोलन

यह आन्दोलन एक अल्प अवधि के लिए हर वर्ष जाड़ों में चलाया जाना चाहिए; इसका मकसद है काम का सिंहावलोकन करना, अनुभवों का सारांश निकालना, उपलब्धियों का विकास करना और गलतियों व खामियों को दुरुस्त करना, तथा इस प्रकार कार्यकर्ताओं को शिक्षित करना।

नोट

[1] मुक्ति से पहले जो किसान जमींदारों से काश्त पर जमीन लेते थे, उन्हें जमींदारों को एक निश्चित रकम जमानत के रूप में देनी पड़ती थी। भूमि-सुधार के दौरान किसानों ने जमींदारों से यह रकम वापस लौटाने की मांग की। यह जमानत की रकम वापस लौटाना कहलाता था। जो जमींदार औद्योगिक व व्यापारिक कारोबार भी चलाते थे या एकबारगी सारी रकम नहीं चुका सकते थे, उन्हें इसे किस्तों में वापस लौटाने की अनुमति दे दी गई।

[2] प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने के काम में तीन परतों, अर्थात् बाहरी, दरमियानी और अन्दरूनी परतों की सफाई की गई थी। 'बाहरी परत' की सफाई का अर्थ है समाज में छिपे हुए प्रतिक्रान्तिकारियों को बेनकाब कर देना; 'दरमियानी परत' की सफाई का अर्थ है हमारी फौजी यूनिटों और सरकारी संस्थाओं में छिपे हुए प्रतिक्रान्तिकारियों को बेनकाब कर देना; और 'अन्दरूनी परत' की सफाई का अर्थ है हमारी पार्टी के भीतर छिपे हुए प्रतिक्रान्तिकारियों को बेनकाब कर देना।

[3] 1951 के पार्टी-सुदृढ़ीकरण के दौरान पार्टी-सदस्यों का वर्गीकरण चार श्रेणियों में किया गया था : पहली श्रेणी में वे लोग थे जो पार्टी-सदस्य बनने के लायक थे; दूसरी श्रेणी में वे लोग थे जो अभी पूरी तरह पार्टी सदस्य बनने लायक नहीं थे या जिनमें अपेक्षाकृत गम्भीर त्रुटियां मौजूद थीं और जिनका नव रूपान्तर करना और जिनकी राजनीतिक चेतना को बुलन्द करना जरूरी था; तीसरी श्रेणी में वे निष्क्रिय और पिछड़े हुए तत्व थे जो एक पार्टी-सदस्य के लिए निर्धारित प्रतिमान तक नहीं पहुंच पाए थे; तथा चौथी श्रेणी में वे विजातीय वर्ग-तत्व, गद्दार, राजनीतिक सट्टेबाज और पतित तत्व थे जो मौका पाकर पार्टी के भीतर घुस आए थे।

[4] 'चट्टानें हटाने' का नारा 1948 में मुक्त क्षेत्रों में भूमि-सुधार और पार्टी सुदृढ़ीकरण के दौरान ल्यू शाओ-ची ने पेश किया था। उन्होंने देहातों के कार्यकर्ताओं की भारी संख्या पर यह लांछन लगाया था कि वे किसानों को दबाने वाली 'चट्टानें' हैं, तथा उन्हें अपने पद से हटाना और पार्टी से निष्कासित करना चाहा था।

प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने में पार्टी की जनदिशा पर अमल करना जरूरी है

मई 1951

1. प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने का आन्दोलन, जिसे आजकल समूचे देश में चलाया जा रहा है, एक महान, तीक्ष्ण और जटिल संघर्ष है। इस काम में जो कार्यदिशा हर जगह कारगर साबित हुई है, वह है पार्टी की जनदिशा। इसका मतलब है : नेतृत्व-कार्य को पार्टी कमेटियों के जरिए चलाना, समस्त पार्टी-सदस्यों को गोलबन्द करना, जन-समुदाय को गोलबन्द करना, जनवादी पार्टियों और सभी दायरों के गण्यमान्य व्यक्तियों को शामिल करना, एकीकृत योजना बनाना, एकीकृत कार्यवाही करना, जिन व्यक्तियों को गिरफ्तार किया जाना हो या जिनका वध किया जाना हो उनकी नाम-सूची की सख्ती से जांच करना, संघर्ष की विभिन्न अवस्थाओं की कार्यनीति पर ध्यान देना, व्यापक रूप से प्रचार करना व शिक्षित करना (नाना प्रकार के सम्मेलनों, कार्यकर्ता मीटिंगों, बैठकों और आम रैलियों का आयोजन करना, जिनमें पीड़ित लोग इलजाम लगा सकें, और अपराधों के प्रमाणों का प्रदर्शन किया जा सके, तथा फिल्मों, लालटेन-स्लाइडों, रंगमंचीय अभिनय, समाचार-पत्रों, पुस्तिकाओं और पर्चों के जरिए प्रचार करना, ताकि प्रत्येक परिवार और प्रत्येक व्यक्ति को इस आन्दोलन की जानकारी प्राप्त हो जाय), बन्द दरवाजों के भीतर काम करने और गुपचुप ढंग से काम करने के तरीके को तिलांजलि देना तथा उतावलेपन के रुझान का दृढ़ता से विरोध करना। जहां कहीं इस कार्यदिशा पर पूर्ण रूप से अमल किया गया है, वहां का काम पूर्ण रूप से सही है। जहां कहीं इस कार्यदिशा पर अमल नहीं किया गया, वहां का काम गलत है। जहां कहीं इस कार्यदिशा पर आम तौर पर अमल किया गया है लेकिन पूर्ण रूप से अमल नहीं किया गया, वहां का काम आमतौर पर सही है लेकिन पूर्ण रूप से सही नहीं है। हमें विश्वास है कि यह कार्यदिशा प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने के संघर्ष को और अधिक गहराई तक ले जाने तथा उसमें पूर्ण विजय प्राप्त करने की गारण्टी है। आने वाले दिनों में यह जरूरी है कि प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने में इस कार्यदिशा पर पूर्ण रूप से अमल किया जाय। यहां सबसे महत्वपूर्ण बात है उन व्यक्तियों की नाम सूची की सख्ती से जांच करना जिन्हें गिरफ्तार किया जाना हो या जिनका वध किया जाना हो और व्यापक रूप से प्रचार करने व शिक्षित करने का काम बखूबी करते रहना। इन दोनों कामों को अच्छी तरह करके गलतियों से बचा जा सकेगा।

तीसरे राष्ट्रीय सार्वजनिक सुरक्षा सम्मेलन के प्रस्ताव के मसौदे का संशोधन करते समय माओ त्सेतुङ द्वारा दी गई हिदायतें।

2. वध किए जाने वाले प्रतिक्रान्तिकारियों की संख्या को एक निश्चित अनुपात में सीमित रखा जाना चाहिए। यहां उसूल यह है कि उन व्यक्तियों को जिन्होंने खूनी अपराध किए हैं या अन्य अत्यन्त गम्भीर अपराध किए हैं और जिनका वध किए बिना जनता का रोष शान्त नहीं किया जा सकता, तथा उन व्यक्तियों को जिन्होंने राष्ट्रीय हितों को बेहद गम्भीर नुकसान पहुंचाया है, बिना किसी हिचकिचाहट के मौत की सजा दे दी जानी चाहिए और उनका अविलम्ब वध कर दिया जाना चाहिए। मौत की सजा पाने लायक उन अपराधियों के प्रति, जिन्होंने खूनी अपराध न किए हों और जिनसे जन-समुदाय बेहद नफरत न करता हो, अथवा जिन्होंने राष्ट्रीय हितों को गम्भीर नुकसान तो पहुंचाया हो लेकिन बेहद गम्भीर नुकसान न पहुंचाया हो, यह नीति अपनाई जानी चाहिए कि उन्हें मौत की सजा देने की घोषणा तो कर दी जाय, लेकिन उन्हें दो साल की मोहलत दे दी जाय तथा इस अवधि के दौरान उन्हें श्रम करने के लिए मजबूर किया जाय और इसके जरिए उनके आचरण को परखा जाय। इसके अलावा यह भी स्पष्ट रूप से निर्धारित कर दिया जाना चाहिए कि ऐसे लोगों को किसी भी हालत में गिरफ्तार न किया जाए जिनके मामले गिरफ्तारी की दृष्टि से हाशिए पर हैं, और इसके विपरीत कार्यवाही करना गलत होगा, तथा यह कि ऐसे लोगों का किसी भी हालत में वध न किया जाए जिनके मामले मृत्यु-दण्ड की दृष्टि से हाशिए पर हैं, और इसके विपरीत कार्यवाही करना भी गलत होगा।

3. प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने के आन्दोलन के उभार के दौरान "वामपंथी" भटकावों की रोकथाम करने के लिए यह फैसला किया गया है कि 1 जून से समूचे देश के सभी स्थानों में, जिनमें ऐसे स्थान भी शामिल हैं जहां अभी तक बहुत कम व्यक्तियों का वध किया गया है, गिरफ्तारी का अनुमोदन करने का अधिकार बिना किसी अपवाद के प्रिफेक्चर प्राधिकरणों को वापस लौटा दिया जाएगा और मृत्यु-दण्ड का अनुमोदन करने का अधिकार बिना किसी अपवाद के प्रान्तीय प्राधिकरणों को वापस लौटा दिया जाएगा, तथा प्रान्तीय राजधानी से दूर के स्थानों में ऐसे मामलों को निपटाने के लिए उनके द्वारा अपने प्रतिनिधि भेजे जाएंगे। इस फैसले को बदलने की मांग करने की इजाजत किसी भी स्थान को नहीं है।

4. अब से यह जरूरी है कि 'दरमियानी परत' और 'अन्दरूनी परत' में छिपे हुए प्रतिक्रान्तिकारियों को योजनाबद्ध रूप से छांटकर निष्कासित करने का काम शुरू कर दिया जाए। केन्द्रीय कमेटी के निदेशानुसार यह फैसला किया गया है कि इस वर्ष ग्रीष्म और शरद में दोष-निवारण के रूप में उन तमाम कर्मचारियों की, जिन्हें मुक्ति के समय काम पर रहने दिया गया था और उन बुद्धिजीवियों की जिन्हें अभी-अभी हमारे काम में शामिल किया गया है, एक प्रारम्भिक जांच की जाएगी। इसका मकसद है परिस्थिति की थाह लेना और कुछ विशिष्ट मामलों को निपटा देना। इसका तरीका है प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने के बारे में दस्तावेजों का अध्ययन करना, और उपरोक्त कर्मचारियों व बुद्धिजीवियों में से केवल उन लोगों का (सभी लोगों का नहीं), जिनका रिकार्ड सन्देहास्पद है, आवाहन करना कि वे सच्चाई व ईमानदारी का रवैया अपनाएं, अपने पिछले इतिहास का स्पष्ट विवरण दें और अब तक गुप्त रखी गई बातों को खोल दें। 'अपने बारे में स्पष्टीकरण' के इस आन्दोलन का कार्यभार सम्बन्धित संगठन के नेता को उठा लेना चाहिए; आन्दोलन में स्वेच्छा का उसूल

अपनाया जाना चाहिए और जोर जबरदस्ती का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। प्रत्येक संगठन के लिए इसकी अवधि कम होनी चाहिए और उसे बढ़ाया नहीं जाना चाहिए। इसके लिए अपनाई जाने वाली कार्यनीति है बहुसंख्या को अपने पक्ष में कर लेना और अल्पसंख्या को अलगाव में डाल देना तथा जाड़ों में और अधिक जांच की तैयारी करना। यह जांच पहले नेतृत्वकारी संस्थानों, सार्वजनिक सुरक्षा संस्थानों और अन्य ममस्थलवर्ती विभागों में की जानी चाहिए, और बाद में उनमें प्राप्त अनुभवों का प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए। सरकारी विभागों, स्कूलों और कारखानों में ऐसी जांच करते समय यह जरूरी है कि इस काम की जिम्मेदारी उठाने वाली कमेटियों में गैर-पार्टी व्यक्तियों को भी शामिल किया जाए, ताकि पार्टी-सदस्य अलगाव में पड़कर कार्यवाही करने से बच सकें।

5. प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने के वर्तमान महान संघर्ष में यह जरूरी है कि समूचे देश में हर जगह जन-समुदाय के बीच सार्वजनिक सुरक्षा कमेटियों की स्थापना की जाय। ऐसी कमेटियों को देहातों में प्रत्येक श्याङ के लोगों द्वारा तथा शहरों में प्रत्येक विभाग व संगठन, स्कूल, कारखाने और मुहल्ले के लोगों द्वारा चुना जाना चाहिए। कमेटी के सदस्यों की संख्या कम से कम तीन और अधिक से अधिक ग्यारह होनी चाहिए और उसमें विश्वसनीय गैर-पार्टी देशभक्तों को शामिल किया जाना चाहिए, ताकि वह सार्वजनिक सुरक्षा की हिफाजत करने के लिए एक संयुक्त मोर्चे जैसा संगठन बन जाय। ऐसी कमेटियों पर बुनियादी स्तर की सरकार और सार्वजनिक सुरक्षा संस्थानों के नेतृत्व में, प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने, देशद्रोहियों व जासूसों की रोकथाम करने और राष्ट्रीय व सार्वजनिक सुरक्षा की हिफाजत करने में जन सरकार को सहायता देने की जिम्मेदारी है। यह जरूरी है कि ऐसी कमेटियों की स्थापना समुचित मार्गदर्शन के साथ केवल उन देहाती इलाकों में की जाय जहां भूमि सुधार का काम पूरा हो चुका है और केवल उन शहरों में की जाय जहां प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने का काम सुचारु रूप से चलाया जा रहा है, ताकि बुरे तत्वों को मौका पाकर इनके अन्दर न घुसने दिया जाए।

प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करते समय अविचल रूप से, अचूकपन के साथ और निर्दयतापूर्वक प्रहार करो

दिसम्बर 1950 – सितम्बर 1951

1

कृपया आप लोग इस बात पर ध्यान दें कि प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करते समय अविचल रूप से, अचूकपन के साथ और निर्दयतापूर्वक प्रहार किया जाए।

(19 दिसम्बर 1950)

2

पश्चिमी हुनान की 21 काउंटियों में डाकुओं के सरगनाओं, स्थानीय निरंकुश तत्वों और खुफिया एजेंटों के एक जत्थे का वध किया जा चुका है और इस वर्ष स्थानीय प्राधिकरणों द्वारा उनके एक और जत्थे का वध कर दिया जाएगा। मेरे विचार से ऐसी कार्यवाही निहायत जरूरी है, क्योंकि सिर्फ इसी तरह हम दुश्मन की हेकड़ी को धूल में मिला सकेंगे और जनता के हौसले को बुलन्द कर सकेंगे। अगर हम कमजोरी और ढुलमुलपन दिखाएंगे, अगर हम सहनशीलता और दयालुता दिखाएंगे, तो इससे जनता को नुकसान पहुंचेगा और हम जन-समुदाय से अलग-थलग हो जाएंगे।

अविचल रूप से प्रहार करने का अर्थ है कार्यनीति पर ध्यान देना। अचूकपन के साथ प्रहार करने का अर्थ है किसी भी व्यक्ति का गलती से वध न करना। निर्दयता पूर्वक प्रहार करने का अर्थ है उन सभी प्रतिक्रियावादियों को दृढ़ता के साथ मौत के घाट उतार देना जो वध के योग्य हैं (बेशक, जो लोग वध के योग्य नहीं हैं उनका वध न करना)। यदि हम किसी भी व्यक्ति का वध गलती से नहीं करेंगे, तो पूंजीपति वर्ग द्वारा हाहाकार मचाए जाने पर भी परेशान नहीं होंगे।

(17 जनवरी 1951)

प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने के आन्दोलन के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए लिखे गए महत्वपूर्ण निदेश।

3

शानतुङ के कुछ स्थानों में शिथिलता नजर आ रही है और कुछ अन्य स्थानों में उतावलेपन की प्रवृत्ति दिखाई दे रही है। कुल मिलाकर कहा जाय तो ये दोनों ही भटकाव देश के सभी प्रान्तों और नगरों में विद्यमान हैं और इन्हें दुरुस्त करने की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। खास तौर पर उतावलेपन की प्रवृत्ति से ज्यादा बड़ा खतरा पैदा होता है। क्योंकि जो लोग शिथिल हैं, उन्हें शिक्षित करके और समझा बुझाकर आखिरकार सक्रिय बनाया जा सकता है, तथा किसी प्रतिक्रान्तिकारी को कुछ दिन पहले या कुछ दिन बाद मौत की सजा देने से ज्यादा अन्तर नहीं पड़ने जा रहा। लेकिन उतावलेपन से काम लेने और गलती से गिरफ्तार करने व वध करने का बहुत बुरा असर पड़ता है। कृपया प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने के काम पर कड़ा नियंत्रण रखें, हर सूरत में सावधानी से काम लें और उतावलेपन के हर भटकाव को जरूर दुरुस्त कर लें। यह निहायत जरूरी है कि हम समस्त प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करें, लेकिन किसी को गलती से गिरफ्तार करने या किसी का गलती से वध करने की कार्यवाही हरगिज नहीं की जानी चाहिए।

(30 मार्च 1951)

4

जिन प्रतिक्रान्तिकारियों को कम्युनिस्ट पार्टी, जन-मुक्ति सेना, जन सरकार के अंगों, शैक्षणिक, औद्योगिक-वाणिज्यिक और धार्मिक दायरों तथा जनवादी पार्टियों व जन-संगठनों में खोज निकाला गया है, उनके बारे में केन्द्रीय कमेटी ने निम्नलिखित फैसला किया है : उन अपराधियों को छोड़कर जो मृत्यु-दण्ड पाने के योग्य नहीं हैं तथा जिन्हें आजीवन कारावास या एक निश्चित अवधि के कारावास की सजा दी जाएगी अथवा सार्वजनिक निरीक्षण व निगरानी में रखा जाएगा, मृत्यु-दण्ड पाने योग्य सभी प्रतिक्रान्तिकारियों में से सिर्फ उन्हीं का वध किया जाएगा जिन्होंने खूनी अपराध किए हों, या जिन्होंने सार्वजनिक रोष भड़काने वाले घोर अपराध किए हों, मसलन बहुत-सी महिलाओं के साथ बलात्कार किया हो या बड़ी तादाद में सम्पत्ति को लूटा हो, अथवा जिन्होंने राष्ट्रीय हितों को बेहद भारी नुकसान पहुंचाया हो, जबकि बाकी लोगों के बारे में यह नीति अपनाई जाएगी कि उन्हें मृत्यु-दण्ड देने की घोषणा तो कर दी जाएगी लेकिन उन्हें दो साल की मोहलत दे दी जाएगी तथा इस अवधि के दौरान उन्हें श्रम करने के लिए मजबूर किया जाएगा और इसके जरिए उनके आचरण को परखा जाएगा। यह एक विवेकपूर्ण नीति है, एक ऐसी नीति है जो हमें गलतियों से बचा सकती है। इसे सभी व्यवसायों के लोगों का समर्थन प्राप्त हो सकता है। यह प्रतिक्रान्तिकारी शक्तियों को विघटित कर सकती है और प्रतिक्रान्तिकारियों का पूरी तरह से सफाया करने के हित में है। इसके अलावा यह श्रमशक्ति को बड़ी संख्या में बचा सकती है, जो हमारे राष्ट्रीय निर्माण के हित में होगा। इसलिए यह एक सही नीति है। अनुमान किया जाता है कि उपरोक्त पार्टी, सरकार व सेना के संगठनों, शैक्षणिक व औद्योगिक-वाणिज्यिक दायरों तथा जन-संगठनों में

खोज निकाले गए मृत्यु-दण्ड पाने योग्य प्रतिक्रान्तिकारियों में ऐसे लोगों की संख्या बेहद कम है, करीब 10 या 20 फीसदी हैं, जिन्होंने खूनी अपराध किए हों, या सार्वजनिक रोष भड़काने वाले अपराध किए हों, अथवा राष्ट्रीय हितों को बेहद भारी नुकसान पहुंचाया हो, जबकि मृत्यु-दण्ड की घोषणा के बाद मोहलत पाने वाले अपराधियों की संख्या सम्भवतः 80 या 90 फीसदी है, जिसका मतलब यह है कि 80 या 90 फीसदी अपराधियों को मृत्यु-दण्ड से बचाया जा सकता है। ये प्रतिक्रान्तिकारी लोग देहातों में डाकुओं के सरगनाओं, पक्के लुटेरों और स्थानीय निरंकुश तत्वों से तथा शहरों में स्थानीय निरंकुश तत्वों, डाकुओं के सरगनाओं, पक्के लुटेरों, गुण्डे-बदमाशों के सरगनाओं और प्रतिक्रियावादी गुप्त सोसायटियों के मुखियों से, तथा राष्ट्रीय हितों को बेहद गम्भीर नुकसान पहुंचाने वाले कुछ खुफिया एजेंटों से भिन्न हैं, क्योंकि उन्होंने ऐसे खूनी अपराध या अन्य घोर अपराध नहीं किए जिनके कारण जन-समुदाय उनसे बेहद नफरत करता हो। उन्होंने राष्ट्रीय हितों को गम्भीर नुकसान पहुंचाया तो जरूर है, लेकिन यह नुकसान बेहद गम्भीर नहीं है। उन्होंने मृत्यु-दण्ड पाने लायक अपराध किए हैं, लेकिन जन-समुदाय को उनसे प्रत्यक्ष हानि नहीं पहुंची। अगर हमने ऐसे लोगों का वध कर दिया, तो जन-समुदाय इसे आसानी से नहीं समझ पाएगा, और हमें समाज के गण्यमान्य व्यक्तियों का पूर्ण समर्थन प्राप्त नहीं होगा; साथ ही हम श्रमशक्ति को बड़ी तादाद में खो बैठेंगे और दुश्मन को विघटित करने का उद्देश्य भी पूरा नहीं कर पाएंगे; इसके अलावा हम इस सवाल पर गलतियां भी कर सकते हैं। यही कारण है कि ऐसे व्यक्तियों के बारे में केन्द्रीय कमेटी ने यह नीति अपनाने का फैसला किया है कि उन्हें मृत्यु-दण्ड देने की घोषणा तो कर दी जाए, लेकिन साथ ही उन्हें मोहलत भी दे दी जाय तथा इस अवधि के दौरान उन्हें श्रम करने के लिए मजबूर किया जाय और इसके जरिए उनके आचरण को परखा जाय। अगर उनमें से कुछ व्यक्ति अपने आचरण को न सुधारें और अपने काले कारनामे लगातार जारी रखें, तो बाद में उनका वध भी किया जा सकता है, क्योंकि पहल हमारे ही हाथ में रहेगी। सभी स्थानीय प्राधिकरणों से यह मांग की जाती है कि वे पार्टी, सरकार व सेना के संगठनों, शैक्षणिक, औद्योगिक-वाणिज्यिक दायरों तथा जन-संगठनों में से खोज निकाले गए प्रतिक्रान्तिकारियों से निपटते समय उपरोक्त उसूल पर अमल करें। जिन बहुत थोड़े से लोगों का वध किया जाना है (उनकी संख्या मृत्यु-दण्ड पाने वाले अपराधियों की संख्या का लगभग 10 या 20 फीसदी है), उनके बारे में एहतियात के तौर पर यह जरूरी है कि उनके मामलों को बिना किसी अपवाद के वृहतर प्रशासनिक क्षेत्रों या वृहत्तर फौजी क्षेत्रों के समक्ष अनुमोदनार्थ प्रस्तुत किया जाय। जहां तक कुछ ऐसे प्रमुख व्यक्तियों का सवाल है जिनका वध करना हमारे संयुक्त मोर्चे के कार्य पर असर डाल सकता है, उनके मामलों के बारे में केन्द्रीय प्राधिकरणों से अनुमोदन प्राप्त करना जरूरी है। इसके अलावा, देहाती इलाकों के प्रतिक्रान्तिकारियों के मामलों में भी हम सिर्फ उन्हीं लोगों का वध करेंगे जिनका वध किए बिना जनता का रोष शान्त नहीं किया जा सकेगा, तथा बिना किसी अपवाद के एक भी ऐसे व्यक्ति का वध नहीं करेंगे, जिसके वध की मांग जनता ने न की हो। उनमें भी कुछ लोगों के प्रति यही नीति अपनाई जानी चाहिए कि उन्हें मृत्यु-दण्ड देने की घोषणा करने के साथ साथ मोहलत भी दे दी जाए। लेकिन ऐसे व्यक्तियों का वध जरूर कर दिया जाए जिनके वध की जनता मांग करती है, ताकि जनता का रोष शान्त किया

जा सके और उत्पादन कार्य में मदद मिल सके।

(8 मई 1951)

5

"दो साल की मोहलत देने" की नीति का यह मतलब हरगिज नहीं है कि उन अपराधियों का भी वध न किया जाय, जिन्होंने खूनी अपराध या अन्य घोर अपराध किए हों और जनता जिनका वध करने की मांग करती हो। ऐसा करना गलत होगा। हमें जिलों और गांवों के कार्यकर्ताओं व जन-समुदाय को स्पष्ट रूप से समझा देना चाहिए कि जनता के रोष को शान्त करने के लिए ऐसे अपराधियों का अवश्य वध कर दिया जाय जिन्होंने जघन्य अपराध किए हों, जिनसे जनता बेहद नफरत करती हो और जिनका वध किए बिना जनता के रोष को शान्त नहीं किया जा सकेगा। सिर्फ ऐसे ही प्रतिक्रान्तिकारियों के प्रति जिनसे जनता बेहद नफरत नहीं करती और जिनका वध करने की मांग नहीं करती मगर जिन्होंने मृत्यु दण्ड पाने योग्य अपराध किए हों, यह नीति अपनाई जा सकती है कि उन्हें मृत्यु दण्ड देने की घोषणा के साथ-साथ दो साल की मोहलत भी दे दी जाय तथा इस अवधि के दौरान उन्हें श्रम करने के लिए मजबूर किया जाय और इसके जरिए उनके आचरण को परखा जाय।

(15 जून 1951)

6

यह जरूरी है कि प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने का समूचा काम विभिन्न स्तरों की पार्टी-कमेटियों के एकीकृत नेतृत्व में किया जाय, तथा सभी सार्वजनिक सुरक्षा संस्थानों और इस काम से सम्बन्धित अन्य संस्थानों के जिम्मेदार कामरेड, हमेशा की ही तरह, पार्टी-कमेटियों के नेतृत्व को दृढ़तापूर्वक स्वीकार करें।

(10 सितम्बर 1951)

'ऊ श्युन की जीवनी' नामक फिल्म से सम्बन्धित वाद-विवाद पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान दो

20 मई 1951

'ऊ श्युन की जीवनी' द्वारा उठाया गया सवाल स्वरूप की दृष्टि से एक बुनियादी सवाल है। छिङ राजवंश के अन्तिम वर्षों में विदेशी हमलावरों और घरेलू प्रतिक्रियावादी सामन्ती शासकों के खिलाफ चीनी जनता के महान संघर्ष के काल में, ऊ श्युन' जैसे व्यक्ति ने सामन्ती आर्थिक आधार या उसके ऊपरी ढांचे का बाल भी बांका करने की कोशिश नहीं की; उल्टे, उसने बड़े पागलपन के साथ सामन्ती संस्कृति का प्रचार किया और इसके अलावा प्रतिक्रियावादी सामन्ती शासकों के तलवे सहलाने में कोई कसर बाकी न रखी, ताकि वह सामन्ती संस्कृति का प्रचार करने के लिए उस ओहदे को हासिल कर सके जो उसे प्राप्त न था। क्या हमें इस तरह के नीचतापूर्ण आचरण का गुणगान करना चाहिए ? क्या हम कभी यह बर्दाश्त कर सकते हैं कि जन-समुदाय में ऐसे नीचतापूर्ण आचरण का गुणगान किया जाय, खास तौर से तब जबकि 'जनता की सेवा करने' का क्रान्तिकारी झण्डा फहराते हुए तथा किसानों के क्रान्तिकारी संघर्ष की असफलता को उल्टी मिसाल के तौर पर इस्तेमाल करते हुए इस तरह का गुणगान किया जाय ? इस तरह के गुणगान की इजाजत देने या उसे बर्दाश्त करने का मतलब है किसानों के क्रान्तिकारी संघर्ष, चीन के इतिहास तथा चीनी राष्ट्र पर कीचड़ उछालने वाले प्रतिक्रियावादी प्रचार की इजाजत देना या उसे बर्दाश्त करना, और इस तरह के प्रचार को उचित मानना।

'ऊ श्युन की जीवनी' नामक फिल्म का प्रकाश में आना और विशेष रूप से ऊ श्युन व इस फिल्म की तारीफ के पुल बांधा जाना इस बात का द्योतक है कि हमारे देश के सांस्कृतिक दायरों में विचारधारात्मक भ्रम किस हद तक फैल चुका है !

अनेक लेखकों का मत है कि इतिहास का विकास पुरातन के स्थान पर नूतन की स्थापना से नहीं, बल्कि पुरातन को विनाश से बचाने के हर सम्भव प्रयत्न के जरिए होता है; वर्ग संघर्ष चलाकर उन प्रतिक्रियावादी सामन्ती शासकों का तख्ता पलटने के जरिए नहीं, जिनका तख्ता पलटना जरूरी है, बल्कि उत्पीड़ित लोगों के वर्ग-संघर्ष का निषेध करने और इन शासकों के सामने घुटने टेकने के जरिए होता है, जैसा कि ऊ श्युन ने किया था। हमारे लेखक इतिहास का अध्ययन करके इस बात का पता लगाने की कोशिश नहीं करते कि चीनी जनता का

'जन दैनिक' के लिए लिखे गए एक सम्पादकीय का संक्षिप्त मजमून।

उत्पीड़न करने वाले दुश्मन कौन थे, और जिन लोगों ने इन दुश्मनों के सामने आत्म समर्पण किया और उनकी सेवा की. उनके अन्दर क्या ऐसी कोई बात मौजूद थी जो प्रशंसा के योग्य है। यही नहीं, वे इस बात का भी पता लगाने की कोशिश नहीं करते कि 1840 के अफीम-युद्ध से अब तक एक शताब्दी से ज्यादा समय में, चीन में समाज की आर्थिक संरचना के कौन से नए-नए रूप, कौन सी नई-नई वर्ग शक्तियां, कौन से नए-नए व्यक्ति और कौन से नए-नए विचार पैदा हुए जिन्होंने समाज की आर्थिक संरचना के पुराने रूपों तथा उनके ऊपरी ढांचों (राजनीति, संस्कृति, आदि) के खिलाफ संघर्ष किया, जिसके जरिए वे यह तय कर सकें कि किस चीज की प्रशंसा व स्तुति की जाय तथा किस चीज की नहीं, और किस चीज की निन्दा की जाय।

कुछ कम्युनिस्टों की ओर, जो यह दावा करते हैं कि उन्होंने मार्क्सवाद को आत्मसात कर लिया है, विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने सामाजिक विकास के इतिहास – ऐतिहासिक भौतिकवाद – की जानकारी तो हासिल कर ली है, लेकिन ठोस ऐतिहासिक घटनाओं, ठोस ऐतिहासिक व्यक्तियों (जैसे ऊ श्युन) और इतिहास की धारा के विपरीत ठोस विचारों (जैसे 'ऊ श्युन की जीवनी' नामक फिल्म और ऊ श्युन के बारे में लिखी गई रचनाओं में व्यक्त विचारों) का सामना होने पर वे अपनी गुण-दोष विवेचन की क्षमता खो बैठते हैं, और कुछ लोगों ने तो इन प्रतिक्रियावादी विचारों के सामने आत्मसमर्पण तक कर दिया है। क्या यह एक तथ्य नहीं है कि प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी विचार जुझारू कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर भी आ घुसे हैं ? कहां है वह मार्क्सवाद जिसे आत्मसात कर लेने का दावा कुछ कम्युनिस्टों ने किया है ?

ऊपर बताए गए कारणों से यह जरूरी हो गया है कि 'ऊ श्यु की जीवनी' नामक फिल्म और ऊ श्युन से सम्बन्धित पुस्तकों और निबन्धों पर वाद-विवाद किया जाय, ताकि इस सवाल के बारे में भ्रामक विचारों को दुरुस्त किया जा सके।

नोट

[1] ऊ श्युन (1838-96) का जन्म शानतुङ प्रान्त के थाङई नामक स्थान में हुआ था। शुरू में वह एक आवारा व्यक्ति था। 'स्कूलों के लिए दान' एकत्रित करने के बहाने वह लोगों से पैसा ठगता फिरता था, उससे अपने लिए जमीन खरीदता रहता था और उसे सूद पर देता रहता था। बाद में वह एक बड़ा जमींदार और सूदखोर बन गया। निरंकुश जमींदारों के साथ मिलकर उसने कुछ तथाकथित 'मुफ्त स्कूल' खोले, जिनमें उसने बड़ी सरगरमी के साथ सामन्ती संस्कृति का प्रचार प्रसार किया और शोषक वर्ग के गुर्गे तैयार किए तथा इस प्रकार बाद के प्रतिक्रियावादी शासकों से प्रशंसा प्राप्त की।

तीन जन आन्दोलनों में प्राप्त महान विजयें

23 अक्तूबर 1951

कमेटी सदस्यों और साथियो,

हमारे जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की पहली राष्ट्रीय कमेटी का तीसरा अधिवेशन अब शुरू हो रहा है। इस अधिवेशन में राष्ट्रीय कमेटी के सदस्यों के अलावा चीनी जन स्वयंसेवकों और जन-मुक्ति सेना के प्रतिनिधि, उद्योग व कृषि के क्षेत्रों में काम करने वाले आदर्श श्रमिकों के प्रतिनिधि और पुराने आधार-क्षेत्रों के प्रतिनिधि, शिक्षा व कला-साहित्य के क्षेत्रों में काम करने वाले कार्यकर्ताओं, उद्योगपतियों व व्यापारियों, विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले विशेषज्ञों, धार्मिक दायरों, अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं, प्रवासी चीनियों, महिलाओं और नौजवानों के प्रतिनिधि तथा प्रान्तीय व म्युनिसिपल सलाहकार समितियों के प्रतिनिधि इत्यादि, और साथ ही बहुत से सरकारी कार्यकर्ता भी विशेष निमंत्रण पर उपस्थित हैं। इस अधिवेशन में भाग लेने वाले सदस्यों और विशेष निमंत्रण पर उपस्थित व्यक्तियों में बहुत से सर्वमान्य युद्ध-वीर तथा आदर्श श्रमिक व कार्यकर्ता भी शामिल हैं। अधिवेशन के आकार व पैमाने से यह पूरी तरह जाहिर हो जाता है कि चीन लोक गणराज्य ने हर मोर्चे पर उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त की हैं और प्रगति की है।

पिछले एक वर्ष में हमने अपने देश में बड़े पैमाने के तीन आन्दोलन, अर्थात अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने का आन्दोलन, भूमि-सुधार आन्दोलन तथा प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने का आन्दोलन चलाए, और महान विजयें प्राप्त कीं। मुख्य भूमि पर बचेखुचे प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने का काम आम तौर पर शीघ्र ही पूरा हो जाएगा। उन इनेगिने स्थानों को छोड़कर जहां अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं रहती हैं, भूमि-सुधार का काम 1952 में पूरा कर लिया जाएगा। अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने के आन्दोलन में समूची चीनी जनता पहले से कहीं ज्यादा व्यापक रूप से एकताबद्ध हो गई है और अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रमणकारी शक्तियों के खिलाफ दृढ़ता से संघर्ष चला रही है। चीनी जनता के महान संकल्प को अभिव्यक्त करते हुए, चीनी जन स्वयंसेवकों ने कोरिया की जन सेना के साथ तालमेल कायम करके, अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा कोरिया जनवादी लोक गणराज्य पर आक्रमण व अधिकार करने और उसके बाद चीन की मुख्य भूमि में अतिक्रमण करने के लिए रची गई पागलपनभरी स्कीम को धूल में मिला दिया है। इस प्रकार कोरिया, चीन, एशिया और दुनिया की शान्तिप्रिय जनता को

चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की पहली राष्ट्रीय कमेटी के तीसरे अधिवेशन में उद्घाटन-भाषण।

प्रोत्साहन मिला है तथा शान्ति की रक्षा करने और आक्रमण का प्रतिरोध करने का उसका आत्म विश्वास बढ़ गया है। हमें वीर चीनी जन स्वयंसेवकों और वीर कोरियाई जन सेना का अभिनन्दन और अभिवादन करना चाहिए !

तीन जन आन्दोलनों में प्राप्त की गई विजयों की बदौलत, तथा विभिन्न स्तरों की जन सरकारों और विविध व्यवसायों की जनता के सम्मिलित प्रयत्नों के फलस्वरूप, हमारे देश में अभूतपूर्व एकता कायम हुई है। तिब्बत की समस्या का शान्तिपूर्ण तरीके से समाधान किया गया है। हमारी राष्ट्रीय प्रतिरक्षा को पहले से ज्यादा शक्तिशाली बनाया गया है। जनता के जनवादी अधिनायकत्व को सुदृढ़ बनाया गया है। हमारी मुद्रा और चीजों के भाव स्थिर रहे हैं, तथा हमारे आर्थिक निर्माण और सांस्कृतिक व शैक्षणिक कार्य को बहाल करने और विकसित करने में भी भारी प्रगति हुई है।

उद्योग और कृषि के मोर्चों पर लगातार विकसित हो रहा उत्पादन बढ़ाने का देशभक्तिपूर्ण आन्दोलन हमारे देश की एक नई और हर्षदायी घटना है। देहातों में भूमि सुधार होने और कारखानों व अन्य कारोबारों में जनवादी सुधार होने के परिणामस्वरूप हमारे मजदूर और किसान उत्पादन बढ़ाने के अपने देशभक्तिपूर्ण प्रयत्नों में अत्यधिक सक्रियता दिखाने में और अपने भौतिक व सांस्कृतिक जीवन में सुधार लाने में समर्थ हो गए हैं। अगर हम मजदूरों व किसानों के साथ एकता कायम करने में तथा उन्हें शिक्षित करने और उन पर भरोसा रखने में निपुण बने रहें, तो उत्पादन बढ़ाने के देशभक्तिपूर्ण आन्दोलन में एक राष्ट्रव्यापी उभार अवश्य आएगा।

हमारे सांस्कृतिक व शैक्षणिक मोर्चे पर तथा सभी किस्म के बुद्धिजीवियों में, केन्द्रीय जन सरकार द्वारा निर्धारित उसूलों के अनुसार आत्म-शिक्षण व आत्म-नव रूपान्तर का एक आन्दोलन व्यापक रूप से चलाया जा रहा है। यह भी हमारे देश में एक नई और हर्षदायी घटना है। राष्ट्रीय कमेटी के दूसरे अधिवेशन के समापन के समय मैंने आलोचना और आत्म-आलोचना के तरीके से आत्म-शिक्षण व आत्म नव रूपान्तर करने का प्रस्ताव रखा था। इस प्रस्ताव को कदम-ब-कदम अमल में लाया जा रहा है। विचारधारात्मक नव रूपान्तर करना, मुख्यत: सभी तरह के बुद्धिजीवियों का विचारधारात्मक नव रूपान्तर करना, सभी क्षेत्रों में जनवादी सुधार का काम पूरा करने और हमारे देश का कदम-ब-कदम औद्योगीकरण करने के लिए एक महत्वपूर्ण शर्त है। इसलिए हम यह कामना करते हैं कि आत्म-शिक्षण और आत्म-नवरूपान्तर का यह आन्दोलन दृढ़ता से आगे बढ़ता हुआ अधिकाधिक बड़ी सफलताएं प्राप्त करता जाए।

सभी तथ्यों से यह साबित होता है कि जनता के जनवादी अधिनायकत्व वाली हमारी व्यवस्था पूंजीवादी देशों की राजनीतिक व्यवस्थाओं से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत हमारे देश की जनता अपनी अपरिमित शक्ति का पूरा-पूरा प्रयोग कर सकती है। और यह शक्ति किसी भी दुश्मन से पराजित नहीं हो सकती।

अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने का महान संघर्ष अभी जारी है और इसे तब तक जारी रखना होगा जब तक अमरीकी सरकार शान्तिपूर्ण समाधान की इच्छा जाहिर न करे। हम किसी भी देश में अतिक्रमण करने का इरादा नहीं रखते;

हम केवल साम्राज्यवादियों द्वारा हमारे देश के खिलाफ किए गए आक्रमण का विरोध करते हैं। जैसा कि सबको मालूम है, अगर अमरीकी फौजों ने हमारे थाइवान पर अधिकार न किया होता, कोरिया जनवादी लोक गणराज्य पर आक्रमण न किया होता और हमारी उत्तर पूर्वी सीमा पर चढ़ाई न की होती, तो इस समय चीनी जनता उनसे लोहा न ले रही होती। लेकिन चूंकि अमरीकी आक्रमणकारियों ने हम पर धावा बोल दिया है, इसलिए हम भी आक्रमण के प्रतिरोध का झण्डा उठाए बिना नहीं रह सकते। यह बिलकुल आवश्यक और पूर्णतया न्यायोचित है, तथा समूचा राष्ट्र जानता है कि बात ऐसी ही है। इस आवश्यक और न्यायोचित संघर्ष में डटे रहने के लिए यह जरूरी है कि हम अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने के अपने प्रयत्नों को लगातार बढ़ाते जाएं तथा चीनी जन स्वयंसेवकों का समर्थन करने के लिए उत्पादन बढ़ाएं और सख्त किफायत करें। यह आज चीनी जनता का केन्द्रीय कार्य है और तदनुसार हमारे वर्तमान अधिवेशन का केन्द्रीय कार्य भी है।

हम बहुत पहले ही यह मत प्रकट कर चुके हैं कि कोरिया की समस्या को शान्तिपूर्ण तरीके से निपटाया जाना चाहिए, और आज भी हमारा यही दृष्टिकोण है। अगर अमरीकी सरकार नाना प्रकार के शर्मनाक उपायों से वार्ता की प्रगति में तोड़फोड़ करने और बाधा डालने के बजाय, जैसा कि उसने विगत काल में किया है, इस समस्या को एक न्यायपूर्ण और युक्तियुक्त आधार पर हल करना चाहती हो, तो यह सम्भव है कि कोरिया में युद्ध-विराम वार्ता सफलतापूर्वक समाप्त हो जाय; अन्यथा यह असम्भव होगा।

चीन लोक गणराज्य की स्थापना से अब तक पिछले दो वर्षों में हमें काम के सभी क्षेत्रों में महान विजयें प्राप्त हुई हैं। ये विजयें हमने उन सभी शक्तियों पर, निर्भर रहकर प्राप्त की हैं जिनके साथ एकता कायम की जा सकती है। देश के भीतर हम मजदूर वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में सभी राष्ट्रीयताओं, जनवादी वर्गों, जनवादी पार्टियों, जन-संगठनों और देशभक्त गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों की सुदृढ़ एकता पर निर्भर रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में, हम शान्ति और जनवाद के खेमे की, जिसका अगुवा सोवियत संघ है, सुदृढ़ एकता तथा समूची दुनिया की शान्तिप्रिय जनता की गहरी सहानुभूति पर निर्भर रहे हैं। यही कारण है कि हमें काम के सभी क्षेत्रों में महान विजयें प्राप्त हुई हैं, और यह हमारे दुश्मनों के अनुमान के बाहर है। हमारे दुश्मन यह सोचते थे, चूंकि नवजात चीन लोक गणराज्य के सामने बहुत सी कठिनाइयां मौजूद हैं और साथ ही वे हमारे खिलाफ आक्रमणकारी युद्ध छेड़ रहे हैं, इसलिए हम अपनी कठिनाइयों पर काबू पाने और आक्रमणकारियों पर जवाबी प्रहार करने में असमर्थ हैं। उनके अनुमान के विपरीत, हम अपनी कठिनाइयों पर काबू पाने और आक्रमणकारियों पर जवाबी प्रहार करने में समर्थ सिद्ध हुए हैं तथा हमें महान विजयें भी प्राप्त हुई हैं। हमारे दुश्मन बड़े अदूरदर्शी हैं, वे यह नहीं देख पाते कि हमारी महान घरेलू व अन्तर्राष्ट्रीय एकता की शक्ति कितनी बड़ी है, तथा यह कि चीन लोक गणराज्य की स्थापना के साथ वह जमाना हमेशा के लिए लद गया है जब विदेशी साम्राज्यवादी चीनी जनता पर सवारी गांठते फिरते थे। और न वे यह देख पाते कि समाजवादी सोवियत संघ, चीन लोक गणराज्य और जनता की लोकशाही वाले देशों के जन्म के कारण, चीन और सोवियत संघ इन दो महान देशों के बीच मैत्री, संश्रय व पारस्परिक सहायता सन्धि के आधार पर स्थापित सुदृढ़ एकता के कारण, शान्ति व जनवाद

के समूचे खेमे की सुदृढ़ एकता के कारण और इस महान खेमे के प्रति दुनिया की व्यापक शान्तिप्रिय जनता की गहरी सहानुभूति के कारण वह जमाना हमेशा के लिए बीत गया है जब साम्राज्यवाद दुनिया पर अपना आधिपत्य जमा सकता था। हमारे दुश्मन यह सब नहीं देख पा रहे और अब भी चीन लोक गणराज्य पर सवारी गांठने और दुनिया पर अपना आधिपत्य जमाने का इरादा रखते हैं। लेकिन, साथियो, मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि उनके मनसूबे पागलपनभरे और बेकार हैं तथा वे कभी पूरे नहीं होंगे। उनकी इच्छा के विपरीत, चीन लोक गणराज्य अत्याचार को बर्दाश्त नहीं करेगा, शान्ति का महान खेमा, जिसका रहनुमा सोवियत संघ है, अतिक्रमण को बर्दाश्त नहीं करेगा, तथा दुनिया की शान्तिप्रिय जनता को धोखा नहीं दिया जा सकेगा। साथियो, सोवियत संघ में महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की विजय से यह निश्चित हो गया था कि दुनिया की जनता अवश्य विजय प्राप्त करेगी, और अब चीन लोक गणराज्य व जनता की लोकशाही वाले देशों की स्थापना के कारण यह सम्भावना और भी सन्निकट आ चुकी है तथा सुनिश्चित हो गई है। यह सच है कि प्रथम विश्वयुद्ध और रूस की अक्तूबर क्रान्ति के बाद के ऐतिहासिक काल में तीन साम्राज्यवादी देशों – जर्मनी, इटली और जापान ने दुनिया में अपना आधिपत्य जमाने की कोशिश की थी; यह बात चीन लोक गणराज्य व जनता की लोकशाही वाले देशों की स्थापना से पहले की है। लेकिन नतीजा क्या हुआ ? क्या यह साबित नहीं हो गया कि इन तीन साम्राज्यवादी देशों के मनसूबे पागलपनभरे और बेकार थे ? क्या नतीजा उनकी इच्छा के ठीक विपरीत नहीं हुआ ? क्या उन तमाम साम्राज्यवादियों को जो अपना आधिपत्य जमाना चाहते थे, मार नहीं गिराया गया ? अब हालात बिलकुल भिन्न हैं; महान चीन लोक गणराज्य की स्थापना हो चुकी है, जनता की लोकशाही वाले देशों की स्थापना हो चुकी है, दुनिया की जनता की राजनीतिक चेतना बुलन्द हो गई है, समूचे एशिया और उत्तरी अफ्रीका में राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष उमड़ने लगे हैं, समूचे साम्राज्यवादी गुट की शक्ति काफी क्षीण हो चुकी है, और भारी महत्त्व की बात यह है कि हमारे घनिष्ठतम संश्रयकारी देश सोवियत संघ की शक्ति बहुत अधिक बढ़ गई है। ऐसी परिस्थिति में, यदि किसी साम्राज्यवादी देश ने जर्मनी, इटली व जापान इन तीन आक्रमणकारियों के पदचिन्हों पर चलने की कोशिश की, तो क्या उसके नतीजे का पहले से ही पूरा अनुमान नहीं लगाया जा सकता ? संक्षेप में, आज से यह दुनिया जनता की दुनिया होनी चाहिए, हर देश की जनता द्वारा अपना शासन खुद चलाया जाना चाहिए, तथा यह एक ऐसी दुनिया हरगिज नहीं होनी चाहिए जिसमें साम्राज्यवाद और उसके गुर्गे निरन्तर मनमाने जुल्म ढा सकें। मुझे उम्मीद है कि हमारे देश की जनता घनिष्ठ रूप से एकताबद्ध हो जाएगी, हमारे संश्रयकारी देश सोवियत संघ के साथ, जनता की लोकशाही वाले तमाम देशों के साथ और दुनिया के उन सभी राष्ट्रों व जनगण के साथ जो हमसे सहानुभूति रखते हैं, घनिष्ठ एकता कायम करेगी, तथा आक्रमण-विरोधी संघर्ष में, हमारे महान देश का निर्माण करने में, और चिरकाल तक विश्व-शान्ति की हिफाजत करने में निरन्तर विजय की ओर अभियान करती रहेगी। साथियो, अगर हमने ऐसा किया, तो मुझे विश्वास है कि हम निश्चित रूप से विजयी होंगे।

"तीन बुराई"-विरोधी और "पांच बुराई"-विरोधी संघर्ष[1] के बारे में

नवम्बर 1951 – मार्च 1952

1

भ्रष्टाचार व फिजूलखर्ची के खिलाफ संघर्ष चलाना समूची पार्टी का एक मुख्य कार्य है, और हम आप लोगों से कह चुके हैं कि इस पर गम्भीरता से ध्यान दें। यह जरूरी है कि हम समूची पार्टी का व्यापक रूप से शुद्धीकरण करें, जिससे भ्रष्टाचार के सभी मामलों का, चाहे वे बड़े हों, मध्य दर्जे के हों या छोटे, मुकम्मिल तौर पर पर्दाफाश किया जा सके, और अपने प्रहार का मुख्य निशाना बड़े-बड़े भ्रष्ट लोगों को बनाएं, जबकि मध्यम दर्जे के और छोटे भ्रष्ट लोगों के प्रति उन्हें शिक्षित करने और उनका नव रूपान्तर करने की नीति अपनाएं, ताकि वे फिर से वैसा आचरण न करें। सिर्फ ऐसा करके ही पूंजीपति वर्ग द्वारा बहुत से पार्टी-सदस्यों के आचरण-भ्रष्ट किए जाने के गम्भीर खतरे को रोका जा सकता है तथा उस स्थिति को दूर किया जा सकता है जिसकी भविष्यवाणी काफी पहले ही सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन में की गई थी, और सिर्फ ऐसा करके ही आचरण-भ्रष्ट किए जाने की रोकथाम करने से सम्बन्धित उस नीति को कार्यान्वित किया जा सकता है, जिसे उक्त अधिवेशन में निर्धारित किया गया था। आप लोग इस बात पर अवश्य ध्यान दें।

(30 नवम्बर 1951)

2

इस तथ्य पर खास ध्यान देना जरूरी है कि पूंजीपति वर्ग द्वारा आचरण भ्रष्ट किए जाने के फलस्वरूप कुछ कार्यकर्ता बुरी तरह भ्रष्टाचार में लगे हुए हैं। ऐसे लोगों को निश्चित रूप से खोज निकालना चाहिए, बेनकाब कर देना चाहिए और सजा देनी चाहिए तथा इसे एक मुख्य संघर्ष समझना चाहिए।

(30 नवम्बर 1951)

---

[1] इन महत्त्वपूर्ण निदेशों का मसौदा कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था।

3

भ्रष्टाचार, फिजूलखर्ची व नौकरशाही के खिलाफ चलाए जाने वाले संघर्ष पर भी प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने के लिए चलाए जाने वाले संघर्ष की ही तरह जोर देना चाहिए। इस संघर्ष में भी जनवादी पार्टियों व विभिन्न व्यवसायों के लोगों समेत व्यापक जन-समुदाय को गोलबन्द कर लेना चाहिए, इस संघर्ष का व्यापक रूप से प्रचार प्रसार करना चाहिए, नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं को व्यक्तिगत जिम्मेदारी सम्भाल लेनी चाहिए और स्वयं भी इस संघर्ष में कूद पड़ना चाहिए तथा लोगों का आवाहन करना चाहिए कि वे खुद ब खुद अपने कसूरों के बारे में बताएं और दूसरे लोगों के कसूरों के बारे में रिपोर्ट दें। जिनके कसूर हल्के हों, उनकी आलोचना करनी चाहिए और उन्हें शिक्षित करना चाहिए, जिनके कसूर गम्भीर हों, उन्हें पदच्युत कर देना चाहिए, दण्ड देना चाहिए, कैद की सजा (परिश्रम के जरिए सुधारने के लिए) देनी चाहिए, और उनमें अत्यन्त गम्भीर अपराध करने वाले भ्रष्ट व्यक्तियों को तो गोली से उड़ा देना चाहिए। सिर्फ इसी तरह इस सवाल को हल किया जा सकता है।

(8 दिसम्बर 1951)

4

देश के सभी शहरों में, और सबसे पहले बड़े व मझोले शहरों में, हमें मजदूर वर्ग पर निर्भर रहकर और कानून का पालन करने वाले पूंजीपतियों व अन्य नागरिकों के साथ एकता कायम करके उन पूंजीपतियों के विरुद्ध बड़े पैमाने पर दृढ़तापूर्वक और मुकम्मिल तौर पर संघर्ष चलाना चाहिए जिन्होंने रिश्वत देने, टैक्स-चोरी करने, राजकीय सम्पत्ति की चोरी करने, सरकारी अनुबन्धों में धोखाधड़ी करने, और राज्य की आर्थिक सूचनाओं की चोरी करने की कार्यवाहियों के जरिए कानून का उल्लंघन किया हो। हमें इस संघर्ष का तालमेल पार्टी, सरकार, सेना व जन-संगठनों के अन्दर भ्रष्टाचार, फिजूलखर्ची व नौकरशाही के विरुद्ध चलाए जाने वाले संघर्ष के साथ कायम करना चाहिए। ऐसा करना बहुत आवश्यक और अत्यन्त समयोचित है। इस संघर्ष में, यह जरूरी है कि सभी शहरों के पार्टी संगठन विभिन्न वर्गों व जन-समुदाय की शक्तियों का बड़ी सावधानी के साथ विन्यास करें, अन्तर्विरोधों से फायदा उठाने, विभाजित करने, बहुसंख्या के साथ एकता कायम करने और अल्पसंख्या को अलगाव में डालने की कार्यनीति अपनाएं, जिससे संघर्ष के दौरान "पांच बुराइयों" के खिलाफ एक संयुक्त मोर्चा जल्दी ही कायम किया जा सके। एक बड़े शहर में, जब "पांच बुराई"-विरोधी संघर्ष जोरों से चलाया जा रहा हो तो ऐसा संयुक्त मोर्चा लगभग तीन हफ्ते के अन्दर कायम किया जा सकता है। जहां एक बार यह संयुक्त मोर्चा कायम हो गया, तो अत्यन्त जघन्य अपराध करने वाले प्रतिक्रियावादी पूंजीपति अलगाव की स्थिति में पड़ जाएंगे, और हमारा राज्य एक ऐसी सुदृढ़ स्थिति में पहुंच जाएगा जिसमें ज्यादा विरोध का सामना किए बिना ही उन्हें तरह तरह की यथोचित सजा दी जा सकेगी, जैसे जुर्माना करना, सम्पत्ति जब्त करना, गिरफ्तार करना, कैद करना या वध करना, इत्यादि। हमारे सभी बड़े शहरों को (जिनमें प्रान्तीय राजधानियां भी

शामिल हैं) फरवरी के शुरू के दस दिनों में "पांच बुराई"-विरोधी संघर्ष शुरू कर देना चाहिए। कृपया इसका फौरन प्रबन्ध करें।

(26 जनवरी 1952)

5

(1) "पांच बुराई" विरोधी आन्दोलन में औद्योगिक-वाणिज्यिक इकाइयों के मामलों को निपटाने के लिए बुनियादी उसूल इस प्रकार हैं : पिछले अपराधों के प्रति रियायती और नए अपराधों के प्रति कठोर रुख अपनाना (मिसाल के लिए, आम तौर पर केवल 1951 में की गई टैक्स-चोरी की रकम ही वापस ली जाएगी); बहुसंख्या के साथ रियायत और अल्पसंख्या के साथ कठोर बरताव करना; जिन लोगों ने अपने अपराधों को मान लिया हो उनके साथ रियायती बरताव करना और जो लोग अपने अपराधों को मानने से इनकार करें उनके साथ कठोर बरताव करना; उद्योग के साथ रियायती और वाणिज्य के साथ कठोर बरताव करना; आम वाणिज्य के साथ रियायती और सट्टेबाजी के साथ कठोर बरताव करना। विभिन्न स्तरों की पार्टी कमेटियों से मांग की जाती है कि वे "पांच बुराई"-विरोधी आन्दोलन में उपरोक्त उसूलों पर कायम रहें।

(2) "पांच बुराई"-विरोधी आन्दोलन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए निजी औद्योगिक-वाणिज्यिक इकाइयों का विभाजन इन पांच श्रेणियों में किया जाना चाहिए : कानून का पालन करने वाली इकाइयां, बुनियादी तौर पर कानून का पालन करने वाली इकाइयां, आंशिक रूप से कानून का पालन करने और आंशिक रूप से उसका उल्लंघन करने वाली इकाइयां, गम्भीर रूप से कानून का उल्लंघन करने वाली इकाइयां, तथा पूर्ण रूप से कानून का उल्लंघन करने वाली इकाइयां। जहां तक बड़े शहरों का सवाल है, उनमें पहली, दूसरी और तीसरी श्रेणी की इकाइयों की संख्या कुल इकाइयों की लगभग 95 प्रतिशत है, जबकि चौथी व पांचवीं श्रेणी की इकाइयों की संख्या कुल इकाइयों की लगभग 5 प्रतिशत है। विभिन्न बड़े शहरों में इन इकाइयों का प्रतिशत लगभग एक जैसा है, हालांकि उसमें छोटा-मोटा फर्क अवश्य है। मझोले शहरों में इन इकाइयों का प्रतिशत उपरोक्त प्रतिशत से काफी भिन्न है।

(3) इन पांच श्रेणियों में पूंजीपति और गैर-पूंजीपति स्वतंत्र दस्तकार तथा परिवार-संचालित धन्धों में लगे व्यापारी शामिल हैं, लेकिन उनमें खोमचे रेहड़ी वाले शामिल नहीं हैं। बड़े शहरों में खोमचे-रेहड़ी वालों के मामले को फिलहाल छोड़ दिया जा सकता है, लेकिन स्वतंत्र दस्तकारों और परिवार-संचालित धन्धों में लगे व्यापारियों के मामले को निपटा दिया जाय तो अच्छा होगा। मझोले शहरों के लिए यह अच्छा होगा कि इस आन्दोलन में स्वतंत्र दस्तकारों व व्यापारियों और खोमचे-रेहड़ी वालों, इन दोनों के मामले को निपटा दिया जाय। हमारे बड़े व मझोले शहरों में ऐसे स्वतंत्र दस्तकारों व व्यापारियों की संख्या बहुत ज्यादा है जो मजदूरों या दुकान-कर्मचारियों को नियुक्त नहीं करते (हालांकि उनमें से कुछ लोगों ने नौसिखियों को रखा हुआ है)। उनमें बहुत से लोग ऐसे हैं जो कानून का पालन करते हैं और बहुत से लोग

ऐसे हैं जो बुनियादी तौर पर कानून का पालन करते हैं लेकिन आंशिक रूप से उसका उल्लंघन करते हैं (यानी उनके मामले छोटे-मोटे हैं, जैसे छोटे पैमाने पर टैक्स चोरी करना), तथा कम लोग ऐसे हैं जो आंशिक रूप से तो कानून का पालन करते हैं, लेकिन आंशिक रूप से उसका उल्लंघन भी करते हैं, यानी अपेक्षाकृत बड़े पैमाने पर टैक्स-चोरी करते हैं। वर्तमान "पांच बुराई"-विरोधी आन्दोलन में यह जरूरी है कि हम छोटे पूंजीपतियों की एक काफी बड़ी संख्या के मामले को निपटा लें और उनके बारे में निर्णय करें, तथा साथ ही, जहां तक हो सके, उन स्वतंत्र दस्तकारों व व्यापारियों के मामले को भी निपटाने की कोशिश करें और उनके बारे में फैसले करें, जिनकी संख्या लगभग छोटे पूंजीपति के बराबर है। ऐसा करना वर्तमान "पांच बुराई" विरोधी आन्दोलन और भावी आर्थिक निर्माण के लिए लाभदायक होगा। छोटे पूंजीपति और स्वतंत्र दस्तकार व व्यापारी आम तौर पर गम्भीर अपराधों से मुक्त हैं, और उनके बारे में निर्णय करना कठिन नहीं है। ऐसा करने से हमें व्यापक जन-समुदाय का समर्थन प्राप्त होगा। फिर भी यदि इनेगिने शहर यह समझते हों कि उनके लिए पहले औद्योगिक-वाणिज्यिक इकाइयों के मामले के बारे में निर्णय करना और बाद में स्वतंत्र दस्तकारों व व्यापारियों के मामले के बारे में निर्णय करना ज्यादा सुविधाजनक होगा, तो वे ऐसा भी कर सकते हैं।

(4) शहरों की वास्तविक स्थिति के अनुसार हमने औद्योगिक- वाणिज्यिक इकाइयों को पहले की चार श्रेणियों के बजाय पांच श्रेणियों में पुनर्विभाजित करने का निर्णय किया है, यानी कानून का पालन करने वाली इकाइयों को इन दो श्रेणियों – कानून का पालन करने वाली इकाइयों और बुनियादी तौर पर कानून का पालन करने वाली इकाइयों में विभाजित कर दिया गया है, जबकि बाकी तीन श्रेणियों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। पेकिङ की पचास हजार औद्योगिक-वाणिज्यिक इकाइयों (इनमें स्वतंत्र दस्तकार व व्यापारी शामिल हैं लेकिन खोमचे-रेहड़ी वाले शामिल नहीं हैं) में लगभग 10 प्रतिशत ऐसी हैं जो कानून का पालन करती हैं, 60 प्रतिशत ऐसी हैं जो बुनियादी तौर पर कानून का पालन करती हैं, 25 प्रतिशत ऐसी हैं जो आंशिक रूप से कानून का पालन और आंशिक रूप से उसका उल्लंघन करती हैं, 4 प्रतिशत ऐसी हैं जो गम्भीर रूप से कानून का उल्लंघन करती हैं तथा 1 प्रतिशत ऐसी हैं जो पूर्ण रूप से कानून का उल्लंघन करती हैं। पूर्ण रूप से कानून का पालन करने वाली इकाइयों और बुनियादी तौर पर कानून का पालन करने वाली ऐसी इकाइयों के बीच जिनके मामले छोटे-मोटे हैं, फर्क करना तथा इससे भी आगे बढ़कर बुनियादी तौर पर कानून का पालन करने वाली इकाइयों में भी छोटे पैमाने पर टैक्स-चोरी करने वाली इकाइयों और अपेक्षाकृत बड़े पैमाने पर टैक्स-चोरी करने वाली इकाइयों के साथ अलग-अलग तरह का बरताव करना बहुत शिक्षाप्रद साबित हो सकता है।

(5) कुछ बड़े व मझोले नगरों की पार्टी कमेटियों ने "पांच बुराई"-विरोधी आन्दोलन बड़ी जल्दबाजी के साथ छेड़ दिया, जबकि वे विभिन्न श्रेणियों की औद्योगिक-वाणिज्यिक इकाइयों की स्थिति से बिलकुल अनभिज्ञ थीं और इन इकाइयों के साथ अलग-अलग तरह का बरताव करने की कार्यनीति को भी साफ तौर पर नहीं समझती थीं, तथा जबकि ट्रेड यूनियनों व सरकार द्वारा भेजे गए कार्यदलों (या जांच-पड़ताल ग्रुपों) का संगठन व प्रशिक्षण बड़ी लापरवाही से किया गया था। इसके फलस्वरूप कुछ गड़बड़ी पैदा हो गई है। आशा है कि

इन शहरों की पार्टी कमेटियां इस स्थिति पर ध्यान देंगी और उसे जल्दी ही सुधार लेंगी। इसके अलावा, कानून का उल्लंघन करने वाली औद्योगिक-वाणिज्यिक इकाइयों की जांच-पड़ताल का काम भी नगर पार्टी कमेटी व नगर सरकार के कड़े नियंत्रण में किया जाना जरूरी है। दूसरे संगठनों को इनकी जांच-पड़ताल करने के लिए अपनी मरजी से आदमी भेजने की इजाजत नहीं है, तथा पूंजीपतियों से पूछताछ करने के लिए उन्हें अपने दफ्तर में घसीट लाने की इजाजत तो किसी भी सूरत में नहीं है। चाहे "तीन बुराई"-विरोधी आन्दोलन हो या "पांच बुराई"-विरोधी आन्दोलन, लोगों से जुर्म कबूल करवाने के लिए शारीरिक यंत्रणा देने की बिलकुल मनाही है, तथा आत्महत्या की घटनाओं की रोकथाम करने के लिए कड़े कदम उठाए जाने आवश्यक हैं। जहां आत्महत्या की घटनाएं हो चुकी हों, वहां भविष्य में इस तरह की घटनाओं की रोकथाम करने के लिए फौरन कदम उठाए जाने चाहिए, जिससे इस बात की गारण्टी की जा सके कि दोनों आन्दोलन सही रास्ते पर और स्वस्थ रूप से विकसित होते रहेंगे तथा उनमें पूर्ण विजय प्राप्त की जाएगी।

(6) "तीन बुराई"-विरोधी और "पांच बुराई"-विरोधी आन्दोलन फिलहाल काउंटियों, जिलों और क्षयाङों में नहीं चलाए जाएंगे। उनमें ये आन्दोलन भविष्य में कब और कैसे चलाए जाएंगे, इसके बारे में केन्द्रीय कमेटी बाद में सूचित करेगी। जिन इनेगिने काउंटी-केन्द्रों में "पांच बुराई"-विरोधी आन्दोलन को और जिन इनेगिने जिलों में "तीन बुराई"-विरोधी आन्दोलन को प्रयोग के तौर पर शुरू किया गया है, वहां इन पर सख्त नियंत्रण रखा जाना चाहिए और इनसे वसन्त की खेतीबाड़ी और अन्य आर्थिक गतिविधियों में बाधा नहीं पड़नी चाहिए। "पांच बुराई"-विरोधी आन्दोलन सभी मझोले शहरों में एक ही समय में नहीं चलाया जाना चाहिए, बल्कि अलग-अलग समूहों में और सख्त नियंत्रण में चलाया जाना चाहिए।

(5 मार्च 1952)

6

"पांच बुराई"-विरोधी संघर्ष के दौरान और उसके बाद हमें नीचे लिखे मकसद हासिल कर लेने चाहिए :

(1) निजी उद्योग व वाणिज्य की स्थिति की बिलकुल स्पष्ट जानकारी प्राप्त कर लेना, जिससे पूंजीपति वर्ग के साथ एकता कायम करने और उसे नियंत्रित करने तथा देश में योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था का विकास करने का काम ज्यादा अच्छी तरह किया जा सके। परिस्थिति की स्पष्ट जानकारी प्राप्त किए बिना योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था असम्भव है।

(2) मजदूर वर्ग व पूंजीपति वर्ग के बीच स्पष्ट विभाजन-रेखा खींचना, तथा ट्रेड यूनियनों में भ्रष्टाचार को और जन-समुदाय से अलग-अलग रहने वाली नौकरशाही को खत्म कर देना और पूंजीपतियों के गुर्गों का सफाया कर देना। ऐसे गुर्गे तथा श्रम और पूंजी के बीच दोलायमान रहने वाले मध्यपंथी तत्त्व हर जगह की ट्रेड यूनियनों में मौजूद हैं। यह जरूरी है कि हम संघर्ष के दौरान मध्यपंथी तत्त्वों को शिक्षित करें और अपने पक्ष में कर लें, तथा पूंजीपतियों के उन गुर्गों को जिन्होंने गम्भीर अपराध किए हों, बाहर निकाल दें।

(3) व्यावसायिक परिषदें और उद्योग व वाणिज्य संघों को पुनर्गठित करना, इन संगठनों के नेतृत्वकारी निकायों से उन लोगों को बाहर निकाल देना जो पूरी तरह ''पांच बुराइयों'' के दोषी हों या जो पूरी तरह बदनाम हो चुके हों, तथा उनके स्थान पर ऐसे लोगों को शामिल करना जो ''पांच बुराई''-विरोधी आन्दोलन के दौरान अपेक्षाकृत अच्छे साबित हो चुके हों। इन संगठनों में कानून का पूर्ण रूप से उल्लंघन करने वाले लोगों को छोड़कर विभिन्न श्रेणियों के उद्योगपतियों व व्यापारियों के प्रतिनिधियों का होना जरूरी है।

(4) चीनी जनवादी राष्ट्रीय निर्माण संघ को सुव्यवस्थित करने में उसके नेताओं की सहायता करना, उन लोगों को बाहर निकाल देना जो पूरी तरह ''पांच बुराइयों'' के दोषी हों या जनता की नजरों में गिर चुके हों, तथा इस संगठन में अनेक अपेक्षाकृत अच्छे लोगों को भरती कर लेना, जिससे वह एक ऐसा राजनीतिक संगठन बन जाए जो पूंजीपति वर्ग, मुख्यतया औद्योगिक पूंजीपति वर्ग के न्यायोचित हितों का प्रतिनिधित्व कर सके तथा मुश्तरका प्रोग्राम की भावना और ''पांच बुराई''-विरोधी संघर्ष के उसूलों के अनुरूप पूंजीपति वर्ग को शिक्षित कर सके। पूंजीपतियों के विभिन्न ग्रुपों के गुप्त संगठनों, जैसे ''बृहस्पतिवार प्रीतिभोज क्लब''[2] को भंग करने के लिए कदम उठाना जरूरी है।

(5) ''पांच बुराइयों'' का सफाया कर देना और तिजारती सट्टेबाजी को खत्म कर देना, जिससे समूचा पूंजीपति वर्ग राज्य के कानूनों व फरमानों का पालन करे तथा ऐसी औद्योगिक वाणिज्यिक गतिविधियों में लग जाए जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था व जन जीविका के लिए फायदेमन्द हों। राज्य द्वारा निर्धारित सीमाओं के अन्दर निजी उद्योग का विकास करना (बशर्ते कि पूंजीपति इसके इच्छुक हों और यह कार्यवाही मुश्तरका प्रोग्राम के अनुरूप हो), तथा निजी वाणिज्य को कदम-ब-कदम कम कर देना। निजी उद्योग-धन्धों के माल की बिक्री व आपूर्तियों पर इजारेदारी कायम करने की राजकीय योजना का पैमाना प्रति वर्ष बढ़ाते जाना तथा साथ ही निजी उद्योग व वाणिज्य के बारे में हमारी योजना के दायरे का प्रति वर्ष विस्तार करते जाना। निजी पूंजी के लिए मुनाफे का एक नया प्रतिशत निर्धारित करना, जिससे उसे कुछ मुनाफा तो मिल सके लेकिन हद से ज्यादा मुनाफा न मिल सके।

(6) गुप्त बही खाते रखने की व्यवस्था को खत्म कर देना, हिसाब-किताब का ब्यौरा सार्वजनिक रूप से पेश करना, तथा कदम-ब-कदम एक ऐसी व्यवस्था कायम करना जिसमें मजदूर व दुकान-कर्मचारी उत्पादन व प्रबन्ध के काम का निरीक्षण करें।

(7) टैक्स चोरी की रकम वापस लेने, चुराई गई राजकीय सम्पत्ति वापस लेने, जुर्माना लेने और सम्पत्ति जब्त करने के उपायों के जरिए राज्य व जनता की अधिकांश आर्थिक क्षति की पूर्ति करना।

(8) बड़े व मझोले आकार के सभी निजी कारोबारों के मजदूरों व दुकान-कर्मचारियों में पार्टी की शाखाएं स्थापित करना और पार्टी के कार्य को सुदृढ़ बनाना।

(23 मार्च 1952)

नोट

[1] ''तीन बुराई'' विरोधी आन्दोलन भ्रष्टाचार, फिजूलखर्ची व नौकरशाही के खिलाफ एक संघर्ष था, जिसे 1951 के अन्त में सरकारी विभागों व राजकीय कारोबारों के कर्मचारियों के बीच चलाया गया था। ''पांच बुराई''-विरोधी आन्दोलन रिश्वत देने, टैक्स-चोरी करने, राजकीय सम्पत्ति की चोरी करने, सरकारी अनुबन्धों में धोखाधड़ी करने और राज्य की आर्थिक सूचनाओं की चोरी करने के खिलाफ चलाया गया संघर्ष था, जिसकी शुरुआत 1952 के शुरू में निजी औद्योगिक वाणिज्यिक कारोबारों के मालिकों के बीच की गई थी।

[2] ''बृहस्पतिवार प्रीतिभोज क्लब'' छुङछिङ के कुछ पूंजीपतियों का एक गुप्त संगठन था, जिसने कानून का गम्भीर रूप से उल्लंघन करते हुए सिलसिलेवार अनेक गुप्त कार्यवाहियां की थीं। ''पांच बुराई'' विरोधी आन्दोलन के दौरान इस संगठन का भण्डाफोड़ कर दिया गया और इसे अवैध घोषित कर दिया गया।

कृषि के क्षेत्र में आपसी सहयोग व सहकारिता के काम को एक मुख्य काम बना लो

15 दिसम्बर 1951

इस सरकुलर के साथ आपको कृषि-उत्पादन में आपसी सहयोग व सहकारिता के बारे में प्रस्ताव का मसौदा भेजा जा रहा है। आप से अनुरोध है कि इस मसौदे को छपवाकर काउंटी व जिले तक की सभी पार्टी कमेटियों में वितरित करा दें। कृपया इस मसौदे की भावना के अनुसार यथाशीघ्र पार्टी के भीतर और बाहर इसकी व्याख्या करें और इसे लागू करने का प्रबन्ध करें। यह काम उन सभी जगहों में किया जाना चाहिए जहां भूमि-सुधार पूरा किया जा चुका हो, और आप लोग इसे अपना मुख्य काम बना लें। प्रस्ताव का यह मसौदा अन्त:पार्टी प्रकाशनों में छापा जा सकता है, लेकिन इसे पार्टी के बाहर के समाचार-पत्रों व पत्रिकाओं में प्रकाशित नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि अभी यह केवल एक मसौदा ही है।

यह एक ऐतिहासिक महत्त्व का अन्त:पार्टी सरकुलर है, जिसे कामरेड माओ त्सेतुङ ने ल्यू शाओ-ची द्वारा किए गए कृषि-सहकारिता के विरोध का खण्डन करने के लिए लिखा था। जुलाई 1951 में, ल्यू शाओ-ची ने कामरेड माओ त्सेतुङ और पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की पीठ पीछे अपने नाम से एक टिप्पणी लिखी और उसका वितरण करवाया, जिसमें उन्होंने कृषि उत्पादन में आपसी सहयोग व सहकारिता का विकास करने के बारे में शानशी प्रान्त की पार्टी कमेटी की एक रिपोर्ट पर मनमाने ढंग से प्रहार किया था। इस टिप्पणी में उन्होंने कृषि के समाजवादी रूपान्तर के बारे में कामरेड माओ त्सेतुङ की कार्यदिशा का विरोध किया तथा उसे "कृषि समाजवाद की गलत, खतरनाक व काल्पनिक धारणा" कहकर उस पर लांछन लगाया। उसी वर्ष सितम्बर में कामरेड माओ त्सेतुङ के व्यक्तिगत निर्देशन में "कृषि-उत्पादन में आपसी सहयोग व सहकारिता के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का प्रस्ताव (मसौदा)" तैयार किया गया। प्रस्ताव के वितरण के मौके पर 15 दिसम्बर को उन्होंने यह सरकुलर लिखा और समूची पार्टी को आदेश दिया कि वह कृषि के क्षेत्र में आपसी सहयोग व सहकारिता के काम को एक मुख्य काम बना ले।

नव-वर्ष दिवस का सन्देश

1 जनवरी 1952

मैं कामना करता हूं कि हम सभी लोग -- जन सरकार के कार्यकर्ता, जन-स्वयंसेवक व जन-मुक्ति सेना के कमाण्डर व योद्धा, जनवादी पार्टियां, जन-संगठन, अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं और सारे देश की जनता – अपने काम के हर मोर्चे पर विजय प्राप्त करें !

मैं कामना करता हूं कि हम अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने व कोरिया की सहायता करने के आन्दोलन के मोर्चे पर विजय प्राप्त करें !

राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के मोर्चे पर विजय प्राप्त करें !

भूमि-सुधार के मोर्चे पर विजय प्राप्त करें !

प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने के आन्दोलन के मोर्चे पर विजय प्राप्त करें !

आर्थिक व वित्तीय मोर्चे पर विजय प्राप्त करें !

सांस्कृतिक व शैक्षणिक मोर्चे पर विजय प्राप्त करें !

समाज के विभिन्न व्यवसाय के लोगों, और सबसे पहले बुद्धिजीवियों के विचारधारात्मक नव रूपान्तर के मोर्चे पर विजय प्राप्त करें !

मैं यह भी कामना करता हूं कि हम एक नए मोर्चे पर, यानी बड़े पैमाने के उस संघर्ष में विजय प्राप्त करें जिसमें सारे देश की जनता व कार्यकर्ताओं का आवाहन किया गया है कि वे भ्रष्टाचार, फिजूलखर्ची व नौकरशाही का जोरदार ढंग से और अविचल रूप से विरोध करें, ताकि पुराने समाज द्वारा छोड़ी गई सारी गन्दगी और जहर को दूर किया जा सके !

साथियो, 1951 में हमने इन सभी मोर्चों पर विजयें प्राप्त की हैं, जिनमें से बहुत सी विजयें अत्यन्त महान हैं। हम आशा करते हैं कि 1952 में हम अपने सम्मिलित प्रयास के जरिए इन सभी कार्यों में और अधिक महान विजयें प्राप्त कर सकेंगे।

चीन लोक गणराज्य जिन्दाबाद !

तिब्बत में हमारे कार्य से सम्बन्धित नीतियों के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का निदेश

6 अप्रैल 1952

दक्षिण-पश्चिमी ब्यूरो व दक्षिण-पश्चिमी फौजी क्षेत्र द्वारा 2 अप्रैल को तिब्बत की कार्यकारी कमेटी व फौजी क्षेत्र के नाम तार से भेजी गई हिदायतों को केन्द्रीय कमेटी बुनियादी तौर पर मंजूर करती है। केन्द्रीय कमेटी का मत है कि तार में पेश की गई बुनियादी नीतियां (तिब्बती सेना के पुनर्गठन की बात को छोड़कर) और उसमें प्रस्तावित अनेक ठोस कदम सही हैं। केवल उन पर अमल करके ही हमारी सेना तिब्बत में अपराजेय रह सकेगी।

तिब्बत की परिस्थिति सिनच्याङ की परिस्थिति से भिन्न है। चाहे राजनीतिक दृष्टि से देखा जाय या आर्थिक दृष्टि से, तिब्बत की परिस्थिति सिनच्याङ की परिस्थिति से कहीं ज्यादा बदतर है। फिर भी जब वाङ चङ की कमान में हमारी सेना सिनच्याङ में प्रविष्ट हुई, तो उसने सबसे पहले किफायत वाला बजट बनाने, स्वावलम्बन पर अमल करने और अपनी जरूरत की चीजों का उत्पादन करने की तरफ पूरा ध्यान दिया। अब तो उसके पैर जम चुके हैं, और उसे अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं का उत्साहपूर्ण समर्थन प्राप्त हो गया है। आजकल लगान व सूद में कटौती करने का काम किया जा रहा है, इस वर्ष के जाड़ों में भूमि-सुधार किया जाएगा, और तब हमें जन-समुदाय का और ज्यादा समर्थन प्राप्त हो सकेगा। सिनच्याङ का मोटर-मार्ग से देश के हृदय-प्रदेश के साथ अच्छी तरह सम्पर्क कायम हो गया है और इस प्रकार अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को अपनी भौतिक स्थिति सुधारने में हमारी मदद मिली है। जहां तक तिब्बत का सवाल है, वहां कम से कम दो या तीन साल तक लगान में कटौती नहीं की जा सकती, और भूमि-सुधार नहीं किया सकता। सिनच्याङ में हान राष्ट्रीयता के कई लाख लोग रहते हैं, जबकि तिब्बत में इस राष्ट्रीयता के लोग शायद ही रहते हों; वहां हमारी सेना एक बिलकुल भिन्न अल्पसंख्यक राष्ट्रीयता के इलाके में रहती है। जन समुदाय को अपने पक्ष में करने और अपने को एक अपराजेय स्थिति में पहुंचाने के लिए हमें दो बुनियादी नीतियों पर निर्भर रहना है। पहली नीति है कि किफायत वाला बजट बनाया जाय, सेना की जरूरत की चीजों का उत्पादन किया जाय, और इस प्रकार जन समुदाय में अपना प्रभाव फैलाया जाय;

एक अन्तःपार्टी निदेश, जिसका मसौदा कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था। इसे दक्षिण पश्चिमी ब्यूरो और तिब्बत की कार्यकारी कमेटी के नाम भेजा गया था तथा सूचनार्थ उत्तर-पश्चिमी ब्यूरो और सिनच्याङ उपब्यूरो के पास भी भेजा गया था।

यह एक मुख्य कड़ी है। अगर मोटर मार्ग बना भी दिए जाएं, तो भी उनके जरिए बड़ी मात्रा में अनाज भी भेजा जा सकेगा। हो सकता है, भारत आदान-प्रदान के आधार पर तिब्बत में कुछ अनाज व माल भेजने को राजी हो जाय; लेकिन इस सिलसिले में हमें यह रुख अपनाना चाहिए कि भविष्य में किसी दिन अगर भारत अनाज व माल भेजना बन्द भी कर दे तो भी हमारी सेना का काम चलता रहे। हमें दलाई और उसके उच्चवर्गीय गुट के लोगों को बहुसंख्या को अपने पक्ष में कर लेने और मुट्ठीभर बुरे तत्वों को अलगाव की स्थिति में डाल देने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए तथा इसके लिए समुचित कदम उठाने चाहिए, ताकि हम आगामी अनेक वर्षों में बिना खून बहाए कदम-ब-कदम तिब्बत की आर्थिक व राजनीतिक व्यवस्था का रूपान्तर करने का उद्देश्य पूरा कर सकें; दूसरी तरफ, हमें उस स्थिति का मुकाबला करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए जब बुरे तत्व तिब्बती सेना को साथ लेकर बगावत कर दें और हम पर प्रहार करें, जिससे ऐसा समय आने पर भी हमारी सेना तिब्बत में टिकी रह सके और डटी रहे। ये सभी बातें किफायत वाला बजट बनाने व अपनी जरूरत की चीजों का उत्पादन करने पर निर्भर हैं। इस बुनियादी नीति को आधार बनाकर ही हमारा उद्देश्य प्राप्त किया जा सकता है। दूसरी नीति, जिसे अमल में लाया जा सकता है और लाया जाना चाहिए, यह है कि भारत के साथ और अपने देश के हृदय प्रदेश के साथ व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किए जायं और माल को तिब्बत में पहुंचाने और वहां से बाहर भेजने के बीच सन्तुलन कायम किया जाय, जिससे तिब्बती जनता का जीवन-स्तर हमारी सेना के आने की वजह से तनिक भी नीचे न गिरे, बल्कि हमारी कोशिशों के जरिए उसमें कुछ सुधार हो सके। जब तक हम उत्पादन और व्यापार के इन दो मसलों को हल नहीं कर पाएंगे, तब तक हमारी सेना के रहने का भौतिक आधार नहीं बन पाएगा, बुरे तत्वों के पास हमारा विरोध करने के लिए पिछड़े हुए जन-समुदाय को व तिब्बती सेना को भड़काने के साधन मौजूद रहेंगे तथा बहुसंख्या के साथ एकता कायम करने और अल्पसंख्या को अलगाव में डालने की हमारी नीति शक्तिहीन बनी रहेगी और कारगर नहीं हो पाएगी।

दक्षिण पश्चिमी ब्यूरो ने 2 अप्रैल के तार में जो बातें कही हैं उनमें सिर्फ एक ही बात ऐसी है जिस पर फिर से गौर करना होगा और वह यह है कि अपेक्षाकृत कम समय में तिब्बती सेना का पुनर्गठन करने तथा फौजी व प्रशासनिक कमीशन की स्थापना करने की सम्भावना व औचित्य मौजूद है अथवा नहीं। हमारी राय है कि इस समय हमें न तो तिब्बती फौज का पुनर्गठन करना चाहिए और न फौजी उपक्षेत्रों या फौजी व प्रशासनिक कमीशन की औपचारिक रूप से स्थापना ही करनी चाहिए। फिलहाल सभी चीजों को ज्यों का त्यों रहने दीजिए, और ऐसी ही स्थिति बनी रहने दीजिए। एक या दो साल के बाद जब हमारी सेना सचमुच अपनी जरूरत की चीजों का उत्पादन करने लगेगी और जन-समुदाय का समर्थन प्राप्त कर लेगी, तब इन सवालों पर विचार किया जाएगा। इधर एक या दो साल के दौरान ये दो सम्भावनाएं पैदा हो सकती हैं : पहली सम्भावना यह है कि उच्चवर्गीय गुट के साथ संयुक्त मोर्चा कायम करने की नीति, एक ऐसी नीति जिसमें बहुसंख्या के साथ एकता कायम की जाती है और अल्पसंख्या को अलगाव में डाला जाता है, कारगर साबित हो जाए, तिब्बती जनता कदम-ब-कदम हमारे करीब आती जाए और इसके फलस्वरूप बुरे तत्वों व तिब्बती फौजों

को बगावत करने की जुर्रत न हो। दूसरी सम्भावना यह है कि बुरे तत्व यह समझकर कि हम कमजोर हैं और हमें डराया जा सकता है, तिब्बती फौज को साथ लेकर बगावत कर दें तथा ऐसी स्थिति में हमारी सेना आत्मरक्षा के लिए जवाबी हमला करे और उन पर करारी चोट करे। उपरोक्त दोनों ही स्थितियां हमारे लिए फायदेमन्द साबित होंगी। तिब्बत के उच्चवर्गीय गुट की दृष्टि में इस समय समझौते [1] को पूरी तरह लागू करने और तिब्बती फौज का पुनर्गठन करने के पर्याप्त कारण मौजूद नहीं हैं। लेकिन कुछ वर्षों में स्थिति बदल जाएगी। उस समय शायद उन लोगों को पता चल जाएगा कि समझौते को पूरी तरह लागू करने और तिब्बती फौज का पुनर्गठन करने के सिवाय उनके सामने कोई चारा नहीं है। अगर तिब्बती फौज एक बार या कई बार बगावत करेगी और हर बार जवाबी हमले से उसका दमन कर दिया जाएगा, तो हमारे द्वारा तिब्बती फौज का पुनर्गठन किया जाना और ज्यादा युक्तियुक्त प्रतीत होने लगेगा। जान पड़ता है केवल दोनों सीलोनों [2] को ही नहीं बल्कि दलाई और उसके गुट के अधिकांश लोगों को भी यह समझौता लाचार होकर स्वीकार करना पड़ा था तथा वे इसे लागू नहीं करना चाहते। अभी तक हमारे सामने न तो समझौते को पूरी तरह लागू करने का भौतिक आधार मौजूद है और न जन-समुदाय के समर्थन अथवा उच्चवर्गीय गुट के समर्थन का आधार। ऐसी सूरत में समझौते को जबरदस्ती लागू करने से फायदे के बजाय नुकसान ज्यादा हो जाएगा। चूंकि वे लोग समझौते को लागू नहीं करना चाहते, अच्छा, तो फिलहाल हम उसे रहने दें और इन्तजार करें। जितनी ज्यादा देर लगेगी, हमारी स्थिति उतनी ही ज्यादा मजबूत होती जाएगी और उन लोगों की स्थिति उतनी ही ज्यादा कमजोर होती जाएगी। देर लगने से हमें ज्यादा नुकसान नहीं होगा, इसके विपरीत शायद फायदा हो जाए। उन लोगों को जनता के खिलाफ क्रूरतापूर्ण अत्याचार करने दो, जबकि हम लोग सिर्फ उत्पादन, व्यापार, सड़क-निर्माण, चिकित्सा सेवा, संयुक्त मोर्चे का काम (बहुसंख्या के साथ एकता कायम करना और उसे धीरज से शिक्षित करना) आदि अच्छे-अच्छे काम करते रहें, ताकि जन-समुदाय को अपने पक्ष में कर सकें, तथा जब परिस्थिति परिपक्व हो जाए तभी समझौते को पूरी तरह लागू करने का सवाल उठाएं। अगर उन लोगों को प्राइमरी स्कूल चलाना भी उचित नहीं जान पड़ता, तो यह काम भी बन्द किया जा सकता है।

पिछले दिनों ल्हासा में जो प्रदर्शन हुआ उसे सिर्फ दो सीलोनों और अन्य बुरे तत्वों की करतूत नहीं समझना चाहिए, बल्कि एक ऐसा संकेत समझना चाहिए जिसे दलाई गुट की बहुसंख्या ने हमें दिया है। उनकी याचिका बड़ी होशियारी के साथ लिखी गई है, क्योंकि उसमें सम्बन्ध-विच्छेद की इच्छा जाहिर नहीं की गई है और हमसे सिर्फ रियायतें मांगी गई हैं। उसमें एक मांग इस बात की ओर इशारा करती है कि छिङ राजवंश की प्रथा को फिर से बहाल किया जाए, यानी तिब्बत में मुक्ति सेना तैनात न की जाय। लेकिन यह मांग दरअसल उनकी असली मांग नहीं है। उन्हें साफ-साफ मालूम है कि ऐसा करना नामुमकिन है। वे चाहते हैं कि यह मांग पेश करके दूसरी "मांगों" का सौदा किया जाए। याचिका में चौदहवें दलाई की आलोचना की गई है, जिसका उद्देश्य उसे इस प्रदर्शन के राजनीतिक उत्तरदायित्व से मुक्त करना है। वे लोग तिब्बती राष्ट्रीयता के हितों के रक्षक होने का ढोंग रचते हैं और यह समझते हैं कि फौजी शक्ति की दृष्टि से वे हमसे कमजोर हैं, जबकि सामाजिक प्रभाव की दृष्टि से

हमसे ज्यादा शक्तिशाली हैं। हमें सच्चे मायनों में (केवल ऊपरी तौर पर नहीं) इस याचिका को स्वीकार कर लेना चाहिए और समझौते को पूरी तरह लागू करना स्थगित कर देना चाहिए। इस प्रदर्शन का समय उन्होंने बड़े सोच विचार के बाद चुना और इसे पंचन के तिब्बत पहुंचने से पहले ही करा दिया गया। पंचन के ल्हासा पहुंच जाने के बाद वे लोग सम्भवत: उसे अपने गुट में शामिल करने की पुरजोर कोशिश करेंगे। अगर हमने अपना काम अच्छी तरह किया और पंचन उनके जाल में न फंसा तथा सही सलामत शिगात्से पहुंच गया, तो उस समय परिस्थिति हमारे लिए अपेक्षाकृत अनुकूल हो जाएगी। फिर भी ये दोनों स्थितियां, यानी हमारे लिए भौतिक आधार की कमी होना और सामाजिक प्रभाव की दृष्टि से उन लोगों का हमसे ज्यादा शक्तिशाली होना, फिलहाल नहीं बदलेंगी। और न फिलहाल वह स्थिति ही बदलेगी जिसमें दलाई गुट समझौते को पूरी तरह लागू नहीं करना चाहता। आजकल हमें ऊपरी तौर पर तो आक्रमणात्मक रुख अपनाना चाहिए और इस प्रदर्शन व याचिका के अनौचित्य (समझौते के उल्लंघन) की निन्दा करनी चाहिए, लेकिन वास्तव में रियायत देने को तैयार रहना चाहिए और इस बात के लिए भी तैयार रहना चाहिए कि भविष्य में जब परिस्थिति परिपक्व हो जाएगी, तो हम प्रहार करेंगे (यानी समझौते को लागू कर देंगे)।

इसके बारे में आप लोगों की क्या राय है ? कृपया इस पर विचार करें और तार के जरिए उत्तर भेजें।

नोट

[1] यहां 'तिब्बत की शान्तिपूर्ण मुक्ति के उपायों के बारे में केन्द्रीय जन सरकार और तिब्बत की स्थानीय सरकार के समझौते' का उल्लेख किया गया है, जो 23 मई 1951 को हुआ था।

[2] "सीलोन" दलाई के अधीन सर्वोच्च प्रशासनिक अफसर होते थे। यहां जिन दो सीलोनों का उल्लेख किया गया है, वे थे प्रतिक्रियावादी भूदास-मालिक लूखाङवा और लोसाङ ताशी।

चीन में मजदूर वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच का अन्तरविरोध प्रधान अन्तरविरोध है

6 जून 1952

जमींदार वर्ग व नौकरशाह-पूंजीपति वर्ग का तख्ता पलट दिए जाने के बाद, चीन में मजदूर वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के बीच का अन्तरविरोध प्रधान अन्तरविरोध बन गया है; इसलिए अब से राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग को दरमियाने वर्ग की संज्ञा नहीं दी जानी चाहिए।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के संयुक्त मोर्चा कार्य विभाग द्वारा तैयार किए गए एक दस्तावेज पर लिखी गई एक टिप्पणी। इसमें कामरेड माओ त्सेतुङ ने इस विभाग के प्रधान के उस गलत दृष्टिकोण का खंडन किया है जिसके अनुसार राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग को एक दरमियाना वर्ग समझा गया था।

एकताबद्ध हो जाओ तथा हमारे और दुश्मन के बीच स्पष्ट विभाजन-रेखा खींच लो

4 अगस्त 1952

पिछले पूरे एक वर्ष में हम युद्ध करने, समझौता-वार्ता करने और परिस्थिति में स्थायित्व लाने के इन तीन कार्यों को एक साथ करते रहे हैं।

कोरिया में युद्ध की स्थिति में पिछले साल जुलाई के बाद स्थायित्व आने लगा था, लेकिन उस समय यह बात निश्चित नहीं थी कि देश के अन्दर की वित्तीय व आर्थिक स्थिति में भी स्थायित्व लाया जा सकता है या नहीं। हमने कहा था : ''चीजों के दाम बुनियादी तौर पर स्थिर हैं तथा आय और व्यय के बीच लगभग सन्तुलन कायम हो चुका है'', जिसका मतलब यह था कि चीजों के दाम अभी स्थिर नहीं हो सके और आय और व्यय के बीच अभी सन्तुलन कायम नहीं हो पाया। आय कम थी जबकि व्यय ज्यादा था, और यह एक सवाल था। इसलिए पिछले साल सितम्बर में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने एक मीटिंग बुलाई और उत्पादन बढ़ाने व सख्ती से किफायत करने का आवाहन किया। अक्तूबर में, इस बात को मैंने राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की प्रथम राष्ट्रीय कमेटी के तीसरे अधिवेशन में फिर एक बार दोहराया। उत्पादन बढ़ाने व किफायत करने के आन्दोलन के दौरान भ्रष्टाचार, फिजूलखर्ची व नौकरशाही के काफी गम्भीर मामलों का पर्दाफाश किया गया। दिसम्बर में ''तीन बुराई''-विरोधी आन्दोलन चलाया गया और इसके बाद फिर ''पांच बुराई''-विरोधी आन्दोलन चलाया गया। अब ये दोनों ही आन्दोलन विजयपूर्वक समाप्त हो चुके हैं, परिस्थिति बिलकुल स्पष्ट हो गई है, तथा आम स्थायित्व कायम किया जा चुका है।

पिछले वर्ष हमने अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने व कोरिया की सहायता करने के युद्ध में जो रकम खर्च की वह देश के अन्दर निर्माण-कार्य में खर्च की गई कुल रकम के लगभग बराबर थी; दोनों की मात्रा आधी-आधी थी। इस वर्ष स्थिति बदल गई है। अनुमान है कि इस वर्ष युद्ध पर होने वाला खर्च पिछले वर्ष की तुलना में सिर्फ आधा ही रह जाएगा। अब हमारी फौजें पहले से कम हो गई हैं, लेकिन पहले से ज्यादा अच्छी तरह हथियारबन्द हो गई हैं। पिछले बीस वर्ष से अधिक समय में हमने वायुसेना के बिना युद्ध किया और इसलिए युद्ध में दुश्मन की बमबारी का निशाना केवल हम ही बनते रहे। अब हमारे पास अपनी वायुसेना है तथा विमानवेधी तोपें, तोपखाने व टैंक भी हैं। अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने व

चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की प्रथम राष्ट्रीय कमेटी की स्थायी समिति की अड़तीसवीं मीटिंग में दिए गए भाषण के मुख्य मुद्दे।

कोरिया की सहायता करने का युद्ध एक विशाल विद्यालय है, जहां हमने बड़े पैमाने का सैनिक अभ्यास किया है; यह सैनिक अभ्यास फौजी अकादमी चलाने से बेहतर है। अगर यह लड़ाई अगले पूरे वर्ष चलती रही तो हमारी स्थलसेना की सभी टुकड़ियां बारी-बारी वहां जाकर फौजी ट्रेनिंग प्राप्त कर सकेंगी।

इस युद्ध में हमारे सामने शुरू में तीन समस्याएं मौजूद थीं : पहली, हमारी लड़ने की क्षमता; दूसरी, हमारी डटे रहने की क्षमता; और तीसरी, हमारी भोजन जुटाने की क्षमता।

हमारी लड़ने की क्षमता की समस्या दो-तीन महीनों में ही हल कर ली गई। दुश्मन की तोपें हमारी तोपों से ज्यादा थीं, लेकिन उनमें लड़ने का मनोबल बहुत कम था; वे लोग धातु उपकरणों के तो धनी थे, मगर मनोबल के कंगाल थे।

हमारी डटे रहने की क्षमता की समस्या भी पिछले साल हल कर ली गई। इसका तरीका था सुरंगें खोदना। हमने दो स्तरों वाली किलेबन्दियों का निर्माण कर लिया। जब दुश्मन चढ़ाई करता, तो हम सुरंग में घुस जाते। कभी कभी दुश्मन ऊपर के स्थलों पर कब्जा कर लेता, लेकिन जमीन के नीचे के स्थान हमारे हाथ में बने रहते। जब दुश्मन ऊपर के स्थानों पर मोर्चेबन्दी कर लेता, तो हम उस पर जवाबी हमला कर देते और उसे भारी तादाद में हताहत कर देते। इस तरह हम अपने देशी तरीके से विदेशी तोप-बन्दूकें बटोरते रहे। हमारे सामने दुश्मन की एक न चली।

भोजन जुटाने की समस्या, यानी अपनी रसद की गारण्टी करने की समस्या बहुत लम्बे समय तक हल नहीं हो पाई थी। पहले हमें यह मालूम नहीं था कि हम सुरंगें खोदकर अपना अनाज उनमें रख सकते हैं। अब हमें यह मालूम हो गया है। अब हर डिवीजन के पास तीन महीने का अनाज जमा है, उसका अपना भण्डार व सभाकक्ष भी है; और सुरंगों में जिन्दगी सुचारु रूप से चल रही है।

अब हमारी नीति स्पष्ट व निश्चित हो चुकी है, हमारी मोर्चेबन्दी सुदृढ़ बन चुकी है, हमारी रसद की गारण्टी की जा चुकी है और हर सैनिक को मालूम हो गया है कि उसे अन्त तक डटे रहना है।

आखिर यह लड़ाई कब तक चलेगी और यह समझौता-वार्ता कब समाप्त होगी ? मैं कहता हूं कि समझौता-वार्ता होती रहेगी और लड़ाई भी चलती रहेगी, लेकिन युद्धविराम भी जरूरी होगा।

आखिर युद्धविराम क्यों होगा ? यह असम्भव है कि तीस वर्ष तक या सौ वर्ष तक युद्ध जारी रहे, क्योंकि लम्बे समय तक चलने वाला युद्ध अमरीका के हितों से मेल नहीं खाता।

पहले, युद्ध में लोगों को जान गंवानी पड़ती है। दस हजार से कुछ ज्यादा युद्धबन्दियों को नजरबन्द रखने के लिए किए गए युद्ध में वे लोग तीस हजार से ज्यादा लोगों की जान गंवा बैठे हैं। आखिर उनके पास तो हमसे कहीं कम आदमी हैं।

दूसरे, युद्ध में धन खर्च होता है। उन्हें हर साल दस अरब से ज्यादा डालर खर्च करने पड़ते हैं। उनकी तुलना में हमने बहुत कम धन खर्च किया है और इस साल हमारा खर्च पिछले साल के मुकाबले सिर्फ 50 फीसदी है। ''तीन बुराई''-विरोधी आन्दोलन और ''पांच बुराई''-विरोधी आन्दोलन के हिसाब किताब की जांच के परिणामस्वरूप प्राप्त रकम से हम डेढ़ साल तक लड़ाई जारी रख सकते हैं। उत्पादन बढ़ाने व किफायत करने के परिणामस्वरूप प्राप्त समूचा धन देश के अन्दर के निर्माण कार्य में लगाया जा सकता है।

तीसरे, उन्हें देश विदेश में ऐसे अन्तर्विरोधों का सामना करना पड़ता है जिन्हें हल नहीं किया जा सकता।

चौथे, एक रणनीतिक सवाल भी मौजूद है। अमरीकी रणनीति का केन्द्र योरप में है। उन्होंने जब अपनी सेना भेजकर कोरिया पर आक्रमण किया तो उन्हें यह अनुमान नहीं था कि हम कोरिया की सहायता करने के लिए अपने स्वयंसेवक भेजेंगे।

हमारा काम अपेक्षाकृत आसान है। अन्दरूनी मामलों में हम खुद अपने घर के मालिक हैं। लेकिन, हम अमरीका के चीफ आफ स्टाफ नहीं हैं। अमरीका का चीफ आफ स्टाफ उनका अपना आदमी है। इसलिए कोरियाई युद्ध जारी रहेगा या नहीं, इस बात का फैसला करने में हमारा और कोरिया का सिर्फ आधा दखल हो सकता है।

संक्षेप में, परिस्थिति के दबाव के कारण अमरीका को यह महसूस हो जाएगा कि युद्धविराम से इन्कार करना उसके अपने हित में नहीं है।

यह कहने का मकसद कि तीसरा विश्वयुद्ध बहुत जल्दी ही छिड़ जाएगा, लोगों में महज दहशत पैदा करना है। उद्योग का निर्माण करने और उसकी सुदृढ़ बुनियाद कायम करने के लिए हमें दस वर्ष का समय प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए।

हमें अपनी पांतों में घनिष्ठ एकता कायम कर लेनी चाहिए तथा हमारे और दुश्मन के बीच स्पष्ट विभाजन-रेखा खींच लेनी चाहिए। आज हम इसलिए शक्तिशाली हैं क्योंकि सारे देश की जनता एकताबद्ध है तथा आज की सभा में उपस्थित सभी लोग, सभी जनवादी पार्टियां और जन-संगठन हमारे साथ सहयोग करते हैं। एकता कायम करना तथा हमारे और दुश्मन के बीच स्पष्ट विभाजन-रेखा खींचना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। डा. सुन यात-सेन एक निष्ठावान व्यक्ति थे। लेकिन उनके नेतृत्व में चलने वाली 1911 की क्रान्ति असफल क्यों हुई ? इसके कारण ये थे : पहले, जमीन का बंटवारा नहीं किया गया; दूसरे, प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने की जरूरत को नहीं समझा गया; तथा तीसरे, साम्राज्यवादियों के विरुद्ध तीव्र संघर्ष नहीं चलाया गया। हमारे और दुश्मन के बीच स्पष्ट विभाजन-रेखा खींचने के अलावा हमें अपनी पांतों में भी सही और गलत के बीच विभाजन-रेखा खींच लेनी चाहिए। पहली विभाजन-रेखा की तुलना में दूसरी विभाजन-रेखा गौण है। मिसाल के तौर पर भ्रष्ट लोगों को ही लीजिए, उनमें से ज्यादातर लोगों के मामले सही और गलत के बीच के मामले हैं तथा उन्हें सुधारा जा सकता है। ये लोग प्रतिक्रान्तिकारियों से भिन्न हैं।

जनवादी पार्टियों व धार्मिक दायरों के लोगों को शिक्षित किया जाना चाहिए ताकि वे लोग साम्राज्यवादियों के धोखे में न आएं और दुश्मन के पक्ष में न जाएं। बौद्ध धर्म को ही लीजिए। उसका साम्राज्यवादियों से कम सम्पर्क है और मुख्य रूप से सामन्तवाद से सम्पर्क है। चूंकि सामन्तवाद-विरोधी संघर्ष भूमि के सवाल से सम्बन्धित है, इसलिए इसका असर भिक्षुओं पर भी पड़ रहा है, और मठाधीश व प्रधान पुरोहित प्रहार का निशाना बन रहे हैं। जहां एक बार इन इनेगिने लोगों का तख्ता पलट दिया गया तो 'लु च शन' जैसे साधारण भिक्षु मुक्त हो जाएंगे। हालांकि मैं बौद्ध धर्म पर विश्वास नहीं करता, फिर भी इस बात का विरोध नहीं करता

कि बौद्धों के धार्मिक संघ की स्थापना की जाय, जिससे वे एकताबद्ध हो जाएं और हमारे व दुश्मन के बीच स्पष्ट विभाजन-रेखा खींच सकें। क्या संयुक्त मोर्चा एक न एक दिन समाप्त कर दिया जाएगा ? जहां तक मेरी राय है, मैं उसे समाप्त करने के पक्ष में नहीं हूं। चाहे कोई भी क्यों न हो, अगर वह सचमुच हमारे और दुश्मन के बीच स्पष्ट विभाजन-रेखा खींच लेता है और जनता की सेवा करता है, तो हमें उसके साथ एकता कायम कर लेनी चाहिए।

हमारे देश का भविष्य उज्ज्वल है और शानदार सम्भावनाओं से परिपूर्ण है। पहले हमने अनुमान लगाया था कि शायद तीन वर्ष की अवधि में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की पुनर्स्थापना का कार्य पूरा हो जाएगा। ढाई वर्ष के कठोर संघर्ष के बाद ही अब यह कार्य पूरा हो गया है। और इससे भी आगे बढ़कर योजनाबद्ध निर्माण-कार्य शुरू कर दिया गया है। आइए, हम सभी लोग एकताबद्ध हो जाएं, हमारे और दुश्मन के बीच स्पष्ट विभाजन-रेखा खींच लें और अपने देश की सतत-सुस्थिर प्रगति के लिए भरपूर प्रयास करें।

नोट

[1] चीन के क्लासिकी उपन्यास 'कछार के वीर' का एक पात्र, जो व्याडशान पर्वत पर जाकर किसान सेना में शामिल होने से पहले एक साधारण बौद्ध भिक्षु था।

चीनी जन स्वयंसेवकों की असाधारण विजय का अभिनन्दन !

24 अक्तूबर 1952

हमारे स्वयंसेवकों ने कोरियाई जन सेना के साथ मिलकर, 18 सितम्बर से सभी मोर्चों पर युद्धकौशलपूर्ण जवाबी हमले शुरू कर दिए हैं, और एक महीने के अन्दर शत्रु सेना के तीस हजार से अधिक सैनिकों को हताहत करके असाधारण विजय प्राप्त कर ली है। केन्द्रीय कमेटी और उसके फौजी कमीशन की तरफ से आप लोगों को और सभी कमाण्डरों व योद्धाओं को हार्दिक बधाई। इन फौजी कार्यवाहियों का संक्षेप में इस प्रकार वर्णन किया जा सकता है : पहले, युद्ध-कौशल की दृष्टि से चुनी गई नाजुक जगहों पर अपनी बरतर सैन्य शक्ति व गोलाबारी की शक्ति को केन्द्रित करके दुश्मन की सम्पूर्ण प्लाटून, सम्पूर्ण कम्पनी या सम्पूर्ण बटालियन पर अकस्मात् धावा बोल देना और उन सबको या उनके एक बड़े अंश को नष्ट कर देना; दूसरे, दुश्मन द्वारा जवाबी हमला किए जाने पर बार-बार होने वाली लड़ाइयों के दौरान दुश्मन को बड़ी मात्रा में हताहत कर देना; और तीसरे, परिस्थिति को देखते हुए, हमारे कब्जे में मौजूद उन किलेबन्दियों की दृढ़ता के साथ रक्षा करना जिनकी रक्षा की जा सकती हो और उन किलेबन्दियों को छोड़ देना जिनकी रक्षा न की जा सकती हो, ताकि हम पहल अपने हाथ में रख सकें और भविष्य में जवाबी हमले करने की तैयारी कर सकें। अगर ऐसी फौजी कार्यवाहियां जारी रहीं तो हम दुश्मन की गर्दन जरूर दबोच सकेंगे तथा उसे समझौता करने और कोरियाई युद्ध समाप्त करने के लिए मजबूर कर सकेंगे। पिछले साल की जुलाई से, जब हमारी सेनाओं ने जमकर मोर्चेबद्ध लड़ाई शुरू कर दी थी, दुश्मन को जो नुकसान पहुंचाया गया है वह इसके पहले की सभी चलायमान युद्ध की मुहिमों की तुलना में कहीं ज्यादा है। इसके विपरीत हमारा नुकसान बहुत कम होने लगा है। सिर्फ सैनिकों की और उनमें भी हमारे स्वयंसेवकों की क्षति को ही लिया जाए, तो उनकी संख्या गत वर्ष की जुलाई से अब तक के इन पन्द्रह महीनों में इससे पहले के आठ महीनों की तुलना में हर महीने औसतन दो तिहाई से कुछ ज्यादा घटती गई है। यह स्थिति इसलिए पैदा हुई है क्योंकि मोर्चेबन्दी पर निर्भर रहकर फौजी कार्यवाही का उपरोक्त तरीका अपनाया गया है। 28 सितम्बर से अब तक फौजी कार्यवाही का यह तरीका समूचे मोर्चे पर और ज्यादा सुसंगठित व व्यापक रूप से अपनाया

चीनी जन स्वयंसेवकों के नेतृत्वकारी सदस्यों के नाम भेजा गया एक निदेश, जिसका मसौदा कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और उसके फौजी कमीशन के लिए तैयार किया था।

गया है, इसलिए यह खास तौर पर ध्यान देने योग्य है।

कोरियाई युद्ध में चीनी जन स्वयंसेवकों के शामिल होने की दूसरी वर्षगांठ के अवसर पर हम आशा करते हैं कि आप लोग अपने अनुभवों का निचोड़ निकालेंगे, अपनी संगठनात्मक चेतना को और अधिक बढ़ाएंगे, अपने युद्धकौशल को समुन्नत करेंगे और गोले-बारूद का प्रयोग किफायत से करेंगे, कोरियाई कामरेडों व कोरियाई जनता के साथ और ज्यादा घनिष्ठ एकता कायम करेंगे, तथा आने वाली लड़ाइयों में और ज्यादा बड़ी विजयें प्राप्त करने की भरपूर कोशिश करेंगे।

नौकरशाही, फरमानशाही और कानून व अनुशासन के उल्लंघन का विरोध करो

5 जनवरी 1953

नौकरशाही, फरमानशाही और कानून व अनुशासन के उल्लंघन का विरोध करने के काम की ओर हमारे विभिन्न स्तर के नेतृत्वकारी निकायों का ध्यान आकर्षित किया जाना चाहिए। "तीन बुराई"-विरोधी आन्दोलन के दौरान हमारी पार्टी ने केन्द्र, वृहत्तर प्रशासनिक क्षेत्र, प्रान्त व म्युनिसिपलटी, तथा प्रिफेक्चर इन चार स्तरों के बहुत से कार्यकर्ताओं में मौजूद भ्रष्टाचार व फिजूलखर्ची की इन दोनों समस्याओं को बुनियादी तौर पर हल कर लिया है। उसने एक तरह की नौकरशाही पर भी, जिसकी वजह से बहुत से नेतृत्वकारी कार्यकर्ता अपने मातहत काम करने वाले कार्यालय- कर्मचारियों से अलग-थलग हो जाते हैं, बुनियादी तौर पर काबू पा लिया है। लेकिन बहुत से इलाकों, विभागों व कार्य-क्षेत्रों में निम्नलिखित किस्म की नौकरशाही का सवाल अभी तक बुनियादी तौर पर हल नहीं हो पाया : नेतृत्वकारी कार्यकर्ता जन-समुदाय की तकलीफों के बारे में नहीं जानते, अपने कार्यालय से कुछ ही दूर स्थित मातहत इकाइयों की हालत के बारे में नहीं जानते, काउण्टी, जिला और श्याङ इन तीन स्तरों के कार्यकर्ताओं में मौजूद फरमानशाही के बारे में और कानून व अनुशासन के उल्लंघन से सम्बन्धित बहुत से बुरे व्यक्तियों और बुरी बातों के बारे में नहीं जानते, या ऐसे व्यक्तियों व बातों के बारे में थोड़ा-बहुत जानते तो हैं लेकिन उनकी अनदेखी कर देते हैं, उनके प्रति रोष अनुभव नहीं करते और इस सवाल की गम्भीरता को महसूस नहीं करते तथा इसलिए अच्छे व्यक्तियों का समर्थन करने और बुरे व्यक्तियों को दण्ड देने तथा सराहनीय बातों को प्रोत्साहन देने और बुरी बातों को रोकने के लिए सक्रिय कदम नहीं उठाते। जन-समुदाय द्वारा भेजे गए पत्रों को निपटाने के काम को ही लीजिए। सूचनाओं से पता चला है कि किसी प्रान्तीय जन सरकार ने सत्तर हजार से ज्यादा पत्रों को ज्यों का त्यों पड़े रहने दिया तथा उन्हें नहीं निपटाया। जहां तक प्रान्त के नीचे के नीचे के विभिन्न स्तर के पार्टी-संगठनों व सरकारी संगठनों का मामला है, हमें नहीं मालूम कि उन्होंने जन-समुदाय के कितने पत्र ज्यों के त्यों पड़े रहने दिए हैं, लेकिन यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी संख्या कम नहीं है। ज्यादातर पत्रों में हमसे अपील की गई है कि हम उनके सवालों को हल करने में मदद करें तथा बहुत से

एक अन्त:पार्टी निदेश, जिसका मसौदा कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था।

पत्रों में किन्हीं कार्यकर्ताओं पर कानून भंग करने के आरोप लगाए गए हैं। ऐसे मामलों को फौरन निपटाया जाना चाहिए।

हमारी पार्टी व सरकार के लिए नौकरशाही व फरमानशाही न सिर्फ वर्तमान काल में एक बड़ी समस्या है बल्कि भविष्य में लम्बे अरसे तक एक बड़ी समस्या बनी रहेगी। सामाजिक उत्पत्ति की दृष्टि से देखा जाय तो यह कार्यशैली जनता से निपटते समय प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों द्वारा अपनाई जाने वाली प्रतिक्रियावादी कार्यशैली (जन विरोधी कार्यशैली, क्वोमिन्ताङ की कार्यशैली) के अवशेषों को हमारी पार्टी व सरकार के अन्दर प्रतिबिम्बित करती है। जहां तक हमारी पार्टी व सरकार के संगठनों की नेतृत्वकारी भूमिका और उनके नेतृत्व के तरीके का ताल्लुक है, इसका मतलब है काम सौंपते समय नीति की सीमा और समुचित कार्यशैली को स्पष्ट रूप से न समझाया जाना, यानी मध्य व निचले स्तर के कार्यकर्ताओं को काम सौंपते समय उन्हें नीति की सीमा और कार्यशैली के बारे में मुकम्मिल हिदायतें न दिया जाना। इसका मतलब है विभिन्न स्तरों के, खास तौर पर काउंटी, जिले व श्याङ के स्तर के कार्यकर्ताओं का समुचित निरीक्षण न किया जाना या बिलकुल निरीक्षण न किया जाना। इसका मतलब है इन तीन स्तरों के संगठनों में पार्टी के सुदृढ़ीकरण का आन्दोलन न चलाया जाना और जहां यह आन्दोलन चलाया जा रहा हो वहां फरमानशाही पर अमल करने और कानून व अनुशासन का उल्लंघन करने वालों को चुन-चुनकर बाहर निकाल देने का संघर्ष न चलाया जाना। इसका मतलब है कि प्रिफेक्चर और उसके ऊपर के उच्चतर नेतृत्वकारी संगठनों के कार्यकर्ताओं में अब भी मौजूद उस नौकरशाही के खिलाफ संघर्ष न किया जाना और उसे नेस्तनाबूद न किया जाना जो जन-समुदाय के दुख से और बुनियादी संगठनों की स्थिति से अनभिज्ञ रहने और उनके प्रति अन्यमनस्क रहने के रूप में प्रकट होती है। अगर हमारी नेतृत्वकारी भूमिका मजबूत हो जाएगी और हमारा नेतृत्व का तरीका सुधर जाएगा, तो नौकरशाही व फरमानशाही, जो जन-समुदाय के लिए नुकसानदेह है, कदम-ब-कदम घटती जाएगी और हमारी पार्टी व सरकार के बहुत से संगठन क्वोमिन्ताङ की इस कार्यशैली से जल्दी ही अपना पिण्ड छुड़ा लेंगे। इस प्रकार हमारी पार्टी व सरकार के संगठनों में घुसे हुए बहुत से बुरे आदमियों को जल्दी ही निकाल दिया जाएगा और इस समय मौजूद बहुत सी बुरी बातों को जल्दी ही दूर कर लिया जाएगा।

इसलिए हम आपसे अनुरोध करते हैं कि 1953 में आप लोग जन-समुदाय द्वारा भेजे गए पत्रों को निपटाने के काम से आरम्भ करके पार्टी के सुदृढ़ीकरण, पार्टी-निर्माण और अन्य कार्य के साथ तालमेल कायम करते हुए, नौकरशाही व फरमानशाही से सम्बन्धित मामलों और कानून व अनुशासन का उल्लंघन करने वाले तत्वों की जांच करें और उनके खिलाफ दृढ़तापूर्वक संघर्ष चलाएं। नौकरशाही व फरमानशाही से और कानून व अनुशासन के उल्लंघन से सम्बन्धित विशिष्ट उदाहरणों का समाचार पत्रों के जरिए व्यापक रूप से पर्दाफाश किया जाना चाहिए। जिन लोगों ने गम्भीर अपराध किए हों, उन्हें कानून के अनुसार सजा दी जानी चाहिए, तथा अगर वे लोग पार्टी-सदस्य हों, तो उनके मामलों को पार्टी के अनुशासन के अनुसार निपटाया जाना चाहिए। विभिन्न स्तर की पार्टी-कमेटियों को पक्के इरादे के साथ यह कोशिश करनी चाहिए कि वे कानून व अनुशासन का उल्लंघन करने वाले उन व्यक्तियों को सजा दें जिनसे जन समुदाय बेहद नफरत करता है और उन्हें पार्टी व सरकार के संगठनों से बाहर निकाल दें, तथा उनमें सबसे ज्यादा बुरे व्यक्तियों का तो वध कर दिया जाना चाहिए, ताकि जन-समुदाय के रोष को शान्त किया जा सके और इसके जरिए कार्यकर्ताओं व जन-समुदाय को शिक्षित किया जा सके। लेकिन जब बुरे व्यक्तियों व बुरी बातों के विरुद्ध चलाया जाने वाला व्यापक संघर्ष एक उचित मंजिल पर पहुंच जाए तो हमें विभिन्न स्थानों में सराहनीय व्यक्तियों व सराहनीय बातों द्वारा प्रस्तुत अनुकरणीय आदर्शों की खोज करनी चाहिए, उनका विश्लेषण करना चाहिए तथा उनकी प्रशंसा करनी चाहिए, ताकि सभी पार्टी-सदस्य इन अच्छे आदर्शों का अनुकरण करने की कोशिश करें और इस प्रकार अच्छी प्रवृत्तियां बुरी प्रवृत्तियों पर हावी हो जाएं। हमें विश्वास है कि हमारे समूचे देश में इस तरह के अनुकरणीय आदर्शों की संख्या अवश्य ही कम नहीं है।

हान शोविनिज्म की आलोचना करो

16 मार्च 1953

कुछ जगहों में विभिन्न राष्ट्रीयताओं के बीच के सम्बन्ध काफी असामान्य हैं। यह स्थिति कम्युनिस्टों के लिए असहनीय है। बहुत से पार्टी सदस्यों व पार्टी-कार्यकर्ताओं में गम्भीर रूप से मौजूद हान शोविनिज्म वाले विचारों की हमें गहराई से आलोचना करनी चाहिए; ये विचार विभिन्न राष्ट्रीयताओं के बीच के सम्बन्धों में अभिव्यक्त होने वाले जमींदार वर्ग व पूंजीपति वर्ग के प्रतिक्रियावादी विचार हैं अथवा क्वोमिन्ताङ के विचार हैं। इस सम्बन्ध में जो गलतियां हुई हैं उन्हें फौरन ठीक कर लेना चाहिए। जहां भी अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं रहती हों, वहां का दौरा करने के लिए ऐसे कामरेडों के नेतृत्व में प्रतिनिधिमण्डल भेजे जाने चाहिए जो हमारी राष्ट्रीयता नीति से सुपरिचित हों तथा अब भी भेदभाव से पीड़ित अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के देशबन्धुओं के प्रति हार्दिक सहानुभूति रखते हों। ये प्रतिनिधिमण्डल "घोड़े पर सवार होकर फूलों की बहार देखने" के बजाय बड़ी संजीदगी के साथ जांच-पड़ताल व अध्ययन करें और समस्याओं का पता लगाने और उन्हें हल करने में पार्टी व सरकार के स्थानीय संगठनों की मदद करें।

बहुत सी सामग्री के आधार पर केन्द्रीय कमेटी का यह विचार बना है कि जहां भी अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं रहती हैं वहां आम तौर पर ऐसी समस्याएं मौजूद हैं जिन्हें हल करना अभी बाकी है, और उनमें से कुछ समस्याएं तो बहुत गम्भीर हैं। ऊपर से देखने पर तो शान्ति मालूम होती है, लेकिन वास्तव में बड़ी गम्भीर समस्याएं मौजूद हैं। इधर दो-तीन साल में विभिन्न स्थानों में जो समस्याएं प्रकाश में आई हैं उनसे यह साबित होता है कि हान शोविनिज्म लगभग सभी जगह मौजूद है। अगर हम समय रहते शिक्षित नहीं करेंगे तथा पार्टी के भीतर और आम जनता में हान शोविनिज्म को दूर नहीं करेंगे तो यह बड़ा खतरनाक साबित होगा। बहुत सी जगहों में विभिन्न राष्ट्रीयताओं के बीच के सम्बन्धों के बारे में पार्टी के भीतर और जनता के बीच मौजूद समस्या हान शोविनिज्म का अवशेष नहीं बल्कि उसका गम्भीर रूप है। इसका मतलब यह है कि उन कामरेडों व लोगों के दिमाग पर पूंजीवादी विचार हावी हैं तथा उन्होंने मार्क्सवादी शिक्षा प्राप्त नहीं की है और केन्द्रीय कमेटी की राष्ट्रीयता नीति को आत्मसात नहीं किया है। इसलिए उन्हें बड़ी संजीदगी के साथ शिक्षित किया जाना चाहिए, ताकि इस समस्या को कदम-ब-कदम हल किया जा सके। इसके अलावा अखबारों में ठोस तथ्यों पर आधारित ज्यादा से ज्यादा लेख प्रकाशित किए जाने चाहिए, जिससे हान शोविनिज्म की खुले तौर पर आलोचना की जा सके और पार्टी-सदस्यों व जनता को शिक्षित किया जा सके।

एक अन्तःपार्टी निदेश, जिसका मसौदा कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था।

"पांच अधिकताओं" की समस्या को हल करो

19 मार्च 1953

1. देहाती इलाकों में हमारे काम में पार्टी व सरकार के संगठनों को किसान समुदाय से अलग-थलग रखने तथा किसानों व उनके सक्रिय तत्वों के हितों को नुकसान पहुंचाने से सम्बन्धित गम्भीर समस्याएं मौजूद हैं; ये समस्याएं "पांच अधिकताएं" कहलाती हैं। ये "पांच अधिकताएं" इस प्रकार हैं : सौंपे गए कामों की अधिकता, मीटिंगों व ट्रेनिंग कोर्सों की अधिकता, दस्तावेजों, लिखित रिपोर्टों व आंकड़े जमा करने वाले फार्मों की अधिकता, संगठनों की अधिकता और सक्रिय तत्वों के लिए अतिरिक्त कामों की अधिकता। ये समस्याएं बहुत पहले से ही मौजूद रही हैं। इनमें से कुछ समस्याओं के बारे में केन्द्रीय कमेटी ने विभिन्न स्तरों की पार्टी कमेटियों को निदेश दिए थे, जिनमें उनसे यह अनुरोध किया गया था कि वे इन पर समुचित ध्यान दें और इन्हें हल कर लें। लेकिन हल होने के बदले ये समस्याएं दिनोंदिन गम्भीर होती जा रही हैं। इसका कारण यह है कि इस मामले को सुव्यवस्थित ढंग से समूचे रूप में नहीं उठाया गया, और इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि केन्द्र, बृहत्तर प्रशासनिक क्षेत्र, प्रान्त (म्युनिसिपलटी) प्रिफेक्चर और काउंटी इन पांच स्तरों के पार्टी व सरकार के नेतृत्वकारी अंगों में मौजूद विकेन्द्रीयता व नौकरशाही के खिलाफ संघर्ष नहीं चलाया गया। कारण, जिले और श्याङ में मौजूद "पांच अधिकताओं" की उत्पत्ति आम तौर पर खुद अपने इलाके में नहीं बल्कि ऊपर के अंगों में हुई है; और वे काउंटी और उसके ऊपर के स्तरों के पार्टी व सरकार के नेतृत्वकारी अंगों में गम्भीर रूप से मौजूद विकेन्द्रीयता व नौकरशाही का ही परिणाम हैं। इनसे सम्बन्धित कुछ बातें ऐसी हैं जो क्रान्तिकारी युद्ध भूमि-सुधार के कालों में उत्पन्न हुई थीं और बिना किसी परिवर्तन के आज भी मौजूद हैं। इसलिए 1953 में नौकरशाही व फरमानशाही का विरोध करने और कानून व अनुशासन के उल्लंघन का विरोध करने के बारे में केन्द्रीय कमेटी के निदेश को कार्यान्वित करते समय हमें नेतृत्वकारी अंगों में मौजूद नौकरशाही व विकेन्द्रीयता को दूर करने के काम पर बल देना चाहिए, और उन नियमों व तरीकों को बदल देना चाहिए जिनकी उपयोगिता पहले तो थी लेकिन अब नहीं रही। सिर्फ ऐसा करने से ही यह समस्या हल हो सकती है। जहां तक विभिन्न स्तर के नेतृत्वकारी अंगों के काम सौंपने, मीटिंगें बुलाने व ट्रेनिंग कोर्स चलाने, दस्तावेजों व आंकड़े जमा करने वाले फार्मों को भेजने या निचली इकाइयों से रिपोर्टें मांगने, जिलों व श्याङों का संगठनात्मक ढांचा निर्धारित

एक अन्तःपार्टी निदेश, जिसका मसौदा कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था।

करने तथा गांवों में सक्रिय तत्त्वों का इस्तेमाल करने आदि के प्राधिकार का ताल्लुक है, अब से काउंटी व उसके ऊपर की पार्टी कमेटियों व सरकार के प्रमुख नेतृत्वकारी कामरेडों को वास्तविक स्थिति के अनुसार समुचित सीमाएं निर्धारित कर लेनी चाहिए; कुछ मामलों में तो खुद केन्द्रीय प्राधिकरणों को ही एकीकृत रूप से सीमाएं निर्धारित कर लेनी चाहिए। पहले, पार्टी, सरकार व जनता के संगठनों में विभिन्न स्तर के विभाग अपने अधीन इकाइयों को खुद अपनी तरफ से काम सौंपते थे, अपने अधीन काम करने वालों व ग्रामीण सक्रिय तत्त्वों को मीटिंगों या ट्रेनिंग कोर्सों में शामिल होने के लिए बिना सोचे-समझे बुला लेते थे, दस्तावेजों व आंकड़े जमा करने वाले फार्मों की बौछार कर देते थे तथा अपने अधीन इकाइयों या गांवों से अपनी मरजी के मुताबिक रिपोर्टें मांगते रहते थे। इन सभी अनुचित नियमों व अनुचित तरीकों को दृढ़तापूर्वक समाप्त कर दिया जाना चाहिए और उनकी जगह वास्तविक परिस्थिति के अनुकूल ऐसे नियमों व तरीकों को अपनाया जाना चाहिए जिन्हें नेतृत्व की अधीनता में प्रतिमानित किया गया हो। जहां तक हर श्याङ में तरह-तरह की कमेटियों के होने तथा सक्रिय तत्त्वों को एक साथ अनेक जिम्मेदारियां सौंपने के मामले हैं, इनमें भी दृढ़तापूर्वक लेकिन कदम-ब-कदम तब्दीली लाई जानी चाहिए, क्योंकि ये उत्पादन में बाधक होते हैं और इनकी वजह से जन समुदाय से अलग-थलग होने की स्थिति पैदा हो जाती है।

2. पार्टी, सरकार व जन-संगठनों के राष्ट्रीय स्तर के विभागों के बारे में केन्द्रीय कमेटी ने, केन्द्रीय कमेटी के संगठन विभाग तथा केन्द्रीय जन सरकार की प्रशासन परिषद और उसके अधीन वित्तीय व आर्थिक कमेटी, सांस्कृतिक व शैक्षणिक कमेटी तथा राजनीतिक व न्यायिक कमेटी के जिम्मेदार कामरेडों को यह काम सौंप दिया है कि वे "पांच अधिकताओं" को पैदा करने वाली सभी कार्य-पद्धतियों को जल्दी ही समाप्त कर दें, समुचित नियमों व तरीकों को निर्धारित करें और केन्द्रीय कमेटी को रिपोर्ट दें।

3. वृहत्तर प्रशासनिक क्षेत्रों और प्रान्तों व म्युनिसिपलटियों में, केन्द्रीय कमेटी के ब्यूरोओं व उपब्यूरोओं और प्रान्तीय व म्युनिसिपल पार्टी कमेटियों तथा समानान्तर स्तर के प्रशासनिक संस्थानों के उत्तरदायी कामरेडों को "पांच अधिकताओं" के मामलों की जांच-पड़ताल करने, उन्हें हल करने का तरीका निर्धारित करने और केन्द्रीय कमेटी को रिपोर्ट देने की जिम्मेदारी उठा लेनी चाहिए। यह उद्देश्य प्राप्त करने के लिए हम केन्द्रीय कमेटी के ब्यूरोओं व उप-ब्यूरोओं और प्रान्तीय व म्युनिसिपल पार्टी कमेटियों से अनुरोध करते हैं कि वे "पांच अधिकताओं" की समस्या की जांच-पड़ताल के लिए अपना-अपना विशेष निरीक्षण-दल भेजें, अपने अधीन एक या दो जिलों और श्याङों (शहर में एक या दो क्षेत्रों और मोहल्लों) की स्थिति की जांच करें, जिससे समस्या को हल करने के लिए सन्दर्भ-सामग्री इकट्ठी की जा सके।

4. प्रिफेक्चरों व काउंटियों में मौजूद "पांच अधिकताओं" का सवाल हल करने के लिए निदेशन देने की जिम्मेदारी प्रान्तीय पार्टी-कमेटियों पर है।

5. कृषि-उत्पादन देहात में सबसे महत्त्वपूर्ण काम है; बाकी सब काम उसके सहायक हैं। जो भी काम या काम का तरीका किसानों के उत्पादन में बाधक हो, उससे बचना चाहिए। हमारी मौजूदा कृषि अर्थव्यवस्था अब भी आम तौर पर बिखरे हुए छोटे किसानों वाली

अर्थव्यवस्था बनी हुई है, जिसमें पुराने ढंग के औजारों का इस्तेमाल किया जाता है; यह सोवियत संघ की मशीनीकृत सामूहिक कृषि से काफी भिन्न है। इसलिए वर्तमान संक्रमण काल में हम कृषि के क्षेत्र में, राजकीय फार्मों को छोड़कर, एकीकृत व योजनाबद्ध उत्पादन नहीं कर सकते और किसानों के मामले में बहुत ज्यादा हस्तक्षेप नहीं कर सकते। हम केवल अपनी मूल्य नीति के जरिए और आवश्यक व व्यावहारिक आर्थिक व राजनीतिक काम के जरिए ही कृषि-उत्पादन का मार्गदर्शन कर सकते हैं और उद्योग के साथ उसका तालमेल कायम कर सकते हैं, ताकि उसे राष्ट्रीय आर्थिक योजना में सम्मिलित किया जा सके। कृषि के क्षेत्र में जो भी "योजना" और देहातों में जो भी "काम" इस सीमा को लांघ जाता है, वह जरूर अमल करने योग्य नहीं है और किसान लोग जरूर उसका विरोध करेंगे, तथा इस प्रकार हमारी पार्टी किसान समुदाय से, जिसकी आबादी हमारे राष्ट्र की कुल आबादी की अस्सी फीसदी से ज्यादा है, अलग-थलग हो जाएगी। यह सचमुच एक बहुत खतरनाक बात है। जिलों व श्याङों के हमारे काम में मौजूद "पांच अधिकताओं" की समस्या अधिकांशतः किसानों के बारे में ऐसे ही अत्यधिक हस्तक्षेप को प्रतिबिम्बित करती है (उसका एक छोटा सा अंश क्रान्तिकारी युद्ध व भूमि-सुधार की आवश्यकताओं से पैदा हुआ था और आज तक बना हुआ है)। इस समस्या से किसानों में असन्तोष पैदा हो गया है, इसलिए तब्दीली लाना जरूरी है।

बिना अधिकार प्राप्त किए केन्द्रीय कमेटी के नाम से दस्तावेज जारी करके अनुशासन का उल्लंघन करने के कारण ल्यू शाओ-ची और याङ शाङ-खुन की आलोचना

19 मई 1953

1

आज से, केन्द्रीय कमेटी के नाम से भेजे जाने वाले सभी दस्तावेज व टेलीग्राम सिर्फ तभी भेजे जा सकेंगे जब मेरे द्वारा उन्हें जांचा जा चुका हो। अन्यथा उन्हें अप्रामाणिक समझा जाएगा। कृपया इस बात पर गौर करें।

2

(1) कृपया पिछले वर्ष 1 अगस्त से (1 अगस्त से पहले के दस्तावेजों व टेलीग्रामों की जांच की जा चुकी है) इस वर्ष 5 मई तक की अवधि में केन्द्रीय कमेटी या उसके फौजी कमीशन के नाम से भेजे गए सभी टेलीग्रामों व दस्तावेजों की जांच करने की जिम्मेदारी उठा लें और यह देख लें कि इनमें ऐसे टेलीग्राम व दस्तावेज हैं कि नहीं जिन्हें मेरे द्वारा न जांचा गया हो और अगर हैं तो कितने हैं (इनमें वे टेलीग्राम व दस्तावेज शामिल नहीं हैं जिन्हें उन दिनों भेजा गया था जब मैं या तो निरीक्षण दौरे पर बाहर गया हुआ था अथवा बीमारी के कारण अनुपस्थित था), तथा इसका नतीजा मुझे बता दें।

(2) कई मौकों पर पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा आयोजित मीटिंगों में स्वीकृत प्रस्ताव बगैर मेरे जांचे अनधिकृत रूप से जारी कर दिए गए। यह एक गलत बात है और अनुशासन का उल्लंघन है।

कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा लिखित रूप से दो बार की गई ल्यू शाओ-ची और याङ शाङ-खुन की आलोचना।

आम कार्यदिशा से भटकने वाले दक्षिणपंथी विचारों का खंडन करो

15 जून 1953

संक्रमण काल[1] के दौरान, पार्टी की आम कार्यदिशा अथवा आम कार्य है दस से पन्द्रह वर्ष में या इससे कुछ लम्बी अवधि में, देश के औद्योगीकरण तथा कृषि, दस्तकारी और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर के कार्य को बुनियादी तौर पर पूरा कर लेना। यह आम कार्यदिशा हमारे सभी कार्यों को आलोकित करने वाला प्रकाश-स्तम्भ है। इस आम कार्यदिशा से हरगिज नहीं भटकना चाहिए, अन्यथा ''वामपंथी'' या दक्षिणपंथी गलतियां हो जाएंगी।

कुछ व्यक्ति यह सोचते हैं कि संक्रमण काल बहुत लम्बा है और उनमें उतावलेपन की भावना पैदा हो गई है। यह स्थिति ''वामपंथी'' गलतियों की ओर ले जाएगी। कुछ अन्य व्यक्ति जनवादी क्रान्ति की विजय के बाद भी उसी स्थान पर खड़े हैं जहां वे पहले खड़े थे। वे क्रान्ति के स्वरूप में हुए परिवर्तन को नहीं समझ पाते और समाजवादी रूपान्तर करने के बजाय अब भी अपने ''नव-जनवाद'' पर अड़े हुए हैं। यह स्थिति दक्षिणपंथी गलतियों की ओर ले जाएगी। हमारी कृषि का ही उदाहरण लीजिए, समाजवादी रास्ता उसके लिए एकमात्र रास्ता है। देहाती इलाकों में पार्टी का केन्द्रीय कार्य है आपसी सहयोग व सहकारिता के आन्दोलन का विकास करना तथा कृषि-उत्पादकता को लगातार बढ़ाते जाना।

दक्षिणपंथी भटकाव इन तीन कथनों में अभिव्यक्त होता है :

''नव-जनवादी सामाजिक व्यवस्था को स्थिरता से कायम रखो''। यह एक हानिकारक प्रस्थापना है। संक्रमण काल में हर समय परिवर्तन होते रहते हैं और प्रतिदिन समाजवादी तत्वों का उदय होता रहता है। ऐसी स्थिति में ''नव-जनवादी सामाजिक व्यवस्था को स्थिरता से कायम रखना'' भला कैसे सम्भव है ? उसे ''स्थिरता से कायम रखना'' दरअसल बहुत कठिन है ! मिसाल के लिए, निजी उद्योग व वाणिज्य का रूपान्तर किया जा रहा है, और अगर इस साल की दूसरी छमाही में कोई व्यवस्था ''कायम'' की जाएगी, तो वह अगले साल ''स्थिरता'' से कायम नहीं रह पाएगी। कृषि के क्षेत्र में भी आपसी सहयोग व सहकारिता में प्रतिवर्ष

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के राजनीतिक ब्यूरो की एक मीटिंग में दिए गए भाषण का एक अंश। इसमें कामरेड माओ त्सेतुङ ने ल्यू शाओ-ची और अन्य व्यक्तियों द्वारा पेश किए गए ''नव-जनवादी सामाजिक व्यवस्था को स्थिरता से कायम रखने'' जैसे दक्षिणपंथी अवसरवादी विचारों का खंडन किया है।

परिवर्तन होते जा रहे हैं। संक्रमण काल अन्तरविरोधों और संघर्षों से परिपूर्ण होता है। हमारा वर्तमान क्रान्तिकारी संघर्ष विगत काल के सशस्त्र क्रान्तिकारी संघर्ष से कहीं अधिक गहन रूप धारण कर रहा है। यह एक ऐसी क्रान्ति है जो पूंजीवादी व्यवस्था और शोषण की अन्य सभी व्यवस्थाओं को हमेशा के लिए दफना देगी। ''नव-जनवादी सामाजिक व्यवस्था को स्थिरता से कायम रखने'' का यह विचार संघर्ष की वास्तविक स्थिति के प्रतिकूल है और समाजवादी कार्य की प्रगति में रुकावटें पैदा करता है।

''नव-जनवाद से समाजवाद की ओर अग्रसर हो जाओ''। यह एक अस्पष्ट प्रस्थापना है। क्या हमें इस ध्येय की ओर अग्रसर होते जाना है और इसके अलावा और कुछ नहीं करना है, वर्ष-प्रतिवर्ष अग्रसर होते जाना है और पन्द्रह वर्ष बीतने पर भी लगातार उसी की ओर अग्रसर होते जाना है ? किसी ध्येय की ओर केवल अग्रसर होते जाने का अर्थ है उस ध्येय की पूर्ति न कर पाना। यह प्रस्थापना देखने में तो युक्तिसंगत मालूम होती है, मगर बारीकी से जांच करने पर बिलकुल अयुक्तिसंगत साबित हो जाती है।

''निजी सम्पत्ति को निश्चित रूप से बनाए रखो''। चूंकि मध्यम किसान ''बहुत अधिक प्रकट होने'' और अपनी सम्पत्ति का ''साम्यीकरण'' किए जाने से डरते हैं, इसलिए कुछ व्यक्तियों ने उन्हें इत्मीनान दिलाने के उद्देश्य से यह नारा पेश किया है। लेकिन यह ठीक नहीं है।

हमने कदम-ब-कदम समाजवाद में संक्रमण करने का प्रस्ताव पेश किया है। यह एक बेहतर प्रस्थापना है। जब हम ''कदम-ब-कदम'' कहते हैं, तो हमारा मतलब यह होता है कि संक्रमण के काम को पन्द्रह वर्ष में और हर वर्ष के बारह महीनों में फैलाकर पूरा किया जाएगा। बेहद तेजी से चलने का अर्थ है ''वामपंथ'' की तरफ भटक जाना और यथास्थान खड़े रहने का अर्थ है दक्षिणपंथ की तरफ बहुत अधिक भटक जाना। यह जरूरी है कि हम ''वामपंथी'' और दक्षिणपंथी दोनों ही भटकावों का विरोध करें और संक्रमण की सम्पूर्ण प्रक्रिया समाप्त होने तक कदम-ब-कदम संक्रमण करते रहें।

नोट

[1] यहां ''संक्रमण काल'' का तात्पर्य चीन लोक गणराज्य की स्थापना से समाजवादी रूपान्तर का कार्य बुनियादी तौर पर पूरा होने तक की अवधि से है। इस संक्रमण काल में पार्टी की आम कार्यदिशा अथवा आम कार्य था एक अपेक्षाकृत लम्बी अवधि में चीन के औद्योगीकरण तथा कृषि, दस्तकारी और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर के कार्य को बुनियादी तौर पर पूरा करना। यह संक्रमण काल अर्थ की दृष्टि से उस संक्रमण काल से भिन्न है जिसकी चर्चा सितम्बर 1962 में पार्टी की आठवीं केन्द्रीय कमेटी के दसवें पूर्ण अधिवेशन में और उसके बाद कामरेड माओ त्सेतुङ ने की थी तथा जिसका तात्पर्य पूंजीवाद से कम्युनिज्म तक संक्रमण करने के पूरे ऐतिहासिक काल से है।

नौजवान संघ को अपने काम में नौजवानों की विशेषताओं को ध्यान में रखना चाहिए

30 जून 1953

नौजवान संघ द्वारा पार्टी से स्वतंत्र होने का अनुचित दावा किए जाने की समस्या अतीत की वस्तु बन चुकी है। आज, समस्या नौजवान संघ की अपनी स्वतंत्र गतिविधियों के अभाव की है, न कि उसके द्वारा स्वतंत्रता का अनुचित दावा किए जाने की।

नौजवान संघ के लिए यह जरूरी है कि वह अपनी गतिविधियों का तालमेल पार्टी के केन्द्रीय कार्यों के साथ कायम करे, लेकिन ऐसा करते समय उसकी अपनी स्वतंत्र गतिविधियां होना और नौजवानों की विशेषताओं को ध्यान में रखना जरूरी है। 1952 में नौजवान संघ की केन्द्रीय कमेटी के कामरेडों के साथ बातचीत के दौरान मैंने नौजवान संघ की केन्द्रीय कमेटी के सामने विचारार्थ दो सवाल पेश किए थे : पहला, पार्टी को नौजवान संघ के काम का नेतृत्व कैसे करना चाहिए, और दूसरा, नौजवान संघ को अपना काम कैसे करना चाहिए। दोनों ही सवालों में नौजवानों की विशेषताओं को ध्यान में रखने की बात शामिल है। विभिन्न स्थानों की पार्टी-कमेटियों ने नौजवान संघ के काम के प्रति सन्तोष प्रकट किया है, क्योंकि उसने अपने काम का तालमेल पार्टी के केन्द्रीय कार्यों के साथ कायम कर लिया है। लेकिन अब असन्तोष प्रकट करने का समय आ गया है, यानी नौजवानों की विशेषताओं को ध्यान में रखकर आयोजित की जाने वाली नौजवान संघ की स्वतंत्र गतिविधियों के अभाव के प्रति असन्तोष प्रकट करने का समय आ गया है। पार्टी और नौजवान संघ के नेतृत्वकारी अंगों को यह सीख लेना चाहिए कि वे नौजवान संघ के कार्य का नेतृत्व कैसे करें तथा उन्हें नौजवानों के व्यापक समुदाय को संगठित करने व शिक्षित करने के लिए अपनी गतिविधियों का तालमेल पार्टी के केन्द्रीय कार्यों के साथ कायम करने और नौजवानों की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए काम करने में निपुण बन जाना चाहिए।

पार्टी के नेतृत्व में, नौजवान संघ क्रान्तिकारी कार्य के हर क्षेत्र में सक्रिय रहा है और उसने भारी उपलब्धियां प्राप्त की हैं। चाहे कारखाने हों या गांव, फौजी यूनिटें हों या स्कूल, उनमें नौजवानों के बिना हमारा क्रान्तिकारी कार्य सफल नहीं हो सकता। चीनी नौजवान बड़े अनुशासनबद्ध हैं और उन्होंने पार्टी द्वारा सौंपे गए सभी कार्यों को पूरा किया है। आज जबकि कोरिया में युद्ध-विराम होने जा रहा है और भूमि-सुधार पूरा हो चुका है, हमारे देश में काम

चीनी नव-जनवादी नौजवान संघ की दूसरी राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्षमंडल के साथ मुलाकात के समय व्यक्त किए गए उद्‌गार।

का गुरुत्व केन्द्र समाजवादी रूपान्तर और समाजवादी निर्माण बनता जा रहा है। अतएव हमारे लिए अध्ययन करना आवश्यक है। नौजवान संघ को यह सीख लेना चाहिए कि बड़ी उम्र के लोगों के साथ मिलकर देहातों में कृषि के काम को और शहरों में उद्योग के काम को बखूबी करने, विद्यालयों में अच्छी तरह अध्ययन करने, सरकारी दफ्तरों में अपनी ड्यूटी अच्छी तरह सम्भालने तथा फौजी यूनिटों में ट्रेनिंग के काम को अच्छी तरह करने और राष्ट्रीय प्रतिरक्षा सेना को एक आधुनिक सेना में बदल देने के काम में नौजवानों का नेतृत्व कैसे किया जाय।

14 से 25 साल तक के नौजवानों के लिए अध्ययन और काम में जुट जाना आवश्यक है, लेकिन चूंकि युवावस्था शारीरिक विकास की अवस्था है, इसलिए अगर उनके स्वास्थ्य की उपेक्षा की गई तो यह एक बहुत खतरनाक बात होगी। नौजवानों के लिए अध्ययन और भी अधिक आवश्यक है, क्योंकि उन्हें बहुत सी ऐसी चीजें अभी सीखनी हैं जिन्हें बड़ी उम्र के लोग सीख चुके हैं। फिर भी उन्हें अध्ययन या काम के बोझ से बहुत अधिक नहीं लादा जाना चाहिए। खास तौर पर 14 से 18 साल तक के नौजवानों के काम का भार बड़ी उम्र के लोगों के समान नहीं होना चाहिए। नौजवानों को युवा होने के नाते खेलने, मनोरंजन करने और कूदने-फांदने के लिए अधिक समय प्राप्त होना चाहिए। अन्यथा वे खुश नहीं रहेंगे। और समय आने पर वे प्रेम भी करेंगे और शादी भी करेंगे। इन सब बातों में वे बड़ी उम्र के लोगों से भिन्न हैं।

मैं कुछ बातें अपने नौजवानों से कहना चाहता हूं : पहले, मैं कामना करता हूं कि वे स्वस्थ रहें; दूसरे, मैं कामना करता हूं कि वे अपने अध्ययन-कार्य में सफलता प्राप्त करें; और तीसरे, मैं कामना करता हूं कि वे अपने काम में सफलता प्राप्त करें।

मैं सुझाव देता हूं कि सभी विद्यार्थियों के सोने के समय में एक घंटे की वृद्धि कर दी जाए। कहने को तो उन्हें सोने के लिए आठ घंटे मिलते हैं, लेकिन इसके लिए उन्हें दरअसल सिर्फ छः या सात ही घंटे मिल पाते हैं और आम तौर पर ऐसा लगता है कि उनके सोने के लिए काफी समय नहीं है। नौजवान विद्यार्थियों का स्नायु-मण्डल अक्सर दुर्बल हो जाता है, इसलिए वे आसानी से नहीं सो पाते या सोने के बाद आसानी से नहीं जाग पाते। नौ घंटे अवश्य सोने का नियम निर्धारित कर दिया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में एक आदेश जारी कर दिया जाना चाहिए तथा उसे लागू करना अनिवार्य बना दिया जाना चाहिए, और इस सिलसिले में बहस-मुबाहिसे की कोई जरूरत नहीं है। नौजवानों को, और इसी तरह अध्यापकों को भी सोने के लिए काफी समय मिलना चाहिए।

क्रान्ति हमारे लिए बहुत-सी अच्छी-अच्छी चीजें लाई है, लेकिन साथ ही एक ऐसी चीज भी लाई है जो उतनी अच्छी नहीं है। सब लोग अत्यन्त सक्रिय और अत्यन्त उत्साही हैं, और इसलिए अक्सर बेहद थक जाते हैं। अब हमें इस बात की गारण्टी कर देनी चाहिए कि सब लोग, जिनमें मजदूर, किसान, योद्धा, विद्यार्थी और कार्यकर्ता शामिल हैं, स्वस्थ रहें। बेशक, इसका अनिवार्य रूप से यह मतलब नहीं कि अगर आपका स्वास्थ्य अच्छा है तो आपका अध्ययन भी अच्छा ही होगा, क्योंकि अध्ययन के लिए उचित तरीका अपनाया जाना जरूरी है:

आजकल जूनियर मिडिल स्कूलों में विद्यार्थियों के लिए कक्षा का समय कुछ अधिक हो गया है और उसमें समुचित कटौती करना अच्छा होगा। सक्रिय तत्वों की मीटिंगें भी बहुत ज्यादा

होती हैं, और उन्हें कम किया जाना चाहिए। एक तरफ अध्ययन पर और दूसरी तरफ मनोरंजन, विश्राम व सोने पर पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिए। नौजवान, मजदूर, किसान और सैनिक अपने काम के साथ-साथ अध्ययन भी करते हैं, अतएव उनके काम और अध्ययन पर तथा साथ ही उनके मनोरंजन, विश्राम व सोने पर भी पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिए।

हमें इन दोनों पहलुओं को, यानी एक तरफ अध्ययन व काम को तथा दूसरी तरफ सोने, विश्राम व मनोरंजन को, मजबूती से गिरफ्त में रखना चाहिए। पहले हमने सिर्फ एक पहलू को मजबूती से गिरफ्त में रखा था, और दूसरे पहलू को या तो मजबूती से गिरफ्त में नहीं रखा था या बिलकुल गिरफ्त में नहीं रखा था। अब यह आवश्यक हो गया है कि कुछ मनोरंजन की व्यवस्था भी की जाय, जिसके लिए समय और सुविधाओं का होना जरूरी है, और इस पहलू को भी मजबूती से गिरफ्त में रखा जाना चाहिए। पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने मीटिंगों की संख्या और अध्ययन के समय में कटौती करने का फैसला किया है, और आप लोगों को यह देखना चाहिए कि इस फैसले पर अमल किया जाता है या नहीं। अगर कोई इस पर अमल करने से इनकार करे, तो आपको आपत्ति करनी चाहिए।

संक्षेप में, नौजवानों के लिए ऐसी स्थितियां पैदा की जानी चाहिए जिनमें वे स्वस्थ रहें, अच्छी तरह अध्ययन करें और अच्छी तरह काम करें। कुछ नेतृत्वकारी कामरेड नौजवानों से सिर्फ काम लेने में दिलचस्पी रखते हैं और उनके स्वास्थ्य पर बहुत कम ध्यान देते हैं। उपरोक्त बातें कहकर आप लोग उनका विरोध कर सकते हैं। आप लोग एक मजबूत आधार-भूमि पर खड़े हैं, यानी आप युवा पीढ़ी की रक्षा कर रहे हैं, ताकि वह हृष्ट-पुष्ट बन सके। हम लोगों की पीढ़ी को काफी नुकसान हुआ था, क्योंकि उस समय वयस्क लोग अपने बच्चों का खयाल नहीं रखते थे। वयस्कों के लिए खाने की मेज होती थी, लेकिन बच्चों के लिए नहीं होती थी। बच्चों को परिवार में बोलने का हक हासिल नहीं था और अगर वे रोते थे तो उन्हें थप्पड़ मार दिया जाता था। आज नए चीन में हमें अपना रुख बदल देना चाहिए और बच्चों व नौजवानों के हितों पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

नौजवान कार्यकर्ताओं को नौजवान संघ की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य के रूप में निर्वाचित किया जाना चाहिए। तीन राज्यों के काल में, छाओ छाओ ने अपनी विशाल सेना को याङत्सी नदी तक ले जाकर पूर्वी चीन स्थित ऊ राज्य पर चढ़ाई कर दी। चओ यवी को, जो उस समय उम्र की दृष्टि से ''नौजवान संघ का सदस्य'' था, ऊ सेना का कमान-सेनापति नियुक्त कर दिया गया। छङ फू और अन्य रणकुशल सेनापतियों ने इस पर आपत्ति की, पर बाद में उन्हें समझा-बुझा दिया गया और उन्होंने चओ यवी की कमान में काम करना स्वीकार कर लिया। अन्त में युद्ध में विजय प्राप्त हो गई। आज हम ''चओ यवी'' के वर्तमान रूपों को नौजवान संघ की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य चुनना चाहते हैं, फिर भी लोग इस पर आपत्ति करते हैं ! नौजवान संघ की केन्द्रीय कमेटी की सदस्यता के उम्मीदवार सिर्फ बड़ी उम्र वाले व्यक्ति ही हैं – नौजवान बहुत कम हैं। क्या इससे काम चल जाएगा ? बेशक, हमें सिर्फ उम्र के आधार पर ही नहीं, बल्कि योग्यता के आधार पर भी निर्णय करना चाहिए। शुरू में नौजवान संघ की केन्द्रीय कमेटी की सदस्यता के उम्मीदवारों की नाम-सूची में 30 वर्ष से कम उम्र वाले लोगों की संख्या केवल नौ थी, लेकिन पार्टी की केन्द्रीय कमेटी में विचार-विमर्श के बाद अब यह

संख्या बढ़कर 60 से कुछ ऊपर हो गई है, और बढ़ोतरी होने पर भी यह संख्या कुल संख्या के एक चौथाई से कुछ अधिक है। 30 वर्ष से ज्यादा उम्र वाले उम्मीदवारों की संख्या अब भी कोई तीन चौथाई है, फिर भी कुछ साथियों की राय है कि यह काफी नहीं है। मैं समझता हूं कि यह काफी है। क्या ये 60 से कुछ अधिक नौजवान, सबके सब, हर तरह से योग्य हैं ? कुछ साथियों का कहना है कि यह बात पक्के तौर पर नहीं कही जा सकती। हमें अपने नौजवानों पर पूरा विश्वास रखना चाहिए, उनमें अधिकतर लोग अपने पद के योग्य सिद्ध होंगे। हो सकता है कि इक्के-दुक्के लोग अपने काम में अयोग्य साबित हों, मगर इसके बारे में चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, अगले चुनाव में उनकी जगह दूसरे लोगों को चुना जा सकेगा। ऐसा करने से हमारी बुनियादी दिशा गलत नहीं होगी। नौजवान लोग हमसे निकृष्ट नहीं हैं। बुजुर्ग लोग अनुभवी होते हैं, जो निस्सन्देह उनकी एक खूबी है, लेकिन दूसरी तरफ उनकी शारीरिक शक्ति लगातार क्षीण होती जा रही है, उनकी देखने-सुनने की शक्ति पहले की तरह तेज नहीं है और उनके हाथ-पांव नौजवानों की तरह फुर्तीले नहीं हैं। यह प्रकृति का नियम है। जो साथी इस पर आपत्ति करते हैं उन्हें इस बात का एहसास कराया जाना चाहिए।

नौजवान संघ के संगठनों को नौजवानों की विशेषताओं को ध्यान में रखना चाहिए और उनका अपना-अपना कार्यक्षेत्र होना चाहिए, लेकिन साथ ही उन्हें समानान्तर स्तर की पार्टी-कमेटियों का नेतृत्व भी स्वीकार करना चाहिए। यह कोई नई चीज नहीं है बल्कि एक ऐसी चीज है जो बहुत पहले से चली आ रही है और यह हमेशा मार्क्सवाद का एक उसूल रहा है। इसी को वास्तविकता से प्रस्थान करना कहते हैं। नौजवान तो आखिर नौजवान ही होते हैं, अगर ऐसा न हो तो फिर नौजवान संघ की क्या आवश्यकता है ? नौजवान लोग बड़ी उम्र के लोगों से भिन्न होते हैं, और युवतियां भी युवकों से भिन्न होती हैं। अगर आपने इन विशेषताओं को ध्यान में न रखा, तो आप जन-समुदाय से अलग-थलग हो जाएंगे। इस समय नौजवान संघ के सदस्य 90 लाख हैं, और अगर आपने नौजवानों की विशेषताओं की उपेक्षा की, तो सम्भवतः केवल 10 लाख सदस्य ही आपका समर्थन करेंगे और 80 लाख सदस्य आपका समर्थन नहीं करेंगे।

अपने काम के दौरान नौजवान संघ को अपने सदस्यों की बहुसंख्या को ध्यान में रखना चाहिए और साथ ही उनके अन्दर मौजूद आगे बढ़े हुए तत्वों पर भी ध्यान देना चाहिए। इससे शायद कुछ आगे बढ़े हुए तत्व सन्तुष्ट न हों, क्योंकि वे यह चाहते हैं कि नौजवान संघ के संगठन अपने सभी सदस्यों से कड़ी मांग करें। लेकिन यह इतना ज्यादा उचित नहीं है और उन्हें इस बात का एहसास करा दिया जाना चाहिए। नौजवान संघ के संविधान के मसौदे में कर्तव्य बहुत अधिक और अधिकार बहुत कम निर्धारित किए गए हैं; इसमें कुछ ढील दी जानी चाहिए, ताकि बहुसंख्या कदम मिलाकर चल सके। आपको अपना ध्यान बहुसंख्या पर केन्द्रित करना चाहिए, केवल अल्पसंख्या पर नहीं।

आपके संविधान के मसौदे में यह व्यवस्था की गई है कि अगर कोई सदस्य लगातार चार महीने तक नौजवान संघ की बुनियादी इकाइयों द्वारा नियमित रूप से आयोजित मीटिंगों में हिस्सा न ले, तो यह समझा जाएगा कि वह खुद-ब-खुद नौजवान संघ से अलग हो गया है। यह एक बहुत अधिक कड़ा नियम है। यहां तक कि पार्टी के संविधान में भी छः महीने की अवधि की व्यवस्था की गई है; क्या आप भी ऐसा नहीं कर सकते ? नौजवान संघ के संविधान में ऐसी कोई व्यवस्था न की जाय जिससे अमल में लाना असम्भव हो, या सिर्फ 10 लाख सदस्यों के लिए सम्भव हो और बाकी 80 लाख सदस्यों के लिए असम्भव हो। उसूलों को लागू करते समय लचीलेपन से काम लेना जरूरी है। जो कुछ होना चाहिए और जो कुछ वास्तव में है, इन दोनों के बीच अन्तर होता है। कुछ कानूनों को पूरी तरह लागू करने में भी कई साल लग जाते हैं। मिसाल के लिए विवाह कानून की अनेक धाराएं कार्यक्रमीय हैं और उन्हें पूरी तरह लागू करने के लिए कम से कम तीन पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि चाहिए। "पीठ पीछे अनाप-शनाप बातें न करो", यह धारा उसूली तौर पर तो सही है, लेकिन इसे नौजवान संघ के संविधान में शामिल करने की आवश्यकता नहीं है। उदारतावाद का विरोध करना एक दीर्घकालीन कार्य है, यह पार्टी में भी कम मात्रा में मौजूद नहीं है। आप पीठ पीछे बुरा-भला कहने की मनाही करना चाहते हैं, लेकिन वास्तव में यह असम्भव है। बहुत अधिक तंग चौखटे न बनाएं। मुख्य बात यह है कि हमारे और दुश्मन के बीच एक स्पष्ट विभाजन-रेखा खींच लेनी चाहिए।

प्रतिष्ठा कदम-ब-कदम कायम होती है। एक समय ऐसा भी था जब सेना में कुछ लोगों ने दूसरों को गाली देने के लिए गीत तक रच डाले। हमने न तो इसकी मनाही की और न जांच-पड़ताल, फिर भी हमारी सेना तहस-नहस नहीं हुई। हमने सिर्फ कुछ प्रमुख बातों को मजबूती से अपनी गिरफ्त में रखा, जैसे अनुशासन के तीन मुख्य नियम और ध्यान देने योग्य आठ बातें, और इस प्रकार हमारी सशस्त्र सेनाएं कदम-ब-कदम सही रास्ते पर चलने लगीं। नेताओं के प्रति जन-समुदाय के दिल में सच्चे स्नेह-समादर की भावना सिर्फ तभी पैदा होती है जब जन-समुदाय क्रान्तिकारी व्यवहार के दौरान उनसे परिचित हो जाय। सच्चा परिचय प्राप्त होने के बाद ही विश्वास पैदा होता है। आज नौजवान संघ की केन्द्रीय कमेटी को काफी ऊंची प्रतिष्ठा प्राप्त है। हालांकि कुछ लोग अब भी उसके प्रति स्नेह-समादर की भावना नहीं रखते, लेकिन वे धीरे-धीरे ऐसा करने लगेंगे। जब एक नौजवान को पहले पहल किसी पद पर नियुक्त किया जाता है तो उसकी प्रतिष्ठा ऊंची नहीं होती। लेकिन इसके बारे में चिन्ता करने की जरूरत नहीं, क्योंकि यह बिलकुल स्वाभाविक है कि उसे कुछ आलोचना और कुछ गाली-गलौज सुननी पड़ेगी। "पीठ पीछे अनाप-शनाप बातें करने" का कारण है "मुंह के सामने बात करने" के अवसरों का अभाव। अगर पूर्ण जनवाद पर अमल किया जाय और अगर आप अपनी दुखती रग को छूने की दूसरों को खुलेआम इजाजत दे दें, तो लोगों को अनाप-शनाप बातें करने की इजाजत देने पर भी वे यह कहेंगे कि हमें ऐसा करने की फुरसत नहीं है और हम आराम करना चाहते हैं। फिर भी, समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी और यह नहीं सोचना चाहिए कि उन्हें एकबारगी हमेशा के लिए सुलझाया जा सकता है; समस्याएं आज भी मौजूद हैं और कल भी मौजूद रहेंगी।

संक्रमण काल में पार्टी का आम कार्य है तीन पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में समाजवादी औद्योगीकरण तथा कृषि, दस्तकारी और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर के काम को बुनियादी तौर पर पूरा करना। तीन पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि पन्द्रह वर्ष की है। हर वर्ष एक छोटा कदम आगे बढ़ाइए और हर पांच वर्ष में एक लम्बा कदम आगे

बढ़ाइए, तथा तीन लम्बे कदम आगे बढ़ाने के बाद यह काम तकरीबन पूरा हो जाएगा। ''बुनियादी तौर पर पूरा करने'' का मतलब ''मुकम्मिल तौर पर पूरा करना'' नहीं है। बुनियादी तौर पर पूरा करने की बात कहना एक विवेकपूर्ण कथन है; हर काम करते समय विवेकशील बने रहना हमेशा बेहतर होता है।

मौजूदा दौर में चीन की कृषि अर्थव्यवस्था का स्वरूप आम तौर पर व्यक्तिगत है, और कदम-ब-कदम इसका समाजवादी रूपान्तर करने की आवश्यकता है। कृषि के क्षेत्र में आपसी सहयोग व सहकारिता के आन्दोलन का विकास करते समय हमें स्वेच्छा से शामिल होने के उसूल पर कायम रहना चाहिए। इस आन्दोलन का विकास न करना पूंजीवादी रास्ते की ओर ले जाएगा और यह एक दक्षिणपंथी भटकाव होगा। और न ही विकास की रफ्तार को हद से ज्यादा बढ़ाने से काम चल सकता है, क्योंकि यह एक ''वामपंथी'' भटकाव होगा। इस आन्दोलन को कदम-ब-कदम और समुचित तैयारी करने के बाद चलाया जाना चाहिए। हम कभी कोई ऐसी लड़ाई नहीं लड़ते जिसकी तैयारी न की गई हो और जिसमें विजय प्राप्त होने का यकीन न हो, और न हम कोई ऐसी लड़ाई लड़ते हैं जिसकी तैयारी तो की गई हो मगर जिसमें विजय प्राप्त होने का यकीन न हो। जिन दिनों हम च्याङ काई-शेक से लोहा ले रहे थे, उन दिनों शुरू में कुछ लोगों ने मनोगतवादी गलतियां की थीं, लेकिन बाद में जब दोष-निवारण आन्दोलन के जरिए मनोगतवाद को दूर कर दिया गया तो हमने विजय प्राप्त कर ली। आज हम समाजवाद की मुहिम चला रहे हैं, समाजवादी औद्योगीकरण तथा कृषि, दस्तकारी और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर के कार्य को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यह समूची जनता का आम कार्य है। इस आम कार्य को नौजवान संघ कैसे पूरा करे, इसके लिए आपको नौजवानों की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए समुचित निदेशक नीतियां निर्धारित करनी चाहिए।

राजकीय पूंजीवाद के बारे में

9 जुलाई 1953

चीन में वर्तमान पूंजीवादी अर्थव्यवस्था एक ऐसी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था है जिसका अधिकतम भाग जन सरकार के नियंत्रण में है, जो राजकीय मिलकियत वाली समाजवादी अर्थव्यवस्था के साथ विभिन्न प्रकार से जुड़ी हुई है और जिसकी निगरानी मजदूरों द्वारा की जाती है। यह एक साधारण किस्म की नहीं बल्कि एक खास किस्म की पूंजीवादी अर्थव्यवस्था है, अर्थात् एक नई किस्म की राजकीय पूंजीवादी अर्थव्यवस्था है। इसके अस्तित्व का मुख्य उद्देश्य पूंजीपतियों के लिए मुनाफा कमाना नहीं, बल्कि जनता और राज्य की आवश्यकताएं पूरी करना है। यह सच है कि मजदूरों द्वारा पैदा किए गए मुनाफे का एक अंश आज भी पूंजीपतियों के हाथ में चला जाता है, लेकिन यह पूरे मुनाफे का सिर्फ एक छोटा सा भाग है, लगभग एक-चौथाई भाग है। तीन-चौथाई भाग मजदूरों के लिए (कल्याण निधि के रूप में), राज्य के लिए (आय-कर के रूप में) और संयंत्रों को बढ़ाने के लिए है (जिसका एक छोटा भाग पूंजीपतियों के लिए मुनाफा पैदा करता है)। यही कारण है कि नई किस्म की इस राजकीय पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का स्वरूप काफी हद तक समाजवादी है तथा यह मजदूरों व राज्य के लिए हितकर है।

1953 की गर्मियों में आयोजित वित्तीय व आर्थिक कार्य विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन के एक दस्तावेज पर लिखी गई टिप्पणी।

संक्रमण काल के लिए पार्टी की आम कार्यदिशा

अगस्त 1953

चीन लोक गणराज्य की स्थापना से समाजवादी रूपान्तर का काम बुनियादी तौर पर पू
होने तक का काल एक संक्रमण काल है। इस संक्रमण काल में पार्टी की आम कार्यदिश
या आम कार्य है एक काफी लम्बी अवधि में देश के औद्योगीकरण तथा कृषि, दस्तकारी औ
पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर के काम को बुनियादी तौर पर पूरा करन
इस आम कार्यदिशा को हमारे सभी कामों को आलोकित करने वाला प्रकाश स्तम्भ हो
चाहिए, और जहां कहीं भी हम उससे भटक जाएंगे वहां दक्षिणपंथी या "वामपंथी" गल्तिय
कर बैठेंगे।

इस आम कार्यदिशा के अन्तर्गत बहुत सी नीतियां काफी पहले मार्च 1949 में आयोजि
पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन के प्रस्ताव में पेश की जा चुकी है
और उन पर उसूली तौर पर फैसला किया जा चुका है। फिर भी बहुत से साथी दूसरे पू
अधिवेशन के फैसलों के अनुसार काम नहीं करना चाहते और कुछ मामलों में तो अधिवेश
के फैसलों के विपरीत अपनी ही राह चलना पसन्द करते हैं, अथवा इससे भी आगे बढ़क
उसमें निर्धारित उसूलों का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन करते हैं।

1953 की गरमियों में आयोजित वित्तीय व आर्थिक कार्य विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में कामरे
चओ एन-लाइ द्वारा प्रस्तुत सारांश की जांच करते समय लिखा गया एक महत्वपूर्ण टिप्प

पार्टी के भीतर पूंजीवादी विचारों का विरोध करो

12 अगस्त 1953

हमारा यह सम्मेलन सफल रहा है, और प्रधानमंत्री चओ ने बेहतरीन सारांश प्रस्तुत किया

अब यह स्पष्ट हो गया है कि "तीन बुराई"-विरोधी और "पांच बुराई" विरोधी आन्दोलनों के बारे में पार्टी के भीतर स्वरूप की दृष्टि से दो भिन्न प्रकार की गलतियां मौजूद हैं। एक तरह की गलतियां साधारण स्वरूप वाली हैं, जैसे "पांच अधिकताएं"। ये गलतियां कोई भी व्यक्ति कर सकता है और किसी भी समय कर सकता है। "पांच अधिकताएं" "पांच न्यूनताओं" के रूप में भी बदल सकती हैं। दूसरी तरह की गलतियां उसूल से सम्बन्धित हैं, जैसे पूंजीवादी की तरफ बढ़ने का रुझान। ऐसी गलतियां पार्टी में पूंजीवादी विचारों का प्रतिबिम्ब हैं और एक ऐसे रुख से सम्बन्धित हैं जो मार्क्सवाद लेनिनवाद के विपरीत है।

"तीन बुराई"-विरोधी और "पांच बुराई"-विरोधी आन्दोलनों ने पार्टी में मौजूद पूंजीवादी विचारों पर करारी चोट की। लेकिन उस समय केवल भ्रष्टाचार और फिजूलखर्ची से सम्बन्धित पूंजीवादी विचारों पर अच्छा खासा प्रहार किया गया, जबकि पार्टी की कार्यदिशा से सम्बन्धित सवालों में प्रकट होने वाले पूंजीवादी विचारों से नहीं निपटा गया। इस तरह के पूंजीवादी विचार न केवल वित्तीय और आर्थिक कार्य में मौजूद हैं, बल्कि राजनीतिक व न्यायिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक और अन्य क्षेत्रों में भी मौजूद हैं, तथा राष्ट्रीय स्तर के कामरेडों व स्थानीय स्तर के कामरेडों में भी मौजूद हैं।

पिछले साल दिसम्बर से, जब कामरेड पो ई-पो ने "सार्वजनिक और निजी कारोबारों के बीच समानता"[1] वाली नई टैक्स-व्यवस्था प्रस्तुत की थी, हमारे वित्तीय व आर्थिक कार्य में मौजूद गलतियों की कड़ी आलोचना होती रही है और वर्तमान सम्मेलन में भी हुई है। अगर नई टैक्स-व्यवस्था का विकास होने दिया जाता, तो वह मार्क्सवाद-लेनिनवाद का उल्लंघन करके और संक्रमण काल के लिए निर्धारित पार्टी की आम कार्यदिशा का उल्लंघन करके हमें अनिवार्य रूप से पूंजीवाद की तरफ ले जाती।

संक्रमण काल हमें कहां ले जाएगा, समाजवाद में या पूंजीवाद में ? पार्टी की आम कार्यदिशा के अनुसार वह हमें समाजवाद में ले जाएगा। इसके लिए काफी लम्बे समय तक संघर्ष करना आवश्यक है। नई टैक्स-व्यवस्था की गलती चाउ च-शान[2] की गलती से भिन्न

1953 की गरमियों में आयोजित वित्तीय व आर्थिक कार्य विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में भाषण।

है और वह विचारधारा के सवाल से और पार्टी की आम कार्यदिशा से भटकने के सवाल से सम्बन्धित है। हमें पार्टी के भीतर पूंजीवादी विचारों के खिलाफ एक संघर्ष छेड़ देना चाहिए। विचारधारा की दृष्टि से पार्टी में तीन प्रकार के कामरेड हैं : कुछ कामरेड सुदृढ़ और अविचल हैं और उनके विचार मार्क्सवादी-लेनिनवादी हैं; अच्छी-खासी तादाद ऐसे कामरेडों की है जो बुनियादी तौर पर तो मार्क्सवादी-लेनिनवादी हैं, लेकिन थोड़ा-बहुत गैर-मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारों से भी ग्रस्त हैं; केवल थोड़े से कामरेड ऐसे हैं जो अच्छे नहीं हैं और जिनके विचार गैर- मार्क्सवादी-लेनिनवादी हैं। पो ई-पो के गलत विचारों की आलोचना करते समय कुछ लोग कहते हैं कि उनकी गलती का स्रोत निम्न-पूंजीवादी व्यक्तिवाद है; यह राय ज्यादा ठीक नहीं है। उनकी आलोचना करते समय मुख्य रूप से उनके पूंजीवादी विचारों की, जो पूंजीवाद के लिए हितकर और समाजवाद के लिए हानिकर हैं, आलोचना की जानी चाहिए। केवल इसी तरह की आलोचना ठीक है। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, "वामपंथी" अवसरवादी गलतियां पार्टी के भीतर निम्न-पूंजीवादी उन्माद का प्रतिबिम्ब हैं; ये गलतियां ऐसे समय हुई थीं जब हमने पूंजीपति वर्ग से नाता तोड़ लिया था। जिन तीन मौकों पर हमने पूंजीपति वर्ग के साथ सहयोग किया, यानी क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी के परस्पर सहयोग के प्रथम काल में, जापानी-आक्रमण विरोधी युद्ध के काल में और मौजूदा काल में, उन दिनों पार्टी में अनेक लोग पूंजीवादी विचारों से ही प्रभावित और डांवाडोल हुए हैं। पो ई-पो की गलती ठीक ऐसी ही स्थिति में हुई है।

पो ई-पो की गलती कोई अलग-थलग मामला नहीं है। इस तरह की गलतियां न केवल राष्ट्रीय स्तर पर पाई जाती हैं, बल्कि वृहत्तर प्रशासनिक क्षेत्रों और प्रान्तों व म्युनिसिपलटियों में भी पाई जाती हैं। हर वृहत्तर प्रशासनिक क्षेत्र और हर प्रान्त व म्युनिसिपलटी को चाहिए कि वह एक मीटिंग बुलाकर सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन के प्रस्ताव और वर्तमान सम्मेलन के सारांश की रोशनी में अपने-अपने काम का सिंहावलोकन करे, ताकि कार्यकर्ताओं को शिक्षित किया जा सके।

हाल ही में मैंने ऊहान और नानकिङ का दौरा किया और बहुत सी जानकारी प्राप्त की, जो बहुत फायदेमन्द साबित हुई। पेकिङ में रहकर दरअसल मैं कुछ नहीं सुन पाता, इसलिए बाद में समय-समय पर दौरा करता रहूंगा। केन्द्रीय नेतृत्वकारी निकाय एक ऐसा कारखाना है जो अपने उत्पादन के रूप में विचारों का सृजन करता है। अगर उसे निचले स्तरों की हालत की कोई जानकारी न हो, अपने काम के लिए कोई कच्चा माल अथवा अर्ध-प्रोसेसशुदा उत्पादन न मिले, तो वह भला कोई भी उत्पादन कैसे तैयार कर सकता है ? कभी-कभी कुछ उत्पादन स्थानीय निकायों द्वारा भी तैयार किए जाते हैं और केन्द्रीय नेतृत्वकारी निकाय को केवल उन्हें सारे देश में प्रचलित करना होता है। उदाहरण के लिए पुराने व नए "तीन बुराई"-विरोधी आन्दोलनों ' को पहले स्थानीय निकायों ने ही शुरू किया था। केन्द्र के अधीन विभिन्न विभाग मनमाने निर्देश जारी करते हैं। इन विभागों से निकलने वाले उत्पादन उच्च कोटि के होने चाहिए, लेकिन वास्तव में ये उत्पादन घटिया किस्म के होते हैं और बड़ी मात्रा में बिलकुल अनुपयोगी व बेकार भी होते हैं। वृहत्तर प्रशासनिक क्षेत्रों और प्रान्तों व म्युनिसिपलटियों के नेतृत्वकारी निकाय विचारों का सृजन करने वाले स्थानीय कारखाने हैं, और उनके उत्पादन भी

उच्च कोटि के होने चाहिए।

पो ई-पो की गलती पूंजीवादी विचारों की अभिव्यक्ति है। वह पूंजीवाद के लिए हितकर और समाजवाद व अर्ध समाजवाद के लिए हानिकर है तथा सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन के प्रस्ताव का उल्लंघन करती है।

हम किस पर निर्भर रहें ? मजदूर वर्ग पर या पूंजीपति वर्ग पर ? सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन के प्रस्ताव में बहुत पहले ही स्पष्ट कर दिया गया था कि "हमें पूरे दिल से मजदूर वर्ग पर निर्भर रहना चाहिए"। प्रस्ताव में यह भी कहा गया है कि उत्पादन का पुनरुद्धार और विकास करने के सिलसिले में हमें निम्नोक्त बातों को नियम मानकर चलना चाहिए : राजकीय उद्योगों का उत्पादन सबसे पहले आता है, निजी उद्योगों का उत्पादन दूसरे नम्बर पर आता है तथा दस्तकारी उद्योगों का उत्पादन तीसरे नम्बर पर आता है। उद्योग पर और सबसे पहले भारी उद्योग पर जोर दिया जाता है, जिसकी मिलकियत राजकीय है। हमारी वर्तमान अर्थव्यवस्था के पांच क्षेत्रों में राजकीय अर्थव्यवस्था नेतृत्वकारी क्षेत्र है। पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य को कदम ब-कदम राजकीय पूंजीवाद की ओर ले जाना चाहिए।

दूसरे पूर्ण अधिवेशन के प्रस्ताव में कहा गया है कि उत्पादन के विकास के आधार पर मजदूरों और अन्य मेहनतकश लोगों के रहन-सहन के स्तर को उन्नत करते रहना चाहिए। पूंजीवादी विचार वाले लोग इस बात पर ध्यान नहीं देते, और इस मामले में पो ई-पो उनका हू-ब-हू प्रतिनिधित्व करते हैं। यह जरूरी है कि हम उत्पादन के विकास पर जोर दें, लेकिन यह भी जरूरी है कि हम उत्पादन के विकास पर और जनता के रहन-सहन में सुधार पर एक साथ ध्यान दें। जनता के भौतिक कल्याण के लिए कुछ न कुछ अवश्य किया जाना चाहिए, लेकिन वह न तो बहुत ज्यादा हो और न बिलकुल नहीं के बराबर। इस समय ऐसे कार्यकर्ताओं की तादाद कम नहीं है जो जनता के रहन-सहन पर और उसके दुख-दर्द पर ध्यान नहीं देते। क्वेइचओ प्रान्त में एक रेजीमेंट ऐसी थी जिसने किसानों की खेतिहर जमीन के एक बड़े हिस्से को अपने कब्जे में ले लिया। यह जनता के हितों का गम्भीर अतिक्रमण है। जनता के रहन-सहन पर ध्यान न देना ठीक नहीं है, लेकिन जोर उत्पादन और निर्माण पर ही दिया जाना चाहिए।

अर्थव्यवस्था के पूंजीवादी क्षेत्र का फायदा उठाने, उसे परिसीमित करने और उसका रूपान्तर करने के सवाल को भी दूसरे पूर्ण अधिवेशन में बिलकुल स्पष्ट कर दिया गया है। उसमें स्वीकृत प्रस्ताव में कहा गया है कि निजी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था को अनियंत्रित रूप से विकसित होने की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए, बल्कि उसके जरिए कई तरफ से परिसीमित किया जाना चाहिए – उसके कार्यक्षेत्र में, टैक्स नीति के जरिए, बाजार-भाव के जरिए और श्रम की शर्तों के जरिए। समाजवादी अर्थव्यवस्था और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के बीच का सम्बन्ध नेतृत्व करने वाले और नेतृत्व में चलने वाले के बीच का सम्बन्ध है। नव जनवादी राज्य में, परिसीमन बनाम परिसीमन प्रतिरोध वर्ग-संघर्ष का मुख्य रूप है। अब नई टैक्स-व्यवस्था में "सार्वजनिक और निजी कारोबारों के बीच समानता" की बात कही गई है; यह उस कार्यदिशा का उल्लंघन करती है जिसके अनुसार राजकीय अर्थव्यवस्था को नेतृत्वकारी तत्व माना गया है।

व्यक्तिगत कृषि व दस्तकारी के सहकारी रूपान्तर के बारे में दूसरे पूर्ण अधिवेशन में साफ तौर पर कहा गया है :

> ऐसी सहकारी समितियां मेहनतकश जनता के सामूहिक आर्थिक संगठन हैं, जो निजी मिल्कियत पर आधारित हैं तथा सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में चलने वाली राजसत्ता के निदेशन में काम करती हैं। इस तथ्य की वजह से कि चीनी जनता सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़ी हुई है और सहकारी समितियों को संगठित करने की उसकी कोई परम्परा नहीं है, सहकारिता आन्दोलन का प्रचार-प्रसार और विकास करने में हमें बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है; फिर भी सहकारी समितियों को संगठित किया जा सकता है तथा अवश्य संगठित किया जाना चाहिए, और उनका प्रचार प्रसार करना तथा उन्हें विकसित करना जरूरी है। अगर हमारे पास महज राजकीय अर्थव्यवस्था हो और सहकारी अर्थव्यवस्था न हो, तो हमारे लिए यह नामुमकिन हो जाएगा कि हम मेहनतकश जनता की व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था को कदम ब-कदम सामूहिकीकरण की तरफ ले जाएं, हमारे लिए यह नामुमकिन हो जाएगा कि हम नव-जनवादी राज्य से आगे बढ़कर भावी समाजवादी राज्य में पहुंच जाएं, और हमारे लिए यह नामुमकिन हो जाएगा कि हम राजसत्ता में सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व को सुदृढ़ बनाएं।

यह प्रस्ताव मार्च 1949 में स्वीकृत किया गया था, लेकिन बहुत से साथी इस पर ध्यान नहीं दे पाए हैं और जो बात पुरानी हो चुकी है वह भी उन्हें नई खबर जैसी मालूम होती है। पो ई-पो ने "देहाती क्षेत्रों में पार्टी के राजनीतिक काम को सुदृढ़ बनाओ" शीर्षक अपने लेख में कहा है कि आपसी सहयोग और सहकारिता से सामूहिकीकरण तक पहुंचने का व्यक्तिगत किसानों का रास्ता "महज एक कल्पना है, क्योंकि मौजूदा आपसी सहयोग दलों का, जो व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था पर आधारित हैं, कदम-ब-कदम सामूहिक फार्मों के रूप में विकसित होना असम्भव है, तथा इस रास्ते पर चलकर कृषि के मुकम्मिल सामूहिकीकरण तक पहुंचना तो और भी असम्भव है।" यह कथन पार्टी के प्रस्ताव के विपरीत है।

फिलहाल दो संयुक्त मोर्चे और दो संश्रय मौजूद हैं। एक संश्रय मजदूर वर्ग और किसानों के बीच का है; यह एक आधार है। दूसरा संश्रय मजदूर वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के बीच का है। चूंकि किसान श्रमिक हैं और शोषक नहीं हैं, इसलिए मजदूर वर्ग और किसानों के बीच का संश्रय एक दीर्घकालीन संश्रय है। लेकिन मजदूर वर्ग और किसानों के बीच अन्तरविरोध भी मौजूद हैं। हमें स्वेच्छा के उसूल के मुताबिक किसानों को व्यक्तिगत मिलकियत से कदम-ब कदम सामूहिक मिलकियत की ओर ले जाना चाहिए। भविष्य में राजकीय मिलकियत और सामूहिक मिल्कियत के बीच भी अन्तरविरोध होंगे। ये रूप अन्तर्विरोध अशत्रुतापूर्ण होते हैं। दूसरी तरफ मजदूर वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच अन्तरविरोध शत्रुतापूर्ण होते हैं।

पूंजीपति वर्ग लोगों को जरूर पतन की ओर ले जाएगा और उन्हें अपनी शक्कर में लिपटी गोलियों का निशाना बनाएगा। उसकी शक्कर में लिपटी गोलियां दो किस्म की हैं - एक भौतिक है और दूसरी मानसिक। एक मानसिक गोली पो ई-पो को अपना निशाना बना चुकी है। उन्होंने

पूंजीवादी विचारों के प्रभाव के वशीभूत होकर ही गलती की। नई टैक्स-व्यवस्था का प्रचार करने वाला सम्पादकीय देखकर पूंजीपति वर्ग ने तालियां बजाकर प्रशंसा की और पो ई-पो खुश हो गए। नई टैक्स-व्यवस्था लागू करने के पहले उन्होंने पूंजीपति वर्ग से राय पूछी और उसके साथ एक भद्रजनोचित समझौता किया, लेकिन इसकी रिपोर्ट केन्द्रीय कमेटी को नहीं दी। उस समय वाणिज्य मंत्रालय और सप्लाई व क्रय-विक्रय सहकारी समिति महासंघ ने आपत्ति की थी, तथा हल्के उद्योग मंत्रालय ने भी असन्तोष प्रकट किया था। वित्तीय, आर्थिक और व्यापारिक क्षेत्रों में काम करने वाले 11,00,000 कार्यकर्ताओं व कर्मचारियों में भारी बहुसंख्या अच्छे लोगों की है, केवल थोड़े से लोग अच्छे नहीं हैं। जो लोग अच्छे नहीं हैं वे भी दो तरह के हैं : एक तरह के लोग वे हैं जो प्रतिक्रान्तिकारी हैं, इसलिए उन्हें निकाल दिया जाना चाहिए; दूसरी तरह के लोग वे हैं जो क्रान्तिकारी हैं और जिनमें ऐसे पार्टी-सदस्य व गैर-पार्टी व्यक्ति शामिल हैं जिन्होंने गलतियां की हैं, इसलिए आलोचना व शिक्षा के जरिए उनका नव रूपान्तर किया जाना चाहिए।

समाजवाद के कार्य की विजय की गारंटी करने के लिए यह जरूरी है कि हम समूची पार्टी में और सबसे पहले केन्द्रीय स्तर पर तथा वृहत्तर प्रशासनिक क्षेत्रों और प्रान्तों व म्युनिसिपलटियों के स्तर पर, पार्टी, सरकार, सेना व जन-संगठनों के नेतृत्वकारी निकायों में गलत दक्षिणपंथी अवसरवादी रुझानों, यानी पूंजीवादी विचारों के खिलाफ संघर्ष करें। वृहत्तर प्रशासनिक क्षेत्रों और प्रान्तों व म्युनिसिपलटियों द्वारा यथोचित समय पर ऐसी मीटिंगें बुलाई जानी चाहिए जिनमें प्रिफेक्चरों की पार्टी-कमेटियों के सचिव और प्रिफेक्चरों के कमिश्नर[4] शामिल हों और जिनमें आलोचना और वाद-विवाद किया जाय तथा समाजवादी रास्ते बनाम पूंजीवादी रास्ते के सवाल को स्पष्ट किया जाय।

समाजवादी कार्य की विजय की गारंटी करने के लिए यह जरूरी है कि हम सामूहिक नेतृत्व लागू करें और विकेन्द्रीयता व मनोगतवाद का विरोध करें।

इस समय यह जरूरी है कि हम मनोगतवाद का विरोध करें, न केवल अन्धाधुन्ध प्रगति के रूप में प्रकट होने वाले मनोगतवाद का बल्कि रूढ़िवाद के रूप में प्रकट होने वाले मनोगतवाद का भी विरोध करें। नव-जनवादी क्रान्ति के दौरान दक्षिणपंथी और "वामपंथी" दोनों किस्म की मनोगतवादी गलतियां की गई थीं। छन तू-श्यू और चाङ क्वो-थाओ ने दक्षिणपंथी गलतियां की थीं तथा वाङ मिङ ने पहले "वामपंथी" और बाद में दक्षिणपंथी गलतियां की थीं। येनान के दोष-निवारण आन्दोलन में कठमुल्लावाद के विरोध का केन्द्रित रूप से प्रयास किया गया और लगे हाथों अनुभववाद के विरोध का प्रयास भी किया गया। ये दोनों ही मनोगतवाद के अलग-अलग रूप हैं। सिद्धान्त को व्यवहार के साथ मिलाए बिना कोई भी क्रान्ति विजयी नहीं हो सकती। दोष-निवारण आन्दोलन में इस समस्या को हल कर लिया गया। भावी गलतियों से बचने के लिए पिछली गलतियों से सबक सीखने और मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करने की नीति अपनाना हमारे लिए सही था। इस बार पो ई-पो की आलोचना दृढ़ता के साथ और सांगोपांग रूप से करने का उद्देश्य है गलतियां करने वाले लोगों को अपनी गलतियां सुधारने में मदद देना और समाजवाद के विजयपूर्ण विकास की गारंटी करना। समाजवादी क्रान्ति के वर्तमान काल में भी मनोगतवाद का अस्तित्व मौजूद है। दुस्साहस

के साथ आगे बढ़ना और रूढ़िवाद ये दोनों ही ठोस परिस्थिति की अवहेलना करते हैं और दोनों ही मनोगतवाद के अलग-अलग रूप हैं। जब तक मनोगतवाद को परास्त नहीं किया जाता, तब तक क्रान्ति और निर्माण में विजय प्राप्त नहीं हो सकती। जनवादी क्रान्ति के दौरान दोष निवारण के जरिए मनोगतवाद की गलती को सुधार लिया गया; नतीजे के तौर पर सारी पार्टी एकताबद्ध हो गई, जिसमें सही कार्यदिशा का अनुसरण करने वाले साथी और गलतियां करने वाले साथी दोनों शामिल थे। वे लोग येनान से विभिन्न रणस्थलों में चले गए और हमारी समूची पार्टी ने अपनी पूरी शक्ति को केन्द्रित करके देशव्यापी विजय प्राप्त की। आज हमारे कार्यकर्ता पहले से ज्यादा परिपक्व हो गए हैं और उनका राजनीतिक स्तर पहले से ज्यादा ऊंचा हो गया है; हम आशा करते हैं कि उन्हें अपने नेतृत्वकारी कार्य में मनोगतवाद को बुनियादी तौर पर परास्त करने में और मनोगत को प्रयत्नपूर्वक वस्तुगत के अनुरूप बनाने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

इन सभी समस्याओं के समाधान की कुंजी है सामूहिक नेतृत्व को सुदृढ़ बनाना और विकेन्द्रीयता का विरोध करना। हम विकेन्द्रीयता का हमेशा विरोध करते रहे हैं। 2 फरवरी 1941 को केन्द्रीय कमेटी ने अपने ब्यूरोओं और फौजी कमाण्डरों के नाम जारी किए गए एक निदेश में यह व्यवस्था कर दी कि पूरे देश से ताल्लुक रखने वाले सभी सरकुलर, टेलीग्राम, घोषणापत्र और अन्तःपार्टी निदेश जारी करने से पहले उन्हें केन्द्रीय कमेटी से मंजूर कराना जरूरी है। मई में केन्द्रीय कमेटी ने विभिन्न आधार-क्षेत्रों द्वारा किए जाने वाले बाहरी प्रचार-कार्य का एकीकरण करने का निदेश जारी किया। उसी वर्ष 1 जुलाई को पार्टी की स्थापना की बीसवीं जयन्ती के अवसर पर केन्द्रीय कमेटी ने पार्टी-भावना को मजबूत बनाने का निर्णय किया, जिसमें विकेन्द्रीयता का विरोध करने पर जोर दिया गया। 1948 में विकेन्द्रीयता का विरोध करने के लिए केन्द्रीय कमेटी ने कई और निदेश जारी किए। 7 जनवरी को केन्द्रीय कमेटी ने रिपोर्ट देने की व्यवस्था कायम करने के बारे में एक निदेश जारी किया और मार्च में एक पूरक निदेश भी जारी किया। उसी वर्ष सितम्बर में बुलाई गई राजनीतिक ब्यूरो की एक मीटिंग में केन्द्रीय कमेटी से हिदायतें लेने और उसे रिपोर्ट देने से सम्बन्धित नियमों के बारे में एक प्रस्ताव स्वीकार किया गया। 20 सितम्बर को केन्द्रीय कमेटी ने पार्टी-कमेटी व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के बारे में एक फैसला किया। 10 मार्च 1953 को केन्द्रीय कमेटी ने सरकारी काम में अपने नेतृत्व को सुदृढ़ बनाने के बारे में एक फैसला किया, ताकि सरकारी विभाग केन्द्रीय कमेटी के नेतृत्व से विलग होने के खतरे से बच सकें।

केन्द्रीयता और विकेन्द्रीयता के बीच निरन्तर अन्तरविरोध बना रहता है। जब से हम शहरों में आए हैं विकेन्द्रीयता बढ़ गई है। इस अन्तरविरोध को हल करने के लिए पहले पार्टी-कमेटी द्वारा तमाम मुख्य और महत्त्वपूर्ण समस्याओं के बारे में विचार-विमर्श व निर्णय किया जाना चाहिए और तब उसके निर्णयों को कार्यान्वित करने के लिए उन्हें सरकार के पास भेज दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, थ्येनआनमन मैदान पर जन वीर स्मारक का निर्माण करने और पेकिङ नगर की चहारदीवारी को गिराने जैसे महत्त्वपूर्ण निर्णय केन्द्रीय कमेटी द्वारा किए गए थे और सरकार द्वारा उन्हें कार्यान्वित किया गया था। कम महत्त्व के मामलों को निपटाने का काम सरकारी विभागों के नेतृत्वकारी पार्टी-ग्रुपों को सौंपा जा सकता है। सभी मामलों पर

केन्द्रीय कमेटी द्वारा एकाधिकार कायम किए जाने से काम नहीं चलेगा। विकेन्द्रीयता के विरोध को व्यापकतम समर्थन प्राप्त होगा, क्योंकि पार्टी में अधिकांश कामरेड सामूहिक नेतृत्व पर ध्यान देते हैं। सामूहिक नेतृत्व के प्रति अपनाए जाने वाले रवैये की दृष्टि से पार्टी में तीन श्रेणियों के लोग हैं। पहली श्रेणी के लोग सामूहिक नेतृत्व पर ध्यान देते हैं। दूसरी श्रेणी के लोग इस पर उतना ज्यादा ध्यान नहीं देते और यह सोचते हैं कि अगर पार्टी-कमेटियां उन्हें अकेला छोड़ दें तो ज्यादा अच्छा होगा, लेकिन उन्हें परिनिरीक्षण किए जाने पर कोई एतराज नहीं है। "अकेला छोड़ दें तो ज्यादा अच्छा होगा" से जाहिर होता है कि उनमें पार्टी-भावना की कमी है, जबकि "परिनिरीक्षण किए जाने पर कोई एतराज नहीं" से मालूम होता है कि उनमें कुछ पार्टी-भावना मौजूद है। हमारे लिए यह जरूरी है कि "परिनिरीक्षण किए जाने पर कोई एतराज नहीं" की बात को पकड़ लें, तथा शिक्षित करने और समझाने-बुझाने के तरीके के जरिए इन साथियों की पार्टी-भावना की कमी को दूर करने में उनकी मदद करें। अगर ऐसा न किया गया तो हर मंत्रालय अपनी राह अलग चलने लगेगा, केन्द्रीय कमेटी मंत्रालयों का परिनिरीक्षण नहीं कर पाएगी, मंत्री विभागों व ब्यूरोओं के प्रधानों का परिनिरीक्षण नहीं कर पाएंगे, प्रभागों के प्रधान अनुभागों के प्रधानों का परिनिरीक्षण नहीं कर पाएंगे – संक्षेप में, कोई किसी का परिनिरीक्षण नहीं कर पाएगा। नतीजे के तौर पर स्वतंत्र राज्य नजर आने लगेंगे और सैकड़ों सामन्ती राजाओं का उदय हो जाएगा। तीसरी श्रेणी के लोग केवल मुट्ठी भर हैं। वे सामूहिक नेतृत्व का दृढ़ता से विरोध करते हैं और हमेशा स्वतंत्र रहना पसन्द करते हैं। पार्टी-भावना को सुदृढ़ बनाने के निर्णय में इस बात पर जोर दिया गया है कि जनवादी केन्द्रीयता के अन्तर्गत अनुशासन का सख्ती से पालन किया जाय, यानी अल्पमत बहुमत के मातहत होता है, व्यक्ति संगठन के मातहत होता है, निचला स्तर ऊपर के स्तर के मातहत होता है, तथा समूची पार्टी केन्द्रीय कमेटी के मातहत होती है (यह एक ऐसा मामला है जिसमें बहुमत को अल्पमत के मातहत रखा गया है, क्योंकि यह अल्पमत दरअसल बहुमत का ही प्रतिनिधित्व करता है)। राय पेश करने का स्वागत किया जाता है, लेकिन पार्टी की एकता की जड़ काटना एक अत्यन्त शर्मनाक बात है। केवल समूह के राजनीतिक अनुभव व विवेक पर निर्भर रहकर ही इस बात की गारंटी की जा सकती है कि पार्टी व राज्य का नेतृत्व सही रास्ते पर चलता रहेगा तथा पार्टी की पांतों की एकता अटूट बनी रहेगी।

इस सम्मेलन में ल्यू शाओ-ची ने कहा कि उन्होंने कुछ गलतियां की हैं, कामरेड तङ श्याओ-फिङ ने भी कहा कि उन्होंने थोड़ी-बहुत गलतियां की हैं। चाहे कोई भी क्यों न हो, गलतियां करने पर आत्म-आलोचना करना जरूरी है, और बिना किसी अपवाद के हर आदमी के लिए यह जरूरी है कि वह पार्टी के परिनिरीक्षण को और विभिन्न स्तर की पार्टी-कमेटियों के नेतृत्व को स्वीकार करे। यह पार्टी के कार्यों को पूरा करने के लिए एक मुख्य पूर्वशर्त है। पूरे देश में बहुत से लोग ऐसे हैं जो अराजकता की स्थिति में पनपते हैं, और पो ई पो ठीक ऐसे ही व्यक्ति हैं। राजनीतिक और विचारधारात्मक दोनों ही दृष्टियों से वे कुछ हद तक आचरण-भ्रष्ट हो चुके हैं और उनकी आलोचना करना नितान्त आवश्यक है।

अन्तिम बात यह है कि हमारे लिए नम्रता, अध्ययनशीलता और दृढ़ता व धैर्यशीलता की भावना को प्रोत्साहन देना आवश्यक है।

यह जरूरी है कि हम दृढ़ता व धैर्यशीलता से काम लें। उदाहरण के लिए, अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने के युद्ध में हमने अमरीकी साम्राज्यवाद के मर्मस्थल पर चोट की और उसके दिल में दहशत पैदा कर दी। यह हमारे देश के निर्माण के लिए लाभदायक एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व था। सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि इससे हमारी शस्त्र शक्तियां तपकर फौलाद बन गईं, तथा हमारे सिपाहियों ने वीरता और कमाण्डरों ने सूझ-बूझ प्रदर्शित की। यह सच है कि हमारे आदमी हताहत हुए, हमारा पैसा खर्च हुआ; हमें कीमत चुकानी पड़ी। लेकिन हम लोग बलिदान करने से कदापि नहीं डरते; जहां एक बार किसी काम में हाथ डालते हैं तो उसे पूरा किए बगैर नहीं रहते। जब हू चुङ-नान ने शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र पर आक्रमण किया तो हम सीमान्त क्षेत्र से हटे नहीं, हालांकि हमारे पास केवल एक ही काउण्टी-केन्द्र बाकी रह गया था; पेड़ के पत्ते खाकर गुजारा करने पर भी हमने हिम्मत नहीं हारी। हमारे अन्दर ठीक इसी तरह की दृढ़ता व धैर्यशीलता होनी चाहिए।

यह जरूरी है कि हम अध्ययन करें, अहंकार न करें या दूसरों का तिरस्कार न करें। हंस के अण्डे मुर्गी के अण्डों को कुछ नहीं समझते और लौह धातुएं दुर्लभ धातुओं को कुछ नहीं समझतीं – इस तरह का तिरस्कारपूर्ण रवैया वैज्ञानिक नहीं है। यद्यपि चीन एक बड़ा देश है और हमारी पार्टी एक बड़ी पार्टी है, फिर भी इस बात का कोई कारण नहीं कि हम छोटे देशों और छोटी पार्टियों का तिरस्कार करें। यह जरूरी है कि हम बिरादराना देशों की जनता से सीखने के लिए हमेशा तैयार रहें और सच्ची अन्तर्राष्ट्रीय भावना को बनाए रखें। हमारे वैदेशिक व्यापार के क्षेत्र में कुछ लोग घमण्डी हो गए हैं और अपने को तीसमारखां समझने लगे हैं; यह गलत है। यह जरूरी है कि समूची पार्टी, खास तौर से विदेशों में काम करने वाले कर्मचारियों को शिक्षित किया जाय। यह जरूरी है कि हम मेहनत से अध्ययन करें और मेहनत से काम करें, ताकि समाजवादी औद्योगीकरण और समाजवादी रूपान्तर का कार्य पन्द्रह साल के अन्दर या इससे कुछ ज्यादा समय में बुनियादी रूप से पूरा किया जा सके। उस समय हमारा देश शक्तिशाली हो जाएगा, लेकिन तब भी हमें नम्रता बनाए रखनी चाहिए और सीखने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन में कुछ ऐसे नियम भी स्वीकार किए गए जिन्हें अधिवेशन के प्रस्ताव में नहीं लिखा गया। उनमें पहला है जन्म-दिवस मनाने की मनाही करना। जन्म-दिवस मनाने से कोई भी व्यक्ति दीर्घजीवी नहीं हो सकता। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हम अपना काम अच्छी तरह करें। दूसरा नियम है उपहार देने की मनाही करना, कम से कम पार्टी के भीतर इसकी मनाही करना। तीसरा नियम है कम से कम जाम पेश करना। खास मौकों पर जाम पेश करने की अनुमति दी जा सकती है। चौथा नियम है कम से कम तालियां बजाना। इसकी मनाही नहीं की जानी चाहिए और जब जन-समुदाय उत्साह से तालियां बजायें तो इसके उत्साह पर ठण्डा पानी नहीं उंडेल देना चाहिए। पांचवां नियम है व्यक्तियों के नाम पर स्थानों का नामकरण करने की मनाही करना। छठा नियम है चीनी कामरेडों को मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन की बराबरी का दर्जा देने की मनाही करना। उनके साथ हमारा सम्बन्ध गुरु-शिष्य का सम्बन्ध है और ऐसा ही होना भी चाहिए। इन नियमों का पालन

करना ही सच्ची नम्रता है।

संक्षेप में, यह जरूरी है कि हम नम्रता बनाए रखें, सीखने के लिए तैयार रहें, दृढ़ता व धैर्यशीलता से काम लें और सामूहिक नेतृत्व की व्यवस्था पर डटे रहें, ताकि समाजवादी रूपान्तर का कार्य पूरा किया जा सके और समाजवाद को विजयी बनाया जा सके।

नोट

[1] यह नई टैक्स व्यवस्था दिसम्बर 1952 में प्रस्तुत की गई और जनवरी 1953 में लागू की गई। इसमें नाम के लिए तो "सार्वजनिक और निजी कारोबारों के बीच समानता" की बात कही गई, लेकिन वास्तव में निजी औद्योगिक वाणिज्यिक कारोबारों के टैक्स-भार को तो हल्का कर दिया गया और राजकीय व सहकारी कारोबारों के टैक्स-भार को बढ़ा दिया गया। इस तरह उसने राजकीय व सहकारी कारोबारों के हितों को हानि पहुंचाई और पूंजीपतियों के हितों की सेवा की। कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा इसकी आलोचना किए जाने के कुछ ही दिनों बाद यह गलती सुधार ली गई।

[2] चाङ च-शान किसी समय चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की थ्येनचिन प्रिफेक्चर कमेटी का सचिव था। पूंजीपति वर्ग के क्षयकारी प्रभाव के कारण पतित होकर वह एक बड़ा गबनकारी बन गया। "तीन बुराई" विरोधी आन्दोलन में उसे मौत की सजा दे दी गई।

[3] पुरानी "तीन बुराइयों" का विरोध करने का आन्दोलन 1951 में भ्रष्टाचार, फिजूलखर्ची और नौकरशाही के खिलाफ छेड़ा गया संघर्ष था। नई "तीन बुराइयों" का विरोध करने का आन्दोलन 1953 में नौकरशाही व फरमानशाही के खिलाफ और कानून व अनुशासन का उल्लंघन करने वाली गतिविधियों के खिलाफ छेड़ा गया संघर्ष था।

[4] ये कमिश्नर उन कमिश्नर-कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधान थे जिन्हें प्रान्तीय व स्वायत्त प्रदेशीय जन परिषदों की एजेन्सियों के रूप में स्थापित किया गया था और जिनके क्षेत्राधिकार में कई काउंटियां आती थीं।

पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के रूपान्तर का एकमात्र रास्ता

•

7 सितम्बर 1953

पूंजीवाद को समाजवाद में रूपान्तरित करने का कार्य राजकीय पूंजीवाद के जरिए पूरा किया जाएगा।

1. पिछले तीन वर्ष से कुछ अधिक समय में हमने इस क्षेत्र में कुछ काम किया है, मगर चूंकि हम दूसरे कामों में व्यस्त रहे इसलिए पर्याप्त प्रयास नहीं कर पाए। अब से हमें इस दिशा में अधिक प्रयास करना चाहिए।

2. पिछले तीन वर्ष से कुछ अधिक समय के अनुभव के आधार पर हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि निजी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर का कार्य राजकीय पूंजीवाद के जरिए पूरा करना एक अपेक्षाकृत पुख्ता नीति और उपाय है।

3. मुश्तरका प्रोग्राम की धारा 31 [1] में निर्धारित नीति को अब स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए तथा उसे कदम-ब-कदम साकार रूप देना चाहिए। ''स्पष्ट रूप से समझ लेने'' का यह अर्थ है कि केन्द्रीय व स्थानीय स्तरों के सभी नेतृत्वकारी व्यक्तियों के मन में सबसे पहले इस बात का पक्का यकीन होना चाहिए कि पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य का रूपान्तर करने के लिए और समाजवाद की ओर संक्रमण करने के कार्य को कदम-ब-कदम पूरा करने के लिए राजकीय पूंजीवाद ही एकमात्र रास्ता है। समझदारी के इस स्तर पर अभी तक न तो कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य पहुंच सके हैं और न गण्यमान्य जनवादी व्यक्ति। वर्तमान मीटिंग इसी मकसद को पूरा करने के लिए आयोजित की जा रही है।

4. सतत-सुस्थिर रूप से आगे बढ़ो और उतावलेपन से काम न लो। समूचे देश के निजी उद्योग व वाणिज्य को बुनियादी तौर पर राजकीय पूंजीवाद की राह पर ले जाने के लिए कम से कम तीन से पांच वर्ष तक समय लगेगा, इसलिए घबराहट या बेचैनी नहीं होनी चाहिए।

5. संयुक्त राजकीय-निजी प्रबन्ध; राज्य द्वारा सारा कच्चा माल सप्लाई करने और सारा तैयारशुदा माल उठा लेने का तरीका अपना कर निजी कारोबारों को कच्चे माल का प्रोसेसिंग करने या माल तैयार करने के आर्डर देना; तथा राज्य द्वारा सारा नहीं बल्कि अधिकांश तैयारशुदा माल उठा लेने का अनुबन्ध करके इसी तरह के आर्डर देना – ये राजकीय पूंजीवाद के तीन रूप हैं, जिन्हें निजी उद्योग के बारे में अपनाया जा सकता है।

जनवादी पार्टियों और उद्योग व वाणिज्य जगत के कुछ प्रतिनिधियों से 7 सितम्बर 1953 को की गई बातचीत की रूपरेखा।

6. निजी वाणिज्य के मामले में भी राजकीय पूंजीवाद को लागू किया जा सकता है। ''इसका बहिष्कार कर दो'' कहकर शायद इस मामले को खारिज नहीं किया जा सकता। इस विषय में हमारा अनुभव सीमित है तथा और अधिक अध्ययन करने की आवश्यकता है।

7. निजी उद्योग व वाणिज्य, जिनमें लगभग 38 लाख मजदूर व दुकान-कर्मचारी काम करते हैं, राज्य की एक बड़ी परिसम्पत्ति हैं और राज्य की अर्थव्यवस्था और जन जीविका के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं। वे राज्य के लिए न सिर्फ माल सप्लाई करते हैं, बल्कि पूंजी संचय और कार्यकर्ता-प्रशिक्षण भी कर सकते हैं।

8. कुछ पूंजीपति अपने को राज्य से काफी दूर रखते हैं तथा उन्होंने मुनाफे को सर्वोपरि रखने की अपनी मनोवृत्ति को अभी तक नहीं बदला। कुछ मजदूर बेहद तेजी से आगे बढ़ रहे हैं और पूंजीपतियों को जरा भी मुनाफा कमाने की इजाजत नहीं देना चाहते। हमें इन दोनों ही प्रकार के लोगों को शिक्षित करना चाहिए और उनके द्वारा कदम-ब-कदम (लेकिन यथाशीघ्र) अपने आपको राज्य की नीति के अनुरूप ढालने, अर्थात्, चीन के निजी उद्योग व वाणिज्य को मुख्य रूप से राज्य की अर्थव्यवस्था और जन-जीविका की सेवा करने वाला और आंशिक रूप से पूंजीपतियों के लिए मुनाफा कमाने वाला बना देने और इस प्रकार उसे राजकीय पूंजीवाद के मार्ग पर ले जाने की नीति के अनुरूप ढालने के लिए किए जाने वाले प्रयास में उनकी मदद करनी चाहिए।

निम्नोक्त तालिका में राजकीय-पूंजीवादी कारोबारों के मुनाफे के बंटवारे का विवरण प्रस्तुत किया गया है :

आयकर	34.5 प्रतिशत
कल्याण निधि	15.0 प्रतिशत
संचित निधि	30.0 प्रतिशत
पूंजीपतियों को लाभांश	20.5 प्रतिशत
कुल	100.0 प्रतिशत

9. यह जरूरी है कि पूंजीपतियों को देशभक्ति की शिक्षा देने का काम जारी रखा जाय। इस मकसद को पूरा करने के लिए हमें योजनाबद्ध प्रशिक्षण के जरिए पूंजीपतियों में से कुछ ऐसे लोग तैयार कर लेने चाहिए जो दूरदर्शी हों और कम्युनिस्ट पार्टी व जन सरकार के निकट आने के लिए तैयार हों, ताकि उनके जरिए अधिकांश दूसरे पूंजीपतियों को समझाया जा सके।

10. यह जरूरी है कि राजकीय पूंजीवाद को लागू करने का कार्य न सिर्फ आवश्यकता और सम्भावना (देखिए मुश्तरका प्रोग्राम) पर आधारित हो, बल्कि पूंजीपतियों की स्वेच्छा पर भी आधारित हो, क्योंकि यह एक सहयोग का कार्य है और सहयोग जोर-जबरदस्ती की इजाजत नहीं देता। यह तरीका उस तरीके से भिन्न है जिसे हमने जमींदारों से निपटते समय अपनाया था।

11. पिछले कुछ वर्षों में हमारे देश की विभिन्न राष्ट्रीयताओं, जनवादी वर्गों, जनवादी पार्टियों और जन संगठनों ने उल्लेखनीय प्रगति की है, तथा मुझे विश्वास है कि अगले तीन

से पांच वर्षों में वे और अधिक प्रगति करेंगे। इसलिए अगले तीन से पांच वर्षों में निजी उद्योग व वाणिज्य को बुनियादी तौर पर राजकीय पूंजीवाद के मार्ग पर ले जाना सम्भव है। राजकीय कारोबारों की प्रधानता इस कार्य की पूर्ति के लिए एक भौतिक गारंटी है।

12. जहां तक सम्पूर्ण संक्रमण काल के कार्य को पूरा करने का सवाल है, जिसके अन्तर्गत राष्ट्रीय औद्योगीकरण तथा कृषि, दस्तकारी और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर को बुनियादी तौर पर पूरा करने के कार्य आते हैं, उसे तीन से पांच वर्षों में नहीं बल्कि अनेक पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में पूरा किया जा सकेगा। इस सवाल के बारे में यह जरूरी है कि इसे अनिश्चित काल तक अनसुलझा छोड़ देने के विचार का और उतावलेपन के साथ हल करने के विचार का, इन दोनों ही विचारों का विरोध करना जरूरी है।

13. एक नेतृत्व करता है और दूसरा नेतृत्व में चलता है; एक निजी हित से परे रहता है और दूसरा एक निश्चित मात्रा में अब भी निजी हित के पीछे दौड़ता है, वगैरह-वगैरह; इन दोनों में यही भिन्नता है। किन्तु हमारी वर्तमान स्थितियों में, निजी उद्योग व वाणिज्य मुख्यतः राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था व जन-जीविका की (जिन्हें मुनाफे के बंटवारे के समय कुल मुनाफे का कोई तीन-चौथाई भाग प्राप्त होता है) सेवा करते हैं। इसलिए हम निजी कारोबारों के मजदूरों को समझा सकते हैं और हमें उनको समझाना भी चाहिए कि वे राजकीय कारोबारों के मजदूरों की ही तरह आचरण करें, अर्थात् उत्पादन बढ़ाएं और किफायत बरतें, श्रम-प्रतियोगिताएं चलाएं, श्रम-उत्पादकता बढ़ाएं, उत्पादन की लागत घटाएं और उसे मात्रा व गुण दोनों की दृष्टि से समुन्नत करें, जिससे राजकीय क्षेत्र और निजी क्षेत्र तथा श्रम और पूंजी दोनों को फायदा हो।

नोट

[1] मुश्तरका प्रोग्राम की धारा 31 में यह व्यवस्था की गई है : "राज्य और निजी पूंजी द्वारा संयुक्त रूप से संचालित कारोबार राजकीय-पूंजीवादी स्वरूप वाले कारोबार हैं। जब भी आवश्यक और सम्भव हो, निजी पूंजी को राजकीय पूंजीवाद की दिशा में विकसित करने के लिए इन उपायों से प्रोत्साहित किया जाएगा, जैसे राजकीय कारोबारों के लिए प्रोसेसिंग का काम करना, राज्य के साथ संयुक्त रूप से कारोबारों का संचालन करना, या पट्टे पर राजकीय कारोबारों का संचालन करना और राष्ट्रीय साधन-स्रोतों का दोहन करना, इत्यादि।"

[2] यहां तात्पर्य 8-11 सितम्बर 1953 को आयोजित राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की राष्ट्रीय कमेटी की स्थाई समिति की उनचासवीं मीटिंग (विस्तृत) से है।

अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने के युद्ध में हमारी महान विजय तथा हमारे आगामी कार्य

12 सितम्बर 1953

अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने के युद्ध में तीन वर्ष बाद हमने महान विजय प्राप्त कर ली है। अब युद्ध-विराम हो गया है।

इस विजय का श्रेय किसे दिया जाना चाहिए ? अभी सदस्य महानुभावों ने इसका श्रेय सही नेतृत्व को दिया है। नेतृत्व इसका एक कारण है; बिना सही नेतृत्व के कोई भी काम सफल नहीं हो सकता। लेकिन हमें विजय मुख्य रूप से इसलिए प्राप्त हुई क्योंकि हमारा युद्ध एक लोकयुद्ध था, इसका समर्थन समूची जनता करती थी तथा इसमें चीन और कोरिया की जनता कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ी।

हमने अमरीकी साम्राज्यवाद से लोहा लिया, एक ऐसे दुश्मन से लोहा लिया जिसके हथियार हमसे कई गुने बेहतर हैं, फिर भी हमने उस पर विजय प्राप्त की और उसे युद्ध-विराम के लिए बाध्य कर दिया। युद्ध-विराम क्यों सम्भव हो सका ?

पहले, सैनिक दृष्टि से अमरीकी आक्रमणकारी प्रतिकूल स्थिति में और पिटने की स्थिति में थे। अगर उन्होंने युद्ध-विराम स्वीकार न किया होता, तो उनके पूरे युद्ध-मोर्चे को भंग कर दिया गया होता और सियोल कोरियाई जनता के हाथ में आ गया होता। यह स्थिति पिछले साल गरमियों में ही प्रकट होने लगी थी।

दोनों ही युद्धरत पक्ष अपने-अपने युद्ध-मोर्चे को लोहे का दुर्ग समझते हैं। हमारा युद्ध-मोर्चा सचमुच एक लोहे का दुर्ग है। हमारे सिपाही और कार्यकर्ता सूझबूझ और साहस से ओतप्रोत हैं तथा कुरबानी से नहीं डरते। इसके विपरीत अमरीकी आक्रमणकारी सैनिक मरने से डरते हैं, और उनके अफसर अपेक्षाकृत नियमनिष्ठ हैं, उनमें उतना लचीलापन नहीं है। उनका युद्ध-मोर्चा सुदृढ़ नहीं है और उसे किसी भी हालत में लोहे का दुर्ग नहीं कहा जा सकता।

जिन समस्याओं का हमारे पक्ष को सामना करना पड़ा उनमें सबसे पहली यह थी कि क्या हम लड़ सकते हैं, उसके बाद यह थी कि क्या हम अपने मोर्चे का बचाव कर सकते हैं, फिर यह थी कि क्या हम अपनी रसद-सप्लाई की गारंटी कर सकते हैं, और अन्त में यह थी कि क्या हम कीटाणु-युद्ध को विफल कर सकते हैं। इन चारों समस्याओं को एक के बाद एक हल कर लिया गया। युद्ध के दौरान हमारी सेना उत्तरोत्तर शक्तिशाली बनती गई। इस वर्ष

केन्द्रीय जन सरकार परिषद् के 24वें अधिवेशन में भाषण।

गरमियों में, हम दुश्मन की 21 किलोमीटर लम्बी मोर्चाबन्दी को केवल एक घंटे में तोड़ने में समर्थ हो सके, केवल एक केन्द्रित प्रहार में लाखों गोले दाग सके और दुश्मन के क्षेत्र में 18 किलोमीटर भीतर तक प्रवेश कर सके। यदि हमने इसी प्रकार लड़ाई जारी रखी होती तथा दो, तीन या चार प्रहार और किए होते, तो उसका पूरा युद्ध-मोर्चा टूट गया होता।

दूसरे, राजनीतिक दृष्टि से हमारा दुश्मन बहुत से ऐसे अन्दरूनी अन्तरविरोधों का सामना कर रहा था जिन्हें हल नहीं किया जा सकता था, तथा समूची दुनिया की जनता शान्ति की मांग कर रही थी।

तीसरे, आर्थिक दृष्टि से दुश्मन ने कोरिया पर आक्रमण करने के युद्ध में बहुत सा धन खर्च किया था तथा उसके बजट में आमदनी और खर्च के बीच असन्तुलन पैदा हो गया था।

इन्हीं सब कारणों ने मिलकर दुश्मन को समझौते के लिए बाध्य कर दिया। इनमें पहला कारण प्रमुख था और उसके बिना दुश्मन के साथ युद्ध-विराम होना आसान नहीं था। अमरीकी साम्राज्यवादी बड़े अक्खड़ हैं; जहां तक सम्भव हो कोई भी युक्तिसंगत बात नहीं मानते, और जरा भी युक्तिसंगत बात मानने के लिए सिर्फ लाचार होकर ही तैयार होते हैं।

कोरियाई युद्ध में दुश्मन के 10,90,000 आदमी हताहत हुए। स्वाभाविक था कि हमें भी कीमत चुकानी पड़ी। फिर भी हमारे हताहतों की संख्या अनुमान से बहुत कम रही, और जब हमने सुरंगें बना लीं तो और भी कम हो गई। लड़ाई के जरिए हम उत्तरोत्तर शक्तिशाली बनते गए। अमरीकी हमारी मोर्चेबन्दियों को नहीं तोड़ सके; इसके विपरीत, हम उनकी यूनिटों को अक्सर नष्ट करते रहे।

अभी आप लोगों ने नेतृत्व का जिक्र एक कारण के रूप में किया। मेरे खयाल में, नेतृत्व एक कारण अवश्य है, मगर प्रमुख कारण है जन-समुदाय द्वारा तरह-तरह के उपाय सुझाया जाना। हमारे कार्यकर्ताओं और सिपाहियों ने लड़ने के बहुत से उपाय खोज निकाले। यहां मैं एक उदाहरण दे दूं। युद्ध के पहले महीने में हमें भारी संख्या में ट्रक गंवाने पड़े। ऐसी सूरत में हम भला क्या कर सकते थे ? नेतृत्व द्वारा सुझाए गए प्रत्युपायों के अलावा हम मुख्य रूप से जन-समुदाय द्वारा सुझाए गए उपायों पर ही निर्भर रहे। दस हजार से ज्यादा आदमी राजमार्ग के दोनों तरफ तैनात कर दिए गए। जब दुश्मन के हवाईजहाज आते, तो वे गोली दागकर चेतावनी दे देते। यह चेतावनी सुनकर हमारे ड्राइवर अपने ट्रकों को दुश्मन से बचा कर चलाते या उन्हें किसी सुरक्षित स्थान में छिपा लेते। इसके साथ ही राजमार्गों को चौड़ा भी किया गया और बहुत से नए राजमार्गों का निर्माण भी किया गया। इस प्रकार हमारे ट्रक बेरोकटोक आने-जाने लगे। इसके फलस्वरूप हमारे ट्रकों की क्षति, जो शुरू में 40 फीसदी होती थी, घटकर सिर्फ 1 फीसदी से भी कम होने लगी। बाद में भूमिगत गोदामों और भूमिगत सभा-भवनों का निर्माण भी किया गया। दुश्मन ऊपर से बम बरसाता रहता था और हम जमीन के नीचे मीटिंगें करते रहते थे। पेकिङ में रहने वाले लोग जब कोरिया के रणक्षेत्र की कल्पना करते होंगे, तो उन्हें लगता होगा कि वहां जरूर बहुत खतरा था। बेशक, वहां खतरा तो जरूर था, लेकिन जब सब लोग उपाय खोजने लगे तो वह उतना भीषण नहीं रह गया।

हमारा अनुभव यह है कि जनता पर निर्भर रहकर और साथ ही अपेक्षाकृत सही नेतृत्व की बदौलत हम अपने निम्नतर साज-सामान के जरिए बेहतर साज-सामान से लैस दुश्मन को

परास्त कर सकते हैं।

अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने के युद्ध की विजय एक महान विजय है और उसका भारी महत्व है।

पहले, कोरियाई जनता के कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ते हुए हम 38वीं अक्षांश रेखा तक लौट गए हैं और वहां डटे हुए हैं। यह एक बहुत महत्वपूर्ण बात है। अगर हम 38वीं अक्षांश रेखा तक न लौट गए होते और हमारे अग्रिम मोर्चे अब भी यालू नदी व थूमन नदी पर ही बने रहते, तो शनयाङ, आनशान और फूशुन की जनता के लिए निश्चिन्त होकर उत्पादन करना असम्भव हो जाता।

दूसरे, हमने फौजी अनुभव प्राप्त किया है। चीनी जन स्वयंसेवकों की स्थलसेना, वायुसेना व नौसेना ने, उनकी पैदल, तोपखाना, इंजीनियरी, टैंक, रेलवे, वायु-प्रतिरक्षा और सिगनल कोरों ने, तथा साथ ही चिकित्सा व सैन्य-संचरण यूनिटों, आदि ने अमरीकी आक्रमणकारी फौजों के साथ लड़ने का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया है। इस बार हम अमरीकी सशस्त्र सेनाओं की थाह ले चुके हैं। अगर आपने उनकी थाह न ली होती, तो हो सकता है आप उनसे डरते रहते। हमने उनके साथ तैंतीस महीने तक लड़ाई की है और उनकी क्षमता की पूरी जानकारी प्राप्त कर ली है। अमरीकी साम्राज्यवाद डरावना नहीं है, उससे डरने की जरूरत नहीं है। हमारा अनुभव ऐसा ही है और निस्सन्देह यह एक बहुमूल्य अनुभव है।

तीसरे, समूचे देश की जनता की राजनीतिक चेतना बुलन्द हो चुकी है।

उपरोक्त तीन मुद्दों से चौथा मुद्दा भी निकलता है : चीन पर साम्राज्यवादी आक्रमण के एक नए युद्ध और तीसरे विश्वयुद्ध को टाल दिया गया है।

साम्राज्यवादी आक्रमणकारियों को यह समझ लेना चाहिए कि अब चीनी जनता संगठित हो चुकी है और उसे छेड़ना आसान नहीं है। अगर कहीं उसका रोष भड़क उठा, तो बड़ी दुस्तर स्थिति पैदा हो जाएगी।

यह भी सम्भव है कि दुश्मन फिर से युद्ध शुरू कर दे, और अगर वह ऐसा न भी करे, तो भी यह निश्चित है कि वह गड़बड़ी करने के लिए हर तरह के हथकंडे अपनाएगा, जैसे तोड़फोड़ की कार्यवाहियां करने के लिए अपने खुफिया एजेंट भेजेगा। थाइवान, हाङकाङ और जापान जैसे स्थानों में उसके खुफिया विभागों का विस्तृत जाल फैला हुआ है। लेकिन अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने के आन्दोलन के दौरान हमने अनुभव प्राप्त कर लिया है; जब तक हम जन-समुदाय को गोलबन्द करते रहेंगे और जनता पर निर्भर रहेंगे, तब तक दुश्मन का सामना करने के उपाय अवश्य निकालते रहेंगे।

आज हमारी परिस्थिति 1950 की सरदियों की परिस्थिति से भिन्न है। क्या उस समय अमरीकी आक्रमणकारी 38वीं अक्षांश रेखा के उस ओर थे ? नहीं, वे वहां नहीं थे। वे यालू नदी और थूमन नदी के उस ओर थे। क्या हमें उस समय अमरीकी आक्रमणकारियों के खिलाफ लड़ने का अनुभव था ? नहीं, हमें इसका अनुभव नहीं था। क्या हम उस समय अमरीकी सेनाओं से वाकिफ थे ? नहीं, हम उनसे वाकिफ नहीं थे। अब यह सब हालत बदल गई है। अगर अमरीकी साम्राज्यवाद अपने नए आक्रमणकारी युद्ध को टाल नहीं देता और कहता है : "मैं लड़ूंगा !" तो हम पहले तीन मुद्दों के भरोसे उसका मुकाबला कर सकते हैं। लेकिन अगर

वह कहता है : "मैं नहीं लडूंगा!" तो चौथा मुद्दा पैदा हो जाता है। यह भी हमारी जनता के जनवादी अधिनायकत्व की श्रेष्ठता का सबूत है।

क्या हम दूसरों पर हमला करेंगे ? नहीं, हम कहीं भी किसी पर हमला नहीं करेंगे। लेकिन अगर दूसरों ने हम पर हमला किया, तो हम उनका मुकाबला करने के लिए जरूर लडेंगे और अन्तिम विजय प्राप्त करने तक लड़ते रहेंगे।

चीनी जनता इस रुख पर अविचल रूप से कायम है : हम शान्ति चाहते हैं, लेकिन हम युद्ध से भी नहीं डरते; हम दोनों ही स्थितियों के लिए तैयार हैं। हमें जनता का समर्थन प्राप्त है। अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने के युद्ध के दौरान, हमारी जनता के अन्दर सेना में भरती होने की होड़ लग गई थी। भरती की शर्तें काफी कड़ी थीं, सौ में से सिर्फ एक को चुना जाता था। लोग कहते थे कि ये शर्तें उन शर्तों से भी कहीं अधिक कड़ी हैं जिन्हें कोई व्यक्ति अपनी बेटी के लिए दामाद चुनते समय लगाता है। अगर अमरीकी साम्राज्यवाद ने फिर एक बार युद्ध छेड़ना चाहा, तो हम जरूर फिर एक बार उससे लडेंगे।

युद्ध में धन खर्च होता है। फिर भी अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने के युद्ध में हमने बहुत अधिक धन खर्च नहीं किया। युद्ध कुछ वर्षों तक चला, लेकिन उसमें उद्योग व वाणिज्य से एक वर्ष के अन्दर प्राप्त टैक्स के बराबर रकम भी खर्च नहीं हुई। निस्सन्देह, अगर हमें यह युद्ध न करना पड़ता और यह धन खर्च न करना पड़ता तो बेहतर होता। कारण आज देश के निर्माण-कार्य के लिए धन की जरूरत है और किसानों को अब भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। पिछले साल और उससे पिछले साल कृषि-कर कुछ भारी था; फलस्वरूप कुछ दोस्तों को बोलने का मौका मिल गया। उन्होंने "दयालुता की नीति" की मांग की, मानो वे किसानों के हितों का प्रतिनिधित्व करते हों। क्या हम उनकी इस राय से सहमत थे ? नहीं, हम सहमत नहीं थे। उस समय हमें अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने के युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए यथाशक्ति प्रयास करना था। कौन सी बात किसानों के हित में, समूचे देश की जनता के हित में थी ? कुछ समय के लिए कठिनाइयां झेलना और विजय के लिए संघर्ष करना ? अथवा अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध न करना और कोरिया की सहायता न करना, तथा इस धन को बचा लेना ? इसमें सन्देह नहीं कि युद्ध में जीत हासिल कर लेना उनके हित में था। चूंकि युद्ध के लिए धन की जरूरत थी, इसलिए पिछले साल और उससे पिछले साल हमने कुछ अधिक कृषि-कर वसूल किया। इस साल स्थिति भिन्न है। हमने कृषि-कर में वृद्धि नहीं की और उसकी सीमा निर्धारित कर दी है।

जहां तक "दयालुता की नीति" का सवाल है, निस्सन्देह हम इसके पक्षधर हैं। लेकिन सबसे बड़ी दयालुता की नीति क्या थी ? अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करना और कोरिया की सहायता करना। सबसे बड़ी दयालुता की नीति लागू करने के लिए हमें कुर्बानी देनी पड़ी थी, धन खर्च करना पड़ा था और अधिक कृषि-कर वसूल करना पड़ा था। चूंकि कुछ अधिक कृषि-कर वसूल किया गया, इसलिए कुछ व्यक्ति हंगामा मचाने लगे और यहां तक दावा करने लगे कि वे किसानों के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मैं ऐसे कथन से एकदम असहमत हूं।

अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करना और कोरिया की सहायता करना दयालुता की नीति को ही अमल में लाना था, और आज औद्योगिक निर्माण करना भी दयालुता की नीति को ही अमल में लाना है।

दयालुता की नीति दो प्रकार की होती है : एक जनता के तात्कालिक हितों का खयाल रखती है, दूसरी जनता के दीर्घकालीन हितों का खयाल रखती है, जैसे अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करना और कोरिया की सहायता करना तथा भारी उद्योग का निर्माण करना। पहली नीति छोटी दयालुता की नीति है और दूसरी नीति बड़ी दयालुता की नीति है। हमें इन दोनों ही तरह की नीतियों को ध्यान में रखना चाहिए और ऐसा न करना गलत होगा। फिर भी जोर किस पर दिया जाना चाहिए ? बड़ी दयालुता की नीति पर। इस समय दयालुता की नीति पर अमल करते समय हमें भारी उद्योग के निर्माण पर जोर देना चाहिए। निर्माण के लिए धनराशि की जरूरत है। इसलिए हालांकि जनता के रहन सहन की स्थिति में सुधार करने की आवश्यकता है, फिर भी फिलहाल उसमें अधिक सुधार नहीं किया जा सकता। दूसरे शब्दों में, हमें जनता के रहन-सहन की स्थिति में सुधार तो करना चाहिए लेकिन उसमें बहुत अधिक सुधार नहीं करना चाहिए; हमें उसकी सुख-सुविधाओं की ओर ध्यान तो देना चाहिए, लेकिन बहुत अधिक ध्यान नहीं देना चाहिए। बड़ी दयालुता की नीति की कीमत पर छोटी दयालुता की नीति पर अत्यधिक ध्यान देना दरअसल सही रास्ते से भटक जाना है।

आज कुछ दोस्त ऐसे हैं जो छोटी दयालुता की नीति पर एकतरफा तौर पर जोर देते हैं; वे दरअसल यह चाहते थे कि हम अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध और कोरिया की सहायता करने का युद्ध न करें, तथा अब यह चाहते हैं कि हम भारी उद्योग का निर्माण न करें। हमें इस गलत विचार की आलोचना करनी चाहिए। यह विचार कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर भी पाया जाता है; येनान में हमें उसका सामना करना पड़ा था। 1941 में शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र में हमने दो लाख तान[1] अनाज वसूल किया था, और तब कुछ लोग चीख-पुकार मचाने लगे थे कि कम्युनिस्ट पार्टी किसानों का खयाल नहीं रखती। पार्टी के चन्द नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं ने भी दयालुता की नीति अपनाने की समस्या पेश की थी। मैंने तब भी इस विचार की आलोचना की थी। उस समय सबसे बड़ी दयालुता की नीति कौन सी थी ? जापानी साम्राज्यवाद को धराशायी कर देना। अगर हमने किसानों से कम अनाज वसूल किया होता, तो हमें आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना की संख्या में कटौती करनी पड़ती और यह बात जापानी साम्राज्यवाद के हित में थी। इसलिए जो लोग यह विचार पेश कर रहे थे, वे दरअसल जापानी साम्राज्यवाद की तरफ से बोल रहे थे और उसकी ही सेवा कर रहे थे।

अब अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता का युद्ध बन्द हो चुका है। यदि अमरीका ने फिर एक बार युद्ध शुरू करना चाहा, तो हम फिर एक बार उससे लडेंगे। उस स्थिति में हमें किसानों से अनाज वसूल करना होगा, किसानों में काम करना होगा और उन्हें समझाना-बुझाना होगा, ताकि वे इसके लिए अपना अंशदान कर सकें। ऐसा ही करके सच्चे अर्थों में किसानों के हितों की सेवा की जा सकेगी। चीख-पुकार मचाना दरअसल अमरीकी साम्राज्यवाद के हितों की सेवा करना है।

यहां मुख्य और गौण दो प्रकार के उसूल हैं। समूचे देश की जनता के जीवन स्तर को

हर साल उन्नत करते जाना चाहिए, लेकिन बहुत अधिक नहीं। अगर उसे बहुत अधिक उन्नत कर दिया गया होता, तो हम अमरीकी आक्रमण के प्रतिरोध और कोरिया की सहायता का युद्ध नहीं कर पाते अथवा इतनी संजीदगी के साथ नहीं कर पाते। हमने संकल्पबद्ध होकर संजीदगी के साथ और भरपूर शक्ति से युद्ध किया। जो कुछ भी हमारे देश में मौजूद था और जिसकी कोरिया के मोर्चे को जरूरत थी, उसे हमने उपलब्ध कराया। पिछले कुछ वर्षों में हमने ऐसा ही किया।

नोट

[1] अनाज की एक तौल, जिसका प्रतिमान शेनशी-कानसू निङश्या सीमान्त क्षेत्र में 150 किलोग्राम के बराबर था, लेकिन अन्य स्थानों में अलग अलग था।

ल्याङ शू-मिङ के प्रतिक्रियावादी विचारों का खण्डन

16-18 सितम्बर 1953

1. क्या श्री ल्याङ शू-मिङ एक "सत्यनिष्ठ व्यक्ति" हैं ? उन्होंने शान्ति-वार्ता के दौरान कैसी भूमिका अदा की थी ?

श्री ल्याङ अपने आपको एक "सत्यनिष्ठ व्यक्ति" बताते फिरते हैं। हाङकाङ का प्रतिक्रियावादी प्रेस श्री ल्याङ को मुख्यभूमि का "सबसे सत्यनिष्ठ व्यक्ति" कहता है, और थाइवान के रेडियो-प्रसारणों में भी आपकी तारीफ के पुल बांधे जाते हैं। क्या आप सचमुच "सत्यनिष्ठ" हैं ? अगर यह सच है, तो आपको चाहिए कि अपने विगत जीवन के इतिहास का भेद खोल दें – आपने कम्युनिस्ट पार्टी व जनता का विरोध कैसे किया था, अपनी कलम के जरिए लोगों की हत्या कैसे की थी, तथा हान फू-च्वी, चाङ तुङ-सुन, छन ली-फू और चाङ छुन के साथ आपके सम्बन्ध कैसे थे। ये सभी लोग आपके जिगरी दोस्त थे। मेरे तो इतने ज्यादा दोस्त नहीं थे। ये लोग आपसे कितने खुश थे। वे आपको तो श्री कहकर सम्बोधित करते थे, जबकि मुझे "डाकू" कहकर लांछित करते थे। मुझे नहीं मालूम कि आप आखिर किस पार्टी के साथ हैं, किस गुट के साथ हैं ! सिर्फ मुझे ही नहीं, बल्कि बहुत से अन्य लोगों को भी ऐसा ही शक है।

अभी-अभी प्रधानमंत्री चओ ने जो भाषण दिया है उससे सबको पता चल गया है कि क्वोमिन्ताङ के साथ हमारी दो शान्ति-वार्ताओं के दौरान नाजुक घड़ी आने पर श्री ल्याङ ने च्याङ काई-शेक के भरपूर पक्षपोषण का रुख अपनाया था। शान्ति-वार्ता के लिए च्याङ काई-शेक की रजामन्दी महज एक ढोंग थी। आज यहां हमारे बीच उपस्थित लोगों में वे प्रतिनिधि भी हैं जो शान्ति-वार्ता के लिए पेकिङ आए थे, और वे सभी लोग जानते हैं कि च्याङ काई-शेक सचमुच शान्ति चाहता था या नहीं।

सच बात तो यह है कि च्याङ काई-शेक लोगों की हत्या बन्दूक से करता है और ल्याङ शू-मिङ कलम से। लोगों की हत्या करने के दो तरीके हैं : एक है बन्दूक के जरिए हत्या करना और दूसरा है कलम के जरिए हत्या करना। कलम के जरिए लोगों की हत्या करने का तरीका एक ऐसा तरीका है जिसमें सबसे ज्यादा धूर्तता के साथ और छद्मवेश धारण करके एक भी कतरा खून बहाए बिना हत्या की जाती है। आप ऐसे ही हत्यारे हैं।

16-18 सितम्बर 1953 को पेकिङ में आयोजित केन्द्रीय जन सरकार परिषद के 27वें अधिवेशन में कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा की गई ल्याङ शू-मिङ की आलोचना का मुख्य अंश। इस अधिवेशन में चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की राष्ट्रीय कमेटी के पेकिङ में मौजूद सदस्य भी उपस्थित थे।

ल्याङ शू मिङ सौ फीसदी प्रतिक्रियावादी हैं, फिर भी वे यह बात कतई नहीं मानते और कहते हैं कि वे एक आदर्श व्यक्ति हैं। वे श्री फू च्वो-ई से भिन्न हैं। श्री फू च्वो ई खुलेआम स्वीकार कर चुके हैं कि वे सौ फीसदी प्रतिक्रियावादी थे, लेकिन उन्होंने पेकिङ की शान्तिपूर्ण मुक्ति में जनता के हित में योगदान किया था। आपने क्या योगदान किया है, ल्याङ शू-मिङ साहब ? आपने अपनी पूरी जिन्दगी में जनता के हित में क्या योगदान किया है ? कुछ भी नहीं, रत्तीभर भी नहीं। तिस पर भी आप अपने को एक ऐसी अद्वितीय सुन्दरी के रूप में चित्रित करते हैं जो शी श और वाङ चाओ चुन को भी मात दे सकती है और याङ क्वेइ फेइ से भी होड़ लगा सकती है।

2. ल्याङ शू-मिङ ने तथाकथित ''नवें स्वर्ग और नवें नरक'' की दलील पेश की है। उन्होंने आरोप लगाया है कि ''मजदूर ऊपर नवें स्वर्ग में और किसान नीचे नवें नरक में रहते हैं'', और यह कि ''मजदूर अपनी ट्रेड यूनियनों पर भरोसा रख सकते हैं, जबकि किसान सभाओं पर भरोसा नहीं किया जा सकता, और न ही पार्टी, नौजवान संघ, महिला संघ इत्यादि पर भरोसा किया जा सकता है; गुण और परिमाण दोनों की दृष्टि से ये सब प्रतिमानित स्तर से नीचे हैं और उद्योग व वाणिज्य महासंघ से भी गए-गुजरे हैं – इसलिए मुझे इन पर विश्वास नहीं है।'' क्या इन बातों को ''आम कार्यदिशा का समर्थन'' कहा जा सकता है ? नहीं ! यह हर लिहाज से सौ फीसदी प्रतिक्रियावादी धारणा है; यह एक प्रतिक्रियावादी प्रस्ताव है, एक युक्तियुक्त प्रस्ताव नहीं। क्या जन सरकार इस प्रकार के प्रस्ताव को स्वीकार कर सकती है ? मेरे खयाल में वह ऐसा नहीं कर सकती।

3. श्री ल्याङ ने अनुरोध किया है कि ''योजनाओं के बारे में अधिक जानकारी दी जाय।'' इसका भी मैं विरोध करता हूं। इसके विपरीत, हमें श्री ल्याङ जैसे व्यक्तियों को अपनी गोपनीय बातों की कम से कम जानकारी देनी चाहिए; जितनी ही कम जानकारी देंगे उतना ही अच्छा होगा।

ल्याङ शू-मिङ एक ऐसे आदमी हैं जिन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। हम दूसरे लोगों को गोपनीय बातों की अधिक जानकारी दे सकते हैं, किन्तु आपको नहीं। जब कभी जनवादी पार्टियों की कुछ सीमित मीटिंगों का आयोजन किया जाय, तो ल्याङ शू-मिङ, उनमें आपके शामिल होने की जरूरत नहीं है।

4. श्री ल्याङ ने अनुरोध किया है कि हम उन्हें गैर-प्रगतिशील तत्वों की श्रेणी में न रखें, और कहा है कि वे प्रगतिशील तत्वों की श्रेणी में हैं। इस विषय में हमें क्या करना चाहिए? मेरा खयाल है कि हमें सावधानी बरतनी चाहिए और बिना सोचे-समझे उन्हें मान्यता नहीं दे देनी चाहिए। अन्यथा हम धोखा खा जाएंगे।

5. श्री ल्याङ ने अपनी एक बहुत सुन्दर तस्वीर खींची है। उन्होंने दावा किया है कि कई दशाब्दी पहले ही उन्होंने अपने देश के योजनाबद्ध निर्माण का एक शानदार सपना देखा था, जो उन्हीं के कथनानुसार नव-जनवाद या समाजवाद के बहुत करीब था।

क्या वे सचमुच इतने सुन्दर हैं ? शायद ऐसा नहीं है। मैं उनसे काफी वाकिफ हूं, और जब भी उनसे मुलाकात होती, मैं उनके गलत विचारों की आलोचना ही करता था। एक बार मैंने उनके मुंह पर कहा था, ''मैं आपके माल पर कभी विश्वास नहीं करता''। उनके तमाम

कथनों में, जैसे ''चीन में वर्गों का अस्तित्व नहीं है'', ''चीन की समस्या एक सांस्कृतिक असामंजस्य की समस्या है'', उसे ''एक रंगहीन, पारदर्शी सरकार'' चाहिए और ''चीनी क्रान्ति के कारण सिर्फ बाहरी हैं, अन्दरूनी नहीं'', अब उनकी इन शानदार बातों को भी जोड़ दिया जाना चाहिए, जैसे ''नवें स्वर्ग और नवें नरक'' की बात तथा यह बात कि ''कम्युनिस्ट पार्टी ने किसानों को छोड़ दिया है'' और ''उद्योग व वाणिज्य महासंघ की तुलना में कम्युनिस्ट पार्टी अधिक विश्वस्त नहीं है'', वगैरह-वगैरह। क्या ये सब बातें मुझे विश्वास दिला सकती हैं ? हरगिज नहीं ! मैंने उनसे कहा था : चीन की विशेषता यह है कि वह एक अर्ध-औपनिवेशिक और अर्ध-सामन्ती देश है। चूंकि आप यह बात नहीं मानते, इसलिए आप साम्राज्यवाद और सामन्तवाद की सहायता कर रहे हैं। यही कारण है कि आपके माल पर किसी को विश्वास नहीं। जनता को कम्युनिस्ट पार्टी पर विश्वास है। प्रतिक्रियावादियों और उलझे दिमाग वाले व्यक्तियों को छोड़कर कोई भी ऐसा नहीं जो आपकी पुस्तकें पढ़ता हो और आपकी बातें सुनता हो। इसके अलावा, लगता है कि ल्याङ साहब च्याङ काई-शेक के भी विरोधी नहीं हैं। आखिर आज तक उन्होंने च्याङ काई-शेक और उसकी प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ का कभी खुल्लमखुल्ला विरोध भी किया है या नहीं ? मैंने न तो उनके सब लेख पढ़े हैं और न उनकी सब बातें सुनी हैं, इसलिए यह सवाल आप लोगों के सामने पेश कर रहा हूं, ताकि आप लोग इस पर विचार करें।

क्या ऐसे व्यक्ति को यह अनुरोध करने का हक हासिल है कि जनता का राज्य अपनी योजनाओं और अन्य गोपनीय बातों के बारे में उसे अधिक जानकारी दे ? मैं समझता हूं कि उन्हें ऐसा हक हासिल नहीं है। क्या हमें उनका यह अनुरोध मान लेना चाहिए ? मैं समझता हूं कि हमें ऐसा नहीं करना चाहिए।

6. श्री ल्याङ ने यह अनुरोध भी किया है कि हम उन्हें प्रगतिशील तत्वों या क्रान्तिकारियों की श्रेणी में रखें और गैर-प्रगतिशील तत्वों या प्रतिक्रियावादियों की श्रेणी में न रखें। यह ''हैसियत तय करने'' की समस्या है, इसे कैसे हल करना चाहिए ? ऊपर बताई गई परिस्थिति की रोशनी में, क्या हम उन्हें प्रगतिशील तत्वों या क्रान्तिकारियों की श्रेणी में रख सकते हैं, उनमें प्रगतिशीलता कहां है ? यदि उन्होंने क्रान्ति में भाग लिया था तो कब लिया था ? इसलिए हमें उनके इस अनुरोध को भी तुरन्त नहीं मान लेना चाहिए। हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए और देखना चाहिए कि आगे क्या होता है।

7. पिछले कुछ वर्षों में मुझे लोगों के अनेक पत्र प्राप्त हुए हैं और उनकी कुछ बातें भी सुनने को मिली हैं, जिनमें यह सवाल पूछा गया है कि कम्युनिस्ट पार्टी प्रतिक्रियावादियों के साथ सहयोग क्यों करती है। प्रतिक्रियावादियों से यहां उनका तात्पर्य उन लोगों से है जिन्होंने समाचारपत्रों में या सार्वजनिक अवसरों पर साम्राज्यवाद, सामन्तवाद, च्याङ काई-शेक और उसकी प्रतिक्रियावादी क्वोमिन्ताङ का विरोध करने की इच्छा कभी जाहिर नहीं की तथा जो एक ऐसा रुख अपनाते हैं जिसमें सरकारी कर्मचारी से की जाने वाली न्यूनतम अपेक्षाओं का भी अभाव होता है। चूंकि ये लोग खास तौर पर च्याङ काई-शेक का विरोध करने के इच्छुक नहीं हैं, इसलिए थाइवान के रेडियो-प्रसारणों और हाङकाङ के समाचारपत्रों में इनकी खास तौर पर सराहना की जाती है; इन्हें कभी गाली नहीं दी जाती बल्कि इनके बारे में यह कहा

जाता है कि वे मुक्तभूमि में ''सबसे अधिक सत्यनिष्ठ व्यक्ति'' हैं। ल्याङ शू-मिङ ऐसे ही लोगों में से एक हैं। लेकिन दूसरी तरफ हमारे कुछ मित्रों पर ये रेडियो-प्रसारण और समाचारपत्र बड़ी धृष्टता के साथ कीचड़ उछालते हैं और गालियों की बौछार करते हैं। जिन व्यक्तियों पर थाइवान द्वारा गालियों की बौछार नहीं की जाती या जिनकी उसके द्वारा तारीफ के पुल बांधे जाते हैं, वे निस्सन्देह **बहुत कम संख्या में हैं किन्तु अत्यधिक ध्यान देने योग्य हैं।**

कुछ व्यक्ति आज भी ऐसे हैं जो च्याङ काई-शेक के खिलाफ एक भी शब्द बोलने के बजाय मर जाना कहीं ज्यादा पसन्द करते हैं, हालांकि साम्राज्यवाद के खिलाफ दो-चार शब्द बोलने में उन्हें एतराज नहीं है। प्रेस में या सार्वजनिक वक्तव्यों में वे अतीत की चर्चा करने का साहस नहीं करते, क्योंकि उनके दिल में अब भी अतीत के प्रति लगाव मौजूद है। मैं समझता हूं कि इस प्रकार के व्यक्तियों की संख्या इतनी कम नहीं है।

देशभक्ति तीन तरह की होती है : सच्ची देशभक्ति, झूठी देशभक्ति, और आधी सच्ची व आधी झूठी ढुलमुल देशभक्ति। हर कोई जानता है कि वह किस तरह की देशभक्ति की श्रेणी में आता है, और ल्याङ शू-मिङ खुद भी यह बात भली-भांति जानते हैं। हम उन सभी लोगों का स्वागत करते हैं जिन्होंने साम्राज्यवाद से और थाइवान के गिरोह से सचमुच नाता तोड़ लिया है, चाहे वे कितने ही पिछड़े हुए क्यों न हों। ऐसे लोग सच्चे देशभक्त हैं। झूठे देशभक्त अपने चेहरे पर एक खूबसूरत नकाब पहन लेते हैं, लेकिन अन्दरूनी तौर पर वे बिलकुल भिन्न होते हैं। ढुलमुल तत्व तीसरी तरह के होते हैं; उनकी देशभक्ति आधी सच्ची व आधी झूठी होती है, तथा वे हवा का रुख देखकर काम करते हैं। अगर तीसरा विश्वयुद्ध न छिड़ा और च्याङ काई-शेक वापस न लौटा, तो वे कम्युनिस्ट पार्टी के साथ आगे चलते रहेंगे। अगर तीसरा विश्वयुद्ध छिड़ गया, तो वे अपनी कार्यवाहियों की दिशा के बारे में फिर से विचार करने लगेंगे। इन तीन तरह के लोगों में किस तरह के लोग बहुसंख्या में हैं ? सच्चे देशभक्त बहुसंख्या में हैं। सच्चे देशभक्तों की संख्या पिछले कुछ वर्षों में बढ़ी है, आधे सच्चे व आधे झूठे ढुलमुल देशभक्त अल्पसंख्या में हैं, झूठे देशभक्त केवल मुट्ठी भर हैं, किन्तु उनका अस्तित्व अभी मौजूद है। क्या यह अनुमान ठीक है या नहीं, आप लोग विचार कर सकते हैं।

8. मैं समझता हूं कि ल्याङ शू-मिङ को एक काम करना चाहिए। उनका काम यह नहीं कि वे ''किसानों का प्रतिनिधित्व'' करके जन सरकार से ''उनकी मुक्ति की अपील'' करें, बल्कि यह है कि वे अपने जन-विरोधी प्रतिक्रियावादी विचारों के गत अनेक वर्षों के विकास का स्पष्ट ब्यौरा प्रस्तुत करें। उन्हें यह बात स्पष्ट रूप से बता देनी चाहिए कि अतीत काल में उन्होंने जमींदारों का प्रतिनिधित्व करते हुए कम्युनिस्ट पार्टी और जनता का विरोध कैसे किया था, और अब वे जमींदारों का प्रतिनिधित्व करने का अपना रुख छोड़कर ''किसानों का प्रतिनिधित्व करने'' का रुख कैसे अपनाने लगे हैं – जब वे अपने इस परिवर्तन के बारे में स्पष्टीकरण दे देंगे और लोगों को यकीन दिला देंगे, सिर्फ तभी हम यह तय कर सकेंगे कि उन्हें किस श्रेणी में रखा जाए। उनके आचरण से तो मुझे यह लगता है कि अपना प्रतिक्रियावादी रुख बदलने का विचार उनके मन में कभी नहीं आया। फिर भी मेरा सुझाव है कि मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करने के उद्देश्य से उन्हें अपनी गलतियों पर विचार

करने के लिए कुछ समय दे दिया जाय, तथा फिलहाल उनके बारे में कोई निर्णय न करके यह काम राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की राष्ट्रीय कमेटी को सौंप दिया जाय।

9. ''हर व्यक्ति के अन्दर लज्जा की भावना होती है''[2], और अगर किसी के अन्दर लज्जा की भावना न हो, तो उससे कोई उम्मीद नहीं की जा सकती। श्री ल्याङ यह कहते हैं कि किसानों की समस्या के बारे में वे कम्युनिस्ट पार्टी से अधिक विवेकशील हैं – क्या कोई इस बात पर विश्वास करेगा ? यह शिल्प-शिरोमणि लू पान के सामने बढ़ई का हुनर दिखाने की कोशिश है। मिसाल के लिए, अगर कोई यह कहे कि ''माओ त्सेतुङ अभिनय करने में श्री मेई लान-फान से भी ज्यादा निपुण, या सुरंग खोदने में जन-स्वयंसेवकों से भी ज्यादा निपुण अथवा हवाई जहाज चलाने में वायुसेना के वीर चाओ पाओ-थुङ से भी ज्यादा निपुण हैं'', तो क्या यह निर्लज्जता की पराकाष्ठा नहीं कहलाएगी ? इसलिए श्री ल्याङ ने जो सवाल उठाया है वह एक गम्भीर सवाल होने के साथ-साथ एक ऐसा सवाल भी है जो गम्भीर नहीं है और हास्यास्पद भी है। उन्होंने दावा किया है कि वे किसानों का प्रतिनिधित्व करने में कम्युनिस्ट पार्टी से कहीं ज्यादा योग्य हैं; क्या यह हास्यास्पद नहीं है ?

आजकल इतने सारे लोग ''किसानों के प्रतिनिधि'' बने फिरते हैं। आखिर वे लोग किसका प्रतिनिधित्व करते हैं ? क्या वे किसानों का प्रतिनिधित्व करते हैं ? न तो मुझे और न किसानों को ही यह लगता है कि वे किसानों के प्रतिनिधि हैं। वे जमींदार वर्ग का ही प्रतिनिधित्व करते हैं और उसके ही हितों की सेवा करते हैं। और उनमें सबसे प्रमुख व्यक्ति ल्याङ शू-मिङ हैं, जो अपनी मीठी-मीठी बातों से दरअसल दुश्मन की ही मदद कर रहे हैं। उनमें से कुछ अन्य व्यक्ति उलझे दिमाग वाले हैं और उन्होंने कुछ बेवकूफी की बातें कहीं हैं, फिर भी वे देशभक्त हैं और उनके दिल में चीन से लगाव है। ये एक तरह के लोग हैं। दूसरी तरह के लोग ल्याङ शू-मिङ जैसे हैं। और उन्हीं के जैसे कुछ दूसरे लोग भी हैं जो ''किसानों के प्रतिनिधि'' होने का ढोंग रचते हैं। धोखेबाज लोग अवश्य मौजूद हैं, और इस समय हम उनका सामना कर रहे हैं। उनमें से हर व्यक्ति की एक लोमड़ी की-सी दुम है, जिसे सब लोग देख सकते हैं। वानरराज सुन ऊ-खुङ बहत्तर अलग-अलग रूप धारण कर सकता था, किन्तु उसे अक्सर एक कठिनाई का सामना करना पड़ता था; वह नहीं जानता था कि अपनी दुम का रूपान्तर कैसे करे। एक बार उसने एक मन्दिर का रूप धारण कर लिया और अपनी दुम को एक ध्वज-दण्ड का रूप दे डाला। लेकिन देव-सेनानी याङ अड़-लाङ ने उसकी तिकड़म का पता लगा लिया। वह ऐसा क्यों कर सका ? क्योंकि उसने वानरराज की दुम को पहचान लिया। वास्तव में एक तरह के लोग ऐसे होते हैं जो अपनी दुम को कभी नहीं छिपा सकते, चाहे वे कैसा ही छद्मवेश क्यों न धारण कर लें।

ल्याङ शू-मिङ एक महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति हैं, एक पाखण्डी व्यक्ति हैं। जब वे कहते हैं कि उन्हें राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं और वे अफसर नहीं बनना चाहते, तो वे सफेद झूठ बोलते हैं। वे तथाकथित ''ग्रामीण निर्माण'' के काम में लगे हुए थे, मगर वह आखिर किस तरह का ''ग्रामीण निर्माण'' था ? वह दरअसल जमींदारों के लिए निर्माण था, ग्रामीण विध्वंस था और राष्ट्रीय सर्वनाश था !

10. उनसे निपटते समय संजीदगी का रुख अपनाना आपके लिए व्यर्थ है। आप उनके

साथ वाद-विवाद करके कोई समस्या नहीं सुलझा सकते, क्योंकि वे तर्क नहीं करते और सिर्फ बकवास करते हैं। इसलिए मैं सुझाव देता हूं कि उनकी समस्या को राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की राष्ट्रीय कमेटी के सुपुर्द कर दिया जाय, ताकि वह अपनी पाक्षिक गोष्ठी में इस पर बहस कर सके। साथ ही मैं आपको चेतावनी भी दे दूं कि आप लोग इसके सच्चे समाधान की कोई उम्मीद न रखें। यह बिल्कुल असम्भव है। इसका नतीजा केवल यह होगा कि ''विचार-विमर्श के बाद भी कोई निर्णय नहीं हो सकेगा, यदि कोई निर्णय हो जाएगा तो भी उस पर अमल नहीं किया जा सकेगा, और गोष्ठी को बिना किसी परिणाम के ही स्थगित कर दिया जाएगा।'' इसके बावजूद, मैं आपको सलाह देता हूं कि आप लोग पाक्षिक गोष्ठी में कोशिश करके देख लें, क्योंकि ऐसा करना उनकी अनाप-शनाप बातें सुनने के लिए ''दो-चार आदमी भेजने'' से कहीं बेहतर होगा।

11. क्या हम इस मौके पर उनसे नाता तोड़ने जा रहे हैं और आज से उनसे कोई वास्ता नहीं रखेंगे ? नहीं, ऐसा नहीं है। जब तक वे हमारे साथ सम्बन्ध बनाए रखना चाहेंगे, त तक हम भी उनसे सम्बन्ध बनाए रखने के लिए तैयार रहेंगे। मुझे अब भी आशा है कि राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के दूसरे पूर्ण अधिवेशन में उन्हें फिर से राष्ट्रीय कमेटी का सदस्य निर्वाचित कर लिया जाएगा। इसका कारण यह है कि आज भी ऐसे व्यक्ति मौजूद हैं जो उनके धोखे में आसानी से आ सकते हैं और उनसे अच्छी तरह परिचित नहीं हैं, तथा वे अब भी एक सजीव शिक्षण-सामग्री की भूमिका अदा कर सकते हैं; अतएव वे तब तक पुनर्निर्वाचित होने लायक बने रहेंगे जब तक वे अपने प्रतिक्रियावादी विचारों का प्रचार-प्रसार करने के लिए राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन के मंच का प्रयोग करने की अपनी इच्छा का परित्याग नहीं कर देते।

जैसा कि मैंने अभी कहा है, ल्याङ शू-मिङ ने कोई योगदान नहीं किया और न ही उनकी कोई उपयोगिता है। क्या उनकी यह उपयोगिता है कि वे उद्योगपतियों और व्यापारियों की ही तरह हमारे लिए उत्पादन उपलब्ध कराते हैं और हमें आय-कर देते हैं ? नहीं, ऐसा नहीं है। क्या उनकी यह उपयोगिता है कि वे उत्पादन का विकास करते हैं और अर्थव्यवस्था को समृद्ध बनाते हैं ? नहीं, ऐसा नहीं है। क्या उन्होंने कभी विद्रोह किया है ? नहीं, कभी नहीं किया है। क्या उन्होंने कभी च्याङ काई-शेक या साम्राज्यवाद का विरोध किया है ? नहीं, कभी नहीं किया है। क्या उन्होंने कभी साम्राज्यवाद और सामन्तवाद का तख्ता उलट देने में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ सहयोग किया है ? नहीं, कभी नहीं किया है। इसका मतलब यह है कि उन्होंने कोई योगदान नहीं किया है। इस शख्स ने अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने के आन्दोलन जैसे महान संघर्ष के प्रति भी सहमति नहीं बल्कि सिर हिलाकर असहमति ही प्रकट की। फिर भी ऐसा क्यों है कि वे राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की राष्ट्रीय कमेटी के सदस्य बन सकें ? ऐसा क्यों है कि उन्हें इस कमेटी की सदस्यता के लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने नामजद किया ? इसका कारण ठीक यही है कि वे अब भी कुछ लोगों को धोखा दे सकते हैं और उनके अन्दर अब भी कुछ धूर्तता मौजूद है। धोखाधड़ी ही उनका प्रमाणपत्र है और ठीक यही उनकी पूंजी है।

ल्याङ शू-मिङ की दृष्टि में, अगर कोई उनको सही मानता है तो उसके अन्दर

''विशाल-हृदयता'' है और अगर कोई ऐसा नहीं करता तो उसके अन्दर ''विशाल-हृदयता'' नहीं है। इस प्रकार की ''विशाल-हृदयता'' शायद हमारे अन्दर नहीं है। फिर भी हमारे अन्दर इतनी ''विशाल-हृदयता'' जरूर है कि ल्याङ शू मिङ साहब, आप राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की राष्ट्रीय कमेटी के सदस्य बने रह सकते हैं।

12. मेरे खयाल में कनफ्यूशियस की कमियां ये थीं कि वह जनवाद पर अमल नहीं करता था और उसके अन्दर आत्म-आलोचना की भावना की कमी थी। इस मामले में वह श्री ल्याङ से काफी मिलता जुलता था। कनफ्यूशियस ने कहा था, ''जब से मैंने च लू को अपना शिष्य बनाया है, तब से मुझे अपनी निन्दा कभी नहीं सुनाई पड़ी''[3], उसका विद्यालय ''तीन बार शिष्यों से भरा था और तीन बार खाली हुआ था''[4], तथा उसने ''अपना पद सम्भालने के बाद केवल तीन महीने में शाओचङ माओ की हत्या कर दी थी''[5] – वह एक निरंकुश शासक की तरह आचरण करता था और उसके व्यवहार से फासिस्टवाद की बू आती थी। मैं आशा करता हूं कि मेरे दोस्त, और खास तौर पर ल्याङ साहब आप, कनफ्यूशियस के नक्शेकदम पर नहीं चलेंगे, और अगर आप ऐसा ही करेंगे तो यह बहुत सन्तोषजनक होगा।

13. यदि श्री ल्याङ के बुलन्द प्रोग्राम पर अमल किया गया होता, तो न सिर्फ चीन में समाजवाद कायम करना असम्भव था, बल्कि हमारी पार्टियों (कम्युनिस्ट पार्टी और दूसरी पार्टियों) तथा हमारे राज्य को तबाही का सामना करना पड़ता। उनकी कार्यदिशा एक पूंजीवादी कार्यदिशा है। पो ई-पो की गलती हमारी पार्टी के भीतर पूंजीवादी विचारों को प्रतिबिम्बित करती है। फिर भी पो ई-पो ल्याङ शू-मिङ से बेहतर हैं।

ल्याङ शू-मिङ कहते हैं कि मजदूर ''ऊपर नवें स्वर्ग में रहते हैं'' और किसान ''नीचे नवें नरक में रहते हैं''। तथ्य आखिर क्या हैं ? उनके बीच अन्तर अवश्य है, किसानों की तुलना में मजदूरों की आमदनी कुछ ज्यादा है; फिर भी भूमि-सुधार के बाद किसानों को जमीन और मकान प्राप्त हुए हैं और उनका जीवन भी दिनोंदिन बेहतर होता जा रहा है। कुछ किसानों की हालत तो मजदूरों से भी ज्यादा अच्छी है। कुछ मजदूर अब भी कठिनाई में हैं। आमदनी बढ़ाने में किसानों की मदद करने के लिए कौन से उपाय अपनाए जा सकते हैं ? क्या आपके पास कोई सुझाव है, ल्याङ शू-मिङ साहब ? आपके खयाल में, ''गड़बड़ी वस्तुओं के अभाव के कारण नहीं वितरण की असमानता के कारण पैदा होती है।''[6] आप यह नहीं चाहते कि किसान उत्पादन में जुटकर खुद अपनी कोशिशों के जरिए अपनी आमदनी बढ़ाएं, बल्कि यह चाहते हैं कि मजदूरों और किसानों की आमदनी में समानता लाने के लिए मजदूरों की आमदनी का एक भाग किसानों को दे दिया जाय। अगर आपकी राय के अनुसार काम किया गया, तो क्या चीन के उद्योग-धन्धे चौपट नहीं हो जाएंगे ? मजदूरों की आमदनी के एक भाग को इस प्रकार वितरित करने का मतलब होगा हमारे राज्य और हमारी पार्टियों को विनाश के गर्त में ढकेल देना। ऐसा न सोचें कि इससे सिर्फ कम्युनिस्ट पार्टी का ही विनाश होगा, इससे जनवादी पार्टियों का भी विनाश हो जाएगा।

आप यह कहते हैं कि मजदूर ''ऊपर नवें स्वर्ग में रहते हैं'', तो फिर आप कौन से स्वर्ग में रहते हैं, ल्याङ शू-मिङ साहब ? आप शायद ऊपर दसवें स्वर्ग में, ग्यारहवें स्वर्ग में, बारहवें स्वर्ग में, और इससे भी ऊपर तेरहवें स्वर्ग में रहते हैं, क्योंकि आप मजदूरों से कहीं ज्यादा

तनख्वाह पाते हैं ! फिर भी आप सबसे पहले अपनी तनख्वाह में नहीं बल्कि मजदूरों की मजूरी में कटौती करने का प्रस्ताव पेश करते हैं। मैं इसे न्यायोचित नहीं समझता। अगर आप न्यायोचित व्यवहार करना चाहते हैं तो सबसे पहले आप अपनी तनख्वाह में कटौती करें, क्योंकि आप "नवें स्वर्ग" से कहीं ज्यादा ऊपर रहते हैं !

पिछले तीन दशकों से भी अधिक समय से हमारी पार्टी मजदूर-किसान संश्रय का पक्षपोषण करती आई है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद मजदूरों और किसानों के संश्रय और सहयोग की ही हिमायत करता है। चीन में दो प्रकार के संश्रय हैं : एक है मजदूर वर्ग का किसान समुदाय के साथ संश्रय, और दूसरा है मजदूर वर्ग का पूंजीपतियों, प्रोफेसरों, वरिष्ठ तकनीशियनों, हमारे पक्ष में आ मिलने वाले क्वोमिन्ताङ जनरलों, धार्मिक नेताओं तथा जनवादी पार्टियों के व निर्दलीय गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों के साथ संश्रय। दोनों ही संश्रय आवश्यक हैं और दोनों ही को बने रहना चाहिए। इन दोनों में कौन सा संश्रय आधार है, कौन सा संश्रय प्राथमिक महत्त्व का है ? यह है मजदूर वर्ग का किसान समुदाय के साथ संश्रय। ल्याङ शू-मिङ आग्रह-पूर्वक कहते हैं कि मजदूर-किसान संश्रय बरबाद हो चुका है और राष्ट्रीय निर्माण की कोई आशा नहीं रह गई है। दूसरे शब्दों में, अगर ल्याङ शू-मिङ की राय न मानी गई, तो मजदूर-किसान संश्रय के सफल होने की कोई आशा नहीं रह जाएगी, राष्ट्रीय निर्माण सुचारु रूप से नहीं किया जा सकेगा, और समाजवाद की भी कोई आशा नहीं रह जाएगी ! बेशक, जिस किस्म के "मजदूर-किसान संश्रय" की ल्याङ शू-मिङ हिमायत करते हैं उसके सफल होने की कोई आशा नहीं है। आपकी कार्यदिशा पूंजीवादी कार्यदिशा है। अगर आपकी कार्यदिशा का अनुसरण किया गया, तो चीन का विनाश हो जाएगा, चीन एक अर्ध-औपनिवेशिक व अर्ध-सामन्ती पुराने रास्ते पर वापस लौट जाएगा, तथा पेकिङ में च्याङ काई-शेक और आइजनहावर का स्वागत करने के लिए रैली का आयोजन किया जाएगा। मैं फिर एक बार दोहराता हूं : हम आपकी कार्यदिशा को हरगिज नहीं अपनाएंगे !

ल्याङ शू-मिङ आग्रहपूर्वक कहते हैं कि जब से हमने शहरों में प्रवेश किया है, तब से हम देहातों को "भूल" गए हैं और उनमें एक "रिक्तता" पैदा हो गई है। यह दरअसल वैमनस्य फैलाने की कोशिश है। पिछले तीन वर्षों में हमने अपनी मुख्य शक्ति को ग्रामीण कार्य में ही लगाया है। सिर्फ इसी वर्ष हमने अपने नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं की एक बड़ी संख्या को शहरी कार्य में लगाना शुरू किया है, किन्तु हमारे अधिकांश कार्यकर्ता अब भी काउंटियों, जिलों और श्याङों में ही काम करते हैं। भला यह कैसे कहा जा सकता है कि हम देहातों को भूल गए हैं !

ल्याङ शू-मिङ यह आरोप भी लगाते हैं कि हमारा ग्रामीण कार्य "पिछड़ा हुआ" है और हमारे निचले स्तर के कार्यकर्ता "कानून व अनुशासन का उल्लंघन करते हैं"। यह सच है कि हमारे देहाती इलाकों में अब भी पिछड़े हुए श्याङ मौजूद हैं। लेकिन उनकी संख्या कितनी है ? केवल 10 प्रतिशत है। वे पिछड़े हुए क्यों हैं ? इसका मुख्य कारण यह है कि प्रतिक्रियावादी तत्त्व, दुश्मन के सशस्त्र पुलिसमैन व एजेंट, प्रतिक्रियावादी गुप्त सोसायटियों के सरगना, गुण्डे व लफंगे, जमींदार और धनी किसान मौका पाकर हमारी पांतों में घुस आए हैं, कार्यकर्ता बन गए हैं और उन्होंने ग्रामीण सरकारों का सत्ताधिकार हड़प लिया है, यहां तक कि उनमें से कुछ

लोग तो कम्युनिस्ट पार्टी में भी घुस आए हैं। कानून व अनुशासन का गम्भीर रूप से उल्लंघन करने वाले कार्यकर्ताओं में 80 से 90 प्रतिशत लोग ऐसे हैं, और बाकी लोग पतनशील कार्यकर्ता हैं। इसलिए, पिछड़े हुए श्याङों में मुख्य समस्या यह है कि प्रतिक्रान्तिकारियों पर प्रहार किया जाय, लेकिन साथ ही पतनशील कार्यकर्ताओं की छंटाई करके उन्हें बाहर निकाल देना भी जरूरी है। समूचे देश में अच्छे और अपेक्षाकृत अच्छे श्याङों की संख्या कितनी है ? नब्बे प्रतिशत है। यह जरूरी है कि हम इस स्थिति को स्पष्ट रूप से समझ लें और ल्याङ शू-मिङ के धोखे में न आएं।

14. क्या हम अभिवेदनों को ठुकरा देते हैं और अपनी गलतियों पर लीपापोती करते हैं ? यदि श्री ल्याङ द्वारा पेश किए गए विचारों को भी "अभिवेदनों" की संज्ञा दी जा सकती है, तो मैं ऐलान करता हूं कि हम जरूर "अभिवेदनों को ठुकरा देते हैं"। लेकिन हम अपनी गलतियों पर लीपापोती हरगिज नहीं करते। हम सभी वस्तुओं पर (मजदूरों, किसानों, उद्योगपतियों व व्यापारियों, विभिन्न राष्ट्रीयताओं, विभिन्न जनवादी पार्टियों, विभिन्न जन संगठनों, उद्योग, कृषि, राजनीतिक व फौजी मामलों, संक्षेप में हर वस्तु पर) सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व की दृढ़ता से हिमायत करते हैं तथा एकता और संघर्ष दोनों की हिमायत करते हैं। यदि आप हमारी मनोवृत्ति की टोह लेना चाहते हैं, तो यही हमारी मनोवृत्ति है, एक ऐसी मनोवृत्ति जिसका स्वरूप बुनियादी है। क्या यह कोई हल्की-फुल्की चीज है ?

15. ल्याङ शू-मिङ की समस्या का राष्ट्रव्यापी महत्त्व है, और पो ई-पो के मामले की ही तरह इसे भी समूची पार्टी और समूचे देश के सामने पेश किया जाना चाहिए और इस पर बहस की जानी चाहिए। नमूना पेश करने वाले उदाहरण ढूंढ निकालो और आलोचना व आत्म-आलोचना करो। समूचे राष्ट्र को आम कार्यदिशा पर बहस करने दो।

आलोचना के दो तरीके होते हैं : एक है आत्म-आलोचना का तरीका और दूसरा है आलोचना का तरीका। आपके मामले में हम कौन सा तरीका अपनाएंगे, ल्याङ शू-मिङ साहब ? क्या हम आत्म-आलोचना का तरीका अपनाएंगे ? नहीं, हम आलोचना का तरीका अपनाएंगे।

ल्याङ शू-मिङ की आलोचना का हमारा उद्देश्य केवल उन्हीं का विरोध करना नहीं है बल्कि उनके जरिए ऐसे प्रतिक्रियावादी विचारों का पर्दाफाश करना भी है जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। ल्याङ शू-मिङ प्रतिक्रियावादी हैं, फिर भी हम उनके मामले को विचारधारात्मक नव रूपान्तर के दायरे में रखते हैं। उनका नव रूपान्तर किया जा सकता है या नहीं, यह एक दूसरा सवाल है। इस बात की भारी सम्भावना है कि उनका नव रूपान्तर नहीं किया जा सकेगा। अगर न किया जा सके तो भी कोई बात नहीं, क्योंकि वे सिर्फ एक ही आदमी हैं। फिर भी उनके साथ वाद-विवाद करना लाभदायक होगा। ऐसा न समझें कि हम तिल का ताड़ बना रहे हैं और यह मामला वाद-विवाद करने योग्य नहीं है। उनके साथ हमारे वाद-विवाद से समस्या को स्पष्ट करने में मदद मिलेगी। अगर उनकी कोई उपयोगिता है, तो यह यही है। इस समय किस सवाल पर वाद-विवाद हो रहा है ? क्या आम कार्यदिशा पर नहीं हो रहा ? इस सवाल को स्पष्ट करना हम सब लोगों के लिए लाभदायक होगा।

नोट

[1] "एक रंगहीन, पारदर्शी सरकार" की वकालत करते हुए त्याङ शु मिङ यह प्रचार कर रहा था कि सरकार को किसी भी पार्टी या गुट के रंग से अलग रहना चाहिए तथा उसे वर्गों से परे रहने वाली एक "रंगहीन, पारदर्शी वस्तु" होना चाहिए।

[2] मेनशियस, "काओ च", भाग 1।

[3] यह उद्धरण चीन के प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थ 'ऐतिहासिक अभिलेख' से लिया गया है। च लू कनफ्यूशियस का शिष्य और परिचारक था। जब से च लू कनफ्यूशियस का परिचारक बना, तब से कनफ्यूशियस के कान में प्रतिकूल राय कभी नहीं पड़ी।

[4] "कनफ्यूशियस का विद्यालय तीन बार शिष्यों से भरा था और तीन बार खाली हुआ था" यह उद्धरण हान राजवंश के वाङ छुङ की 'समीक्षात्मक निबन्ध' नामक रचना के 'शकुनों के बारे में' शीर्षक निबन्ध से लिया गया है। कनफ्यूशियस ने प्रतिक्रियावादी दास प्रथा का गुणगान करने के लिए लू राज्य में एक विद्यालय खोला था। शाओचङ माओ ने भी एक विद्यालय खोला था जिसमें कनफ्यूशियस के शिष्य भारी तादाद में व्याख्यान सुनने जाते थे। फलस्वरूप शाओचङ माओ का विद्यालय शिष्यों से भरा रहता था, जबकि कनफ्यूशियस का विद्यालय अक्सर खाली रहता था।

[5] 'ऐतिहासिक अभिलेख' के अनुसार, कनफ्यूशियस पहले लू राज्य के न्यायमंत्री के पद पर और बाद में कार्यकारी प्रधानमंत्री के पद पर रहा। दूसरे पद पर आसीन होने के बाद तीन महीने के अन्दर उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी शाओचङ माओ की हत्या कर दी।

[6] 'कनफ्यूशियस का सूक्ति-संग्रह', खण्ड 16, 'ची श'।

कृषि के क्षेत्र में आपसी सहयोग व सहकारिता के बारे में दो वार्ताएं

अक्तूबर और नवम्बर 1953

I. 15 अक्तूबर की वार्ता

कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों को सफल बनाने के फलस्वरूप आपसी सहयोग दलों का बड़े पैमाने पर विस्तार किया जा सकेगा।

नए मुक्त क्षेत्रों में हर काउंटी को, चाहे वह बड़ी हो अथवा मझोली या छोटी, पूरी तैयारी के बाद इन सरदियों में और अगले वसन्त में एक या दो सफल सहकारी समितियां कायम कर लेनी चाहिए; कम से कम एक, आम तौर पर एक से दो तक और ज्यादा से ज्यादा तीन सहकारी समितियां कायम कर लेनी चाहिए; यह इस बात पर निर्भर होगा कि वहां काम कैसा हुआ है। कोटा निश्चित कर दिए जाने चाहिए। बहुत बड़ा कोटा निश्चित करने का मतलब होगा दुस्साहस के साथ आगे बढ़ना, जबकि बहुत छोटा कोटा निश्चित करने का मतलब होगा दक्षिणपंथी भटकाव। कोटा निश्चित करते समय यदि उन्हें स्वेच्छा से निश्चित करने की इजाजत दे दी गई, तो कोटा ही छूमन्तर हो जाएंगे। क्या तीन से ज्यादा सहकारी समितियां भी कायम की जा सकती हैं ? जब तक ये सहकारी समितियां मांग से मेल खाती रहेंगी, नियमों व प्रस्तावों के अनुरूप रहेंगी, स्वेच्छा के आधार पर कायम की जाएंगी, कर्मठ नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं (जिनकी दो मुख्य खूबियां निष्पक्षता और कार्य-कुशलता हों) वाली बनी रहेंगी और बखूबी चलाई जाएंगी, तब तक उनकी संख्या जितनी ज्यादा होगी उतना ही बेहतर होगा, जैसा कि हान शिन ने उन सैन्य-दलों की संख्या के बारे में कहा था जिनका संचालन वह कर सकता था।[1]

प्रिफेक्चरों व काउंटियों की पार्टी कमेटियों से आग्रह करना चाहिए कि वे इस काम को भरपूर शक्ति से करें और उसे बखूबी अंजाम दें। केन्द्रीय कमेटी के ब्यूरोओं और प्रान्तीय व म्युनिसिपल पार्टी कमेटियों के ग्रामीण-कार्य विभागों को चाहिए कि वे इस मामले को मजबूती से गिरफ्त में रखें और इसे अपने काम की धुरी बना लें।

चीन कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के ग्रामीण-कार्य विभाग के नेतृत्वकारी सदस्यों के समक्ष कृषि के क्षेत्र में आपसी सहयोग व सहकारिता विषयक तीसरे सम्मेलन के पहले और उसके दौरान प्रस्तुत दो वार्ताएं। यह सम्मेलन केन्द्रीय कमेटी द्वारा 26 अक्तूबर 1953 तक आयोजित किया गया था।

हमारे पास एक नियंत्रित संख्या होनी चाहिए और हमें कोटा निश्चित करने चाहिए। बिना मजबूर किए कोटा निश्चित करना – यह फरमानशाही नहीं कहलाता। अक्तूबर सम्मेलन के बाद इस काम के लिए चार या पांच महीने मिल जाएंगे, यानी इस वर्ष के नवम्बर और दिसम्बर के महीने, अगले वर्ष के जनवरी और फरवरी के महीने, तथा उत्तर में मार्च का महीना भी। अब हम स्पष्ट रूप से सूचित कर रहे हैं कि इस काम की जांच के लिए अगले वर्ष के शुरू में एक अन्य मीटिंग बुलाई जाएगी। तब इस काम की निश्चित रूप से जांच की जाएगी और देखा जाएगा कि यह कैसे चल रहा है।

अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के कुछ इलाकों को, जहां भूमि-सुधार का काम अभी पूरा नहीं हुआ, सहकारी समितियों की स्थापना से मुक्त किया जा सकता है। थोड़ी सी ऐसी काउंटियों को, जहां बदइन्तजामी है, मिसाल के लिए उन काउंटियों को जिनमें पिछड़े हुए श्याङ्ग की संख्या 30 से 40 प्रतिशत तक है, जहां पार्टी-सचिव अयोग्य हैं और जहां सहकारी समितियों की स्थापना से गड़बड़ी पैदा हो जाएगी, फिलहाल मुक्त रखा जा सकता है और उनके लिए कोटा निश्चित नहीं किए जाने चाहिए। फिर भी, प्रान्तों व प्रिफेक्चरों की पार्टी कमेटियों को चाहिए कि वे ऐसी काउंटियों के कामकाज को सुव्यवस्थित करने में और अगले वर्ष शरद की फसल की कटाई के बाद जाड़ों में यह काम शुरू करने के लिए आवश्यक स्थितियां तैयार करने में उनकी सहायता करने की जिम्मेदारी उठा लें।

आम तरीका यह है कि आपसी सहयोग दल से आरम्भ करके सहकारी समिति की स्थापना की जाए, लेकिन सीधे सहकारी समितियों की स्थापना की कोशिश करने की इजाजत भी दी जा सकती है। अगर आप सीधा रास्ता पकड़ें तथा सफल रहें और इससे काम की रफ्तार तेज हो सके, तो ऐसी सूरत में भला इसकी कोशिश क्यों नहीं की जा सकती ? अवश्य की जा सकती है।

सभी स्तरों के ग्रामीण-कार्य विभागों को चाहिए कि वे आपसी सहयोग व सहकारिता को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मामला समझें। व्यक्तिगत रूप से खेतीबाड़ी करने वाले किसान अपने उत्पादन में ज्यादा बढ़ोतरी नहीं कर सकते, इसलिए यह जरूरी है कि हम आपसी सहयोग व सहकारिता का विकास करें। ग्रामीण मोर्चे पर अगर समाजवाद ने कब्जा न जमाया तो अनिवार्यत: पूंजीवाद कब्जा जमा लेगा। क्या यह सम्भव है कि पूंजीवादी या समाजवादी रास्ते के बजाय कोई अन्य रास्ता अपनाया जाए ? पूंजीवादी रास्ता भी उत्पादन को बढ़ोतरी की ओर ले जा सकता है, लेकिन उसमें ज्यादा लम्बा समय लगेगा और उसका रास्ता बड़ा कष्टमय होगा। हम पूंजीवाद पर अमल नहीं करेंगे, यह बात तय है। यदि हम समाजवाद पर अमल नहीं करेंगे तो यह निश्चित है कि पूंजीवाद का बोलबाला हो जाएगा।

आगामी अक्तूबर में होने वाले सम्मेलन में आम कार्यदिशा, आम प्रोग्राम, औद्योगीकरण और समाजवादी रूपान्तर के बारे में विचार-विमर्श किया जाना चाहिए।

''निजी सम्पत्ति को निश्चित रूप से बनाए रखना'' और ''चार बड़ी आजादियां'' धनी किसानों और खुशहाल मध्यम किसानों के हित में हैं। तो फिर कानून में इनसे सम्बन्धित व्यवस्था क्यों की गई है ? कानून में निजी सम्पत्ति की रक्षा की व्यवस्था जरूर की गई है, लेकिन ''निश्चित रूप से बनाए रखना'' का प्रयोग उसमें नहीं किया गया है। आजकल कुछ

किसान अपनी भूमि बेच रहे हैं, यह अच्छी बात नहीं है। हालांकि कानून इसकी मनाही नहीं करता, लेकिन हमें चाहिए कि उन्हें ऐसा करने से रोकने की कोशिश करें। सहकारी समितियां कायम करना इस समस्या का हल है। आपसी सहयोग दल किसानों को अपनी भूमि बेचने से रोकने के लिए अपने आप में काफी नहीं हैं। सिर्फ सहकारी समितियां ही, और उनमें भी सिर्फ बड़ी सहकारी समितियां ही ऐसा कर सकती हैं। यही नहीं, बड़ी सहकारी समितियां होने से कुछ किसानों के लिए अपने खेत बटाई पर देना भी आवश्यक नहीं रह जाएगा, क्योंकि सौ या दो सौ परिवारों की एक बड़ी सहकारी समिति, विधवाओं, अनाथों और अन्य असहायों के कुछ परिवारों को अपने अन्दर शामिल करके इस सवाल को हल कर सकती है। क्या इसी तरह छोटी सहकारी समितियां भी चन्द ऐसे परिवारों को अपने अन्दर शामिल कर सकती हैं ? इस सवाल पर विचार करना जरूरी है। आपसी सहयोग दलों को भी विधवाओं, अनाथों और अन्य असहायों की सहायता करनी चाहिए। यदि आप बड़ी सहकारी समिति कायम नहीं कर सकते, तो मझोली सहकारी समिति कायम करने की कोशिश कीजिए; यदि आप मझोली सहकारी समिति कायम नहीं कर सकते, तो छोटी सहकारी समितियां कायम करने की कोशिश कीजिए। लेकिन यदि मझोली या बड़ी सहकारी समितियां कायम करने की सम्भावना मौजूद हो, तो उन्हें जरूर कायम करना चाहिए और ऐसा नहीं होना चाहिए कि बड़ी सहकारी समिति को देखकर हम नाक-भौं सिकोड़ने लग जायं। सौ या दो सौ परिवारों वाली सहकारी समिति की गिनती बड़ी सहकारी समितियों में की जा सकती है, यहां तक कि तीन सौ या चार सौ परिवारों वाली सहकारी समिति कायम करना भी सम्भव है। एक बड़ी सहकारी समिति के अन्तर्गत कई उप-सहकारी समितियां कायम करना एक नया सृजन है और यह जरूरी नहीं कि उसे भंग कर दिया जाय। सहकारी समिति को अच्छी तरह चलाने का मतलब यह नहीं कि हर चीज बिलकुल त्रुटिहीन हो जाए। सभी प्रकार के अनुभवों को आत्मसात कर लेना चाहिए, और एक ही नमूने को हर जगह नहीं थोप देना चाहिए।

पुराने मुक्त क्षेत्रों में ज्यादा सहकारी समितियां कायम की जानी चाहिए। लेकिन हो सकता है कि कुछ नए मुक्त क्षेत्रों में कुछ पुराने मुक्त क्षेत्रों के मुकाबले ज्यादा तेजी से सहकारी समितियां कायम की जायं। मिसाल के लिए, यह भी हो सकता है कि मध्य शेनशी मैदान का विकास उत्तरी शेनशी के मुकाबले ज्यादा तेजी के साथ हो जाए, छङतू मैदान का विकास फूफिङ और उसके समान अन्य स्थानों के मुकाबले ज्यादा तेजी से हो जाए। हमें इस धारणा को खत्म कर देना चाहिए कि नए मुक्त क्षेत्रों के विकास की गति अनिवार्यत: धीमी होती है। उत्तर-पूर्व दरअसल पुराना मुक्त क्षेत्र नहीं है; उसका दक्षिणी भाग लम्बी दीवार के दक्षिण में स्थित नए मुक्त क्षेत्रों से ज्यादा भिन्न नहीं है। च्याङसू और हाङचओ-च्याशिङ-हूचओ क्षेत्र, सम्भवत: शानतुङ और उत्तरी चीन के पर्वतीय पुराने मुक्त क्षेत्रों से आगे निकल जाएं, और ऐसा होना भी चाहिए। आम तौर पर यह कहा जा सकता है कि नए मुक्त क्षेत्रों को इस काम के लिए ज्यादा समय दिया जाना चाहिए, लेकिन उन स्थानों में जहां कार्यकर्ता कर्मठ हैं, आबादी सघन है और भूमि समतल है, कुछ आदर्श सहकारी समितियों की स्थापना होने के फौरन बाद उनकी तादाद में काफी तेजी से बढ़ोतरी होना मुमकिन है।

इस समय उत्तरी चीन में छ: हजार सहकारी समितियां हैं। यदि इस संख्या को बढ़ाकर

दुगुना करना हो तो तुरन्त कोटा निश्चित किए जाने चाहिए। यदि इस संख्या को बढ़ाकर तिगुना करना हो, तो सम्बन्धित व्यक्तियों से सलाह मशविरा किया जाना चाहिए। हमें समुचित मात्रा में कोटा निश्चित करने चाहिए, और हमारे पास एक नियंत्रित संख्या होनी चाहिए। वरना हम बिना किसी स्पष्ट लक्ष्य के काम करते रहेंगे। उत्तर पूर्वी चीन को अपनी सहकारी समितियों की संख्या में 100 फीसदी, 150 फीसदी या 200 फीसदी की बढ़ोतरी करनी चाहिए, और उत्तरी चीन को भी ऐसा ही करना चाहिए। नियंत्रण संख्या को बहुत ऊंचा नहीं होना चाहिए, ताकि स्थानीय प्राधिकरण उसे पार कर सकें। लक्ष्य की अतिपूर्ति से लोगों का जोश बहुत बढ़ जाएगा।

सहकारी समितियों के विकास में हमें मात्रा, गुण और किफायत पर जोर देना चाहिए। किफायत का मतलब है असफलता न मिलना। असफलता से किसानों की कमेटमेंट का अपव्यय होता है तथा इसका परिणाम राजनीतिक दृष्टि से और अनाज-उत्पादन की दृष्टि से हानिकारक होता है। हमारा अन्तिम उद्देश्य है ज्यादा मात्रा में अनाज, कपास, गन्ना और साग-सब्जियां आदि पैदा करना। जब तक अनाज के उत्पादन में वृद्धि नहीं होगी, तब तक कोई रास्ता नहीं निकल सकेगा; ऐसी स्थिति में न तो राज्य को फायदा होगा और न जनता को।

उपनगरों में ज्यादा साग सब्जियां उगायी जानी चाहिए। जब तक उन्हें ज्यादा नहीं उगाया जाएगा, तब तक कोई रास्ता नहीं निकल सकेगा; ऐसी स्थिति में भी न तो राज्य को फायदा होगा और न जनता को। चूंकि उपनगरों की भूमि उपजाऊ व समतल है और साथ ही वह सार्वजनिक मिलकियत वाली भी है, इसलिए वहां बड़ी सहकारी समितियों को पहले कायम किया जा सकता है। इसमें सन्देह नहीं कि यह काम बड़े मनोयोगपूर्वक किया जाना चाहिए, क्योंकि साग सब्जियां उगाना अनाज उगाने से भिन्न है; लापरवाही बरतने से कतई काम नहीं चलेगा। यह जरूरी है कि हम प्रयोगात्मक सहकारी समितियां कायम करें और दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने की प्रवृत्ति से बचते रहें।

शहरों की साग-सब्जियों की मांग पूरी करने के लिए हम व्यक्तिगत रूप से खेतीबाड़ी करने वाले किसानों द्वारा अपनी उपज बाजार में बेचे जाने के तरीके पर भरोसा नहीं रख सकते। उत्पादन के क्षेत्र में और साथ ही सप्लाई व क्रय-विक्रय सहकारी समितियों को भी उपाय खोज निकालने चाहिए। बड़े शहरों के लिए साग-सब्जियों की मांग और पूर्ति के बीच इस समय एक बड़ा अन्तरविरोध मौजूद है।

अनाज और कपास के क्षेत्र में भी मांग और पूर्ति के बीच एक बड़ा अन्तरविरोध मौजूद है, तथा कुछ समय बाद वह गोश्त, चरबी और खाद्यतेलों के क्षेत्र में भी प्रकट हो जाएगा। मांग बड़ी तेजी से बढ़ रही है और उसकी पूर्ति नहीं की जा सकती।

मांग और पूर्ति के बीच के अन्तरविरोध को हल करने के लिए यह जरूरी है कि मिलकियत और उत्पादक शक्तियों के बीच के अन्तरविरोध को हल किया जाय। क्या मिलकियत को व्यक्तिगत होना चाहिए या सामूहिक ? पूंजीवादी होना चाहिए या समाजवादी ? व्यक्तिगत मिलकियत वाले उत्पादन-सम्बन्ध और प्रचुर मात्रा में की जाने वाली पूर्ति एक दूसरे के एकदम विरोधी हैं। यह जरूरी है कि व्यक्तिगत मिलकियत से सामूहिक मिलकियत में, समाजवाद में, संक्रमण किया जाए। प्रारम्भिक स्तर की सहकारी समितियां वे हैं जिनमें सदस्यों द्वारा अपनी-अपनी भूमि को शेयर के रूप में शामिल किया जाता है। उन्नत स्तर की सहकारी समितियां वे हैं जिनमें भूमि पर सामूहिक मिलकियत यानी सहकारी समितियों की मिलकियत होती है।

आम कार्यदिशा का उद्देश्य एक अर्थ में मिलकियत के सवाल को हल करना है। राजकीय मिलकियत का विस्तार, नए राजकीय कारोबारों की स्थापना और पुराने राजकीय कारोबारों का पुनरुद्धार व विस्तार करके किया जाएगा। निजी मिलकियत दो तरह की है – मेहनतकश जनता की और पूंजीपति वर्ग की। इन दोनों को क्रमशः सामूहिक मिलकियत और राजकीय मिलकियत (संयुक्त राजकीय निजी प्रबन्ध के जरिए समाजवाद में एकीकरण) में बदल देना होगा। केवल ऐसा करके ही उत्पादक शक्तियों को बढ़ाया जा सकेगा और चीन के औद्योगीकरण का कार्य पूरा किया जा सकेगा। जब उत्पादक शक्तियां विकसित हो जाएंगी, केवल तभी मांग और पूर्ति के बीच अन्तरविरोध को हल किया जा सकेगा।

II. 4 नवम्बर की वार्ता

यह जरूरी है कि हम जो कुछ भी करें वह वास्तविकता से मेल खाता हो, वरना वह गलत हो जाएगा। जो कुछ वास्तविकता से मेल खाता हो उसे करने के लिए यह जरूरी है कि हम इस बात पर विचार करें कि क्या आवश्यक है और क्या सम्भव है। सम्भव होना राजनीतिक और आर्थिक शर्तों तथा कार्यकर्ताओं की स्थिति पर निर्भर है। इस समय कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों को विकसित करना आवश्यक भी है और सम्भव भी, तथा इसके लिए भारी क्षमता निहित है। यदि इस निहित क्षमता को उजागर न किया गया तो इसका मतलब होगा एक ही जगह खड़े रहकर कदम चलाते रहना और प्रगति न करना। हमारे कदम चलने के लिए हैं और हर वक्त एक ही जगह खड़े रहना ठीक नहीं है। उन सहकारी समितियों को जबरन भंग कर देना ठीक नहीं है जिनकी स्थापना वास्तविक स्थिति की मांग के अनुरूप की गई थी। ऐसा करना किसी भी हालत में ठीक नहीं है। ''उतावलेपन और दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने की प्रवृत्ति को रोकने'' का प्रयत्न क्या हवा का एक झोंका नहीं था ? यह ऊपर से आया और उसने चन्द ऐसी कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों को गिरा दिया जिन्हें नहीं गिराया जाना चाहिए था। ऐसी सहकारी समितियों की जांच-पड़ताल की जानी चाहिए, उसके नतीजों को स्पष्ट रूप से बताया जाना चाहिए और गलती को स्वीकार किया जाना चाहिए, अन्यथा उन स्थानों के श्याङ कार्यकर्ताओं और सक्रिय तत्त्वों के मन में शिकायत बनी रहेगी।

यह जरूरी है कि हम समाजवाद के लिए काम करें। ''निजी सम्पत्ति को निश्चित रूप में बनाए रखना'' एक पूंजीवादी धारणा है। ''दिनभर साथ-साथ रहते हैं और बुनियादी उसूलों के बारे में कभी कोई बात नहीं करते, बल्कि केवल छोटे-छोटे उपकार करके ही खुश हो लेते हैं – यह सचमुच एक निराशाजनक स्थिति है !'' ''बुनियादी उसूलों के बारे में कभी कोई बात न करने'' का मतलब है समाजवाद के बारे में कभी कोई बात न करना, समाजवाद के लिए कभी कोई काम न करना। कृषि-ऋण देना, राहत के तौर पर अनाज बांटना, निश्चित दर के अनुसार टैक्स वसूल करना, कानून के मुताबिक टैक्स में कटौती करना और उसकी

छूट देना, छोटे पैमाने पर जल संरक्षण परियोजनाओं का निर्माण करना, कुएं और नहरें खोदना, गहरी जुताई और घनी रोपनी का तरीका अपनाना, खाद का समुचित इस्तेमाल करना, नए किस्म के चलते फिरते हलों, पनचक्कियों, छिड़काव-यंत्रों व कीटनाशक दवाइयों को लोकप्रिय बनाना, वगैरह-वगैरह ये सब बातें अच्छी हैं। लेकिन इन सब कामों को समाजवाद पर निर्भर रहकर करने के बदले लघु किसान अर्थव्यवस्था के आधार पर करने का मतलब है किसानों पर छोटे-छोटे उपकार करना। जहां एक बार इन अच्छी बातों को आम कार्यदिशा और समाजवाद के साथ जोड़ दिया गया, तो हालत बिलकुल बदल जाएगी और ये छोटे छोटे उपकार छोटे नहीं रह जाएंगे। यह जरूरी है कि हम समाजवाद के लिए काम करें और इन अच्छी बातों को उसके साथ जोड़ दें। जहां तक ''निजी सम्पत्ति को निश्चित रूप से बनाए रखने'' और ''चार बड़ी आजादियों'' का ताल्लुक है, इस बात का और भी बड़ा सबब मौजूद है कि इन्हें छोटे उपकार कहा जाय। इसके अतिरिक्त, ये उपकार धनी किसानों और खुशहाल मध्यम किसानों के हित में हैं। अनाज के उत्पादन में भारी बढ़ोतरी करने तथा खाद्य समस्या को और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था व जन जीविका की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण समस्या को हल करने के लिए अपनी आशाओं को समाजवाद पर नहीं बल्कि लघु किसान अर्थव्यवस्था पर अत्यधिक महत्त्व देने और व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था के आधार पर छोटे-छोटे उपकार करने पर केन्द्रित करने की स्थिति ''सचमुच एक निराशाजनक स्थिति है'' !

एक पुरानी कहावत है, ''मछली पकड़ने के जाल की मुख्य रस्सी को खींचते ही जाल के तमाम छेद खुल जाते हैं !'' केवल मुख्य कड़ी को मजबूती से गिरफ्त में रखने से ही बाकी सब चीजें अपनी मुनासिब जगह पर पहुंच जाती हैं। मुख्य कड़ी का मतलब है प्रधान विषय-वस्तु। समाजवाद और पूंजीवाद के बीच का अन्तरविरोध और इस अन्तरविरोध का कदम-ब-कदम समाधान - यह प्रधान विषय-वस्तु है, मुख्य कड़ी है। इस मुख्य कड़ी को मजबूती से गिरफ्त में रखने से किसानों की सहायता करने के सभी प्रकार के राजनीतिक और आर्थिक काम उसके अधीन आ जाएंगे।

कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों के अन्दर और बाहर दोनों जगह अन्तरविरोध मौजूद हैं। मौजूदा सहकारी समितियां अर्ध-समाजवादी हैं, और जो किसान सहकारी समितियों के बाहर व्यक्तिगत रूप से खेतीबाड़ी करते हैं, वे पूरी तरह निजी मिलकियत वाली व्यवस्था के अन्तर्गत आते हैं। इसलिए इन दोनों के बीच अन्तरविरोध मौजूद हैं। आपसी सहयोग दल कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों से इस बात में भिन्न हैं कि ये दल केवल सामूहिक श्रम में लगे रहते हैं और मिलकियत को स्पर्श नहीं करते। मौजूदा सहकारी समितियां निजी मिलकियत के आधार पर कायम की गई हैं। उनमें सदस्यों द्वारा व्यक्तिगत मिलकियत वाली भूमि, जुताई द्लाई पशुओं और बड़े-बड़े कृषि-औजारों को शेयर के रूप में शामिल किया जाता है। इसलिए सहकारी समितियों के अन्दर समाजवादी तत्त्वों और निजी मिलकियत के बीच भी अन्तरविरोध मौजूद रहता है और इस अन्तरविरोध को कदम-ब कदम हल किया जाना चाहिए। भविष्य में जब हमारी मौजूदा अर्ध-सार्वजनिक और अर्ध-निजी मिलकियत आगे बढ़कर सामूहिक मिलकियत में बदल जाएगी, तो यह अन्तरविरोध हल हो जाएगा। हम पुख्ता कदम उठा रहे हैं; हम आपसी सहयोग दलों से, जिनमें समाजवाद के अंकुर मौजूद हैं, पहले अर्ध- समाजवादी

सहकारी समितियों की तरफ और बाद में पूर्ण समाजवादी सहकारी समितियों की तरफ (जिन्हें हम तब भी कृषि-उत्पादक सहकारी समितियां ही कहते हैं, सामूहिक फार्म नहीं) बढ़ते जा रहे हैं। आम तौर पर यह कहा जा सकता है कि आपसी सहयोग दल अब भी कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों की बुनियाद हैं।

किसी समय हमारे कई दस्तावेजों में आपसी सहयोग व सहकारिता का कोई जिक्र नहीं किया जाता था। मैंने उन सब दस्तावेजों में इस तरह के शब्द जोड़ दिए थे कि आपसी सहयोग व सहकारिता का विकास किया जाना चाहिए अथवा आवश्यकता व सम्भावना के अनुरूप राजनीतिक व आर्थिक कार्य किया जाना चाहिए। कुछ लोग लघु-किसान अर्थव्यवस्था को अत्यधिक महत्त्व देना चाहते थे, इसलिए वे किसानों के मामले में अत्यधिक हस्तक्षेप का विशेष रूप से विरोध करते थे। यह सच है कि उस समय अत्यधिक हस्तक्षेप के कुछ मामले नजर आए थे। ''पांच अधिकताओं'' को ऊपर से विभिन्न माध्यमों के जरिए नीचे के स्तरों पर थोप दिया जाता था, जिससे बहुत गड़बड़ी पैदा हो गई। ''पांच अधिकताओं'' की हरगिज इजाजत नहीं दी जा सकती, चाहे गांव हों, कारखाने हों या फौजी यूनिटें। अत्यधिक हस्तक्षेप का विरोध करने के लिए केन्द्रीय कमेटी ने कई दस्तावेज जारी किए हैं; और इससे कुछ फायदा हुआ है। अत्यधिक हस्तक्षेप का मतलब आखिर क्या है ? इसका मतलब है, वास्तविकता के विपरीत और आवश्यकता व सम्भावना को ध्यान में रखे बिना मनोगतवादी योजनाएं बनाना, अथवा योजनाएं तो ऐसी बनाना जो वास्तविकता से मेल खाती हों, लेकिन उन्हें कार्यान्वित करने में फरमानशाही पर अमल करना। मनोगतवाद और फरमानशाही हमेशा बुरी चीजें रही हैं और दस हजार वर्ष बाद भी बुरी ही बनी रहेंगी। वे बिखरी हुई लघु-किसान अर्थव्यवस्था के लिए ही नहीं बल्कि सहकारी समितियों के लिए भी बुरी हैं। लेकिन, आवश्यकता व सम्भावना के अनुरूप और फरमानशाही पर अमल किए बिना काम करना अत्यधिक हस्तक्षेप नहीं कहला सकता। हमारे काम का सिंहावलोकन करते समय ही मापदण्ड इस्तेमाल किया जाना चाहिए। जो कुछ भी मनोगतवादी है और वास्तविकता से दूर है, वह गलत है। इसी तरह जो कुछ भी फरमानशाही के जरिए किया जाता है, वह भी गलत है। एक ही जगह खड़े रहकर कदम चलाते रहना और आगे न बढ़ना दक्षिणपंथी भटकाव है; सम्भावना की सीमा को लांघकर काम करना ''वामपंथी'' भटकाव है। ये दोनों ही मनोगतवाद की अभिव्यक्ति हैं। दुस्साहस के साथ आगे बढ़ना गलत है; उन सहकारी समितियों को कायम न करना भी गलत है जिन्हें कायम किया जा सकता है; सहकारी समितियों को जबरन भंग करना तो और भी गलत है।

''गांवों में जीवन कठोर है, वहां अधिकांश वस्तुएं ठीक नहीं हैं और जो उपाय अपनाए गए हैं वे लघु-किसान अर्थव्यवस्था से मेल नहीं खाते'' इस प्रकार की शिकायतें पार्टी के भीतर और बाहर दोनों जगह मौजूद हैं। यह सच है कि गांवों में जीवन कठोर है, लेकिन हमें इस बात का समुचित विश्लेषण करना चाहिए। वास्तविकता यह है कि वहां जीवन इतना कठोर नहीं है। अनाज की कमी वाले किसान परिवार केवल कोई 10 प्रतिशत हैं, जिनमें से आधे परिवार उन विधवाओं, अनाथों और उन असहाय लोगों के हैं जो श्रम शक्ति की कमी के कारण बहुत मुश्किल से जीवन बिताते हैं। लेकिन आपसी सहयोग दलों और सहकारी समितियों में उन्हें कुछ न कुछ सहायता प्राप्त हो सकती है। फिर भी उनकी हालत क्वोमिन्ताङ के जमाने

के मुकाबले ज्यादा बेहतर है और उनके बीच भूमि वितरित की जा चुकी है। प्राकृतिक विपत्तियों से पीड़ित क्षेत्रों में लोगों का जीवन सचमुच कठिन है, लेकिन उन्हें राहत के तौर पर अनाज दिया गया है। आम किसानों का जीवन अच्छा है और बेहतर होता जा रहा है। इसलिए उनमें 80 से 90 फीसदी लोग खुश हैं और सरकार का समर्थन करते हैं। देहातों की कुल आबादी का लगभग 7 फीसदी भाग, जिसमें जमींदार और धनी किसान आते हैं, सरकार से असन्तुष्ट है। "गांवों में जीवन कठोर है और वहां की हालत बड़ी खौफनाक है" – मेरा कभी भी यह विचार नहीं रहा। कुछ लोग गांवों की तकलीफों के साथ-साथ उनके बिखरे हुए स्वरूप की चर्चा करते हैं, यानी लघु-किसान अर्थव्यवस्था के बिखरे हुए स्वरूप की चर्चा करते हैं। लेकिन ऐसा करते समय वे सहकारी समितियों की स्थापना का जिक्र नहीं करते। व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था का समाजवादी रूपान्तर करना, आपसी सहयोग व सहकारिता को प्रोत्साहन देना तथा सहकारी समितियां कायम करना – यह न केवल एक ऐसी दिशा है जिसका अनुसरण करना चाहिए, बल्कि हमारे सामने एक फौरी काम भी है।

यदि वित्तीय व आर्थिक कार्य विषयक सम्मेलन जुलाई और अगस्त में न बुलाया गया होता तो आम कार्यदिशा का मसला बहुत से कामरेडों के लिए अनसुलझा ही रह गया होता। इस सम्मेलन का मकसद, मुख्य रूप से इस मसले को हल करना था। हमने पो ई-पो की आलोचना ठीक इसलिए की क्योंकि उन्होंने आम कार्यदिशा से भटकने की गलती की थी। सारांश रूप में, आम कार्यदिशा का मतलब है कदम-ब-कदम हमारे देश के समाजवादी औद्योगीकरण के कार्य को पूरा करना तथा कृषि, दस्तकारी और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर के कार्य को पूरा करना। हाल ही में अनाज की योजनाबद्ध खरीद और सप्लाई की व्यवस्था लागू होने से समाजवाद को भारी प्रोत्साहन मिला है। इसके फौरन बाद, आपसी सहयोग व सहकारिता के बारे में आयोजित वर्तमान सम्मेलन से उसे एक बार फिर भारी प्रोत्साहन मिलेगा। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि आपसी सहयोग व सहकारिता आन्दोलन में इस वर्ष की अधिकांश अवधि में ठहराव बना रहा है, मौजूदा सम्मेलन को इस सम्बन्ध में और अधिक सक्रिय हो जाना चाहिए। लेकिन यह जरूरी है कि लोगों को हमारी नीतियों से अवगत कराया जाय। हमारी नीतियों से अवगत कराना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

"सक्रिय नेतृत्व और सतत-सुस्थिर विकास" – यह कथन बहुत अच्छा है। इस आन्दोलन में इस वर्ष की अधिकांश अवधि में ठहराव बना रहा और यह आगे बढ़े बगैर एक ही स्थान पर खड़े रहकर कदम चलाता रहा। यह ज्यादा उचित नहीं है। तथापि इसका एक सकारात्मक पहलू भी है। यह युद्ध में लड़ने के समान है। हर लड़ाई के बाद दूसरी लड़ाई शुरू करने के पहले विश्राम व सुदृढ़ीकरण के लिए समय होना चाहिए। मुसीबत यह है कि कुछ स्थानों में हमारे बहुत से मोर्चों को छोड़ दिया गया है, तथा कुछ अन्य स्थानों में बहुत ज्यादा मोर्चों के छोड़ दिए जाने का मसला तो मौजूद नहीं है, लेकिन जहां विकास करना सम्भव था वहां विकास न करने तथा किसी भी तरह के विकास की इजाजत न देने या मंजूरी न देने का मसला मौजूद है, जिससे विकास करना गैर-कानूनी बन गया है। इस दुनिया में अक्सर देखने में आता है कि बहुत सी नवजात वस्तुओं को, जो सही होती हैं, गैर-कानूनी समझा जाता है। अतीत में खुद हम भी "गैर-कानूनी" थे, जबकि क्वोमिन्ताङ "कानूनी" थी। लेकिन ये गैर-कानूनी

सहकारी समितियां अभी तक बरकरार हैं और बखूबी चल रही हैं। क्या आप अब भी उन्हें मान्यता देने से इनकार कर सकते हैं ? आपको स्वीकार करना होगा कि वे कानूनी हैं; आखिरकार वे विजयी हो गई हैं।

इस सम्मेलन में सक्रिय नेतृत्व और सतत-सुस्थिर विकास के बारे में विचार विमर्श किया गया है, लेकिन आपको कुछ न कुछ गड़बड़ी पैदा होने का पहले से ही अनुमान कर लेना चाहिए। आप सक्रिय नेतृत्व और सतत-सुस्थिर विकास की बातें भले ही करें, मगर उन्हें अमल में उतारने में असफल भी हो सकते हैं। सक्रिय नेतृत्व और सतत-सुस्थिर विकास के लिए यह आवश्यक है कि हमारे पास एक नियंत्रित संख्या हो, काम निर्धारित किए जायं और बाद में इस बात की जांच की जाय कि उन्हें पूरा किया गया या नहीं। जो काम पूरे किए जा सकते हों, उन्हें पूरा न करने की इजाजत हर्गिज नहीं दी जा सकती। उन्हें पूरा न करना समाजवाद के लिए उत्साह की कमी का परिचायक है। हमारे द्वारा की गई जांच-पड़ताल के नतीजों के मुताबिक 5 से 10 प्रतिशत सहकारी समितियों के उत्पादन में गिरावट आई है और वे ज्यादा अच्छी तरह नहीं चल रहीं। यह सक्रिय नेतृत्व के अभाव का परिणाम है। इसमें सन्देह नहीं कि बदइन्तजामी की वजह से भी चन्द सहकारी समितियों के उत्पादन में गिरावट आना अनिवार्य है। जो हो, अगर 20 प्रतिशत या इससे भी ज्यादा सहकारी समितियों के उत्पादन में गिरावट आ गई, तो एक समस्या ही खड़ी हो जाएगी।

आम कार्यदिशा का मतलब है उत्पादन सम्बन्धों में कदम-ब-कदम तब्दीली लाना। स्तालिन के कथनानुसार, मिलकियत की व्यवस्था उत्पादन सम्बन्धों का आधार है।[3] यह जरूरी है कि सब साथी इस बात को स्पष्ट रूप से समझ लें। इस समय निजी मिलकियत और समाजवादी सार्वजनिक मिलकियत दोनों ही कानूनी हैं, लेकिन कदम-ब-कदम निजी मिलकियत गैर-कानूनी बन जाएगी। तीन मू भूमि को "निजी सम्पत्ति को निश्चित रूप से बनाए रखने" और "चार बड़ी आजादियों" पर अमल करने का मतलब होगा पूरी आबादी में अत्यन्त अल्पसंख्य धनी किसानों की तादाद बढ़ाने में सहायक होना और पूंजीवादी रास्ते पर अग्रसर होना।

काउंटी व जिला स्तर के कार्यकर्ताओं के लिए यह जरूरी है कि वे अपने काम को कदम-ब-कदम कृषि-उत्पादन में आपसी सहयोग व सहकारिता की दिशा में मोड़ लें, समाजवाद को प्रोत्साहन देने की दिशा में मोड़ लें। अगर वे समाजवाद के लिए काम न करें तो आखिर किसके लिए करें ? क्या व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था के लिए करें ? यह जरूरी है कि काउंटी व जिला स्तर की पार्टी कमेटियों के सचिव समाजवाद के लिए किए जाने वाले काम को अत्यन्त महत्वपूर्ण काम समझें। यह जरूरी है कि पार्टी सचिव अपनी-अपनी जिम्मेदारी सम्भाल लें; मैं खुद भी केन्द्रीय कमेटी का सचिव हूं। यह जरूरी है कि केन्द्रीय कमेटी के ब्यूरोओं के सचिव, प्रान्त, प्रिफेक्चर, काउंटी व जिला स्तर की पार्टी कमेटियों के सचिव तथा सभी स्तरों के सचिव अपनी-अपनी जिम्मेदारी सम्भाल लें और खुद भी इस काम में भाग लें। इस समय केन्द्रीय कमेटी अपनी 70 से 80 प्रतिशत शक्ति को कृषि के समाजवादी रूपान्तर के काम में लगा रही है। इसी तरह पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य का रूपान्तर करने का काम भी समाजवाद के लिए किया जाने वाला काम है। यह जरूरी है कि सभी स्तरों के ग्रामीण-कार्य

विभागों के कार्यकर्ता और इस सम्मेलन में शरीक सभी लोग, कृषि के समाजवादी रूपान्तर के काम के विशेषज्ञ बन जाएं और सिद्धान्त, कार्यदिशा, नीति और तरीकों में महारत हासिल कर लें।

शहरों के लिए साग-सब्जियां मुहय्या करना मुख्य रूप से योजनाबद्ध सप्लाई पर निर्भर है। बड़े और नवोदित नगरों में आबादी बहुत घनी है, आखिर साग सब्जियों के बिना उनका काम कैसे चल सकता है ? इस सवाल को हल करना जरूरी है। अगर उपनगरों में आपसी सहयोग दलों की स्थापना से भी साग-सब्जियों के उत्पादन और सप्लाई की गारंटी नहीं हो सकती तो आप इस मंजिल को लांघकर सीधे अर्ध-समाजवादी सहकारी समितियां, यहां तक कि पूर्ण समाजवादी सहकारी समितियां भी कायम कर सकते हैं। इस सवाल पर विचार करने की जरूरत है।

कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों के विकास के लिए एक योजना पेश की गई है। इन जाड़ों में और अगले वसन्त में तथा शरद की फसल कटने से पहले 32,000 से अधिक सहकारी समितियां कायम की जाएंगी। 1957 में यह संख्या 7,00,000 तक पहुंच जाएगी। लेकिन उनकी संख्या में किसी भी समय अचानक बढ़ोतरी होने का पहले से ही अनुमान लगा लेना चाहिए। सहकारी समितियों की संख्या दस लाख तक पहुंच सकती है या इससे भी अधिक बढ़ सकती है। संक्षेप में, सहकारी समितियों को बड़ी तादाद में कायम करो और उनका बखूबी प्रबन्ध करो; सक्रिय नेतृत्व और सतत-सुस्थिर विकास को अमल में लाओ।

यह सम्मेलन सफल रहा है। अगर हमने इसका आयोजन न किया होता और अगली जनवरी तक इन्तजार किया होता, तो काफी देर हो गई होती और ये सरदियां यों ही गुजर जातीं। अगले वर्ष 26 मार्च को हम दूसरे सम्मेलन का आयोजन करेंगे और इस बात की जांच करेंगे कि हमारी योजना को किस हद तक कार्यान्वित किया गया है। यह एक अच्छा विचार है कि इस सम्मेलन में अगले सम्मेलन की तारीख तय की जाय और यह निर्णय किया जाय कि वर्तमान सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्ताव को कार्यान्वित करने से सम्बन्धित प्रगति की उसमें जांच की जाएगी। अगले शरद में हम अगले जाड़ों के कार्यों के बारे में विचार-विमर्श करने और उन्हें तय करने के लिए एक अन्य सम्मेलन आयोजित करेंगे।

नोट

[1] हान शिन हान राजवंश के प्रथम सम्राट ल्यू पाङ का एक मुख्य सेनापति था। ''ऐतिहासिक अभिलेख'' के मुताबिक ल्यू पाङ ने एक बार हान शिन से पूछा था कि वह कितने सैन्य दलों का संचालन कर सकता है। उत्तर में उसने कहा था : ''उनकी संख्या जितनी ज्यादा होगी, उतना ही बेहतर होगा''।

[2] देखिए, इसी ग्रन्थ के पृष्ठ 202 पर।

[3] जे.वी. स्तालिन : ''द्वन्द्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद''।

चीन लोक गणराज्य के संविधान के मसौदे के बारे में

14 जून 1954

जाहिर है कि संविधान के इस मसौदे को आम जनता का समर्थन प्राप्त हुआ है। पेकिङ के पांच सौ से अधिक व्यक्तियों द्वारा, और विभिन्न प्रान्तों व म्युनिसिपलटियों के विभिन्न दायरों के सक्रिय तत्वों द्वारा किए गए विचार-विमर्श के आधार पर, अर्थात आठ हजार से अधिक ऐसे व्यक्तियों द्वारा किए गए व्यापक विचार विमर्श के आधार पर जो समूचे देश का प्रतिनिधित्व करते हैं, हम कह सकते हैं कि इसका प्रारम्भिक मूल पाठ काफी अच्छा है तथा उसे आम लोगों की स्वीकृति मिल गई है और समर्थन प्राप्त हो गया है। आज के अधिवेशन में बहुत से लोगों ने इसकी पुष्टि में अपने उद्‌गार प्रकट किए हैं।

ऐसे व्यापक विचार-विमर्श का आयोजन क्यों किया गया है ? इसके कई लाभ हैं। पहले, जिस चीज को थोड़े से लोगों ने तैयार किया है उसे क्या व्यापक लोगों की स्वीकृति मिल जाएगी ? विचार-विमर्श से यह साबित हो गया है कि प्रारम्भिक मूल पाठ की मुख्य धाराओं और बुनियादी उसूलों को आम लोगों की स्वीकृति मिल गई है। प्रारम्भिक मूल पाठ में जो बातें सही हैं उन सबको सुरक्षित रखा गया है। इस तथ्य से कि थोड़े से नेताओं के विचारों को हजारों व्यक्तियों की स्वीकृति मिल गई है, यह जाहिर होता है कि ये विचार युक्तियुक्त, यथोचित और व्यवहार्य हैं। इससे हमारे अन्दर आत्मविश्वास पैदा होता है। दूसरे, विचार-विमर्श के दौरान 5,900 से अधिक सुझावों को (जिनमें प्रश्न शामिल नहीं हैं) इकट्‌ठा कर लिया गया है। ये तीन किस्म के हैं। पहली किस्म के सुझाव वे हैं जो सही नहीं हैं। दूसरी किस्म के सुझाव वे हैं जो पूरी तरह गलत तो नहीं हैं मगर उपयोगी नहीं हैं और बेहतर यह होगा कि उन्हें स्वीकार न किया जाए। अगर इन सुझावों को स्वीकार नहीं किया जाएगा, तो फिर इन्हें क्यों इकट्‌ठा किया जाए ? क्या इन्हें इकट्‌ठा करने से कोई लाभ होता है ? हां, होता है। इससे हम यह जान सकते हैं कि संविधान के बारे में इन आठ हजार से अधिक व्यक्तियों के अन्दर ऐसे विचार मौजूद हैं और एक तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं। तीसरी किस्म के सुझाव वे हैं जिन्हें स्वीकृत किया गया है। बेशक वे बहुत अच्छे और आवश्यक हैं। अगर ये सुझाव न मिले होते तो यह प्रारम्भिक मूल पाठ बुनियादी रूप से सही होने पर भी अपूर्ण, त्रुटियुक्त और सांगोपांग चिन्तन रहित बना रह जाता। यह भी हो सकता है कि मसौदे का वर्तमान रूप अब भी त्रुटियुक्त और अपूर्ण बना रहे, और इसके बारे में हमें समूचे देश की जनता से उसकी राय पूछनी होगी।

केन्द्रीय जन सरकार परिषद के तीसवें अधिवेशन में भाषण।

फिर भी अब हम कह सकते हैं कि यह मसौदा अपूर्णता से अपेक्षाकृत मुक्त हो चुका है, और यह युक्तियुक्त सुझावों को स्वीकार करने का ही नतीजा है।

इस मसौदे को आम जनता का समर्थन क्यों प्राप्त हुआ है ? मेरे खयाल से इसका एक कारण यह है कि मसौदा तैयार करते समय हमने नेतृत्वकारी निकाय के विचारों को जन समुदाय के विचारों के साथ एकीकृत करने का तरीका अपनाया। संविधान के इस मसौदे में थोड़े से नेताओं के विचारों को आठ हजार से अधिक लोगों के विचारों के साथ एकीकृत किया गया है, और प्रकाशन के बाद इस पर समूचे देश की जनता द्वारा विचार-विमर्श किया जाएगा, ताकि केन्द्रीय कमेटी के विचारों को समूची जनता के विचारों के साथ एकीकृत किया जा सके। यही नेतृत्व को जन-समुदाय के साथ और सक्रिय तत्वों के विशाल समुदाय के साथ एकीकृत करने का तरीका है। हम पहले भी यह तरीका अपना चुके हैं और भविष्य में भी ऐसा ही करेंगे। सभी महत्वपूर्ण कानून बनाते समय यही तरीका अपनाया जाना चाहिए। यह तरीका अपना कर हमने आज संविधान का एक ऐसा मसौदा तैयार किया है जो अपेक्षाकृत अच्छा है और जो अपूर्णता से अपेक्षाकृत मुक्त हो चुका है।

यहां उपस्थित आप सब लोग और सक्रिय तत्वों का विशाल समुदाय संविधान के इस मसौदे का समर्थन क्यों करते हैं और इसे सन्तोषजनक क्यों समझते हैं ? इसके दो मुख्य कारण हैं : पहला यह है कि इसमें अतीत के अनुभवों का सारांश निकाला गया है और दूसरा यह है कि इसमें उसूल को लचीलेपन के साथ मिलाया गया है।

पहले, इसमें अतीत के अनुभवों का, विशेष रूप से पिछले पांच वर्षों में क्रान्ति व निर्माण में हमारे द्वारा प्राप्त किए गए अनुभवों का सारांश निकाला गया है। इसमें साम्राज्यवाद, सामन्तवाद व नौकरशाही-पूंजीवाद के खिलाफ सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में चलने वाली जन-क्रान्ति में हमारे द्वारा प्राप्त किए गए अनुभवों का, और साथ ही पिछले कुछ वर्षों में सामाजिक सुधार, आर्थिक निर्माण, सांस्कृतिक निर्माण व सरकारी कामकाज में हमारे द्वारा प्राप्त किए गए अनुभवों का सारांश निकाला गया है। इसके अलावा, इसमें छिङ राजवंश के अन्तिम वर्षों से लेकर अब तक के संविधान-रचना के अनुभवों का, यानी छिङ राजवंश के अन्तिम दिनों की 'उन्नीस संवैधानिक धाराओं'[1] से लेकर 1912 के 'चीन गणराज्य के अस्थाई संविधान'[2], उत्तरी युद्ध-सरदारों की सरकारों के अनेक संविधानों और संविधान के मसौदों[3], प्रतिक्रियावादी च्याङ काई-शेक शासन के 'राजनीतिक अभिभावकता काल में चीन गणराज्य के अस्थाई संविधान' तथा च्याङ काई-शेक के बोगस संविधान तक संविधान-रचना के अनुभवों का सारांश निकाला गया है। उनमें सिर्फ एक संविधान का स्वरूप सकारात्मक था, बाकी सबका नकारात्मक था। 'चीन गणराज्य का अस्थाई संविधान', जिसे 1912 में बनाया गया था, अपने जमाने का एक अपेक्षाकृत अच्छा संविधान था। बेशक, वह अपूर्ण, त्रुटियुक्त और पूंजीवादी स्वरूप वाला था, लेकिन उसमें कुछ क्रान्तिकारी व जनवादी चीजें भी थीं। वह काफी संक्षिप्त था और कहा गया था कि उसका मसौदा बड़ी जल्दबाजी से तैयार किया गया है; मसौदे तैयार करने से लेकर उसकी स्वीकृति तक सिर्फ एक महीने का समय लगा था। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि बाकी तमाम संविधान और संविधान के मसौदे प्रतिक्रियावादी थे। हमारे संविधान के इस मसौदे में मुख्य रूप से क्रान्ति व निर्माण के क्षेत्र में हमारे अनुभवों

का सारांश निकाला गया है, लेकिन साथ ही वह घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय अनुभवों का संश्लिष्ट रूप भी है। हमारा संविधान एक समाजवादी किस्म का संविधान है। वह मुख्य रूप से हमारे अपने अनुभवों पर आधारित है, लेकिन सोवियत संघ और जनता की लोकशाही वाले देशों के संविधानों में जो चीजें अच्छी हैं उन्हें ग्रहण कर लिया गया है। संविधान की चर्चा करते समय यह बता दिया जाय कि इस क्षेत्र में पूंजीपति वर्ग हमारा पूर्वगामी रहा है। चाहे बरतानिया हो अथवा फ्रांस या अमरीका, इन देशों में पूंजीपति वर्ग एक जमाने में क्रान्तिकारी था, और उसी जमाने में पूंजीपति वर्ग ने संविधान बनाना शुरू किया था। हमें पूंजीवादी जनवाद को कलम के महज एक ही झटके से काट नहीं देना चाहिए और ऐसा नहीं कहना चाहिए कि इतिहास में पूंजीवादी संविधानों का कोई स्थान ही नहीं है। फिर भी, आज के पूंजीवादी संविधान बिल्कुल अच्छे नहीं हैं और बुरे हैं, विशेष रूप से साम्राज्यवादी देशों के संविधान, जिन्हें जनता की बहुसंख्या को धोखा देने और उसका उत्पीड़न करने के लिए बनाया गया है। हमारा संविधान एक नया, समाजवादी किस्म का संविधान है और पूंजीवादी किस्म के किसी भी संविधान से भिन्न है। वह पूंजीपति वर्ग के संविधानों की तुलना में, यहां तक कि उसके क्रान्तिकारी काल में बनाए गए संविधानों की तुलना में भी कहीं अधिक प्रगतिशील है। हम पूंजीपति वर्ग से श्रेष्ठ हैं।

दूसरे, हमारे संविधान के मसौदे में उसूल को लचीलेपन के साथ मिलाया गया है। यहां दो बुनियादी उसूल हैं, जनवाद का उसूल और समाजवाद का उसूल। हमारा जनवाद पूंजीवादी जनवाद नहीं, बल्कि जनता का जनवाद है, यानी जनता का जनवादी अधिनायकत्व है, जिसका नेतृत्व सर्वहारा वर्ग करता है और जो मजदूर-किसान संश्रय पर आधारित है। जनता के जनवाद का उसूल हमारे समूचे संविधान में व्याप्त है। दूसरा है समाजवाद का उसूल। समाजवाद आज हमारे देश में मौजूद है। संविधान में व्यवस्था की गई है कि समाजवादी रूपान्तर का कार्य सम्पन्न करना और देश के समाजवादी औद्योगीकरण को साकार रूप देना जरूरी है। यही हमारा उसूल है। समाजवाद के इस उसूल को लागू करने का मतलब क्या यह है कि हम समूचे देश के हर क्षेत्र में एक ही रात में समाजवाद को साकार रूप दे दें ? यह देखने में भले ही बड़ा क्रान्तिकारी लगे, लेकिन इसमें लचीलेपन का अभाव है, इसलिए इसे अमल में नहीं उतारा जा सकेगा; इसे विरोध का सामना करना पड़ेगा और अन्त में असफलता का मुंह देखना पड़ेगा। अतएव जो काम इस समय पूरा नहीं किया जा सकता, उसे कदम-ब-कदम पूरा करने के लिए समय दिया जाना चाहिए। मिसाल के तौर पर राजकीय पूंजीवाद को ही लीजिए। जैसा कि प्रावधान किया गया है, उसे कदम-ब-कदम अमल में लाया जाना है। वह केवल संयुक्त राजकीय-निजी प्रबन्ध का रूप ही नहीं, बल्कि विभिन्न रूप धारण करता है। ''कदम-ब-कदम'' और ''विभिन्न'' इन दो शब्दों पर ध्यान दीजिए। कहने का मतलब यह है कि राजकीय पूंजीवाद को कदम-ब-कदम विभिन्न रूपों में अमल में लाया जाना है, ताकि समूची जनता की समाजवादी मिलकियत को साकार रूप दिया जा सके। समूची जनता की समाजवादी मिलकियत एक उसूल है, किन्तु उसे साकार रूप देते समय उसे लचीलेपन के साथ मिलाकर लागू किया जाना चाहिए। और लचीलेपन का तात्पर्य है राजकीय पूंजीवाद को अमल में लाना, जो केवल एक ही रूप नहीं बल्कि ''विभिन्न'' रूप धारण करता है और जिसे केवल एक ही दिन में नहीं बल्कि ''कदम ब-कदम'' अमल में लाया जाता है। ऐसा करने से लचीलापन आ जाता

है। जो कुछ आज व्यवहार में उतारने योग्य है उसे हम संविधान में लिख देते हैं और जो कुछ व्यवहार में उतारने योग्य नहीं है उसे नहीं लिखते। मिसाल के तौर पर नागरिक अधिकारों की भौतिक गारंटी करने की बात को ही लीजिए। भविष्य में उत्पादन के विकास के साथ-साथ उनमें भी जरूर बढ़ोतरी होगी, किन्तु संविधान में केवल "कदम-ब-कदम बढ़ोतरी" शब्दसमूह का चयन किया गया है। यह भी लचीलेपन का ही परिचायक है। एक और मिसाल के तौर पर संयुक्त मोर्चे को ही लीजिए। इसे मुश्तरका प्रोग्राम में लेखनीबद्ध किया गया था। और अब इसे संविधान के मसौदे की प्रस्तावना में फिर से लिपिबद्ध किया गया है। "सभी जनवादी वर्गों, जनवादी पार्टियों व ग्रुपों, और जन-संगठनों के एक व्यापक जनता के जनवादी संयुक्त मोर्चे" का होना जरूरी है। इससे विभिन्न सामाजिक तबकों, राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग व जनवादी पार्टियों, और साथ ही किसानों व शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग को आश्वस्त करने में सहायता मिलेगी। और फिर अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं की समस्या भी है, जिसमें सामान्यता भी मौजूद है और विशिष्टता भी। संविधान की सामान्य धाराएं उसकी सामान्यता की परिचायक हैं और विशिष्ट धाराएं उसकी विशिष्टता की। अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं की अपनी-अपनी राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक विशेषताएं हैं। उनकी अर्थव्यवस्था की क्या विशेषताएं हैं ? मिसाल के तौर पर, संविधान के मसौदे की धारा 5 में बताया गया है कि चीन लोक गणराज्य में उत्पादन के साधनों की मिलकियत के चार रूप हैं, मगर वास्तव में हमारी अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के इलाकों में मिलकियत के अन्य रूप भी मौजूद हैं। क्या हमारे देश में आदिम कम्यून वाली मिलकियत अब भी मौजूद नहीं है ? मेरे खयाल में कुछ अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के इलाकों में शायद वह अब भी मौजूद है। इसी प्रकार दास-मालिकों वाली मिलकियत और सामन्ती मिलकियत भी अभी मौजूद हैं। वर्तमान काल की दृष्टि से देखा जाय तो दास व्यवस्था, सामन्ती व्यवस्था और पूंजीवादी व्यवस्था ये सभी बुरी चीजें हैं, किन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से ये सभी आदिम कम्यून व्यवस्था के मुकाबले प्रगतिशील थीं। ये व्यवस्थाएं शुरू में प्रगतिशील थीं लेकिन बाद में प्रगतिशील नहीं रहीं, इसलिए इनका स्थान क्रमशः दूसरी व्यवस्थाएं लेती गईं। हमारे संविधान के मसौदे की धारा 70 में यह प्रावधान किया गया है कि अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के इलाके "किसी क्षेत्र-विशेष में एक राष्ट्रीयता या कई राष्ट्रीयताओं की राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक विशिष्टताओं के अनुरूप स्वायत्त-शासन के नियम या विशेष नियम बना सकते हैं"। ये सभी उसूल को लचीलेपन के साथ मिलाने की मिसालें हैं।

संविधान के मसौदे को जो व्यापक प्रशंसा व समर्थन प्राप्त हुआ है, उसके ठीक ये दो कारण हैं : इसमें सही ढंग से और समुचित रूप से अतीत के अनुभवों का सारांश निकाला गया है, और इसमें सही ढंग से और समुचित रूप से उसूल को लचीलेपन के साथ मिलाया गया है। वरना, मेरे विचार से लोग इसकी प्रशंसा व समर्थन न करते।

संविधान के मसौदे को अमल में लाना पूरी तरह सम्भव और आवश्यक है। बेशक, यह अब भी एक मसौदा ही है, लेकिन कुछ महीनों के बाद, जब राष्ट्रीय जन-प्रतिनिधि सभा इसे अपनी स्वीकृति प्रदान कर देगी, तो यह एक विधिसम्मत संविधान बन जाएगा। अब हमें इसे लागू करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। जब इसे स्वीकृति प्रदान कर दी जाएगी, तो बिना किसी अपवाद के समूचे राष्ट्र को इसका पालन करना चाहिए। विशेष रूप से राजकीय

कर्मचारियों को, और सबसे पहले यहां उपस्थित लोगों को, इसका पालन करने में अग्रणी की भूमिका अदा करनी चाहिए। संविधान का पालन न करने का अर्थ होगा उसका उल्लंघन करना।

जब संविधान के मसौदे का ऐलान किया जाएगा, तो उसे समूची जनता का सर्वसम्मत समर्थन प्राप्त होगा और इससे जनता की सक्रियता बढ़ जाएगी। एक संगठन में नियमों का होना जरूरी है, उसी तरह एक राज्य में भी नियमों का होना जरूरी है। संविधान दरअसल आम नियमों का समूह होता है, यह बुनियादी कानून होता है। जनता के जनवाद और समाजवाद के उसूलों को एक बुनियादी कानून के रूप में, एक संविधान के रूप में, संहिताबद्ध करना, ताकि समूचे देश की जनता के सामने एक स्पष्ट रास्ता मौजूद रहे तथा उसे यकीन हो जाए कि जिस रास्ते पर वह चल रही है वह एक स्पष्ट, सुनिश्चित और सही रास्ता है – इससे जनता की सक्रियता बढ़ जाएगी।

जब संविधान के इस मसौदे का ऐलान किया जाएगा, तो क्या इसका दुनिया पर कोई असर पड़ेगा ? हां, असर पड़ेगा, चाहे जनवादी खेमा हो या पूंजीवादी देश, दोनों पर असर पड़ेगा। जनवादी खेमे के लोग यह देखकर प्रसन्न होंगे कि हमने अपने लिए एक स्पष्ट, सुनिश्चित और सही रास्ता निर्धारित कर लिया है। वे लोग भी जरूर खुश होंगे, क्योंकि हम चीनी लोग खुश हैं। जब पूंजीवादी देशों के उत्पीड़ित व शोषित जनगण को इसके बारे में मालूम होगा, तो वे भी प्रसन्न होंगे। निस्सन्देह कुछ व्यक्ति ऐसे जरूर हैं जो खुश नहीं होंगे, न साम्राज्यवादी खुश होंगे और न च्याङ काई-शेक खुश होगा। आप ही बताइए, क्या च्याङ काई-शेक को खुशी होगी ? मैं कहता हूं कि आप उससे पूछे बिना ही समझ सकते हैं कि वह खुश नहीं होगा। हम च्याङ काई-शेक को खूब अच्छी तरह जानते हैं, वह निश्चित रूप से इसका विरोध करेगा। प्रेसिडेंट आइजनहावर को भी खुशी नहीं होगी और वह कहेगा कि यह अच्छा नहीं है। वे सब यही कहेंगे कि इस संविधान ने हमारे लिए एक स्पष्ट और सुनिश्चित, किन्तु बहुत बुरा रास्ता, एक गलत रास्ता निर्धारित किया है, तथा यह कि समाजवाद और जनता के जनवाद पर अमल करना भारी भूल है। और न ही वे हमारे लचीलेपन को पसन्द करेंगे। वे चाहेंगे कि हम एक ही रात में जादू की छड़ी घुमाकर समाजवाद को साकार रूप दे दें और हर चीज को गड्डमड्ड कर दें। अगर हमने ऐसा किया तो वे सचमुच खुश होंगे। वे यह भी नहीं चाहते कि चीन में एक संयुक्त मोर्चा कायम किया जाए और चाहते हैं कि हम केवल "एक ही पक्ष वाला खेल" खेलें। हमारे संविधान की अपनी राष्ट्रीय विशिष्टताएं हैं, किन्तु साथ ही उसका अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप भी है; यह एक राष्ट्रीय परिघटना होने के साथ-साथ एक अन्तर्राष्ट्रीय परिघटना भी है। बहुत से राष्ट्र साम्राज्यवाद व सामन्तवाद के उत्पीड़न के शिकार हैं, जैसा कि पहले कभी हम भी थे, और दुनिया की अधिसंख्य जनसंख्या इन्हीं राष्ट्रों में रहती है। हमारे पास एक क्रान्तिकारी संविधान होना, जनता का एक जनवादी संविधान होना, और एक स्पष्ट, सुनिश्चित व सही रास्ता होना इन देशों की जनता के लिए सहायक सिद्ध होगा।

हमारा आम मकसद है एक महान समाजवादी देश के निर्माण के लिए प्रयास करना। हमारा राज्य 60 करोड़ जनता वाला एक बड़ा राज्य है। समाजवादी औद्योगीकरण के कार्य को और कृषि के समाजवादी रूपान्तर व मशीनीकरण के कार्य को सम्पन्न करने तथा चीन को एक महान समाजवादी देश बनाने में आखिर कितना समय लगेगा ? अभी हम एक निश्चित

अवधि नहीं बता सकते। एक बुनियाद तैयार करने में शायद तीन पंचवर्षीय योजनाओं का समय यानी कोई पन्द्रह वर्ष का समय लग जाएगा। क्या तब चीन एक महान देश बन जाएगा ? यह निश्चित नहीं है। मेरे विचार से एक महान समाजवादी देश के निर्माण के लिए पचास वर्ष का समय यानी दस पंचवर्षीय योजनाओं का समय शायद हमारे लिए काफी होगा। तब चीन एक नई शक्ल अख्तियार कर लेगा, जो आज से एकदम भिन्न होगी। आज हम क्या-क्या चीज़ बना सकते हैं ? हम मेज-कुर्सियां और प्यालियां व चायदानियां बना सकते हैं, अनाज उगा सकते हैं और उसे पीसकर आटा बना सकते हैं, तथा कागज तैयार कर सकते हैं। लेकिन हम एक भी मोटर-कार, हवाईजहाज, टैंक या ट्रैक्टर नहीं बना सकते। इसलिए यह जरूरी है कि हम डींगें न मारें और अहंकार न करें। निस्सन्देह, मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि जब हम एक मोटर-कार बना लें तो अहंकारी बन जाएं, दस मोटर-कारें बना लें तो और अधिक अहंकारी बन जाएं, और जितनी ज्यादा मोटर-कारें बनाते जाएं उतने ही ज्यादा अहंकारी बनते जाएं। ऐसा नहीं होना चाहिए। पचास साल बाद जब हमारा देश एक नई शक्ल अख्तियार कर लेगा, तब भी हमें आज की ही तरह विनम्र बने रहना चाहिए। यदि तब हम घमण्ड में चूर रहेंगे और दूसरों को तुच्छ समझेंगे, तो यह अच्छा नहीं होगा। हमें एक सौ साल बाद भी घमण्ड नहीं करना चाहिए। हमें कभी भी अहंकार नहीं करना चाहिए।

हमारा यह संविधान एक समाजवादी किस्म का संविधान है, किन्तु यह एक पूर्ण समाजवादी संविधान नहीं है। यह एक संक्रमणकालीन संविधान है। एक महान समाजवादी देश का निर्माण करने के संघर्ष में, हमें समूचे देश की जनता को एकताबद्ध करना चाहिए तथा उन सभी शक्तियों के साथ एकता कायम करनी चाहिए जिनके साथ एकता कायम की जा सकती है और की जानी चाहिए। और इस संविधान को ठीक यही मकसद पूरा करने के लिए बनाया गया है।

अन्त में, स्पष्टीकरण के लिए कुछ शब्द कह दूं। कुछ लोग कहते हैं कि चन्द व्यक्तियों की असाधारण नम्रता के कारण कुछ धाराएं संविधान के मसौदे से हटा दी गई हैं। यह कहना ठीक नहीं है। इसका कारण नम्रता नहीं बल्कि यह है कि ऐसी धाराओं को शामिल करना अनुचित, अयुक्तिसंगत और अवैज्ञानिक है। हमारे जैसे जनता के जनवादी राज्य के संविधान में ऐसी अनुचित धाराएं नहीं लिखी जानी चाहिए। हमने ऐसी किसी भी धारा को केवल नम्रतावश नहीं छोड़ा जिसे समाविष्ट किया जाना चाहिए था। विज्ञान के मामले में नम्रता होने या न होने का प्रश्न ही नहीं उठता। संविधान बनाना भी एक विज्ञान का मामला है। हमें केवल विज्ञान पर आस्था रखनी चाहिए, अन्य किसी चीज पर नहीं। कहने का मतलब यह है कि हमें किसी भी चीज पर अन्धी आस्था नहीं रखनी चाहिए। जो कुछ सही है वह सही है और जो कुछ गलत है वह गलत है, चाहे उसका सम्बन्ध चीनियों से हो या विदेशियों से, चाहे उसका सम्बन्ध मृतकों से हो या जीवित व्यक्तियों से, अन्यथा वह एक अन्धी आस्था कहलाएगा। यह जरूरी है कि हम अन्धी आस्था को तिलांजलि दे दें। हमें सिर्फ सही बात पर आस्था रखनी चाहिए, गलत बात पर नहीं, चाहे वह प्राचीन हो या अर्वाचीन। यही नहीं, हमें गलत बात की आलोचना भी करनी चाहिए। केवल यही एक वैज्ञानिक रुख है।

नोट

[1] यहां तात्पर्य नवम्बर 1911 में छिङ सरकार द्वारा जारी की गई "उन्नीस महत्वपूर्ण संवैधानिक धाराओं" से है।

[2] "चीन गणराज्य के अस्थाई संविधान" का ऐलान डा. सुन यात-सेन ने उस समय किया था जब उन्होंने 1911 की क्रान्ति के बाद चीन गणराज्य के अस्थाई राष्ट्रपति का पद सम्भाला।

[3] यहां तात्पर्य युवान शृ-खाए सरकार के 1913 के स्वर्ग मन्दिर संविधान के मसौदे, उसके 1914 के अस्थाई संविधान, छाओ खुन सरकार के 1923 के संविधान और त्वान छी-रुइ की अस्थाई सरकार के 1925 के संविधान के मसौदे से है।

एक महान समाजवादी देश का निर्माण करने का भरपूर प्रयास करो

15 सितम्बर 1954

प्रतिनिधि साथियो,

चीन लोक गणराज्य की पहली राष्ट्रीय जन-प्रतिनिधि सभा का पहला अधिवेशन आज हमारी राजधानी पेकिङ में शुरू हो रहा है।

प्रतिनिधियों की कुल संख्या 1,226 है, जिनमें से 1,211 ने अपने नाम उपस्थिति-रजिस्टर में दर्ज कर दिए हैं तथा 15 प्रतिनिधि बीमारी की वजह से या अन्य कारणों से छुट्टी पर हैं और अपने नाम दर्ज नहीं कर सके; 70 प्रतिनिधि नाम दर्ज करने पर भारी बीमारी की वजह से या अन्य कारणों से आज उपस्थित नहीं हो सके। आज की मीटिंग में प्रतिनिधियों की वास्तविक संख्या 1,141 है, जिससे कोरम पूरा हो गया है।

चीन लोक गणराज्य की पहली राष्ट्रीय जन-प्रतिनिधि सभा के पहले अधिवेशन को महत्त्वपूर्ण कार्य सौंपे गए हैं।

वर्तमान अधिवेशन के कार्य हैं :

संविधान को स्वीकृत करना;

अनेक महत्त्वपूर्ण कानून बनाना;

सरकार के काम की रिपोर्ट को स्वीकृत करना; तथा राज्य के नए नेतृत्वकारी पदाधिकारियों का चुनाव करना।

हमारा वर्तमान अधिवेशन एक महान और ऐतिहासिक महत्त्व का अधिवेशन है। यह एक ऐसा मील-स्तम्भ है जो 1949 में हमारे लोक गणराज्य की स्थापना के बाद हमारी जनता द्वारा प्राप्त की गई नई विजय और नई प्रगति का द्योतक है। इस अधिवेशन में स्वीकृत किया जाने वाला संविधान हमारे देश में समाजवादी कार्य को भारी प्रोत्साहन देगा।

हमारा आम कार्य है एक महान समाजवादी देश का निर्माण करना, विश्व शान्ति की रक्षा करना और मानव जाति की प्रगति के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए किए जाने वाले संघर्ष में समूची जनता को एकताबद्ध करना और विदेशों में अपने सभी दोस्तों का समर्थन प्राप्त कर लेना।

चीन लोक गणराज्य की पहली राष्ट्रीय जन-प्रतिनिधि सभा के पहले अधिवेशन में उद्घाटन भाषण।

हमारे देश की जनता को मेहनत से काम करना चाहिए, सोवियत संघ और अन्य बिरादराना देशों के समुन्नत अनुभवों से सीखने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए, ईमानदार व मेहनती होना चाहिए, एक दूसरे को प्रोत्साहन देना चाहिए और एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए, हर तरह की शेखी व अहंकार से बचना चाहिए, तथा अपने देश का, जो अभी आर्थिक व सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है, अनेक पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में उच्च कोटि की आधुनिक संस्कृति से लैस एक महान औद्योगीकृत देश के रूप में निर्माण करने के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए।

हमारा कार्य एक न्यायोचित कार्य है। एक न्यायोचित कार्य किसी भी शत्रु से कभी पराजित नहीं होता।

हमारे कार्य का नेतृत्व करने वाली केन्द्रीय शक्ति चीनी कम्युनिस्ट पार्टी है।

हमारे विचारों का मार्गदर्शन करने वाला सैद्धान्तिक आधार मार्क्सवाद-लेनिनवाद है।

हमें पूरा विश्वास है कि हम सभी कठिनाइयों और विघ्न-बाधाओं को दूर करके अपने देश को एक महान समाजवादी गणराज्य बना सकेंगे।

हम आगे बढ़ रहे हैं।

हम इस समय एक महान और अत्यन्त गौरवमय कार्य में लगे हुए हैं, एक ऐसे कार्य में लगे हुए हैं जिसे हमारे पूर्वजों ने पहले कभी नहीं किया।

हमारा लक्ष्य अवश्य प्राप्त होगा।

हमारा लक्ष्य असंदिग्ध रूप से प्राप्त हो सकेगा।

हमारे समूचे देश की 60 करोड़ जनता एक हो जाए और हमारे मुश्तरका कार्य को पूरा करने के लिए भरपूर प्रयास करे !

हमारी महान मातृभूमि जिन्दाबाद !

'लाल भवन का सपना' के अध्ययन के बारे में पत्र

16 अक्तूबर 1954

इस पत्र के साथ यूवी फिङ पो का खण्डन करने के लिए लिखे गए दो लेखों को नत्थी किया गया है। कृपया उन्हें पढ़ लें। पिछले 30 साल से ज्यादा समय में यह पहला मौका है जबकि 'लाल भवन का सपना' के अध्ययन के बारे में तथाकथित धुरंधर विद्वानों के गलत विचारों पर गम्भीरता से प्रहार किया गया है। इन लेखों के लेखक नौजवान संघ के दो सदस्य हैं। सबसे पहले उन्होंने 'साहित्यिक गजट' के नाम पत्र लिखकर यह पूछा कि यूवी फिङ पो की आलोचना करना ठीक है या नहीं, लेकिन उनकी उपेक्षा की गई। ऐसी हालत में उन्होंने विवश होकर अपने मातृ-विद्यालय – शानतुङ विश्वविद्यालय -- के एक अध्यापक के नाम पत्र लिखा, जिनसे उन्हें पत्र प्राप्त हुआ। ' ''लाल भवन का सपना'' की एक संक्षिप्त समीक्षा' के खंडन में उनका लेख इस विश्वविद्यालय की पत्रिका 'साहित्य, इतिहास और दर्शन' में प्रकाशित हुआ। उसके बाद यह सवाल पेकिङ में फिर उठा। कुछ लोगों ने सुझाव दिया कि वाद-विवाद और आलोचना शुरू करने के लिए यह लेख 'जन दैनिक' में भी छापा जाए' लेकिन ऐसा भी न हो सका, क्योंकि कुछ व्यक्तियों ने तरह-तरह के कारण बताकर इसका विरोध किया (उनमें मुख्य कारण बताया गया था कि यह ''महत्त्वहीन व्यक्तियों का लिखा हुआ लेख है'' और ''पार्टी का पत्र स्वतंत्र वाद-विवाद का मंच नहीं है'')। नतीजा यह हुआ कि समझौते के तौर पर, इस लेख को 'साहित्यिक गजट' में भी छापने की इजाजत दे दी गई। इसके बाद 'क्वाङमिङ दैनिक' के 'साहित्यिक विरासत' शीर्षक स्तम्भ में, यूवी फिङ-पो रचित ' ''लाल भवना का सपना''–एक अध्ययन' नामक पुस्तक के खण्डन में इन दो नौजवानों का एक और लेख प्रकाशित हुआ। ऐसा लगता है कि क्लासिकी साहित्य के क्षेत्र में हू श की विचारशाखा के पूंजीवादी आदर्शवाद के खिलाफ, जो पिछले 30 साल से अधिक समय में नौजवानों के दिलोदिमाग में जहर फैलाता रहा है, शायद अब संघर्ष शुरू हो सकेगा। संघर्ष का सूत्रपात दो ''महत्त्वहीन व्यक्तियों'' ने किया है, जबकि ''महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों'' ने इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया है। यहां तक कि उसमें रुकावट भी पैदा की है, जैसा कि वे अक्सर करते रहे हैं; वे आदर्शवाद के सवाल के बारे में पूंजीवादी लेखकों के साथ संयुक्त मोर्चा कायम करने का पक्षपोषण करते हैं और स्वेच्छा से पूंजीपति वर्ग के बन्दी बन जाते हैं। यह स्थिति

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के राजनीतिक ब्यूरो के साथियों तथा अन्य सम्बन्धित साथियों के नाम लिखा गया एक पत्र।

लगभग उस समय जैसी है जबकि 'छिङ राजदरबार की अन्दरूनी कहानी'[1] और 'ऊ श्युन की जीवनी' नामक फिल्में दिखाई गई थीं। 'छिङ राजदरबार की अन्दरूनी कहानी' नामक फिल्म को, जिसे कुछ लोगों ने देशभक्तिपूर्ण फिल्म कहा है लेकिन जो दरअसल एक देशद्रोहपूर्ण फिल्म है, देशभर में दिखाए जाने के बाद उसकी आलोचना अब तक नहीं की गई। 'ऊ श्युन की जीवनी' की आलोचना तो की जा चुकी है, लेकिन उससे अभी तक कोई सबक नहीं लिया गया; यही नहीं, एक अजीब बात यह देखने में आई है कि यूवी फिङ-पो के आदर्शवाद को तो बर्दाश्त कर लिया गया है लेकिन कुछ ''महत्त्वहीन व्यक्तियों'' के ओजपूर्ण आलोचनात्मक निबन्धों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। यह बात ध्यान देने लायक है।

बेशक, यूवी फिङ-पो जैसे पूंजीवादी बुद्धिजीवियों के प्रति हमें एकता स्थापित करने का रवैया अपनाना चाहिए, लेकिन हमें उनके उन तमाम गलत विचारों की आलोचना करनी चाहिए जो नौजवानों के दिमाग में जहर फैलाते हैं और उनके सामने किसी भी सूरत में आत्मसमर्पण नहीं करना चाहिए।

नोट

[1] 'छिङ राजदरबार की अन्दरूनी कहानी' एक प्रतिक्रियावादी फिल्म थी, जिसमें 1900 के देशभक्तिपूर्ण ई हो थ्वान आन्दोलन पर कीचड़ उछाला गया और साम्राज्यवाद के सामने आत्मसमर्पण का ढिंढोरा पीटा गया। ल्यू शाओ-ची ने इस देशद्रोहपूर्ण फिल्म को ''देशभक्तिपूर्ण'' कहकर उसकी तारीफ के पुल बांधे थे।

चीनी जनता को परमाणु बम से डराया नहीं जा सकता

28 जनवरी 1955

चीन और फिनलैण्ड मैत्रीपूर्ण देश हैं। हमारे सम्बन्ध शान्तिपूर्ण सहजीवन के पंच सिद्धान्तों पर आधारित हैं।

चीन और फिनलैण्ड के बीच कभी मुठभेड़ नहीं हुई। अतीत काल में, योरपीय देशों में से सिर्फ बरतानिया, फ्रांस, जर्मनी, जारशाही रूस, इटली, आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य और हालैण्ड के साथ चीन के युद्ध हुए थे; ये सभी देश चीन पर आक्रमण करने दूर से आए थे, जैसे बरतानवी-फ्रांसीसी संयुक्त सेना और अमरीका व जापान समेत आठ शक्तियों की संयुक्त सेना द्वारा किए गए हमले। कोरिया पर आक्रमण करने के लिए छेड़े गए युद्ध में सोलह देशों ने भाग लिया, जिनमें तुर्की व लक्जमबर्ग भी शामिल थे। ये सभी आक्रमणकारी देश यह दावा करते थे कि वे शान्तिप्रिय हैं, और उल्टे कोरिया व चीन पर ही आक्रमणकारी होने का आरोप लगाते थे।

आज, विश्व-युद्ध का खतरा पैदा करने और चीन को धमकियां देने का स्रोत मुख्य रूप से अमरीकी जंगबाज हैं। वे चीन के थाइवान और थाइवान जलडमरूमध्य पर कब्जा जमाए हुए हैं तथा एक परमाणु युद्ध छेड़ना चाहते हैं। हमारे दो उसूल हैं : पहला, हम युद्ध नहीं चाहते हैं; दूसरा, यदि किसी ने हम पर हमला किया, तो हम दृढ़ता के साथ जवाबी प्रहार करेंगे। कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों और समूचे राष्ट्र को हमने यही शिक्षा दी है। चीनी जनता को अमरीकी परमाणुविक धौंसपट्टी से डराया नहीं जा सकता। हमारे देश में 60 करोड़ आबादी है और 96 लाख वर्ग-किलोमीटर विशाल इलाका है। अमरीका अपने परमाणु बमों के छोटे से ढेर से चीनी राष्ट्र को नष्ट नहीं कर सकता। यहां तक कि यदि अमरीकी परमाणु बम इतने शक्तिशाली भी हो जाएं कि जब उन्हें चीन पर गिराया जाए तो वे पृथ्वी के आरपार एक बड़ा छेद बना दें या उसे तहस-नहस कर दें, तो भी पूरे ब्रह्माण्ड के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं होगी, यद्यपि सौरमण्डल के लिए यह एक बड़ी घटना मानी जाएगी।

हमारे यहां अक्सर कहा जाता है : कोदो और बन्दूक का योग। जहां तक अमरीका का ताल्लुक है, वहां विमान और परमाणु बम का योग है। फिर भी, यदि अमरीका अपने विमान

चीन में नियुक्त प्रथम फिनिश राजदूत कार्ल जोहान (काए) सण्डस्ट्राम द्वारा परिचयपत्र प्रस्तुत किए जाने के अवसर पर उनके साथ की गई बातचीत के मुख्य मुद्दे।

और परमाणु बम के योग से चीन के खिलाफ आक्रमणकारी युद्ध छेड़ देगा, तो चीन कोदो और बन्दूक के योग से उस पर अवश्य विजय प्राप्त कर लेगा। समूची दुनिया की जनता हमारा समर्थन करेगी। पहले विश्वयुद्ध का नतीजा यह हुआ कि रूस में जारशाही का, जमींदारों व पूंजीपतियों का खात्मा कर दिया गया। दूसरे विश्वयुद्ध का नतीजा यह हुआ कि चीन में च्याङ काई-शेक और जमींदारों का तख्ता उलट दिया गया तथा पूर्वी योरप के देश और कुछ एशियाई देश मुक्त हो गए। यदि अमरीका ने तीसरा विश्वयुद्ध छेड़ दिया, और मान लीजिए वह आठ या दस साल चला, तो इसका नतीजा यह होगा कि अमरीका, बरतानिया और अन्य सहअपराधी देशों के शासक वर्गों का खात्मा हो जाएगा तथा दुनिया के अधिकांश देश कम्युनिस्ट पार्टियों के नेतृत्ववाले देशों में बदल जाएंगे। विश्वयुद्धों का परिणाम जंगबाजों के हित में नहीं, बल्कि कम्युनिस्ट पार्टियों व दुनिया की क्रान्तिकारी जनता के हित में होता है। अगर जंगबाजों को युद्ध छेड़ना है, तो उन्हें हम पर यह आरोप नहीं लगाना चाहिए कि हम क्रान्ति करते हैं या यह कि हम "उन्मूलनकारी कार्यवाहियां" करते हैं, जैसा कि वे हर वक्त कहते रहते हैं। यदि वे युद्ध से बाज आ जाएं, तो उनका अस्तित्व इस धरती पर और कुछ समय के लिए बना रह सकेगा। किन्तु जितनी जल्दी वे युद्ध छेड़ेंगे, उतनी ही जल्दी उन्हें धरती से मिटा दिया जाएगा। तब जनता का संयुक्त राष्ट्र संघ स्थापित किया जाएगा, जो सम्भवतः शांघाई में या योरप के किसी स्थान में होगा अथवा यह भी सम्भव है कि उसे फिर से न्यूयार्क में ही कायम किया जाए, बशर्ते कि अमरीकी जंगबाजों का सफाया किया जा चुका हो।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय सम्मेलन में भाषण

मार्च 1955

उद्घाटन भाषण

21 मार्च 1955

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय सम्मेलन के डेलिगेट साथियो,

हमारे वर्तमान राष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यसूची में तीन मुद्दे शामिल किए गए हैं: (1) राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास की पहली पंचवर्षीय योजना तथा इस योजना के बारे में रिपोर्ट; (2) काओ काङ और राओ शू-श के पार्टी-विरोधी गठजोड़ के बारे में रिपोर्ट; (3) केन्द्रीय कंट्रोल कमीशन की स्थापना।

संक्रमण काल के बारे में लेनिन की शिक्षाओं को आधार बनाते हुए, केन्द्रीय कमेटी ने चीन लोक गणराज्य की स्थापना के बाद प्राप्त किए गए अनुभवों का सारांश निकाला तथा 1952 में एक ऐसे समय जबकि चीन की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की पुनर्स्थापना की मंजिल खत्म होने वाली थी, संक्रमण काल के लिए पार्टी की आम कार्यदिशा प्रस्तुत की। इस आम कार्यदिशा का मतलब है मोटे तौर पर तीन पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में देश के समाजवादी औद्योगीकरण और साथ ही कृषि, दस्तकारी और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर के काम को कदम-ब-कदम पूरा करना तथा इस प्रकार चीन में एक समाजवादी समाज के निर्माण का लक्ष्य प्राप्त करना। व्यवहार से यह साबित हो गया है कि पार्टी की आम कार्यदिशा सही है तथा उसे कार्यान्वित करने के लिए अपनाई गई सभी महत्त्वपूर्ण नीतियां व उपाय सही हैं। हमारे काम में महान उपलब्धियां प्राप्त की गई हैं, जिनका श्रेय पार्टी के सभी साथियों और समूचे देश की जनता के प्रयत्नों को जाता है। लेकिन खामियां और गलतियां भी देखने में आई हैं। यह असम्भव है कि हमारे द्वारा निकाले गए अनेक उपाय हर दृष्टि से बिलकुल उपयुक्त ही हों, तथा उन्हें कार्यान्वित करने की प्रक्रिया के दौरान नए अनुभवों की रोशनी में उनकी अनुपूर्ति करते रहना और उनमें संशोधन करते रहना जरूरी है।

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास की पहली पंचवर्षीय योजना पार्टी की आम कार्यदिशा को साकार रूप देने की दिशा में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कदम है। वर्तमान राष्ट्रीय सम्मेलन को चाहिए कि वह इस योजना के मसौदे पर हमारे व्यावहारिक अनुभव की रोशनी में बड़ी संजीदगी के साथ विचार-विमर्श करे, ताकि उसे विषय-वस्तु की दृष्टि से अपेक्षाकृत युक्तिसंगत और इसलिए अमल में उतारने लायक बनाया जा सके।

हमारे जैसे विशाल देश में, जहां की परिस्थिति जटिल है और जहां की अर्थव्यवस्था पहले बहुत पिछड़ी हुई थी, एक समाजवादी समाज का निर्माण करना कोई आसान काम नहीं है। हो सकता है कि हम तीन पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में एक समाजवादी समाज का निर्माण कर लें, लेकिन एक शक्तिशाली व समुन्नत औद्योगिकृत समाजवादी देश का निर्माण करने के लिए अनेक दशाब्दियों तक, मिसाल के लिए पचास वर्ष तक यानी इस शताब्दी के उत्तरार्ध के समूचे काल तक, कठोर परिश्रम करने की जरूरत है। हमारे कार्य की मांग है कि हम जनता के बीच के सम्बन्धों को, खास तौर पर मजदूर वर्ग और किसानों के बीच के सम्बन्धों को अच्छी तरह निभाएं; उसकी मांग है कि हम अपने देश की विभिन्न राष्ट्रीयताओं के बीच के सम्बन्धों को अच्छी तरह निभाएं। साथ ही उसकी यह भी मांग है कि हम सोवियत संघ के साथ, जो एक महान व समुन्नत समाजवादी देश है, तथा जनता की लोकशाही वाले देशों के साथ घनिष्ठ सहयोग बढ़ाने का काम लगातार अच्छी तरह करते रहें तथा पूंजीवादी दुनिया के सभी शान्तिप्रिय देशों व जनगण के साथ अपना सहयोग बढ़ाते रहें।

हम अक्सर कहते हैं कि अपने काम में सफलताएं प्राप्त करने पर हमारे अन्दर घमण्ड नहीं पैदा होना चाहिए तथा हम सब साथियों को विनम्र बने रहना चाहिए और समुन्नत देशों से, जन-समुदाय से और एक दूसरे से सीखना चाहिए, ताकि हमसे अपेक्षाकृत कम गलतियां हों। मैं समझता हूं कि वर्तमान पार्टी सम्मेलन में इन सब बातों को फिर एक बार दोहराने की जरूरत है। काओ काङ और राओ शू-श के पार्टी-विरोधी मामले से यह स्पष्ट हो जाता है कि घमण्ड व खुशफहमी हमारी पार्टी में निश्चित रूप से मौजूद हैं और कुछ साथियों के बीच तो वे निस्सन्देह एक गम्भीर सीमा तक मौजूद हैं। इन पर काबू पाने में असफल होना समाजवादी समाज के निर्माण का हमारा महान कार्य पूरा करने में बाधक होगा।

जैसा कि आप सब साथी जानते हैं, काओ काङ और राओ शू-श के पार्टी-विरोधी गठजोड़ का उदय कोई आकस्मिक घटना नहीं बल्कि मौजूदा मंजिल में हमारे देश में चल रहे तीव्र वर्ग-संघर्ष की ही तीक्ष्ण अभिव्यक्ति है। इस पार्टी-विरोधी गठजोड़ का मुजरिमाना मकसद था हमारी पार्टी में दरार पैदा कर देना तथा षड्यंत्रकारी उपायों से पार्टी व राज्य की सर्वोच्च सत्ता को हथिया लेना और इस प्रकार फिर एक बार प्रतिक्रान्तिकारी शासन की स्थापना करने के लिए रास्ता खोल देना। केन्द्रीय कमेटी के एकीकृत नेतृत्व में, हमारी समूची पार्टी ने इस पार्टी-विरोधी गठजोड़ को चकनाचूर कर दिया है, जिसके परिणामस्वरूप वह पहले से ज्यादा एकताबद्ध और सुदृढ़ बन गई है। यह समाजवाद के कार्य के लिए हमारे संघर्ष की एक महत्त्वपूर्ण विजय है।

काओ काङ और राओ शू-श का मामला हमारी पार्टी के लिए एक महत्त्वपूर्ण सबक है तथा सभी सदस्यों को चाहिए कि वे इसे एक चेतावनी समझें और पार्टी के अन्दर ऐसी घटनाएं फिर कभी हरगिज न होने दें। काओ काङ और राओ शू-श ने पार्टी के भीतर साजिशें रचीं, गुप्त कार्यवाहियां कीं तथा प्रच्छन्न रूप से कामरेडों के बीच फूट डालने की कोशिश की, लेकिन प्रकट रूप से उन्होंने अपनी गतिविधियों को छिपाने के लिए मुखौटा पहन लिया। ये सब ठीक वैसी ही नीचतापूर्ण गतिविधियां थीं, जिनमें जमींदार वर्ग और पूंजीपति वर्ग अतीत काल में आम तौर पर लगा रहता था। 'कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणापत्र' में मार्क्स और एंगेल्स

ने कहा है, ''कम्युनिस्ट अपने विचारों व उद्देश्यों को छिपाना एक घृणित बात समझते हैं।'' एक कम्युनिस्ट होने के नाते, इससे भी बढ़कर एक वरिष्ठ पार्टी कार्यकर्ता होने के नाते, हम सबके लिए यह जरूरी है कि हम राजनीतिक दृष्टि से बिना दुराव छिपाव के आचरण करें, तथा अपने राजनीतिक विचारों को खुले तौर पर प्रकट करने और हर महत्वपूर्ण राजनीतिक मुद्दे के पक्ष या विपक्ष में अपनी राय प्रकट करने के लिए हमेशा तैयार रहें। यह जरूरी है कि हम काओ काङ और राओ शू-श की मिसाल पर हरगिज न चलें तथा साजिशें हरगिज न रचें।

एक समाजवादी समाज का निर्माण करने के उद्देश्य से केन्द्रीय कमेटी यह आवश्यक समझती है कि इस समय पुराने अनुशासन-निरीक्षण कमीशन की जगह पार्टी के संविधान के अनुरूप एक केन्द्रीय कंट्रोल कमीशन की स्थापना की जाए। इसका मकसद है तीव्र वर्ग-संघर्ष के नए दौर में पार्टी-अनुशासन को मजबूत बनाना, कानून व अनुशासन के उल्लंघन की सभी प्रकार की कार्यवाहियों के खिलाफ संघर्ष को तेज करना तथा खास तौर पर काओ-राओ के पार्टी-विरोधी गठजोड़ जैसी घटनाओं की, जो पार्टी के हितों को गम्भीर रूप से हानि पहुंचाती हैं, पुनरावृत्ति से बचना।

विगत काल में प्राप्त किए गए विभिन्न सबकों को देखते हुए तथा इस बात को देखते हुए कि व्यक्तिगत बुद्धि को केवल सामूहिक बुद्धि के साथ मिलाकर ही बेहतर ढंग से उपयोग में लाया जा सकता है और इसके परिणामस्वरूप हमारे काम में गलतियां कम होती हैं, केन्द्रीय कमेटी और सभी स्तरों की पार्टी कमेटियों के लिए यह जरूरी है कि वे सामूहिक नेतृत्व के उसूल पर कायम रहें तथा दो किस्म के भटकावों, व्यक्तिगत तानाशाही और विकेन्द्रीयता, का विरोध करना जारी रखें। हमारे लिए इस बात को समझना जरूरी है कि सामूहिक नेतृत्व और व्यक्तिगत जिम्मेदारी दो ऐसे पहलू हैं जो एक दूसरे के विपरीत नहीं बल्कि एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं, जबकि व्यक्तिगत जिम्मेदारी तथा व्यक्तिगत तानाशाही, जो सामूहिक नेतृत्व के उसूल का उल्लंघन करती है, दो बिलकुल भिन्न वस्तुएं हैं।

वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति हमारे समाजवादी निर्माण के लिए अनुकूल है। समाजवादी खेमा, जिसकी अगुवाई सोवियत संघ करता है, शक्तिशाली है तथा उसकी पातें एकताबद्ध हैं, जबकि साम्राज्यवादी खेमा कमजोर है तथा कभी हल न होने वाले अनेक अन्तरविरोधों व संकटों से ग्रस्त है। फिर भी, हमें यह समझ लेना चाहिए कि हम अब भी साम्राज्यवादी शक्तियों से घिरे हुए हैं तथा हमें हर सम्भावित आपातकालीन स्थिति का मुकाबला करने के लिए तैयार रहना चाहिए। अगर साम्राज्यवादियों ने भविष्य में युद्ध छेड़ा, तो ज्यादा सम्भावना इस बात की है कि वे आकस्मिक आक्रमण करेंगे, जैसा कि उन्होंने दूसरे विश्वयुद्ध में किया था। इसलिए यह जरूरी है कि हम मानसिक और भौतिक रूप से तैयार रहें, ताकि इस प्रकार की आकस्मिक घटना होने पर अपने को बिना तैयारी की स्थिति में न पाएं। यह मामले का एक पहलू है। दूसरा पहलू यह है कि देश के भीतर बची-खुची प्रतिक्रान्तिकारी शक्तियां अब भी बड़ी सक्रिय हैं तथा यह जरूरी है कि हम तथ्यों को आधार बनाकर, योजनाबद्ध रूप से और फर्क करने का तरीका अपनाते हुए उन पर फिर कई बार प्रहार करें, जिससे इन छिपी हुई प्रतिक्रान्तिकारी शक्तियों को और अधिक कमजोर बनाया जा सके तथा हमारे समाजवादी निर्माण की सुरक्षा

की गारण्टी की जा सके। अगर हम इन दोनों पहलुओं के बारे में समुचित कदम उठाएंगे, तो अपने दुश्मनों द्वारा गम्भीर हानि पहुंचाए जाने से बच सकते हैं; अन्यथा हमसे गलतियां होने की सम्भावना है।

साथियो, अब हम एक नए ऐतिहासिक काल से गुजर रहे हैं। 60 करोड़ आबादी वाले एक पूर्वी देश को, समाजवादी क्रान्ति करने में, अपने इतिहास की दिशा को बदलने और अपना कायाकल्प करने में, मोटे तौर पर तीन पंचवर्षीय योजनाओं के काल में अपने बुनियादी औद्योगीकरण तथा कृषि, दस्तकारी और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर का कार्य पूरा करने में तथा कुछ ही दशाब्दियों में दुनिया के सर्वाधिक शक्तिशाली पूंजीवादी देशों के बराबर पहुंच जाने और उनसे भी आगे निकल जाने में – ये सब काम पूरे करने में अनिवार्य रूप से जनवादी क्रान्ति के काल के बराबर या शायद उनसे भी अधिक मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। फिर भी, साथियो, हम कम्युनिस्ट लोग कठिनाइयों से निर्भीकता के साथ जूझने के लिए विख्यात हैं। कार्यनीति की दृष्टि से यह जरूरी है कि हम सभी कठिनाइयों का पूरा-पूरा ब्यौरा नजर में रखें। यह जरूरी है कि हम हर ठोस कठिनाई के प्रति बड़ी संजीदगी का रुख अपनाएं, उससे निपटने के लिए आवश्यक परिस्थितियां तैयार करें और उपायों का अध्ययन करें तथा कठिनाइयों को एक-एक करके और एक एक समूह में दूर कर लें। पिछली कुछ दशाब्दियों के हमारे अनुभव से यह जाहिर हो जाता है कि हम ऐसी हर कठिनाई को दूर करने में कामयाब हुए हैं, जिसका हमें सामना करना पड़ा है। कम्युनिस्टों के सामने हर तरह की कठिनाई को सिर झुकाना पड़ता है, जैसा कि एक कहावत में बताया गया है, ''पहाड़ सिर झुका देते हैं और नदियां रास्ता दे देती हैं''। इससे यह सबक मिलता है कि हम कठिनाइयों को नाचीज समझ सकते हैं। यहां हम रणनीति की बात कर रहे हैं, सम्पूर्ण परिस्थिति की बात कह रहे हैं। कठिनाई चाहे कितनी ही बड़ी क्यों न हो, हम आसानी से उसकी नापजोख कर सकते हैं। कठिनाइयां केवल ऐसी चीजें होती हैं जिन्हें समाज में मौजूद हमारे दुश्मनों और प्रकृति द्वारा हमारे रास्ते में खड़ा किया जाता है। हम जानते हैं कि साम्राज्यवादी, घरेलू प्रतिक्रान्ति, हमारी पार्टी के भीतर मौजूद उनके एजेण्ट, वगैरह-वगैरह, केवल मरणासन्न शक्तियां हैं, जबकि हम स्वयं नवजात शक्तियां हैं और सच्चाई हमारे पक्ष में है। उनके सामने हम सदा अजेय रहते हैं। अपने इतिहास पर दृष्टिपात करते ही यह बात हमारी समझ में आ जाएगी। 1921 में जब हमारी पार्टी की स्थापना की गई तो उस समय वह एक बहुत छोटी पार्टी थी और उसके पास केवल कुछ ही दर्जन सदस्य थे, मगर बाद में उसकी शक्ति बढ़ती गई और वह अपने शक्तिशाली घरेलू शत्रु का तख्ता पलटने में कामयाब हो गई। प्रकृति पर भी एक शत्रु के ही समान विजय प्राप्त की जा सकती है। चाहे प्रकृति हो या समाज, दोनों में ही सभी नवजात शक्तियां स्वभावतः अजेय होती हैं। इसके विपरीत, सभी पुरातन शक्तियों को, चाहे उनकी संख्या कितनी ही अधिक क्यों न हो, अनिवार्य रूप से खत्म कर दिया जाएगा। इसलिए हम उन तमाम कठिनाइयों को जिनका हमें इस दुनिया में सामना करना पड़ता है, चाहे वे कितनी ही बड़ी क्यों न हों, नाचीज समझ सकते हैं और हमें ऐसा समझना भी चाहिए, तथा उन्हें बेहद तिरस्कार की नजर से देखना चाहिए। यही है हमारा आशावाद। यह एक वैज्ञानिक आधार पर खड़ा है। अगर हमने मार्क्सवाद-लेनिनवाद और प्राकृतिक विज्ञान की

जानकारी बढ़ा ली, संक्षेप में, अगर हमने वस्तुगत जगत के नियमों की जानकारी बढ़ा ली तथा मनोगतवादी किस्म की गलतियां कम कीं, तो यह निश्चित है कि हम क्रान्ति और निर्माण के अपने लक्ष्यों को अवश्य प्राप्त कर सकेंगे।

समापन भाषण

31 मार्च 1955

साथियो,

सभी लोगों के भाषण समाप्त हो चुके हैं। अब मैं इन मसलों के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूं : वर्तमान सम्मेलन का मूल्यांकन, पंचवर्षीय योजना, काओ काङ और राओ शु-श का मामला, वर्तमान परिस्थिति, तथा आठवीं कांग्रेस।

1. वर्तमान सम्मेलन का मूल्यांकन

अधिकांश कामरेड इस बात से सहमत हैं कि यह सम्मेलन पूर्ण रूप से सफल रहा है तथा येनान काल के दोष-निवारण के बाद यह एक अन्य दोष-निवारण सम्मेलन है। जनवाद को बढ़ावा दिया गया है तथा आलोचना व आत्म-आलोचना पर अमल किया गया है, जिससे हम एक दूसरे को पहले से ज्यादा अच्छी तरह समझ सके हैं, समान दिशा में पहले से ज्यादा सोच सके हैं तथा एक मुश्तरका समझदारी कायम कर सके हैं। हमारे बीच मुश्तरका समझदारी मौजूद रही है, लेकिन कुछ प्रश्नों के बारे में हमारी रायें अलग-अलग हैं। इस सम्मेलन के जरिए हम अपनी समझदारी में एकरूपता ला सके हैं। इसके आधार पर, यानी विचारधारा, राजनीति और विभिन्न नीतियों के बारे में हमारी मुश्तरका समझदारी के आधार पर हमारी पार्टी और अच्छी तरह एकताबद्ध हो जाएगी। जैसा कि कामरेड चओ ऐन-लाइ ने कहा है, जहां पार्टी की सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस ने तथा उसके पहले समूची पार्टी के अन्दर किए गए विचारधारात्मक व राजनीतिक दोष-निवारण ने हमारी पार्टी की विचारधारात्मक एकता की बुनियाद कायम की है, एक ऐसी एकता की बुनियाद कायम की है जिसके आधार पर हम साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही पूंजीवाद के खिलाफ जनवादी क्रान्ति में विजय प्राप्त कर सके हैं, वहां वर्तमान सम्मेलन हमें समाजवाद की विजय की ओर ले जाएगा।

इस सम्मेलन ने यह साबित कर दिया है कि हमारी पार्टी का स्तर पहले से कहीं ज्यादा ऊंचा हो गया है। हमारी पार्टी ने न सिर्फ दस वर्ष पूर्व हुई सातवीं कांग्रेस से बल्कि 1949 और 1950 में आयोजित सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे और तीसरे पूर्ण अधिवेशनों से अब तक अनेक लम्बे डग बढ़ाए हैं। यह एक अच्छी बात है, यह सम्मेलन हमारी प्रगति का द्योतक है।

हम एक ऐसे काल में, अपने इतिहास के एक ऐसे नए काल में प्रवेश कर चुके हैं जिसमें हम जो कोई भी काम हाथ में लेते हैं, जो कुछ भी सोचते हैं और जिस किसी काम की

गहराइयों में पैठते हैं, वह समाजवादी औद्योगीकरण, समाजवादी रूपान्तर और हमारी राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के आधुनिकीकरण से ही सम्बन्धित होता है, तथा परमाणु शक्ति से सम्बन्धित काम में भी हम यही सब करने जा रहे हैं। जहां तक समूची पार्टी का ताल्लुक है, कुछ साथी अपने काम की गहराइयों में पैठ चुके हैं, जबकि कुछ अन्य लोग अभी अपने काम की गहराइयों में नहीं पैठ पाए, और यह बात इस सम्मेलन में उपस्थित साथियों पर भी लागू होती है। डाक्टरों की ही मिसाल लीजिए। कुछ डाक्टर आपरेशन कर सकते हैं जबकि कुछ अन्य डाक्टर नहीं कर सकते। कुछ डाक्टर रक्त-शिरा में इंजेक्शन लगा सकते हैं, जबकि कुछ अन्य डाक्टर नहीं लगा सकते तथा केवल त्वचा के नीचे ही इंजेक्शन लगा सकते हैं। और ऐसे डाक्टर भी हैं जो त्वचा के नीचे सुई लगाने की हिम्मत नहीं करते तथा उसे केवल सतह पर ही रखते हैं। हालांकि कुछ साथी अपने काम की गहराइयों में नहीं पैठ पाए, लेकिन अधिकांश साथी पैठते जा रहे हैं, तथा ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं है जो अपना हुनर सीख चुके मालूम होते हैं और उसमें अपेक्षाकृत माहिर बनते जा रहे हैं। यह इस सम्मेलन के दौरान जाहिर हो चुका है और यह एक बहुत अच्छी बात है। कारण, इस समय हमारे सामने नई समस्याएं खड़ी हैं, समाजवादी औद्योगीकरण, समाजवादी रूपान्तर, एक नवीन प्रतिरक्षा व्यवस्था तथा अन्य नए कार्यक्षेत्रों से सम्बन्धित समस्याएं खड़ी हैं। हमारा कार्य है अपने को इस नई परिस्थिति के अनुरूप ढाल लेना, अपने काम की गहराइयों में पैठ जाना, तथा माहिर बन जाना। इसलिए यह आवश्यक है कि जो लोग अभी अपने काम की गहराइयों में नहीं पैठ पाए और सिर्फ सतह पर मौजूद हैं उन्हें शिक्षित किया जाए, ताकि वे सब माहिर बन जाएं।

काओ काङ और राओ शु-श के पार्टी-विरोधी गठजोड़ के खिलाफ चलाया गया संघर्ष हमारी पार्टी को बहुत आगे ले जाएगा।

यह जरूरी है कि हम पार्टी के भीतर और बाहर मौजूद 50 लाख बुद्धिजीवियों तथा सभी स्तरों के कार्यकर्ताओं में द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का प्रचार-प्रसार करें, ताकि वे लोग इसे आत्मसात कर लें और आदर्शवाद का विरोध करें; तब कहीं हम सैद्धान्तिक कार्यकर्ताओं की एक शक्तिशाली फौज तैयार कर सकेंगे, जिसकी हमें सख्त जरूरत है। यह भी एक बहुत अच्छी बात होगी।

यह जरूरी है कि हम दसियों लाख लोगों की एक ऐसी शक्तिशाली फौज बनाने की योजना तैयार करें जो मार्क्सवाद के सैद्धान्तिक आधार द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और ऐतिहासिक भौतिकवाद का अध्ययन करें तथा सभी प्रकार के आदर्शवाद और यांत्रिक भौतिकवाद का विरोध करें। इस समय बहुत से कार्यकर्ता सैद्धान्तिक कार्य कर रहे हैं, लेकिन अभी तक सैद्धान्तिक कार्यकर्ताओं की एक फौज भी कायम नहीं हो पाई, एक शक्तिशाली फौज कायम होना तो दूर रहा। ऐसी फौज के बिना हमारी समूची पार्टी का कार्य, हमारे देश के समाजवादी औद्योगीकरण और समाजवादी रूपान्तर, हमारी राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के आधुनिकीकरण तथा परमाणु शक्ति के अनुसन्धान का कार्य आगे नहीं बढ़ सकता अथवा सफल नहीं हो सकता। इसलिए मैं सलाह देना चाहता हूं कि आप सब साथी दर्शनशास्त्र का अध्ययन करें। ऐसे लोग कम नहीं हैं जो दर्शनशास्त्र में दिलचस्पी नहीं लेते और जिन्होंने उसे पढ़ने की आदत नहीं डाली। इस तरह के लोग पुस्तिकाएं या छोटे-छोटे लेख पढ़ने से शुरू कर सकते हैं, और जब

उनके अन्दर दिलचस्पी पैदा हो जाएगी तो सत्तर हजार या अस्सी हजार शब्दों वाली तथा बाद में कई लाख शब्दों वाली पुस्तकें भी पढ़ लेंगे। मार्क्सवाद के अन्तर्गत ज्ञान की अनेक शाखाएं हैं : मार्क्सवादी दर्शनशास्त्र, मार्क्सवादी अर्थशास्त्र और मार्क्सवादी समाजवाद, यानी वर्ग-संघर्ष का सिद्धान्त। लेकिन मार्क्सवादी दर्शनशास्त्र इन सबकी बुनियाद है। अगर उसे आत्मसात न किया गया तो हमारी कोई समान भाषण अथवा समान पद्धति नहीं बन पाएगी तथा हम लोग मुद्दों को स्पष्ट किए बिना तर्क-वितर्क करते रहेंगे। जहां एक बार द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद को आत्मसात कर लिया गया, तो बहुत सी परेशानियां दूर हो जाएंगी और बहुत सी गलतियों से बचा जा सकेगा।

2. पहली पंचवर्षीय योजना के बारे में

साथियों का खयाल है कि पंचवर्षीय योजना पर विचार-विमर्श के दौरान ज्यादातर भाषण अच्छे हुए, तथा उन लोगों को इस बात का सन्तोष है। कुछ भाषण बेहद अच्छे थे, क्योंकि वक्ताओं ने अपने विषय की सांगोपांग व्याख्या की तथा ऐसा लगता था मानो कोई माहिर बोल रहा हो। लेकिन केन्द्रीय विभागों की तरफ से दिए गए कुछ भाषण विषय-वस्तु की दृष्टि से अपेक्षाकृत निम्न कोटि के थे तथा उनमें विश्लेषण और आलोचना की दृष्टि से कुछ कमी रह गई थी। यही बात विभिन्न स्थानों से आए साथियों के कुछ भाषणों पर भी लागू होती है। इसके अलावा एक और बात भी है। कुछ भाषणों में फिजूलखर्ची की गम्भीर समस्या और अन्य गलतियों का पर्दाफाश तो किया गया लेकिन उनसे निपटने के उपायों की कोई चर्चा नहीं की गई। कुछ साथी ऐसे भाषणों से असन्तुष्ट हैं। मेरा विचार है उनके इस तरह असन्तुष्ट होने के कारण मौजूद हैं।

मैं उम्मीद करता हूं कि प्रान्तीय, म्युनिसिपल और प्रिफेक्चर पार्टी कमेटियों के सभी सचिव तथा केन्द्रीय विभागों के इन्चार्ज सभी साथी अपनी मार्क्सवादी-लेनिनवादी चेतना का स्तर उन्नत करने के आधार पर राजनीतिक व आर्थिक कार्य में माहिर बनने की भरपूर कोशिश करेंगे। यह जरूरी है कि वे राजनीतिक व विचारधारात्मक काम तथा आर्थिक निर्माण का काम, इन दोनों को अच्छी तरह करें। जहां तक आर्थिक निर्माण का ताल्लुक है, यह जरूरी है कि हम उसे सच्चे मायने में करना सीख लें।

स्थानीय प्राधिकरणों ने इस सम्मेलन में जिन अनेक समस्याओं को केन्द्रीय प्राधिकरणों के समक्ष हल करने के लिए प्रस्तुत किया है, उनमें से ऐसी समस्याओं को हल करने की कोशिश की जानी चाहिए जिनके बारे में केन्द्रीय कमेटी मार्गदर्शक उसूल निर्धारित कर चुकी है। बाकी समस्याओं के बारे में सम्मेलन के सचिवालय को चाहिए कि वह इन समस्याओं को उठाने वाले साथियों के साथ मिलकर उनके हल खोजे तथा केन्द्रीय कमेटी के निर्णय के लिए उसके समक्ष रिपोर्ट पेश करे।

इसके अलावा बहुत से मामले ऐसे भी हैं जिनसे निपटते समय केन्द्रीय विभाग स्थानीय प्राधिकरणों से सहयोग लेना चाहेंगे। स्थानीय पार्टी कमेटियों से अनुरोध किया जाता है कि वे विभिन्न स्थानों में केन्द्रीय विभागों के कारोबारों की, खास तौर पर राजनीतिक व विचारधारात्मक

कार्य की दृष्टि से, देख-रेख व सहायता करें। स्थानीय पार्टी कमेटियों का यह कर्तव्य है कि वे इन कारोबारों को अपने कार्य पूरा करने में मदद दें। इसलिए न सिर्फ स्थानीय प्राधिकरण केन्द्रीय प्राधिकरणों से मांग करते हैं बल्कि केन्द्रीय प्राधिकरण भी स्थानीय प्राधिकरणों से मांग करते हैं। पहली पंचवर्षीय योजना को सफलता के साथ केवल तभी कार्यान्वित किया जा सकेगा जब केन्द्रीय विभागों और स्थानीय पार्टी कमेटियों द्वारा एक-दिल एक जान होकर भरपूर प्रयास किए जाएगा तथा समुचित श्रम-विभाजन के आधार पर एक दूसरे के सहयोग से काम किया जाएगा।

3. काओ काङ और राओ शू-श के पार्टी-विरोधी गठजोड़ के बारे में

पहली बात। कुछ लोग पूछते हैं, "क्या ऐसे गठजोड़ का अस्तित्व था भी या नहीं ? क्या वहां सम्भवतः दो स्वतंत्र राज्यों अथवा दो अलग अलग दुकानों का ही अस्तित्व था और गठजोड़ का अस्तित्व नहीं था ?" कुछ साथी कहते हैं कि उन्हें ऐसा कोई दस्तावेज नहीं दिखाई दिया, और अगर काओ और राओ के बीच कोई गठजोड़ होता तो किसी किस्म के समझौते का होना भी जरूरी था, तथा इस समझौते का लिखित रूप में होना आवश्यक था। यह निश्चित है कि कहीं कोई लिखित समझौता नहीं है, वह कहीं नजर नहीं आता। हम कहते हैं कि काओ काङ और राओ शू-श के बीच गठजोड़ अवश्य था। हमें यह कैसे मालूम हुआ ? पहले, हमें यह तब मालूम हुआ जब वित्तीय व आर्थिक कार्य विषयक सम्मेलन में काओ काङ और राओ शू-श ने मिलीभगत से काम किया। दूसरे, हमें यह तब मालूम हुआ जब राओ शू-श ने संगठनात्मक कार्य विषयक सम्मेलन के दौरान पार्टी-विरोधी गतिविधियों में चाङ श्यू-शान के साथ सहयोग किया। तीसरे, हमें यह राओ शू-श के खुद अपने ही शब्दों से मालूम हुआ। उसने कहा, "अब से च्वो फङ केन्द्रीय कमेटी के संगठन विभाग की धुरी के रूप में काम करेगा।" राओ शू-श संगठन विभाग का निदेशक था, और काओ काङ का विश्वासपात्र च्वो फङ उसकी धुरी बनने जा रहा था। कितनी बढ़िया बात थी ! कितनी घनिष्ठ एकता थी ! चौथे, हमें यह तब मालूम हुआ जब काओ काङ और राओ शू-श ने आन च-वन द्वारा गैर-कानूनी तौर पर तैयार की गई राजनीतिक ब्यूरो के सदस्यों की प्रस्तावित सूची का दूर-दूर तक प्रचार किया। इसके लिए आन च-वन को अनुशासनात्मक चेतावनी दी गई। काओ काङ, राओ शू-श और अन्य लोगों ने इस सूची को उन तमाम लोगों में प्रचारित किया जो संगठनात्मक कार्य विषयक सम्मेलन में भाग ले रहे थे, यहां तक कि उसे दक्षिण के प्रान्तों में भी वितरित करा दिया। उसका इतना ज्यादा प्रचार-प्रसार करने का उनका आशय क्या था ? पांचवें, हमें यह तब मालूम हुआ जब काओ काङ ने दो बार मेरे सामने राओ शू-श को बचाने की इच्छा जाहिर की, जबकि राओ शू-श काओ काङ को अन्त तक बचाता रहा। काओ काङ ने मुझे बताया कि राओ शू-श बड़ी कठिनाई में फंस गया है तथा मुझसे अनुरोध किया कि मैं उसे बचाने में मदद करूं। मैंने पूछा, तुम उसकी वकालत क्यों कर रहे हो ? मैं भी पेकिङ में हूं और राओ शू-श भी। वह अपनी बात तुम्हारे जरिए क्यों कहलवा रहा है और सीधा मेरे पास क्यों नहीं आता ? अगर वह तिब्बत में भी होता तो भी तार भेज सकता था। वह पेकिङ में ही

विराजमान है और उसके पास दो टांगें भी हैं। दूसरा मौका काओ काङ का पर्दाफाश होने के एक दिन पहले का था, जब उसने राओ शू-श को बचाने की एक बार फिर कोशिश की। राओ शू-श अन्त तक काओ काङ को बचाने की कोशिश करता रहा तथा काओ काङ के साथ हुए ''अन्याय'' का निराकरण करना चाहता था। काओ काङ को बेनकाब करने के लिए आयोजित केन्द्रीय कमेटी के राजनीतिक ब्यूरो की विस्तृत मीटिंग में मैंने कहा था कि पहले पेकिङ में दो सदर-मुकाम थे : पहला सदर-मुकाम मेरी अगुवाई में खुली वायु प्रवाहित करता था और खुली आग प्रज्वलित करता था। दूसरा सदर मुकाम, अन्य लोगों की अगुवाई में प्रच्छन्न वायु प्रवाहित करता था और प्रच्छन्न आग प्रज्वलित करता था; वह भूमिगत होकर काम कर रहा था। क्या पार्टी के अन्दर राजनीतिक नेतृत्व का स्रोत एक था या अनेक थे ? उपर्युक्त अनेक तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि उन दोनों के बीच एक पार्टी-विरोधी गठजोड़ अवश्य कायम हो चुका था तथा वे ऐसे दो स्वतंत्र राज्य अथवा ऐसी दो अलग-अलग दुकानें नहीं थीं जिनका एक दूसरे से कोई ताल्लुक न हो।

अब मैं कुछ साथियों द्वारा व्यक्त किए गए सन्देह की चर्चा करता हूं। उन्होंने कहा है, चूंकि कोई लिखित समझौता नहीं है इसलिए सम्भवतः गठजोड़ का अस्तित्व भी नहीं है। इसका मतलब है षड्यंत्रकारियों द्वारा कायम किए गए पार्टी-विरोधी गठजोड़ों को सामान्य किस्म के खुले व औपचारिक राजनीतिक और आर्थिक गठबंधनों के समकक्ष रखना तथा इन दोनों को एक ही प्रकार का समझना। वे लोग साजिश रच रहे थे। क्या एक साजिश के लिए किसी लिखित समझौते की जरूरत होती है ? अगर लिखित समझौते के न होने का तात्पर्य गठजोड़ का न होना है, तो उन दोनों पार्टी-विरोधी गुटों में से प्रत्येक को क्या समझा जाए जिनकी अगुवाई काओ काङ और राओ शू-श अलग-अलग कर रहे थे ? काओ काङ ने चाङ श्यू-शान, चाङ मिङ-युवान, चाओ त-च्युन, मा हुङ और क्वो फङ के साथ, जो उसके गुट में शामिल थे, किसी भी करार पर हस्ताक्षर नहीं किए। जो हो, हमें उनका कोई लिखित समझौता कहीं नजर नहीं आया। तो क्या इस पार्टी-विरोधी गुट के अस्तित्व से भी इनकार कर दिया जाए ? और न ही हमने कोई ऐसा करार देखा है जिस पर राओ शू-श ने श्याङ मिङ और याङ फान के साथ हस्ताक्षर किए हों। इसलिए यह कहना गलत है कि लिखित समझौते के बिना किसी गठजोड़ का अस्तित्व ही नहीं हो सकता।

दूसरी बात। उन साथियों का रुख जो काओ और राओ के असर में आ गए थे तथा उन साथियों का रुख जो उनके असर में नहीं आए थे, कैसा होना चाहिए ? जो लोग उनके असर में आ गए थे, उन पर अलग-अलग दर्जे का प्रभाव पड़ा। कुछ लोगों पर सामान्य दर्जे का प्रभाव पड़ा, काओ और राओ उन्हें सिर्फ अपने पंख की खरोंच लगा सके। इनेगिने साथियों पर ही उनका गहरा प्रभाव पड़ा, उन्होंने काओ और राओ से अनेक विषयों के बारे में बात की, गुप्त कार्यवाहियां कीं तथा उनके विचारों का प्रचार-प्रसार किया। इन दो प्रकार के लोगों में फर्क है। यह प्रभाव चाहे किसी भी दर्जे का क्यों न पड़ा हो, अधिकांश साथियों ने वर्तमान सम्मेलन में अपना रुख स्पष्ट कर दिया है। कुछ लोगों का रुख बहुत अच्छा रहा है और इस बात का सब लोगों ने स्वागत किया है। कुछ अन्य लोगों का रुख अपेक्षाकृत अच्छा रहा है और इस बात का भी अधिकांश लोगों ने स्वागत किया है, हालांकि जो कुछ उन्होंने कहा वह

त्रुटियों से मुक्त नहीं था। कुछ लोग ज्यादा आगे नहीं बढ़ पाए, लेकिन आज आगे आकर पूरक सामग्री के रूप में कुछ बातें कह चुके हैं। कुछ भाषण आम तौर पर अच्छे थे, लेकिन उनके कुछ अंश ठीक नहीं थे। जो हो, उन सभी लोगों ने कम या ज्यादा मात्रा में यह बता दिया है कि वे किस जगह खड़े हैं, और हमें इसका स्वागत करना चाहिए। आखिर उन्होंने अपना रुख स्पष्ट करने के लिए कुछ तो किया है। कुछ ऐसे साथी जो बोलना चाहते थे और समयाभाव के कारण नहीं बोल पाए, अपनी लिखित रिपोर्ट केन्द्रीय कमेटी के पास भेज सकते हैं। जो लोग अभी बोल नहीं पाए उनकी समस्या गम्भीर नहीं है, उन्हें महज खरोंच लगी है तथा उन्होंने काओ और राओ की कुछ करतूतों को जानते हुए भी उनका रहस्योद्घाटन नहीं किया। जहां तक उन लोगों का सम्बन्ध है जो बोल चुके हैं, क्या उनमें कुछ लोग ऐसे नहीं हैं जो अब भी कुछ बातें छिपा रहे हैं ? अच्छा, तो अब यह फैसला कर लिया जाए कि सभी साथी अपने भाषणों व रिपोर्टों को संशोधन के लिए वापस ले सकते हैं, चाहे वे पंचवर्षीय योजना के बारे में हों अथवा काओ और राओ के पार्टी-विरोधी गठजोड़ के बारे में। ये साथी अपने शब्दों पर सावधानी के साथ विचार कर सकते हैं तथा पांच दिन के अन्दर अपने उन तमाम कथनों में परिवर्तन कर सकते हैं जिनमें उन्होंने सारी बातें पर्याप्त रूप से अथवा सही रूप में नहीं कही थीं। केवल इसलिए कि किसी व्यक्ति ने वर्तमान सम्मेलन में कुछ बातें ऐसी कहीं हैं जो पूरी तरह सही नहीं हैं। उसकी त्रुटिया अपने हाथ में रखते हुए भविष्य में उसके लिए मुश्किलें खड़ी करने की कोशिश न करें। आप लोग अपने भाषण में संशोधन कर सकते हैं और आपके संशोधित मजमून को ही अन्तिम समझा जाएगा।

इन साथियों के प्रति हमें ऐसा ही रुख अपनाना चाहिए, यानी हमें न सिर्फ उनका पर्यवेक्षण करना चाहिए बल्कि उन्हें सहायता भी देनी चाहिए, इस आशा से कि वे अपनी गलतियां सुधार लेंगे। दूसरे शब्दों में, हमें उनका पर्यवेक्षण करते समय न सिर्फ यह देखना चाहिए कि क्या वे अपनी गलतियां सुधारने जा रहे हैं अथवा नहीं, बल्कि गलतियां सुधारने में उनकी सहायता भी करनी चाहिए। हर आदमी को सहायता की जरूरत होती है। अपने अनुपम सौन्दर्य के बावजूद कमल के फूल को अपनी रूप-सज्जा के लिए पत्तों की हरियाली की जरूरत होती है। बाड़ लगाने के लिए तीन खम्भों की जरूरत होती है, एक योग्य व्यक्ति को तीन अन्य व्यक्तियों की सहायता की जरूरत होती है। अकेले ही काम करना अच्छी बात नहीं है, दूसरों से सहायता लेना हमेशा जरूरी होता है। उक्त मामले में यह और भी जरूरी है। यह आवश्यक है कि इन लोगों का पर्यवेक्षण किया जाए, यह देखा जाए कि ये अपनी गलतियों को सुधारने जा रहे हैं अथवा नहीं। किन्तु मात्र पर्यवेक्षण करना एक नकारात्मक रुख है, उन्हें सहायता देना भी जरूरी है। जहां तक उन साथियों का सवाल है जो काओ और राओ के असर में आ गए थे, वे लोग चाहे किसी भी हद तक उनके असर में क्यों न आ गए हों, उन्हें सुधरते देखकर हमें खुश होना चाहिए और न सिर्फ उनका पर्यवेक्षण करना चाहिए बल्कि उनकी मदद भी करनी चाहिए। गलतियां करने वाले साथियों के प्रति अपनाया जाने वाला ऐसा रुख एक सकारात्मक रुख है।

जो साथी उनके असर में नहीं आए उनके अन्दर घमण्ड नहीं पैदा होना चाहिए, बल्कि उन्हें इस प्रकार की बीमारी से बचना चाहिए। यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जिन साथियों का

उल्लेख ऊपर किया गया है उनमें कुछ लोग ऐसे थे जो शायद धोखे में आ गए थे और कुछ अन्य लोग ऐसे थे जो गहराई से फंसे हुए थे। लेकिन गलतियां करने के बाद ये साथी सम्भवत: कम या ज्यादा मात्रा में सतर्क हो जाएंगे तथा भविष्य में इस तरह की गलतियों से बचेंगे। कुछ बीमारियां ऐसी होती हैं जिनके होने के बाद आप उनसे प्रतिरक्षित हो जाते हैं। वैक्सीन का टीका लगाकर चेचक की रोकथाम की जा सकती है, लेकिन रोग से मुक्त रहने की निश्चित गारण्टी नहीं की जा सकती। इसके बावजूद आप चेचक से ग्रस्त हो सकते हैं। इसलिए बेहतर यह है कि तीन या पांच वर्ष के बाद फिर एक बार वैक्सीन का टीका लगा लिया जाए – यानी हमारे वर्तमान सम्मेलन जैसा एक और सम्मेलन बुला लिया जाए। दूसरे साथियों को चाहिए कि वे घमण्ड न करें, बल्कि अपने को गलतियों से बचाते रहें। काओ काङ और राओ शू-श आखिर उनके पास क्यों नहीं गए ? उन लोगों की कई श्रेणियां हैं। पहली श्रेणी में वे लोग आते हैं जिन्हें वे अपना दुश्मन समझते हैं और यह स्वाभाविक है कि वे ऐसे लोगों को प्रभावित करने की कोशिश नहीं करते। दूसरी श्रेणी में वे लोग आते हैं जिन्हें वे बिलकुल महत्त्वहीन समझते हैं और जिन्हें मौजूदा मंजिल में प्रभावित करने की कोई जरूरत नहीं समझते, यह सोचकर कि जब "देश पूरी तरह नियंत्रण में आ जाएगा" तो वे लोग अपने आप उनके पक्ष में आ जाएंगे। तीसरी श्रेणी में वे लोग आते हैं जिनके पास जाने का साहस उनमें नहीं है, शायद इसलिए क्योंकि वे लोग बेहतर ढंग से प्रतिरक्षित हो चुके हैं और ऐसे नहीं मालूम होते जिनकी उन्हें तलाश है; हालांकि वे ऐसे लोगों को अपना दुश्मन अथवा महत्त्वहीन नहीं समझते, फिर भी उनके पास जाने का साहस नहीं करते। चौथी श्रेणी में वे लोग आते हैं जिन्हें प्रभावित करने का वे समय नहीं निकाल पाए। इस तरह की महामारी को फैलने में समय लगता है। अगर उनकी कलई खोलने का काम एक वर्ष तक और स्थगित कर दिया जाए तो यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि यह रोग कुछ और लोगों को नहीं लग जाएगा। इसलिए शेखी बघारते हुए ऐसा न कहो, "देखो, क्या तुम्हारा दामन मैला नहीं हो गया ? लेकिन मेरा दामन कितना साफ है !" अगर उनका भण्डाफोड़ कर देने का काम एक वर्ष तक और स्थगित कर दिया जाता, तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि बहुत से लोग उनके असर में आ जाते।

मैं समझता हूं कि ऊपर कही गई बातों पर, काओ और राओ के असर में आने वाले और उनके असर में न आने वाले, इन दोनों ही तरह के साथियों को ध्यान देना चाहिए।

तीसरी बात। उसूल के मामलों में हमें हमेशा सतर्क रहना चाहिए तथा जब किसी साथी की कथनी या करनी पार्टी के उसूलों के खिलाफ हो तो उससे कुछ दूरी ही बनाए रखनी चाहिए। जब कभी उसकी कथनी या करनी पार्टी के उसूलों के खिलाफ हो तथा हमें नागवार गुजर रही हो, तो ऐसे मामलों में और ऐसी परिस्थितियों में हमें उसके साथ एकात्मकता स्थापित नहीं करनी चाहिए। जहां तक उसके ऐसे कथनों व कार्यवाहियों का ताल्लुक है जो पार्टी के उसूलों से मेल खाते हों, मिसाल के लिए पंचवर्षीय योजना, काओ और राओ के पार्टी-विरोधी गठजोड़ से सम्बन्धित प्रस्ताव और रिपोर्ट, हमारी सही नीतियां तथा पार्टी के सही नियम-विनियम, उनके बारे में हमें निस्सन्देह उसका दृढ़ता से समर्थन करना चाहिए तथा उसके साथ एकात्मकता स्थापित कर लेनी चाहिए। जो भी बात पार्टी के उसूलों से मेल न खाती हो उसके बारे में हमें कुछ दूरी ही बनाए रखनी चाहिए; दूसरे शब्दों में, उसके बारे में स्पष्ट विभाजन-रेखा खींच लेनी चाहिए तथा उसे मानने से मौके पर ही साफ इनकार कर देना चाहिए। यह दूरी बनाए रखने में हम केवल इसलिए असफल न रहें क्योंकि कोई हमारा पुराना दोस्त है, पुराना वरिष्ठ अधिकारी है, पुराना अधीनस्थ व्यक्ति है, पुराना सहयोगी है, सहपाठी है अथवा हमारा अपना नगरवासी या ग्रामवासी है। काओ और राओ के वर्तमान पार्टी-विरोधी मामले में तथा पार्टी के भीतर दो कार्यदिशाओं के विगत संघर्षों के दौरान हमें बार-बार यह अनुभव प्राप्त हुआ है : किसी व्यक्ति के साथ अपने पुराने व घनिष्ठ सम्बन्धों के कारण अगर आप उससे कुछ कहने में कठिनाई अनुभव करेंगे तथा उससे कुछ दूरी बनाए रखने, उसकी बात मानने से साफ इनकार कर देने और उसके और अपने बीच एक स्पष्ट विभाजन-रेखा खींचने में असफल रहेंगे, तो आप उसके चंगुल में अधिकाधिक फंसते जाएंगे तथा उसका "प्रेत" आपके इर्दगिर्द मंडराता रहेगा। इसलिए यह जरूरी है कि हम एक सुनिश्चित रुख अपनाएं और उसूल पर कायम रहें।

चौथी बात। कुछ साथी कहते हैं, "हमें काओ और राओ की कुछ काली करतूतों की जानकारी तो थी, लेकिन उनके षड्यंत्र का पता नहीं लग सका"। मेरे विचार से ऐसे लोगों की दो श्रेणियां हैं। पहली श्रेणी में वे लोग आते हैं जिन्होंने काओ और राओ को पार्टी के उसूलों के खिलाफ बहुत सी बातें कहते सुना, यही नहीं, काओ और राओ ने अपनी कुछ पार्टी-विरोधी गतिविधियों के बारे में उनसे सलाह-मशविरा भी किया। ऐसे लोगों को उनके षड्यंत्र का पता लग गया होगा। दूसरी श्रेणी में वे लोग आते हैं जिन्हें उनकी काली करतूतों का सामान्य रूप से पता था, लेकिन जो यह नहीं समझ पाए कि वे षड्यंत्र कर रहे हैं। ऐसे लोगों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि षड्यंत्र का पता लगाना उनके लिए आसान नहीं था। उनके पार्टी-विरोधी षड्यंत्र का पता केन्द्रीय कमेटी भी 1953 में ही लगा पाई। वित्तीय व आर्थिक कार्य विषयक सम्मेलन और संगठनात्मक कार्य विषयक सम्मेलन में हुई घटनाओं के जरिए तथा वित्तीय व आर्थिक कार्य विषयक सम्मेलन से पहले की उनकी सभी करतूतों के जरिए हमने समझ लिया था कि वे लोग सामान्य ढंग से आचरण नहीं कर रहे। वित्तीय व आर्थिक कार्य विषयक सम्मेलन के दौरान उनकी असामान्य गतिविधियों का पता लगा लिया गया तथा हर मौके पर उनकी कड़ी आलोचना की गई। इसलिए उसके बाद से उन्होंने मुकम्मिल तौर पर लुक-छिप कर सरगरमियां करना शुरू कर दिया। हम लोग इस षड्यंत्र का, इन षड्यंत्रकारियों का तथा इस षड्यंत्रकारी गुट का पता 1953 के शरद और जाड़ों में ही लगा पाए। काफी समय तक हम यह नहीं समझ पाए कि काओ काङ और राओ शू-श बुरे किस्म के आदमी हैं। ऐसी बात पहले भी हो चुकी थी। चिङकाङशान पर्वत के जमाने में कुछ गद्दार ऐसे थे जिनके बारे में हम हरगिज सन्देह नहीं करते थे कि वे क्रान्ति के साथ गद्दारी करेंगे। सम्भवत: आप सब लोगों को भी ऐसे अनुभव प्राप्त हो चुके हैं।

यहां हमें एक सबक सीख लेना चाहिए : नकली बाह्य रूप से हरगिज धोखा न खाएं। हमारे कुछ साथी उससे आसानी से धोखा खा जाते हैं। हर चीज में बाह्य रूप और अन्तर्वस्तु के बीच अन्तरविरोध होता है। किसी चीज के बाह्य रूप का विश्लेषण व अध्ययन करके ही उसकी अन्तर्वस्तु की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। यही कारण है कि विज्ञान की आवश्यकता है। अन्यथा, यदि हमें सहजानुभूति मात्र से ही किसी चीज की अन्तर्वस्तु का बोध

हो सकता है तो फिर विज्ञान की आवश्यकता ही क्या है ? अध्ययन की आवश्यकता ही क्या है ? अध्ययन की आवश्यकता ठीक इसलिए है क्योंकि बाह्य रूप और अन्तर्वस्तु के बीच अन्तर्विरोध होता है। वैसे किसी वस्तु के बाह्य रूप और नकली बाह्य रूप के बीच भी अन्तर होता है, क्योंकि नकली बाह्य रूप नकली होता है। इसलिए हमें सबक सीख लेना चाहिए ; जहां तक सम्भव हो सके नकली बाह्य रूप से धोखा न खाएं।

पांचवीं बात। घमण्ड का खतरा। अपने को तीसमारखां न समझो। हमारे कार्य की सफलता बहुत से लोगों पर निर्भर है तथा थोड़े से लोग केवल सीमित भूमिका अदा करते हैं। हालांकि थोड़े से लोग, यानी नेता और कार्यकर्ता, एक ऐसी भूमिका अदा करते हैं जिसे मान्यता दी जानी चाहिए, फिर भी उनकी भूमिका का प्रमुख महत्व नहीं है। प्रमुख महत्व की भूमिका जन-समुदाय ही अदा करता है। कार्यकर्ताओं और जन-समुदाय के बीच सही किस्म के सम्बन्ध ये हैं जिनमें कार्यकर्ताओं की मौजूदगी आवश्यक होते हुए भी वास्तविक कार्य जन-समुदाय द्वारा ही किया जाता है और कार्यकर्ता केवल नेतृत्व करते हैं, जो एक ऐसी भूमिका है जिसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश नहीं किया जाना चाहिए। क्या आपके बिना सारा काम चौपट हो जाएगा ? आपके बिना भी सारा काम चलता रहेगा, जैसा कि इतिहास और जीवन के अनेक तथ्यों से साबित हो चुका है। क्या काओ काङ और राओ शु-श के बिना सारा काम चौपट हो गया है ? दरअसल सारा काम बिलकुल ठीक तरह चल रहा है, क्या ऐसा नहीं है ? क्या डार्विन के बिना, चाङ क्वो-थाओ के बिना और छन तु-श्यु के बिना सारा काम बिलकुल ठीक तरह नहीं चल रहा ? ये सब लोग बुरे व्यक्ति थे। कनफ्यूशियस को मरे सदियां गुजर चुकी हैं और चीन में आज हमारे पास एक कम्युनिस्ट पार्टी है, जो निश्चय ही कनफ्यूशियस से ज्यादा विवेकशील है; इससे यह जाहिर हो जाता है कि हम कनफ्यूशियस के बिना ज्यादा अच्छी तरह काम चला सकते हैं। जहां तक अच्छे व्यक्तियों का सवाल है, वे भी ऐसे नहीं होते जिनके बिना काम न चल सके। क्या उनके बिना पृथ्वी परिक्रमा करना बन्द कर देगी ? पृथ्वी हमेशा की ही तरह लगातार परिक्रमा करती रहेगी। सारा काम पहले की ही तरह चलता रहेगा, ये शायद पहले से भी अच्छी तरह चलता रहेगा।

हमारे यहां दो तरह के लोग हैं। पहली तरह के लोग वे हैं जो अनुभवी हैं, और उन में से बहुत से लोग वरिष्ठता की दृष्टि से ऊंचे स्थान पर हैं, दूसरी तरह के लोग वे हैं जिनमें नया रक्त है, जो नौजवान हैं। इन दोनों तरह के लोगों में किससे ज्यादा आशाएं की जा सकती हैं ? अवश्य ही नए रक्त से, जैसा कि आज कामरेड चओ ऐन-लाइ ने भी कहा। कुछ साथी महज इसलिए घमण्ड में चूर रहते हैं क्योंकि वे पुराने क्रान्तिकारी हैं। यह बिलकुल अनुचित है। अगर किसी के घमण्ड को थोड़ा-बहुत जायज ठहराया जा सकता है तो वह नौजवान लोग ही हैं, जिनके पास घमण्ड करने लायक कोई चीज मौजूद तो है। जहां तक चालीस या पचास वर्ष से ज्यादा उम्र वाले लोगों का ताल्लुक है, वे जितने ज्यादा बुजुर्ग और जितने ज्यादा अनुभवी हों उनमें उतनी ही ज्यादा विनम्रता होनी चाहिए। नौजवानों को खुद महसूस होने दो कि ये लोग सचमुच अनुभवी हैं : "ये वयोवृद्ध लोग अवश्य कुछ अनुभव रखते हैं। हमें उनको तुच्छ कम नहीं समझना चाहिए। देखो तो, ये लोग कितने विनम्र हैं।" अगर चालीस या पचास वर्ष से ज्यादा उम्र वाले लोग अपने समृद्ध अनुभव के कारण घमण्ड करने लग जाएं तो फिर

उपहासास्पद होगा। इस पर नौजवान लोग कहेंगे, "आपका सारा अनुभव बेकार है, आप लोग बच्चों की तरह आचरण कर रहे हैं।" अगर छोटे बच्चे कुछ घमण्ड करें तो समझ में आता है। लेकिन जो लोग इतनी उम्र जिता चुके हैं और इतना ज्यादा अनुभव प्राप्त कर चुके हैं उनका घमण्ड करना और शेखी बघारना बिलकुल गैर-जरूरी है। कहावत है, "अच्छी तरह आचरण करो और अपनी दुम को टांगों के बीच दबाकर रखो"। आदमी की दुम नहीं होती, फिर भी दुम को टांगों के बीच दबाकर रखने की बात क्यों कही गई है ? यह बात समझाने के लिए एक कुत्ते की मिसाल ली जा सकती है। कुत्ता कभी तो अपनी दुम ऊपर उठा लेता है और कभी उसे टांगों के बीच दबा लेता है। आम तौर पर वह अपनी दुम टांगों के बीच उस समय दबा लेता है जब उस पर मार पड़ रही हो, और उसे उस समय ऊपर उठा लेता है जब वह अच्छा आचरण कर रहा हो। मैं आशा करता हूं कि हमारे सभी साथी, खास तौर पर वयोवृद्ध साथी, अपनी दुम ऊपर उठाने के बजाय उसे टांगों के बीच दबाए रखेंगे, घमण्ड व उतावलेपन से बचे रहेंगे, हमेशा विनम्र बने रहेंगे तथा आगे बढ़ते जाएंगे।

छठी बात। "वामपंथी" और दक्षिणपंथी भटकावों से बचो। कुछ लोग कहते हैं, "दक्षिणपंथी होने के मुकाबले 'वामपंथी' होना बेहतर है"; यह एक ऐसा कथन है जिसे बहुत से साथी दोहराते रहते हैं। दरअसल ऐसे लोगों की संख्या बहुत है जो मन ही मन तो कहते हैं कि "'वामपंथी' होने के मुकाबले दक्षिणपंथी होना बेहतर है," लेकिन खुलेआम नहीं कहते। सिर्फ वही लोग खुलेआम ऐसा कहते हैं जो ईमानदार हैं। इसलिए उक्त दो तरह की राय मौजूद है। "वामपंथी" होने का क्या अर्थ है ? अपने जमाने से आगे बढ़ जाना, वर्तमान परिस्थिति-विकास से आगे बढ़ जाना, कार्रवाई के दौरान और उसूल व नीति के मामले में दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने की प्रवृत्ति से काम लेना तथा संघर्षों अथवा विवादों के दौरान अन्धाधुन्ध प्रहार करना – ये सब "वामपंथी" भटकाव हैं और ठीक नहीं हैं। अपने समय से पीछे रह जाना, वर्तमान परिस्थिति-विकास के साथ कदम मिलाने में असफल रहना और जुझारूपन का अभाव होना – ये सब दक्षिणपंथी भटकाव हैं और ये भी ठीक नहीं हैं। हमारी पार्टी में न सिर्फ ऐसे लोग हैं जो "वामपंथी" होना पसन्द करते हैं बल्कि ऐसे लोग भी कम नहीं हैं जो दक्षिणपंथी होना अथवा मध्यपंथियों के दाएं बाजू में होना पसन्द करते हैं। ये दोनों ही ठीक नहीं हैं। यह जरूरी है कि हम इन दोनों ही मोर्चों पर संघर्ष चलाएं, "वामपंथी" और दक्षिणपंथी दोनों ही भटकावों का विरोध करें।

काओ काङ और राओ शु-श के पार्टी-विरोधी गठजोड़ के बारे में मुझे केवल इतना ही कहना है।

4. वर्तमान परिस्थिति के बारे में

अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति, घरेलू परिस्थिति और पार्टी के भीतर की परिस्थिति कैसी है ? कौन सा पक्ष प्रधान है – उजला पक्ष या अंधियारा पक्ष ? यह बता देना जरूरी है कि चाहे अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति हो या घरेलू अथवा पार्टी के भीतर की परिस्थिति, उजला पक्ष अंधियारे पक्ष पर हावी है। यही बात हमारे सम्मेलन पर भी लागू होती है। ऐसा न सोचिए कि हर चीज

केवल इसलिए अँधियारी है क्योंकि बहुत से लोगों ने आत्म-आलोचना की है। इन साथियों ने अपनी खामियों और गलतियों पर ही जोर दिया है तथा अपनी सकारात्मक बातों की चर्चा नहीं की है, और ऐसी बातों को छोड़ दिया है जैसे वे क्रान्ति में कब शामिल हुए, उन्होंने कौन-कौन सी लड़ाइयों में विजय प्राप्त कीं तथा अपने काम में कौन-कौन सी सफलताएं प्राप्त कीं। अगर आप केवल उनकी आत्म-आलोचना को ही कसौटी बनाएंगे तो आपको अँधियारे के सिवाय और कुछ नजर नहीं आएगा। वास्तव में यह स्थिति का केवल एक पहलू है और बहुत से साथियों के मामले में यह केवल गौण पहलू है। काओ काङ और राओ शू-श तथा उनके पांच लेफ्टिनेंटों – चाङ श्यू-शान, चाङ मिङ-य्वान, चाओ त-च्युन, मा हुङ और क्वो फङ – का मामला भिन्न है। उजला पक्ष प्रबल है – यह मूल्यांकन उन पर लागू नहीं होता। काओ काङ के मामले में आखिर उजला पक्ष प्रबल कहां है ? वहां केवल अँधियारा ही अँधियारा है, निविड़ अंधकार, जहां न तो चांद की रोशनी पैठ सकती है और न सूरज की। हमारे साथियों के बारे में स्थिति बिलकुल भिन्न है। उन पर कुछ काले धब्बे अवश्य लग गए हैं, जिन्हें बार-बार साबुन से धो कर दूर किया जा सकता है।

हम यह आवाहन क्यों करते हैं कि हमें घटनाक्रम में आकस्मिक परिवर्तन का मुकाबला करने, प्रतिक्रान्तिकारी पुनर्स्थापना का मुकाबला करने तथा काओ-राओ जैसी घटना की पुनरावृत्ति का मुकाबला करने की अपनी तैयारी बनाए रखनी चाहिए ? इसका कारण यह है कि अगर हम बुरी से बुरी स्थिति के लिए तैयार रहेंगे तो हमें नुकसान थोड़ा ही हो जाएगा। यह जरूरी है कि हम जो भी काम करें उसमें बुरी से बुरी स्थिति की सम्भावनाओं का ध्यान में रखें तथा उसके अनुरूप योजनाएं बनाएं। बुरी से बुरी स्थिति केवल यह हो सकती है : साम्राज्यवादी एक नया विश्वयुद्ध छेड़ दें, च्याङ काई-शेक पेकिङ में फिर से गद्दीनशीन हो जाए और काओ-राओ के पार्टी-विरोधी गठजोड़ जैसी वारदातें फिर से दोहराई जाने लगें, यहां तक कि ऐसी घटनाएं केवल एक नहीं बल्कि दस या सौ होने लगें। लेकिन उनकी संख्या चाहे कितनी ही क्यों न हो, यदि हम पहले से ही तैयार रहेंगे तो आशंकित होने का कोई कारण नहीं रह जाएगा। अगर ऐसी घटनाएं दस भी होती हैं तो भी इसका अर्थ केवल पांच जोड़ी घटनाएं ही हुआ और इसके बारे में ज्यादा हाय-तौबा मचाने की जरूरत नहीं, क्योंकि हम पहले से ही उन सबका अनुमान लगा चुके हैं। परमाणु बम और हाइड्रोजन बम भी, जिन्हें दिखाकर साम्राज्यवाद हमें डरा रहा है, उतने डरावने नहीं हैं। दुनिया कुछ ऐसी बनी हुई है कि एक वस्तु पर विजय पाने के लिए दूसरी वस्तु अवश्य मौजूद रहती है। जब किसी एक वस्तु को आक्रमण करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है तो उस पर विजय पाने के लिए दूसरी वस्तु का होना अनिवार्य है। अगर आप लोग "वीरों का देवत्वीकरण" नामक उपन्यास पढ़ें तो आपको मालूम हो जाएगा कि ऐसा कोई "जादुई हथियार" नहीं होता जो अपराजेय हो। इतने सारे "जादुई हथियारों" को दरअसल परास्त किया जा चुका है। हम यह मानते हैं कि जब तक हम जनता पर निर्भर रहेंगे, तब तक दुनिया में कोई भी "जादुई हथियार" ऐसा नहीं होगा जिस पर विजय न पाई जा सके।

5. पार्टी की आठवीं राष्ट्रीय कांग्रेस को सफलतापूर्वक बुलाने के लिए भरपूर प्रयास करो

केन्द्रीय कमेटी ने फैसला किया है कि पार्टी की आठवीं राष्ट्रीय कांग्रेस 1956 के उत्तरार्ध में बुलाई जाय। कार्यसूची में तीन विषय होंगे : (1) केन्द्रीय कमेटी के कार्य की रिपोर्ट; (2) पार्टी संविधान में संशोधन; (3) नई केन्द्रीय कमेटी का चुनाव। कांग्रेस के लिए डेलिगेटों को चुनने और दस्तावेज तैयार करने का काम अगले वर्ष जुलाई से पहले पूरा हो जाना चाहिए। हम आवाहन करते हैं कि एक वर्ष से कुछ अधिक समय में निम्नोक्त सभी कार्यक्षेत्रों में प्रगति करने के लिए लम्बा कदम बढ़ाया जाए : अर्थव्यवस्था, संस्कृति व शिक्षा, फौजी मामले, पार्टी, राजनीति व विचारधारा, जन-संगठन, संयुक्त मोर्चा तथा अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं।

यहां लगे हाथों कुछ शब्द अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं से सम्बन्धित काम के बारे में भी कह दूं। यह जरूरी है कि हम हान-शोविनिज्म का विरोध करें। ऐसा न सोचें कि केवल हान राष्ट्रीयता ही अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को मदद देती रही है, जबकि वास्तव में अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं भी हान राष्ट्रीयता को बहुत सी मदद देती रही हैं। कुछ साथी अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को दी गई मदद की डींग हांकते फिरते हैं, लेकिन यह नहीं समझते कि अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। हमारे देश की 50 से 60 प्रतिशत प्रादेशिक भूमि पर कौन सी जाति बसी हुई है, हान राष्ट्रीयता या अन्य राष्ट्रीयताएं ? उस पर अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं बसी हुई हैं। इन क्षेत्रों में समृद्ध संसाधनों और छिपी हुई सम्पत्ति की भरमार है। अब तक हम अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को बहुत कम मदद दे सके हैं और कुछ स्थानों में बिलकुल मदद नहीं दे सके, जबकि अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं ने हान राष्ट्रीयता को मदद दी है। कुछ अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं हमें सिर्फ तभी मदद दे सकेंगी जब वे पहले हमसे मदद प्राप्त करेंगी। राजनीतिक दृष्टि से अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं ने हान राष्ट्रीयता को भारी मदद दी है; उनका चीनी राष्ट्र के बड़े परिवार में सम्मिलित होना हान राष्ट्रीयता के लिए एक तरह की राजनीतिक मदद है। समूचे देश की जनता अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं और हान राष्ट्रीयता की एकता को देखकर बड़ी खुश है। इस तरह अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं ने राजनीतिक क्षेत्र में, आर्थिक क्षेत्र में और राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के क्षेत्र में, समूचे देश को, समूचे चीनी राष्ट्र को भारी मदद दी है। यह सोचना कि सिर्फ हान राष्ट्रीयता ने ही अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को मदद दी है और अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं ने हान राष्ट्रीयता को मदद नहीं दी, अथवा अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को दी गई थोड़ी सी मदद पर गरूर करते फिरना गलत है।

जब हम यह कहते हैं कि एक वर्ष के अन्दर सभी कार्य क्षेत्रों में प्रगति करने के लिए लम्बा कदम बढ़ाया जाय तो हमारा तात्पर्य यह होता है कि जिन खामियों व गलतियों का पता चल चुका है उन्हें दुरुस्त कर लिया जाय। ऐसा न हो कि इस सम्मेलन में तो आप वायदे कर लें और जब अगले वर्ष आठवीं कांग्रेस बुलाई जाय तो ये खामियां व गलतियां ज्यों की त्यों बनी रहें। जब हम आठवीं कांग्रेस बुलाने के लिए भरपूर प्रयास करने की बात कहते हैं तो हमारा मतलब ठीक यह होता है कि हम अपनी खामियों व गलतियों को दुरुस्त कर लें। मिसाल

केवल इसलिए अँधियारी है क्योंकि बहुत से लोगों ने आत्म-आलोचना की है। इन साथियों ने अपनी खामियों और गलतियों पर ही जोर दिया है तथा अपनी सकारात्मक बातों की चर्चा नहीं की है, और ऐसी बातों को छोड़ दिया है जैसे वे क्रान्ति में कब शामिल हुए, उन्होंने कौन-कौन सी लड़ाइयों में विजय प्राप्त कीं तथा अपने काम में कौन-कौन सी सफलताएं प्राप्त कीं। अगर आप केवल उनकी आत्म-आलोचना को ही कसौटी बनाएंगे तो आपको अँधियारे के सिवाय और कुछ नजर नहीं आएगा। वास्तव में यह स्थिति का केवल एक पहलू है और बहुत से साथियों के मामले में यह केवल गौण पहलू है। काओ काङ और राओ शु-श तथा उनके पांच लेफ्टिनेंटों – चाङ श्यू-शान, चाङ मिङ-य्वान, चाओ त-च्युन, मा हुङ और क्वो फङ – का मामला भिन्न है। उजला पक्ष प्रबल है – यह मूल्यांकन उन पर लागू नहीं होता। काओ काङ के मामले में आखिर उजला पक्ष प्रबल कहां है ? वहां केवल अँधियारा ही अँधियारा है, निविड़ अंधकार, जहां न तो चांद की रोशनी पैठ सकती है और न सूरज की। हमारे साथियों के बारे में स्थिति बिलकुल भिन्न है। उन पर कुछ काले धब्बे अवश्य लग गए हैं, जिन्हें बार-बार साबुन से धो कर दूर किया जा सकता है।

हम यह आवाहन क्यों करते हैं कि हमें घटनाक्रम में आकस्मिक परिवर्तन का मुकाबला करने, प्रतिक्रान्तिकारी पुनर्स्थापना का मुकाबला करने तथा काओ-राओ जैसी घटना की पुनरावृत्ति का मुकाबला करने की अपनी तैयारी बनाए रखनी चाहिए ? इसका कारण यह है कि अगर हम बुरी से बुरी स्थिति के लिए तैयार रहेंगे तो हमें नुकसान थोड़ा ही हो जाएगा। यह जरूरी है कि हम जो भी काम करें उसमें बुरी से बुरी स्थिति की सम्भावनाओं का ध्यान में रखें तथा उसके अनुरूप योजनाएं बनाएं। बुरी से बुरी स्थिति केवल यह हो सकती है : साम्राज्यवादी एक नया विश्वयुद्ध छेड़ दें, च्याङ काई-शेक पेकिङ में फिर से गद्दीनशीन हो जाए और काओ-राओ के पार्टी-विरोधी गठजोड़ जैसी वारदातें फिर से दोहराई जाने लगें, यहां तक कि ऐसी घटनाएं केवल एक नहीं बल्कि दस या सौ होने लगें। लेकिन उनकी संख्या चाहे कितनी ही क्यों न हो, यदि हम पहले से ही तैयार रहेंगे तो आशंकित होने का कोई कारण नहीं रह जाएगा। अगर ऐसी घटनाएं दस भी होती हैं तो भी इसका अर्थ केवल पांच जोड़ी घटनाएं ही हुआ और इसके बारे में ज्यादा हाय-तौबा मचाने की जरूरत नहीं, क्योंकि हम पहले से ही उन सबका अनुमान लगा चुके हैं। परमाणु बम और हाइड्रोजन बम भी, जिन्हें दिखाकर साम्राज्यवाद हमें डरा रहा है, उतने डरावने नहीं हैं। दुनिया कुछ ऐसी बनी हुई है कि एक वस्तु पर विजय पाने के लिए दूसरी वस्तु अवश्य मौजूद रहती है। जब किसी एक वस्तु को आक्रमण करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है तो उस पर विजय पाने के लिए दूसरी वस्तु का होना अनिवार्य है। अगर आप लोग "वीरों का देवत्वीकरण" नामक उपन्यास पढ़ें तो आपको मालूम हो जाएगा कि ऐसा कोई "जादुई हथियार" नहीं होता जो अपराजेय हो। इतने सारे "जादुई हथियारों" को दरअसल परास्त किया जा चुका है। हम यह मानते हैं कि जब तक हम जनता पर निर्भर रहेंगे, तब तक दुनिया में कोई भी "जादुई हथियार" ऐसा नहीं होगा जिस पर विजय न पाई जा सके।

5. पार्टी की आठवीं राष्ट्रीय कांग्रेस को सफलतापूर्वक बुलाने के लिए भरपूर प्रयास करो

केन्द्रीय कमेटी ने फैसला किया है कि पार्टी की आठवीं राष्ट्रीय कांग्रेस 1956 के उत्तरार्ध में बुलाई जाय। कार्यसूची में तीन विषय होंगे : (1) केन्द्रीय कमेटी के कार्य की रिपोर्ट; (2) पार्टी संविधान में संशोधन; (3) नई केन्द्रीय कमेटी का चुनाव। कांग्रेस के लिए डेलिगेटों को चुनने और दस्तावेज तैयार करने का काम अगले वर्ष जुलाई से पहले पूरा हो जाना चाहिए। हम आवाहन करते हैं कि एक वर्ष से कुछ अधिक समय में निम्नोक्त सभी कार्यक्षेत्रों में प्रगति करने के लिए लम्बा कदम बढ़ाया जाए : अर्थव्यवस्था, संस्कृति व शिक्षा, फौजी मामले, पार्टी, राजनीति व विचारधारा, जन-संगठन, संयुक्त मोर्चा तथा अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं।

यहां लगे हाथों कुछ शब्द अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं से सम्बन्धित काम के बारे में भी कह दूं। यह जरूरी है कि हम हान-शोविनिज्म का विरोध करें। ऐसा न सोचें कि केवल हान राष्ट्रीयता ही अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को मदद देती रही है, जबकि वास्तव में अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं भी हान राष्ट्रीयता को बहुत सी मदद देती रही हैं। कुछ साथी अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को दी गई मदद की डींग हांकते फिरते हैं, लेकिन यह नहीं समझते कि अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। हमारे देश की 50 से 60 प्रतिशत प्रादेशिक भूमि पर कौन सी जाति बसी हुई है, हान राष्ट्रीयता या अन्य राष्ट्रीयताएं ? उस पर अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं बसी हुई हैं। इन क्षेत्रों में समृद्ध संसाधनों और छिपी हुई सम्पत्ति की भरमार है। अब तक हम अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को बहुत कम मदद दे सके हैं और कुछ स्थानों में बिलकुल मदद नहीं दे सके, जबकि अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं ने हान राष्ट्रीयता को मदद दी है। कुछ अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं हमें सिर्फ तभी मदद दे सकेंगी जब वे पहले हमसे मदद प्राप्त करेंगी। राजनीतिक दृष्टि से अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं ने हान राष्ट्रीयता को भारी मदद दी है; उनका चीनी राष्ट्र के बड़े परिवार में सम्मिलित होना हान राष्ट्रीयता के लिए एक तरह की राजनीतिक मदद है। समूचे देश की जनता अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं और हान राष्ट्रीयता की एकता को देखकर बड़ी खुश है। इस तरह अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं ने राजनीतिक क्षेत्र में, आर्थिक क्षेत्र में और राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के क्षेत्र में, समूचे देश को, समूचे चीनी राष्ट्र को भारी मदद दी है। यह सोचना कि सिर्फ हान राष्ट्रीयता ने ही अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को मदद दी है और अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं ने हान राष्ट्रीयता को मदद नहीं दी, अथवा अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को दी गई थोड़ी सी मदद पर गरूर करते फिरना गलत है।

जब हम यह कहते हैं कि एक वर्ष के अन्दर सभी कार्य क्षेत्रों में प्रगति करने के लिए लम्बा कदम बढ़ाया जाय तो हमारा तात्पर्य यह होता है कि जिन खामियों व गलतियों का पता चल चुका है उन्हें दुरुस्त कर लिया जाय। ऐसा न हो कि इस सम्मेलन में तो आप वायदे कर लें और जब अगले वर्ष आठवीं कांग्रेस बुलाई जाय तो ये खामियां व गलतियां ज्यों की त्यों बनी रहें। जब हम आठवीं कांग्रेस बुलाने के लिए भरपूर प्रयास करने की बात कहते हैं तो हमारा मतलब ठीक यह होता है कि हम अपनी खामियों व गलतियों को दुरुस्त कर लें। मिसाल

''लोकमत की एकरूपता'' का खण्डन

24 मई 1955

हू फङ ने जिसे ''लोकमत की एकरूपता'' कहा है उससे उनका तात्पर्य वास्तव में यह है कि प्रतिक्रान्तिकारियों को अपने प्रतिक्रान्तिकारी विचार प्रकट करने की इजाजत नहीं है। निस्सन्देह यह सच है कि हमारी व्यवस्था द्वारा किसी भी प्रतिक्रान्तिकारी को बोलने की आजादी नहीं दी जाती तथा यह आजादी केवल जनता को ही दी जाती है। जनता के बीच हम लोकमत की अनेकता की इजाजत देते हैं, अर्थात आलोचना करने, अलग-अलग विचार व्यक्त करने तथा ईश्वरवाद या निरीश्वरवाद (यानी भौतिकवाद) का प्रचार-प्रसार करने की आजादी है। किसी भी समाज में और किसी भी काल में हमेशा दो प्रकार के व्यक्ति और दो प्रकार के विचार होते हैं, आगे बढ़े हुए और पिछड़े हुए। ये दोनों ही दो विपरीत तत्वों के रूप में मौजूद रहते हैं और एक दूसरे से संघर्ष करते रहते हैं, तथा आगे बढ़े हुए विचार अनिवार्य रूप से पिछड़े हुए विचारों पर हावी हो जाते हैं; ''लोकमत की एकरूपता'' न तो सम्भव है और न उचित हो। समाज केवल तभी प्रगति कर सकता है जब आगे बढ़ी हुई वस्तुओं का पूर्ण विकास किया जाए तथा वे पिछड़ी हुई वस्तुओं पर हावी हो जाएं। लेकिन एक ऐसे काल में जबकि वर्गों और वर्ग-संघर्ष का अस्तित्व देश-विदेश में अब भी मौजूद है, मजदूर वर्ग और जन-समुदाय के लिए, जिन्होंने राजसत्ता को अपने हाथ में ले लिया है, यह जरूरी है कि वे सभी प्रतिक्रान्तिकारी वर्गों, ग्रुपों और व्यक्तियों द्वारा क्रान्ति का प्रतिरोध करने के लिए की जाने वाली कार्यवाहियों का दमन करें, पूर्वसत्ता की पुनर्स्थापना के लिए उनके द्वारा की जाने वाली कार्यवाहियों को नाकाम कर दें तथा उन्हें बोलने की आजादी को प्रतिक्रान्तिकारी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस्तेमाल करने की इजाजत न दें। इस प्रकार हू फङ और उनके जैसे प्रतिक्रान्तिकारियों को ''लोकमत की एकरूपता'' असुविधाजनक प्रतीत होने लगती है। जो चीज उनके लिए असुविधाजनक है ठीक वही चीज हम अपने लिए चाहते हैं और ठीक वही चीज हमारे लिए सुविधाजनक है। हमारे देश में लोकमत की एकरूपता है भी और नहीं भी। जनता के बीच, आगे बढ़े हुए और पिछड़े हुए दोनों तरह के लोगों को इस बात की आजादी है कि वे एक दूसरे के साथ प्रतिद्वन्द्विता करने के लिए हमारे समाचारपत्रों, पत्रिकाओं, गोष्ठियों इत्यादि का इस्तेमाल करें, ताकि आगे बढ़े हुए लोग पिछड़े हुए लोगों को समझाने-बुझाने के जनवादी तरीके से शिक्षित कर सकें तथा पिछड़े हुए विचारों और पिछड़ी हुई व्यवस्थाओं पर हावी होने में कामयाबी हासिल की जा सके। जब एक अन्तरविरोध हल हो जाता है तो नए अन्तरविरोध पैदा हो जाते हैं, और प्रतिद्वन्द्विता फिर होने लगती है। इस प्रकार समाज लगातार

प्रतिक्रान्तिकारी हू फङ गुट की आलोचना करने के लिए लिखा गया एक लेख।

प्रगति करता जाता है। अन्तरविरोधों के मौजूद रहने का मतलब है एकरूपता का न होना। अन्तरविरोधों के हल होने के परिणामस्वरूप अस्थायी रूप में एकरूपता कायम हो जाती है, लेकिन शीघ्र ही नए अन्तर्विरोध पैदा हो जाते हैं, जिसका मतलब होता है एकरूपता का न होना, तथा उन अन्तर्विरोधों को फिर एक बार हल करना जरूरी हो जाता है। जहां तक जनता और प्रतिक्रान्तिकारियों के बीच के अन्तरविरोधों का सवाल है, यह मजदूर वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में प्रतिक्रान्तिकारियों पर जनता का अधिनायकत्व लागू करने से सम्बन्धित मामला है। यहां अधिनायकत्व अथवा एकतंत्रवाद का तरीका इस्तेमाल किया जाता है, न कि जनवादी तरीका; दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि प्रतिक्रान्तिकारियों को अपना आचरण ठीक कर लेना चाहिए, तथा उन्हें अपनी कथनी या करनी में बेलगाम हो जाने की इजाजत नहीं है। इस सिलसिले में न सिर्फ लोकमत में बल्कि कानून में भी एकरूपता मौजूद है। उस सवाल के बारे में हू फङ और उनके जैसे प्रतिक्रान्तिकारियों की दलीलें देखने में युक्तिसंगत मालूम हो सकती हैं, तथा ऐसी प्रतिक्रान्तिकारी बातों को सुनकर कुछ उलझे दिमाग वाले लोग अपनी दलीलों को कुछ कमजोर समझने लगते हैं। जरा सोचिए तो, ''लोकमत की एकरूपता'' या ''लोकमत का अभाव'' अथवा ''आजादी का दमन'' – क्या ये सब बातें सुनने में कड़वी नहीं जान पड़तीं ? ये लोग दो अलग-अलग किस्म की चीजों के बीच, जनता की पांतों के भीतर की चीजों और जनता की पांतों के बाहर की चीजों के बीच स्पष्ट रूप से फर्क नहीं कर पाते। जनता की पांतों के बीच आजादी का दमन करना, जनता द्वारा पार्टी व सरकार की खामियों व गलतियों के बारे में की जाने वाली आलोचना का दमन करना अथवा विद्याध्ययन के क्षेत्र में खुले वाद-विवाद का दमन करना एक जुर्म है। हमारी व्यवस्था ऐसी ही है। लेकिन पूंजीवादी देशों में यह सब जायज है। जनता की पांतों के बाहर, प्रतिक्रान्तिकारियों को अपनी कथनी या करनी में बेलगाम हो जाने की खुली छूट देना एक जुर्म है तथा उन पर अधिनायकत्व लागू करना जायज है। हमारी व्यवस्था ऐसी ही है। लेकिन पूंजीवादी देशों में स्थिति इसके ठीक विपरीत है; वहां पूंजीपति वर्ग अपना अधिनायकत्व लागू करता है, जिसके अन्तर्गत क्रान्तिकारी लोगों को अपनी ''कथनी या करनी में बेलगाम'' हो जाने की इजाजत नहीं है और उन्हें ''अपना आचरण ठीक कर लेना'' चाहिए। शोषक व प्रतिक्रान्तिकारी हमेशा और हर जगह अल्पसंख्या में होते हैं, जबकि शोषित व क्रान्तिकारी सदैव बहुसंख्या में होते हैं। इसलिए शोषितों व क्रान्तिकारियों का अधिनायकत्व सर्वथा उचित है, जबकि शोषकों व प्रतिक्रान्तिकारियों का अधिनायकत्व सर्वथा अनुचित है। हू फङ ने यह भी कहा है, ''पाठकों की भारी बहुसंख्या किसी न किसी संगठन के अन्तर्गत है, जहां जोर-जबरदस्ती का वातावरण छाया हुआ है।'' जनता के बीच फरमानशाही वाले जोर-जबरदस्ती के तरीके को हम अस्वीकार करते हैं तथा समझाने-बुझाने वाले जनवादी तरीके पर कायम रहते हैं; वहां आजादी का वातावरण होना चाहिए, ''जोर-जबरदस्ती'' से काम लेना गलत है। ''पाठकों की भारी बहुसंख्या किसी न किसी संगठन के अन्तर्गत है'' – यह एक बहुत अच्छी बात है। पिछले हजारों वर्षों में ऐसा कभी नहीं हुआ था। जब कम्युनिस्ट पार्टी ने जनता का नेतृत्व करके एक दीर्घकालीन व कठोर संघर्ष चलाया सिर्फ तभी जनता रेत के बिखरे कणों जैसी स्थिति से, एक ऐसी स्थिति से जो प्रतिक्रियावादियों द्वारा किए जाने वाले शोषण व उत्पीड़न के लिए अनुकूल

थी, एकता की स्थिति में पहुंच सकी, तथा उसने अपनी इस महान एकता को क्रान्ति की विजय के बाद कुछ ही वर्षों में कायम कर लिया। "जोर-जबरदस्ती" से हू फङ का तात्पर्य उस जोर-जबरदस्ती से है जिसे हम प्रतिक्रान्तिकारी पक्ष के लोगों के प्रति अपनाते हैं। जी हां, वे लोग सचमुच भय से कांप उठते हैं और यह महसूस करते हैं कि वे "एक ऐसी दुखिया बहू की तरह हैं जो पिटाई से हमेशा डरती रहती है," अथवा यह चिन्ता करते रहते हैं कि "मामूली सी छींक भी रिकार्ड की जा रही है"। हम इसे भी एक शानदार स्थिति समझते हैं। पिछले हजारों वर्षों में ऐसा कभी भी नहीं हुआ था। जब कम्युनिस्ट पार्टी ने जनता का नेतृत्व करके दीर्घकालीन व कठोर संघर्ष चलाया सिर्फ तभी ये दुष्ट इतनी ज्यादा परेशानी महसूस करने लगे। संक्षेप में, जो दिन जनता के लिए खुशी का है वह प्रतिक्रान्तिकारियों के लिए दुख का है। हर साल राष्ट्रीय दिवस के रूप में हम लोग सबसे पहले इसी तरह का खुशी का दिन मनाते हैं। हू फङ ने यह भी कहा है, "जहां तक कला-साहित्य का सम्बन्ध है, यांत्रिकता पर अमल करना वास्तव में सबसे ज्यादा आसान है।" यहां "यांत्रिकता" को एक अनादरसूचक शब्द के रूप में द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के लिए प्रयुक्त किया गया है, तथा इसे "सबसे ज्यादा आसान" बताना निरी बकवास है। आदर्शवाद और अधिभौतिकवाद दुनिया में सबसे ज्यादा आसान हैं, क्योंकि ये वस्तुगत यथार्थ पर आधारित न होने और इसकी कसौटी पर न परखे जाने के कारण लोगों को मनमानी बकवास करने की इजाजत देते हैं। दूसरी तरफ, भौतिकवाद और द्वन्द्ववाद कठिन प्रयास की मांग करते हैं। यह जरूरी है कि वे वस्तुगत यथार्थ पर आधारित हों और उसकी कसौटी पर परखे जा चुके हों। कोई व्यक्ति जब तक कठिन प्रयास नहीं करता, तब तक उसके लिए आदर्शवाद और अधिभौतिकवाद के रास्ते पर भटकने की सम्भावना बनी रहती है। हू फङ ने अपने पत्र[1] में उसूल से सम्बन्धित तीन सवाल उठाए थे, जिनका कुछ विस्तार से खण्डन करना हम आवश्यक समझते हैं। इसके अलावा, हू फङ ने अपने पत्र में यह भी लिखा था : "इस समय हर जगह प्रतिरोध की भावना मौजूद है, हर जगह पहले से ज्यादा मांगें पेश की जा रही हैं"; यह बात उसने 1950 में कही थी। उस समय मुख्य भूमि से च्याङ काई-शेक की मुख्य सैन्य-शक्ति का अभी-अभी सफाया किया गया था, उन बहुत से प्रतिक्रान्तिकारी सैन्य-दलों का सफाया करना अभी बाकी था जो डाकू बन गए थे, भूमि-सुधार और प्रतिक्रान्तिकारियों के दमन से सम्बन्धित बड़े पैमाने के आन्दोलन अभी आरम्भ नहीं हुए थे, और संस्कृति व शिक्षा के क्षेत्र में पुनर्व्यवस्थित करने का काम अभी शुरू नहीं किया गया था। हू फङ की बातों में तत्कालीन स्थिति अवश्य प्रतिबिम्बित होती है, लेकिन कुछ बातें ऐसी भी हैं जिन्हें उसने नहीं कहा। अगर उन्हें जोड़ दिया जाता तो उसका कथन इस प्रकार होना चाहिए था : इस समय हर जगह प्रतिक्रान्तिकारियों में क्रान्ति का प्रतिरोध करने की भावना मौजूद है, हर जगह क्रान्ति के खिलाफ गड़बड़ी पैदा करने के लिए प्रतिक्रान्तिकारियों की ओर से तरह-तरह की मांगें पहले से ज्यादा पेश की जा रही हैं।

नोट

[1] यहां एक प्रतिक्रान्तिकारी गोपनीय पत्र का उल्लेख किया गया है, जिसे हू फङ ने 13 अगस्त 1950 को अपने अनुयायी चाङ चुङ-श्याओ के नाम लिखा था।

'प्रतिक्रान्तिकारी हू फङ गुट से सम्बन्धित सामग्री' की प्रस्तावना और सम्पादकीय टिप्पणियां

मई और जून 1955

प्रस्तावना

15 जून 1955

पाठकों के व्यापक समुदाय की जरूरतें पूरी करने के लिए, हमने प्रतिक्रान्तिकारी हू फङ गुट से सम्बन्धित उस सामग्री को, जो 13 मई और 10 जून 1955 के बीच 'जन दैनिक' में तीन किस्तों में प्रकाशित हो चुकी है, तथा 'जन दैनिक' के 10 जून के सम्पादकीय को, पुस्तक रूप में संकलित कर लिया है, और उसे जन प्रकाशन-गृह द्वारा 'प्रतिक्रान्तिकारी हू फङ गुट से सम्बन्धित सामग्री' शीर्षक से प्रकाशित किया जा रहा है। इस पुस्तक में हू फङ की 'मेरी आत्म-आलोचना' को भी स्रोत-सामग्री के रूप में पुन: प्रकाशित कर दिया गया है, लेकिन उसे शू ऊ[1] द्वारा प्रस्तुत सामग्री के बाद परिशिष्ट के रूप में रखा गया है, जिससे पाठक दुरंगे चरित्र वाले इस प्रतिक्रान्तिकारी का अध्ययन कर सकें। सामग्री की तीन किस्तों की सम्पादकीय टिप्पणियों और फुटनोटों में हमने कहीं-कहीं शाब्दिक परिवर्तन कर दिए हैं। हमने दूसरी किस्त में कुछ फुटनोटों में संशोधन किया है, कुछ फुटनोट जोड़ दिए हैं तथा दो सम्पादकीय टिप्पणियां और बढ़ा दी हैं। एकरूपता लाने की दृष्टि से, पहली और दूसरी किस्तों के शीर्षक में "पार्टी-विरोधी गुट" को बदलकर "प्रतिक्रान्तिकारी गुट" कर दिया गया है, जैसा कि तीसरी किस्त के शीर्षक में है। बाकी मजमून ज्यों का त्यों है।

अनुमान है कि 'जन-दैनिक' में प्रकाशित सामग्री की ही तरह इस पुस्तक का प्रकाशन भी दो प्रकार के लोगों का ध्यान आकर्षित करेगा। यह एक तरफ तो प्रतिक्रान्तिकारियों का ध्यान आकर्षित करेगा और दूसरी तरफ उनसे कहीं ज्यादा व्यापक जन-समुदाय का ध्यान आकर्षित करेगा।

प्रतिक्रान्तिकारी लोग और कुछ प्रतिक्रान्तिकारी भावनाएं रखने वाले लोग यह अनुभव करेंगे कि उनके हृदय में हू फङ तत्वों के बीच हुए पत्रव्यवहार की प्रतिध्वनि गूंजती रहती है। इसमें सन्देह नहीं कि हू फङ और उसके गुट के लोग सभी प्रतिक्रान्तिकारी वर्गों, गुटों और व्यक्तियों के प्रवक्ता हैं, तथा क्रान्ति के खिलाफ उनके द्वारा की गई गाली-गलौज का और अपनी गतिविधियों के दौरान उनके द्वारा अपनाई गई कार्यनीति को उन तमाम प्रतिक्रान्तिकारियों द्वारा सराहा जाएगा जिनके हाथ में यह पुस्तक पहुंचेगी। इससे वे लोग वर्ग-संघर्ष के बारे में कुछ प्रतिक्रान्तिकारी शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। फिर भी इससे वे विनाश से हरगिज नहीं बच

सकेंगे। हू फङ तत्वों की ये रचनाएं भी उनके पृष्ठपोषक साम्राज्यवादियों और च्याङ काई-शेक की क्वोमिन्ताङ की उन तमाम प्रतिक्रियावादी रचनाओं की ही तरह, जिनमें चीनी जनता का विरोध किया गया है, सफलता का नहीं बल्कि असफलता का लेखा जोखा पेश करती हैं। वे इस गुट को विनाश से बचाने में असफल रही हैं।

व्यापक जन-समुदाय को ऐसी सामग्री की बहुत अधिक जरूरत है। प्रतिक्रान्तिकारी अपनी दुरंगी कार्यनीति को कैसे लागू करते हैं ? वे लोग अपने नकली चेहरे से हमें कैसे धोखा देते हैं तथा चोरी-छिपे ऐसी करतूतें कैसे करते हैं जिनकी हम जरा भी अपेक्षा नहीं कर सकते ? ये सब बातें ऐसी हैं जिनके बारे में नेक इरादे रखने वाले हजारों लोगों को कोई जानकारी नहीं है। यही वजह है कि बहुत से प्रतिक्रान्तिकारी हमारी पांतों में आ घुसे हैं। हमारे लोगों की आंखें तेज नहीं हैं, वे अच्छे लोगों और बुरे लोगों के बीच फर्क करने में निपुण नहीं हैं। जब लोग सामान्य स्थितियों में कार्यवाही करते हैं तो हम अच्छे और बुरे के बीच के फर्क को समझ सकते हैं, लेकिन जब लोग असामान्य स्थितियों में कार्यवाही करते हैं तो हम उनकी असलियत का पता लगाने में निपुण नहीं हैं। हू फङ तत्व ऐसे प्रतिक्रान्तिकारी हैं जो अपना असली चेहरा छिपाने और झूठा रूप दिखाने के लिए एक मुखौटा पहन लेते हैं। लेकिन चूंकि वे लोग क्रान्ति का विरोध करते हैं, इसलिए अपने असली चेहरे को पूरी तरह छिपाना उनके लिए सम्भव नहीं है। जहां तक हू फङ गुट के प्रमुख व्यक्तियों का सवाल है, उनके साथ मुक्ति के पहले और बाद में अनेक मौकों पर हमारे विवाद खड़े हो चुके हैं। उनकी कथनी और करनी न सिर्फ कम्युनिस्टों से भिन्न है बल्कि गैर-पार्टी क्रान्तिकारियों व गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों की विशाल संख्या से भी भिन्न है। हाल ही में उन्हें केवल इसलिए पूरी तरह बेनकाब कर दिया गया क्योंकि हमें उनके खिलाफ भारी मात्रा में ठोस प्रमाण प्राप्त हो चुके थे। जहां तक हू फङ गुट के अनेक व्यक्तियों का सवाल है, वे लोग हमें इसलिए धोखा दे सके क्योंकि हमारे पार्टी संगठन, राजकीय अंग, जन-संगठन, सांस्कृतिक व शैक्षणिक प्रतिष्ठान अथवा कारोबार उन्हें दाखिल करने से पहले उनके रिकार्ड की सख्ती से जांच-पड़ताल करने में असफल रहे। यह इसलिए भी सम्भव हो सका क्योंकि विगत काल में हम लोग क्रान्ति के तूफानी दौर से गुजर रहे थे तथा जब हम विजयी हुए तो सभी तरह के लोग हमारे निकट आने की कोशिश करने लगे; इसका अनिवार्य परिणाम यह हुआ कि पानी गंदला हो गया तथा बुरे लोग अच्छे लोगों के बीच मिल गए और अभी तक हम उनकी मुकम्मिल तौर पर छानबीन नहीं कर पाए। इसके अलावा, बुरे तत्वों की खोज करने और उन्हें अपनी पांतों से बाहर निकाल देने में सफलता प्राप्त करना इस बात पर निर्भर है कि नेतृत्वकारी संगठनों के सही मार्गदर्शन को व्यापक जन-समुदाय की समुन्नत स्तर की राजनीतिक चेतना के साथ मिलाया जाए, लेकिन इस दृष्टि से अतीत काल में हमारे काम में त्रुटियों का अभाव नहीं रहा है। ये सब हमारे लिए सबक हैं।

हू फङ के मामले को हम इसलिए महत्त्व दे रहे हैं क्योंकि हम उसे व्यापक जन-समुदाय को, तथा सबसे पहले पढ़ना जानने वाले कार्यकर्ताओं तथा बुद्धिजीवियों को शिक्षित करने के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं; हम सलाह देते हैं कि वे इस सामग्री को पढ़ें, ताकि वे अपनी राजनीतिक चेतना का स्तर ऊंचा कर सकें। यह "सामग्री" अपनी अत्यधिक तीक्ष्णता व स्पष्टता के लिए बहुत ध्यान देने योग्य है। प्रतिक्रान्तिकारी लोगों का इसकी ओर ध्यान स्वाभाविक है, तथा क्रान्तिकारी लोगों का इसकी ओर ध्यान देना और भी ज्यादा स्वाभाविक है। अगर इस मामले और इस सामग्री से व्यापक क्रान्तिकारी जन समुदाय को शिक्षा प्राप्त हो सके तथा इसके परिणामस्वरूप उसके क्रान्तिकारी उत्साह में और भले-बुरे की पहचान करने की उसकी क्षमता में बढ़ोतरी हो सके, तो हम कदम-ब-कदम हर तरह के छिपे हुए प्रतिक्रान्तिकारियों का मुखौटा उतारने में सफल हो जाएंगे।

सम्पादकीय टिप्पणियां (चुने हुए अंश)

मई और जून 1955

1

गुट – जिसे हमारे पूर्वज "गिरोह" कहते थे और आजकल लोग "मण्डली" या "टोली" कहते हैं – एक ऐसी चीज है जिससे हम अच्छी तरह परिचित हैं। जो लोग गुटपरस्ती की कार्यवाहियां करते हैं वे अपना राजनीतिक उद्देश्य पूरा करने के लिए अक्सर दूसरों पर गुटपरस्त होने का आरोप लगाते हैं तथा कहते हैं कि गुटपरस्त होना ईमानदारी की निशानी नहीं है; वे खुद ईमानदार होने का दावा करते हैं और कहते हैं कि ईमानदार लोगों को गुटपरस्ती से कोई सरोकार नहीं होता। जो लोग हू फङ के नेतृत्व में चलते थे उन्हें ऐसे "नौजवान लेखक" और "क्रान्तिकारी लेखक" कहा जाता था जिन्हें कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा, एक ऐसे गुट द्वारा जो "पूंजीवादी सिद्धान्त" रखता था और "स्वतंत्र राज्य कायम किए हुए था", "नफरत की नजर से देखा जाता था" और "सताया जाता था"; इसलिए हू फङ और उनकी मण्डली के लोग बदला लेना चाहते थे। 'साहित्यिक गजट' की समस्या "केवल खोज निकाली गई एक दरार" थी और यह "किसी भी सूरत में एकमात्र समस्या नहीं" थी, तथा यह अत्यन्त आवश्यक था कि इसे "व्यापक और सामान्य रूप दिया जाए" और "यह दिखाया जाए कि यह समस्या गुटपरस्त शासन की समस्या थी", तथा इससे भी बढ़कर "गुटपरस्त और युद्धपतिवादी शासन" की समस्या थी।[2] यह मामला इतना गम्भीर था कि उन्होंने हमारा सफाया करने के लिए बहुत से गोले-बारूद की "बौछार की"। जब यह सब किया जा रहा था तो लोगों का ध्यान हू फङ और उसकी मण्डली की तरफ गया। उनमें बहुत से लोगों की सावधानी से जांच-पड़ताल करने के बाद यह पता चला कि इस गुट का आकार काफी बड़ा है। इससे पहले उसे "एक छोटा ग्रुप" माना जाता था। मगर नहीं, ऐसी बात नहीं है, उन लोगों की तादाद कम नहीं है। पहले उन लोगों को महज सांस्कृतिक जगत के व्यक्तियों का ग्रुप माना जाता था। मगर नहीं, ऐसी बात नहीं है। वे लोग मौका पाकर राजनीतिक, सैनिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक विभागों में घुस गए हैं। पहले वे लोग खुलेआम कार्यवाही करने वाले क्रान्तिकारियों का ग्रुप जान पड़ते थे। मगर नहीं, ऐसी बात नहीं है। उनमें अधिकांश लोग ऐसे हैं जिनका अतीत जीवन बहुत संदिग्ध है। इस गुट की मुख्य शक्ति साम्राज्यवाद व क्वोमिन्ताङ के खुफिया एजेंट,

त्रात्स्कीवादी, प्रतिक्रियावादी फौजी अफसर अथवा कम्युनिस्ट पार्टी के साथ गद्दारी करने वाले लोग हैं; ऐसे लोगों को मेरुदण्ड बनाकर, क्रान्तिकारी खेमे में एक छिपा हुआ प्रतिक्रान्तिकारी गुट, एक भूमिगत स्वतंत्र राज्य कायम किया गया है। यह प्रतिक्रान्तिकारी गुट, यह भूमिगत राज्य चीन लोक गणराज्य का तख्ता उलट देने तथा साम्राज्यवाद और क्वोमिन्ताङ का शासन फिर से स्थापित करने का बीड़ा उठाए हुए है। जब भी और जहां भी सम्भव हो, वे लोग हमारी खामियों को खोज निकालने की कोशिश करते रहते हैं, तथा तोड़फोड़ के लिए उन्हें बहाने के तौर पर इस्तेमाल करते रहते हैं। जहां कहीं उनके आदमी हैं, वहां अजीबोगरीब घटनाएं होती हैं। मुक्ति के बाद इस प्रतिक्रान्तिकारी गुट का विस्तार हुआ है, और अगर रोकथाम न की गई तो इसका लगातार विस्तार होता जाएगा। आज जबकि हू फङ और उसकी मण्डली की असलियत मालूम हो गई है, बहुत सी घटनाओं की सन्तोषजनक रूप से व्याख्या की जा सकती है और उनकी गतिविधियों को रोका जा सकता है।

2

इसमें सन्देह नहीं कि हू फङ ने बाद में लु त्येन के इस सुझाव पर अमल किया कि आत्मरक्षा के लिए आक्रमणात्मक कार्यनीति का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। इस प्रकार का काम की मांग करने पेकिङ आ पहुंचा, उसने अनुरोध किया कि उसके मामले पर विचार-विमर्श किया जाए, उसने केन्द्रीय कमेटी के समक्ष 3,00,000 शब्दों वाला एक ज्ञापन प्रस्तुत किया, तथा अन्त में उससे साहित्यिक गजट के सवाल को लेकर अपना प्रहार शुरू कर दिया। आम तौर पर, सभी प्रकार के शोषक वर्गों के प्रतिनिधि, प्रतिकूल परिस्थिति आने पर अपने बचाव के लिए आक्रमणात्मक कार्यनीति अपना लेते हैं, ताकि वे आज अपने अस्तित्व को बनाए रख सकें और कल विकसित हो सकें। बहुत सी बेसिर-पैर की अफवाहें उड़ाई जाती हैं और सफेद झूठ बोले जाते हैं; अन्तर्वस्तु पर प्रहार करने के लिए कुछ सतही बातों का इस्तेमाल किया जाता है; कुछ लोगों की तारीफ के पुल बांधे जाते हैं, जबकि कुछ अन्य लोगों की भर्त्सना की जाती है; तथा "कुछ स्थलों पर दरार पैदा करने" के लिए मामले को तोड़ मरोड़ कर और बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता है, ताकि हमें कठिन परिस्थिति में डाला जा सके। संक्षेप में, वे लोग हमेशा इस बात का अध्ययन करते हैं कि हमारे खिलाफ किस प्रकार की कार्यनीति अपनाई जाए तथा अपना मकसद पूरा करने के लिए "चारों दिशाओं की खोज खबर रखते हैं"। वे लोग कभी-कभी "मरने का स्वांग रचते हैं" तथा "जवाबी प्रहार करने" के अवसर की प्रतीक्षा में रहते हैं। उन्हें वर्ग-संघर्ष का दीर्घकालीन अनुभव है तथा उन्हें प्रकार के कानूनी और गैर-कानूनी संघर्षों में महारत हासिल है। हम क्रान्तिकारियों के लिए यह जरूरी है कि उनकी चालों को समझें और उनकी कार्यनीति का अध्ययन करें, ताकि हम उन्हें परास्त कर सकें। हमारे अन्दर ऐसा किताबीपन और भोलापन हरगिज नहीं होना चाहिए कि हम जटिल वर्ग-संघर्ष को एक बहुत सीधा-सादा मामला समझ बैठें।

3

हम क्रान्तिकारियों में घमण्ड व खुशफहमी होने, सतर्कता की कमी होने तथा राजनीति की उपेक्षा करके रोजमर्रा के काम में डूबे रहने की प्रवृत्ति होने के परिणामस्वरूप बहुत से प्रतिक्रान्तिकारी हमारे "जिगर" में "घुसने" में सफल हो गए हैं। ऐसा कतई नहीं है कि केवल हू फङ गुट के लोग ही घुस आए हों, बल्कि बहुत से अन्य खुफिया एजेण्ट और बुरे तत्व भी घुस आए हैं।

4

उदारतावादी प्रवृत्तियों के कारण जब किसी पार्टी-सदस्य की आलोचना की जाती है तो हू फङ तत्व यह कहते हैं कि उस पर "प्रहार किया जा रहा" है। अगर उसका "जुझारू संकल्प जरा कमजोर है", यानी अगर वह अपने उदारतावादी रुख से चिपका नहीं रहता तथा पार्टी द्वारा की गई आलोचना को स्वीकार करने और सही रुख अपनाने के लिए तैयार हो जाता है, तो हू फङ गुट को उससे कोई उम्मीद नहीं रह जाती और वह ऐसे व्यक्ति को अपनी तरफ नहीं खींच सकता। इसके विपरीत, अगर उदारतावादी रुख से चिपके रहने का ऐसे व्यक्ति का "जुझारू संकल्प" "जरा कमजोर" नहीं बल्कि "जरा मजबूत" है, तो उसके खींचे जाने का खतरा बना रहता है। यह निश्चित है कि हू फङ तत्व ऐसे व्यक्ति को अपनी तरफ खींचने की "कोशिश करेंगे", तथा जिन्होंने उसे "कामरेड" के नाम से पुकारना शुरू भी कर दिया है। क्या इसे एक चेतावनी नहीं समझा जाना चाहिए ? जब किसी पार्टी-सदस्य ने विचारधारात्मक व राजनीतिक गलतियां की हों और इनकी वजह से उसकी आलोचना की गई हो, तो उसे कैसा रवैया अपनाना चाहिए ? उसके सामने दो विकल्प हैं : पहला यह कि वह अपनी गलतियों को दूर कर ले और एक अच्छा पार्टी-सदस्य बन जाए, तथा दूसरा यह कि वह और ज्यादा पतित हो जाए, यहां तक कि प्रतिक्रान्ति के गर्त में जा गिरे। दूसरा विकल्प सचमुच मौजूद है तथा हो सकता है कि प्रतिक्रान्तिकारी तत्व उसे अपनी तरफ बुलाने के लिए इशारा कर रहे हों।

5

जिस प्रकार हम लोग अन्तर्राष्ट्रीय और घरेलू वर्ग-संघर्ष में शक्ति-संतुलन का निरन्तर मूल्यांकन करते रहते हैं उसी प्रकार शत्रु भी ऐसा करता रहता है। लेकिन चूंकि हमारे दुश्मन पिछड़े हुए और सड़े-गले प्रतिक्रियावादी हैं, इसलिए उनका सर्वनाश अवश्यम्भावी है; उन्हें वस्तुगत जगत के नियमों की जानकारी नहीं है, उनका सोचने का तरीका मनोगतवादी और अधिभौतिकवादी है। इसलिए उनका मूल्यांकन अनिवार्य रूप से गलत होता है। अपने वर्ग की सहज प्रवृत्ति से अनिवार्य रूप से प्रेरित होकर वे यह समझ बैठते हैं कि वे खुद बड़े सामर्थ्यवान हैं और क्रान्तिकारी शक्तियां सदैव सामर्थ्यहीन बनी रहेंगी। वे अनिवार्य रूप से अपनी शक्ति को ज्यादा आंकते हैं और हमारी शक्ति को कम। हमने एक के बाद एक अनेक प्रतिक्रान्तिकारियों

का तख्ता पलटते देखा है – छिङ राजवंश की सरकार, उत्तरी युद्ध-सरदारों, जापानी सैन्यवादियों, मुसोलिनी, हिटलर और च्याङ काई-शेक इन सभी लोगों ने सोचने और अमल करने में गलतियां कीं तथा इनसे बचना उनके लिए असम्भव था। वर्तमान काल में सभी साम्राज्यवादियों द्वारा इस प्रकार की गलतियां दोहराया जाना अनिवार्य है। क्या यह हास्यास्पद नहीं है ? हू फङ तत्वों का कहना है कि चीनी जनता की क्रान्तिकारी शक्तियों का, जिनका नेतृत्व कम्युनिस्ट पार्टी करती है, ''सर्वनाश'' निश्चित है, तथा वे ''जीर्ण-शीर्ण पीले पत्तों'' तथा ''सड़ी हुई लाश'' के सिवाय और कुछ नहीं हैं। लेकिन उन प्रतिक्रान्तिकारी शक्तियों के बारे में क्या कहा जाए जिनका प्रतिनिधित्व हू फङ तत्व करते हैं ? हालांकि ''कुछ नाजुक अंकुरों को मसल दिया जा सकता है'', फिर भी ऐसे अंकुरों की संख्या बहुत है जो बाधाओं को ''तोड़कर'' ''मजबूती से पनपते जाएंगे।'' अगर फ्रांस की पूंजीवादी राष्ट्रीय एसेम्बली में आज भी राजतंत्रवादियों के प्रतिनिधि मिल सकते हैं तो इस बात की काफी सम्भावना है कि समूची पृथ्वी पर शोषक वर्गों का पूरी तरह खात्मा हो जाने के अनेक वर्ष बाद भी च्याङ काई-शेक वंश के कुछ प्रतिनिधि जहां-तहां सक्रिय बने रहेंगे। उनमें जो लोग सबसे ज्यादा कट्टरपंथी होंगे वे हरगिज हार नहीं मानेंगे। इसका कारण यह है कि उनका अपने आपको और दूसरे लोगों को धोखा देना आवश्यक है, अन्यथा उनके लिए जीना दूभर हो जाएगा।

6

इस पत्र में इस्तेमाल किए गए इस वाक्यांश से कि ''वे छिपी हुई सामन्ती शक्तियां बड़े पागलपन के साथ लोगों को कत्ल कर रही हैं'' यह जाहिर हो जाता है कि प्रतिक्रान्तिकारी शक्तियों का दमन करने के लिए हमारी जनता की क्रान्तिकारी शक्तियों द्वारा चलाए गए महान संघर्ष से प्रतिक्रान्तिकारी हू फङ गुट भयभीत हो उठा है, तथा सभी प्रतिक्रान्तिकारी वर्ग, ग्रुपों और व्यक्तियों को ठीक ऐसा ही महसूस होता है। जिस चीज से वे लोग भय से कांप उठते हैं ठीक उसी चीज से क्रान्तिकारी जन-समुदाय हर्ष से प्रफुल्लित हो उठता है। ''इतिहास में अभूतपूर्व'' – यह कहना भी सही है। केवल उस क्रान्ति को छोड़कर जिसने आदिम कम्यून व्यवस्था की जगह दास व्यवस्था की स्थापना की थी, यानी एक शोषणहीन व्यवस्था की जगह एक शोषण-व्यवस्था की स्थापना की थी, अतीत काल की बाकी सभी क्रान्तियों का परिणाम यह हुआ कि एक शोषण-व्यवस्था की जगह दूसरी शोषण-व्यवस्था की स्थापना हो गई, तथा उनके दौरान प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने का काम मुकम्मिल तौर पर करना न तो आवश्यक था और न सम्भव ही। केवल हमारी क्रान्ति, यानी सर्वहारा वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में विशाल जन-समुदाय की क्रान्ति ही एक ऐसी क्रान्ति है जिसने सभी शोषण-व्यवस्थाओं और सभी वर्गों को अन्तिम रूप से खत्म करने का लक्ष्य अपने सामने रखा है; इसलिए यह निश्चित है कि जिन शोषक वर्गों का खात्मा किया जा रहा है वे सामने आकर अपनी प्रतिक्रान्तिकारी राजनीतिक पार्टियों और ग्रुपों के जरिए अथवा किन्हीं व्यक्तियों के जरिए प्रतिरोध करेंगे, तथा विशाल जन-समुदाय को चाहिए कि वह एकताबद्ध होकर इन प्रतिक्रान्तिकारी शक्तियों का दृढ़ता के साथ, सर्वांगीण रूप से, समग्र रूप से और सम्पूर्ण रूप से दमन करे।

है। केवल ऐसे ही समय उनका इस प्रकार दमन करना आवश्यक और सम्भव है। ''संघर्ष अनिवार्य रूप से गहरा हो गया है'' – यह कहना भी बिलकुल सही है। लेकिन ''छिपी हुई सामन्ती शक्तियों'' का नाम देना गलत होगा; यह ''सर्वहारा वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में मजदूर-किसान संश्रय पर आधारित जनता के जनवादी अधिनायकत्व'' के लिए प्रयुक्त किया गया एक अनादरसूचक कथन है, ठीक उसी तरह जैसे इस गुट द्वारा ''यांत्रिकता'' को ''द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद'' के लिए एक अनादरसूचक शब्द के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

7

यहां फिर एक बार हमारा सामना चाङ चुङ-श्याओ से हो गया है। उसके पास एक अच्छी खासी प्रतिक्रान्तिकारी नाक है, तथा वर्ग-चेतना और राजनीतिक घ्राणशक्ति की दृष्टि से उसका स्तर हमारी क्रान्तिकारी पांतों में मौजूद बहुत से लोगों के मुकाबले, जिनमें अनेक कम्युनिस्ट भी शामिल हैं, कहीं ज्यादा ऊंचा है। इन बातों में हमारे बहुत से लोग हू फङ गुट के लोगों की तुलना में बहुत पीछे हैं। यह जरूरी है कि हम अध्ययन करें और अपनी वर्ग-सतर्कता व राजनीतिक घ्राणशक्ति को बढ़ा लें। अगर हू फङ गुट की कोई सकारात्मक देन हो सकती है तो वह केवल यह है कि अन्तःकरण को झकझोर देने वाले वर्तमान संघर्ष के जरिए हम अपनी राजनीतिक चेतना और संवेदनशीलता का स्तर बहुत ऊंचा कर लेंगे, सभी प्रतिक्रान्तिकारियों का दृढ़ता से दमन कर देंगे तथा अपने क्रान्तिकारी अधिनायकत्व को अत्यन्त सुदृढ़ बना लेंगे; इस प्रकार हम क्रान्ति को अन्त तक चलाएंगे और एक महान समाजवादी देश के निर्माण का लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे।

नोट

[1] यहां 'प्रतिक्रान्तिकारी हू फङ गुट से सम्बन्धित कुछ सामग्री' का उल्लेख किया गया है, जिसे इसी गुट के एक सदस्य शू ऊ ने प्रस्तुत किया था। इसमें उन अनेक प्रतिक्रान्तिकारी गोपनीय पत्रों के अंश उद्धृत किए गए हैं जिन्हें हू फङ ने मुक्ति के पहले और बाद के कुछ वर्षों में शू ऊ के नाम लिखा था।

[2] 1954 में अक्तूबर के अन्त से दिसम्बर के शुरू तक चीनी कला-साहित्य जगत संघ तथा चीनी लेखक संघ के अध्यक्षमण्डलों ने विस्तृत संयुक्त मीटिंगें बुलाकर, 'लाल भवन का सपना' नामक रचना के अध्ययन के दौरान प्रकट होने वाले पूंजीवादी विचारों की नौजवान लेखकों द्वारा की गई आलोचना का दमन करने की 'साहित्यिक गजट' की गलतियों की जांच की। हू फङ को लगा कि उसका मौका आ गया है और उसने कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रहार करना शुरू कर दिया। अपने एक अनुयायी के नाम एक गोपनीय पत्र में उसने कहा, ''यह केवल खोज निकाली गई एक दरार है, तथा इसे व्यापक और सामान्य रूप देना अत्यन्त आवश्यक है''।

कृषि के सहकारी रूपान्तर के बारे में

31 जुलाई 1955

1

समूचे देहाती इलाकों में शीघ्र ही नए समाजवादी जन आन्दोलन में एक उभार आने वाला है। लेकिन हमारे कुछ साथी बंधे पांव वाली स्त्री की तरह डगमगाते कदम रखते हुए हर समय शिकायत करते रहते हैं, ''आप लोग काफी तेजी से चल रहे हैं, बहुत ज्यादा तेजी से चल रहे हैं''। बहुत ज्यादा मीन-मेख निकालना, अनुचित रूप से शिकायतें करना, बेइन्तहा परेशानी जाहिर करना और तरह-तरह के अनगिनत नियमों-निषेधों की दुहाई देना – इन सब बातों को वे लोग ग्रामीण क्षेत्रों में समाजवादी जन-आन्दोलन का मार्गदर्शन करने के लिए सही नीति समझते हैं।

नहीं, यह सही नीति नहीं है, यह गलत नीति है।

देहातों में सामाजिक रूपान्तर का ज्वार, सहकारिता का ज्वार, अनेक स्थानों में उमड़ चुका है और शीघ्र ही समूचे देश में उमड़ने लगेगा। यह एक ऐसा विशाल समाजवादी क्रान्तिकारी आन्दोलन है जिसमें 50 करोड़ से ज्यादा ग्रामीण आबादी शामिल होने जा रही है, तथा इसका अत्यधिक विश्वव्यापी महत्त्व है। हमें चाहिए कि इस आन्दोलन का सक्रियता से, उत्साहपूर्वक और योजनाबद्ध रूप से नेतृत्व करें और किसी भी रूप में इसे पीछे की ओर न घसीटें। इस प्रक्रिया के दौरान कुछ गलतियों का होना लाजिमी है, यह बात समझ में आ सकती है, और उन्हें सुधार लेना मुश्किल नहीं है। कार्यकर्ताओं और किसानों की खामियों या गलतियों को सुधारा या दूर किया जा सकता है, बशर्ते कि हम सक्रियता से उनकी मदद करें। कार्यकर्ता और किसान पार्टी के नेतृत्व में आगे बढ़ रहे हैं, तथा बुनियादी तौर पर यह एक स्वस्थ आन्दोलन है। कुछ जगहों पर उन्होंने अपने काम में कुछ गलतियां की हैं; मिसाल के लिए, गरीब किसानों की कठिनाइयों की उपेक्षा करके सहकारी समितियों में उनके प्रवेश को वर्जित कर दिया गया है, जबकि खुशहाल मध्यम किसानों के हितों को नुकसान पहुंचाकर उन्हें सहकारी समितियों में शामिल होने के लिए मजबूर किया गया है। ये गलतियां कार्यकर्ताओं और किसानों को शिक्षित करके ठीक की जानी चाहिए, न कि उन्हें महज डांट-फटकार कर। महज डांट-फटकार लगाने से कोई समस्या हल नहीं हो सकती। यह जरूरी है कि हम आन्दोलन का साहस के साथ मार्गदर्शन करें तथा ''आगे नागों और पीछे बाघों से न डरें''। कार्यकर्ता और किसान ये

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा आयोजित प्रान्तीय, म्युनिसिपल और स्वायत्त प्रदेशीय पार्टी कमेटियों के सचिवों के एक सम्मेलन में प्रस्तुत रिपोर्ट।

दोनों ही, संघर्षों के बीच से गुजरते हुए अपना नव रूपान्तर करते रहेंगे। उन्हें संघर्ष में कूदने दो और जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते जाएं उन्हें सीखने दो तथा पहले से ज्यादा कुशलता प्राप्त करने दो। इस प्रकार बहुत से श्रेष्ठ लोग सामने आएंगे। ''आगे नागों और पीछे बाघों से डर कर'' हम कार्यकर्ताओं को तैयार नहीं कर सकते। कार्यकर्ताओं की एक विशाल संख्या को थोड़े समय की ट्रेनिंग के बाद सहकारी आन्दोलन का मार्गदर्शन करने और उसकी सहायता करने के लिए ऊपर से देहातों में भेजा जाना चाहिए, लेकिन अगर उन्हें यह सीखना है कि काम कैसे किया जाय तो उन्हें खुद भी आन्दोलन में भाग लेना होगा। यह निश्चित नहीं है कि वे लोग केवल किसी प्रशिक्षण-कक्षा में दो-चार दर्जन मुद्दों के बारे में प्राध्यापक का व्याख्यान सुनकर ही काम करना सीख जाएंगे।

संक्षेप में, नेतृत्व को जन-आन्दोलन से पीछे नहीं रहना चाहिए। फिर भी, आज यह हालत है कि जन-आन्दोलन नेतृत्व से आगे बढ़ता जा रहा है और नेतृत्व उसके साथ कदम नहीं मिला पा रहा। इस परिस्थिति को बदलना होगा।

2

राष्ट्रव्यापी सहकारी आन्दोलन अब लम्बे डग भरता हुआ आगे बढ़ रहा है, फिर भी हमें ऐसे सवालों के बारे में तर्क-वितर्क करना पड़ता है : क्या सहकारी समितियों का विकास हो सकता है ? क्या उन्हें सुदृढ़ बनाया जा सकता है ? कुछ साथियों की मूल समस्या यह मालूम होती है कि वे इस बात से चिन्तित हैं कि उन कई लाख मौजूदा अर्ध-समाजवादी सहकारी समितियों को सुदृढ़ बनाना सम्भव है अथवा नहीं जो आम तौर पर छोटी हैं और जिनमें से हर एक में औसतन 20 से कुछ ज्यादा किसान परिवार शामिल हैं। बेशक, जब तक उन्हें सुदृढ़ नहीं बनाया जाता तब तक उनके विकास का प्रश्न ही नहीं उठता। पिछले कुछ वर्षों के सहकारिता के विकास के रिकार्ड को देखने के बाद भी कुछ साथियों को अभी तक यकीन नहीं हुआ तथा वे इस बात का इन्तजार करना चाहते हैं कि 1955 में हालात कैसी शक्ल अख्तियार करते हैं। यह भी हो सकता है कि वे एक वर्ष तक और इन्तजार करना चाहते हों, तथा जब 1956 के अन्त तक और अधिक सहकारी समितियों को सुदृढ़ बना दिया जाएगा सिर्फ तभी उन्हें पक्का यकीन हो सकेगा कि कृषि का सहकारी रूपान्तर सम्भव है तथा हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की नीति सही है। यही कारण है कि इन दो वर्षों में काम का निर्णायक महत्व है।

कृषि सहकारिता की व्यावहारिकता को और इस सम्बन्ध में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की नीति की युक्तियुक्तता को साबित करने के लिए हमारे देश के कृषि सहकारिता आन्दोलन के इतिहास का सिंहावलोकन करना शायद कुछ उपयोगी सिद्ध होगा।

चीन लोक गणराज्य की स्थापना से पहले बाईस वर्ष तक क्रान्तिकारी युद्धों में हमारी पार्टी, भूमि-सुधार के बाद ऐसे कृषि उत्पादक आपसी सहयोग संगठनों की स्थापना करने के लिए जिनमें समाजवाद का प्रारम्भिक रूप मौजूद था, किसानों का मार्गदर्शन करने में पहले ही अनुभव प्राप्त कर चुकी थी। उन दिनों च्याङशी प्रान्त में आपसी सहयोग श्रम-समितियां व

जुताई दल, उत्तरी शेनशी में श्रम-विनिमय दल, तथा उत्तरी, पूर्वी और उत्तर-पूर्वी चीन में आपसी सहयोग दल मौजूद थे। कहीं कहीं इक्की-दुक्की कृषि-उत्पादक सहकारी समितियां पै जन्म ले चुकी थीं, जिनका स्वरूप अर्ध-समाजवादी अथवा समाजवादी था। मिसाल के तौ पर जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान उत्तरी शेनशी की आनसाए काउंटी में समाजवा स्वरूप वाली एक कृषि-उत्पादक सहकारी समिति का उदय हो चुका था। लेकिन ऐसी सहका समितियों को तब व्यापक रूप से बढ़ावा नहीं दिया गया था।

जब चीन लोक गणराज्य की स्थापना हो गई, उसके बाद ही हमारी पार्टी ने अपेक्षाकृ बड़े पैमाने पर कृषि-उत्पादक आपसी सहयोग दलों की स्थापना करने में तथा इन दलों के आधार पर, बड़ी संख्या में कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों की स्थापना का काम शुरू करने में किसानों का नेतृत्व किया। अब तक इस काम के लिए लगभग छः वर्ष और लगाए जा चुके हैं।

15 दिसम्बर 1951 तक, जब हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने कृषि-उत्पादन में आपसी सहयोग व सहकारिता के बारे में प्रथम प्रस्ताव का मसौदा स्वीकार किया तथा उसे विभिन्न स्थानों में अमल में उतारने के लिए स्थानीय पार्टी संगठनों के पास भेजा (इस दस्तावेज को एक औपचारिक पार्टी प्रस्ताव के रूप में मार्च 1953 से पहले समाचार-पत्रों में प्रकाशित नहीं किया गया था), उस समय तीन सौ से ज्यादा कृषि-उत्पादक सहकारी समितियां कायम हो चुकी थीं। दो वर्ष बाद, 16 दिसम्बर 1953 को जब हमारी केन्द्रीय कमेटी ने कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों के बारे में प्रस्ताव को जारी किया तो उनकी संख्या 14,000 से ज्यादा हो गई थी, यानी दो वर्ष की अवधि में बढ़कर 47 गुनी हो गई थी।

इस प्रस्ताव में आवाहन किया गया कि कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों की संख्या 1953 के जाड़ों से 1954 की शरद की फसल तक, लगभग 14,000 से बढ़ाकर 35,800 कर दी जाए, यानी केवल 150 प्रतिशत बढ़ा दी जाए। जैसा कि बाद में मालूम हुआ, उस वर्ष सहकारी समितियों की संख्या वास्तव में 1,00,000 तक पहुंच गई, यानी 600 प्रतिशत से भी अधिक वृद्धि हुई।

अक्तूबर 1954 में हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने फैसला किया कि यह संख्या 500 प्रतिशत बढ़ा दी जाय, यानी 1,00,000 से बढ़ाकर, 6,00,000 तक पहुंचा दी जाय। वास्तव में यह संख्या 6,70,000 तक पहुंच गई। जून 1955 में सहकारी समितियों को प्रारम्भिक रूप से पुनर्व्यवस्थित किए जाने के बाद इस संख्या में 20,000 की कटौती कर दी गई है, जिससे 6,50,000 सहकारी समितियां यानी योजना में निर्धारित लक्ष्य से 50,000 अधिक सहकारी समितियां बाकी रह गई हैं। इन सहकारी समितियों में शामिल होने वाले किसान परिवारों की संख्या 1,69,00,000 है, यानी हर सहकारी समिति में औसतन 26 परिवार शामिल हैं।

ये सहकारी समितियां मुख्य रूप से उत्तरी प्रान्तों में हैं, जिनकी मुक्ति अपेक्षाकृत पहले हुई थी। जहां तक उन प्रान्तों का सवाल है जो बाद में मुक्त हुए हैं और जो बहुसंख्या में हैं, ऐसे हर प्रान्त में अनेक कृषि-उत्पादक सहकारी समितियां मौजूद हैं, लेकिन आनहवेई और चच्याड को छोड़कर बाकी प्रान्तों में इनकी तादाद ज्यादा नहीं है।

ये सहकारी समितियां आम तौर पर छोटी हैं, लेकिन इनमें कुछ सहकारी समितियां बड़ी भी हैं; किसी सहकारी समिति में 70-80 परिवार हैं, किसी में 100 से ज्यादा परिवार हैं और

किसी में कई सौ परिवार हैं।

इनमें से ज्यादातर सहकारी समितियों का स्वरूप अर्ध-समाजवादी है, लेकिन इनमें कुछ सहकारी समितियां ऐसी भी हैं जो समाजवादी स्वरूप वाली उन्नत स्तर की सहकारी समितियों के रूप में विकसित हो चुकी हैं।

हमारे देश के कृषि-उत्पादन में किसानों की सहकारिता आन्दोलन के विकास के साथ-साथ थोड़े से समाजवादी राजकीय फार्मों की स्थापना भी की गई है। 1957 तक हमारे यहां 3,038 राजकीय फार्म हो जाएंगे, जो 1,68,70,000 मू जमीन पर खेतीबाड़ी करने लगेंगे। इनमें से 141 फार्म मशीनीकृत होंगे। (इनमें 1952 में मौजूद फार्म और पहली पंचवर्षीय योजना की अवधि में कायम किए जाने वाले फार्म, ये दोनों ही प्रकार के फार्म शामिल हैं), जिनमें 75,80,000 मू जमीन पर खेतीबाड़ी की जाएगी, तथा 2,897 फार्म स्थानीय प्रशासन के अधीन गैर-मशीनीकृत राजकीय फार्म होंगे, जिनमें 92,90,000 मू जमीन पर खेतीबाड़ी की जाएगी। दूसरी और तीसरी पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में राजकीय कृषि-उत्पादन का भारी विकास किया जाएगा।

1955 के वसन्त में हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने फैसला किया था कि कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों की संख्या बढ़ाकर दस लाख कर दी जानी चाहिए। इसका मतलब यह है कि वर्तमान 6,50,000 सहकारी समितियों में केवल 3,50,000 यानी 50 प्रतिशत से कुछ ज्यादा, सहकारी समितियां और बढ़ाई जाएंगी। मुझे लगता है कि यह बढ़ोतरी जरा कम है। शायद 6,50,000 की संख्या को लगभग दुगुना किया जा सकता है, यानी कोई 13,00,000 तक बढ़ाया जा सकता है, ताकि कुछ सीमान्त क्षेत्रों को छोड़कर, देश के 2,00,000 से कुछ ज्यादा श्याङों में से हर श्याङ में एक या एक से ज्यादा छोटी-छोटी अर्ध-समाजवादी स्वरूप वाली कृषि-उत्पादक सहकारी समितियां नमूने के तौर पर कायम की जा सकें। साल दो साल में ये सहकारी समितियां अनुभव प्राप्त कर लेंगी और पुरानी हो जाएंगी तथा दूसरे लोग उनसे सीखने लगेंगे। अब से अक्तूबर 1956 की शरद की फसल काटने तक अभी चौदह महीने का समय बाकी है, और सहकारी समितियों की स्थापना करने की इस योजना को पूरा करना सम्भव है। मैं उम्मीद करता हूं कि विभिन्न प्रान्तों व स्वायत्त प्रदेशों के जिम्मेदार साथी, वापस लौटने के बाद इस मामले पर विचार विमर्श करेंगे, अपने क्षेत्र की ठोस स्थितियों के अनुरूप समुचित योजनाएं बनाएंगे तथा दो महीने के भीतर केन्द्रीय कमेटी के सामने रिपोर्ट पेश करेंगे। तब हम लोग इस मामले पर फिर एक बार विचार विमर्श करेंगे और अन्तिम रूप से फैसला करेंगे।

सवाल है क्या सहकारी समितियों को सुदृढ़ बनाया जा सकता है ? कुछ लोग कहते हैं कि पिछले वर्ष 5,00,000 सहकारी समितियां कायम करने की योजना बहुत बड़ी थी और दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने की प्रवृत्ति की सूचक थी तथा इस वर्ष 3,50,000 सहकारी समितियां कायम करने की योजना भी ऐसी ही है। उन्हें सन्देह है कि अगर इतनी ज्यादा सहकारी समितियों की स्थापना की गई तो उन्हें सुदृढ़ कैसे बनाया जा सकेगा।

क्या उन्हें सुदृढ़ बनाना सम्भव है ?

यह सच है कि न तो समाजवादी औद्योगीकरण कोई सरल कार्य है और न समाजवादी रूपान्तर ही। यह निश्चित है कि लगभग 11 करोड़ किसान परिवारों को व्यक्तिगत

कृषि-उत्पादन की जगह सामूहिक कृषि उत्पादन में लगा लेने तथा उसके बाद कृषि का तकनीकी रूपान्तर करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। लेकिन हमें यह विश्वास होना चाहिए कि हमारी पार्टी जन-समुदाय का नेतृत्व करके इन कठिनाइयों को पार कर सकेगी।

कृषि सहकारिता के सवाल के बारे में, पहले, मेरे विचार से हमें इस बात का यकीन होना चाहिए कि गरीब किसानों तथा नए व पुराने मध्यम किसानों[1] में मौजूद निम्न-मध्यम किसानों के अन्दर समाजवादी रास्ता अपनाने का उत्साह मौजूद है तथा ये दोनों ही सहकारी रूपान्तर के लिए हमारी पार्टी द्वारा किए गए आवाहन पर बड़े उत्साह से अमल कर रहे हैं – यह बात खास तौर पर उन लोगों पर लागू होती है जिनकी राजनीतिक चेतना का स्तर अपेक्षाकृत ऊंचा है – क्योंकि गरीब किसानों को एक कठिन आर्थिक स्थिति का सामना करना पड़ रहा है तथा क्योंकि निम्न-मध्यम किसान अभी खुशहाल नहीं हो पाए, हालांकि उनकी आर्थिक स्थिति मुक्ति से पहले के मुकाबले बेहतर हो गई है।

दूसरे, मेरे विचार से हमें इस बात का यकीन होना चाहिए कि हमारी पार्टी समाजवाद तक पहुंचने में समूचे देश की जनता का नेतृत्व करने में समर्थ है। अगर हमारी पार्टी जनता की महान जनवादी क्रान्ति का विजय की ओर नेतृत्व करने में तथा मजदूर वर्ग की अगुवाई में जनता का जनवादी अधिनायकत्व कायम करने में सफल हो सकी है तो यह निश्चित है कि वह लगभग पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में समूचे राष्ट्र का नेतृत्व करके समाजवादी औद्योगीकरण का कार्य तथा कृषि, दस्तकारी और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर का कार्य भी बुनियादी तौर पर पूरा कर सकेगी। कृषि के क्षेत्र में भी हमारे पास इस बात को साबित करने वाले जोरदार और विश्वसनीय प्रमाण मौजूद हैं, जो किसी भी अन्य क्षेत्र की तुलना में कम नहीं हैं। जरा उन 300 सहकारी समितियों के पहले समूह पर, 13,700 सहकारी समितियों के दूसरे समूह पर और 86,000 सहकारी समितियों के तीसरे समूह पर अथवा कुल 1,00,000 सहकारी समितियों पर तो गौर कीजिए, जिन सबको 1954 के शरद से पहले कायम किया गया है और अब तक सुदृढ़ बनाया जा चुका है। ऐसी सूरत में यह कैसे हो सकता है कि 1954-55 में स्थापित 5,50,000 सहकारी समितियों के चौथे समूह को तथा 1955-56 में कायम की जाने वाली सहकारी समितियों के पांचवें समूह को (अस्थायी तौर पर निर्धारित की गई नियंत्रित संख्या 3,50,000 है, जिसकी अन्तिम रूप से पुष्टि होना अभी बाकी है) सुदृढ़ न बनाया जा सके ?

यह जरूरी है कि हम जन-समुदाय पर भरोसा रखें, पार्टी पर भरोसा रखें। ये दोनों बुनियादी उसूल हैं। अगर हम इन उसूलों को सन्देह की दृष्टि से देखेंगे, तो हमें कोई उपलब्धि प्राप्त नहीं हो पाएगी।

3

हमारे समूचे देहाती इलाकों में सहकारिता पर कदम-ब-कदम अमल करने के लिए यह जरूरी है कि हम अब तक स्थापित सहकारी समितियों की बड़ी संजीदगी के साथ

जांच-पड़ताल करें और उन्हें सुदृढ़ बनाएं।

यह जरूरी है कि हम सहकारी समितियों के गुण पर जोर दें तथा गुण की उपेक्षा करके केवल उनकी संख्या और उनमें शामिल होने वाले परिवारों की संख्या बढ़ाते जाने पर जोर देने की प्रवृत्ति का विरोध करें। इसलिए यह जरूरी है कि हम सहकारी समितियों की जांच-पड़ताल व सुदृढ़ीकरण के काम पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान दें।

जांच-पड़ताल व सुदृढ़ीकरण का यह काम साल में सिर्फ एक बार नहीं बल्कि दो या तीन बार किया जाना चाहिए। कुछ सहकारी समितियों में यह काम इस वर्ष की पहली छमाही में एक बार किया जा चुका है (जाहिर है, कुछ स्थानों में इसे गम्भीर प्रयास के बिना बड़ी लापरवाही के साथ किया गया है)। मेरा सुझाव है कि इस वर्ष शरद और जाड़े के मौसम में इन सहकारी समितियों की जांच-पड़ताल व सुदृढ़ीकरण का काम दूसरी बार किया जाय, तथा अगले वर्ष वसन्त और गरमियों के मौसम में तीसरी बार किया जाय। मौजूदा 6,50,000 सहकारी समितियों में से 5,50,000 नई हैं, जिन्हें पिछले जाड़ों में या इस वर्ष वसन्त में स्थापित किया गया है, तथा इनमें अनेक प्रथम श्रेणी की सहकारी समितियां[2] भी हैं, जिन्हें अपेक्षाकृत सुदृढ़ बनाया जा चुका है। अगर 1,00,000 पुरानी और सुदृढ़ बनाई गई सहकारी समितियों को जोड़ दिया जाय तो अब तक सुदृढ़ बनाई गई सहकारी समितियों की संख्या किसी भी रूप में कम नहीं रह जाती। क्या ये सहकारी समितियां कदम-ब-कदम अन्य सहकारी समितियों को सुदृढ़ बनाने में सहायता कर सकती हैं ? इसका उत्तर निश्चित रूप से हां में होना चाहिए।

हमें किसानों और कार्यकर्ताओं के समाजवादी उत्साह की, चाहे वह थोड़ा ही क्यों न हो, कद्र करनी चाहिए तथा ऐसे उत्साह पर ठण्डा पानी नहीं उड़ेल देना चाहिए। हमें सहकारी समितियों के सदस्यों और कार्यकर्ताओं के तथा काउण्टी, जिले व श्याङ के कार्यकर्ताओं के दुख-सुख का भागीदार बन जाना चाहिए, और उनके उत्साह पर ठण्डा पानी नहीं उड़ेल देना चाहिए।

सहकारी समितियों को भंग करने का फैसला तब तक नहीं किया जाना चाहिए जब तक कि उनके सभी अथवा लगभग सभी सदस्य उन्हें न चलाने का इरादा न कर लें। अगर किसी सहकारी समिति के कुछ सदस्य अलग होने का इरादा कर लें, तो उन्हें अलग होने दिया जाय तथा अधिकतर लोग उनमें बने रहें और उसे चलाते रहें। अगर बहुमत उसे चलाने का दृढ़ता से विरोध करे और अल्पमत उसे चलाना चाहे, तो बहुमत को अलग होने दिया जाय तथा अल्पमत उसमें बना रहे और उसे चलाता रहे। अगर हालत यहां तक पहुंच गई तो भी कोई बात नहीं। हपे प्रान्त की एक छोटी सी सहकारी समिति में, जिसमें केवल छः परिवार थे, तीन पुराने मध्यम किसान परिवारों ने उसमें बने रहने से दृढ़ता से इनकार कर दिया और उन्हें उससे अलग होने दिया गया, लेकिन बाकी तीन गरीब किसान परिवारों[3] ने कहा कि वे हर सूरत में सहकारी समिति में बने रहेंगे। उन्होंने ऐसा ही किया और उक्त सहकारी समिति को बचा लिया। वास्तव में जो दिशा इन तीन गरीब किसान परिवारों ने अपनाई है वही दिशा देश के 50 करोड़ किसान अपनाने जा रहे हैं। वे तमाम किसान जो इस समय व्यक्तिगत खेती कर रहे हैं, अन्ततोगत्वा वही रास्ता अपनाने जा रहे हैं जिसे इन तीन गरीब किसान परिवारों ने दृढ़तापूर्वक अपनाया है।

चच्याङ प्रान्त में "दृढ़ता से सिकुड़ने" की नीति अपनाए जाने की वजह से (यह नीति चच्याङ प्रान्तीय कमेटी के फैसले पर आधारित नहीं थी), प्रान्त की 53,000 सहकारी समितियों में से 15,000 सहकारी समितियां (जिनमें 4,00,000 किसान परिवार शामिल थे) एक ही प्रहार से भंग कर दी गईं। इसके परिणामस्वरूप जन-समुदाय और कार्यकर्ताओं में भारी असन्तोष फैल गया, तथा यह एक बिलकुल गलत काम था। "दृढ़ता से सिकुड़ने" की इस नीति का निर्णय घबराहट की स्थिति में किया गया था। केन्द्रीय कमेटी की मंजूरी के बिना इतना बड़ा कदम उठाया जाना भी गलत था। यही नहीं, अप्रैल 1955 में केन्द्रीय कमेटी यह चेतावनी दे चुकी थी : "1953 की ही तरह सहकारी समितियों को बड़े पैमाने पर भंग करने की गलती न दोहराएं, वरना आपको फिर एक बार आत्म-आलोचना करनी पड़ेगी"। फिर भी कुछ साथी इस चेतावनी को अनसुनी कर रहे हैं।

मुझे ऐसा लगता है कि सफलता प्राप्त होने पर दो प्रकार की अनुचित प्रवृत्तियां दिखाई देती हैं। एक प्रवृत्ति है कामयाबी के नशे में चूर हो जाना, जिसके कारण लोगों का दिमाग चढ़ जाता है और "वामपंथी" भटकाव वाली गलतियां होने लगती हैं। इसमें सन्देह नहीं कि यह एक बुरी बात है। दूसरी प्रवृत्ति है कामयाबी से डरना, जिसके कारण "दृढ़ता से सिकुड़ने" की गलती और दक्षिणपंथी भटकाव वाली गलतियां होने लगती हैं। यह भी उतनी ही बुरी बात है। इस समय दूसरी प्रवृत्ति मुसीबत पैदा कर रही है, क्योंकि कुछ साथी कई लाख छोटी-छोटी सहकारी समितियों से डर रहे हैं।

4

सहकारी समितियों की स्थापना से पहले तैयारी का काम बड़ी संजीदगी के साथ और सुचारु रूप से किया जाना जरूरी है।

हमें शुरू से ही गुण पर ध्यान देना चाहिए तथा केवल परिमाण के पीछे दौड़ने की प्रवृत्ति का विरोध करना चाहिए।

बिना तैयारी के कोई लड़ाई न लड़ो, ऐसी कोई लड़ाई न लड़ो जिसमें विजय प्राप्त करने की पक्की गारंटी न हो। यह क्रान्तिकारी युद्धों के दौरान हमारी पार्टी का एक सुप्रसिद्ध नारा रहा है। इसे समाजवादी निर्माण के कार्य पर भी लागू किया जा सकता है। सफलता की पक्की गारण्टी करने के लिए यह जरूरी है कि हम तैयारी करें, इतना ही नहीं, भरपूर तैयारी करें। किसी प्रान्त, प्रिफेक्चर या काउण्टी में कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों के नए समूह की स्थापना करने से पहले तैयारी का बहुत सा काम करना आवश्यक है। इस काम में मुख्य रूप से निम्नोक्त बातें शामिल की जानी चाहिए :

(1) गलत विचारों की आलोचना करो तथा पिछले काम के अनुभवों का निचोड़ निकालो।

(2) कृषि सहकारिता के बारे में हमारी पार्टी के उसूलों, नीतियों और उपायों का किसान जन समुदाय के बीच व्यवस्थित रूप से बार-बार प्रचार करो। ऐसा करते समय हमें न सिर्फ सहकारी रूपान्तर के फायदों को समझाना चाहिए बल्कि उन कठिनाइयों को भी बताना चाहिए जिनका सामना रास्ते में करना पड़ेगा, ताकि किसान लोग मानसिक रूप से पूरी तरह तैयार हो जाएं।

(3) समूचे प्रान्त, प्रिफेक्चर, काउण्टी, जिले या श्याङ की ठोस स्थिति की रोशनी में कृषि सहकारिता का विकास करने के लिए एक चौतरफा योजना बनाओ तथा उसके अनुरूप एक वार्षिक योजना बनाओ।

(4) सहकारी समितियों की स्थापना करने के लिए अल्पकालीन कोर्सों के जरिए कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करो।

(5) कृषि-उत्पादक आपसी सहयोग दलों का बड़े पैमाने पर और बड़ी संख्या में विकास करो, तथा जब भी सम्भव हो, इन दलों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करो कि वे एक दूसरे से मिलकर संयुक्त आपसी सहयोग दलों के रूप में संगठित हो जाएं, तथा इस प्रकार उनके एक कदम और आगे बढ़कर सहकारी समितियों के रूप में संगठित होने के लिए एक बुनियाद तैयार कर दो।

अगर यह सब कर दिया गया तो सहकारी समितियों के विकास में गुण और परिमाण की एकता की समस्या को बुनियादी रूप से हल करना सम्भव हो जाएगा। लेकिन फिर भी यह आवश्यक होगा कि सहकारी समितियों के प्रत्येक समूह की स्थापना के फौरन बाद जांच-पड़ताल व सुदृढ़ीकरण का काम किया जाय।

सहकारी समितियों के किसी समूह की स्थापना के बाद उसे सुदृढ़ बनाया जा सकता है या नहीं, यह पहले इस बात पर निर्भर है कि तैयारी का काम कितनी अच्छी तरह किया जाता है, तथा दूसरे इस बात पर निर्भर है कि बाद में जांच-पड़ताल व सुदृढ़ीकरण का काम कितनी अच्छी तरह किया जाता है।

सहकारी समितियों की स्थापना के काम में और जांच-पड़ताल व सुदृढ़ीकरण के काम में श्याङ की पार्टी व नौजवान संघ की शाखाओं पर निर्भर रहना जरूरी है। यही कारण है कि इन दोनों कामों को देहाती इलाकों में पार्टी व नौजवान संघ के संगठनों का निर्माण करने और उन्हें सुदृढ़ बनाने के काम के साथ घनिष्ठ रूप से जोड़ देना जरूरी है।

चाहे सहकारी समितियों की स्थापना का काम हो अथवा उनकी जांच-पड़ताल व सुदृढ़ीकरण का, देहाती इलाकों के स्थानीय कार्यकर्ताओं को उसकी मुख्य शक्ति होना चाहिए, तथा उन्हें जिम्मेदारी उठाने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए और इस सम्बन्ध में उनसे अनुरोध किया जाना चाहिए, जबकि ऊपर से भेजे गए कार्यकर्ताओं को उसकी सहायक शक्ति होना चाहिए, जिनका कार्य मार्गदर्शन करना और सहायता करना हो, न कि हर चीज को अपने हाथ में लेना।

5

उत्पादन के क्षेत्र में कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों के लिए यह जरूरी है कि वे

व्यक्तिगत खेती करनेवाले किसानों और आपसी सहयोग दलों की तुलना में अधिक ऊंची उपज प्राप्त करें। उनकी उपज को व्यक्तिगत खेती करनेवाले किसानों या आपसी सहयोग दलों के स्तर पर नहीं रह जाना चाहिए, क्योंकि यह उनकी असफलता का द्योतक होगा; अगर ऐसी बात है तो फिर सहकारी समितियों की स्थापना ही क्यों की जाय ? उपज गिरने देने की न और भी इजाजत नहीं है। अब तक स्थापित 6,50,000 कृषि उत्पादक सहकारी समितियों में 80 प्रतिशत से ज्यादा ऐसी हैं जिन्होंने अपनी उपज बढ़ा ली है। यह बड़ी अच्छी बात है और इससे यह जाहिर होता है कि उनके सदस्य बड़े उत्साह के साथ उत्पादन में लगे हुए हैं, तथा सहकारी समितियां आपसी सहयोग दलों से बेहतर हैं और व्यक्तिगत खेती से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं।

उपज बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि :

(1) स्वेच्छा से शामिल होने और आपसी लाभ के उसूलों पर कायम रहा जाय;

(2) प्रबन्ध-व्यवस्था (उत्पादन का नियोजन व प्रशासन, श्रम का संगठन इत्यादि) को बेहतर बनाया जाय;

(3) खेतीबाड़ी की तकनीकों (गहरी जुताई व गहन सूक्ष्म खेती करना, छोटे छोटे गुच्छों में घनी रोपनी करना, दो या तीन फसलें उगाने वाले क्षेत्र का विस्तार करना, बेहतर किस्म के बीज बोना, नई किस्म के कृषि औजारों का प्रचार-प्रसार करना, वनस्पति रोगों और हानिकारक कीड़े मकोड़ों का मुकाबला करना, इत्यादि) को समुन्नत किया जाय; तथा

(4) उत्पादन के साधनों (खेतिहर जमीन, खाद, जल संरक्षण परियोजनाओं, जुताई-ढुलाई के काम आने वाले पशुओं, कृषि औजारों, इत्यादि) को बढ़ाया जाय।

सहकारी समितियों को सुदृढ़ बनाने और उत्पादन बढ़ाने की गारण्टी करने के लिए ये सब अनिवार्य शर्तें हैं।

स्वेच्छा से शामिल होने और आपसी लाभ के उसूलों पर कायम रहने के लिए हमें इस समय निम्नोक्त समस्याओं की तरफ ध्यान देना चाहिए :

(1) क्या जुताई-ढुलाई के काम आने वाले पशुओं और बड़े कृषि-औजारों को शेयर के रूप में सहकारी समिति में शामिल करने की व्यवस्था को साल दो साल के लिए टाल देना बेहतर होगा या नहीं, तथा क्या उनके उचित दाम लगाए गए हैं या नहीं और क्या उनकी कीमत मालिकों को चुकाने की अवधि बहुत लम्बी रखी गई है या नहीं ?

(2) क्या जमीन के शेयर पर आधारित भुगतान और श्रम पर आधारित भुगतान के बीच समुचित अनुपात मौजूद है या नहीं ?

(3) सहकारी समिति अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए धनराशि कैसे जमा करे ?

(4) क्या कुछ सदस्यों की श्रमशक्ति का एक अंश कुछ सहायक धन्धों में लगाया जा सकता है या नहीं ?

(चूंकि जिन कृषि उत्पादक सहकारी समितियों की स्थापना हम कर रहे हैं वे आम

तौर पर स्वरूप की दृष्टि से अभी अर्ध-समाजवादी ही हैं, इसलिए इन चार समस्याओं को समुचित ढंग से हल करने की तरफ ध्यान देना जरूरी है, ताकि गरीब किसानों और मध्यम किसानों के बीच आपसी लाभ के उसूल का उल्लंघन न हो पाए, जिसके बिना स्वेच्छा से शामिल होने का कोई आधार ही नहीं रह जाएगा।)

(5) सदस्यों के निजी इस्तेमाल के लिए कितनी भूमि सुरक्षित रखी जाय ?

(6) सहकारी समिति के सदस्यों की वर्ग-संरचना की समस्या। वगैरह-वगैरह।

यहां मैं सहकारी समिति के सदस्यों की वर्ग-संरचना की समस्या की चर्चा करना चाहता हूं। मेरा विचार है, आने वाले साल दो साल में, जहां कहीं सहकारी आन्दोलन अभी-अभी फैलना शुरू हुआ हो अथवा हाल ही में फैला हो, जैसा कि इस समय अधिकतर इलाकों में हो रहा है, हमें पहले जनता की निम्नोक्त श्रेणियों के बीच से सक्रिय तत्वों को संगठित होने देना चाहिए : (1) गरीब किसान, (2) नए मध्यम किसानों में मौजूद निम्न-मध्यम किसान, तथा (3) पुराने मध्यम किसानों में मौजूद निम्न मध्यम किसान। लेकिन उनमें से जो लोग फिलहाल उत्साह न दिखाएं, उन्हें उनकी मरजी के खिलाफ सहकारी समितियों के अन्दर नहीं घसीटा जाना चाहिए। उन्हें समूहों में सहकारी समितियों में तभी शामिल किया जा सकेगा जब उनकी राजनीतिक चेतना का स्तर ऊंचा हो जाएगा तथा वे सहकारी समितियों में दिलचस्पी लेने लगेंगे। ये श्रेणियां आर्थिक हैसियत की दृष्टि से कम या ज्यादा मात्रा में लगभग एक जैसी हैं। ये लोग या तो अब भी कठिन जीवन व्यतीत कर रहे हैं (जैसे गरीब किसान, जिन्हें जमीन मिलने और मुक्ति से पहले के मुकाबले काफी अच्छी हालत होने के बावजूद अब भी श्रमशक्ति, जुताई-ढुलाई के काम आने वाले पशुओं और कृषि औजारों की कमी के कारण अपनी जिन्दगी में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है) अथवा अब भी खुशहाल नहीं हो पाए (जैसे निम्न-मध्यम किसान)। इसलिए इन सब लोगों में सहकारी समितियां कायम करने का उत्साह मौजूद है। तथापि किसी न किसी कारण, उनके उत्साह की मात्रा एक जैसी नहीं है – कुछ लोग बहुत उत्सुक हैं, कुछ लोग फिलहाल उतने उत्सुक नहीं हैं, और कुछ अन्य लोग अभी इन्तजार करना चाहते हैं। इसलिए हमें चाहिए कि उन सब लोगों को शिक्षित करने के लिए जो अभी सहकारी समितियों में शामिल नहीं होना चाहते, चाहे वे गरीब या निम्न-मध्यम किसान ही क्यों न हों, एक अरसे तक कोशिश करते रहें, तब तक धीरज के साथ इन्तजार करते रहें जब तक वे लोग राजनीतिक रूप से अधिक जागरूक नहीं हो जाते, तथा स्वेच्छा के उसूल का उल्लंघन करके उनकी मरजी के खिलाफ उन्हें सहकारी समिति के अन्दर हरगिज न घसीटें।

जहां तक नए और पुराने उच्च-मध्यम किसानों यानी उन मध्यम किसानों का सवाल है जो आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत खुशहाल हैं, केवल उन लोगों को छोड़कर जो समाजवादी रास्ते पर चलने के लिए राजनीतिक रूप से पर्याप्त जागरूक हैं और सचमुच सहकारी समितियों में शामिल होना चाहते हैं, उन्हें फिलहाल सहकारी समितियों में शामिल नहीं किया जाना चाहिए, और उनकी मरजी के खिलाफ तो किसी भी हालत में अन्दर नहीं घसीटा जाना चाहिए। इसका कारण यह है कि वे लोग भी समाजवादी रास्ता अपनाने के लिए राजनीतिक रूप से

पर्याप्त जागरूक नहीं हो पाए; वे लोग सहकारी समितियों में शामिल होने का फैसला सिर्फ तभी करेंगे जब देहाती इलाकों में लोगों की बहुसंख्या सहकारी समितियों में शामिल हो चुकी होगी, अथवा सहकारी समितियों की प्रति मू उपज उनकी अपनी उपज के बराबर या उससे ज्यादा होने लगेगी तथा उन्हें इस बात का एहसास हो जाएगा कि व्यक्तिगत रूप से खेती करते रहना हर लिहाज से उनके हितों के प्रतिकूल है, तथा यह कि सहकारी समिति में शामिल हुए बिना वे अपने हितों को आगे नहीं बढ़ा सकते।

इसलिए सबसे पहले उन लोगों को, जो गरीब हैं या ज्यादा खुशहाल नहीं हैं (उनकी कुल संख्या देहातों की जनसंख्या का लगभग 60-70 प्रतिशत है), उनकी राजनीतिक चेतना के स्तर के अनुरूप गोलबन्द किया जाना चाहिए तथा आगामी कुछ वर्षों के अन्दर समूहों में सहकारी समितियों की स्थापना करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए, और इन सहकारी समितियों में खुशहाल किसानों को सिर्फ तभी शामिल किया जाना चाहिए। इस प्रकार हम फरमानशाही से बच सकेंगे।

आगामी कुछ वर्षों में, उन तमाम क्षेत्रों में जहां सहकारी रूपान्तर का काम अभी बुनियादी रूप से पूरा नहीं हो पाया, सहकारी समितियों में जमींदारों और धनी किसानों को हरगिज शामिल नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन जिन क्षेत्रों में यह काम बुनियादी रूप से पूरा किया जा चुका है, उनमें जो सहकारी समितियां सुदृढ़ हो चुकी हैं उनमें कुछ शर्तों पर, मंजिल-दर-मंजिल और समूहों में, उन भूतपूर्व जमींदारों व धनी किसानों को शामिल किया जा सकता है जो शोषण करना काफी पहले छोड़ चुके हैं, श्रम करते हैं और कानून का पालन करते हैं, तथा उन्हें श्रम के जरिए सुधारना जारी रखने के साथ-साथ सामूहिक श्रम में भाग लेने की इजाजत भी दी जा सकती है।

6

जहां तक सहकारी समितियों के विकास का ताल्लुक है, इस समय समस्या यह नहीं है कि दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने की प्रवृत्ति की आलोचना की जाय। यह कहना गलत है कि सहकारी समितियों के विकास की वर्तमान स्थिति ''वास्तविक सम्भावनाओं से आगे बढ़ चुकी है'' अथवा ''जन-समुदाय की राजनीतिक चेतना के स्तर से आगे बढ़ चुकी है'' वास्तविकता इस प्रकार है : चीन में आबादी बहुत बड़ी और खेतिहर भूमि अपर्याप्त है (सारे देश में प्रति व्यक्ति औसतन तीन मू और दक्षिणी प्रान्तों के अनेक इलाकों में प्रति व्यक्ति औसतन केवल एक मू या उससे भी कम खेतिहर भूमि है), प्राकृतिक विपत्तियां अक्सर आती रहती हैं (प्रतिवर्ष खेतिहर भूमि के विशाल क्षेत्रों को बाढ़, सूखे, तूफान, पाले, ओले अथवा हानिकारक कीड़े-मकोड़ों का न्यूनाधिक मात्रा में सामना करना पड़ता है) तथा खेतीबाड़ी के पिछड़े हुए तरीके इस्तेमाल किए जाते हैं। परिणामस्वरूप, हालांकि भूमि-सुधार के बाद किसान समुदाय के जीवन में सुधार हुआ है अथवा अच्छा खासा सुधार हुआ है, फिर भी उनमें बहुत से लोग अब भी कठिनाई में हैं अथवा खुशहाल नहीं हैं, तथा जो लोग खुशहाल हैं उनकी संख्या अपेक्षाकृत कम है, और इसलिए ज्यादातर किसान समाजवादी रास्ते पर चलने के लिए उत्साह

प्रदर्शित कर रहे हैं। यह उत्साह चीन के समाजवादी औद्योगीकरण के जरिए और उसकी उपलब्धियों के जरिए लगातार बढ़ता जा रहा है। उनके लिए समाजवाद ही एकमात्र रास्ता है। ऐसे किसानों की संख्या देहातों की कुल आबादी में 60-70 प्रतिशत है। दूसरे शब्दों में, किसानों की बहुसंख्या के लिए अपनी गरीबी दूर करने, अपने रहन सहन में सुधार करने और प्राकृतिक विपत्तियों का मुकाबला करने का एकमात्र उपाय है एकताबद्ध होकर समाजवाद के प्रशस्त पथ पर आगे बढ़ते जाना। गरीब किसानों और गैर-खुशहाल किसानों के समुदाय को इस बात का बड़ी तेजी से एहसास होता जा रहा है। खुशहाल और अपेक्षाकृत खुशहाल किसान, जिनकी संख्या देहातों की कुल आबादी में केवल 20-30 प्रतिशत है, ढुलमुलपन दिखा रहे हैं, और उनमें से कुछ लोग पूंजीवादी रास्ता अपनाने की जी-तोड़ कोशिश कर रहे हैं। जैसा कि मैं अभी बता चुका हूं, गरीब किसानों और गैर-खुशहाल किसानों में भी बहुत से लोग ऐसे हैं जो अपनी निम्न स्तर की राजनीतिक चेतना के कारण फिलहाल इन्तजार करने का रवैया अपना रहे हैं तथा वे भी ढुलमुलपन दिखा रहे हैं; फिर भी खुशहाल किसानों की तुलना में उनके लिए समाजवाद को स्वीकार करना ज्यादा आसान है। वास्तविकता दरअसल ऐसी ही है। लेकिन हमारे कुछ साथी इन तथ्यों की उपेक्षा करते हैं तथा यह सोचते हैं कि कई लाख नव-स्थापित छोटी-छोटी अर्ध-समाजवादी कृषि-उत्पादक सहकारी समितियां ''वास्तविक सम्भावनाओं से आगे बढ़ चुकी हैं'' अथवा ''जन-समुदाय की राजनीतिक चेतना के स्तर से आगे बढ़ चुकी हैं''। इससे यह जाहिर होता है कि उनकी नजरें भारी बहुसंख्या, यानी गरीब किसानों और गैर-खुशहाल किसानों की उपेक्षा करके खुशहाल किसानों की थोड़ी सी संख्या पर लगी हुई हैं। यह एक प्रकार की गलत धारणा है।

यही नहीं, ये साथी देहातों में कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व की शक्ति को तथा व्यापक किसान समुदाय द्वारा किए जाने वाले पार्टी के हार्दिक समर्थन को कम करके आंकते हैं। वे समझते हैं कि अब तक कायम की गई कई लाख छोटी-छोटी सहकारी-समितियों को सुदृढ़ बनाना पार्टी के लिए काफी मुश्किल है, तथा इसलिए बड़े पैमाने के विकास की बात सोचना बिलकुल असम्भव है। वे कृषि सहकारिता का नेतृत्व करने के लिए पार्टी द्वारा किए जाने वाले वर्तमान कार्य के बारे में बड़े पैमाने पर निराशाजनक ढंग से यह कहते हैं कि वह ''कार्यकर्ताओं के अनुभव के स्तर से आगे बढ़ चुका है''। यह सच है कि समाजवादी क्रान्ति एक नई किस्म की क्रान्ति है। पहले हमारा अनुभव केवल पूंजीवादी-जनवादी क्रान्ति तक ही सीमित था तथा समाजवादी क्रान्ति का हमें कोई अनुभव नहीं था। फिर भी ऐसा अनुभव हमें आखिर कैसे प्राप्त हो सकता है ? क्या हाथ पर हाथ धरे चुपचाप बैठे रहकर और इन्तजार करके ? अथवा समाजवादी क्रान्ति के संघर्षों में कूदकर और क्रान्ति की प्रक्रिया के दौरान शिक्षा प्राप्त करके ? पंचवर्षीय योजना को कार्यान्वित किए बिना अथवा समाजवादी औद्योगीकरण के काम को हाथ में लिये बिना भला हम औद्योगीकरण का अनुभव कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? पंचवर्षीय योजना का एक भाग कृषि सहकारिता से सम्बन्धित है। अगर हम हर श्याङ अथवा हर गांव में एक या एक से ज्यादा कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों की स्थापना करने में किसानों का नेतृत्व नहीं करते, तो ''कार्यकर्ताओं के अनुभव का स्तर'' आखिर कहां से आएगा तथा वह आखिर कैसे उन्नत होगा ? जाहिर है, यह विचार गलत है कि कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों के

विकास की वर्तमान स्थिति ''कार्यकर्ताओं के अनुभव के स्तर से आगे बढ़ चुकी है''। यह एक अन्य प्रकार की गलत धारणा है।

जिस ढंग से ये साथी समस्याओं को देखते हैं वह गलत है। ये लोग सारभूत अथवा मुख्य पहलू को नहीं देखते बल्कि असारभूत अथवा गौण पहलू पर जोर देते हैं। यहां यह बता देना चाहिए कि असारभूत अथवा गौण पहलू में निहित समस्याओं को नजरअन्दाज न किया जाए तथा उन्हें एक-एक करके निपटाया जाए। लेकिन उन्हें सारभूत अथवा मुख्य पहलू न समझा जाए, अन्यथा हम अपनी दिशा खो बैठेंगे।

सबसे पहले हमारे अन्दर यह विश्वास होना जरूरी है कि व्यापक किसान समुदाय पार्टी के नेतृत्व में कदम-ब-कदम समाजवादी रास्ता अपनाने के लिए तैयार है, तथा दूसरे यह कि हमारी पार्टी इस रास्ते पर किसानों का नेतृत्व करने में समर्थ है। ये दोनों बातें मामले का सारतत्व हैं, उसकी मुख्य धारा हैं। अगर हमारे अन्दर यह विश्वास मौजूद न रहा तो समाजवाद का निर्माण लगभग तीन पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में बुनियादी तौर पर पूरा करना हमारे लिए असम्भव हो जाएगा।

7

सोवियत संघ ने समाजवाद के निर्माण में जो महान ऐतिहासिक अनुभव प्राप्त किया है, उसने हमारी जनता को प्रेरित किया है और चीन में समाजवाद का निर्माण करने के लिए हमारे अन्दर पूर्ण विश्वास उत्पन्न कर दिया है। लेकिन इस अन्तर्राष्ट्रीय अनुभव के बारे में भी अलग-अलग मत हैं। कुछ साथी कृषि सहकारिता का विकास समाजवादी औद्योगीकरण के साथ कदम मिलाकर करने की हमारी केन्द्रीय कमेटी की नीति को स्वीकार नहीं करते, हालांकि इस नीति की प्रामाणिकता सोवियत संघ में सिद्ध हो चुकी है। वे लोग जहां यह मानते हैं कि औद्योगीकरण की जो रफ्तार इस समय निर्धारित की गई है वह ठीक है, वहां यह भी कहते हैं कि कृषि सहकारिता को बेहद धीमी रफ्तार से बढ़ाना चाहिए तथा उसके लिए औद्योगीकरण की रफ्तार के साथ कदम मिलाना जरूरी नहीं है। यह सोवियत संघ के अनुभव की अवहेलना करना है। ये साथी यह बात नहीं समझ पाते कि समाजवादी औद्योगीकरण को कृषि के सहकारी रूपान्तर से अलग रखकर पूरा नहीं किया जा सकता। सबसे पहले, जैसा कि सभी लोग जानते हैं, चीन में तिजारती अनाज और औद्योगिक कच्चे माल के उत्पादन का स्तर अभी नीचा है, जबकि इन चीजों की राजकीय मांग प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है; और यह एक तीव्र अन्तरविरोध है। अगर हम कृषि सहकारिता की समस्या को लगभग तीन पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में बुनियादी तौर पर हल नहीं कर पाएंगे, यानी अगर हमारी कृषि पशु-चालित कृषि औजारों से होने वाली छोटे पैमाने की खेती से बड़े पैमाने की मशीनीकृत खेती में छलांग न लगा सके तथा साथ ही अगर नई बस्तियां बसाने वालों के जरिए मशीनों का इस्तेमाल करके परती भूमि को खेती योग्य बनाने का काम राज्य द्वारा व्यापक रूप से संगठित न किया गया (तीन पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में 40 करोड़ से 50 करोड़ मू परती भूमि को खेती योग्य बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है), तो हम तिजारती अनाज और औद्योगिक कच्चे माल की निरन्तर

बढ़ती मांग तथा मुख्य फसलों की मौजूदा नीची उपज के बीच के अन्तरविरोध को हल करने में असफल रहेंगे, तथा अपने समाजवादी औद्योगीकरण के काम में भीषण कठिनाइयों में फंस जाएंगे और उसे पूरा नहीं कर पाएंगे। सोवियत संघ ने, जिसे समाजवाद का निर्माण करते समय इसी समस्या का सामना करना पड़ा था, कृषि के सामूहिकीकरण के कार्य का योजनाबद्ध नेतृत्व और विकास करके इस समस्या को हल किया था। और हम भी अपनी समस्या को केवल इसी प्रकार हल कर सकते हैं। दूसरी बात यह है कि हमारे कुछ साथियों ने निम्नोक्त दो चीजों के बीच के सम्बन्धों पर, यानी इस बात पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया है कि भारी उद्योग, जो समाजवादी औद्योगीकरण की सबसे अधिक महत्वपूर्ण शाखा है, कृषि के लिए ट्रैक्टरों व अन्य कृषि-यंत्रों, रासायनिक खाद, परिवहन के आधुनिक साधनों, तेल, बिजली इत्यादि का उत्पादन करता है, तथा यह कि इन सब चीजों का इस्तेमाल करना या व्यापक रूप से इस्तेमाल करना केवल एक ऐसी कृषि के आधार पर सम्भव है जिसमें बड़े पैमाने की सहकारी खेती की प्रधानता हो। इस समय हम न सिर्फ समाज-व्यवस्था के क्षेत्र में निजी मिलकियत को सार्वजनिक मिलकियत में बदलने वाली क्रान्ति चला रहे हैं, बल्कि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में दस्तकारी उत्पादन को बड़े पैमाने के आधुनिक मशीनीकृत उत्पादन में बदलने वाली क्रान्ति भी चला रहे हैं तथा ये दोनों ही क्रान्तियां एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। कृषि के क्षेत्र में जो हालत आज हमारे देश में मौजूद है उसे देखते हुए सहकारिता को बड़ी-बड़ी मशीनों के इस्तेमाल से पहले कार्यान्वित करना आवश्यक है (पूंजीवादी देशों में कृषि का विकास पूंजीवादी ढंग से होता है)। इसलिए हम किसी भी सूरत में उद्योग और कृषि को, समाजवादी औद्योगीकरण और कृषि के समाजवादी रूपान्तर को एक दूसरे से असम्बद्ध अथवा एक दूसरे से अलग न समझें तथा किसी भी सूरत में इनमें से किसी एक चीज पर ज्यादा जोर देकर दूसरी की उपेक्षा न करें। इस मामले में भी सोवियत अनुभव हमें रास्ता दिखाता है, लेकिन हमारे कुछ साथी इस पर ध्यान नहीं देते तथा इन मसलों को हमेशा अलग-अलग और असम्बद्ध समझते हैं। तीसरी बात यह है कि हमारे कुछ साथी दो अन्य चीजों के बीच के सम्बन्धों पर, यानी इस बात पर ध्यान देने में भी असफल रहे हैं कि राष्ट्रीय औद्योगीकरण और कृषि के तकनीकी रूपान्तर के लिए विशाल निधि की जरूरत होती है तथा इस निधि का काफी बड़ा हिस्सा कृषि के जरिए संचित किया जाता है। यह काम प्रत्यक्ष कृषि-टैक्स वसूल करने के अलावा किसानों की जरूरत के उपभोक्ता माल भारी तादाद में बनाने वाले हल्के उद्योग का विकास करने के बाद उसके उत्पादनों का किसानों के तिजारती अनाज और हल्के उद्योग के काम आने वाले कच्चे माल के साथ विनिमय करके किया जाता है, जिससे न केवल किसानों और राज्य की भौतिक जरूरतों को पूरा किया जा सके, बल्कि राज्य के लिए निधि भी संचित की जा सके। यही नहीं, हल्के उद्योग का बड़े पैमाने पर विकास करने के लिए यह जरूरी है कि केवल भारी उद्योग का ही नहीं बल्कि कृषि का भी विकास किया जाए। कारण, यह काम लघु-किसान अर्थव्यवस्था के आधार पर नहीं किया जा सकता; इसे बड़े पैमाने की कृषि की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, जिसका तात्पर्य हमारे देश में समाजवादी सहकारी कृषि से है। सिर्फ इसी प्रकार की कृषि के जरिए किसानों की क्रय-शक्ति आज की तुलना में कहीं ज्यादा बढ़ सकती है। यहां भी एक बार सोवियत संघ का अनुभव हमारे सामने मौजूद है, लेकिन हमारे कुछ साथी इसकी

ओर ध्यान नहीं देते। वे लोग, पूंजीपतियों, धनी किसानों अथवा पूंजीवाद की तरफ बढ़ने की स्वत:स्फूर्त प्रवृत्तियां रखने वाले खुशहाल मध्यम किसानों का रुख अपनाते हुए, हमेशा केवल थोड़े से लोगों के हित में सोचते हैं तथा मजदूर वर्ग का रुख अपनाने और समूचे देश व समूची जनता के हित में सोचने में असमर्थ रहते हैं।

8

कुछ साथी ऐसे भी हैं जिन्होंने चीन में कृषि सहकारिता के हमारे मौजूदा काम में तथाकथित उतावलेपन और दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने की प्रवृत्ति के खिलाफ सोवियत संघ की कम्यूनिस्ट पार्टी के इतिहास से एक तरह की दलील खोज निकाली है। क्या 'सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोलशेविक) का इतिहास, संक्षिप्त कोर्स' हमें यह नहीं बताता कि किसी समय सोवियत संघ में बहुत से स्थानीय पार्टी संगठनों ने सामूहिकीकरण की रफ्तार के मसले के बारे में उतावलेपन और दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने की गलती की थी ? क्या हमें इस अन्तर्राष्ट्रीय अनुभव की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए ?

मैं समझता हूं कि हमें सोवियत संघ के इस अनुभव की ओर ध्यान देना चाहिए तथा उतावलेपन व दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने की प्रवृत्ति वाले उन तमाम विचारों का अवश्य विरोध करना चाहिए जो तैयारी के काम की उपेक्षा करते हैं और किसान समुदाय की राजनीतिक चेतना के स्तर की अवहेलना करते हैं; लेकिन ऐसा हरगिज नहीं होना चाहिए कि हम उक्त साथियों को इस बात की इजाजत दे दें कि वे सोवियत संघ के अनुभव को चींटी की चाल से आगे बढ़ने के अपने विचार की पर्दापोशी करने के लिए आवरण के रूप में इस्तेमाल करें।

हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने चीन में कृषि सहकारिता को आखिर किस प्रकार कार्यान्वित करने का फैसला किया है ?

पहले, वह इस योजना को अट्ठारह वर्ष की अवधि में बुनियादी रूप से पूरा कर लेना चाहती है। अक्तूबर 1949 में चीन लोक गणराज्य की स्थापना होने के बाद से 1952 तक के तीन वर्ष से कुछ ज्यादा अरसे को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की पुनर्स्थापना में लगा दिया गया। कृषि के क्षेत्र में हमने इस अवधि में भूमि-सुधार करने और उत्पादन की पुनर्स्थापना करने के अलावा सभी पुराने मुक्त क्षेत्रों में कृषि-उत्पादक आपसी सहयोग दलों के संगठन-कार्य का भारी "चलन" किया, तथा वहां अर्ध-समाजवादी कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों को कायम करना भी शुरू कर दिया और कुछ अनुभव प्राप्त किए। इसके बाद पहली पंचवर्षीय योजना आ गई, जो 1953 में शुरू हो गई थी; तब से अब तक लगभग तीन वर्ष बीत चुके हैं, जिनके दौरान हमारा कृषि सहकारी आन्दोलन समूचे देश में फैलता गया है और हमारा अनुभव भी बढ़ता गया है। चीन लोक गणराज्य की स्थापना से तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक अट्ठारह वर्ष की अवधि बनती है। इस अवधि में, हम समाजवादी औद्योगीकरण तथा दस्तकारी व पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर के साथ-साथ कृषि के समाजवादी रूपान्तर का काम बुनियादी तौर पर पूरा करना चाहते हैं। क्या यह सम्भव है ? सोवियत अनुभव हमें बताता है

कि यह पूर्णतया सम्भव है। सोवियत संघ में गृहयुद्ध 1920 में समाप्त हो गया था, तथा कृषि का सामूहिकीकरण 1921 से 1937 तक के सत्रह वर्षों में और इस कार्य का मुख्य भाग 1929 से 1934 तक के छ: वर्षों में पूरा हो गया था। हालांकि इस काल में सोवियत संघ के कुछ स्थानीय पार्टी संगठन "कामयाबी के नशे में चूर" हो गए, जैसा कि 'सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का इतिहास, संक्षिप्त कोर्स' में उल्लेख किया गया है, लेकिन शीघ्र ही यह गलती सुधार ली गई। अन्त में, सोवियत संघ ने भरपूर प्रयास के जरिए अपनी समूची कृषि के समाजवादी रूपान्तर का कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर लिया तथा साथ ही कृषि के तकनीकी रूपान्तर का भारी कार्य भी पूरा कर लिया। सोवियत संघ द्वारा अपनाया गया रास्ता हमारे लिए एक आदर्श रास्ता है।

दूसरे, कृषि के समाजवादी रूपान्तर के काम में हम कदम-ब-कदम आगे बढ़ने का तरीका अपना रहे हैं। पहला कदम था, किसानों का आवाहन करना कि वे स्वेच्छा से शामिल होने और आपसी लाभ के उसूलों के अनुरूप ऐसे कृषि-उत्पादक आपसी सहयोग दलों को संगठित करें जिनमें समाजवाद के केवल कुछ अंकुर मौजूद हों तथा जिनमें से हर दल में केवल थोड़े से या दस-पन्द्रह परिवारों को शामिल किया गया हो। दूसरा कदम है किसानों का आवाहन करना कि वे स्वेच्छा से शामिल होने और आपसी लाभ के उसूलों के ही अनुरूप, इन आपसी सहयोग दलों के आधार पर छोटी कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों को संगठित करें, ऐसी सहकारी समितियों को संगठित करें जिनका स्वरूप अर्ध-समाजवादी हो तथा जिनकी विशेषता यह हो कि उनमें जमीन को शेयर के रूप में सम्मिलित किया जाए तथा एकीकृत प्रबन्ध की व्यवस्था कायम की जाए। इसके बाद तीसरा कदम होगा किसानों का आवाहन करना कि वे उक्त उसूलों के ही अनुरूप, इन छोटी अर्ध-समाजवादी सहकारी समितियों के आधार पर और अधिक एकजुट हो जाएं तथा बड़े आकार की पूर्ण समाजवादी सहकारी समितियों को संगठित करें। ये कदम उठाने के परिणामस्वरूप किसानों के लिए यह सम्भव हो सकेगा कि वे व्यक्तिगत अनुभव के जरिए कदम-ब-कदम अपनी समाजवादी चेतना को समुन्नत कर लें तथा कदम-ब-कदम अपनी जीवन-शैली को बदल डालें और इस प्रकार उन्हें आकस्मिक परिवर्तन का एहसास कम होगा। ये कदम उठाकर आम तौर पर उपज में पहले एक-दो वर्षों में होने वाली गिरावट से बचा जा सकता है; यही नहीं, उपज में हर वर्ष बढ़ोतरी की गारण्टी करना भी जरूरी है, और ऐसा किया भी जा सकता है। वर्तमान 6,50,000 कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों में 80 प्रतिशत से अधिक ऐसी हैं जिन्होंने अपनी उपज बढ़ा ली है, जबकि केवल 10 प्रतिशत से कुछ अधिक सहकारी समितियां ऐसी हैं जिनकी उपज ज्यों की त्यों बनी हुई है और 10 प्रतिशत से कम सहकारी समितियां ऐसी हैं जिनकी उपज घट गई है। बाद की दोनों श्रेणियों वाली सहकारी समितियों में हालत जरा खराब है, खास तौर पर अन्तिम श्रेणी वाली सहकारी समितियों में, जिनमें उपज घट गई है, तथा ऐसी सहकारी समितियों की जांच पड़ताल करने और उन्हें सुदृढ़ बनाने के लिए भारी प्रयास करना जरूरी है। चूंकि 80 प्रतिशत से अधिक सहकारी समितियों ने अपनी उपज (10 से 30 प्रतिशत के बीच) बढ़ा ली है, चूंकि 10 प्रतिशत से अधिक सहकारी समितियों की उपज पहले वर्ष न तो बढ़ी है और न घटी है, लेकिन जांच-पड़ताल व सुदृढ़ीकरण के बाद वह दूसरे वर्ष बढ़ भी सकती है, तथा चूंकि 10 प्रतिशत

से कम उन सहकारी समितियों में भी जिनकी उपज पहले वर्ष गिर रही थी, जांच पड़ताल व सुदृढ़ीकरण के बाद यह दूसरे वर्ष बढ़ सकती है या कम से कम गिरावट से पहले जैसी बनी रह सकती है, इसलिए कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि हमारे सहकारी आन्दोलन का विकास स्वस्थ रूप से हुआ है तथा यह कि हम उत्पादन-वृद्धि की गारण्टी करने और उपज में गिरावट की स्थिति से बचने में आम तौर पर समर्थ हैं। यही नहीं, ये कदम कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने वाले शानदार पाठ्यक्रम हैं। इस प्रकार सहकारी समितियों के लिए बड़ी तादाद में प्रशासनिक व तकनीकी कर्मचारियों को कदम-ब-कदम प्रशिक्षित किया जा सकता है।

तीसरे, हर वर्ष कृषि सहकारिता के विस्तार के लिए वास्तविक परिस्थिति की रोशनी में एक नियंत्रित संख्या निर्धारित की जानी चाहिए, और इस बात का कई बार निरीक्षण किया जाना चाहिए कि सहकारिता का काम कैसे किया जा रहा है। इस प्रकार प्रतिवर्ष बदलती स्थितियों और सहकारिता के काम में प्राप्त सफलताओं के अनुरूप, हर प्रान्त, काउण्टी और श्याङ में सहकारिता का विस्तार करने के लिए ठोस कदम उठाए जा सकते हैं। कुछ स्थानों में कुछ समय के लिए विस्तार-कार्य रोका जा सकता है, जिससे जांच-पड़ताल व सुदृढ़ीकरण का कार्य किया जा सके; कुछ अन्य स्थानों में विस्तार और जांच-पड़ताल व सुदृढ़ीकरण का कार्य साथ-साथ किया जा सकता है। कुछ सहकारी समितियों में चन्द सदस्यों को अलग होने की इजाजत दी जा सकती है, तथा इक्की-दुक्की सहकारी समिति को अस्थायी रूप से भंग होने की इजाजत भी दी जा सकती है। कुछ स्थानों में नई सहकारी समितियों को बड़ी तादाद में कायम किया जाना चाहिए, जबकि कुछ अन्य स्थानों में वर्तमान सहकारी समितियों में किसान परिवारों की संख्या बढ़ाने के अलावा और किसी तरह की बढ़ोतरी नहीं की जानी चाहिए। हर प्रान्त या काउण्टी में, जब सहकारी समितियों के एक समूह की स्थापना हो जाय तो उनके विस्तार-कार्य को रोक दिया जाना चाहिए, जिससे नए समूह की स्थापना करने से पहले जांच-पड़ताल व सुदृढ़ीकरण के लिए समय मिल जाय। कभी न रुकने देने, कभी मध्यान्तर न होने देने का विचार गलत है। जहां तक सहकारी आन्दोलन की जांच-पड़ताल का ताल्लुक है, पार्टी की केन्द्रीय कमेटी तथा प्रान्तीय, स्वायत्त प्रदेशीय, म्युनिसिपल और प्रिफेक्चर कमेटियों के लिए यह जरूरी है कि वे इसे मजबूती से अपनी गिरफ्त में रखें तथा इस बात की गारण्टी कर दें कि यह काम प्रतिवर्ष केवल एक बार नहीं बल्कि कई बार किया जाएगा। जब भी कोई समस्या खड़ी हो, उसे फौरन हल कर लें; ऐसा नहीं होना चाहिए कि ढेर सारी समस्याएं जमा होने पर ही उन्हें एक साथ हल करने की कोशिश की जाय। समय रहते आलोचना करें; केवल घटना हो जाने के बाद ही आलोचना करने की आदत न लगाएं। मिसाल के लिए इस वर्ष के पहले सात महीनों में केवल केन्द्रीय कमेटी ही देहातों में सहकारिता के सवाल पर विचार करने के लिए देश के विभिन्न भागों के नेतृत्वकारी साथियों के तीन सम्मेलन बुला चुकी है, जिनमें वर्तमान सम्मेलन भी शामिल है। हमारे द्वारा अपनाए जाने वाले उपायों को स्थानीय स्थितियों के अनुरूप बनाने तथा समयोचित मार्गदर्शन करने का यह तरीका इस बात की गारण्टी कर देता है कि हमारे काम में अपेक्षाकृत कम गलतियां होंगी और जो होंगी भी उन्हें जल्दी ही सुधार लिया जाएगा।

ऊपर बताई गई तमाम बातों को ध्यान में रखते हुए क्या हम यह नहीं कह सकते कि हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा कृषि सहकारिता का मार्गदर्शन करने के लिए अपनाई गई नीति एक सही नीति है तथा इसलिए वह इस आन्दोलन के स्वस्थ विकास की गारण्टी कर देती है ? मैं समझता हूं कि हम ऐसा कह सकते हैं और हमें ऐसा कहना भी चाहिए; इस नीति को ''दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने'' की संज्ञा देना सरासर गलत होगा।

9

कुछ साथी मजदूर-किसान संश्रय के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सवाल के प्रति गलत रवैया अपनाते हैं, क्योंकि वे पूंजीपति वर्ग, धनी किसानों अथवा पूंजीवाद की तरफ बढ़ने की स्वत:स्फूर्त प्रवृत्तियां रखने वाले खुशहाल मध्यम किसानों के रुख से प्रस्थान करते हैं। वे लोग यह सोचते हैं कि सहकारी आन्दोलन में वर्तमान परिस्थिति बड़ी खतरनाक है तथा हमें यह सलाह देते हैं कि सहकारिता के मार्ग पर अपने वर्तमान अभियान में हम लोग ''तुरन्त घोड़े से उतर जाएं''। वे हमें चेतावनी देते हैं : ''अगर आप तुरन्त घोड़े से नहीं उतरेंगे तो मजदूर-किसान संश्रय टूटने का खतरा पैदा हो जाएगा''। हम समझते हैं कि सच्चाई ठीक इसके विपरीत है। मजदूर-किसान संश्रय के टूटने का खतरा सिर्फ उस सूरत में पैदा होगा अगर आप तुरन्त घोड़े पर नहीं चढ़ेंगे। यहां केवल एक शब्द का फर्क है – एक तरफ कहा गया है ''उतरेंगे'' और दूसरी तरफ कहा गया है ''चढ़ेंगे'' – तथापि इससे दो कार्यदिशाओं के बीच का फर्क जाहिर हो जाता है। जैसा कि सभी जानते हैं, हमारे पास एक मजदूर-किसान संश्रय पहले से ही मौजूद है, जिसे साम्राज्यवाद व सामन्तवाद के खिलाफ पूंजीवादी-जनवादी क्रान्ति के आधार पर, एक ऐसी क्रान्ति के आधार पर कायम किया गया था जिसमें किसानों को सामन्ती मिलकियत के बन्धनों से मुक्त कराने के लिए भूमि को जमींदारों से लेकर किसानों में बांट दिया गया। लेकिन यह क्रान्ति समाप्त हो चुकी है, तथा सामन्ती मिलकियत को खत्म कर दिया गया है। आज देहातों में धनी किसानों की पूंजीवादी मिलकियत मौजूद है और व्यक्तिगत किसानों की मिलकियत एक अपार सागर की तरह विद्यमान है। जैसा कि सभी जानते हैं, पिछले कुछ वर्षों में देहातों के अन्दर पूंजीवाद की स्वत:स्फूर्त शक्तियां अनवरत रूप से बढ़ती गई हैं, हर जगह नए धनी किसान प्रस्फुटित होने लगे हैं तथा बहुत से खुशहाल मध्यम किसान धनी किसान बनने की कोशिश करने लगे हैं। दूसरी तरफ बहुत से गरीब किसान अब भी उत्पादन के साधनों की कमी के कारण गरीबी की हालत में जिन्दगी बिता रहे हैं, जिनमें से कुछ कर्ज के बोझ से लदते जा रहे हैं और कुछ अन्य लोग अपनी जमीन को बेचते या बटाई पर देते जा रहे हैं। अगर यह प्रवृत्ति अबाध रूप से जारी रही तो अनिवार्यत: देहातों में ध्रुवीकरण दिन-ब-दिन उग्र रूप धारण करता जाएगा। किसानों में जो लोग अपनी जमीन गंवा बैठेंगे और जो लोग गरीबी की हालत में रह जाएंगे, वे शिकायत करेंगे कि हम उन्हें तबाही से बचाने के लिए अथवा कठिनाइयों से छुटकारा दिलाने में मदद करने के लिए कुछ नहीं कर रहे। और न वे खुशहाल मध्यम किसान ही हमसे खुश होंगे जो पूंजीवाद की दिशा में बढ़ रहे हैं क्योंकि उनकी मांगें हम तब तक हरगिज पूरी नहीं कर पाएंगे जब तक हम खुद भी पूंजीवाद

का रास्ता अपनाने का इरादा न कर लें। क्या ऐसी परिस्थिति में मजदूर-किसान संश्रय सुदृढ़ बना रह सकता है? जाहिर है कि यह सुदृढ़ नहीं बना रह सकता। इस समस्या का समाधान एक नए आधार पर करने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं है। और इसका मतलब है कदम-ब-कदम समाजवादी औद्योगीकरण तथा दस्तकारी व पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर के साथ-साथ समूची कृषि का समाजवादी रूपान्तर करना; दूसरे शब्दों में इसका मतलब है सहकारिता पर अमल करना तथा देहातों में धनी किसान अर्थव्यवस्था और व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था को खत्म कर देना, ताकि गांवों में रहने वाली समस्त जनता एक साथ उत्तरोत्तर खुशहाल होती जाय। हम समझते हैं कि मजदूर-किसान संश्रय को सुदृढ़ बनाने का यही एकमात्र तरीका है। अन्यथा इस संश्रय के भंग होने का असली खतरा पैदा हो जाएगा, जो साथी हमें ''घोड़े से उतर जाने'' की सलाह देते हैं, उनके विचार इस सवाल के बारे में बिलकुल गलत हैं।

10

अब हमें यह एहसास होना जरूरी है कि देहातों में शीघ्र ही समाजवादी रूपान्तर का एक राष्ट्रव्यापी उभार आने जा रहा है। यह अनिवार्य है। 1958 के वसन्त तक, पहली पंचवर्षीय योजना के अन्तिम वर्ष की समाप्ति और दूसरी पंचवर्षीय योजना के पहले वर्ष के आरम्भ तक अर्ध-समाजवादी स्वरूप वाली सहकारी समितियों में कोई 25 करोड़ लोग, लगभग 5 करोड़ 50 लाख किसान परिवार (औसतन साढ़े चार व्यक्ति प्रति परिवार) शामिल हो चुके होंगे अर्थात देहातों की कुल आबादी की लगभग आधी संख्या उनमें शामिल हो चुकी होगी। तब तक बहुत सी काउण्टियों और कुछ प्रान्तों में कृषि अर्थव्यवस्था के अर्ध-समाजवादी रूपान्तर का काम बुनियादी तौर पर पूरा हो चुका होगा तथा देश के हर हिस्से में चन्द अर्ध-समाजवादी सहकारी समितियां पूर्ण समाजवादी बन चुकी होंगी। 1960 तक, यानी दूसरी पंचवर्षीय योजना के पूर्वार्ध में हम कृषि अर्थव्यवस्था के शेष भाग का, जिसमें देहातों की आबादी का बाकी आधा भाग शामिल है, अर्ध-समाजवादी रूपान्तर बुनियादी तौर पर कर चुके होंगे। तब तक अर्ध-समाजवादी सहकारी समितियों से विकसित होने वाली पूर्ण समाजवादी सहकारी समितियों की संख्या बढ़ चुकी होगी। पहली और दूसरी पंचवर्षीय योजनाओं की समूची अवधि में देहाती इलाकों के अन्दर रूपान्तर का कार्य मुख्य रूप से सामाजिक और केवल गौण रूप में तकनीकी होगा; बड़ी बड़ी कृषि-मशीनों की संख्या अवश्य बढ़ेगी, लेकिन बहुत ज्यादा नहीं बढ़ेगी। तीसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में, देहाती इलाकों के सामाजिक और तकनीकी रूपान्तर के कदम साथ-साथ होगा; प्रतिवर्ष अधिकाधिक संख्या में बड़ी बड़ी कृषि मशीनों का इस्तेमाल होने लगेगा, जबकि सामाजिक रूपान्तर के क्षेत्र में 1960 के बाद अर्ध-समाजवादी सहकारी समितियां, कदम-ब-कदम, अलग अलग समूहों में मंजिल-दर-मंजिल पूर्ण समाजवादी सहकारी समितियों के रूप में विकसित होती जाएंगी। चीन की सामाजिक व आर्थिक शक्ल पूर्ण रूप से तब तक नहीं बदलेगी जब तक सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था का समाजवादी रूपान्तर पूर्ण रूप से नहीं हो जाएगा, तथा तकनीकी क्षेत्र में हर सम्भव शाखा व स्थान में

मशीनों का इस्तेमाल नहीं होने लगेगा। देश की वर्तमान आर्थिक स्थिति को देखते हुए ऐसा लगता है कि तकनीकी रूपान्तर में सामाजिक रूपान्तर से अधिक समय लगेगा। अनुमान है कि कृषि के राष्ट्रव्यापी तकनीकी रूपान्तर का काम बुनियादी तौर पर पूरा होने में लगभग चार या पांच पंचवर्षीय योजनाएं, यानी बीस से पच्चीस वर्ष का समय लग जाएगा। यह जरूरी है कि इस महान कार्य को पूरा करने के लिए समूची पार्टी भरपूर प्रयास करे।

11

चौतरफा नियोजन तथा और अधिक कारगर नेतृत्व जरूरी है।

सहकारिता का मंजिल-दर-मंजिल विकास करने के लिए यह जरूरी है कि राष्ट्रीय, प्रान्तीय, प्रिफेक्चर, काउण्टी, जिला और श्याङ स्तर पर अपनी-अपनी योजनाएं बनाई जायं। और जैसे-जैसे काम आगे बढ़ता जाए, इन योजनाओं में वास्तविक स्थितियों की रोशनी में लगातार संशोधन किए जायं। प्रान्तीय, प्रिफेक्चर, काउण्टी, जिला और श्याङ स्तर के पार्टी व नौजवान संघ के समस्त संगठनों के लिए यह जरूरी है कि वे देहातों की समस्याओं की तरफ गम्भीरता से ध्यान दें तथा ग्रामीण काम में अपने नेतृत्व-कार्य को सच्चे दिल से सुधार लें। पार्टी व नौजवान संघ की विभिन्न स्तरों की स्थानीय कमेटियों के इन्चार्ज व नेतृत्वकारी साथियों को चाहिए कि वे कृषि सहकारिता के काम के अध्ययन में जुट जायं और उसमें माहिर बन जायं। संक्षेप में, उन्हें निष्क्रिय नहीं रहना चाहिए बल्कि पहलकदमी दिखानी चाहिए, नेतृत्व का परित्याग नहीं करना चाहिए, बल्कि उसे मजबूत बनाना चाहिए।

12

अगस्त 1954 में (बेशक, अब यह कोई नई खबर नहीं रह गई है), चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की हेलुङच्याङ प्रान्तीय कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में कहा :

> ग्रामीण सहकारिता के उभार और विस्तार के साथ साथ, देहाती इलाकों में विभिन्न प्रकार के आपसी सहयोग व सहकारी संगठन तथा विभिन्न तबकों के लोग, ये सभी कम या ज्यादा मात्रा में सक्रिय होते जा रहे हैं। मौजूदा कृषि-उत्पादक सहकारी समितियां अपनी सदस्यता बढ़ाने की योजना बना रही हैं और तैयारी कर रही हैं, तथा कृषि उत्पादक आपसी सहयोग दल, जो सहकारी समितियों में बदलने वाले हैं, और अधिक परिवारों को शामिल करने की योजना बना रहे हैं और तैयारी कर रहे हैं, जबकि वे आपसी सहयोग दल जो अभी इस स्तर तक नहीं पहुंच पाए, आगे बढ़ने और अपेक्षाकृत ऊंची मंजिल पर पहुंचने के लिए उत्सुक हैं। कुछ लोग नई सहकारी समितियों में शामिल होने की तैयारी में तथा कुछ अन्य लोग मौजूदा सहकारी समितियों में शामिल होने की तैयारी में व्यस्त हैं। जो लोग इस वर्ष सहकारी समितियों में शामिल होने के लिए तैयार नहीं हैं, वे आपसी सहयोग दलों में शामिल होने के बारे में सक्रियता से विचार कर रहे हैं। हलचल

का पैमाना बहुत व्यापक है। एक जन-आन्दोलन उठ खड़ा हुआ है। यह कृषि सहकारिता के भारी विकास का एक नया और असाधारण लक्षण है, लेकिन चूंकि कुछ काउण्टियों और जिलों के चन्द नेतृत्वकारी साथियों ने इस नए लक्षण के अनुरूप समय रहते अधिक कारगर ढंग से नेतृत्व नहीं किया, इसलिए अनेक श्याङों और श्यूनों में (नोट : हेलुङच्याङ प्रान्त में श्याङ लम्बी दीवार के दक्षिणवर्ती प्रान्तों की श्याङ स्तर की प्रशासनिक इकाई होते हैं, जबकि थुन प्रशासनिक इकाई नहीं होते और उक्त प्रान्तों के गांव के बराबर होते हैं) कुछ अस्वस्थ चीजों का उदय होने लगा है। मिसाल के लिए, जब लोग सदस्यता के लिए अपने साथियों की तलाश शुरू करते हैं तो शक्ति-सामर्थ्य वाले लोग शक्ति-सामर्थ्य वाले लोगों को ही अपना साथी बनाना चाहते हैं तथा गैर-खुशहाल किसानों को एक तरफ धकेल देते हैं, रीढ़ की भूमिका अदा करने वाले सक्रिय तत्वों और सदस्यों के बारे में ले-दे मच जाती है जिससे फूट पड़ जाती है, रीढ़ की भूमिका अदा करने वाले सक्रिय तत्वों को अन्धाधुन्ध तरीके से किसी एक जगह केन्द्रित कर दिया जाता है, तथा धनी किसान और अपेक्षाकृत गम्भीर पूंजीवादी रुझान रखने वाले खुशहाल किसान इस मौके का फायदा उठाकर निम्न स्तर के आपसी सहयोग दलों या धनी किसानों की सहकारी समितियों को खड़ा कर देते हैं। इन सब बातों से साफ तौर पर जाहिर हो जाता है कि जब कृषि सहकारिता का भारी विकास हो रहा हो, तो पार्टी की नीति को कार्यान्वित करते समय और आन्दोलन का मार्गदर्शन करते समय केवल नई सहकारी समितियों की स्थापना की दृष्टि से विचार करना काफी नहीं है। यह आवश्यक है कि समूचे श्याङ (यानी समूचे श्याङ) की दृष्टि से और समूचे कृषि सहकारिता आन्दोलन को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से, पुरानी सहकारी समितियों का विस्तार करने के साथ-साथ नई सहकारी समितियों की स्थापना करने, सहकारी समितियों का विकास करने के साथ-साथ आपसी सहयोग दलों को उच्चतर मंजिल में ले जाने, इस वर्ष किए जाने वाले काम के साथ-साथ अगले वर्ष, यहां तक कि उससे अगले वर्ष किए जाने वाले काम पर भी ध्यान दिया जाय। यह पार्टी की नीति पर पूरी तरह अमल करने और कृषि सहकारिता आन्दोलन के स्वस्थ विकास की गारण्टी करने का एकमात्र तरीका है।

क्या केवल हेलुङच्याङ प्रान्त में ही "कुछ काउण्टियों और जिलों के चन्द नेतृत्वकारी साथियों ने इस नए लक्षण के अनुरूप समय रहते अधिक कारगर ढंग से नेतृत्व नहीं किया"? क्या ऐसी हालत केवल कुछ काउण्टियों और जिलों में ही मौजूद है ? मैं समझता हूं कि समूचे देश में अनेक नेतृत्वकारी संगठनों के अन्दर ऐसे लोगों के मौजूद होने की काफी सम्भावना है जो नेतृत्व के आन्दोलन से पीछे रह जाने की इस गम्भीर स्थिति को प्रतिबिम्बित करते हैं।

हेलुङच्याङ प्रान्तीय पार्टी कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में आगे कहा :

> श्वाङछङ काउण्टी के शौछिन श्याङ में नेतृत्व लागू करने के उसूल को जन-समुदाय द्वारा स्वेच्छा से शामिल होने के उसूल के साथ मिलाने का तरीका अपनाकर समूचे श्याङ के लिए एक चौतरफा योजना बनाई गई है। सहकारिता का बड़े पैमाने पर विकास करने के लिए यह नेतृत्व का एक नया तरीका है। इसका महत्त्व सबसे पहले यह है कि इस प्रकार के नियोजन के जरिए देहातों में पार्टी की वर्ग-दिशा पर पूरी तरह अमल किया गया है, जिससे गरीब और निम्न मध्यम किसानों के बीच की एकता मजबूत हुई है तथा धनी किसान-मनोवृत्ति के खिलाफ एक जोरदार संघर्ष चलाया गया है। कृषि सहकारिता आन्दोलन की चौतरफा प्रगति के लिए रीढ़ की भूमिका अदा करने वाले सक्रिय तत्वों का समुचित रूप से बंटवारा किया गया है। विभिन्न सहकारी समितियों के बीच के तथा सहकारी समितियों और आपसी सहयोग दलों के बीच के सम्बन्धों को फिर से समायोजित किया गया है और घनिष्ठ बनाया गया है, तथा इसके परिणामस्वरूप कृषि सहकारिता आन्दोलन समूचे मोर्चे में सुनियोजित रूप से आगे बढ़ा है। दूसरे, इस प्रकार के नियोजन के जरिए कृषि सहकारिता का बड़े पैमाने पर विस्तार करने का काम ठोस रूप से बिलकुल नीचे बुनियादी स्तर तक के नेतृत्वकारी निकायों और जन-समुदाय को सौंप दिया गया है, जिसके परिणामस्वरूप श्याङ की पार्टी शाखा को इस बात का ज्ञान हो गया है कि नेतृत्व कैसे किया जाय, पुरानी सहकारी समितियों को इस बात का ज्ञान हो गया है कि आगे कैसे बढ़ा जाय, नई सहकारी समितियों को इस बात का ज्ञान हो गया है कि वे अपनी स्थापना कैसे करें, तथा आपसी सहयोग दलों को इस बात का ज्ञान हो गया है कि आगे बढ़ने के लिए उनकी सुनिश्चित दिशा क्या हो। इस प्रकार श्याङ की पार्टी शाखा और व्यापक जन-समुदाय की पहलकदमी व उत्साह का भरपूर विकास किया गया है तथा पार्टी शाखा पर और जन-समुदाय के अनुभव व विवेक पर निर्भर रहने के सही उसूल को मुकम्मिल तौर पर लागू किया गया है। अन्त में, ठीक इसी प्रकार के नियोजन के जरिए हम श्याङ की असली हालत का ज्यादा अच्छी तरह पता लगा सके हैं तथा पार्टी की नीति को ठोस रूप से और पूरी तरह कार्यान्वित कर सके हैं। इसलिए, एक तरफ उतावलेपन और दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने की प्रवृत्ति से बचना तथा दूसरी तरफ रूढ़िवाद और नियंत्रणहीनता की स्थिति से बचना, तथा इस प्रकार केन्द्रीय कमेटी द्वारा निर्धारित "सक्रिय नेतृत्व और सतत-सुस्थिर प्रगति" की नीति को सही ढंग से लागू करना सम्भव हो सका है।

हेलुङच्याङ प्रान्तीय पार्टी कमेटी की रिपोर्ट में उल्लिखित कुछ "अस्वस्थ परिघटनाओं" से आखिर कैसे निपटा गया था ? रिपोर्ट में इस प्रश्न का प्रत्यक्ष उत्तर नहीं दिया गया। लेकिन श्वाङछङ काउण्टी की पार्टी कमेटी की रिपोर्ट में, जिसे प्रान्तीय पार्टी कमेटी की रिपोर्ट के साथ संलग्न किया गया था, इसका उत्तर दे दिया गया। उसमें कहा गया :

> पार्टी शाखा द्वारा किए जाने वाले नेतृत्व को जन-समुदाय द्वारा स्वेच्छा से शामिल होने के साथ मिलाने का तरीका अपनाकर किए गए चौतरफा नियोजन के परिणामस्वरूप, गैर-खुशहाल किसान परिवारों को सहकारी समितियों से अलग रखने के भटकाव को ठीक कर लिया गया है, रीढ़ की भूमिका अदा करने वाले बहुत से सक्रिय तत्वों को एक ही जगह केन्द्रित करने का तरीका छोड़ दिया गया है, रीढ़ की भूमिका अदा करने वाले सक्रिय तत्वों और सदस्यों के बारे में ले-दे मचना बन्द हो गया है, सहकारी समितियों और आपसी सहयोग दलों के बीच के सम्बन्ध और अधिक घनिष्ठ हो गए हैं, धनी

किसानों और खुशहाल मध्यम किसानों द्वारा धनी किसानों की सहकारी समितियों या निम्न स्तर के आपसी सहयोग दलों को उल्टे सीधे ढंग से खड़ा करने के लिए की गई कोशिशें असफल हो गई हैं, तथा पार्टी शाखा की योजना को आम तौर पर कार्यान्वित किया जा चुका है। दो पुरानी सहकारी समितियों की सदस्य-संख्या 40 प्रतिशत बढ़ गई है, छः नई सहकारी समितियों के संगठन का ढांचा खड़ा किया जा चुका है, तथा दो आपसी सहयोग दल संगठित किए जा चुके हैं। अगर हालात ठीक रहे तो हमारा अनुमान है कि अगले वर्ष (यानी 1955 में) समूचे छुन में सहकारी समितियों की स्थापना हो जाएगी। इस समय समूचे छुन का जन समुदाय कृषि सहकारिता के विस्तार की इस वर्ष की योजना पूरी करने, उत्पादन बढ़ाने तथा अच्छी फसल की गारण्टी करने के लिए बड़े उत्साह के साथ प्रयास कर रहा है। छुन के कार्यकर्ताओं की आम राय यह है : "यह खुश किस्मती की बात है कि हमने इतना सब कर लिया, वरना गड़बड़ी पैदा हो जाती। यह गड़बड़ी न सिर्फ इस वर्ष बनी रहती बल्कि अगले वर्ष भी जारी रहती।"

आइए, हम भी उन्हीं की तरह काम करें।

चौतरफा नियोजन तथा और अधिक कारगर नेतृत्व – यही हमारा निर्देशक उसूल है।

नोट

[1] कृषि के सहकारी रूपान्तर के दौरान ऐसे लोगों को नए मध्यम किसान कहा जाता था जो पहले गरीब किसान थे, लेकिन भूमि-सुधार के बाद मध्यम किसान की हैसियत प्राप्त कर चुके थे। जो लोग पहले मध्यम किसान थे और जिनकी आर्थिक हैसियत में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, उन्हें पुराने मध्यम किसान कहा जाता था।

[2] उस समय ऐसी कृषि उत्पादक सहकारी समितियां, जिनका संचालन अच्छी तरह, दरमियाने ढंग से और घटिया तरीके से किया जाता था, आम तौर पर क्रमशः पहली श्रेणी, दूसरी श्रेणी और तीसरी श्रेणी की सहकारी समितियां कहलाती थीं।

[3] यहां जिन तीन गरीब किसान परिवारों का उल्लेख किया गया है, वे हपे प्रान्त की आनफिङ काउण्टी के नानवाङच्वाङ गांव के निवासी वाङ ग्वो-ख्रुन, वाङ श्याओ-छी और वाङ श्याओ-फाङ के परिवार थे। उनके द्वारा कायम की गई कृषि-उत्पादक सहकारी समिति वर्तमान नानवाङच्वाङ जन कम्यून के उसी नाम के उत्पादक-ब्रिगेड की पूर्ववर्ती सहकारी समिति थी।

कृषि के सहकारी रूपान्तर के कार्य में पार्टी व लीग के सदस्यों और गरीब व निम्न-मध्यम किसानों पर निर्भर रहो

7 सितम्बर 1955

"गरीब किसानों पर (जिनमें वे सभी नए मध्यम किसान शामिल हैं जो पहले गरीब किसान थे) निर्भर रहो तथा मध्यम किसानों के साथ दृढ़ता से एकता कायम करो" का नारा आज भी बुनियादी तौर पर सही है। लेकिन (1) नए मध्यम किसानों के बीच खुशहाल मध्यम किसानों (यानी उच्च-मध्यम किसानों) का उदय हो गया है तथा कुछ ऐसे लोगों को छोड़कर जिनकी राजनीतिक चेतना का स्तर अपेक्षाकृत ऊंचा है, वे लोग फिलहाल सहकारी समितियों में शामिल नहीं होना चाहते; (2) पुराने मध्यम किसानों के बीच मौजूद निम्न-मध्यम किसान आम तौर पर सहकारी समितियों में शामिल होने में दिलचस्पी रखते हैं, क्योंकि आर्थिक हैसियत की दृष्टि से वे कमोबेश नए मध्यम किसानों के बीच मौजूद निम्न-मध्यम किसानों के समान हैं, कारण, शुरू से ही वे लोग खुशहाल नहीं थे और उनमें से कुछ लोगों के हितों का भूमि-सुधार के दौरान अनुचित रूप से अतिक्रमण किया गया था। इन्हीं दो कारणों से, उन सभी स्थानों में जहां सहकारिता के काम में अभी ऊंचा उभार पैदा नहीं हुआ और जहां खुशहाल मध्यम किसानों में राजनीतिक चेतना की कमी है, पहले निम्नलिखित तीन श्रेणियों के लोगों को (उनकी राजनीतिक चेतना के स्तर के अनुरूप और अपेक्षाकृत ऊंची राजनीतिक चेतना वाले लोगों से आरम्भ करके, अलग-अलग समूहों में) सहकारी समितियों में शामिल करना उचित होगा : (1) गरीब किसान (2) नए मध्यम किसानों के बीच मौजूद निम्न-मध्यम किसान (कामरेड माओ त्सेतुङ की रिपोर्ट के संशोधित मजमून में मध्यम किसानों को केवल दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है – उच्च-मध्यम और निम्न मध्यम किसान, तथा दरमियाने दर्जे के मध्यम किसानों का उल्लेख नहीं किया गया है, ताकि एक ऐसी स्थिति से बचा जा सके जिसमें अत्यन्त सूक्ष्म वर्ग-विभाजन के परिणामस्वरूप फर्क करना मुश्किल हो जाता है। निम्न-मध्यम किसानों की जो परिभाषा अब दी गई है उसमें वास्तव में नए मध्यम किसानों के बीच मौजूद वे निम्न-मध्यम किसान और दरमियाने दर्जे के मध्यम किसान शामिल हैं जिनकी परिभाषा पहले दी गई थी); और (3) पुराने मध्यम किसानों के बीच मौजूद

यह एक अन्तःपार्टी निदेश है, जिसका मसौदा कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था।

निम्न-मध्यम किसान। उन सभी खुशहाल मध्यम किसानों को, यानी नए और पुराने मध्यम किसानों के बीच मौजूद उन उच्च-मध्यम किसानों को जो अभी सहकारी समितियों में शामिल नहीं होना चाहते, उनकी मरजी के खिलाफ जबरन अन्दर नहीं घसीटा जाना चाहिए। फिलहाल अनेक स्थानों में खुशहाल मध्यम किसानों को सहकारी समितियों में जबरन शामिल करने की घटनाएं हो चुकी हैं, जिनका मकसद था उनके जुताई-ढुलाई पशुओं और कृषि-औजारों को (काफी कम कीमत पर और काफी लम्बी अवधि की भुगतान व्यवस्था के अन्तर्गत) सहकारी समितियों में शामिल करना। यह वास्तव में उनके हितों का अतिक्रमण तथा ''मध्यम किसानों के साथ दृढ़ता से एकता कायम करने'' के उसूल का उल्लंघन है। और हमारे लिए यह जरूरी है कि हम इस मार्क्सवादी उसूल के विपरीत हरगिज आचरण न करें। इस समय, उन सभी स्थानों में जहां सहकारी समितियां अभी-अभी कायम की गई हैं अथवा अभी प्रभुत्वशाली स्थिति में नहीं हैं, अगर हमने खुशहाल मध्यम किसानों में पक्के पूंजीवादी विचार रखने वाले लोगों को जबरन सहकारी समितियों में घसीटा, अथवा अगर वे लोग (सच्ची राजनीतिक चेतना के कारण शामिल होने के लिए नहीं) नेतृत्व हथियाने के इरादे से स्वयं कोशिश करके सहकारी समितियों में घुस आए, या उन्होंने घटिया किस्म की सहकारी समितियां कायम कर लीं, जैसा कि हेलुङच्याङ प्रान्त की श्वाङछङ काउण्टी में देखने में आया, तो यह गरीब व निम्न-मध्यम किसानों का नेतृत्व स्थापित करने के लिए अत्यन्त अहितकर सिद्ध होगा, जबकि सभी सहकारी समितियों में ऐसा नेतृत्व स्थापित करना आवश्यक है। (बेशक, चन्द ऐसे खुशहाल मध्यम किसानों को अपवाद माना जा सकता है जो निष्पक्ष और कार्यकुशल हैं तथा अपेक्षाकृत ऊंची राजनीतिक चेतना से लैस हैं।) कुछ लोग कहते हैं, मालूम होता है हमारी वर्तमान प्रस्थापना में ''गरीब किसानों पर निर्भर रहो तथा मध्यम किसानों के साथ दृढ़ता से एकता कायम करो'' के नारे को तिलांजलि दे दी गई है; यह बात सही नहीं है। हमने उक्त नारे को तिलांजलि नहीं दी है, बल्कि नई परिस्थितियों की रोशनी में उसे और अधिक ठोस रूप दे दिया है, यानी हम पुराने मध्यम किसानों के बीच मौजूद निम्न-मध्यम किसानों की गिनती तो जनता की एक श्रेणी में करते हैं जिस पर निर्भर रहा जाना चाहिए, लेकिन नए मध्यम किसानों में से उन लोगों की गिनती इस श्रेणी में नहीं करते जो उन्नति करके खुशहाल मध्यम किसान बन चुके हैं। यह फर्क उनकी आर्थिक हैसियत के अनुरूप किया गया है और इस बात को ध्यान में रखकर किया गया है कि वे सहकारी आन्दोलन के प्रति सक्रियता का रवैया अपनाते हैं अथवा नहीं। दूसरे शब्दों में, हम उन गरीब किसानों और निम्न-मध्यम किसानों की दोनों श्रेणियों को जो पुराने गरीब किसानों के समानान्तर हैं, ऐसे लोग समझते हैं जिन पर निर्भर रहा जाना चाहिए, तथा उच्च-मध्यम किसानों की उन दोनों श्रेणियों को जो पुराने मध्यम किसानों के समानान्तर हैं, ऐसे लोग समझते हैं जिनके साथ दृढ़ता से एकता कायम की जानी चाहिए, और इस समय उनके साथ एकता कायम करने का एक तरीका यह है कि उन्हें सहकारी समितियों में शामिल करने के लिए मजबूर न किया जाय और उनके हितों का अतिक्रमण न किया जाय।

देहाती इलाकों में किस पर निर्भर रहा जाय, इस सवाल के बारे में कुछ अन्य बातों को स्पष्ट करना आवश्यक है। सबसे पहले, हमें पार्टी व लीग के सदस्यों पर निर्भर रहना चाहिए। जिला स्तर के ऊपर की हमारी पार्टी कमेटियों अथवा ग्रामीण क्षेत्रों के काम का निदेशन करने

के लिए भेजे गए कार्यकर्ताओं का वहां मुख्यत: पार्टी व लीग के सदस्यों पर निर्भर नहीं रहकर, उन्हें भी गैर-पार्टी व गैर लीग के सदस्य के साथ मिला देना, गलत है। दूसरे, गैर पार्टी लोगों के बीच हमें अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय तत्वों पर निर्भर रहना चाहिए, जिनकी तादाद ग्रामीण आबादी की कोई 5 फीसदी होनी चाहिए (मिसाल के लिए लगभग 2,500 आबादी वाले श्याङ में कोई 125 ऐसे सक्रिय तत्व होने चाहिए)। हमें चाहिए कि ऐसे सक्रिय तत्वों का एक ग्रुप तैयार करने का भरपूर प्रयास करें तथा उन्हें जन-साधारण की श्रेणी में सम्मिलित न करें। तीसरे, हमें गरीब किसानों और निम्न-मध्यम किसानों की उक्त दोनों श्रेणियों के व्यापक जन-समुदाय पर निर्भर रहना चाहिए। किन लोगों पर निर्भर रहा जाय और कैसे निर्भर रहा जाय, इस सवाल के बारे में स्पष्ट रुख अपनाने में असफल रहने के परिणामस्वरूप सहकारी आन्दोलन में गलतियां होने लगेंगी।

कृषि के सहकारी रूपान्तर के बारे में वाद-विवाद और वर्तमान वर्ग-संघर्ष

11 अक्तूबर 1955

हमारा वर्तमान अधिवेशन एक वृहद वाद-विवाद है। यह वाद-विवाद इस प्रश्न से सम्बन्धित है कि क्या पूंजीवाद से समाजवाद में संक्रमण के काल के लिए हमारी पार्टी की आम कार्यदिशा पूरी तरह सही है अथवा नहीं। यह पार्टी-व्यापी वाद-विवाद कृषि के सहकारी रूपान्तर के बारे में हमारी नीति से सम्बन्धित सवाल से शुरू हुआ था, जिस पर आप लोगों का वाद-विवाद भी केन्द्रित है। लेकिन इस वाद-विवाद के विषयों का दायरा बहुत व्यापक है तथा वह कृषि, उद्योग, संचार, परिवहन, वित्त, मुद्रा-विषयक मामलों, व्यापार, संस्कृति, शिक्षा, विज्ञान, सार्वजनिक स्वास्थ्य इत्यादि से सम्बन्धित विभागों के काम को, दस्तकारी उद्योग और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के रूपान्तर, प्रतिक्रान्तिकारियों के दमन, सशस्त्र सैन्य शक्तियों और वैदेशिक मामलों को स्पर्श करता है; संक्षेप में, यह हमारे सम्पूर्ण कार्य को, हमारी पार्टी, हमारी सरकार, हमारी सशस्त्र सैन्य-शक्तियों और हमारे जन-संगठनों के कार्य को स्पर्श करता है। इस प्रकार का वृहद वाद-विवाद होना चाहिए। कारण, जब से आम कार्यदिशा की घोषणा की गई है तब से अब तक हमारी पार्टी में ऐसा वाद-विवाद कभी नहीं चलाया गया। यह जरूरी है कि हम देहातों में और साथ ही शहरों में भी यह वाद-विवाद चलाएं, ताकि हर क्षेत्र में हमारा काम और उसकी गति व गुण आम कार्यदिशा द्वारा निर्धारित कार्यों के अनुरूप सिद्ध हो तथा एक बहुमुखी योजना के अन्तर्गत बनी रहे।

अब मैं अनेक प्रश्नों की चर्चा करूंगा।

1. कृषि सहकारिता और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के रूपान्तर के बीच का सम्बन्ध

कृषि सहकारिता और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के रूपान्तर के बीच का सम्बन्ध, जो कृषि के समाजवादी रूपान्तर तथा पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर को लगभग तीन पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में बुनियादी तौर पर और एक साथ पूरा करने के इन दो कार्यों के बीच का सम्बन्ध है, वास्तव में कृषि सहकारिता और पूंजीपति वर्ग के बीच का सम्बन्ध है।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं केंद्रीय कमेटी के विस्तृत छठे पूर्ण अधिवेशन में समापन भाषण।

हम यह मानते हैं कि कृषि के सर्वांग-व्यापी समाजवादी रूपान्तर के दौरान जब मजदूर वर्ग और किसानों का संश्रय एक नए आधार पर, समाजवाद के आधार पर, कदम-ब-कदम सुदृढ़ बन जाएगा, केवल तभी शहरी पूंजीपति वर्ग और किसानों के बीच के सम्पर्क को पूरी तरह तोड़ना, पूंजीपति वर्ग को पूरी तरह अलगाव की स्थिति में डालना तथा पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के सर्वांग-व्यापी रूपान्तर को सुगम बनाना सम्भव हो सकेगा। कृषि के समाजवादी रूपान्तर का हमारा उद्देश्य है विशाल ग्रामीण क्षेत्रों में पूंजीवाद के स्रोत को खत्म कर देना।

हमने अभी कृषि सहकारिता का काम पूरा नहीं किया, मजदूर वर्ग ने अभी किसानों के साथ अपने संश्रय को एक नए आधार पर सुदृढ़ नहीं बनाया, तथा यह संश्रय अभी अस्थिर है। विगत काल में हमने भूमि-क्रान्ति के आधार पर किसानों के साथ जो संश्रय कायम किया था उससे किसान अब सन्तुष्ट नहीं रहे। वे लोग इस संश्रय से हुए फायदों को भूलने लगे हैं। अब उन्हें कोई नया फायदा पहुंचाया जाना चाहिए, जिसका तात्पर्य है समाजवाद। किसान अभी सामूहिक समृद्धि प्राप्त नहीं कर पाए, तथा अनाज व औद्योगिक कच्चा माल अभी बिलकुल अपर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। ऐसी परिस्थिति में यह सम्भव है कि पूंजीपति वर्ग हमारे काम में मीन-मेख निकाले और हम पर प्रहार करे। लेकिन कुछ ही वर्षों में हमारे सामने एक बिलकुल नई परिस्थिति पैदा हो जाएगी, यानी मजदूर वर्ग और किसानों के बीच एक नए आधार पर संश्रय कायम हो जाएगा, एक ऐसा संश्रय जो पहले से कहीं अधिक पुख्ता होगा।

जमींदारों का विरोध करने, स्थानीय निरंकुश तत्वों का तख्ता पलट देने और जमीन का बंटवारा करने के लिए कायम किया गया पुराना संश्रय एक अस्थायी संश्रय था; एक निश्चित अवधि तक स्थिर रहने के बाद अब यह अस्थिर हो गया है। भूमि-सुधार के बाद से किसानों के बीच ध्रुवीकरण हो गया है। अगर हम उन्हें कोई नई चीज नहीं दे पाएंगे तथा उत्पादक शक्तियों को बढ़ाने, आमदनी बढ़ाने और सामूहिक समृद्धि प्राप्त करने में मदद नहीं कर पाएंगे, तो गरीब किसान हम पर पहले की तरह विश्वास नहीं करेंगे तथा यह महसूस करने लगेंगे कि कम्युनिस्ट पार्टी के पीछे चलने से कोई फायदा नहीं है। चूंकि उनके बीच जमीन का बंटवारा होने के बाद भी उनकी गरीबी अभी कायम है, ऐसी सूरत में वे लोग भला आपके पीछे क्यों चलेंगे ? जहां तक खुशहाल किसानों, यानी उन लोगों का सवाल है जो धनी किसान बन चुके हैं अथवा काफी खुशहाल हो चुके हैं, वे भी हम पर विश्वास नहीं करेंगे तथा अनिवार्य रूप से कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियों को अपनी रुचि के अनुरूप नहीं पाएंगे। परिणामस्वरूप, हम पर न तो पहली श्रेणी के किसान विश्वास करेंगे और न दूसरी श्रेणी के, न गरीब लोग विश्वास करेंगे और न धनी लोग, तथा मजदूर-किसान संश्रय लड़खड़ाने लगेगा। इस संश्रय को सुदृढ़ बनाने के लिए हमें किसानों का समाजवाद के रास्ते पर चलने में नेतृत्व करना होगा तथा उन्हें सामूहिक समृद्धि प्राप्त करने योग्य बनाना होगा; केवल गरीब किसानों को ही नहीं बल्कि सभी किसानों को समृद्ध बनाना होगा, यही नहीं, उन्हें वर्तमान खुशहाल किसानों से कहीं ज्यादा समृद्ध बनाना होगा। जहां एक बार ग्रामीण क्षेत्रों में सहकारिता का बोलबाला हो गया, तो देहातों की समूची जनता का जीवन प्रतिवर्ष बेहतर से बेहतर होता जाएगा तथा बिकाऊ अनाज और औद्योगिक कच्चा माल और अधिक मात्रा में उपलब्ध होने लगेगा। तब पूंजीपति वर्ग का मुंह बन्द हो जाएगा और वह अपने को बिलकुल अलगाव की स्थिति में पाएगा।

कृषि के सहकारी रूपान्तर के बारे में वाद-विवाद और वर्तमान वर्ग-संघर्ष

11 अक्तूबर 1955

हमारा वर्तमान अधिवेशन एक वृहद वाद-विवाद है। यह वाद-विवाद इस प्रश्न से सम्बन्धित है कि क्या पूंजीवाद से समाजवाद में संक्रमण के काल के लिए हमारी पार्टी की आम कार्यदिशा पूरी तरह सही है अथवा नहीं। यह पार्टी-व्यापी वाद-विवाद कृषि के सहकारी रूपान्तर के बारे में हमारी नीति से सम्बन्धित सवाल से शुरू हुआ था, जिस पर आप लोगों का वाद-विवाद भी केन्द्रित है। लेकिन इस वाद-विवाद के विषयों का दायरा बहुत व्यापक है तथा यह कृषि, उद्योग, संचार, परिवहन, वित्त, मुद्रा-विषयक मामलों, व्यापार, संस्कृति, शिक्षा, विज्ञान, सार्वजनिक स्वास्थ्य इत्यादि से सम्बन्धित विभागों के काम को, दस्तकारी उद्योग और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के रूपान्तर, प्रतिक्रान्तिकारियों के दमन, सशस्त्र सैन्य शक्तियों और वैदेशिक मामलों को स्पर्श करता है; संक्षेप में, यह हमारे सम्पूर्ण कार्य को, हमारी पार्टी, हमारी सरकार, हमारी सशस्त्र सैन्य-शक्तियों और हमारे जन-संगठनों के कार्य को स्पर्श करता है। इस प्रकार का वृहद वाद-विवाद होना चाहिए। कारण, जब से आम कार्यदिशा की घोषणा की गई है तब से अब तक हमारी पार्टी में ऐसा वाद-विवाद कभी नहीं चलाया गया। यह जरूरी है कि हम देहातों में और साथ ही शहरों में भी यह वाद-विवाद चलाएं, ताकि हर क्षेत्र में हमारा काम और उसकी गति व गुण आम कार्यदिशा द्वारा निर्धारित कार्यों के अनुरूप सिद्ध हो तथा एक बहुमुखी योजना के अन्तर्गत बनी रहे।

अब मैं अनेक प्रश्नों की चर्चा करूंगा।

1. कृषि सहकारिता और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के रूपान्तर के बीच का सम्बन्ध

कृषि सहकारिता और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के रूपान्तर के बीच का सम्बन्ध, जो कृषि के समाजवादी रूपान्तर तथा पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर को लगभग तीन पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में बुनियादी तौर पर और एक साथ पूरा करने के इन दो कार्यों के बीच का सम्बन्ध है, वास्तव में कृषि सहकारिता और पूंजीपति वर्ग के बीच का सम्बन्ध है।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी के विस्तृत छठे पूर्ण अधिवेशन में सम्पन्न भाषण।

हम यह मानते हैं कि कृषि के सर्वांग-व्यापी समाजवादी रूपान्तर के दौरान जब मजदूर वर्ग और किसानों का संश्रय एक नए आधार पर, समाजवाद के आधार पर, कदम-ब-कदम सुदृढ़ बन जाएगा, केवल तभी शहरी पूंजीपति वर्ग और किसानों के बीच के सम्पर्क को पूरी तरह तोड़ना, पूंजीपति वर्ग को पूरी तरह अलगाव की स्थिति में डालना तथा पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के सर्वांग-व्यापी रूपान्तर को सुगम बनाना सम्भव हो सकेगा। कृषि के समाजवादी रूपान्तर का हमारा उद्देश्य है विशाल ग्रामीण क्षेत्रों में पूंजीवाद के स्रोत को खत्म कर देना।

हमने अभी कृषि सहकारिता का काम पूरा नहीं किया, मजदूर वर्ग ने अभी किसानों के साथ अपने संश्रय को एक नए आधार पर सुदृढ़ नहीं बनाया, तथा यह संश्रय अभी अस्थिर है। विगत काल में हमने भूमि-क्रान्ति के आधार पर किसानों के साथ जो संश्रय कायम किया था उससे किसान अब सन्तुष्ट नहीं रहे। वे लोग इस संश्रय से हुए फायदों को भूलने लगे हैं। अब उन्हें कोई नया फायदा पहुंचाया जाना चाहिए, जिसका तात्पर्य है समाजवाद। किसान अभी सामूहिक समृद्धि प्राप्त नहीं कर पाए, तथा अनाज व औद्योगिक कच्चा माल अभी बिलकुल अपर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। ऐसी परिस्थिति में यह सम्भव है कि पूंजीपति वर्ग हमारे काम में मीन-मेख निकाले और हम पर प्रहार करे। लेकिन कुछ ही वर्षों में हमारे सामने एक बिलकुल नई परिस्थिति पैदा हो जाएगी, यानी मजदूर वर्ग और किसानों के बीच एक नए आधार पर संश्रय कायम हो जाएगा, एक ऐसा संश्रय जो पहले से कहीं अधिक पुख्ता होगा।

जमींदारों का विरोध करने, स्थानीय निरंकुश तत्त्वों का तख्ता पलट देने और जमीन का बंटवारा करने के लिए कायम किया गया पुराना संश्रय एक अस्थायी संश्रय था; एक निश्चित अवधि तक स्थिर रहने के बाद अब यह अस्थिर हो गया है। भूमि-सुधार के बाद से किसानों के बीच ध्रुवीकरण हो गया है। अगर हम उन्हें कोई नई चीज नहीं दे पाएंगे तथा उत्पादक शक्तियों को बढ़ाने, आमदनी बढ़ाने और सामूहिक समृद्धि प्राप्त करने में मदद नहीं कर पाएंगे, तो गरीब किसान हम पर पहले की तरह विश्वास नहीं करेंगे तथा यह महसूस करने लगेंगे कि कम्युनिस्ट पार्टी के पीछे चलने से कोई फायदा नहीं है। चूंकि उनके बीच जमीन का बंटवारा होने के बाद भी उनकी गरीबी अभी कायम है, ऐसी सूरत में वे लोग भला आपके पीछे क्यों चलेंगे ? जहां तक खुशहाल किसानों, यानी उन लोगों का सवाल है जो धनी किसान बन चुके हैं अथवा काफी खुशहाल हो चुके हैं, वे भी हम पर विश्वास नहीं करेंगे तथा अनिवार्य रूप से कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियों को अपनी रुचि के अनुरूप नहीं पाएंगे। परिणामस्वरूप, हम पर न तो पहली श्रेणी के किसान विश्वास करेंगे और न दूसरी श्रेणी के, न गरीब लोग विश्वास करेंगे और न धनी लोग, तथा मजदूर-किसान संश्रय लड़खड़ाने लगेगा। इस संश्रय को सुदृढ़ बनाने के लिए हमें किसानों का समाजवाद के रास्ते पर चलने में नेतृत्व करना होगा तथा उन्हें सामूहिक समृद्धि प्राप्त करने योग्य बनाना होगा; केवल गरीब किसानों को ही नहीं बल्कि सभी किसानों को समृद्ध बनाना होगा, यही नहीं, उन्हें वर्तमान खुशहाल किसानों से कहीं ज्यादा समृद्ध बनाना होगा। जहां एक बार ग्रामीण क्षेत्रों में सहकारिता का बोलबाला हो गया, तो देहातों की समूची जनता का जीवन प्रतिवर्ष बेहतर से बेहतर होता जाएगा तथा बिकाऊ अनाज और औद्योगिक कच्चा माल और अधिक मात्रा में उपलब्ध होने लगेगा। तब पूंजीपति वर्ग का मुंह बन्द हो जाएगा और वह अपने को बिलकुल अलगाव की स्थिति में पाएगा।

इस समय हमने दो संश्रय कायम किए हुए हैं, एक किसानों के साथ और दूसरा राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के साथ। ये दोनों ही हमारे लिए अत्यावश्यक हैं, और यह बात कामरेड चऊ ऐन-लाइ भी कह चुके हैं। पूंजीपति वर्ग के साथ संश्रय कायम करके हमें आखिर क्या फायदा होता है ? इससे हम कृषि उपज के साथ विनिमय करने के लिए अधिक तैयारशुदा माल प्राप्त कर सकते हैं। ठीक यही बात अक्तूबर क्रान्ति के बाद के एक दौर में लेनिन के दिमाग में भी थी। चूंकि राज्य के पास विनिमय के लिए तैयारशुदा माल नहीं था, इसलिए किसानों ने उसे अपना अनाज बेचने से इनकार कर दिया था और वे अनाज के बदले केवल कागज की मुद्रा लेने को तैयार नहीं थे। अतएव लेनिन यह चाहते थे कि सर्वहारा राजसत्ता राजकीय पूंजीवाद के साथ संश्रय कायम कर ले, ताकि देहातों में स्वतःस्फूर्त पूंजीवादी शक्तियों से निपटने के लिए अधिक तैयारशुदा माल प्राप्त किया जा सके।[1] किसानों की जरूरतें पूरी करने के लिए अधिकाधिक तैयारशुदा माल प्राप्त करने और किसानों द्वारा अनाज, यहां तक कि कुछ औद्योगिक कच्चा माल बेचने में भी आनाकानी किए जाने की स्थिति पर काबू पाने के उद्देश्य से प्रेरित होकर ही हमने पूंजीपति वर्ग के साथ संश्रय कायम किया है तथा फिलहाल पूंजीवादी कारोबारों को जब्त नहीं किया है, बल्कि उनका इस्तेमाल करने, उन्हें परिसीमित करने और उनका रूपान्तर करने की नीति अपनाई है। इसका मतलब है पूंजीपति वर्ग के साथ हमारे संश्रय को किसानों द्वारा अपनी उपज बेचने में आनाकानी किए जाने की स्थिति पर काबू पाने के लिए इस्तेमाल करना। दूसरी तरफ, हम किसानों के साथ अपने संश्रय पर निर्भर रहते हैं, ताकि अनाज और औद्योगिक कच्चा माल प्राप्त किया जा सके और उसके जरिए पूंजीपति वर्ग को नियंत्रण में रखा जा सके। पूंजीपतियों के पास कोई कच्चा माल नहीं है, जबकि राज्य के पास वह मौजूद है। अगर उन्हें कच्चा माल चाहिए तो अपना तैयारशुदा माल राज्य को बेचना पड़ेगा और राजकीय पूंजीवाद पर अमल करना पड़ेगा। अगर वे लोग ऐसा करने से इनकार करेंगे, तो हम उन्हें कच्चा माल नहीं देंगे। हर हालत में उन्हें नियंत्रण में रखा जा सकेगा। इससे वह पूंजीवादी रास्ता जिस पर पूंजीपति वर्ग चलना चाहता है, यानी, स्वतंत्र बाजार कायम करना, कच्चा माल स्वतंत्र रूप से प्राप्त करना और तैयारशुदा माल स्वतंत्र रूप से बेचना, बन्द हो जाएगा तथा साथ ही पूंजीपति वर्ग राजनीतिक दृष्टि से अलगाव की स्थिति में पड़ जाएगा। ऐसी है इन दोनों संश्रयों के बीच की पारस्परिक क्रिया। इन दो संश्रयों में से किसानों के साथ हमारा संश्रय प्रधान, बुनियादी व मुख्य है, जबकि पूंजीपति वर्ग के साथ हमारा संश्रय अस्थायी व गौण है। आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए हमारे जैसे देश के लिए इस समय ये दोनों ही संश्रय अत्यावश्यक हैं।

भूमि-सुधार ने हमें जनवाद के आधार पर किसानों के साथ संश्रय कायम करने योग्य तथा किसानों को भूमि प्राप्त करने योग्य बना दिया, किसानों द्वारा जमीन प्राप्त किया जाना स्वरूप की दृष्टि से पूंजीवादी-जनवादी क्रान्ति था, क्योंकि उसने केवल सामन्ती मिलकियत को नष्ट किया, पूंजीवादी मिलकियत या व्यक्तिगत मिलकियत को नहीं। उक्त संश्रय ने पहली बार पूंजीपति वर्ग को अलगाव की स्थिति का एहसास कराया। केन्द्रीय कमेटी के 1950 में आयोजित तीसरे पूर्ण अधिवेशन में मैंने कहा था कि चारों दिशाओं में प्रहार नहीं करना चाहिए। उस समय तक देश के विशाल क्षेत्रों में भूमि-सुधार अभी कार्यान्वित नहीं किया गया था, और किसान पूरी तरह हमारे पक्ष में नहीं आए थे। अगर हम उस समय पूंजीपति वर्ग पर प्रहार शुरू कर देते तो स्थिति बिगड़ गई होती। भूमि-सुधार के बाद, जब किसान पूरी तरह हमारे पक्ष में आ गए, तब कहीं ''तीन बुराई''-विरोधी और ''पांच बुराई''-विरोधी आन्दोलन शुरू करना हमारे लिए सम्भव और आवश्यक हो सका। कृषि सहकारिता से हम सर्वहारा समाजवाद के आधार पर, न कि पूंजीवादी जनवाद के आधार पर, किसानों के साथ अपने संश्रय को सुदृढ़ बनाने में समर्थ हो सकेंगे। इससे पूंजीपति वर्ग हमेशा के लिए अलगाव की स्थिति में पड़ जाएगा तथा पूंजीवाद को अन्तिम रूप से मिटाने में सहायता मिलेगी। इस मामले में हम लोग बिलकुल निष्ठुर हैं। इस मामले में मार्क्सवाद सचमुच बड़ा निर्मम है और उसमें अधिक दयाभाव नहीं है, क्योंकि वह साम्राज्यवाद, सामन्तवाद, पूंजीवाद और लघु-उत्पादन को जड़मूल से नष्ट करने के लिए संकल्पबद्ध है। इस सिलसिले में अधिक दयाभाव न होना ही बेहतर है। हमारे कुछ साथी बड़े दयालु हैं, वे पर्याप्त रूप से कठोर नहीं हैं, दूसरे शब्दों में वे लोग उतने पक्के मार्क्सवादी नहीं हैं। चीन में, 60 करोड़ आबादी वाले देश में, पूंजीपति वर्ग को और पूंजीवाद को जड़मूल से नष्ट करना एक बहुत अच्छी बात है और यह एक महत्वपूर्ण बात भी है। हमारा उद्देश्य पूंजीवाद को जड़मूल से नष्ट कर देना, उसे पृथ्वी से मिटा देना तथा उसे अतीत की वस्तु बना देना है। इतिहास में जिस वस्तु का उदय होता है उसका अस्त होना अनिवार्य है। दुनिया में हर वस्तु एक ऐतिहासिक परिघटना है; यदि जीवन है तो मृत्यु भी अवश्यम्भावी है। एक ऐतिहासिक परिघटना के रूप में पूंजीवाद का अन्त भी अवश्यम्भावी है, तथा वह एक बेहतरीन जगह, यानी धरती के गर्भ में पहुंचकर सदा के लिए ''सो जाएगा''।

वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति हमारे संक्रमणकालीन आम कार्य की पूर्ति के लिए अनुकूल है। समाजवादी औद्योगीकरण और समाजवादी रूपान्तर का कार्य बुनियादी तौर पर पूरा करने के लिए तीन पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि की आवश्यकता है। यह निहायत जरूरी है कि हम शान्तिपूर्ण निर्माण के लिए इतना समय प्राप्त करने की भरपूर कोशिश करें। पन्द्रह वर्ष की अवधि में से तीन वर्ष तो बीत चुके हैं, बाकी बारह वर्षों में यह काम पूरा करना है। जान पड़ता है कि हमें यह समय प्राप्त हो सकेगा, तथा हमें इसके लिए भरपूर प्रयास करना चाहिए। हमें अपने वैदेशिक मामलों में और राष्ट्रीय प्रतिरक्षा से सम्बन्धित निर्माण में अपनी कोशिश बढ़ा देनी चाहिए।

इन पन्द्रह वर्षों की अवधि में, देश के भीतर और विदेशों में वर्ग-संघर्ष अत्यन्त तीव्र होगा। इस बात का हमें एहसास हो चुका है। इस वर्ग-संघर्ष में हमें अब तक अनेक विजयें प्राप्त हो चुकी हैं और आगे भी होती रहेंगी। आन्तरिक वर्ग-संघर्ष में पिछले बारह महीनों के अन्दर हमने मुख्य रूप से चार काम किए हैं : पहले, हमने आदर्शवाद के खिलाफ संघर्ष किया है; दूसरे, हमने प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन किया है; तीसरे, हमने अनाज से सम्बन्धित सवाल हल कर लिया है; चौथे, हमने कृषि सहकारिता का सवाल हल कर लिया है। इन चारों मसलों से सम्बन्धित सभी संघर्ष स्वरूप की दृष्टि से पूंजीपति वर्ग विरोधी संघर्ष थे; हम इस वर्ग पर भीषण प्रहार कर चुके हैं तथा लगातार घातक प्रहार करते जा रहे हैं।

आदर्शवाद के खिलाफ संघर्ष पिछले एक वर्ष से जारी है, जिसकी शुरुआत 'लाल भवन का सपना' नामक उपन्यास से सम्बन्धित सवाल से हुई तथा जिसमें 'साहित्यिक गजट' की

आलोचना और उसके बाद हू शि और त्याङ शु-मिङ की आलोचना भी शामिल है। यह जरूरी है कि हम आदर्शवाद के खिलाफ एक प्रभावकारी मुहिम चलाएं, तथा इस संघर्ष के लिए हम तीन पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि लगा देना चाहते हैं। इस संघर्ष के दौरान यह आवश्यक है कि मार्क्सवाद और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद में निपुण कार्यकर्ताओं के दस्तों का निर्माण किया जाए, ताकि हमारे कार्यकर्ताओं व जनता के विशाल समुदाय को मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धान्तों से लैस किया जा सके। जहां तक प्रतिक्रान्तिकारियों के दमन का ताल्लुक है, हमारी योजना है कि इस वर्ष का बाकी समय और अगले वर्ष का पूरा समय राजकीय कारखानों, राजकीय व्यापारिक कारबारों, सहकारी समितियों और काउण्टी, जिला व ग्राम स्तर के विभिन्न संगठनों के बीच से तथा साथ ही सेना में काम करने वाले कार्यकर्ताओं और फैक्टरी-मजदूरों के बीच से – यानी लगभग 1 करोड़ 20 लाख लोगों के बीच से – उनका सफाया करने में लगा दिया जाय। जहां तक प्रतिक्रान्तिकारियों की बात है, ऐसा लगता है कि वे लोग अब ज्यादा तादाद में नहीं रहे और बड़ी मुश्किल से दिखाई देते हैं। लेकिन जब हम इस सम्बन्ध में गहरी छानबीन करते हैं तो हमें मालूम हो जाता है कि वे निश्चित रूप से मौजूद हैं; हमने अभी-अभी उनका एक समूह खोज निकाला है। अनाज के सवाल के बारे में एक बड़ा संघर्ष चलाया जा चुका है। पूंजीपति वर्ग द्वारा अनाज की समस्या को हम पर प्रहार करने के लिए बहाने के तौर पर इस्तेमाल किया गया तथा पार्टी के भीतर भी अनेक अफवाहें फैलाई गईं, इसलिए इस स्थिति का मुकाबला करने के लिए हमने आलोचनाओं का सिलसिला शुरू कर दिया। कृषि सहकारिता के सवाल के बारे में हमने अनेक संघर्ष चलाए हैं तथा वर्तमान अधिवेशन ने भी अपना ध्यान इसी पर केन्द्रित किया है। इन चारों मुद्दों के बारे में हमने भीषण संघर्ष चलाए हैं, पूंजीपति वर्ग के प्रतिरोध व आक्रमण का मुकाबला किया है तथा पहलकदमी हासिल की है।

पूंजीपति वर्ग इन मुद्दों के बारे में हमारे द्वारा उसके खिलाफ चलाए जाने वाले संघर्ष में तथा खास तौर पर हमारे द्वारा प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने के लिए की जाने वाली कार्यवाही से दहशत खाता है। हमने प्रतिक्रान्तिकारियों के दमन का काम अच्छी तरह किया है। इस काम में हमें निर्धारित मापदण्डों की ओर ध्यान देना चाहिए। अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो यह बड़ा खतरनाक साबित होगा। प्रतिक्रान्तिकारी का लेबिल केवल उन्हीं लोगों पर लगाया जाना चाहिए जो निर्धारित मापदण्डों के अनुरूप सिद्ध हो चुके हों। इसका तात्पर्य यह है कि हमें असली प्रतिक्रान्तिकारियों को खोज निकालना चाहिए, नकली प्रतिक्रान्तिकारियों को नहीं। यह भी हो सकता है कि नकली प्रतिक्रान्तिकारियों के मामले सामने आएं। इस सम्भावना से बचना बहुत कठिन है। लेकिन हम मांग करते हैं कि ऐसे मामले अपेक्षाकृत कम हों, बेहतर यह होगा कि बिलकुल न हों। प्रतिक्रान्तिकारी उन्हीं को माना जाए जो बिना किसी शक के सरासर प्रतिक्रान्तिकारी हों और निर्धारित मापदण्डों के अनुरूप प्रतिक्रान्तिकारी साबित हो चुके हों; निर्दोष व्यक्तियों को दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए। दूसरी तरफ, यह भी हो सकता है कि कुछ असली प्रतिक्रान्तिकारी हमारे जाल से बच निकलें। आप कहते हैं, इस बार आप उनका पूरी तरह सफाया कर देंगे। इसकी उम्मीद कम है। बच निकलने के मामलों का बिलकुल न होना तो मुश्किल है, फिर भी हमें इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि ऐसे मामलों की संख्या कम से कम रहे।

2. सहकारिता से सम्बन्धित सवाल के बारे में वाद-विवाद का सारांश

कृषि सहकारिता के बारे में, जन-समुदाय द्वारा सुझाए गए नए-नए उपायों ने बहुत सी भ्रान्तियों व गलत धारणाओं को चकनाचूर कर दिया है। इस बार बहस के जरिए अनेक ऐसे सवाल हल कर लिये गए हैं जिन्हें बहुत से लोग कुछ ही महीने पहले स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाते थे।

पहले, सवाल उठाया गया है कि किस तरह का विस्तार करना बेहतर है, बड़े पैमाने का या छोटे पैमाने का। यह एक मुख्य मसला है जिसके बारे में काफी मतभेद रहा है और अब इसे हल किया जा चुका है। जन-समुदाय बड़े पैमाने के विस्तार की मांग करता है तथा संक्रमण काल के आम कार्य की मांग यह है कि कृषि को उद्योग के अनुरूप ढल जाना चाहिए; इसलिए छोटे पैमाने के विस्तार का पक्षपोषण करने वाला विचार गलत है।

दूसरे, सवाल उठाया गया है कि देर से मुक्त होने वाले क्षेत्रों में, पहाड़ी इलाकों में, पिछड़े हुए श्याङों में तथा प्राकृतिक संकटों से ग्रस्त क्षेत्रों में विस्तार-कार्य करना सम्भव है या नहीं। अब इस सवाल को हल किया जा चुका है। उक्त सभी स्थानों में यह सम्भव है।

तीसरे, सवाल उठाया गया है कि अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के इलाकों में सहकारी समितियां स्थापित की जा सकती हैं या नहीं। अब यह साबित हो चुका है कि जहां स्थिति परिपक्व हो चुकी हो, वहां इन्हें स्थापित किया जा सकता है। कुछ स्थानों में, जैसे तिब्बत और ल्याङशान व श्याओल्याङ पर्वत श्रृंखला में, जहां स्थिति अभी परिपक्व नहीं हो पाई, सहकारी समितियों को स्थापित नहीं किया जाना चाहिए।

चौथे, सवाल उठाया गया है कि सहकारी समितियों को धनराशि, पशु-चालित गाड़ियों व बैलों के बिना अथवा खुशहाल मध्यम किसानों के बिना स्थापित किया जा सकता है या नहीं। अब यह भी साबित हो चुका है कि ऐसा करना सम्भव है।

पांचवें, इस भ्रान्त धारणा को कि "एक सहकारी समिति की स्थापना करना तो आसान है लेकिन उसे सुदृढ़ बनाना मुश्किल है," निराधार सिद्ध किया जा चुका है। न तो सहकारी समिति की स्थापना करना उतना आसान है और न उसे सुदृढ़ बनाना जरूरी तौर पर उतना कठिन है। अगर आप इस बात पर अड़े रहते हैं कि एक सहकारी समिति की स्थापना करना तो आसान है लेकिन उसे सुदृढ़ बनाना मुश्किल है, तो आप वास्तव में केवल इनीगिनी सहकारी समितियों की ही स्थापना करने या किसी भी सहकारी समिति की स्थापना न करने का पक्षपोषण करते हैं।

छठे, सवाल उठाया गया है कि सहकारी समितियों की स्थापना कृषि-मशीनों के बिना की जा सकती है या नहीं। यह विचार कि सहकारी समितियों की स्थापना से पहले मशीनों का होना अनिवार्य है, अब लोक व्यापी नहीं रहा, लेकिन यह अब भी मौजूद है। इस भ्रान्त धारणा को पूर्णतः निराधार सिद्ध किया जा सकता है।

सातवें, सवाल उठाया गया है कि क्या उन सभी सहकारी समितियों को भंग कर दिया जाए जो अच्छी तरह नहीं चल पा रहीं। इसमें सन्देह नहीं कि जो चन्द सहकारी समितियां निश्चित रूप से चलने में असमर्थ हैं वे आपसी सहयोग दलों के रूप में पुनर्गठित हो सकती हैं, लेकिन तथाकथित अच्छी तरह न चल पाने वाली सहकारी समितियों को आम तौर पर भंग नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि वे जांच-पड़ताल व सुदृढ़ीकरण के बाद बेहतर बन सकती हैं।

आठवें, यह कथन कि "अगर आप तुरन्त घोड़े से नहीं उतरेंगे तो मजदूर-किसान संश्रय के टूटने का खतरा पैदा हो जाएगा", शायद एक "दलील" है जिसे केन्द्रीय कमेटी के ग्रामीण-कार्य विभाग से नीचे की ओर प्रसारित किया गया है। यह विभाग न सिर्फ अफवाहें गढ़ता है बल्कि बहुत सी "दलीलें" भी रचता है। मैं समझता हूं कि यह कथन मुख्य रूप से "सही" है – केवल एक शब्द को बदलने की जरूरत है, यानी "उतरेंगे" की जगह "चढ़ेंगे" होना चाहिए। ग्रामीण-कार्य विभाग के साथियों को हतोत्साहित नहीं होना चाहिए, क्योंकि मैंने आपके लगभग सभी शब्द स्वीकार कर लिये हैं और केवल एक ही शब्द बदला है। अगर केवल एक ही शब्द का है, हमारा मतभेद केवल एक ही शब्द के बारे में है – आप घोड़े से उतरना चाहते हैं जबकि मैं घोड़े पर चढ़ना चाहता हूं। "अगर आप तुरन्त घोड़े पर नहीं चढ़ेंगे तो मजदूर-किसान संश्रय के टूटने का खतरा पैदा हो जाएगा", और यह खतरा निश्चित रूप से पैदा हो जाएगा।

नवें, यह आरोप कि "बैलों की हानि के लिए सहकारी समितियां दोषी हैं", वास्तविक परिस्थिति से इतना ज्यादा मेल नहीं खाता। बैलों की हानि के मुख्य कारण सहकारी समितियां नहीं बल्कि बाढ़, बैलों की खाल की ऊंची कीमत तथा चारे की कमी है, जबकि कुछ बैल ऐसे हैं जो बूढ़े हो चुके हैं और जिनका वध करना जरूरी है।

दसवें, यह कहना गलत है कि "देहातों में तनावपूर्ण परिस्थिति होने का बुनियादी कारण वहां जरूरत से ज्यादा सहकारी समितियां स्थापित करना है"। पिछले वसन्त में देहातों में मौजूद तनावपूर्ण परिस्थिति का मुख्य कारण अनाज की समस्या थी। अनाज की तथाकथित कमी के अधिकांश मामले झूठे थे; इसकी चीख-पुकार जमींदारों, धनी किसानों और खुशहाल मध्यम किसानों ने मचाई थी। हमारे पास इतना समय नहीं था कि इसका मुकाबला करने के लिए व्यापक किसान समुदाय को पर्याप्त रूप से शिक्षित करते; साथ ही अनाज से सम्बन्धित हमारे काम में खामियां भी थीं। पिछले वर्ष हमने 700 करोड़ चिन अनाज ज्यादा खरीदा, क्योंकि उस समय हम यह नहीं समझ पाए कि कितना अनाज खरीदना उचित है। अब हम इसे समायोजित कर रहे हैं तथा 700 करोड़ चिन अनाज कम खरीदने की बात सोच रहे हैं यह इस वर्ष की अच्छी फसल के साथ मिलकर देहातों की तनावपूर्ण स्थिति में शैथिल्य लाने में सहायक होगा।

ग्यारहवें, एक अन्य कथन प्रचलित है : "सहकारी समितियों की श्रेष्ठता केवल तीन वर्ष तक बनी रह सकती है"; यह एक निराशावादी कथन है। मैं समझता हूं कि उनकी श्रेष्ठता निश्चित रूप से केवल तीन वर्ष तक सीमित नहीं रहेगी, क्योंकि समाजवाद काफी लम्बे अर्से तक बना रहेगा। भविष्य में, जब समाजवाद श्रेष्ठता का प्रतीक नहीं रह जाएगा तो अपनी श्रेष्ठता के साथ कम्युनिज्म उसका स्थान ग्रहण कर लेगा।

बारहवें, क्या हमें निकट भविष्य में अनेक उन्नत स्तर की सहकारी समितियों की स्थापना कर लेनी चाहिए ? विगत काल में लोग इस सवाल का स्पष्ट हल नहीं खोज पाए और इसे वर्तमान अधिवेशन में उठाया गया है। ऐसी सहकारी समितियों के एक समूह की स्थापना की जानी चाहिए। जहां तक उनकी संख्या का ताल्लुक है, उस पर आप लोग स्वयं विचार करें।

तेरहवें, यह कहना भी गलत है कि "पालदार नावों और पशु-चालित गाड़ियों से रोजी चलाने वाले लोगों की सहकारी समितियों की स्थापना नहीं की जा सकती"। जैसा कि हमें अब महसूस हो रहा है, पालदार नावों और पशु-चालित गाड़ियों के जरिए परिवहन का काम करने वाले दसियों लाख मेहनतकश लोगों को भी सहकारी समितियों में संगठित किया जाना चाहिए।

आप लोगों द्वारा की गई बहस की रोशनी में हमने इन तमाम सवालों को हल कर लिया है। यह केन्द्रीय कमेटी के वर्तमान पूर्ण अधिवेशन की एक भारी उपलब्धि है।

3. चौतरफा नियोजन तथा अधिक कारगर नेतृत्व के सवाल के बारे में

चौतरफा नियोजन के काम में पहले, सहकारी समितियों की स्थापना की योजना बनाना; दूसरे, कृषि-उत्पादन की योजना बनाना और तीसरे, सर्वांगीण आर्थिक योजना बनाना सम्मिलित होना चाहिए। देहातों के लिए बनाई जाने वाली सर्वांगीण आर्थिक योजना में सहायक धन्धे, दस्तकारी उद्योग, चौमुखी आर्थिक उद्यम, बहुप्रयोजन उद्यम, निकटवर्ती भूमि का उद्धार व आबादी का स्थानान्तरण, सप्लाई व क्रय विक्रय सहकारी समितियां, ऋणदाता सहकारी समितियां, बैंक और तकनीक-प्रसार केन्द्र इत्यादि के अलावा वृक्षहीन पहाड़ों और गांवों में पेड़ लगाना भी शामिल है। मेरा विचार है कि उत्तर के वृक्षहीन पहाड़ों में विशेष रूप से पेड़ लगाए जाने चाहिए, और इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि यह काम किया जा सकता है। क्या आप लोगों में से उत्तर के साथियों में यह काम करने के लिए पर्याप्त साहस मौजूद है ? दक्षिण में भी अनेक स्थानों में पेड़ लगाने की जरूरत है। अगर हम आगामी कुछ वर्षों में दक्षिण और उत्तर के विभिन्न स्थानों को हरी चादर से ढक सकें तो बहुत अच्छा होगा। इससे कृषि, उद्योग और अन्य सभी क्षेत्रों में लाभ होगा।

और कौन सी योजनाएं बनाई जानी चाहिए ? संस्कृति व शिक्षा के लिए भी एक योजना बनाई जानी चाहिए। इसमें निरक्षरता दूर करना, प्राइमरी स्कूल खोलना, देहाती इलाकों की जरूरतों के मुताबिक सेकंडरी स्कूल खोलना, सेकंडरी स्कूल के पाठ्यक्रम में कुछ कृषि-पाठ्य विषय जोड़ देना, किसानों की जरूरतों के मुताबिक सुबोध पुस्तक पुस्तिकाएं प्रकाशित करना, देहातों में प्रसारण-केन्द्रों का जाल बिछा देना और फिल्म-प्रदर्शन दल कायम करना, सांस्कृतिक व मनोरंजन सम्बन्धी गतिविधियों का आयोजन करना, वगैरह-वगैरह शामिल हैं। इसके अलावा पार्टी व नौजवान संघ के संगठनों को सुदृढ़ बनाने और उनका निर्माण करने के काम के लिए, महिलाओं से सम्बन्धित काम के लिए तथा प्रतिक्रान्तिकारियों के दमन से सम्बन्धित काम के लिए भी योजनाएं बनाई जानी चाहिए। इन सभी कामों को चौतरफा योजना में शामिल कर

लिया जाना चाहिए।

योजनाएं इस प्रकार की होनी चाहिए : (1) ग्रामीण सहकारी समिति की योजना। हर सहकारी समिति को, चाहे वह कितनी ही छोटी क्यों न हो, अपने लिए एक योजना बनानी चाहिए और यह सीख लेनी चाहिए कि उसे कैसे बनाया जाय; (2) समूचे श्याङ की योजना। हमारे देश में 2,20,000 से ज्यादा श्याङ हैं, जिनमें से हर श्याङ की अपनी योजना होनी चाहिए; (3) समूची काउण्टी की योजना। हमें आशा है कि हर काउण्टी अपनी-अपनी योजना बना लेगी। कुछ काउण्टियां बहुत अच्छी योजनाएं बना चुकी हैं, जो पढ़ने में बड़ी दिलचस्प मालूम होती हैं। वहां साथियों के दिमाग मुक्त हो चुके हैं, उनमें अदम्य साहस मौजूद है और वे बेड़ियों व जंजीरों से नहीं जकड़े हुए तथा उनकी योजनाएं गतिशील हैं; (4) समूचे प्रान्त (या स्वायत्त प्रदेश अथवा म्युनिसिपलटी के उपनगरीय क्षेत्र) की योजना। यहां समूचे श्याङ और समूची काउण्टी की योजनाओं पर जोर दिया जाना चाहिए। इन दो कड़ियों को मजबूती से गिरफ्त में रखा जाना चाहिए तथा ऐसी अनेक योजनाएं तुरन्त तैयार की जानी चाहिए। मिसाल के लिए, हर प्रान्त में तीन या चार काउण्टियों की योजनाएं तैयार की जानी चाहिए और उन्हें नमूने के तौर पर वितरित किया जाना चाहिए।

सहकारी रूपान्तर की योजनाओं में अलग-अलग क्षेत्रों के लिए विकास की अलग-अलग रफ्तार निश्चित की जाय। तीन किस्म के क्षेत्र हैं। पहली किस्म के क्षेत्र वे हैं जिनमें हमारे ग्रामीण इलाकों का वृहत्तर भाग शामिल है, दूसरी किस्म के क्षेत्र वे हैं जिनमें हमारे ग्रामीण इलाकों के न्यूनतर भाग का एक अंश शामिल है तथा तीसरी किस्म के क्षेत्र वे हैं जिनमें हमारे ग्रामीण इलाकों के न्यूनतर भाग का बाकी अंश शामिल है। हमारे ग्रामीण इलाकों के वृहत्तर भाग में विकास का काम तीन लहरों में, यानी सरदी-वसन्त के तीन मौसमों में किया जाना चाहिए। इन तीन लहरों में इस वर्ष की सरदी और अगले वर्ष का वसन्त, अगले वर्ष की सरदी और उससे अगले वर्ष का वसन्त तथा उससे अगले वर्ष की सरदी और उससे अगले वर्ष का वसन्त शामिल हैं। सरदी-वसन्त के ये तीन मौसम तीन लहरों की तरह हैं, जो एक के बाद एक उमड़ती जाएंगी, लेकिन उनके बीच मध्यान्तर भी होना चाहिए। दो पहाड़ों के बीच घाटी होती है और दो तरंगों के बीच जलगर्त होता है। पहले किस्म के क्षेत्र में 1958 के वसन्त का अर्ध-समाजवादी सहकारी रूपान्तर बुनियादी रूप से पूरा हो चुका होगा। दूसरी किस्म के क्षेत्र के लिए, जैसे उत्तर चीन और उत्तर-पूर्व के इलाकों तथा कुछ उपनगरीय इलाकों के लिए दो सरदियां और दो वसन्त या दो लहरें काफी रहेंगी। उनमें थोड़े से इलाकों में अगले वसन्त तक सहकारी रूपान्तर का काम बुनियादी रूप से पूरा हो जाएगा, तथा इस प्रकार वे केवल एक ही लहर में अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। तीसरी किस्म के क्षेत्र के लिए, यानी हमारे ग्रामीण इलाकों के न्यूनतर भाग के बाकी अंश के लिए, सरदी-वसन्त के चार, पांच, यहां तक कि छः मौसमों की जरूरत होगी। इनमें अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के कुछ इलाके शामिल नहीं हैं, जैसे ताल्याङ और श्याओल्याङ पर्वत शृंखला, तिब्बत तथा अन्य अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के क्षेत्र, जहां परिस्थिति अभी परिपक्व नहीं हो पाई तथा जहां इन हालात में सहकारी समितियां कायम नहीं की जानी चाहिए। अर्ध-समाजवादी सहकारिता के बुनियादी रूप से पूरा होने का क्या तात्पर्य है ? इसका तात्पर्य यह है कि 70-80 प्रतिशत ग्रामीण आबादी अर्ध-समाजवादी

सहकारी समितियों में शामिल हो चुकी है। यहां संख्या में कुछ कमोबेशी की इजाजत है, 70 प्रतिशत ठीक है, और 75 प्रतिशत या 80 प्रतिशत अथवा 80 प्रतिशत से कुछ अधिक भी हो सकती है – अर्ध-समाजवादी सहकारिता के बुनियादी रूप से पूरा होने का तात्पर्य यही है। शेष ग्रामीण आबादी सहकारिता के दायरे में बाद में आएगी। न तो बहुत धीरे चलना अच्छा है और न बहुत तेजी से, ये दोनों ही प्रवृत्तियां अवसरवादी हैं। अवसरवाद दो किस्म का होता है, धीरे चलने वाला और तेजी से चलने वाला। इस तरह बताने से आम जनता को आसानी से समझाया जा सकेगा।

प्रान्त (म्युनिसिपलटी या स्वायत्त प्रदेश), प्रिफेक्चर और काउण्टी – इन तीनों स्तरों को चाहिए कि वे इस आन्दोलन के विकास की जानकारी लगातार प्राप्त करते रहें तथा जब भी कोई समस्या खड़ी हो तो उसे हल करते रहें। इस बात की पक्की गारण्टी कर दें कि आप लोग समस्याओं को जायजा लेने से पहले उनका ढेर लगने तक प्रतीक्षा नहीं करते रहेंगे। यह विलम्ब से गोली दागना कहलाएगा। विगत काल में हमारा बहुत सा काम इसी प्रकार किया गया; समस्याओं के पैदा होते ही उन्हें हल नहीं किया गया और उनका ढेर लगने दिया गया, तथा उनका जायजा लेने या उनकी आलोचना करने का काम केवल अन्त में किया गया। कुछ साथियों ने ''तीन बुराई''-विरोधी और ''पांच बुराई''-विरोधी आन्दोलनों के दौरान यही गलती की थी। केवल घटना हो जाने के बाद ही आलोचना करने का तरीका नहीं अपनाना चाहिए। बेशक, घटना हो जाने के बाद आलोचना करना भी जरूरी है, लेकिन सबसे अच्छा यह है कि ज्यों ही गलती का पता लगे, आलोचना शुरू कर दी जाए। केवल घटना हो जाने के बाद ही आलोचना करना तथा बदलती परिस्थितियों के अनुसार मार्गदर्शन करने में असमर्थ होना अच्छा नहीं है। जब परिस्थिति हमारे प्रतिकूल हो जाए तो क्या करना चाहिए ? जब ऐसा हो जाए तो तुरन्त ब्रेक लगा देनी चाहिए, या दूसरे शब्दों में रुक जाना चाहिए। यह कार चलाने के समान है; सीधी ढलान पर नीचे उतरते समय जब हमें खतरे का सामना करना पड़ता है तो हम तुरन्त ब्रेक लगा देते हैं। प्रान्त, प्रिफेक्चर और काउण्टी इन सभी स्तरों के प्राधिकरणों को ब्रेक लगाने का प्राधिकार है। ''वामपंथी'' भटकाव से बचने की ओर ध्यान देना जरूरी है। ''वामपंथी'' भटकाव से बचना मार्क्सवाद है, अवसरवाद नहीं। मार्क्सवाद ''वामपंथी'' भटकाव की मांग नहीं करता और ''वामपंथी'' अवसरवाद मार्क्सवाद नहीं है।

सहकारी समितियों की स्थापना करते समय हमें अब किस चीज की होड़ चलानी चाहिए ? हमें क्वालिटी की, समुचित प्रतिमानों की होड़ चलानी चाहिए। जहां तक मात्रा या गति का सम्बन्ध है, जो कुछ हम अभी-अभी बता चुके हैं वह काफी है, तथा अब क्वालिटी की होड़ पर जोर दिया जाना चाहिए। और क्वालिटी के मापदण्ड आखिर क्या हैं ? वे हैं उत्पादन में वृद्धि होना और पशुओं की हानि न होना। उत्पादन कैसे बढ़ाया जा सकता है और पशुओं को हानि से कैसे बचा जा सकता है ? इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि स्वेच्छा से शामिल होने और आपसी लाभ के उसूलों पर अमल किया जाय, चौतरफा योजनाएं बनाई जायं तथा लचीलेपन के साथ मार्गदर्शन किया जाय। मेरा विचार है कि ऐसी स्थिति में सहकारी समितियों की क्वालिटी पहले से बेहतर हो सकेगी, उत्पादन बढ़ सकेगा तथा पशुओं को हानि से बचा जा सकेगा। यह जरूरी है कि हम किसी समय सोवियत संघ में की

गई उस गलती से बचने की हरचन्द कोशिश करें जिसके परिणामस्वरूप पशुओं का बड़ी संख्या में वध कर दिया गया था। अगले दो वर्ष, मुख्य रूप से अगले पांच महीने, यानी यह सर्दी और आगामी वसन्त, निर्णायक हैं। मैं अनुरोध करता हूं कि आप लोग अवश्य ही इस वर्ष नवम्बर से अगले वर्ष मार्च तक न तो कोई गम्भीर गड़बड़ी पैदा होने दें और न भारी संख्या में पशुओं की हानि ही होने दें। चूंकि हमारे पास केवल थोड़े से ट्रैक्टर हैं, इसलिए बैल हमारी मूल्यवान निधि हैं, कृषि-उत्पादन के मुख्य साधन हैं।

आने वाले पांच महीनों में, प्रान्त, प्रिफेक्चर, काउण्टी, जिला व श्याङ स्तर के नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं को, और सबसे पहले पार्टी के सचिवों व उपसचिवों को, सहकारी समितियों के मसले में गहरी डुबकी लगाकर उनसे सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं से परिचित हो जाना चाहिए। क्या यह समय बहुत कम है ? अगर आप संजीदगी के साथ कोशिश करें, तो मेरे खयाल से पांच महीने का समय काफी है। इसमें सन्देह नहीं कि प्रान्तीय स्तर के साथियों के लिए ऐसा करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है, लेकिन अगर खास तौर पर काउण्टी, जिला और श्याङ स्तर के साथी इस मसले में डुबकी नहीं लगाएंगे तथा सहकारी समितियों के बारे में जानकारी प्राप्त किए बिना ही बड़ी तादाद में उनकी स्थापना कर देंगे, तो यह बड़ी खतरनाक बात होगी। अगर कोई साथी बिलकुल डुबकी न लगा पाए तो क्या किया जाय ? इसकी जगह उसे कोई दूसरा काम सौंप दिया जाना चाहिए। केन्द्रीय कमेटी शायद अब से पांच महीने बाद, यानी आगामी मार्च के बाद, इसी तरह का एक अन्य सम्मेलन बुलाएगी। तब हम क्वालिटी की होड़ चलाएंगे और सम्मेलन में वक्ताओं से यह उम्मीद की जाएगी कि वे अपने वर्तमान भाषणों को न दोहराएं, क्योंकि उन्हें कुछ नई बातें कहनी चाहिए, यानी चौतरफा नियोजन व प्रबन्ध से सम्बन्धित तथा नेतृत्व के तरीकों से सम्बन्धित सवालों पर जोर दिया जाना चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे ज्यादा से ज्यादा और अच्छी से अच्छी सहकारी समितियों की जल्दी से जल्दी स्थापना करने के कारगर तरीकों की चर्चा करें। दूसरे शब्दों में, उन्हें चाहिए कि वे क्वालिटी के सवाल की चर्चा करें।

नेतृत्व के तरीकों का अत्यधिक महत्त्व है। गलतियों से बचने के लिए यह जरूरी है कि हम इन तरीकों पर ध्यान दें और नेतृत्व को सुदृढ़ बनाएं। मैं नेतृत्व के तरीकों के बारे में कुछ सुझाव देना चाहता हूं, आप लोग देख लें कि वे अमल में उतारे जाने लायक हैं या नहीं। एक सुझाव यह है कि तात्कालिक समस्याओं को हल करने के लिए प्रतिवर्ष कई बड़ी या छोटी मीटिंगें बुलाई जायं, जैसा कि हम इस समय कर रहे हैं। जब कभी कोई समस्या पैदा हो, तो आपको यह देख लेना चाहिए कि किसी विशिष्ट मामले में सार्वभौमिक तत्त्व कौन सा है। यह साबित करने के लिए कि ''छोटी होने पर भी गौरैया के शरीर में सभी मुख्य अंग मौजूद हैं'' यह जरूरी नहीं कि आप सभी गौरैयों को पकड़ लें और उनकी चीरफाड़ कर डालें। ऐसा किसी भी वैज्ञानिक ने कभी नहीं किया। जहां एक बार आपने कुछ सहकारी समितियों को स्पष्ट रूप से समझ लिया तो आप समुचित निष्कर्ष निकाल सकेंगे। मीटिंग बुलाने का तरीका इस्तेमाल करने के अलावा आप तार व टेलिफोन का इस्तेमाल भी कर सकते हैं तथा निरीक्षण दौरे पर भी जा सकते हैं। ये भी नेतृत्व के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तरीके हैं। इसके अलावा, हर प्रान्त को चाहिए कि वह प्रकाशनों को अच्छी तरह चलाने और बेहतर बनाने के लिए समुचित

कर्मचारियों का चयन करे, ताकि अनुभवों का तुरन्त आदान-प्रदान किया जा सके। यहां एक और सुझाव है, मुझे उम्मीद है कि आप लोग इस पर अमल करने की कोशिश करेंगे। मैंने ग्यारह दिन लगाकर 120 से कुछ ज्यादा रिपोर्टें पढ़ी हैं, तथा उनमें सुधार किया है या उन पर टिप्पणियां लिखी हैं। इस प्रकार मैंने ''सभी राज्यों में सफर'' कर लिया है तथा दूर-दराज युन्नान व सिनच्याङ का ''सफर'' करते हुए कनफ्यूशियस से भी अधिक फासला तय कर लिया है। शायद प्रत्येक प्रान्त और स्वायत्त प्रदेश में हर वर्ष या हर छमाही में एक किताब तैयार की जा सकती है, जिसमें हर काउण्टी से एक लेख शामिल किया जा सकता है। ताकि सभी काउण्टियों के अनुभवों का आदान-प्रदान किया जा सके; इससे सहकारी आन्दोलन को तेजी से फैलाने में सहायता मिलेगी। बुलेटिन जारी करना एक अन्य तरीका है। काउण्टी की पार्टी कमेटी को प्रिफेक्चर की पार्टी कमेटी के समक्ष, प्रिफेक्चर की पार्टी कमेटी को प्रान्त या स्वायत्त प्रदेश की पार्टी कमेटी के समक्ष तथा प्रान्त या स्वायत्त प्रदेश की पार्टी कमेटी को केन्द्रीय कमेटी के समक्ष बुलेटिन प्रस्तुत करने चाहिए, जिनमें इस बात का ब्यौरा होना चाहिए कि कितनी सहकारी समितियां कायम की गई हैं तथा उनमें कौन-कौन सी समस्याएं पैदा हुई हैं। इन बुलेटिनों के जरिए विभिन्न स्तरों का नेतृत्व-मण्डल परिस्थिति की जानकारी प्राप्त कर सकेगा तथा समस्याओं के पैदा होने पर उनका हल खोज सकेगा। ये हैं नेतृत्व के तरीकों से सम्बन्धित कुछ सुझाव, जिन पर यहां उपस्थित साथी विचार कर सकते हैं।

4. विचारधारात्मक संघर्ष के बारे में

अतीत के समूचे अनुभव से जाहिर होता है : विचारधारात्मक संघर्ष में ठीक निशाने पर प्रहार करना जरूरी है। एक प्रचलित कथन बताया गया है कि विचारों के बीच टकराव होना जरूरी है। जैसा कि लड़ाई में होता है, आप अपनी तलवार से मेरी तरफ वार करते हैं और मैं अपनी तलवार से आपकी तरफ, और दोनों तलवारें एक दूसरे से टकराती हैं – यह टकराव कहलाता है। विचारों के टकराव के बिना स्पष्टता और सर्वांगीणता नहीं आ सकती, जो अच्छी बात नहीं है। इस अधिवेशन में हमारे विचारों के बीच टकराव हुआ, और इस प्रकार हम उनमें स्पष्टता व सर्वांगीणता ला सके। इस तरीका का पहला फायदा यह है कि इससे अधिकांश साथियों को समस्याओं को स्पष्ट रूप से समझने में मदद मिलती है तथा दूसरा फायदा यह है कि इससे गलतियां करने वाले साथियों को अपनी गलतियां सुधारने में मदद मिलती है।

गलतियां करने वाले साथियों के लिए मेरे विचार से केवल दो बातें जरूरी हैं : पहले, यह जरूरी है कि उनके खुद के अन्दर क्रान्ति करने की इच्छा हो; दूसरे, यह जरूरी है कि अन्य लोग उन्हें क्रान्ति करना जारी रखने दें। ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो स्वयं क्रान्ति जारी नहीं रखना चाहते, मिसाल के लिए छन तू श्यू उसे जारी नहीं रखना चाहते थे, और न चाङ क्वो-थाओ, काओ काङ और राओ शू-श ही उसे जारी रखना चाहते थे; मगर ऐसे व्यक्ति केवल मुट्ठी-भर ही होते हैं। ज्यादातर लोग क्रान्ति को जारी रखना चाहते हैं। साथ ही दूसरी बात भी जरूरी है : उन्हें क्रान्ति को जारी रखने दिया जाय। हमें न तो 'आ क्यू की सच्ची कहानी' के उस नकली विदेशी दरिन्दे की तरह आचरण करना चाहिए जो आ क्यू को क्रान्ति

से बहिष्कृत कर देता है, और न 'कछार के वीर' के सफेदपोश विद्वान वाङ लुन' का अनुकरण करना चाहिए जो इसी तरह दूसरे लोगों को क्रान्ति में शामिल नहीं होने देता। जो भी दूसरे लोगों को क्रान्ति में शामिल नहीं होने देगा उसे स्वयं बेहद खतरनाक स्थिति का सामना करना पड़ेगा। सफेदपोश विद्वान वाङ लुन, जो दूसरे लोगों को क्रान्ति में शामिल नहीं होने देता, अन्त में अपनी जिन्दगी से हाथ धो बैठता है। काओ काङ ने दूसरे लोगों को क्रान्ति में शामिल नहीं होने दिया, और अन्त में क्या उन्हें भी अपनी जिन्दगी से हाथ नहीं धोना पड़ा ?

ऐतिहासिक अनुभव से जाहिर हो जाता है कि कठमुल्लावाद या अनुभववाद की गलतियां करने वाले लोगों की भारी बहुसंख्या अपनी गलतियां सुधार सकती है। लेकिन इसके लिए दो पूर्वशर्तें जरूरी हैं, एक तरफ गम्भीरता से आलोचना करना और दूसरी तरफ सहिष्णुता का रवैया अपनाना। सहिष्णुता का रवैया न अपनाना ठीक नहीं है, क्योंकि इसके अभाव के कारण सम्बन्धों में अस्वाभाविकता आ जाएगी। ऐसा कौन है जो कोई न कोई गलती न करता हो ? हर आदमी, बिना किसी अपवाद के, कोई न कोई गलती जरूर करता है, फर्क सिर्फ इतना है कि कुछ लोग बड़ी गलतियां करते हैं और कुछ अन्य लोग छोटी गलतियां करते हैं। जो हो, ऐसे लोग बहुत कम होते हैं जो अपनी गलतियों से चिपके रहते हैं, जैसे छन तु-श्यु, चाङ क्वो-थाओ, काओ काङ, राओ शू-श तथा छन क्वाङ और तङ चो-इङ। इस तरह के इनेगिने व्यक्तियों को छोड़कर गलतियां करने वाले बाकी सभी लोगों को बचाया जा सकता है तथा वे लोग अपने साथियों की मदद से अपनी गलतियों को सुधार सकते हैं। हमें इसी तरह काम करना चाहिए और हमारे अन्दर ऐसा ही विश्वास होना चाहिए। जिन लोगों ने गलतियां की हैं उनको भी ऐसा ही विश्वास होना चाहिए।

केन्द्रीय कमेटी के ग्रामीण-कार्य विभाग के कुछ साथियों ने, मुख्य रूप से कामरेड तङ च-ह्वेइ ने, गलतियां की हैं। इस बार की उनकी गलतियों का स्वरूप दक्षिणपंथी भटकाववादी और अनुभववादी है। कामरेड तङ च-ह्वेइ ने आत्म-आलोचना की है। हालांकि ग्रुप-मीटिंग में कुछ साथियों ने यह महसूस किया कि यह आत्म-आलोचना काफी मुकम्मिल नहीं है, लेकिन राजनीतिक ब्यूरो के हम लोग और कुछ अन्य साथी इस पर विचार कर चुके हैं तथा इसे आम तौर पर सन्तोषजनक समझते हैं। वे इस समय जिस प्रकार की समझदारी व्यक्त कर सके हैं वह काफी अच्छी है। यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि कामरेड तङ च-ह्वेइ ने दीर्घकालीन क्रान्तिकारी संघर्ष के दौरान बहुत से काम किए तथा अनेक योगदान किए। लेकिन उन्हें अपने योगदानों को बाधक नहीं बनने देना चाहिए था। यह बात उन्होंने खुद भी स्वीकार की है और कहा है कि उन्होंने किसी हद तक अपनी वरिष्ठता की शेखी बघारी है। यह जरूरी है कि हम विनम्र बनें। अगर कामरेड तङ च-ह्वेइ विनम्र बने रहे और अपने साथियों की सहायता को स्वीकार करने के लिए तैयार रहे, तो हमें यकीन है कि वे अपनी गलतियों को सुधार लेंगे।

कामरेड तङ च-ह्वेइ ने एक बार ऐसी कार्यक्रमीय प्रस्थापना प्रस्तुत की, जिसमें व्यापारियों (यानी पूंजीपति वर्ग) पर निर्भर रहने की और "चार बड़ी आजादियों" की पैरवी की गई थी। यह प्रस्थापना गलत थी तथा स्वरूप की दृष्टि से वह पक्के तौर पर पूंजीपति वर्ग का प्रोग्राम था, एक पूंजीवादी प्रोग्राम था न कि सर्वहारा वर्ग का, तथा वह पूंजीपति वर्ग को

परिसीमित करने के बारे में सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन के निर्णय के विपरीत था। इस समय हम लोग शहरी पूंजीपति वर्ग और ग्रामीण पूंजीपति वर्ग (धनी किसानों) को परिसीमित करने की नीति अपना रहे हैं। इसलिए "चार बड़ी आजादियों" पर एतराज करना जरूरी है, जिनके अन्तर्गत मजदूर रखने, व्यापार करने, सूद पर पैसा देने और बंटाई पर जमीन देने को परिसीमित नहीं किया गया है। मैं कहता हूं "चार छोटी आजादियां" हैं। यहां अन्तर बड़ी और छोटी के बीच का है। परिसीमित किए जाने पर पूंजीपति वर्ग को ये आजादियां थोड़ी मात्रा में प्राप्त होती हैं, केवल बहुत थोड़ी मात्रा में प्राप्त होती हैं। हमें ऐसी परिस्थितियां तैयार करनी चाहिए जिनमें पूंजीपति वर्ग को इन छोटी आजादियों से भी वंचित किया जा सके। शहरी पूंजीपति वर्ग के प्रति हम उसे इस्तेमाल करने, परिसीमित करने और रूपान्तरित करने की नीति अपनाते हैं। यह जरूरी है कि हम उसे इस्तेमाल करें, लेकिन साथ ही यह भी जरूरी है कि हम उसके उस पहलू को परिसीमित करें जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और जन-जीविका के लिए हानिकारक है। ऐसी नीति न तो "वामपंथी" है और न दक्षिणपंथी। बिलकुल परिसीमित न करने का मतलब होगा दक्षिण पक्ष की तरफ बहुत ज्यादा झुक जाना। अत्यधिक परिसीमित करने, यानी पूंजीपति वर्ग को किसी भी प्रकार के उद्यम में लगने की इजाजत न देने का मतलब होगा "वाम पक्ष" की तरफ बहुत ज्यादा झुक जाना। लेनिन ने कहा है कि कोटि-कोटि लघु उत्पादकों के रहते पूंजीवाद को एक ही झटके से नेस्तनाबूद कर देने की कोशिश किसी भी राजनीतिक पार्टी के लिए न सिर्फ मूर्खतापूर्ण होगी बल्कि आत्मघातक भी होगी।* लेकिन कामरेड तङ च-ह्वेइ की प्रस्थापना गलत थी, क्योंकि उन्होंने परिसीमित करने की बिलकुल चर्चा नहीं की थी तथा उनकी प्रस्थापना केन्द्रीय कमेटी और उसके दूसरे पूर्ण अधिवेशन की प्रस्थापना से भिन्न थी।

कुछ साथी ऐसे हैं जो पार्टी के प्रस्तावों और उन नीतियों की ओर लगभग बिलकुल ध्यान नहीं देते जिनकी पैरवी पार्टी दीर्घकाल से करती आई है, मानो इनको उन्होंने कभी पढ़ा या सुना ही न हो – मुझे नहीं मालूम कि वे ऐसा क्यों करते हैं। मिसाल के लिए, केन्द्रीय क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्र में, येनान में और हर आधार-क्षेत्र में आपसी सहयोग व सहकारी आन्दोलन अनेक वर्षों तक चलाया गया, फिर भी ऐसा जान पड़ता है कि ये साथी उसके बारे में कुछ भी देख-सुन नहीं पाए हैं। विगत 1951 के जाड़ों में, केन्द्रीय कमेटी ने कृषि उत्पादन में आपसी सहयोग व सहकारिता के बारे में एक प्रस्ताव स्वीकार किया था। उसकी भी इन साथियों ने अवहेलना कर दी। 1953 तक भी उन्होंने बुनियादी उसूलों के बारे में कभी कोई बात नहीं की, बल्कि केवल छोटे-छोटे उपकार करके ही खुश होते रहे। जब हम यह कहते हैं कि वे बुनियादी उसूलों के बारे में कभी कोई बात नहीं करते थे, तो हमारा मतलब यह होता है कि वे समाजवाद के बारे में कभी कोई बात नहीं करते थे, तथा जब हम यह कहते हैं कि वे केवल छोटे-छोटे उपकार करके ही खुश हो जाते थे, तो हमारा मतलब यह होता है कि वे "चार बड़ी आजादियां" देकर ही खुश हो जाते थे। इसका तात्पर्य यह है कि कुछ साथी ऐसे हैं जो पार्टी के प्रस्तावों अथवा कुछ ऐसी नीतियों व प्रोग्रामों की ओर बिलकुल ध्यान नहीं देते जिनकी पैरवी पार्टी दीर्घकाल से करती आई है; इसके विपरीत वे लोग अपनी ही राह चलते रहते हैं। वे यह पता लगाने की कभी कोशिश नहीं करते कि ऐसे स्वरूप वाले प्रश्नों पर पहले विचार-विमर्श हो चुका है अथवा नहीं, तथा यदि हो चुका है तो कैसे हुआ है। कुछ

इतिहासकार खुदाई में प्राप्त प्राचीन कच्छप-लेखों, ताम्र-लेखों, प्रस्तर-लेखों और अन्य अवशेषों का तो बड़े मनोयोगपूर्वक अध्ययन करते हैं, जबकि ये साथी हमारी कुछ ही समय पहले के अतीत की ओर बिलकुल ध्यान नहीं देते तथा उस पर गौर करने का जरा भी कष्ट नहीं उठाना चाहते। संक्षेप में, वे अपने निकटतम परिवेश के बाहर घटनाओं को बिलकुल नजरअन्दाज कर देते हैं तथा जो मन में आता है लिखते या बोलते रहते हैं; मिसाल के लिए, वे लोग "चार बड़ी आजादियों" जैसी बकवास करते रहे हैं, और इसका नतीजा यह हुआ है कि वे अपना सिर दीवार से टकरा बैठे हैं।

कुछ अन्य साथी हमेशा विकेन्द्रीयता को पसन्द करते हैं, वे अपनी स्वतंत्रता पर जोर देते हैं और इससे भी आगे बढ़कर स्वतंत्र राज्य कायम कर लेते हैं, तथा उन्हें अधिनायकत्व के तौर-तरीकों का चस्का लग गया है। शुरू में उन्होंने अपने लिए सुविधाजनक स्थिति पैदा करने के उद्देश्य से स्वतंत्र राज्यों की स्थापना की और अपने को बादशाह घोषित कर दिया। लेकिन नतीजा क्या हुआ ? अन्त में जब उनकी आलोचना हुई तो उनके लिए बड़ी असुविधाजनक स्थिति पैदा हो गई। क्या "राज्याभिषेक" नाम का एक ऑपेरा नहीं है ? जरा देखिए तो, स्वे फिङ-क्वेइ को बादशाह बनने पर कितनी खुशी हुई थी, क्योंकि उस जमाने में आत्म-आलोचना नाम की कोई चीज नहीं थी। यह कोई अच्छी बात नहीं थी। बहुत से लोग ऐसे होते हैं जो दूसरों से सलाह-मशविरा कभी नहीं करना चाहते। बहुत से साथी ऐसे होते हैं जो मुंह से तो सामूहिक नेतृत्व की हिमायत करते हैं, लेकिन वास्तव में व्यक्तिगत अधिनायकत्व को बेहद पसन्द करते हैं, मानो अधिनायकत्व के बिना वे नेता जैसे मालूम ही नहीं पड़ेंगे। नेता बनने के लिए अधिनायक होना आवश्यक नहीं है, क्या आप लोग यह बात नहीं जानते ? पूंजीपति वर्ग के पास पूंजीवादी जनवाद है, जो अपने वर्ग-अधिनायकत्व पर जोर देता है। इसी तरह सर्वहारा वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी के लिए भी यह जरूरी है कि वे अपना वर्ग-अधिनायकत्व लागू करें, व्यक्तिगत अधिनायकत्व पर अमल करना बुरा है। जब भी कोई समस्या खड़ी हो, तो यह जरूरी होता है कि दूसरों से सलाह-मशविरा किया जाय, उसे सामूहिक रूप से हल किया जाय तथा अनेक लोगों के बुद्धि-विवेक को संग्रहित किया जाय; यह एक बेहतर तरीका है।

यहां एक अन्य बात का जिक्र करना भी आवश्यक है। बहुत से साथी दफ्तर के कामकाज में डूबे रहते हैं और समस्याओं का अध्ययन नहीं करते। क्या दफ्तर का कामकाज नहीं किया जाना चाहिए ? उसे अवश्य किया जाना चाहिए। उसकी उपेक्षा करने से काम नहीं चलेगा, लेकिन केवल मात्र दफ्तर का कामकाज करते रहना और समस्याओं का अध्ययन न करना खतरनाक साबित होगा। अगर आप कार्यकर्ताओं के बीच और जन-समुदाय के बीच नहीं जाते अथवा अगर आप उनके बीच जाने पर हमेशा उनकी खबर लेते रहते हैं, बजाय इसके कि उनसे यह कहकर सलाह-मशविरा करें और विचारों का आदान-प्रदान करें कि "मेरी राय के बारे में आपका क्या खयाल है ? कृपया अपनी राय दीजिए", तो आप राजनीतिक वातावरण को सूंघने में असमर्थ रहेंगे, आपकी नाक असंवेदनशील हो जाएगी और आपको राजनीतिक जुकाम हो जाएगा। जहां एक बार आपकी नाक बन्द हो गई तो आप यह नहीं बता पाएंगे कि काल विशेष में मौसम कैसा है। आज कामरेड ल्वन ई ने कहा कि जब किसी वस्तु का उदय हो रहा हो, तो हमें उस पर मजबूती से गिरफ्त कायम कर लेनी चाहिए। अगर कोई व्यक्ति

व्यापक रूप से और विपुल मात्रा में विद्यमान वस्तुओं को देखने में असमर्थ रहता है, तो वह अवश्य ही एक अत्यन्त असंवेदनशील व्यक्ति है। इस स्थिति की ओर ध्यान देना आवश्यक है। केवल मात्र दफ्तर के कामकाज में लगे रहना तथा समस्याओं का अध्ययन करने, जन-समुदाय व कार्यकर्ताओं के बीच जाने तथा उनसे सलाह-मशविरा करने की उपेक्षा करना किसी भी व्यक्ति के लिए बहुत बुरा है।

5. कुछ अन्य सवाल

जिन सवालों की चर्चा मैं करने जा रहा हूं उनमें से अधिकांश सवाल ऐसे हैं जिन्हें यहां साथियों द्वारा उठाया गया है।

पहले, खुशहाल मध्यम किसानों को सहकारी समितियों के नेतृत्वकारी पदों से हटाने के बारे में इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि कौन से कदम उठाए जायं तथा कौन से तरीके अपनाए जायं; उन सबको एकबारगी बरखास्त न किया जाय। हालांकि वे लोग नेता बनने के योग्य नहीं हैं, फिर भी वे मेहनतकश हैं। हर मामले के बारे में उसके गुणावगुणों के आधार पर निर्णय किया जाना चाहिए, जो इस बात पर निर्भर हो कि सम्बन्धित व्यक्ति कैसे आचरण करता है। कुछ खुशहाल मध्यम किसानों को उनके पद से हटाना जरूरी है, क्योंकि उन्हें अपने पद पर बने रहने की इजाजत किसी भी सूरत में नहीं दी जा सकती। लेकिन जन-समुदाय (मिसाल के लिए सहकारी समिति के सदस्यों) को तथा सम्बन्धित खुशहाल मध्यम किसान को यह बात साफ तौर पर बता दी जानी चाहिए कि वह सचमुच नेता पद पर काम करने के योग्य नहीं है। एक अन्य शर्त भी है, यानी उसे तब तक अपने पद से न हटाया जाय, जब तक कोई सुयोग्य व्यक्ति उसकी जगह लेने के लिए तैयार न हो जाय अथवा उसके स्थान पर नियुक्ति के लिए प्रशिक्षित न कर लिया जाय। कुछ खुशहाल मध्यम किसानों को, आत्म-आलोचना करने और गलतियां सुधारने के बाद अपने पद पर बने रहने दिया जा सकता है, तथा कुछ अन्य खुशहाल मध्यम किसानों को उपनेता अथवा कमेटी-सदस्य बनाया जा सकता है। निस्सन्देह, ऐसे लोगों को अपने पद से नहीं हटाया जाना चाहिए जिनका काम अच्छा है, चाहे वे खुशहाल मध्यम किसान ही क्यों न हों। खुशहाल मध्यम किसानों के साथ वैसा बरताव नहीं किया जाना चाहिए जैसा कि धनी किसानों के साथ किया जाता है; वे धनी किसान नहीं हैं। उन्हें एकबारगी बरखास्त न करें। इस समस्या को बड़ी सावधानी के साथ सुलझाना तथा समुचित रूप से निपटाना जरूरी है। प्रान्तों और विभिन्न स्थानीय प्राधिकरणों से अपेक्षा की जाती है कि वे इस बात पर विचार करें कि ऊपर बताए गए अनेक उपाय अमल में उतारने योग्य हैं अथवा नहीं।

दूसरे, पार्टी शाखाओं में और जन-समुदाय के बीच यह बात स्पष्ट कर दी जानी चाहिए कि आज जब हम यह कहते हैं कि निम्न-मध्यम किसान और उच्च-मध्यम किसान दो अलग-अलग सामाजिक श्रेणियां हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि हम उनकी वर्ग हैसियत को फिर से निर्धारित कर रहे हैं बल्कि इसका कारण यह है कि अलग-अलग सामाजिक

श्रेणियां वास्तव में सहकारी रूपान्तर के प्रति अलग-अलग रवैया अपनाती हैं; उनमें से कुछ श्रेणियां सक्रिय रवैया अपनाती हैं और कुछ निष्क्रिय रवैया, तथा एक ही श्रेणी के व्यक्तियों के बीच भी यही अन्तर मौजूद रहता है। मिसाल के लिए, गरीब किसानों के बीच भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो फिलहाल सहकारी समितियों में शामिल नहीं होना चाहते। इस तथ्य को खुशहाल मध्यम किसानों को कायल करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है : "देखिए ! गरीब व निम्न-मध्यम किसानों के बीच भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो जरा निष्क्रिय हैं। वे लोग अन्दर नहीं आना चाहते, इसलिए हम उनसे शामिल होने के लिए अनुरोध नहीं करते। चूंकि आप खुशहाल मध्यम किसान लोग भी फिलहाल अन्दर नहीं आना चाहते इसलिए आप भी बाहर रह सकते हैं" हमें पहले उन लोगों को शामिल करना चाहिए जो शामिल होने के लिए उत्सुक हैं, फिर दूसरे ग्रुप के लोगों के बीच तब तक प्रचार-कार्य करते रहना चाहिए जब तक वे पर्याप्त उत्सुक होकर सहकारी समिति में शामिल नहीं हो जाते, तथा उसके बाद तीसरे ग्रुप के बीच प्रचार-कार्य करना चाहिए। यह कार्य मंजिल-दर-मंजिल और अलग-अलग ग्रुपों में किया जाना चाहिए। समय आने पर सभी लोग सहकारी समितियों में शामिल हो जाएंगे। इसलिए यह वर्ग-हैसियत को फिर से निर्धारित करने का सवाल नहीं है।

तीसरे, जमींदारों और धनी किसानों के सहकारी समितियों में शामिल होने से सम्बन्धित सवाल के बारे में क्या ऐसा हो सकता है कि हम यह तरीका अपनाएं : श्याङ समेत काउण्टी को इकाई माना जाए (केवल काउण्टी को ही इकाई मानना काफी नहीं है, क्योंकि ऐसा भी हो सकता है कि काउण्टी तो बुनियादी तौर पर सहकारी रूपान्तर का काम पूरा कर ले, लेकिन उसके कुछ श्याङों में एक भी सहकारी समिति न हो); जब कोई काउण्टी और श्याङ बुनियादी तौर पर सहकारी रूपान्तर का काम पूरा कर ले, यानी जब 70 से 80 प्रतिशत किसान परिवार सहकारी समितियों में शामिल हो चुके हों, तो वे सहकारी समितियां जो सुदृढ़ हो चुकी हैं जमींदारों और धनी किसानों के आचरण को देखते हुए उनसे अलग-अलग ग्रुपों में और मंजिल-दर-मंजिल निपटना आरम्भ कर सकती हैं। जिन लोगों का रिकार्ड अच्छा है और ईमानदार व कानून का पालन करने वाले हैं, उन्हें सहकारी समितियों की सदस्यता प्रदान की जा सकती है। कुछ अन्य लोग सहकारी समितियों की सदस्यता प्राप्त किए बिना, वास्तव में केवल परिवीक्षाधीन सदस्य के रूप में, सामूहिक श्रम में भाग ले सकते हैं और अपने हिस्से का पारिश्रमिक प्राप्त कर सकते हैं; अगर उनका आचरण ठीक रहे तो वे भी सदस्य बन सकते हैं, और इस प्रकार उनके सामने प्रगति का रास्ता खुला रहेगा। जो लोग तीसरे ग्रुप में हैं उन्हें फिलहाल सहकारी समितियों में शामिल होने की इजाजत नहीं दी जाएगी। यह सवाल बाद में लिया जाएगा तथा व्यक्तिशः हल किया जाएगा। सहकारी समितियों में शामिल किए गए किसी भी जमींदार व धनी किसान को पदाधिकारी नहीं बनाया जाना चाहिए। जहां तक जमींदारों व धनी किसानों के परिवारों के उन शिक्षित नौजवानों का ताल्लुक है जिन्हें कुछ परखा जा चुका है, क्या उन्हें गांवों में साक्षरता शिक्षकों जैसा काम नहीं दिया जा सकता ? जिन स्थानों में अन्य बुद्धिजीवी बहुत कम हैं, वहां इस बात की आवश्यकता है कि पार्टी शाखा और सहकारी समिति की प्रबन्ध कमेटी के नेतृत्व व निरीक्षण में उन्हें साक्षरता-शिक्षक का काम दिया जाए। इस समय प्राइमरी स्कूल के शिक्षकों में ऐसे नौजवानों की संख्या कम नहीं है। जमींदारों व धनी

किसानों के परिवारों के ये नौजवान केवल सत्रह या अट्ठारह वर्ष के हैं तथा उन्होंने प्राइमरी या जूनियर मिडिल स्कूल की पढ़ाई अभी-अभी समाप्त की है; मैं समझता हूं कि उन्हें साक्षरता-शिक्षक के रूप में भी काम न करने देने का मतलब है अनावश्यक सख्ती का रुख अपनाना। हम उन्हें किसानों को पढ़ना-लिखना सिखाने के काम में, निरक्षरता दूर करने के काम में लगा सकते हैं। कृपया इस बात पर विचार करें कि यह हो सकता है अथवा नहीं। मगर उन्हें हिसाब-किताब रखने जैसा काम देना जरा खतरनाक साबित होगा।

चौथे, जहां तक उन्नत स्तर की सहकारी समितियों की स्थापना की स्थितियों का तथा इस बात का ताल्लुक है कि उन्हें कितनी तादाद में स्थापित किया जाय, आज मैं इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना चाहता तथा आप सब साथियों से अनुरोध करता हूं कि इन स्थितियों का अध्ययन करें, और तब हम लोग अगले वर्ष इसके बारे में विचार-विमर्श करेंगे। अलग-अलग स्थानीय प्राधिकरणों में उनकी अपनी स्थितियों के अनुरूप कदम उठाए जा सकते हैं। संक्षेप में, ऐसी सहकारी समितियां केवल उन्हीं स्थानों में स्थापित की जा सकती हैं, जहां की स्थितियां परिपक्व हो चुकी हों, अन्य स्थानों में नहीं. आप लोग शुरू में केवल कुछ सहकारी समितियों की स्थापना करें और बाद में कदम-ब-कदम उनकी संख्या बढ़ाते जाएं।

पांचवें, जहां तक सहकारी समितियों की स्थापना समय का सम्बन्ध है, क्या ऐसा हो सकता है कि आप लोग इस बात पर विचार करें कि इस काम को प्रतिवर्ष जरूरी तौर पर जाड़ों व वसन्त में ही केन्द्रित न किया जाए बल्कि कुछ सहकारी समितियों की स्थापना गरमियों व शरद में भी की जाय, जैसा कि कुछ स्थानों में पहले से ही किया जा रहा है। लेकिन यह बता देना जरूरी है कि दो लहरों के बीच विश्राम व सुदृढ़ीकरण के लिए एक मध्यान्तर अवश्य होना चाहिए, तथा सहकारी समितियों के एक समूह की स्थापना होने के बाद और अन्य सहकारी समितियों की स्थापना से पहले जांच-पड़ताल व सुदृढ़ीकरण का काम किया जाना चाहिए। यह युद्धभूमि में लड़ाइयां लड़ने के समान है। दो लड़ाइयों के बीच विश्राम व सुदृढ़ीकरण होना चाहिए। इसका अभाव होना, मध्यान्तर का बिलकुल न होना और दम लेने का समय बिलकुल न देना सरासर गलत है। किसी समय सेना में यह विचार मौजूद था कि विश्राम व सुदृढ़ीकरण के बिना भी काम चल सकता है, दम लेने का समय देना अनावश्यक है तथा जरूरत इस बात की है कि कूच लगातार जारी रखा जाय और हर समय लड़ते रहा जाय, जो वास्तव में बिलकुल असम्भव है। आदमी के लिए सोना जरूरी है। अगर हमारी आज की सभा को स्थगित न किया जाए और वह लगातार अनन्त काल तक जारी रहे, तो मेरे समेत हर आदमी द्वारा इस बात का विरोध किया जाएगा। आदमी को रोजाना लम्बे समय के विश्राम व सुदृढ़ीकरण की जरूरत होती है – सात या आठ घण्टे, अथवा कम से पांच या छः घण्टे की नींद की जरूरत होती है, जिसमें दिन के समय कई बार किया जाने वाला अल्पकालीन विश्राम शामिल नहीं है। यह कहना कि सहकारी समितियों की स्थापना के काम में, जो इतना अधिक महत्वपूर्ण है, विश्राम व सुदृढ़ीकरण का परित्याग किया जा सकता है, एक अत्यन्त बचकाना विचार है।

छठे, "सहकारी समितियों को परिश्रम व किफायत के साथ चलाओ" का नारा एक अच्छा नारा है। यह नारा बुनियादी स्तर के लोगों द्वारा पेश किया गया है। सख्त किफायत पर

अमल करना और फिजूलखर्ची के खिलाफ संघर्ष करना आवश्यक है। इस समय शहरों और देहातों में फिजूलखर्ची के खिलाफ एक जोरदार मुहिम चलाई जा रही है। यह जरूरी है कि हम अपने परिवार को चलाने में, अपनी सहकारी समिति को चलाने में तथा अपने देश का निर्माण करने में परिश्रम व किफायत से काम लेने की भावना को प्रोत्साहन दें। हमारे राष्ट्र के लिए पहले परिश्रम और फिर किफायत जरूरी है; यह जरूरी है कि हम आलस्य और शाहखर्ची से बचें। आलस्य ह्रास की ओर ले जाता है, वह अच्छी चीज नहीं है। सहकारी समितियों को परिश्रम व किफायत से चलाने के लिए यह आवश्यक है कि श्रम-उत्पादकता बढ़ाई जाय, सख्त किफायत की जाय, उत्पादन की लागत घटाई जाय, आर्थिक लेखा-पद्धति अपनाई जाय तथा शाहखर्ची व फिजूलखर्ची के खिलाफ संघर्ष किया जाय। सभी सहकारी समितियों के लिए यह जरूरी है कि वे अपनी श्रम-उत्पादकता को बढ़ाएं तथा उत्पादन की लागत को घटाएं। जहां तक आर्थिक लेखा-पद्धति को अपनाने का सवाल है, उसे कदम-ब-कदम अपनाया जा सकता है। जैसे-जैसे सहकारी समितियों का आकार बढ़ता जाता है, आर्थिक लेखा-पद्धति को अपनाए बिना उनका काम नहीं चल सकता; यह जरूरी है कि वे यह काम कदम-ब-कदम सीख लें।

सातवें, इस अधिवेशन की एक कमी यह रह गई है कि राजकीय फार्मों के बारे में किसी भी व्यक्ति ने कुछ नहीं कहा। आशा है केन्द्रीय कमेटी का ग्रामीण-कार्य विभाग तथा कृषि मंत्रालय इस प्रश्न का अध्ययन करेंगे। भविष्य में राजकीय फार्मों का अनुपात प्रति वर्ष बढ़ता जाएगा।

आठवें, यह जरूरी है कि हम हान शोविनिज्म का निरन्तर विरोध करते रहें। यह एक प्रकार की पूंजीवादी विचारधारा है। हान राष्ट्रीयता के लोगों की संख्या इतनी ज्यादा है कि हो सकता है वे अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को हिकारत की नजर से देखें और दिलोजान से उनकी मदद न करें; इसलिए यह जरूरी है कि हम हान शोविनिज्म के खिलाफ दृढ़ता के साथ संघर्ष करते रहें। स्वभावत: अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं में भी संकीर्ण राष्ट्रवाद पैदा हो सकता है, और उसका भी विरोध किया जाना चाहिए। लेकिन इन दोनों में जो चीज मुख्य है और जिसका पहले विरोध किया जाना चाहिए वह हान शोविनिज्म ही है। जब तक हान राष्ट्रीयता के साथी सही रवैया अपनाते रहेंगे और अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के प्रति सच्चे अर्थों में न्यायोचित व्यवहार करते रहेंगे, जब तक उनके द्वारा अपनाई जाने वाली राष्ट्रीयता की नीति तथा राष्ट्रीयता के सम्बन्धों के बारे में उनका रुख पूर्ण रूप से मार्क्सवादी बना रहेगा और पूंजीवादी दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित नहीं करेगा, यानी जब तक वे लोग हान शोविनिज्म से मुक्त रहेंगे, तब तक अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के बीच संकीर्ण राष्ट्रवादी दृष्टिकोण पर काबू पाना अपेक्षाकृत आसान बना रहेगा। इस समय बहुत सा हान शोविनिज्म अभी बरकरार है, मिसाल के लिए, अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के मामलों पर एकाधिकार कायम करना, उनके रीति-रिवाजों व तौर-तरीकों का सम्मान न करना, दम्भी होना, अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को हिकारत की नजर से देखना और यह कहना कि वे लोग कितने पिछड़े हुए हैं। पिछले मार्च के महीने में हमारी पार्टी के राष्ट्रीय सम्मेलन में मैंने कहा था कि चीन का काम अपनी अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के बिना नहीं चल सकता। चीन में बीसियों अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं हैं। जिन इलाकों में अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं रहती हैं उनका क्षेत्रफल उन इलाकों से बड़ा है जहां हान राष्ट्रीयता

रहती है तथा वहां नाना प्रकार की भौतिक सम्पत्ति की बहुतायतता है। अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं की अर्थव्यवस्था के बिना हमारी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का काम नहीं चल सकता।

नवें, जहां तक निरक्षरता दूर करने के आन्दोलन का सवाल है, मैं समझता हूं उसे जारी रखना बेहतर होगा। कुछ स्थानों में इस आन्दोलन को ही खत्म कर दिया गया है। यह अच्छी बात नहीं है। सहकारी रूपान्तर के दौरान निरक्षरता को खत्म किया जाना चाहिए न कि आन्दोलन को, यानी हमें निरक्षरता को खत्म कर देना चाहिए, न कि उसे दूर करने के आन्दोलन को।

दसवें, कुछ लोग पूछते हैं, ''वामपंथी'' और दक्षिणपंथी भटकावों का क्या मतलब होता है? जैसा कि हम अनेक अवसरों पर पहले भी बता चुके हैं, हर वस्तु देश-काल में गतिशील होती है। यहां हम मुख्य रूप से काल के प्रश्न पर विचार करेंगे। अगर वस्तुओं की गति के बारे में आपका पर्यवलोकन वास्तविकता से मेल न खाता हो, तो समय से पहले किया गया निर्णय ''वामपंथी'' भटकाव कहलाएगा तथा समय से पीछे रह जाने वाला निर्णय दक्षिणपंथी भटकाव कहलाएगा। उदाहरण के लिए सहकारी आन्दोलन को ही लीजिए। हालांकि स्थितियां परिपक्व हो चुकी हैं, जैसे जन-समुदाय में उत्साह मौजूद है, आपसी सहयोग दल व्यापक रूप से मौजूद हैं और पार्टी का नेतृत्व मौजूद है, फिर भी कुछ साथी यह मानने से इनकार करते हैं। आज जबकि सहकारी आन्दोलन का बड़े पैमाने पर विकास करना (कई वर्ष पहले नहीं बल्कि आज) सम्भव हो चुका है, फिर भी वे लोग यही कहते हैं कि यह असम्भव है। यह सब दक्षिणपंथी भटकाव है। दूसरी तरफ, एक ऐसे समय जबकि किसानों की राजनीतिक चेतना के स्तर और पार्टी-नेतृत्व जैसी स्थितियां अभी परिपक्व नहीं हो पाईं, यह मांग करना कि समूचे राष्ट्र का 80 प्रतिशत भाग अल्प अवधि में ही सहकारिता का रास्ता अपना ले, एक ''वामपंथी'' भटकाव है। चीन में पुरानी कहावतें हैं : ''जब तरबूज पक जाता है तो वह बेल से अपने आप झड़ जाता है'' तथा ''जहां पानी बहता है वहां कूल अपने आप बन जाती है''। हमें ठोस स्थितियों के अनुरूप काम करना चाहिए तथा अपने उद्देश्यों को स्वाभाविक रूप से प्राप्त करना चाहिए, जोर-जबरदस्ती से नहीं। शिशु-जन्म की ही मिसाल लीजिए। इसके लिए नौ महीने का समय चाहिए। अगर डाक्टर ने सातवें महीने में ही शिशु को गर्भाशय से जबरन बाहर निकाल दिया तो अच्छा नहीं होगा, यह ''वामपंथी'' भटकाव कहलाएगा। दूसरी तरफ, अगर गर्भस्थ शिशु नौ महीने पूरे कर चुका है और बाहर आने के लिए अत्यन्त आतुर है, मगर आप उसे बाहर आने की इजाजत नहीं देते तो यह दक्षिणपंथी भटकाव कहलाएगा। संक्षेप में, हर वस्तु समुचित काल में गतिशील होती है। जब कोई कार्य करने का यथोचित समय आ जाय, तो उसे अवश्य किया जाना चाहिए। अगर आप इसकी इजाजत नहीं देते, तो यह दक्षिणपंथी भटकाव कहलाएगा। अगर कोई कार्य करने का यथोचित समय आने से पहले ही आप उसे जबरन कर डालते हैं, तो यह ''वामपंथी'' भटकाव कहलाएगा।

ग्यारहवें, कुछ लोग पूछते हैं, क्या इस बात की सम्भावना नहीं है कि ''वामपंथी'' भटकाव वाली गलतियां होंगी? हमारा उत्तर है, इस बात की पूरी सम्भावना है। अगर किसी स्थान का नेतृत्व, चाहे वह श्याङ की पार्टी शाखा हो अथवा जिले, काउण्टी, प्रिफेक्चर या प्रान्त की पार्टी कमेटी, जन-समुदाय की राजनीतिक चेतना के स्तर और आपसी सहयोग दलों के विकास

की मंजिल पर ध्यान नहीं देता, तथा अगर वह योजनाएं बनाने, नियंत्रण रखने, सहकारी समितियों को मंजिल-दर मंजिल और समूहों में स्थापित करने के बजाय केवल मात्रा पर जोर देता है और गुण पर ध्यान नहीं देता, तो गम्भीर "वामपंथी" भटकाव वाली गलतियां होना अनिवार्य है। जब जन समुदाय के बीच उत्साह का ज्वार उमड़ रहा हो, जब हर आदमी सहकारी समिति में शामिल होने का अनुरोध कर रहा हो, ऐसे समय यह आवश्यक है कि हर तरह की कठिनाइयों तथा हर सम्भव प्रतिकूल स्थितियों की परिकल्पना कर ली जाय, उनके बारे में जन-समुदाय को खुले तौर पर बता दिया जाय तथा उन पर जन-समुदाय को पूर्ण रूप से विचार करने दिया जाय। अगर उनके दिल में डर न हो तो वे शामिल हो सकते हैं; अगर उनके दिल में डर हो तो उन्हें शामिल नहीं होना चाहिए। बेशक, हमें लोगों को डरा कर भगा नहीं देना चाहिए। मैं सोचता हूं आज मैं आपको डरा कर नहीं भगाऊंगा, क्योंकि हम लोग इतने दिनों से अपना अधिवेशन चला रहे हैं। लोगों के दिमाग को उचित समय ठण्डा करना आवश्यक है, जिससे वे अपना मानसिक सन्तुलन न खो बैठें।

बेहद चिन्ता और बेशुमार निषेधों व नियम-विनियमों का हम विरोध करते हैं। तो क्या इसका मतलब यह है कि हमें तनिक भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए ? हमारे लिए कोई निषेध नहीं होना चाहिए ? हमारे लिए कोई नियम-विनियम नहीं होना चाहिए ? बेशक, ऐसी बात नहीं है। ऐसा कौन आदमी है जो आवश्यक चिन्ता न करता हो, यथोचित चिन्ता न करता हो ? और हमारे लिए आवश्यक निषेधों व नियम-विनियमों का होना भी जरूरी है। कुछ निषेधों के बिना, कुछ नियम-विनियमों के बिना, हम अपना काम कैसे चला सकते हैं ? आवश्यक चिन्ता, निषेधों व नियम-विनियमों, और विरामों व मध्यान्तरों का होना तथा आवश्यक ब्रेक व रोक लगाना बिलकुल उचित है।

एक तरीका यह है : जब लोग अहंकार करने लगें, जब वे घमण्ड में चूर होने लगें तो उन्हें नया काम सौंप दिया जाना चाहिए (मिसाल के लिए, अब हमने काम के गुण की दृष्टि से होड़ चलाने का प्रस्ताव रखा है और अगले वर्ष जब आप लोग यहां आएंगे तो काम के गुण की तुलना की जाएगी; तब तक परिमाण का सवाल गौण बन चुका होगा), ताकि उन्हें अहंकार करने का मौका न मिल पाए, क्योंकि उनके पास इसके लिए समय ही नहीं होगा। हम यह तरीका पहले भी आजमा चुके हैं। जब कोई फौजी यूनिट किसी लड़ाई में विजय प्राप्त कर लेती थी तथा उसके कुछ साथी अपने आसपास के लोगों के सामने बड़ी शान से उसकी चर्चा करते थे और सफलता के नशे में चूर हो जाते थे, तो उन्हें कोई नया काम सौंप दिया जाना था – कोई अन्य लड़ाई लड़ने का काम सौंप दिया जाता था। ज्यों ही नया काम सौंपा जाता तो उन्हें इससे सम्बन्धित समस्याओं पर विचार करना पड़ता था और तैयारी करनी पड़ती थी, इसलिए वे अहंकारी नहीं बन पाते थे और उन्हें सफलता के नशे में चूर होने का समय नहीं मिल पाता था।

बारहवें, कुछ साथियों ने सुझाव दिया है कि दस प्रतिशत घटाने-बढ़ाने का अधिकार काउण्टी स्तर को दे दिया जाय। सहकारी समितियों की स्थापना को ही मिसाल लीजिए। उनकी संख्या 10 प्रतिशत कम या 10 प्रतिशत अधिक हो सकती है। मेरा विचार है कि इस सुझाव को स्वीकार किया जा सकता है; यह एक अच्छा सुझाव है, चीजों को बहुत ज्यादा गैर-लचीला

नहीं बनाना चाहिए। कृपया इस बात पर और अधिक विचार करें।

तेरहवें, क्या ऐसे लोग नहीं हैं जो हमारे निर्णय को उलट देना चाहते हैं ? ऐसे लोग कम नहीं हैं। वे सोचते हैं कि सहकारी समितियां बिलकुल बेकार साबित होंगी और जो कुछ हम कर रहे हैं उसे बाद में बिलकुल उलट दिया जाएगा, तथा यह कहते हैं कि हम लोग मार्क्सवादी नहीं बल्कि अवसरवादी हैं। लेकिन मेरे विचार में, जैसा कि आम रुझान से प्रतीत होता है, यह निर्णय अपरिवर्तनीय है।

चौदहवें, कुछ लोग पूछते हैं : भविष्य में कौन सा रुझान होगा ? यह लगभग तीन पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में समाजवादी औद्योगीकरण को तथा कृषि, दस्तकारी, और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर को बुनियादी तौर पर पूरा करने का रुझान होगा। जहां तक मैं समझता हूं, यही रुझान होगा। इसके अलावा इसमें एक और बात भी जोड़ी जा सकती है, जिसकी चर्चा मैंने पार्टी के गत सम्मेलन में की थी : लगभग पचास से पचहत्तर वर्ष की अवधि में, यानी दस से पन्द्रह पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में, हम चीन को एक शक्तिशाली समाजवादी देश बना सकेंगे।

पचास से पचहत्तर वर्ष की इस अवधि में हमें निश्चय ही देश-विदेश में और पार्टी के भीतर अनेक गम्भीर व जटिल मुठभेड़ों व संघर्षों का सामना करना पड़ेगा तथा निश्चित रूप से अनेक कठिनाइयों से गुजरना पड़ेगा। हमारे अनुभव इस बात के साक्षी हैं कि हमें अब तक न जाने कितनी सशस्त्र व शान्तिपूर्ण, रक्तपातपूर्ण व रक्तपातहीन मुठभेड़ों का सामना करना पड़ा है, इसलिए यह गारण्टी कैसे की जा सकती है कि भविष्य में कोई मुठभेड़ नहीं होगी ? मुठभेड़ें अवश्य होंगी, थोड़ी नहीं बल्कि बहुत सी होंगी। इनमें विश्व युद्ध छिड़ना, परमाणु बमों का हमारी खोपड़ी पर गिराया जाना, तथा बेरिया, काओ काङ, चाङ क्वो-थाओ और छन तू-श्यु जैसे लोगों का उदय होना शामिल है। बहुत सी चीजें ऐसी हैं जिनके बारे में आज भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। लेकिन जैसा कि हम मार्क्सवादी समझते हैं, सभी कठिनाइयों पर अवश्य काबू पाया जा सकता है तथा एक शक्तिशाली समाजवादी चीन का उदय अवश्य होगा। क्या ऐसा होना निश्चित है ? मैं समझता हूं, यह निश्चित है। मार्क्सवाद के अनुसार, यह निश्चित है। पूंजीपति वर्ग ने अपनी कब्र खोदने वाले को तैयार कर लिया है। इस वर्ग की कब्र तैयार हो चुकी है। यह कैसे हो सकता है कि उसकी मृत्यु न हो, जहां तक रुझानों की बात है, मोटे तौर पर यही रुझान मौजूद है।

पन्द्रहवें, आपने दो दस्तावेजों – प्रस्ताव और नियम-विनियमों – में संशोधन करने के बारे में अनेक सुझाव प्रस्तुत किए हैं। यह बड़ी अच्छी बात है। हम आपके सुझावों को विचारार्थ संग्रहित करेंगे। स्वीकृत होने वाले प्रस्ताव को कुछ दिनों बाद राजनीतिक ब्यूरो द्वारा संशोधित और प्रकाशित किया जाएगा। नियम-विनियमों के संशोधन व प्रकाशन में कुछ अधिक समय लगेगा। गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों से सलाह-मशविरा करना होगा तथा वैधानिक कार्यविधि का अनुसरण करना होगा। अथवा अनिवार्य भरती विधेयक की ही तरह नियम-विनियमों को पहले राष्ट्रीय जन-प्रतिनिधि सभा की स्थायी समिति के समक्ष विचारार्थ प्रस्तुत किया जाय और तब राय मालूम करने के लिए उन्हें राज्य-परिषद के पास प्रकाशनार्थ भेज दिया जाय। अस्थायी रूप से, कुछ समय के लिए स्थानीय प्राधिकरणों में तब तक इन नियम-विनियमों के अनुरूप

आचरण किया जा सकता है जब तक उन्हें अगले वर्ष राष्ट्रीय जन-प्रतिनिधि सभा के समक्ष उसकी स्वीकृति के लिए प्रस्तुत नहीं किया जाता।

अन्त में, लगे हाथों मैं आपसे यह अनुरोध भी करता हूं कि आप लोग अपने लेखन पर ध्यान दें। आशा है यहां उपस्थित सभी लोग "निबन्ध लेखन के अध्यापक" बन जाएं। वैसे तो आप लोगों के लेख अच्छे हैं, फिर भी सम्भवत: उनमें कुछ त्रुटियां रह गई हैं; आप लोगों को चाहिए कि दूसरे लोगों की लेखन-शैली में सुधार करने में मदद देने के काम पर ध्यान दें। आजकल अनेक साथियों द्वारा लिखे गए लेखों में से कुछ लेख बहुत लम्बे और सारहीन हैं, लेकिन उनकी संख्या अपेक्षाकृत कम है; मुख्य खामियां यह है कि उनमें क्लासिकी चीनी शब्दावली का आवश्यकता से अधिक प्रयोग किया गया है तथा प्राचीन भाषा व आधुनिक भाषा का साथ-साथ प्रयोग करने वाली शैली का गहरा पुट मौजूद है। लेख लिखते समय यह जरूरी है कि हम तर्कसंगतता पर ध्यान दें। इसका तात्पर्य यह है कि हम किसी लेख अथवा भाषण के समूचे ढांचे पर ध्यान दें तथा उसके आरम्भ, मध्य और अन्त के बीच एक प्रकार का सम्बन्ध, एक प्रकार का आन्तरिक सम्बन्ध बनाए रखें और इन तीनों के बीच विसंगति न होने दें। यह भी आवश्यक है कि हम व्याकरण के नियमों का पालन करें। बहुत से साथी वाक्य के कर्ता और कर्म को अनावश्यक रूप से छोड़ देते हैं, अथवा क्रिया-विशेषणों को क्रिया के रूप में इस्तेमाल करते हैं, यहां तक कि क्रिया को भी छोड़ देते हैं। यह सब व्याकरण के नियमों का उल्लंघन है। अलंकारपूर्ण शैली, सजीव लेखन-शैली की ओर ध्यान देना भी आवश्यक है। संक्षेप में, तर्कसंगतता, व्याकरण के नियमों का पालन और अलंकारपूर्ण शैली – ये हैं वे तीन बातें जिन पर आप लोग लेखन-कार्य करते समय ध्यान दें।

नोट

[1] वी. आई. लेनिन, 'माल के रूप में टैक्स'।

[2] यहां कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा संकलित 'कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों को कैसे चलाया जाय' नामक रचना का उल्लेख किया गया है, जिसे उन्होंने विभिन्न स्थानों से कृषि-सहकारिता के बारे में भेजी गई रिपोर्ट को पढ़ने के बाद तैयार किया था। देखिए, "'चीन के देहातों में समाजवादी उभार' की प्रस्तावनाएं"।

[3] चीन के क्लासिकी उपन्यास 'कछार के वीर' में किसान विद्रोहियों द्वारा ल्याङशान पर्वत पर कब्जा किए जाने के बाद वाङ लुन (जिसका उपनाम 'सफेदपोश स्कालर' है) विद्रोहियों का मुखिया बन जाता है और बने रहना चाहता है। जब राजधानी गैरिजन का मुख्य प्रशिक्षक लिन छुङ मजबूर होकर अधिकारियों के खिलाफ बगावत कर देता है और ल्याङशान पर्वत पर शरण लेता है, तो वाङ लुन पहले तो उसे बाहर निकाल देने की कोशिश करता है और फिर उसके सामने अनेक मुश्किलें खड़ी कर देता है। बाद में वह विद्रोही किसान नेता छाओ काए और उसके साथियों को ल्याङशान पर्वत के विद्रोहियों के साथ मिलने की इजाजत देने से इनकार कर देता है। लिन छुङ अन्त में वाङ लुन को मार डालता है।

[4] वी. आई. लेनिन, 'माल के रूप में टैक्स'।

'चीन के देहातों में समाजवादी उभार' की प्रस्तावनाएं

सितम्बर और दिसम्बर 1955

प्रस्तावना 1

25 सितम्बर 1955

पूंजीवाद से समाजवाद में संक्रमण के दौरान चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की आम कार्यदिशा है चीन के औद्योगीकरण को और साथ ही कृषि, दस्तकारी व पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर को बुनियादी रूप से पूरा करना। यह संक्रमण-काल मोटे तौर पर अट्ठारह वर्ष का होगा, यानी तीन वर्ष का पुनर्स्थापना काल तथा तीन पंचवर्षीय योजनाओं का काल। ऊपर से देखने पर आम कार्यदिशा की इस प्रस्थापना के बारे में तथा समय की सीमा निर्धारित करने के बारे में हमारी पार्टी में मतैक्य मालूम पड़ता है, लेकिन वास्तव में इस सम्बन्ध में मतभेद मौजूद हैं। इस समय ये मतभेद मुख्य रूप से कृषि के समाजवादी रूपान्तर यानी कृषि-सहकारिता के प्रश्न के बारे में प्रकट हो रहे हैं।

कुछ लोगों का कहना है कि पिछले कुछ वर्षों से कृषि-सहकारिता के क्षेत्र में एक निश्चित नियम लागू होता नजर आ रहा है, यानी, जाड़ों में तो उनके विस्तार को बढ़ावा दिया जाता है लेकिन वसन्त में कुछ लोगों द्वारा दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने का नाम देकर उसका विरोध किया जाता है। इस कथन के भी कारण मौजूद हैं, क्योंकि वे लोग अनेक मौकों पर तथाकथित दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने की कार्यवाही का विरोध होते देख चुके हैं। उदाहरण के लिए, 1952 के जाड़ों में कृषि-सहकारिता का विस्तार किया गया, लेकिन 1953 के वसन्त में उसे दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने का नाम देकर उसका विरोध किया गया; 1954 के जाड़ों में फिर एक बार उसका विस्तार किया गया, लेकिन अगले वर्ष वसन्त में फिर एक बार उसे दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने का नाम देकर उसका विरोध किया गया। तथाकथित दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने की कार्यवाही के विरोध का मतलब न सिर्फ यह था कि कृषि-सहकारिता के विस्तार को रोक दिया जाए, बल्कि यह भी था कि अब तक बड़ी तादाद में कायम की गई सहकारी समितियों को जबरन विघटित (अथवा "भंग") कर दिया जाए, इस प्रकार कार्यकर्ताओं और किसान समुदाय के बीच असन्तोष फैल गया। कुछ किसान तो इतने ज्यादा क्रोधित हो उठे कि उन्होंने खाना खाने से भी इनकार कर दिया, या बिस्तर पर पड़े रहे, अथवा दस-बारह दिन तक लगातार काम पर नहीं गए। उन्होंने कहा, "आप ही लोगों ने हमसे सहकारी समितियां स्थापित करने को कहा था, और अब आप ही लोग हमसे उन्हें भंग करने

की बात कह रहे हैं''। सहकारी समितियों के भंग होने से खुशहाल मध्यम किसान खुश हुए लेकिन गरीब किसान दुखी हुए। जब कृषि-सहकारिता के विस्तार को रोकने या सहकारी समितियों को भंग करने की खबर हूपे प्रान्त के गरीब किसानों तक पहुंची, तो ''उनका उत्साह ठण्डा पड़ गया,'' लेकिन कुछ मध्यम किसानों ने कहा, ''यह मूलान पहाड़ की तीर्थयात्रा करने के समान है''। (हूपे प्रान्त की हवाङफो काउण्टी में स्थित मूलान पहाड़ पर मूलान मन्दिर खड़ा है, जिसे किसान अपना तीर्थस्थल मानते हैं।)

क्या कारण है कि कुछ साथी ढुलमुलपन दिखा रहे हैं, जिसे ज्यादातर लोग बिलकुल गैरजरूरी समझते हैं ? इसका कारण यह है कि वे लोग कुछ मध्यम किसानों के असर में आ गए हैं। सहकारी आन्दोलन की प्रारम्भिक अवस्था में, कुछ मध्यम किसान, खास तौर पर खुशहाल मध्यम किसान जिनका पूंजीवाद की तरफ भारी झुकाव था, समाजवादी रूपान्तर से अनिच्छुक थे। यहां जो चीज निर्णायक है वह है सहकारी आन्दोलन में मध्यम किसानों के बारे में पार्टी की नीति और काम करने का तरीका। बहुत से मध्यम किसान, मुख्य रूप से नए और पुराने निम्न-मध्यम किसान, जो इतने ज्यादा खुशहाल नहीं हैं और जिनकी राजनीतिक चेतना का स्तर ऊंचा है, सहकारी समितियों में शामिल होना चाहते हैं, बशर्ते कि हम ऐसी नीति पर अमल करें जो दोनों श्रेणियों के लिए, यानी गरीब किसानों व मध्यम किसानों के लिए फायदमन्द हो, और ऐसी नीति न हो जो केवलमात्र गरीब किसानों के लिए ही फायदमन्द हो, तथा बशर्ते कि हमारा काम करने का तरीका अच्छा हो। किन्तु अगर हम इस नीति पर अमल करेंगे तो भी कुछ मध्यम किसान फिलहाल सहकारी समितियों से बाहर रहना और ''अगर हो सके तो एक-दो साल के लिए मुक्त रहना'' पसन्द करेंगे। यह बात पूरी तरह समझ में आती है, क्योंकि सहकारिता का अर्थ है किसानों के उत्पादन के साधनों की निजी मिल्कियत और प्रबन्ध के समूचे तरीके में परिवर्तन लाना, उनके लिए यह एक बुनियादी परिवर्तन है, इसलिए यह स्वाभाविक है कि इस मामले पर वे बड़ी सावधानी से विचार करना चाहेंगे और हो सकता है कि वे कुछ समय के लिए निर्णय करने में कठिनाई अनुभव करें। हमारे कुछ साथी पार्टी की नीति और उसके काम के तरीके के अनुसार समस्याओं को हल करने में असफल रहे और जब उन्हें खुशहाल मध्यम किसानों की शिकायतों और हमारे काम की कुछ त्रुटियों का सामना करना पड़ा, तो वे आतंकित हो उठे और ''दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने'' के खिलाफ चीख-पुकार मचाने लगे, तथा उन्होंने सहकारी समितियों को मनमाने ढंग से ''भंग'' कर दिया, मानो वे असाध्य रसौलियां हों और अगर उन्हें तुरन्त खत्म न किया गया तो वे प्राणघातक सिद्ध होने वाली हों। लेकिन स्थिति दरअसल ऐसी बिलकुल नहीं है। हमारे काम में कमियां जरूर हैं, लेकिन आन्दोलन कुल मिलाकर स्वस्थ रूप से चल रहा है। गरीब व निम्न-मध्यम किसानों का व्यापक समुदाय सहकारी समितियों का स्वागत करता है। अगर कुछ मध्यम किसान इन्तजार व सोच विचार करना चाहते हों तो उन्हें ऐसा करने देना चाहिए। जहां तक खुशहाल मध्यम किसानों का सवाल है, केवल उन्हें छोड़कर जो सहकारी समितियों में अपनी इच्छा से शामिल होना चाहते हैं, उन्हें इन्तजार व सोच-विचार करने का और ज्यादा समय देना चाहिए। इस समय आन्दोलन में मुख्य कमी यह है कि बहुत सी जगहों में पार्टी नेतृत्व उसके साथ कदम मिलाकर चलने में असमर्थ है; कर्ताधर्ता साथियों ने समूचे आन्दोलन का नेतृत्व

अपने हाथ में नहीं लिया है, उनके पास प्रान्त, काउण्टी, जिले या श्याङ के लिए कोई चौतरफा योजना नहीं, इसके विपरीत वे जो भी काम हाथ में आए उसे कर लेने का रुख अपना रहे हैं और उनमें पहलकदमी, सक्रियता, उत्साह, हार्दिक अनुसमर्थन और जी-जान से काम करने की भावना का अभाव है। इस प्रकार एक बड़ी समस्या उठ खड़ी हुई है। आन्दोलन का बुनियादी स्तर पर व्यापक रूप से प्रसार होने किन्तु ऊपर के स्तर पर उसकी ओर अपर्याप्त ध्यान दिए जाने के कारण यह स्वाभाविक है कि कुछ गड़बड़ी पैदा हो जाए। इस प्रकार की गड़बड़ी का सामना होने पर हमारे साथी अधिक सुदृढ़ नेतृत्व और बेहतर नियोजन का सहारा लेने के बदले एक नकारात्मक रवैया अपना लेते हैं, तथा आन्दोलन की प्रगति को रोकने की कोशिश करते हैं अथवा बड़ी जल्दबाजी से अनेक सहकारी समितियों को ''भंग'' करने लगते हैं। निस्सन्देह ऐसा करना गलत है और इससे निश्चय ही और अधिक गड़बड़ी पैदा हो जाएगी।

'कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों को कैसे चलाया जाय'' नामक एक पुस्तक हमने अभी-अभी तैयार की है। इसमें विभिन्न प्रान्तों, म्युनिसिपल्टियों और स्वायत्त प्रदेशों के तथ्यपूर्ण उदाहरण सम्मिलित किए गए हैं। पुस्तक में कुल 120 से ज्यादा लेख हैं। ज्यादातर सामग्री जनवरी-अगस्त 1955 की अवधि से और बाकी सामग्री 1954 की दूसरी छमाही से सम्बन्धित है। अधिकांश लेख प्रान्तों, म्युनिसिपल्टियों या स्वायत्त प्रदेशों के अन्तःपार्टी प्रकाशनों से लिये गए हैं, कुछ लेख समाचारपत्रों से लिये गए हैं, कुछ लेख पार्टी कमेटियों या कार्यकर्ताओं द्वारा उच्च स्तर की पार्टी कमेटियों के समक्ष प्रस्तुत रिपोर्टों के रूप में हैं, और एक लेख सहकारी समिति के एक ऐसे निदेशक के भाषण का अक्षरशः रिकार्ड है जिन्हें पेकिङ आने का निमंत्रण दिया गया था। हमने इस सामग्री की मूल विषय-वस्तु को ज्यों का त्यों रखते हुए उसमें केवल कुछ शाब्दिक परिवर्तन कर दिए हैं। कुछ लेखों पर हमने टिप्पणियां भी लिख दी हैं। अपनी टिप्पणियों को मूल प्रकाशनों की सम्पादकीय टिप्पणियों से अलग करने के लिए हमारी टिप्पणियों को ''सम्पादक की टिप्पणी'' का नाम दे दिया गया है। हमारा खयाल है कि उक्त सामग्री में लेखकों द्वारा प्रकट किए गए विचार सही अथवा बुनियादी रूप से सही हैं। इस सामग्री के जरिए पाठकगण देश में चल रहे सहकारी आन्दोलन के पैमाने और दिशा को तथा उसके विकास की सम्भावनाओं को देख सकेंगे। इस सामग्री से पता चलता है कि यह एक स्वस्थ आन्दोलन है। गड़बड़ी केवल उन्हीं स्थानों में पैदा हुई जहां पार्टी कमेटियां सही मार्गदर्शन करने में असफल रहीं। लेकिन जहां एक बार वे आन्दोलन के साथ कदम मिला कर चलने लगीं और उन्होंने पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की नीति के अनुसार समुचित मार्गदर्शन करना शुरू कर दिया, तो समस्या फौरन हल हो गई। यह सामग्री बेहद कायल करने लायक है; यह उन लोगों को सक्रिय बना सकती है जो अब तक इस आन्दोलन के प्रति निष्क्रियता का रवैया अपनाए हुए हैं; यह उन लोगों को, जो अभी यह नहीं जानते कि सहकारी समितियां कैसे चलाई जाती हैं, यह पता लगाने में सहायता दे सकती है कि उन्हें कैसे चलाया जाता है; इससे भी बड़ी बात यह है कि यह उन लोगों की जबान बन्द कर सकती है जो सहकारी समितियों को मनमाने ढंग से ''भंग'' करना चाहते हैं।

दसियों करोड़ किसानों के बीच कृषि का समाजवादी रूपान्तर करना वास्तव में एक असाधारण काम है। इस आन्दोलन को समूचे देश में ज्यादा लम्बे समय से नहीं चलाया जा

रहा है, तथा इसमें अब तक जो अनुभव प्राप्त किए गए हैं वे काफी नहीं हैं। खास बात यह है कि हमने समूची पार्टी में अभी तक इस सिलसिले में व्यापक और प्रभावी प्रचार कार्य नहीं किया; परिणामस्वरूप बहुत से साथी इस मुद्दे पर ध्यान ही नहीं देते और इस आन्दोलन से सम्बन्धित उसूलों, नीतियों और उपायों को नहीं समझ पाते, तथा इसलिए अब भी पार्टी के अन्दर एकीकृत संकल्प का अभाव है। इस मुद्दे के बारे में वाद-विवाद करने के लिए हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का छठा पूर्ण अधिवेशन शीघ्र ही आयोजित किया जाएगा तथा इस सम्बन्ध में एक नया प्रस्ताव स्वीकार किया जाएगा। हमें इस प्रस्ताव के अनुसार व्यापक और प्रभावी प्रचार-कार्य शुरू कर देना चाहिए, जिससे समूची पार्टी में एकीकृत संकल्प पैदा हो सके। इस पुस्तक के प्रकाशन से सम्भवत: हमारे प्रचार-कार्य में कुछ सहायता मिल सकेगी।

प्रस्तावना II

27 दिसम्बर 1955

यह एक स्रोत-ग्रन्थ है, जिसे देहातों में काम करने वाले लोगों के लिए तैयार किया गया है। इसके लिए एक प्रस्तावना[2] सितम्बर में लिखी गई थी। अब तीन महीने बाद वह प्रस्तावना पुरानी पड़ चुकी है और इसलिए एक नई प्रस्तावना तैयार करनी पड़ी है।

घटनाक्रम इस प्रकार है : इस पुस्तक को दो बार सम्पादित किया गया, पहली बार सितम्बर में और दूसरी बार दिसम्बर में। पहली बार 121 लेख शामिल किए गए। ज्यादातर लेखों में 1955 की पहली छमाही की स्थितियों को प्रतिबिम्बित किया गया और कुछ लेखों में 1954 की दूसरी छमाही की स्थितियों को प्रतिबिम्बित किया गया। नमूने की प्रतियां प्रान्तों, म्युनिसिपलटियों, स्वायत्त प्रदेशों और प्रिफेक्चरों की पार्टी कमेटियों के उन जिम्मेदार कामरेडों के बीच उनकी राय जानने के लिए बांटी गईं जिन्होंने 4 से 11 अक्तूबर 1955 तक आयोजित चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी के छठे पूर्ण अधिवेशन (विस्तृत) में भाग लिया था। इन कामरेडों ने महसूस किया कि इस पुस्तक में कुछ पूरक सामग्री जोड़ने की आवश्यकता है। अधिवेशन के बाद ज्यादातर प्रान्तों, म्युनिसिपलटियों और स्वायत्त प्रदेशों ने कुछ पूरक सामग्री भेजी। इसमें से ज्यादातर सामग्री 1955 की दूसरी छमाही की स्थितियों को प्रतिबिम्बित करती थी। इस प्रकार पुस्तक को फिर से सम्पादित करना पड़ा। हमने 121 मूल लेखों में से 30 लेख हटा दिए और 91 लेख रहने दिए, तथा नई सामग्री में से 85 लेख चुनकर जोड़ दिए, जिससे पुस्तक में कुल मिलाकर 176 लेख – लगभग 9,00,000 शब्द हो गए। इस तरह वर्तमान संकलन तैयार किया गया है। सम्पादन-कार्य के लिए जिम्मेदार साथियों ने सारी सामग्री को पढ़ा है, उसमें कुछ शाब्दिक परिवर्तन किए हैं, कठिन पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या करने के लिए नोट जोड़ दिए हैं और विषयानुरूप एक तालिका भी तैयार की है। इसके अलावा कुछ गलत विचारों की आलोचना करने या कुछ सुझाव देने के लिए हमने भी कुछ लेखों में अपनी टिप्पणियां जोड़ दी हैं। इन टिप्पणियों और मूल लेखों की सम्पादकीय टिप्पणियों के बीच फर्क करने के लिए हमारी टिप्पणियों को "सम्पादक की टिप्पणी" का नाम दे दिया गया है। चूंकि हमारी कुछ टिप्पणियां सितम्बर में और कुछ अन्य टिप्पणियां दिसम्बर में लिखी गई थीं, इसलिए

कुदरती तौर पर उनके लहजे में कुछ फर्क है।

लेकिन, यह केवल सामग्री से सम्बन्धित मामला ही नहीं है। बात यह है कि 1955 की दूसरी छमाही में चीन की परिस्थिति में बुनियादी परिवर्तन हुआ है। चीन के 11 करोड़ किसान परिवारों में से 7 करोड़ से ज्यादा (60 प्रतिशत से ज्यादा) किसान परिवार चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के आवाहन पर अब तक (दिसम्बर 1955 के अन्त तक) अर्ध-समाजवादी कृषि उत्पादक सहकारी समितियों में शामिल हो चुके हैं। कृषि के सहकारी रूपान्तर के बारे में अपनी 31 जुलाई 1955 की रिपोर्ट में मैंने सहकारी समितियों में शामिल किसान परिवारों की संख्या 1,69,00,000 बताया था, लेकिन कुछ ही महीने में इस संख्या में 5 करोड़ से भी ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है। यह एक असाधारण घटना है। इस घटना से यह साफ तौर पर जाहिर हो जाता है कि हमें कृषि के अर्ध-समाजवादी सहकारी रूपान्तर का काम बुनियादी तौर पर पूरा करने के लिए केवल 1956 का वर्ष चाहिए। बाद के तीन या चार वर्षों में, यानी 1959 या 1960 तक, हम अर्ध-समाजवादी सहकारी समितियों का पूर्ण समाजवादी सहकारी समितियों में रूपान्तर करने का काम मुख्य रूप से पूरा कर सकेंगे। इस घटना से यह साफ तौर पर जाहिर हो जाता है कि हमें चीन के दस्तकारी उद्योग और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य का समाजवादी रूपान्तर योजना से पहले पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि कृषि के विकास की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। और इस घटना से यह भी जाहिर हो जाता है कि चीन के औद्योगीकरण तथा उसके विज्ञान, संस्कृति, शिक्षा, स्वास्थ्य कार्य इत्यादि के विकास का काम पैमाने व रफ्तार की दृष्टि से ठीक वैसा नहीं हो सकता जैसे कि पहले सोचा गया था, बल्कि उसके पैमाने व रफ्तार को समुचित रूप से बढ़ाया जाना जरूरी है।

क्या कृषि सहकारिता का, जिसे अब इतनी तेज रफ्तार से चलाया जा रहा है, स्वस्थ रूप से विकास हो रहा है? निश्चय ही उसका स्वस्थ रूप से विकास हो रहा है। हर जगह से पार्टी संगठन आन्दोलन का चौतरफा नेतृत्व कर रहे हैं। किसान लोग आन्दोलन में दिलोजान से और अत्यन्त व्यवस्थित रूप से भाग ले रहे हैं। उत्पादन के लिए उनका उत्साह अभूतपूर्व बुलन्दियों को छू रहा है। व्यापकतम जन-समुदाय को पहली बार अपना उज्ज्वल भविष्य स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। जब तीन पंचवर्षीय योजनाएं पूरी हो जाएंगी, यानी 1967 तक, अनाज और कई अन्य फसलों का उत्पादन लोक गणराज्य की स्थापना से पहले के सबसे ऊंचे वार्षिक उत्पादन के मुकाबले शायद दुगुना या तिगुना हो जाएगा। अपेक्षाकृत थोड़े समय में, यानी सात-आठ वर्षों में, निरक्षरता समाप्त हो जाएगी। सिस्टोसोमियासिस जैसी बहुत सी बीमारियों का, जो लोगों के लिए अत्यन्त हानिकारक हैं और जिनका मुकाबला करना पहले असम्भव समझा जाता था, अब मुकाबला किया जा सकता है। संक्षेप में, जन-समुदाय यह देख चुका है कि उसका भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है।

समूची पार्टी और जनता के सामने अब कृषि के समाजवादी रूपान्तर की रफ्तार से सम्बन्धित दक्षिणपंथी रूढ़िवादी विचारों की आलोचना करने की समस्या नहीं रही। यह समस्या सुलझाई जा चुकी है। और न अब समूचे पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य को एक-एक व्यवसाय करके संयुक्त राजकीय-निजी कारोबारों में रूपान्तरित करने की रफ्तार से सम्बन्धित समस्या ही रह गई है। यह समस्या भी सुलझाई जा चुकी है। दस्तकारी उद्योग के समाजवादी रूपान्तर

की रफ्तार के बारे में 1956 की पहली छमाही में विचार विमर्श किया जाना और इस समस्या को भी आसानी से सुलझाया जा सकता है। आज जो समस्या मौजूद है उसका ताल्लुक इन सब बातों से नहीं बल्कि किसी और बात से है। उसका ताल्लुक कृषि के उत्पादन से है; उद्योगों के उत्पादन (जिसमें राजकीय उद्योगों, संयुक्त राजकीय-निजी उद्योगों तथा सहकारी उद्योगों का उत्पादन शामिल है) से है; दस्तकारी उद्योग के उत्पादन से है; उद्योग, संचार व परिवहन के क्षेत्र में पूंजीगत-निर्माण के पैमाने व उसकी रफ्तार से है; वाणिज्य का तालमेल अर्थव्यवस्था की अन्य शाखाओं के साथ कायम करने से है; विज्ञान, संस्कृति, शिक्षा और स्वास्थ्य इत्यादि से सम्बन्धित कामों का तालमेल हमारी विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के साथ कायम करने से है, वगैरह-वगैरह। इन सभी क्षेत्रों में परिस्थिति को वास्तविकता से कम आंका गया है; अगर हमारे काम को सम्पूर्ण परिस्थिति के विकास के साथ कदम मिलाना है, तो इस त्रुटि की आलोचना करना तथा उसे दूर करना जरूरी है। लोगों को बदलती स्थितियों के अनुकूल अपने विचारों को ढालते रहना चाहिए। बेशक, किसी को भी वास्तविकता की अवहेलना नहीं करनी चाहिए और कोरी कल्पना की उड़ान नहीं भरनी चाहिए, या काम की ऐसी योजना नहीं बनानी चाहिए जो वस्तुगत स्थिति से मेल न खाती हो, अथवा असम्भव चीज पाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। लेकिन आज की समस्या यह है कि दक्षिणपंथी रूढ़िवादी विचार अब भी अनेक क्षेत्रों में गड़बड़ी पैदा कर रहे हैं और हमारे काम को वस्तुगत स्थिति के विकास के साथ कदम नहीं मिलाने दे रहे। आज समस्या यह है कि जो भी काम कुछ प्रयत्नसाध्य होता है उसे बहुत से लोग असम्भव समझ बैठते हैं। इसलिए यह बिलकुल आवश्यक हो गया है कि दक्षिणपंथी रूढ़िवादी विचारों की, जो निश्चित रूप से मौजूद हैं, लगातार आलोचना की जाय।

यह पुस्तक उन कामरेडों के लिए तैयार की गई है जो देहाती क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। क्या इसे शहर के लोग भी पढ़ सकते हैं ? इसे वे लोग न सिर्फ पढ़ सकते हैं, बल्कि उन्हें पढ़ना भी चाहिए। इसमें नई-नई घटनाएं प्रतिबिम्बित हुई हैं। समाजवादी निर्माण के दौरान जिस तरह शहरों में प्रतिदिन, प्रतिक्षण नई-नई घटनाएं हो रही हैं, उसी तरह देहातों में भी हो रही हैं। किसान क्या कर रहे हैं ? जो काम किसान कर रहे हैं और जो काम मजदूर वर्ग, बुद्धिजीवी और सभी गण्यमान्य देशभक्त व्यक्ति कर रहे हैं, उनके बीच क्या सम्बन्ध है ? यह बात समझने के लिए देहाती क्षेत्रों से सम्बन्धित सामग्री को पढ़ना लाभदायक होगा।

देहातों की वर्तमान परिस्थिति को ज्यादा से ज्यादा लोग समझ सकें, इसके लिए हम पुस्तक का एक संक्षिप्त संस्करण तैयार कर रहे हैं, जिसमें 176 लेखों में से 44 लेख अथवा लगभग 2,70,000 शब्द शामिल किए गए हैं, ताकि जो लोग पूरे संकलन को न पढ़ पाएं वे भी इस विषय में कुछ जानकारी प्राप्त कर सकें।

नोट

[1] प्रकाशन के समय इस पुस्तक का नाम बदल कर 'चीन के देहातों में समाजवादी उभार' कर दिया गया।

[2] यहां तात्पर्य 'प्रस्तावना 1' से है।

'चीन के देहातों में समाजवादी उभार' पर सम्पादक की टिप्पणियां

सितम्बर और दिसम्बर 1955

1

यह लेख बहुत अच्छी तरह लिखा गया है और पाठकों के सामने इस पुस्तक के पहले लेख के रूप में प्रस्तुत करने योग्य है। इस लेख के आरम्भ में ऐसे लोगों का वर्णन किया गया है, जो केवल इसलिए "सहकारी समितियों से कतराते" हैं क्योंकि वे इस विषय से अनभिज्ञ हैं और इस सम्बन्ध में सवाल पूछे जाने से डरते हैं। इस तरह के लोगों की संख्या देश के अनेक भागों में अब भी कम नहीं है। इस तरह "दृढ़ता से सिकुड़ना", यानी फरमान जारी करके सहकारी समितियों को बड़े पैमाने पर विघटित कर देना भी "सहकारी समितियों से कतराने" के रवैये की ही अभिव्यक्ति है; फर्क सिर्फ यह है कि ये लोग उससे कतराने का निष्क्रिय रवैया अपनाने के बजाय उसके प्रति अत्यन्त सक्रिय रवैया अपनाते हैं तथा एक ही प्रहार से बहुत सी सहकारी समितियों को (उनके अपने कथनानुसार) "भंग" कर देते हैं। ये लोग हाथ में कुल्हाड़ी लेकर उन्हें भंग कर देते हैं तथा परेशान करने वाली समस्याओं से कतराते हैं। ये लोग कहते हैं कि सहकारी समितियों का संचालन करने में तरह-तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा उनके विचार से ये कठिनाइयां कल्पनातीत हैं। लेकिन समूचे देश में ऐसे असंख्य उदाहरण मौजूद हैं जो उनकी दलीलों को बेबुनियाद साबित कर देते हैं।

'चीन के देहातों में समाजवादी उभार' का सम्पादन करते समय कामरेड माओ त्सेतुङ ने 104 टिप्पणियां लिखी थीं, जिनमें से 43 टिप्पणियों को यहां संकलित किया गया है। मार्च 1958 में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के राजनीतिक ब्यूरो की छङतू में आयोजित विस्तृत मीटिंग के अवसर पर इन टिप्पणियों के एक अंश को फिर से छापा गया। इस सिलसिले में 19 मार्च 1958 को कामरेड माओ त्सेतुङ ने एक स्पष्टीकरण लिखा, जिसका पूरा मजमून इस प्रकार है :

> 'चीन के देहातों में समाजवादी उभार' नाम पुस्तक में प्रकाशित ये टिप्पणियां सितम्बर और दिसम्बर 1955 में लिखी गई थीं। इनमें से कुछ टिप्पणियों का महत्व आज भी कम नहीं हुआ है। लेकिन टिप्पणियों में एक बात यह कही गई है कि 1955 एक ऐसा वर्ष था जब समाजवाद ने पूंजीवाद के खिलाफ अपनी निर्णायक लड़ाई में बुनियादी जीत हासिल कर ली; इस बात को इस तरह पेश करना उचित नहीं है। उसे इस तरह पेश किया जाना चाहिए : 1955 एक ऐसा वर्ष था जब उत्पादन के सम्बन्धों की मिलकियत से ताल्लुक रखने वाले पहलू

हपे प्रान्त की चुनहवा काउण्टी का अनुभव ऐसा ही एक उदाहरण है। 1952 में वहां सहकारी समितियों को चलाना कोई नहीं जानता था। इस सवाल का हल उन्होंने सहकारी समितियों को चलाना सीखकर निकाला। उनका नारा था : "पार्टी-सचिव खुद मैदान में उतर जाएं और सभी पार्टी-सदस्य सहकारी समितियों के संचालन में हाथ बंटाएं। नतीजा यह हुआ : "बिलकुल जानकारी न होने की स्थिति के बदले बहुत कुछ जानकारी होने की स्थिति आ गई", "चन्द लोगों को सहकारी समितियों का संचालन करने की जानकारी होने की स्थिति के बदले बहुत से लोगों को उनका संचालन करने की जानकारी होने की स्थिति आ गई", "जिला स्तर के कार्यकर्ताओं द्वारा सहकारी समितियों का संचालन किए जाने की स्थिति के बदले जन-समुदाय द्वारा उसका संचालन किए जाने की स्थिति आ गई"। 1952 से 1954 तक के तीन वर्षों में हपे प्रान्त की चुनहवा काउण्टी के दसवें जिले के ग्यारह श्याडों ने 4,343 किसान परिवारों में से 85 प्रतिशत को सहकारी समितियों में शामिल करके अर्ध-समाजवादी सहकारी रूपान्तर का कार्य बुनियादी तौर पर पूरा कर लिया। 1952 की तुलना में 1954 में इस जिले में कृषि, जंगलात व पशुपालन के क्षेत्र में निम्नलिखित वृद्धि हुई : अनाज 76 प्रतिशत, इमारती पेड़ 56.4 प्रतिशत, फलों के पेड़ 62.87 प्रतिशत तथा भेड़ें 463.1 प्रतिशत।

अब यह सवाल उठाने के लिए हमारे पास हर सबब मौजूद है : अगर वहां ऐसा किया जा सकता है तो दूसरी जगह क्यों नहीं किया जा सकता ? अगर आप कहते हैं कि ऐसा नहीं किया जा सकता तो इसकी वजह क्या है ? मुझे तो इसकी सिर्फ एक ही वजह नजर आती है और वह है – झंझट उठाने से कतराना, या अधिक स्पष्ट शब्दों में कहा जाय तो दक्षिणपंथी अवसरवाद पर अमल करना। इसीलिए "सहकारी समितियों से कतराने" की स्थिति मौजूद है, इसीलिए पार्टी-सचिव के खुद मैदान में न उतरने और सभी पार्टी-सदस्यों के सहकारी समितियों के संचालन में हाथ न बंटाने की स्थिति मौजूद है, तथा इसीलिए बिलकुल जानकारी न होने की स्थिति अभी तक बिलकुल जानकारी न होने की ही स्थिति बनी हुई है, चन्द लोगों को सहकारी समितियों का संचालन करने की जानकारी होने की स्थिति अभी तक केवल चन्द

में बुनियादी जीत हासिल की गई, जबकि उत्पादन के सम्बन्धों से ताल्लुक रखने वाले अन्य पहलुओं में तथा ऊपरी ढांचे से ताल्लुक रखने वाले कुछ पहलुओं में, यानी विचारधारात्मक व राजनीतिक मोर्चों पर, या तो बुनियादी जीत हासिल नहीं की गई, अथवा अगर हासिल की भी गई तो वह पूरी नहीं थी तथा और ज्यादा कोशिश करने की जरूरत थी। हमने न तो यह सोचा था कि 1956 में दुनिया में इतना बड़ा तूफान बरपा हो जाएगा और न यह सोचा था कि हमारे देश में उसी वर्ष "दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने की प्रवृत्ति का विरोध करने" की घटना होगी, एक ऐसी घटना जिसने जन-समुदाय के उत्साह पर पानी उड़ेल दिया। इन दोनों ही घटनाओं से दक्षिणपंथियों को पागलपन के साथ प्रहार करने के लिए काफी प्रोत्साहन मिला। इससे एक सबक मिलता है : न तो समाजवादी क्रान्ति सुगम है और न समाजवादी निर्माण, तथा हमें देश विदेश में पैदा होने वाली अनेक सम्भावित कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। यह पक्की बात है कि अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय दोनों ही क्षेत्रों में आम परिस्थिति अनुकूल है। लेकिन बहुत सी गम्भीर कठिनाइयां अवश्य पैदा होंगी और यह जरूरी है कि हम उनका सामना करने के लिए तैयार रहें।

लोगों को ही सहकारी समितियों का संचालन करने की जानकारी होने की स्थिति बनी हुई है, जिला स्तर के कार्यकर्ताओं द्वारा सहकारी समितियों का संचालन किए जाने की स्थिति अभी तक केवल जिला स्तर के कार्यकर्ताओं द्वारा सहकारी समितियों का संचालन किए जाने की ही स्थिति बनी हुई है। अथवा कुल्हाड़ी हाथ में लेकर उन तमाम सहकारी समितियों को भंग किया जा रहा है जिन्हें चलाना झंझट का काम समझा जाता है। अगर यह दलील हावी हो गई तो कोई भी काम पूरा नहीं किया जा सकेगा। हमने "सक्रिय नेतृत्व और सतत-सुस्थिर विकास" और "चौतरफा नियोजन तथा अधिक कारगर नेतृत्व" जैसे नारे पेश किए हैं; हम चुनहवा काउण्टी के साथियों द्वारा पेश किए गए इस बिलकुल सही नारे से सहमत हैं कि "पार्टी-सचिव खुद मैदान में उतर जाएं और सभी पार्टी-सदस्य सहकारी समितियों के संचालन में हाथ बंटाएं।" क्या चुनहवा काउण्टी में "सक्रिय नेतृत्व और सतत-सुस्थिर विकास" पर अमल नहीं किया गया है ? क्या वहां "चौतरफा नियोजन तथा अधिक कारगर नेतृत्व" पर अमल नहीं किया गया है ? बेशक, वहां इन पर अमल किया गया है। क्या यह खतरनाक है ? क्या यह "दुस्साहस के साथ आगे बढ़ना" है ? जो खतरा इस समय मौजूद है वह दरअसल "सहकारी समितियों से कतराने" का खतरा है, और चुनहवा काउण्टी के साथियों ने इस पर काबू पा लिया है। "दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने" के विरोध के नाम पर सहकारी समितियों के बड़े पैमाने पर "भंग किए जाने" का खतरा भी मौजूद है, लेकिन चुनहवा काउण्टी में ऐसा नहीं हुआ। अगर, जैसा कि कुछ लोगों का कहना है, "सहकारी समितियों का विकास जन-समुदाय की राजनीतिक चेतना और कार्यकर्ताओं की नेतृत्व-क्षमता के स्तर से आगे बढ़ गया है", तो जो कुछ चुनहवा काउण्टी में हुआ उसका कारण कैसे समझाया जा सकता है ? वहां जन-समुदाय ने वास्तव में सहकारिता की मांग की, वहां कार्यकर्ता अवश्य बिलकुल जानकारी न होने की स्थिति से बहुत कुछ जानकारी होने की स्थिति में पहुंच गए। हर आदमी के पास आंखें हैं, क्या चुनहवा काउण्टी में किसी को कोई खतरा नजर आता है ? जिन तीन वर्षों में उन्होंने सहकारी रूपान्तर का काम कदम-ब-कदम पूरा किया उनके दौरान अनाज 76 प्रतिशत बढ़ गया, इमारती पेड़ 56.4 प्रतिशत बढ़ गए, फलों के पेड़ 62.87 प्रतिशत बढ़ गए तथा भेड़ें 463.1 प्रतिशत बढ़ गईं। क्या इसे किसी किस्म का खतरा माना जा सकता है ? क्या इसे "दुस्साहस के साथ आगे बढ़ना" कहा जा सकता है ? क्या इसे "जन-समुदाय की राजनीतिक चेतना और कार्यकर्ताओं की नेतृत्व-क्षमता के स्तर से आगे बढ़ना" माना जा सकता है ?

चुनहवा काउण्टी के सहकारी आन्दोलन में वाङ क्वो-फान सहकारी समिति भी शामिल है, जो पहले "कंगालों की सहकारी समिति" कहलाती थी, क्योंकि उसके तेईस गरीब किसान परिवारों के पास गधे की केवल "तीन टांगें" थीं। अपने खुद के प्रयत्नों पर निर्भर रहते हुए उसके सदस्यों ने तीन वर्ष के अन्दर बहुत से उत्पादन के साधनों को "पहाड़ों का दोहन करके प्राप्त कर लिया",[1] जो एक ऐसा कारनामा है जिससे वहां की यात्रा करने वाले बहुत से लोगों के हृदय द्रवित हो उठते हैं। मेरे विचार से यह हमारे समूचे राष्ट्र की छवि को प्रतिबिम्बित करता है। 60 करोड़ "कंगाल" अपने खुद के प्रयत्नों के जरिए कुछ ही दशाब्दियों के अन्दर एक समृद्ध व शक्तिशाली समाजवादी देश का निर्माण भला क्यों नहीं कर सकते ? समाज की

सम्पत्ति मजदूर, किसान और मेहनतकश बुद्धिजीवी पैदा करते हैं। अगर वे अपने भाग्य की बागडोर अपने हाथ में ले लें, अगर वे मार्क्सवादी-लेनिनवादी कार्यदिशा अपना लें तथा समस्याओं से कतराने के बजाय सकारात्मक रवैया अपना कर उन्हें हल करने लगें, तो अवश्य ही वे दुनिया की हर कठिनाई को दूर कर सकते हैं।

अन्त में हम इस लेख के लेखक को, जिसके नाम का उल्लेख इसमें नहीं किया गया है, धन्यवाद देना चाहते हैं। उन्होंने उत्साह से ओतप्रोत होकर अत्यन्त सजीव शैली में एक जिले के सहकारी रूपान्तर की प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन किया है। यह समूचे देश के सहकारी रूपान्तर के लिए एक बड़ा योगदान है। हम आशा करते हैं कि हर प्रान्त, प्रिफेक्चर और काउण्टी द्वारा ऐसे एक या एक से ज्यादा लेख तैयार किए जा सकेंगे।

('पार्टी-सचिव खुद मैदान में उतर जाएं और सभी पार्टी-सदस्य सहकारी समितियों के संचालन में हाथ बंटाएं' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

2

1955 का वर्ष चीन में एक ऐसा वर्ष है जब बहुत से लोगों की भ्रान्त धारणाएं खत्म हो रही हैं। इस वर्ष की पहली छमाही तक भी बहुत से लोग कुछ प्रश्नों के बारे में अपनी मान्यताओं पर मजबूती से अड़े हुए थे। लेकिन दूसरी छमाही तक वे यह सिलसिला जारी न रख सके और उन्हें नई मान्यताओं को अपनाना पड़ा। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं : उनका मत यह था कि जन-समुदाय द्वारा की गई "तीन वर्ष में सहकारी रूपान्तर पूरा करने" की मांग महज एक खाम-खयाली है; यह कि उत्तर चीन में सहकारिता को जल्दी कार्यान्वित किया जा सकता है, मगर दक्षिण चीन में नहीं; यह कि पिछड़े हुए श्याङों, पहाड़ी क्षेत्रों, अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के क्षेत्रों, अनेक राष्ट्रीयताओं की आबादी वाले क्षेत्रों अथवा प्राकृतिक विपत्तियों से ग्रस्त क्षेत्रों में सहकारी समितियां चलाना असम्भव है; यह कि सहकारी समिति की स्थापना करना तो आसान है, लेकिन उसे सुदृढ़ बनाना कठिन है; यह कि किसान बेहद गरीब हैं और उनके पास पूंजी जुटाने का कोई उपाय नहीं है; यह कि किसान अनपढ़ हैं और लेखापाल उपलब्ध नहीं हैं; यह कि ज्यादा सहकारी समितियां कायम करने का मतलब है ज्यादा परेशानियों का सामना करना; यह कि सहकारी समितियों का विकास जन-समुदाय की राजनीतिक चेतना और कार्यकर्ताओं के अनुभव के स्तर से आगे बढ़ गया है; यह कि पार्टी द्वारा निर्धारित अनाज की खरीद-फरोख्त पर राज्य की इजारेदारी की नीति और सहकारिता की नीति से किसानों का उत्पादन का उत्साह ठण्डा पड़ गया है; यह कि अगर कम्युनिस्ट पार्टी सहकारिता के प्रश्न पर तुरन्त पीछे नहीं हटती, तो उसके सामने मजदूर-किसान संश्रय के टूटने का खतरा पैदा हो जाएगा; यह कि सहकारी रूपान्तर से अतिरिक्त श्रमशक्ति भारी मात्रा में संचित हो जाएगी, इसके इस्तेमाल का कोई रास्ता नहीं रह जाएगा। इस प्रकार के बहुत से अन्य उदाहरण भी पेश किए जा सकते हैं। संक्षेप में, ये सभी भ्रान्त धारणाएं थीं। अक्तूबर 1955 में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी के छठे पूर्ण अधिवेशन (विस्तृत) द्वारा आलोचना किए जाने के बाद ये सब भ्रान्त धारणाएं खत्म हो चुकी हैं। इस समय समाजवादी रूपान्तर

का ज्वार समूचे देश के देहाती क्षेत्रों में तेजी से उमड़ रहा है और जन-समुदाय बेहद खुश है। यह सभी कम्युनिस्टों के लिए एक गहरा सबक है। जन-समुदाय में समाजवाद के लिए बेशुमार उत्साह मौजूद है, फिर भी आखिर क्या वजह थी कि बहुत से नेतृत्वकारी संगठन कुछ महीने पहले इसके बारे में इतने संवेदनशून्य या इतने कम संवेदनशील थे ? क्या वजह थी कि कुछ नेताओं के दिमाग में मौजूद बातों और जन-समुदाय के दिमाग में मौजूद बातों में इतना अन्तर था ? इससे सबक लेकर भविष्य में ऐसे मामलों और समस्याओं को आखिर कैसे सुलझाया जाना चाहिए ? इसका केवल एक ही जवाब है, और वह यह है कि हम अपने को जन-समुदाय से हरगिज अलग न रखें, बल्कि जन-समुदाय के स्वरूप के आधार पर उसके उत्साह का पता लगाने में निपुण हो जाएं।

('एक पिछड़े हुए गांव का हर लिहाज से पिछड़ा होना जरूरी नहीं' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

3

जो लोग यह समझते हैं कि हर अलग-अलग इलाके में निम्न स्तर के सहकारी रूपान्तर का काम तीन साल में पूरा करना असम्भव है (तीन साल में सहकारी रूपान्तर पूरा करने का नारा जन-समुदाय ने लगाया था, लेकिन अवसरवादियों ने इसकी आलोचना की थी) और जो लोग यह समझते हैं कि बाद में मुक्त क्षेत्रों तथा पुराने मुक्त क्षेत्रों में सहकारी रूपान्तर का कार्य एक साथ पूरा करना असम्भव है, वे सब कृपया च्याङसू प्रान्त की खुनशान काउण्टी के इस श्याङ को ध्यान से देखें। यहां सहकारी रूपान्तर का कार्य पूरा करने में तीन वर्ष नहीं, बल्कि दो वर्ष ही लगे। यह कोई पुराना मुक्त क्षेत्र नहीं बल्कि सौ फीसदी बाद में मुक्त क्षेत्र है, और यह बहुत से पुराने मुक्त क्षेत्रों से आगे निकल चुका है। अब आप इसका क्या करेंगे ? क्या इसे पीछे घसीटेंगे ? बेशक, आप ऐसा नहीं कर सकेंगे। अवसरवादियों के लिए अपनी हार मान लेने के सिवाय और कोई चारा नहीं रह गया है। जन-समुदाय में समाजवाद के लिए बेशुमार उत्साह मौजूद है। जो लोग क्रान्ति के समय भी पुराने ढर्रे पर चलते रहने के सिवाय और कुछ नहीं जानते, वे ईस उत्साह को देखने में बिलकुल असमर्थ रहते हैं। वे अन्धे हैं तथा उनके सामने अंधेरा ही अंधेरा है। कभी-कभी वे लोग यहां तक आगे बढ़ जाते हैं कि सही और गलत को एक दूसरे के साथ गड्डमड्ड कर देते हैं तथा चीजों को एकदम उलटा करके पेश करते हैं। क्या बहुत से ऐसे लोगों से हमारा वास्ता नहीं पड़ा है ? वे लोग केवल यह जानते हैं कि पुराने ढर्रे पर कैसे कायम रहा जाय तथा जनता के उत्साह को अनिवार्य रूप से कम करके आंकते हैं। ज्यों ही कोई नई वस्तु प्रकट होती है, वे हमेशा उसे अस्वीकार कर देते हैं और पहले उसका विरोध करने लगते हैं तथा बाद में अपनी हार मान लेते हैं और थोड़ी-बहुत आत्म-आलोचना भी कर लेते हैं। अगली बार जब कभी फिर कोई नई वस्तु प्रकट होती है तो वे इसी तरह फिर एक बार क्रमशः यही दोनों रवैये अपनाते हैं। हर नई वस्तु के प्रति वे ऐसा ही रवैया अपनाएंगे। ऐसे लोग हमेशा निष्क्रिय बने रहते हैं और नाजुक घड़ी आने पर निश्चल खड़े रहते हैं, तथा सिर्फ तभी आगे कदम बढ़ाते हैं जब उन्हें पीछे से धकेला जाए।

इस बात को न जाने कितना समय लगेगा जब ऐसे लोग खुद ब-खुद आगे बढ़ना और अच्छी तरह चलना सीख सकेंगे ? जिन लोगों को इस तरह की बीमारी है उनका इलाज भी है : वे कुछ समय निकालकर जन समुदाय के बीच जाएं, यह मालूम करें कि वह क्या सोच रहा है, यह देखें कि वह क्या कर रहा है, तथा उसके समुन्नत अनुभवों का पता लगाएं और प्रचार-प्रसार करें। दक्षिणपंथी अवसरवाद के पुराने रोग के इलाज के लिए यह एक कारगर नुस्खा है, और जो लोग इस रोग से पीड़ित हैं उन्हें सलाह दी जाती है कि वे इसे आजमा कर देख लें।

('इस श्याङ में सहकारी रूपान्तर का कार्य केवल दो वर्ष में ही पूरा हो गया' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

4

यह एक बहुत अच्छा लेख है, जिसे पढ़ने से पता चलता है कि येवुर जाति के किसान सहकारिता का रास्ता अपनाने के लिए कितने ज्यादा इच्छुक हैं। वे अर्ध-समाजवादी सहकारी रूपान्तर के लिए आवश्यक कार्यकर्ताओं को भी प्रशिक्षित कर चुके हैं। कुछ लोग यह दावा करते हैं कि अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के बीच सहकारिता सफल नहीं हो सकती। मगर यह ठीक नहीं है। हम देख चुके हैं कि ऐसी सहकारी समितियों की संख्या कम नहीं है जिन्हें या तो मंगोल, हुवेइ, येवुर, म्याओ, च्वाङ और अन्य अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं द्वारा अलग अलग चलाया जा रहा है अथवा कई राष्ट्रीयताओं द्वारा संयुक्त रूप से चलाया जा रहा है, और ये सब बहुत सफल सहकारी समितियां हैं। यह तथ्य उन लोगों के गलत दृष्टिकोण का खण्डन करता है जो अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को तिरस्कार की नजर से देखते हैं।

('श्याङ और गांव के कार्यकर्ताओं में सहकारी समितियों की स्थापना के कार्य का नेतृत्व करने की क्षमता मौजूद है' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

5

यह एक बेहतरीन लेख है, जो बहुत से लोगों को कायल कर देगा। यहां का पार्टी-संगठन सहकारिता के सवाल पर कभी डांवाडोल नहीं हुआ। उसने गैर-खुशहाल किसानों की सहकारी समिति कायम करने की मांग का दृढ़ता से समर्थन किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने खुशहाल मध्यम किसानों के साथ अपनी होड़ में बाजी मार ली, छोटी सहकारी समिति को बड़ी सहकारी समिति में विकसित कर दिया और प्रतिवर्ष उत्पादन में वृद्धि की, जिसकी बदौलत तीन वर्ष से कम समय में पूरे गांव का सहकारी रूपान्तर हो गया। खुशहाल मध्यम किसान ताने मारते थे : ''जरा देखो तो, ये कंगाल लोग भी सहकारी समिति कायम करने की बात सोचने लगे हैं। कभी नहीं सुना कि चूजे के पंख उड़कर अन्तरिक्ष में पहुंच सकते हैं''। लेकिन चूजे के पंखों ने यह कमाल कर दिखाया। यह दो रास्तों - समाजवाद बनाम पूंजीवाद - के बीच का संघर्ष है। चीन में धनी किसान अर्थव्यवस्था बहुत कमजोर है (चूंकि धनी किसानों

की जमीन के उस भाग का भूमि-सुधार के दौरान अधिग्रहण कर लिया गया जिस पर अर्ध सामन्ती तरीके से उत्पादन किया जाता था, तथा ज्यादातर पुराने धनी किसान अब दूसरों से मजूरी नहीं कराते और सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त अप्रतिष्ठित हैं।), लेकिन खुशहाल और अपेक्षाकृत खुशहाल मध्यम किसान, जिनकी संख्या देहातों की आबादी की 20 प्रतिशत से 30 प्रतिशत तक है, काफी शक्तिशाली हैं। चीन के देहातों में दो रास्तों के बीच के संघर्ष का एक महत्वपूर्ण पहलू खुशहाल मध्यम किसानों के साथ गरीब व निम्न-मध्यम किसानों का शान्तिपूर्ण होड़ के रूप में प्रतिबिम्बित होता है। दो या तीन साल में आखिर कौन अपना उत्पादन बढ़ा सकता है, खुशहाल मध्यम किसान, जो व्यक्तिगत रूप से काम करते हैं या गरीब व निम्न-मध्यम किसान, जो सहकारी समितियों में मिलकर काम करते हैं ? शुरू में यह होड़ केवल सहकारी समितियों में संगठित कुछ गरीब व निम्न-मध्यम किसानों और व्यक्तिगत रूप से काम करने वाले खुशहाल मध्यम किसानों के बीच थी तथा ज्यादातर गरीब व निम्न-मध्यम किसान अलग खड़े होकर देख रहे थे; दोनों पक्षों के बीच की यह होड़ जन-समुदाय को अपने पक्ष में करने के लिए थी। खुशहाल मध्यम किसानों के पीछे जमींदार व धनी किसान थे, जो कभी खुले तौर पर तो कभी गुप्त रूप से उनका समर्थन कर रहे थे। सहकारी समितियों के पक्ष में कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य खड़े थे, जिन्हें सहकारी समितियों के समर्थन में आनयाङ काउण्टी के नानछ्वेइच्वाङ गांव के कम्युनिस्टों की ही तरह दृढ़ता दिखानी चाहिए थी। लेकिन खेद है कि देहातों की सभी पार्टी-शाखाओं ने उतनी दृढ़ता नहीं दिखाई। जहां कहीं उन्होंने दृढ़ता नहीं दिखाई, वहां गड़बड़ी पैदा हो गई। सबसे पहले इस बात के बारे में लोकमत तैयार करने का सवाल था कि क्या चूजे के पंख उड़कर अन्तरिक्ष में नहीं पहुंच सकते हैं। बेशक, यह एक अत्यन्त गम्भीर प्रश्न है। पिछले हजारों सालों में क्या किसी ने कभी चूजे के पंखों को उड़कर अन्तरिक्ष में पहुंचते देखा है ? वे अन्तरिक्ष में नहीं पहुंच सकते, यह एक स्वयंसिद्ध बात मालूम होती है। अगर पार्टी इस बात का खण्डन न करती तो बहुत से गरीब या निम्न-मध्यम किसान भ्रम में पड़ जाते। दूसरे, जहां तक कार्यकर्ताओं का ताल्लुक है और तीसरे, जहां तक ऋण जैसे भौतिक संसाधनों का ताल्लुक है, अगर पार्टी व राज्य द्वारा सहकारी समितियों की सहायता न की जाती तो उन्हें भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता। खुशहाल मध्यम किसानों को ''चूजे के पंख उड़कर अन्तरिक्ष में नहीं पहुंच सकते'' जैसी पुरानी स्वयंसिद्ध बातें फैलाने का साहस इसलिए हुआ क्योंकि सहकारी समितियां अपना उत्पादन नहीं बढ़ा पाई थीं, निर्धन सहकारी समितियां धनी नहीं बन पाई थीं, और सहकारी समितियों की संख्या चन्द इक्की-दुक्की सहकारी समितियों से बढ़कर हजारों-लाखों तक नहीं पहुंच पाई थी। वे ऐसा करने का साहस इसलिए कर पाए क्योंकि पार्टी ने अभी तक सहकारी समितियों के फायदों के बारे में जोरदार देशव्यापी प्रचार नहीं किया था और क्योंकि पार्टी ने साफ साफ शब्दों में यह नहीं कहा था कि यह पुरानी स्वयंसिद्ध बात कि ''चूजे के पंख उड़कर अन्तरिक्ष में नहीं पहुंच सकते'', अब समाजवादी युग में सच साबित नहीं होती। गरीब लोग अपने अतीत जीवन का कायाकल्प कर रहे हैं। पुरानी व्यवस्था का अन्त हो रहा है, एक नई व्यवस्था जन्म ले रही है। चूजे के पंख सचमुच उड़कर अन्तरिक्ष में पहुंच रहे हैं। सोवियत संघ में यह हो चुका है। चीन में आजकल हो रहा है। और बाद में पूरी दुनिया में हो जाएगा।

हमारे बहुत से स्थानीय पार्टी संगठनों को इस बात के लिए पूर्ण रूप से दोषी नहीं ठहराया जा सकता कि उन्होंने गैर खुशहाल किसानों का दृढ़ता से समर्थन नहीं किया, क्योंकि तब तक ऊपर के स्तर पर अवसरवादी विचारों पर घातक प्रहार नहीं किए गए थे, सहकारी रूपान्तर को प्रोत्साहन देने के लिए चौतरफा योजनाएं नहीं बनाई गई थीं तथा आन्दोलन का नेतृत्व देशव्यापी पैमाने पर अधिक कारगर ढंग से नहीं किया गया था। 1955 में हमने यह सब कर लिया, और कुछ ही महीनों में परिस्थिति बिलकुल बदल गई। जो लोग पहले अलग खड़े होकर देख रहे थे, वे अब ग्रुपों में बड़ी तादाद में सहकारी समितियों के पक्ष में आ गए। खुशहाल मध्यम किसानों ने भी अपना लहजा बदल दिया। उनमें से कुछ लोगों ने सहकारी समितियों में शामिल होने के लिए आवेदन किया तथा कुछ अन्य लोग आवेदन करने की तैयारी करने लगे। यहां तक कि उनके बीच जो लोग बेहद कट्टरपंथी थे वे भी पहले की तरह इस मसले का जिक्र करने का साहस न कर सके कि क्या चूजे के पंख उड़कर अन्तरिक्ष में पहुंच सकते हैं। जमींदारों और धनी किसानों की हेकड़ी पूरी तरह खत्म हो गई। यहां इस तथ्य ने भी भूमिका अदा की कि जन सरकार ने अनेक ऐसे प्रतिक्रान्तिकारियों को दण्ड दिया जिन्होंने सार्वजनिक व्यवस्था में गड़बड़ी पैदा की थी और सहकारी रूपान्तर के काम में तोड़फोड़ की थी। संक्षेप में, 1955 की दूसरी छमाही में हमारे देश की वर्ग-शक्तियों के सन्तुलन में बुनियादी परिवर्तन हुआ : समाजवाद का भरपूर उत्थान होने लगा और पूंजीवाद का अत्यधिक ह्रास होने लगा। और एक वर्ष तक कठोर परिश्रम करने के बाद, 1956 में संक्रमणकालीन समाजवादी रूपान्तर की बुनियाद मुख्य रूप से तैयार हो जाएगी।

('कौन कहता है कि चूजे के पंख उड़कर अन्तरिक्ष में नहीं पहुंच सकते' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

6

पार्टी के भीतर के दक्षिणपंथी अवसरवादी, जो लगभग सभी जगह मौजूद हैं और गरीब व निम्न-मध्यम किसान समुदाय द्वारा सहकारिता का रास्ता अपनाए जाने में रुकावटें खड़ी करते हैं, हमारे समाज की पूंजीवादी शक्तियों के साथ मिलकर कार्यवाही करते हैं। वर्तमान लेख में इस स्थिति का समुचित वर्णन किया गया है। लेखक ने अवसरवादियों की अत्यन्त रोषपूर्वक भर्त्सना की है और गैर-खुशहाल किसानों का जमकर समर्थन किया है। कुछ लोग ऐसे हैं जो कहलाते तो कम्युनिस्ट हैं लेकिन इस समय किए जा रहे समाजवादी कार्य में शायद ही दिलचस्पी लेते हैं। उत्साह से ओत-प्रोत जन-समुदाय का समर्थन करने के बजाय वे लोग उसके उत्साह पर ठण्डा पानी उड़ेल देते हैं। 1955 का वर्ष चीन में समाजवाद और पूंजीवाद के बीच के निर्णायक संघर्ष का वर्ष रहा है। यह निर्णायक संघर्ष सबसे पहले चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा मई, जुलाई और अक्तूबर में बुलाए गए तीन सम्मेलनों के दौरान हुआ। 1955 की पहली छमाही में वातावरण काफी दूषित था और पूरे आसमान में काले बादल छाये हुए थे। लेकिन दूसरी छमाही में स्थिति में पूर्ण परिवर्तन हो गया और वातावरण एकदम बदल गया; पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के आवाहन पर कई करोड़ किसान परिवार सक्रिय हो

उठे और सहकारी समितियों में संगठित हो गए। सम्पादक की यह टिप्पणी लिखने तक पूरे देश में 6 करोड़ से ज्यादा किसान परिवार सहकारी समितियों में शामिल हो चुके हैं। यह एक प्रचण्ड ज्वार है, जिसने सभी दैत्यों व दानवों का सफाया कर दिया है। हमारे समाज में सभी प्रकार के लोगों के चेहरे साफ तौर पर जाहिर हो गए हैं। पार्टी के भीतर भी ऐसी ही हालत है। इस साल के अन्त तक समाजवाद की विजय काफी हद तक सुनिश्चित हो जाएगी। बेशक, भविष्य में बहुत सी और लड़ाइयां लड़नी होंगी तथा संघर्ष जारी रखने के लिए और अधिक प्रयास करते रहना होगा।

('अवसरवाद की दूषित वायु समाप्त होती जा रही है, समाजवाद की स्वच्छ वायु बढ़ती जा रही है' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

7

यह भी एक बहुत दिलचस्प लेख है। हालांकि ज्वार को रोकने की कोशिश करने वाले अवसरवादी लगभग हर जगह मौजूद हैं, फिर भी उसे हरगिज नहीं रोका जा सकता और समाजवाद सभी विघ्न-बाधाओं को पार करता हुआ हर जगह सफलतापूर्वक आगे बढ़ता जा रहा है। समाज दिन-ब-दिन इसी प्रकार प्रगति करता जाता है और इस प्रक्रिया के दौरान लोगों के विचारों का रूपान्तर होता जाता है, विशेष रूप से उस समय जब क्रान्ति में उभार आ गया हो।

('मजदूरों के परिवार जन सहकारी आन्दोलन में भारी उत्साह दिखाते हैं' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

8

यह लेख अत्यन्त हृदयस्पर्शी है। आशा है पाठकगण इसे ध्यान से पढ़ेंगे। जो कामरेड यह नहीं मानते कि किसान समुदाय समाजवादी रास्ता अपनाने के लिए उत्सुक है, और जो कामरेड सहकारी समितियों को "भंग" करने के लिए हर समय कुल्हाड़ी उठाए रहते हैं, उनसे विशेष अनुरोध है कि वे इसे ध्यान से पढ़ें। समूचे देहाती इलाकों में समाजवादी तत्त्व हर दिन व हर घड़ी विकसित होते जा रहे हैं, व्यापक किसान समुदाय सहकारी समितियां कायम करने की मांग कर रहा है और जन समुदाय के बीच बुद्धिमान, सुयोग्य, न्यायप्रिय और उत्साही नेता एक बड़ी संख्या में प्रकट होते जा रहे हैं; यह सचमुच एक अत्यन्त उत्साहवर्धक परिस्थिति है। सबसे बड़ी कमी यह है कि बहुत सी जगहों में पार्टी के नेताओं ने इस परिस्थिति के साथ कदम मिलाने में सक्रियता नहीं दिखाई। हमारा मौजूदा कार्य है विभिन्न स्तरों की स्थानीय पार्टी कमेटियों को इस बात के लिए प्रेरित करना कि वे इस मामले में मार्क्सवादी-लेनिनवादी रुख के अनुरूप रवैया दिखाएं, कृषि-सहकारिता की पूरी जिम्मेदारी सम्भाल लें तथा सक्रियता, उत्साह, हार्दिक अनुमोदन और जी-जान से काम करने की भावना के साथ आन्दोलन का नेतृत्व करें। श्रीमन्त ये के ड्रैगन-प्रेम की कहानी फिर से न दोहराई जाए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि जो आदमी वर्षों तक समाजवाद की बातें बघारता रहा हो, जब समाजवाद उसके दरवाजे पर सचमुच दस्तक

देने लगे तो घबराहट के मारे अचानक उसके चेहरे का रंग ही उड़ जाए।

('नेतृत्व की इच्छा के विपरीत जन समुदाय द्वारा स्वत:स्थापित एक सहकारी समिति' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

9

इस श्याङ में सही कार्यदिशा का अनुसरण किया जा रहा है। इसमें अब तक पांच कृषि-उत्पादक सहकारी समितियां, सात संयुक्त आपसी सहयोग दल, तीन स्थायी आपसी सहयोग दल और चौदह अस्थायी आपसी सहयोग दल कायम किए जा चुके हैं। इसका मतलब यह है कि संगठित किए जाने योग्य किसान परिवारों में से 98.4 फीसदी परिवार इनके सदस्य बन चुके हैं। दिसम्बर 1954 के पहले इस श्याङ की पार्टी शाखा ने अपने नेतृत्व-कार्य में आपसी सहयोग व सहकारी आन्दोलन पर जोर नहीं दिया, तथा पार्टी सदस्य आपसी सहयोग दलों के नेतृत्व के दौरान पैदा होने वाली कठिनाइयों से डरते थे। ''पार्टी-सचिवों के खुद मैदान में उतरने और सभी पार्टी-सदस्यों के सहकारी समितियों के संचालन में हाथ बंटाने'' की जगह यह पार्टी-शाखा कार्यदल पर निर्भर रही (जाहिर है कि यह कार्यदल ऊपर से भेजा गया था)। पूरे देश में ऐसी ग्रामीण पार्टी-शाखाओं की संख्या कम नहीं है जो कृषि-सहकारिता के मसले को निपटाने में इतनी ही अकर्मण्य और असमर्थ हैं। इन पार्टी-शाखाओं के अलावा सम्भवत: कुछ उच्चतर पार्टी-कमेटियों की भी ऐसी ही हालत है। मसला यही है। कृषि का समाजवादी रूपान्तर देश के औद्योगीकरण के साथ कदम मिलाकर चल सकता है या नहीं तथा सहकारी आन्दोलन कम से कम खामियों के साथ उत्पादन में बढ़ोतरी की गारण्टी करता हुआ स्वस्थ तरीके से विकसित हो सकता है या नहीं, यह इस बात पर निर्भर है कि विभिन्न स्तरों की स्थानीय पार्टी-कमेटियां जल्दी से जल्दी और सही ढंग से अपने नेतृत्व का जोर कृषि-सहकारिता की ओर स्थानान्तरित कर सकती हैं या नहीं। कार्यदलों को अवश्य भेजा जाना चाहिए, लेकिन यह बात स्पष्ट कर दी जानी चाहिए कि उन्हें केवल स्थानीय पार्टी-संगठनों की मदद के लिए भेजा जा रहा है, न कि उनकी जगह ले लेने और उन्हें निष्क्रिय व पूर्णत: परावलम्बी बना देने के लिए। क्वेइचओ प्रान्त की इस श्याङ में जब दिसम्बर 1954 में नेतृत्व ने काम के प्रति अपना रुख बदल दिया उसके बाद केवल पांच महीने से कुछ ज्यादा समय में असाधारण सफलताएं प्राप्त की गईं। कार्यदल पर निर्भर रहने के बजाय वह स्वयं मैदान में उतर गई और पार्टी-सदस्यों ने कठिनाइयों से घबराना छोड़ दिया। इस प्रकार का परिवर्तन सबसे पहले सभी स्तरों – प्रान्त व स्वायत्त प्रदेश, प्रिफेक्चर व स्वायत्त चओ, काउण्टी व स्वायत्त काउण्टी और जिले – की पार्टी-कमेटियों के सचिवों तथा पार्टी शाखाओं के सचिवों पर निर्भर है; यह जरूरी है कि कृषि-सहकारिता की पूरी जिम्मेदारी वे स्वयं सम्भाल लें। परेशानियों व कठिनाइयों से घबराना और इस महान कार्य के लिए मैदान में न उतरना, तथा इस कार्य को केवल पार्टी के ग्रामीण-कार्य विभागों या कार्यदलों के सुपुर्द कर देना - ऐसा रवैया अपनाने से न सिर्फ यह कार्य पूरा करना असम्भव हो जाएगा बल्कि बहुत सी परेशानियां भी पैदा हो जाएंगी।

('फङकाङ काउण्टी की छुङशिन श्याङ ने किस तरह पार्टी शाखा के नेतृत्व में आपसी सहयोग व सहकारी आन्दोलन चलाया' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

10

इस लेख के लेखक का कहना है कि काउण्टी की सहकारी समितियों के निदेशकों की संयुक्त मीटिंग के बाद ही इस सहकारी समिति ने अनियतकालीन अनुबन्धों की प्रथा से मौसमी अनुबन्धों की प्रथा की ओर विकास किया है। इससे साफ तौर पर देखा जा सकता है कि काउण्टी का नेतृत्व अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हम आशा करते हैं कि चीन की दो हजार से अधिक काउण्टियों में हर काउण्टी का नेतृत्वकारी निकाय अपने सहकारी आन्दोलन के विकास का गहराई से निरीक्षण करेगा, समस्याओं का पता लगाएगा, उनके हल खोज निकालेगा, अपनी सभी सहकारी समितियों या चुनी हुई सहकारी समितियों के निदेशकों की मीटिंगें समय पर बुलाएगा, निर्णय करेगा और उन्हें यथाशीघ्र लागू करेगा। ऐसा नहीं होना चाहिए कि जब तक समस्याओं का ढेर नहीं लग जाता और ये समस्याएं बहुत सी परेशानियां खड़ी नहीं कर देतीं तब तक उन्हें हल करने की कोशिश न की जाय। नेताओं को आन्दोलन में हिरावल की भूमिका अदा करनी चाहिए, पीछे नहीं रहना चाहिए। हर काउण्टी में काउण्टी की पार्टी-कमेटी ही एक ऐसा संगठन है जिसे नेतृत्व-कार्य में मुख्य भूमिका अदा करनी चाहिए।

('मौसमी अनुबन्धों की प्रथा' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

11

यह सामग्री बेहद कायल करने वाली है। किसी इलाके में सहकारी रूपान्तर का काम स्वस्थ रूप से होना पार्टी की नीतियों और काम के तरीकों पर निर्भर है। अगर सहकारी रूपान्तर के लिए हमारी पार्टी की नीतियां सही हैं, अगर सहकारी समितियों में शामिल होने के लिए जन-समुदाय को गोलबन्द करने का हमारी पार्टी का तरीका फरमानशाही अथवा भौंडापन वाला तरीका नहीं बल्कि जन-समुदाय के समक्ष तथ्यों को समझाने और उनका विश्लेषण करने तथा उसकी पहलकदमी व स्वेच्छा पर पूरी तरह निर्भर रहने वाला तरीका है, तो सहकारी रूपान्तर का काम पूरा करना और उत्पादन बढ़ाना बहुत कठिन नहीं होगा। हपे प्रान्त की शिङथाए काउण्टी का गुङछ्वानखओ गांव पुराने मुक्त क्षेत्र में है। 1952 से पहले गांव के सत्तर के सत्तर परिवार आपसी-सहयोग दलों में शामिल हो चुके थे। उनकी पार्टी-शाखा बड़ी मजबूत थी तथा उसके नेता वाङ च-छी ने जन-समुदाय का विश्वास प्राप्त कर लिया था। सभी स्थितियां परिपक्व थीं। इसलिए 1952 में इस गांव में एक महीने से कुछ ही ज्यादा समय में सहकारी समिति संगठित कर ली गई और अर्ध समाजवादी सहकारी रूपान्तर का काम पूरा कर लिया गया। आखिर उन स्थानों में क्या किया जाय जहां की स्थितियां इस गांव की तरह परिपक्व

नहीं हैं ? सवाल ऐसी स्थितियां पैदा करने का है, और यह काम कुछ महीनों में, एक म में या इससे कुछ ज्यादा समय में पूरा किया जा सकता है। काम करने के साथ साथ ऐ आवश्यक स्थितियां पैदा की जा सकती हैं। कुछ छोटी छोटी सहकारी समितियों की स्थापना करना पूरे गांव, पूरे श्याङ और पूरे जिले के सहकारी रूपान्तर के लिए स्थितियां पैदा करना ही तो है। तुङछ्वानखुआ से सम्बन्धित इस सामग्री में खास तौर पर यह भी समझाया गया है कि किस प्रकार एक पार्टी-शाखा को जन-समुदाय के बीच प्रचार-प्रसार करने व शिक्षित करने का काम करना चाहिए और किस प्रकार सहकारी समितियों की स्थापना करते समय उसे स्वयं जन-समुदाय की ही पहलकदमी व स्वेच्छा पर निर्भर रहना चाहिए। इस गांव इस्तेमाल होने वाला 'विपरीत प्रचार' का तरीका भी अच्छी तरह गौर करने लायक है। इस सामग्री में बताया गया है कि इस सहकारी समिति ने किस प्रकार श्रम संगठन व प्रबन्ध से सम्बन्धित समस्याओं को सुलझाते समय एक टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता तय किया और वर्ष-प्रतिवर्ष उत्पादन बढ़ाने में भारी सफलता प्राप्त की। तथ्यों से यह साबित हो चुका है कि यह सहकारी समिति बड़ी पुख्ता है। कोई सहकारी समिति पुख्ता है या नहीं इसका निर्णय करने की मुख्य कसौटी यह है कि उसका उत्पादन बढ़ रहा है या नहीं, और यदि बढ़ रहा है तो कितना बढ़ रहा है।

('केवल एक महीने से कुछ अधिक समय में पू
गांव का सहकारी रूपान्तर' शीर्षक लेख पर टिप्पणी

12

यह सामग्री इस तथ्य पर प्रकाश डालती है कि अस्तव्यस्तता की स्थिति वाली हर सहकारी समिति को सुव्यवस्थित किया जा सकता है। चूंकि सहकारी समिति के सभी सदस्य मेहनतकश किसान हैं, इसलिए उनकी विभिन्न श्रेणियों के बीच चाहे जो भी मतभेद हों उन्हें अन्ततोगत्वा दूर किया जा सकता है। कुछ सहकारी समितियों में थोड़े समय के लिए अस्तव्यस्तता की स्थिति अवश्य बनी रही, जिसका एकमात्र कारण यह है कि उन्हें पार्टी का नेतृत्व नहीं मिल पाया और पार्टी ने जन-समुदाय के समक्ष अपनी नीतियों और उपायों की व्याख्या नहीं की। "हम जानते हैं कि सहकारी समिति कायम करना एक अच्छी बात है। लेकिन जब हमने सहकारी समिति कायम कर ली, तो हमारी किसी ने परवाह नहीं की, न काउण्टी की पार्टी कमेटी ने, न जिले की पार्टी-कमेटी ने और न स्थानीय पार्टी-शाखा ने। शायद वे लोग हमारे गरीब गांव को कुछ नहीं समझते थे; यहां आकर वे न अच्छा खाना खा सकते थे और न अच्छी तरह रह सकते थे, इसलिए वे हमारे यहां कभी नहीं आए।" इस समय जो अस्तव्यस्तता की स्थिति मौजूद है उसका यही और केवल यही कारण है। पार्टी के नेतृत्व के बिना अस्तव्यस्तता की स्थिति पैदा होना स्वाभाविक है। नेतृत्व लागू होते ही अस्तव्यस्तता की स्थिति समाप्त हो जाएगी। इस सामग्री में यह सवाल भी उठाया गया है कि पिछड़े हुए गांवों में भी सहकारी समितियां स्थापित की जा सकती हैं या नहीं। जवाब है, "हां, की जा सकती हैं"। जिस सहकारी समिति का लेखक ने वर्णन किया है वह एक पिछड़े हुए गांव में ही है। चीन के लगभग 5 फीसदी

गांव पिछड़े हुए हैं; यह जरूरी है कि हम इन सभी गांवों में सहकारी समितियां कायम कर लें और इस संघर्ष के दौरान उनके पिछड़ेपन को दूर कर दें।

('एक अव्यवस्थित सहकारी समिति को सुव्यवस्थित
बना दिया गया' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

13

यह एक आम समस्या होने के साथ-साथ एक गम्भीर समस्या भी है। हर स्तर की पार्टी-कमेटियों को और सहकारी रूपान्तर के कार्य का मार्गदर्शन करने के लिए देहातों में भेजे जाने वाले साथियों को इसकी ओर पूरा ध्यान देना चाहिए। यह आवश्यक है कि सहकारी समिति के नेतृत्वकारी निकाय में आज के गरीब किसानों और नए निम्न-मध्यम किसानों को प्रभुत्वकारी स्थान पर तथा पुराने निम्न-मध्यम किसानों और नए व पुराने उच्च-मध्यम किसानों को सहायक शक्ति के स्थान पर अधिस्थापित किया जाए; केवल इसी तरह पार्टी की नीति के अनुसार गरीब किसानों और मध्यम किसानों के बीच एकता कायम की जा सकती है, सहकारी समितियों को सुदृढ़ बनाया जा सकता है, उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है और समूचे देहाती क्षेत्रों में समाजवादी रूपान्तर का कार्य सही ढंग से पूरा किया जा सकता है। ऐसी स्थिति के अभाव में मध्यम किसानों और गरीब किसानों के बीच एकता कायम करना, सहकारी समितियों को सुदृढ़ बनाना, उत्पादन को बढ़ाना और समूचे देहाती क्षेत्रों में समाजवादी रूपान्तर का कार्य पूरा करना असम्भव हो जाएगा। बहुत से साथी इस बात को नहीं समझ पाते। वे समझते हैं कि भूमि-सुधार के दौरान गरीब किसानों को प्रभुत्वकारी स्थान पर अधिस्थापित करना जरूरी था, क्योंकि गरीब किसान, जो उस समय देहातों की आबादी के 50, 60, या 70 फीसदी तक थे, अभी मध्यम किसानों की हैसियत तक नहीं पहुंच पाए थे, जबकि मध्यम किसान भूमि-सुधार के बारे में ढुलमुल रुख अपना रहे थे, और इसलिए ऐसा करने की आवश्यकता सचमुच मौजूद थी। वे यह दलील पेश करते हैं कि इस समय हम कृषि के समाजवादी रूपान्तर के दौर से गुजर रहे हैं और पहले के ज्यादातर गरीब किसान अब नए मध्यम किसान बन गए हैं, तथा यह कि इसके अलावा पुराने मध्यम किसानों के पास बहुत से उत्पादन के साधन मौजूद हैं और उन्हें शामिल किए बिना सहकारी समिति में उत्पादन के साधनों की कमी का सवाल हल करना असम्भव हो जाएगा। इसलिए ये साथी समझते हैं कि अब हमें पहले की तरह गरीब किसानों पर निर्भर रहने अथवा उन्हें प्रभुत्वकारी स्थान पर अधिस्थापित करने का नारा नहीं लगाना चाहिए और यह कि ऐसा नारा लगाना सहकारी आन्दोलन के लिए हानिकारक है। हम समझते हैं कि यह विचार गलत है। अगर मजदूर वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी को समूचे देहाती इलाकों में उत्पादन के साधनों पर छोटे किसानों की निजी मिलकियत का रूपान्तर समाजवादी भावना और समाजवादी व्यवस्था के अनुरूप पूर्ण रूप से करना है, तो वे इस काम को केवल गरीब किसानों के समुदाय पर, भूतपूर्व अर्ध-सर्वहारा वर्ग पर, निर्भर रहकर ही अपेक्षाकृत सुचारु रूप से पूरा कर सकते हैं, अन्यथा इसे पूरा करना उनके लिए अत्यन्त कठिन होगा। कारण, ग्रामीण अर्ध-सर्वहारा वर्ग उत्पादन

के साधनों पर छोटे किसानों की निजी मिलकियत से चिपके रहने का इतना ज्यादा हठ नहीं करता; वह समाजवादी रूपान्तर को स्वीकार करने के लिए अपेक्षाकृत अधिक तैयार है। इस वर्ग के ज्यादातर लोग अब नए मध्यम किसान बन गए हैं, लेकिन उनके सिर्फ एक हिस्से को छोड़कर, जिसके अन्तर्गत आने वाले लोग नए खुशहाल मध्यम किसान बन चुके हैं, अधिकांश नए मध्यम किसानों की राजनीतिक चेतना का स्तर पुराने मध्यम किसानों के मुकाबले ऊंचा है, क्योंकि वे बीते दिनों की मुसीबतों को आसानी से स्मरण कर सकते हैं। इसके बाद पुराने निम्न-मध्यम किसान आते हैं; आर्थिक हैसियत और राजनीतिक रवैये की दृष्टि से ये लोग कमोबेश नए निम्न-मध्यम किसानों की तरह होते हैं, लेकिन नए और पुराने उच्च-मध्यम किसानों, यानी खुशहाल या अपेक्षाकृत खुशहाल मध्यम किसानों से भिन्न होते हैं। इसलिए सहकारी रूपान्तर के दौरान हमें समाजवादी रूपान्तर को अपेक्षाकृत आसानी से स्वीकार करने वाली इन तीन श्रेणियों की ओर ध्यान देना चाहिए – (1) वे गरीब किसान जो अब भी कठिनाई का सामना कर रहे हैं, (2) नए निम्न-मध्यम किसान, और (3) पुराने निम्न-मध्यम किसान। सबसे पहले इन्हीं लोगों को एक-एक समूह में और मंजिल-दर-मंजिल सहकारी समितियों में शामिल करने के लिए उनका मार्गदर्शन किया जाना चाहिए, उनमें से अपेक्षाकृत उच्च राजनीतिक चेतना और अपेक्षाकृत अधिक संगठनात्मक योग्यता वाले अनेक व्यक्तियों को चुनकर उन्हें सहकारी समितियों के नेतृत्व के मुख्य स्तम्भ के रूप में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, तथा उन्हें आज के गरीब किसानों व नए निम्न-मध्यम किसानों के बीच से चुनने पर विशेष जोर दिया जाना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि देहाती क्षेत्रों में वर्ग-हैसियत का नए सिरे से निर्णय किया जाएगा, बल्कि यह एक ऐसी नीति है जिस पर सहकारी रूपान्तर के दौरान पार्टी-शाखाओं को और इस काम का मार्गदर्शन करने के लिए देहातों में भेजे गए साथियों को सावधानी से अमल करना है, तथा इस नीति से किसान समुदाय को खुले तौर पर परिचित कराया जाना चाहिए। इसका मतलब यह भी नहीं है कि खुशहाल मध्यम किसानों को सहकारी समितियों के बाहर रखा जाए; हमारा मतलब यह है कि उन्हें सहकारी समितियों में केवल तभी शामिल किया जाय जब उनकी समाजवादी चेतना का स्तर ऊंचा हो जाय, उनके अन्दर सहकारी समितियों में शामिल होने की इच्छा पैदा हो जाय और वे गरीब किसानों (जिनमें आज के गरीब किसान और वे सभी नए निम्न-मध्यम किसान शामिल हैं जो पहले गरीब किसान थे) के नेतृत्व को स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाएं, तथा यह कि केवल उनके बैलों व कृषि-औजारों पर नजर रखकर उनके न चाहने पर भी उन्हें सहकारी समितियों में शामिल होने के लिए मजबूर न किया जाय। जो लोग सहकारी समितियों में शामिल हो चुके हैं, वे अपनी इच्छा से उनमें बने रह सकते हैं। जो लोग उनसे अलग होने की इच्छा जाहिर कर चुके हैं लेकिन उन्होंने समझाए-बुझाए जाने पर अपना विचार बदल दिया है, वे भी उनमें बने रह सकते हैं। सहकारी समितियों को अपेक्षाकृत कम उत्पादन के साधनों के साथ भी संगठित किया जा सकता है, जैसा कि गरीब व निम्न-मध्यम किसानों द्वारा संगठित अनेक सहकारी समितियों से साबित हो चुका है। इसके अलावा हमारा मतलब यह भी नहीं है कि किसी भी खुशहाल मध्यम किसान को सहकारी समिति का कार्यकर्ता बनने की इजाजत न दी जाय। वे इक्के-दुक्के खुशहाल मध्यम किसान भी, जिन्हें अपेक्षाकृत उच्च स्तर की

समाजवादी चेतना, न्यायप्रियता और योग्यता के कारण सहकारी समितियों के ज्यादातर सदस्यों द्वारा सराहनीय व्यक्ति समझा जाता है, कार्यकर्ता बन सकते हैं। लेकिन सहकारी समितियों में गरीब किसानों को प्रभुत्वकारी स्थान पर अधिस्थापित करना आवश्यक है (यहां यह फिर से बता दिया जाय कि उनमें आज के गरीब किसान और वे सब नए निम्न-मध्यम किसान शामिल हैं जो पहले गरीब किसान थे, और ये दोनों मिलकर देहातों की आबादी की बहुसंख्या अथवा भारी बहुसंख्या बन जाते हैं)। जहां तक नेतृत्वकारी निकाय की संरचना का सवाल है, उसमें लगभग दो-तिहाई लोग गरीब किसान होने चाहिए, जबकि मध्यम किसान (जिसमें पुराने निम्न-मध्यम किसान और नए व पुराने उच्च-मध्यम किसान शामिल हैं) लगभग एक तिहाई होने चाहिए, उससे ज्यादा नहीं। जहां तक मार्गदर्शक उसूल का सवाल है, सहकारी समितियों को चाहिए कि वे ऐसी नीतियां अपनाएं जो गरीब किसानों और मध्यम किसानों दोनों के लिए फायदेमन्द हों, और इनमें से किसी एक श्रेणी के लिए नुकसानदेह न हों। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भी गरीब किसानों को प्रभुत्वकारी स्थान पर अधिस्थापित करना आवश्यक है। जिन सहकारी समितियों में प्रभुत्वकारी स्थान पर मध्यम किसान कब्जा जमाये बैठे हैं, उनमें गरीब किसानों को आम तौर पर एक तरफ धकेल दिया जाता है और उनके हितों को आघात पहुंचाया जाता है। हुनान प्रान्त की छाङशान काउण्टी के काओशान श्याङ के अनुभव से यह बात पूरी तरह जाहिर हो जाती है कि गरीब किसानों को प्रभुत्वकारी स्थान पर अधिस्थापित करना और इस प्रकार मध्यम किसानों के साथ दृढ़ता से एकता कायम करना आवश्यक व सम्भव है, तथा ऐसा न करना कितना खतरनाक साबित हो सकता है। इस लेख के लेखक पार्टी की कार्यदिशा को पूरी तरह समझते हैं और यह कार्यप्रणाली भी सही है, यानी सबसे पहले उत्पादन बढ़ाने का फौरी काम पूरा किया जाए और उसके बाद नेतृत्व में गरीब किसानों को प्रभुत्वकारी स्थान पर अधिस्थापित किया जाए। इसके परिणामस्वरूप गरीब किसानों का सिर स्वाभिमान से ऊंचा हो गया है और मध्यम किसान भी पूरी तरह कायल हो गए। लेखक ने एक अन्य अत्यन्त महत्वपूर्ण बात कही है। क्या अस्तव्यस्तता की स्थिति वाली सहकारी समितियों को विघटित करना अच्छा है अथवा उन्हें सुव्यवस्थित करके अस्तव्यस्तता की स्थिति से छुटकारा दिलाने और सुदृढ़ बनाने में उनकी सहायता करना ? क्या ऐसी सहकारी समितियों को सुव्यवस्थित करना व सुदृढ़ बनाना सम्भव है ? लेखक ने बेहद कायल करने वाले शब्दों में बताया है कि हमें तीसरे दर्जे की सहकारी समितियों को विघटित करने के बदले उन्हें सुव्यवस्थित करने के काम में जुट जाना चाहिए। ऐसी कोशिश के बाद, तीसरे दर्जे की सहकारी समितियों को पहले दर्जे की सहकारी समितियों में बदलना पूर्ण रूप से सम्भव हो जाएगा। देश के बहुत से अन्य स्थानों में भी इसी प्रकार का अनुभव प्राप्त हुआ है और यह छाङशान काउण्टी के काओशान श्याङ का विशिष्ट अनुभव नहीं है।

('छाङशान काउण्टी के काओशान श्याङ की उधाङ कृषि-उत्पादक सहकारी समिति में मध्यम किसानों की जगह गरीब किसानों को प्रभुत्वकारी स्थान पर कैसे अधिस्थापित किया गया' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

14

जिस समस्या को इस लेख में उल्लेख किया गया है उसका सर्वव्यापी महत्व है। मध्यम किसानों के साथ एकता कायम करना आवश्यक है, और ऐसा न करना गलत होगा। लेकिन मध्यम किसानों के साथ एकता कायम करने और समूचे देहाती इलाकों में समाजवादी रूपान्तर का काम पूरा करने में मजदूर वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी को देहातों में आखिर किन लोगों पर निर्भर रहना चाहिए ? निश्चय ही उन्हें गरीब किसानों के सिवाय और किसी पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। अतीत काल में जब भूमि सुधार के लिए जमींदारों के खिलाफ संघर्ष चलाया गया था, तब यही ठीक था और आज भी जब कृषि का समाजवादी रूपान्तर करने के लिए धनी किसानों और अन्य पूंजीवादी तत्वों के खिलाफ संघर्ष चलाया जा रहा है, यही ठीक है, इन दोनों ही क्रान्तिकारी कालों में मध्यम किसानों ने प्रारम्भिक अवस्था में ढुलमुलपन दिखाया। मध्यम किसान जब साफ तौर पर देख लेते हैं कि हवा का रुख किधर है और जब उन्हें क्रान्ति की विजय करीब नजर आने लगती है, केवल तभी वे क्रान्ति के पक्ष में आते हैं। गरीब किसानों को मध्यम किसानों के बीच काम करना होगा और उन्हें अपने पक्ष में करना होगा, जिससे क्रान्ति का तब तक दिन-प्रतिदिन विस्तार होता जाए, जब तक अन्तिम विजय प्राप्त नहीं हो जाती। आज की कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों की प्रबन्ध कमेटियों में भी अतीत काल के किसान संघों की ही तरह पुराने निम्न-मध्यम किसानों और कुछ ऐसे नए व पुराने उच्च-मध्यम किसानों को शामिल कर लिया जाना चाहिए जो इस श्रेणी का प्रतिनिधित्व करते हैं और जो अपेक्षाकृत ऊंची राजनीतिक चेतना रखते हैं, लेकिन उनकी संख्या ज्यादा नहीं होनी चाहिए; लगभग एक-तिहाई का अनुपात ठीक है। शेष दो-तिहाई लोग गरीब किसानों में से लिये जाने चाहिए (जिनमें आज के गरीब किसान और वे नए निम्न-मध्यम किसान शामिल हैं जो पहले गरीब किसान थे) सहकारी समितियों में मुख्य पदों पर आम तौर पर गरीब किसानों (एक बार फिर दोहरा दिया जाय कि इनमें आज के गरीब किसान और वे सभी नए निम्न-मध्यम किसान शामिल हैं जो पहले गरीब किसान थे) को नियुक्त किया जाना चाहिए। लेकिन ऐसे पदों पर पुराने निम्न-मध्यम किसानों और कुछ ऐसे नए व पुराने उच्च-मध्यम किसानों को भी नियुक्त किया जा सकता है जिनकी राजनीतिक चेतना का स्तर ऊंचा है तथा जो सचमुच न्यायप्रिय और सुयोग्य हैं। फूच्येन प्रान्त की फूआन काउण्टी में गरीब किसानों के नेतृत्व में चलाई जाने वाली सहकारी समिति और मध्यम किसानों के नेतृत्व में चलाई जाने वाली सहकारी समिति समाजवादी कार्य के प्रति अलग-अलग रुख अपनाती हैं; यह स्थिति हर जगह मौजूद है और इसे इक्की-दुक्की परिघटना नहीं समझना चाहिए।

('फूआन काउण्टी में "गरीब किसानों की सहकारी समिति" के साथ-साथ "मध्यम किसानों की सहकारी समिति" की मौजूदगी से मिलने वाला सबक' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

15

यह सामग्री उपयोगी है और व्यापक रूप से ध्यान देने योग्य है। इसमें देहातों में मौजूद विभिन्न श्रेणियों की प्रवृत्तियों का वर्णन किया गया है। गरीब किसानों में सहकारी रूपान्तर के प्रति सबसे ज्यादा उत्साह मौजूद है। बहुत से मध्यम किसान "कुछ समय के लिए इन्तजार करना" चाहते हैं तथा "बाहर आजाद रहना" चाहते हैं, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि वे यह देखना चाहते हैं कि अपने उत्पादन के साधनों को सहकारी समिति में शामिल कर देना उनके लिए फायदेमन्द होगा या नहीं; वे लोग दोनों में से किसी भी तरफ जा सकते हैं। बहुत से खुशहाल मध्यम किसानों को सहकारिता से बड़ी चिढ़ है; उनमें से जिन लोगों का रुख सबसे ज्यादा खराब है वे अपने उत्पादन के साधनों को बेच देते हैं, अपना पैसा चुपचाप इधर-उधर खिसका देते हैं, अथवा नकली सहकारी समितियां गढ़ लेते हैं, और उनमें से इनेगिने लोग तो यहां तक आगे बढ़ जाते हैं कि जमींदारों व धनी किसानों के साथ सांठगांठ करके बुरे काम करने लगते हैं। हमें आशा है कि ग्रामीण कार्य में लगे हुए सभी साथी अपने-अपने इलाके में विभिन्न श्रेणियों की प्रवृत्तियों का सावधानी से अवलोकन व विश्लेषण करेंगे, जिससे परिस्थितियों के अनुकूल नीतियां अपनाई जा सकें। इस सामग्री में आपसी-सहयोग दलों की अवहेलना करके सहकारी समितियों पर ध्यान देने की गलत प्रवृत्ति का उल्लेख किया गया है तथा सर्वांगीण नियोजन तथा चौतरफा बन्दोबस्त की सिफारिश की गई है, और यह बिलकुल ठीक है। "आपसी-सहयोग व सहकारिता का जाल बिछा देना" एक अच्छा विचार है, जिसके अन्तर्गत सहकारी समितियों और आपसी-सहयोग दलों दोनों पर ध्यान दिया जाता है, तथा सहकारी समितियां आपसी-सहयोग दलों और व्यक्तिगत तौर पर काम करने वाले किसानों के सामने मौजूद उत्पादन सम्बन्धी समस्याओं को हल करने में उनकी सच्चे अर्थों में सहायता करती हैं। गरीब किसान निधि की रकम तुरन्त गांवों को सौंप दी जानी चाहिए। जो गरीब किसान अभी सहकारी समितियों में शामिल नहीं हुए, उन्हें बता दिया जाना चाहिए कि वे जब भी शामिल होंगे इस निधि से धन प्राप्त कर सकेंगे।

('नई परिस्थिति और नई समस्याएं' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

16

इस सहकारी समिति द्वारा अपनाई गई नीति सही है। सभी सहकारी समितियों को ऐसा ही करना चाहिए। प्रान्तों को चाहिए कि वे सहकारी रूपान्तर के प्रश्न से सम्बन्धित अपने नियमों या निर्देशों में यह बता दें कि विधवाओं, अनाथों तथा उन असहाय सदस्यों को जिनके पास श्रमशक्ति नहीं है (ऐसे लोगों को सहकारी समितियों में शामिल करना ठीक था) तथा जिन्हें श्रमशक्ति होते हुए भी जीवन में भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, उनकी कठिनाइयां दूर करने में सहायता देना सभी सहकारी समितियों की जिम्मेदारी है। इस समय बहुत से सहकारी समितियां ऐसी हैं जिनमें जरूरतमन्द परिवारों की मदद करने की समाजवादी भावना

का अभाव है और इससे भी आगे बढ़कर गरीब किसानों को बहिष्कृत कर दिया जाता है; यह बिलकुल गलत है। सरकार ने अब गरीब किसान निधि की स्थापना की है, जिसकी रकम से वह बैलों और कृषि-औजारों की समस्याएं हल करने में उनकी मदद कर सकती है। लेकिन कुछ किसान परिवारों की श्रमशक्ति की कमी की समस्या को वह अभी हल नहीं कर सकती, पिछला अनाज चुक जाने के बाद और नई फसल का अनाज मिलने से पहले कुछ परिवारों के सामने मौजूद अन्नाभाव की समस्या को भी पूरी तरह हल नहीं कर सकती। इन समस्याओं को सहकारी समितियों के जन-समुदाय की शक्ति पर निर्भर रहकर ही हल किया जा सकता है।

('श्याङथान काउण्टी के छिङफङ श्याङ की पार्टी-शाखा सहकारी समिति के गैर-खुशहाल सदस्यों की कठिनाइयां दूर करने में उनकी सहायता करती है' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

17

यह एक बहुत दिलचस्प विवरण है। समाजवाद का, जो एक नूतन वस्तु है, पुरातन वस्तु के खिलाफ भीषण संघर्ष के जरिए ही जन्म होता है। किसी एक काल में समाज के कुछ लोग घिसेपिटे रास्ते का बड़ी हठधर्मी से अनुसरण करते हैं। लेकिन अन्य काल में वही लोग अपना रवैया बदल कर नूतन वस्तु का पक्षपोषण करने लगते हैं। अधिकांश खुशहाल मध्यम किसान 1955 की पहली छमाही में सहकारिता का विरोध कर रहे थे, लेकिन दूसरी छमाही में उनमें से अनेक लोगों का रवैया बदल गया और उन्होंने सहकारी समितियों में शामिल होने की इच्छा जाहिर की, हालांकि कुछ लोगों ने यह इस उम्मीद से किया कि सहकारी समितियों का नेतृत्व उनके हाथ में आ जाएगा। दूसरी श्रेणी में वे लोग थे जिनमें बहुत ज्यादा ढुलमुलपन मौजूद था; वे मुंह से तो कहते थे कि हम शामिल होना चाहते हैं, लेकिन दिल से इतना ज्यादा नहीं चाहते थे। तीसरी श्रेणी हठधर्मियों की थी और वे तब भी इन्तजार करना चाहते थे। इस मसले के बारे में ग्रामीण पार्टी-संगठनों को चाहिए कि वे इस श्रेणी के लोगों के मामले में धीरज से काम लें और उन लोगों को समय दें। नेतृत्वकारी निकायों में गरीब और नए निम्न-मध्यम किसानों को प्रभुत्वकारी स्थान पर अधिस्थापित करने के लिए कुछ खुशहाल मध्यम किसानों का सहकारी समितियों में कुछ देर से शामिल होना ज्यादा फायदेमन्द साबित होगा।

('जिन्होंने दृढ़ता से सहकारिता का रास्ता चुना है' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

18

राजनीतिक कार्य समस्त आर्थिक कार्य का प्राण है। यह बात एक ऐसे समय विशेष रूप से सच साबित होती है जबकि समाज की आर्थिक व्यवस्था में बुनियादी परिवर्तन हो रहा है। कृषि-सहकारिता आन्दोलन शुरू से ही एक तीव्र विचारधारात्मक व राजनीतिक संघर्ष रहा है।

इस संघर्ष के गुजरे बिना किसी सहकारी समिति की स्थापना नहीं हो सकती। पुरानी समाज-व्यवस्था की जगह एक नई समाज-व्यवस्था का निर्माण करने से पहले निर्माण-स्थल को साफ करना जरूरी है। पुरानी व्यवस्था को प्रतिबिम्बित करने वाले पुराने विचारों के बचेखुचे अंश लोगों के दिमाग में एक लम्बे अरसे तक बने रहते हैं, और ये आसानी से उनका पिण्ड नहीं छोड़ते। किसी भी सहकारी समिति को अपनी स्थापना के बाद और सुदृढ़ होने से पहले बहुत से संघर्षों से गुजरना पड़ता है। सुदृढ़ होने पर भी अगर कोशिशों में जरा भी ढील आने दी गई तो वह किसी भी समय ढह सकती है। शानशी प्रान्त की श्येयुवी काउण्टी की सानलओसे सहकारी समिति की मिसाल हमारे सामने है, जो सुदृढ़ होने के बाद भी लगातार कोशिश जारी न रखने के कारण टूटते टूटते बची। उस सहकारी समिति का संकट सिर्फ तभी दूर हो पाया और उसका विकास सिर्फ तभी हो पाया जब उसकी पार्टी-शाखा ने अपनी गलतियों की आलोचना की, जब उसने सहकारी समिति के सदस्यों को समाजवादी शिक्षा और पूंजीवाद-विरोधी शिक्षा देना फिर से शुरू किया तथा जब उसने अपना राजनीतिक कार्य करना फिर से शुरू किया। पूंजीवाद की स्वतःस्फूर्त प्रवृत्तियों का, जो स्वार्थीपन के रूप में प्रकट होती हैं, विरोध करना तथा समाजवादी भावना को, जो सामूहिक हित को व्यक्तिगत हित के साथ मिलाने के उसूल को समस्त कथनी व करनी की कसौटी मानती है, प्रोत्साहन देना – ये दोनों ही काम बिखरी हुई लघु किसान अर्थव्यवस्था के कदम-ब-कदम बड़े पैमाने की सहकारी अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण के लिए विचारधारात्मक व राजनीतिक गारंटियां हैं। यह काम पूरा करने के लिए भारी मात्रा में कठोर परिश्रम आवश्यक है तथा इसे बिलकुल भौंडे तरीके से और अनाड़ीपन के साथ नहीं बल्कि किसानों के अपने अनुभव की रोशनी में ठोस स्थिति को देखते हुए बड़ी बारीकी के साथ किया जाना चाहिए। इसे आर्थिक कार्य के साथ-साथ किया जाना चाहिए, उससे अलग नहीं। अब हमें राष्ट्रीय पैमाने पर इस प्रकार के काम का काफी समृद्ध अनुभव हो चुका है। यह बात इस पुस्तक के लगभग हर लेख से जाहिर हो जाती है।

('एक गम्भीर सबक' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

19

इस लेख का दृष्टिकोण ठीक है। सहकारी समितियों को चाहिए कि वे राजनीतिक कार्य अच्छी तरह करने पर जोर दें। राजनीतिक कार्य की बुनियादी मांग है किसान समुदाय को लगातार समाजवादी विचारधारा से लैस करते जाना और पूंजीवादी प्रवृत्तियों की आलोचना करना।

('चाङक्वोच्वाङ सहकारी समिति में राजनीतिक कार्य' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

20

यह परिस्थिति ध्यान देने लायक है। खुशहाल किसानों में गम्भीर पूंजीवादी प्रवृत्तियां मौजूद हैं। अगर हम न सिर्फ सहकारी रूपान्तर के दौरान बल्कि बाद में भी एक काफी लम्बे अरसे

तक किसानों के बीच राजनीतिक कार्य में जरा भी ढील आने देंगे, तो इन प्रवृत्तियों की बाढ़ सी आ जाएगी।

('पूंजीवादी प्रवृत्तियों के खिलाफ दृढ़ता से संघर्ष करो' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

21

सहकारी समितियों को कैसे सुदृढ़ बनाया जाय, इसके बारे में यह एक अच्छा विवरण है, और इसके अध्ययन की सिफारिश की जानी चाहिए। एक नई समाज-व्यवस्था का जन्म अनिवार्य रूप से हर्षध्वनि और चीख-पुकार के साथ होता है, यानी नई व्यवस्था की श्रेष्ठता के प्रचार-प्रसार और पुरानी व्यवस्था के पिछड़ेपन की आलोचना के साथ होता है। 50 करोड़ से ज्यादा चीनी किसानों को समाजवादी रूपान्तर की राह पर ले जाने का यह धरती को हिला देने वाला काम शान्तिपूर्ण वातावरण में करना असम्भव है; इसलिए हम कम्युनिस्टों के लिए यह आवश्यक है कि हम लोग पुरानी व्यवस्था के बोझ के नीचे दबे हुए विशाल किसान समुदाय के बीच बड़े धीरज से, बड़ी सजीवता से और बड़े सुबोध ढंग से प्रचार-प्रसार करें और उन्हें शिक्षित करें। इस समय देश के कोने कोने में ऐसा ही किया जा रहा है। और ग्रामीण कार्य में लगे हुए बहुत से साथी अच्छे प्रचारक साबित हुए हैं। इस लेख में "चार प्रकार की तुलना और पांच प्रकार की गणना करने"[1] के जिस तरीके की चर्चा की गई है वह किसानों को सरल सुबोध भाषा में यह समझाने का एक अच्छा तरीका है कि कौन सी व्यवस्था अच्छी है और कौन सी बुरी। यह तरीका समझाने-बुझाने का भारी सामर्थ्य रखता है। यह तरीका उन साथियों के तरीके से भिन्न है जो प्रचार-प्रसार का काम करने में कुशल नहीं हैं और अपनी बातों से किसी को भी कायल नहीं कर सकते तथा केवल यह कहते हैं : "आप लोग या तो कम्युनिस्ट पार्टी के रास्ते का अनुसरण करें या च्यांग काई-शेक के रास्ते का", और इस प्रकार लेबिल लगाने की धमकी देकर अपने श्रोताओं को वश में करने की कोशिश करते हैं। यह तरीका स्थानीय किसानों के खुद के अनुभवों का इस्तेमाल करते हुए उनके बीच विस्तृत रूप से विश्लेषण करने का तरीका है; इसलिए इसमें समझाने-बुझाने की भारी सामर्थ्य मौजूद है।

('एक सहकारी समिति को सुदृढ़ बनाने के दौरान प्राप्त श्रेष्ठ अनुभव' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

22

प्रतिक्रान्तिकारियों द्वारा सहकारी आन्दोलन में तोड़-फोड़ किया जाना एक आम घटना है और यह केवल क्वांगचओ प्रान्त की तृयुन काउण्टी के पांचवें जिले तक ही सीमित नहीं है। लेकिन दूसरे प्रान्तों के इसी प्रकार के प्रकाशनों में इसका उल्लेख बहुत कम किया गया है। सहकारी रूपान्तर के दौरान ग्रामीण कार्य करने वाले सभी साथियों के लिए यह जरूरी है कि वे प्रतिक्रान्तिकारियों की तोड़-फोड़ की कार्यवाहियों के खिलाफ किए जाने वाले संघर्ष की

ओर पर्याप्त ध्यान दें। तृयुन काउण्टी के इस जिले की ही तरह, सहकारी समितियों में भी सुरक्षा संगठनों की स्थापना की जानी चाहिए, जिनमें पार्टी व नौजवान संघ के सदस्य रीढ़ की भूमिका अदा करें। जिलों की पार्टी कमेटियों के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वे काउण्टी की पार्टी-कमेटी के नेतृत्व व परिनिरीक्षण में परिस्थिति का अध्ययन करें, पार्टी के भीतर व बाहर के लोगों के बीच प्रचार-प्रसार करने और समझाने-बुझाने का काम करें, प्रतिक्रान्तिकारियों की तोड़-फोड़ की कार्यवाहियों के प्रति जन-समुदाय की सतर्कता को बढ़ाएं और इसके बाद उन प्रतिक्रान्तिकारियों व अन्य बुरे तत्वों की, जो मौका पाकर सहकारी समितियों के नेतृत्वकारी निकायों में घुस आए हैं, जांच-पड़ताल करें, उन्हें बाहर निकाल दें और उन्हें सजा दें। लेकिन जिन लोगों को निकाला जाय वे तसदीकशुदा प्रतिक्रान्तिकारी और बुरे तत्व ही होने चाहिए। अच्छे लोगों पर या ऐसे लोगों पर जिनमें केवल कुछ खामियां मौजूद हैं, बुरे तत्व का लेबिल नहीं लगाया जाना चाहिए। सजा खास तौर से मुनासिब होनी चाहिए और काउण्टी प्राधिकरणों द्वारा उसकी पुष्टि किया जाना आवश्यक है।

('प्रतिक्रान्तिकारी तोड़-फोड़ के खिलाफ दृढ़ता से संघर्ष करना चाहिए' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

23

एक महान समाजवादी समाज का निर्माण करने के लिए इस बात का भारी महत्त्व है कि उत्पादक गतिविधियों के लिए विशाल महिला समुदाय को गोलबन्द किया जाय। उत्पादन-कार्य में महिलाओं और पुरुषों दोनों को समान कार्य के लिए समान पारिश्रमिक दिया जाना चाहिए। पुरुषों और महिलाओं की सच्ची समानता केवल समूचे समाज के समाजवादी रूपान्तर की प्रक्रिया के दौरान ही प्राप्त की जा सकती है।

('महिलाएं अब श्रम के मोर्चे पर जा पहुंची हैं' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

24

यह एक बहुत अच्छा लेख है, जो सभी स्थानों के लिए सन्दर्भ-सामग्री का काम कर सकता है। नौजवान लोग समाज की सबसे ज्यादा सक्रिय और गतिशील शक्ति होते हैं। उनके अन्दर सीखने की बहुत तीव्र इच्छा होती है, और उनके विचार सबसे कम रूढ़िवादी होते हैं, यह बात समाजवादी युग में खास तौर पर सच साबित होती है। हम आशा करते हैं कि सभी स्थानों के पार्टी-संगठन नौजवान संघ के संगठनों के साथ तालमेल कायम करते हुए हमारे नौजवानों की शक्ति का पूर्ण विकास करने की ओर ध्यान देंगे तथा उनकी विशिष्टताओं की उपेक्षा करके उनके प्रति अन्य लोगों जैसा रुख नहीं अपनाएंगे। यह सच है कि नौजवानों को बड़े-बूढ़ों से सीखना चाहिए तथा उपयोगी काम करते समय जहां तक सम्भव हो उनकी सहमति प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। बड़े-बूढ़े लोग रूढ़िवादी विचारों से अपेक्षाकृत

अधिक ग्रस्त रहते हैं और अक्सर नौजवानों को प्रगतिशील गतिविधियों में भाग लेने से रोकते हैं; वे लोग नौजवानों की बात तब तक नहीं मानते जब तक नौजवान सफलता प्राप्त न कर लें। इन सब बातों का इस लेख में बड़ी खूबी के साथ वर्णन किया गया है। स्वाभाविक है, रूढ़िवादी विचारों के साथ हरगिज समझौता नहीं किया जाना चाहिए। तो फिर हम यह तरीका आजमा कर देख लें, और अगर यह कारगर साबित हो गया तो वे लोग अवश्य सहमत हो जाएंगे।

('चुड़शान काउण्टी के शिनफिङ श्याङ की नवीं कृषि उत्पादक सहकारी समिति का नौजवान अग्रिम दस्ता' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

25

यह एक अन्य अच्छा लेख है, जो सभी स्थानों के लिए संदर्भ-सामग्री का काम कर सकता है। इसमें सेकंडरी स्कूल के विद्यार्थियों और प्राइमरी पास व्यक्तियों को सहकारी आन्दोलन में भाग लेने के लिए संगठित करने का उल्लेख किया गया है। यह बात खास तौर पर ध्यान देने लायक है। ऐसे सभी शिक्षित नौजवानों को जो देहातों में जाकर काम कर सकते हैं, खुशी-खुशी वहां जाना चाहिए। देहाती इलाका एक बहुत बड़ी दुनिया है जहां बहुत कुछ करने की गुंजाइश है।

('एक श्याङ में सहकारी रूपान्तर की योजना बनाने के अनुभव' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

26

छन श्वे-मङ की मिसाल एक अन्य मिसाल है। चीन में ऐसे वीर असंख्य हैं, लेकिन दुर्भाग्यवश हमारे लेखक उन्हें खोज नहीं पाते। जहां तक उन लोगों का ताल्लुक है जो सहकारी आन्दोलन का मार्गदर्शन करने के लिए देहातों में जाते हैं, वे लोग वहां देखते तो बहुत सी चीजें हैं मगर लिखते बहुत कम हैं।

('सहकारी रूपान्तर के गति-निर्धारक छन श्वे-मङ' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

27

यह लेख बेहतरीन ढंग से लिखा गया है और यह सिफारिश की जा सकती है कि सभी काउण्टियों व जिलों की पार्टी व नौजवान संघ की कमेटियां और सभी श्याङों की पार्टी व नौजवान संघ की शाखाएं इसे पढ़ें। इसमें पेश की गई मिसाल पर सभी सहकारी समितियों को

चलना चाहिए। लेखक ने पार्टी की कार्यदिशा को समझ लिया है और बिलकुल सही बात कही है। लेख की भाषा अच्छी और पढ़ने में आसान है, तथा यह घिसापिटा पार्टी लेखन नहीं मालूम होता। यहां हम पाठकों का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना चाहते हैं कि हमारे बहुत से साथियों को घिसेपिटे पार्टी लेखन की लत लग चुकी है, तथा उनके लेखों में सजीव व स्पष्ट चित्रण नहीं होता और उन्हें पढ़ने पर पाठकों का सिर दुखने लगता है। वे लोग वाक्य-रचना के नियमों अथवा शब्द-चयन की भी परवाह नहीं करते तथा एक ऐसी शैली अपनाना पसन्द करते हैं जो प्राचीन भाषा और आधुनिक भाषा की खिचड़ी होती है, जिसमें कभी तो शब्दाडम्बर व असम्बद्धता का बोलबाला रहता है और कभी आवश्यक शब्दों के विलोप और पुराने अप्रचलित शब्दों के प्रयोग का, मानो वे लोग पाठक को यंत्रणा देने की कसम खा चुके हों। इस पुस्तक के लिए चुने गए 170 से अधिक लेखों में बहुत से लेख ऐसे हैं जिनसे घिसेपिटे पार्टी-लेखन की भारी दुर्गन्ध आ रही थी। उन्हें बार-बार मांजने के बाद ही अपेक्षाकृत पठनीय रूप दिया जा सका है। तथापि उनमें से कुछ लेख अब भी अपेक्षाकृत अस्पष्ट और दुर्बोध हैं। उन्हें इस पुस्तक में केवल इसलिए शामिल किया गया है क्योंकि उनकी विषय-वस्तु महत्त्वपूर्ण है। वह दिन न जाने कब आएगा जब सिरदर्द पैदा करने वाला यह घिसापिटा पार्टी-लेखन हमें कम देखने को मिलेगा ? जो साथी हमारे समाचारपत्रों व पत्रिकाओं में सम्पादक के रूप में काम करते हैं उनसे यह मांग की जाती है कि वे इस मामले पर ध्यान दें, अपने लेखकों से सुसम्बद्ध व धाराप्रवाह रूप से लिखने का अनुरोध करें, तथा उनकी पाण्डुलिपियों को मांजने का काम स्वयं करें।

('सहकारी समितियों में राजनीतिक कार्य' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

28

यहां वाङ क्वो-फान के नेतृत्व में चलने वाली ''कंगालों की सहकारी समिति'' का परिचय दिया गया है। हमारी सभी कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों का, यही नहीं हमारे सभी आर्थिक कारोबारों का संचालन करते समय मेहनत व किफायत के उसूल पर अमल किया जाना चाहिए। कारखानों, दुकानों तथा सभी राजकीय, सहकारी व अन्य कारोबारों को चलाते समय मेहनत व किफायत पर अमल किया जाना चाहिए; इस उसूल पर हर काम करते समय अमल किया जाना चाहिए। यह कमखर्ची का उसूल है, समाजवादी अर्थव्यवस्था का एक बुनियादी उसूल है। चीन एक विशाल देश है, लेकिन वह अब भी बहुत गरीब है, तथा चीन को समृद्धिशाली बनाने में कई दशाब्दियां लग जाएंगी। उस समय भी मेहनत व किफायत के उसूल पर अमल करना आवश्यक होगा; लेकिन आने वाली अनेक दशाब्दियों में, कई पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में, मेहनत व किफायत पर विशेष रूप से जोर देना तथा कमखर्ची पर खास तौर से ध्यान देना आवश्यक है। इस समय बहुत सी सहकारी समितियां कमखर्ची की ओर ध्यान नहीं देतीं; यह एक अस्वस्थ प्रवृत्ति है, जिसे तुरन्त सुधार लिया जाना चाहिए। मेहनत

व किफायत से चलाई जाने वाली सहकारी समितियों को हर प्रान्त और काउण्टी में खोजा जा सकता है, तथा उनकी मिसाल का प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए, जिससे सब लोग उनका अनुसरण कर सकें। जो सहकारी समितियां मेहनत व किफायत से कार्य करती हैं, सबसे ज्यादा ऊंची फसल पैदा करती हैं तथा हर लिहाज से अच्छा कार्य कर रही हैं, उनकी प्रशंसा की जानी चाहिए और उन्हें पुरस्कृत किया जाना चाहिए; इसके विपरीत जो सहकारी समितियां फिजूलखर्ची करती हैं, बहुत कम फसल पैदा करती हैं तथा हर काम में पीछे रहती हैं, उनकी आलोचना की जानी चाहिए।

('सहकारी समितियों को मेहनत व किफायत से चलाओ' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

29

यह श्याङ के एक हजार से कुछ अधिक परिवारों वाली एक विशाल सहकारी समिति (इसे वे लोग सामूहिक फार्म कहते हैं, जिसका तात्पर्य सहकारी समिति ही है) के लिए बनाई गई एक दीर्घकालीन सातवर्षीय योजना है। यह योजना सभी स्थानों के लिए सन्दर्भ-सामग्री का काम कर सकती है। इस सामग्री की विषय-वस्तु को पढ़ने के बाद लोग ऐसी दीर्घकालीन योजना की आवश्यकता को समझ सकेंगे। मानव समाज के विकास का इतिहास लाखों वर्ष पुराना है, लेकिन यहां चीन में हमारी अर्थव्यवस्था और संस्कृति के योजनाबद्ध विकास के लिए अनुकूल स्थितियां केवल आज ही पैदा हुई हैं। ऐसी स्थितियों में हमारे देश का रूप वर्ष-प्रतिवर्ष बदलता रहेगा। हर पांच वर्ष की अवधि में काफी परिवर्तन होगा तथा पांच वर्ष की अनेक अवधियां बीतने के बाद और अधिक बड़ा परिवर्तन होगा।

('लाल सितारा सामूहिक फार्म की दीर्घकालीन योजना' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

30

यह एक अच्छा लेख है। यह सभी के पढ़ने लायक है और हर स्थान की सहकारी समितियां अपनी दीर्घकालीन योजना बनाते समय इसे एक सन्दर्भ-सामग्री के रूप में इस्तेमाल कर सकती हैं। लेखक ने ठीक ही कहा है : "उत्पादन की योजना बनाने की समूची प्रक्रिया उन्नतिशील विचारों और रूढ़िवादी विचारों के बीच के संघर्ष की प्रक्रिया है"। रूढ़िवादी विचार लगभग सभी जगह गड़बड़ी पैदा कर रहे हैं। उन पर काबू पाने और उत्पादक शक्तियों व उत्पादन-कार्य के क्षेत्र में एक लम्बा कदम बढ़ाने के लिए सभी स्थानों और सहकारी समितियों को अपनी-अपनी दीर्घकालीन योजनाएं बनानी चाहिए।

('एक सहकारी समिति की त्रिवर्षीय उत्पादन योजना' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

31

इस श्याङ ने सहकारी रूपान्तर, उत्पादन-वृद्धि, जल-संरक्षण, पार्टी व नौजवान संघ के संगठनों के सुदृढ़ीकरण, सांस्कृतिक व शैक्षणिक कार्य इत्यादि के लिए एक द्विवर्षीय योजना बनाई है, और चीन के हर श्याङ को भी ऐसा ही करना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं कि योजना बनाना एक कठिन काम है, तो भला इस श्याङ ने उसे कैसे बनाया है ? 1956 में हमारे देश की हर काउण्टी, जिले और श्याङ को एक चौतरफा योजना बना लेनी चाहिए, जिसमें उक्त योजना से ज्यादा विषयों, जैसे सहायक धन्धों, व्यापार, वित्त, वृक्षारोपण और स्वास्थ्य-कार्य आदि, को शामिल किया जाना चाहिए। योजना भले ही कुछ अनगढ़ हो और वास्तविक स्थिति से सौ फीसदी मेल खाने वाली न हो, फिर भी वह कोई योजना न होने से तो अच्छी ही है। अगर किसी प्रान्त की एक या दो काउण्टियों, जिलों और श्याङों द्वारा काफी अच्छी योजनाएं बना ली जायं, तो उनका तुरन्त प्रचार-प्रसार किया जा सकता है तथा वे दूसरी काउण्टियों, जिलों और श्याङों के लिए नमूने का काम कर सकती हैं। लोग कहते हैं कि योजना बनाना एक कठिन कार्य है, लेकिन वास्तव में यह उतना कठिन नहीं है।

('ईथाओ श्याङ की चौतरफा योजना' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

32

यह लेख बहुत उपयोगी है और सभी काउण्टियों के लिए सन्दर्भ-सामग्री का काम कर सकता है। हर काउण्टी को अपनी चौतरफा योजना में जल-संरक्षण की एक समुचित योजना को भी शामिल कर लेना चाहिए। कृषि-उत्पादन में वृद्धि की गारण्टी करने के लिए जल-संरक्षण एक महत्त्वपूर्ण उपाय है, छोटी-छोटी जल-संरक्षण परियोजनाओं के निर्माण की क्षमता हर काउण्टी, जिले, श्याङ और सहकारी समिति में मौजूद है, और इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि योजनाएं बनाई जायं तथा उन्हें कुछ वर्षों में कदम-ब-कदम पूरा किया जाय, जिससे असाधारण व अनियंत्रित बाढ़ और सूखे की स्थिति को छोड़कर, सूखा पड़ने पर सिंचाई की और बाढ़ आने पर जल-निकासी की गारण्टी की जा सके। इस पर निश्चित रूप से अमल किया जा सकता है। सहकारी समितियों में संगठित होने के बाद जन-समुदाय में बेहद भारी शक्ति पैदा हो जाती है। साधारण बाढ़ और सूखे की समस्या को, जिसे गत हजारों वर्षों से हल नहीं किया जा सका, अब कुछ ही वर्षों में हल किया जा सकेगा।

('हर एक के पास एक मू सिंचित भूमि हो जाय' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

33

सुअरपालन एक महत्त्वपूर्ण काम है, जिसका खाद जुटाने, गोश्त सप्लाई करने और निर्यात द्वारा विदेशी मुद्रा कमाने के काम पर सीधा असर पड़ता है; इसलिए सभी सहकारी

समितियों को चाहिए कि वे सूअरपालन को अपनी योजना में शामिल कर लें, तथा कृषि तौर पर, प्रान्तों, स्पेशल डिस्ट्रिक्टों, काउण्टियों और जिलों को भी अपनी-अपनी योजनाएं बनानी चाहिए। सूअरों के लिए चारा आसानी से उपलब्ध हो सकता है; कुछ किस्मों की घास और पेड़ों की पत्तियां, शकरकंद और उसकी बेलें ये सभी चीजें सूअर का भोजन हैं, यह जरूरी नहीं है कि उन्हें अनाज ही खिलाया जाय और वह भी बहुत ज्यादा मात्रा में। सहकारी समितियों द्वारा सामूहिक रूप से सूअर पाले जाने के अलावा हर किसान परिवार को भी एक या एक से ज्यादा सूअर पालने की सलाह दी जानी चाहिए, और इस लक्ष्य को कुछ ही वर्षों में कदम-ब-कदम प्राप्त कर लिया जाना चाहिए। बेशक, कुछ ऐसी अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के लोगों को जिनमें सूअरपालन वर्जित है तथा कुछ ऐसे परिवारों को जिन्हें धार्मिक कारणों से सूअरपालन पर आपत्ति है, इस मामले में अपवाद समझा जाना चाहिए। सूअरपालन के लिए पुरस्कृत करने के उद्देश्य से सिलसिलेवार अनेक कदम उठाए जाने चाहिए, तथा चच्याङ प्रान्त की शाङह्वा सहकारी समिति के अनुभव इस सम्बन्ध में सभी स्थानों के लिए सन्दर्भ-सामग्री का काम कर सकते हैं।

('जहां सूअर बड़ी संख्या में पाले जाते हैं' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

34

कृषि के सहकारी रूपान्तर से पहले देश के अनेक भागों में अतिरिक्त श्रमशक्ति एक समस्या बनी हुई थी। लेकिन उसके बाद बहुत सी सहकारी समितियों को श्रमशक्ति की कमी अनुभव होने लगी तथा इस बात की आवश्यकता अनुभव होने लगी कि ऐसी महिलाओं के विशाल समुदाय को जो पहले खेतीबाड़ी का काम नहीं करती थीं, श्रम के मोर्चे पर स्थान ग्रहण करने के लिए गोलबन्द किया जाय। यह एक महत्वपूर्ण बात थी, जो बहुत से लोगों की कल्पना के बाहर थी। लोगों ने आम तौर पर यह सोचा था कि सहकारिता पर अमल करने के बाद श्रमशक्ति फालतू हो जाएगी। श्रमशक्ति पहले ही फालतू थी, अगर और अधिक फालतू हो जाएगी तो क्या होगा ? बहुत से स्थानों में सहकारिता पर अमल करने के दौरान ऐसी भ्रान्त धारणाओं का निराकरण हो गया, क्योंकि समस्या श्रमशक्ति के फालतू होने की नहीं बल्कि कम पड़ने की थी। कुछ स्थानों में सहकारिता पर अमल करने के बाद कुछ समय तक श्रमशक्ति अवश्य फालतू रही, लेकिन इसका कारण यह था कि उन्होंने अभी उत्पादन के पैमाने को विस्तृत नहीं किया था, बहुमुखी आर्थिक उद्यमों को आरम्भ नहीं किया था और गहन-सूक्ष्म खेती शुरू नहीं की थी। बहुत से स्थानों में जैसे-जैसे उत्पादन का पैमाना बढ़ता जाता है, उद्यमों की संख्या बढ़ती जाती है, प्रकृति का रूपान्तर करने के प्रयासों में उत्तरोत्तर अधिक व्यापकता व गहराई आती जाती है तथा काम अधिक सूक्ष्मता के साथ किया जाता है, वैसे-वैसे श्रमशक्ति की कमी और अधिक स्पष्ट होती जाती है। यह केवल शुरुआत है और समय बीतने के साथ-साथ यह बात और अधिक स्पष्ट होती जाएगी। कृषि के मशीनीकरण होने के बाद भी ऐसी ही स्थिति बनी रहेगी। आने वाले समय में तरह तरह के

ऐसे कारोबारों का उदय होगा जिनकी पहले कल्पना भी नहीं की जा सकती थी तथा कृषि-उत्पादन अपने वर्तमान स्तर से बढ़कर कई गुना, दस-बारह गुना, और शायद बीसियों गुना हो जाएगा। उद्योग, संचार और विनिमय का तो पिछली पीढ़ियों की कल्पना से कहीं ज्यादा विकास हो जाएगा। यही स्थिति विज्ञान, संस्कृति, शिक्षा और स्वास्थ्य-कार्य के क्षेत्र में भी पैदा हो जाएगी। चीन में महिलाएं श्रमशक्ति का एक विशाल सुरक्षित भण्डार हैं। एक महान समाजवादी देश का निर्माण करने के संघर्ष में इस सुरक्षित भण्डार को इस्तेमाल किया जाना चाहिए। महिलाओं को उत्पादन की गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पुरुषों और महिलाओं को समान कार्य के लिए समान पारिश्रमिक देने का उसूल लागू किया जाना चाहिए। चच्याङ प्रान्त की च्यंनतं काउण्टी के अनुभव से सभी सहकारी समितियां सीख सकती हैं।

('महिलाओं को उत्पादन में शामिल होने के लिए गोलबन्द करके श्रमशक्ति की कमी की समस्या हल कर ली गई' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

35

यह भी एक आम समस्या है। इन दोनों सहकारी समितियों का अनुभव यह बताता है कि उत्पादन की वर्तमान स्थिति में श्रमशक्ति का लगभग एक-तिहाई भाग फालतू हो चुका है। जिस काम को करने के लिए पहले तीन आदमियों की जरूरत होती थी उसे सहकारी रूपान्तर के बाद केवल दो आदमी कर सकते हैं; यह समाजवाद की श्रेष्ठता का सूचक है। इस एक-तिहाई या उससे ज्यादा अतिरिक्त श्रमशक्ति का उपयोग आखिर कहां किया जा सकता है ? इसके अधिकांश भाग का उपयोग अब भी देहातों में ही किया जा सकता है। समाजवाद ने न सिर्फ मेहनतकश लोगों और उत्पादन के साधनों को पुराने समाज की जंजीरों से आजाद किया है, बल्कि प्रकृति के उन असीमित संसाधनों का भण्डार भी खोल दिया है जिनका दोहन पुराने समाज द्वारा नहीं किया जा सकता था। जन-समुदाय के अन्दर अपरिमित सृजनात्मक शक्ति होती है। वह अपने आपको संगठित करके काम के सभी क्षेत्रों व शाखाओं में अपनी शक्ति का पूर्ण विकास कर सकता है, उत्पादन-कार्य का अधिक गहन और व्यापक रूप से संचालन कर सकता है तथा अपनी सुख-सुविधाओं के लिए अधिकाधिक उद्यमों को आरम्भ कर सकता है। अभी तक हमने कृषि के मशीनीकरण की चर्चा नहीं की। मशीनीकरण के जरिए और भी बहुत सी श्रमशक्ति बचायी जा सकती है। क्या इसे उपयोग में लाने का उपाय खोजा जा सकेगा ? हां, कुछ मशीनीकृत राजकीय फार्मों के अनुभव के आधार पर उपाय अवश्य खोजा जा सकेगा। जैसे जैसे उत्पादन का पैमाना बढ़ता जाएगा, उद्यमों की संख्या बढ़ती जाएगी तथा काम अधिकाधिक बारीकी से किया जाएगा, वैसे-वैसे यह चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं रह जाएगी कि श्रमशक्ति का कैसे इस्तेमाल किया जाय।

('अतिरिक्त श्रमशक्ति के उपयोग के लिए रास्ता खोज निकाला गया' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

36

इस काउण्टी में जो कुछ हो रहा है उससे यह भी जाहिर हो जाता है कि ग्रामीण अतिरिक्त श्रमशक्ति के उपयोग के लिए देहातों में रास्ता खोज निकाला जा सकता है। जैसे-जैसे प्रबन्ध-व्यवस्था में सुधार होता जाता है और उत्पादन का पैमाना विस्तृत होता जाता है, वैसे-वैसे श्रम करने योग्य हर पुरुष व महिला को साल में ज्यादा श्रम-दिन काम करने का मौका मिल सकता है। हर पुरुष के सौ से कुछ ज्यादा श्रम-दिन काम करने और हर महिला के बीसियों श्रम-दिन काम करने के बदले, जैसा कि इस लेख में बताया गया है, हर पुरुष साल में दो सौ से भी ज्यादा श्रम-दिन काम कर सकता है तथा हर महिला सौ श्रम दिन या उससे कुछ ज्यादा काम कर सकती है। देश के अन्य भागों की कुछ सहकारी समितियां इस स्तर पर पहले ही पहुंच चुकी हैं। सहायक धन्धों के उत्पादनों के लिए एक सुनिश्चित बाजार का होना जरूरी है तथा उनको अन्धाधुन्ध तरीके से विकसित नहीं किया जाना चाहिए – यह बिलकुल सही है। समूचे देश को देखा जाए तो ग्रामीण सहायक धन्धों का उत्पादन अधिकांशतः देहाती इलाकों की ही जरूरतें पूरी करता है, लेकिन यह आवश्यक है कि उसका एक अच्छा खासा भाग, जिसका भविष्य में विस्तार होने की सम्भावना है, शहरों की जरूरतों तथा निर्यात की मांग को पूरा करे। बात यह है कि राज्य की अपनी एकीकृत योजना का होना जरूरी है जिससे अन्धाधुन्ध विकास से कदम-ब-कदम बचा सके।

('श्याडइन काउण्टी ने अतिरिक्त श्रमशक्ति के उपयोग के लिए रास्ता खोज निकाला' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

37

यह लेख बहुत अच्छा है और जो कुछ इसमें बताया गया है उसे सभी स्थानों को अपने लिए एक मिसाल बना लेना चाहिए। "लेखापाल उपलब्ध नहीं हैं" – यह बहाना वे लोग करते हैं जो सहकारिता के तीव्र विकास के विरोधी हैं। समूचे देश में कृषि सहकारिता के लिए दसियों लाख लेखापालों की जरूरत है, और ये लोग आखिर कहां से मिल सकते हैं ? इस प्रकार की जनशक्ति वास्तव में उपलब्ध है, क्योंकि प्राइमरी स्कूल व जूनियर सेकण्डरी स्कूल से उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को इस कार्य के लिए बड़ी तादाद में गोलबन्द किया जा सकता है। जरूरत इस बात की है कि उन्हें तेजी से प्रशिक्षित किया जाए तथा काम के दौरान उनका सांस्कृतिक और व्यावसायिक स्तर ऊंचा किया जाए। हर जिले में कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों, सप्लाई व क्रय-विक्रय सहकारी समितियों तथा ऋणदाता सहकारी समितियों के लेखापालों को संगठित करके लेखापालों का आपसी सहयोग परिमण्डल कायम किया जाए; यह उनका सांस्कृतिक और व्यावसायिक स्तर ऊंचा करने का एक अच्छा तरीका होगा। चाङउ काउण्टी के तीसरे जिले में कायम किए गए ऐसे ही एक परिमण्डल ने इन दोनों पहलुओं में लेखापालों का स्तर ऊंचा करने में मदद दी है तथा इसके अलावा बहुत से आर्थिक व राजनीतिक कार्य भी किए हैं। काउण्टी व जिले के स्तर के पार्टी-संगठनों के लिए यह जरूरी

है कि वे यहां बताए गए काम पर ध्यान दें और उसका मार्गदर्शन करें।

('कृषि-उत्पादक सहकारी समितियों, सप्लाई व क्रय-विक्रय सहकारी समितियों तथा ऋणदाता सहकारी समितियों के लेखापालों के आपसी सहयोग परिमण्डल कायम करने में प्राप्त अनुभव' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

38

जिस अनुभव की यहां चर्चा की गई है उसका प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए। लेनिन ने कहा है, "एक निरक्षर देश में कम्युनिस्ट समाज का निर्माण नहीं हो सकता"।* हमारे देश में आज इतने ज्यादा लोग निरक्षर हैं, लेकिन समाजवादी निर्माण के लिए निरक्षरता दूर होने तक प्रतीक्षा नहीं की जा सकती; इस प्रकार एक तीव्र अन्तरविरोध पैदा हो जाता है। आज हमारे देश में न केवल स्कूल में प्रवेश पाने की उम्र के बहुत से बच्चों के लिए स्कूल नहीं हैं बल्कि उनसे बड़ी उम्र के किशोरों व नौजवानों की बहुत बड़ी तादाद के लिए भी स्कूल नहीं हैं, वयस्कों की बात तो दूर रही। इस गम्भीर समस्या को कृषि सहकारिता के दौरान हल कर लिया जाना चाहिए, और केवल इसी के दौरान हल किया जा सकता है। सहकारी समितियों की स्थापना के फलस्वरूप किसानों के अन्दर आर्थिक आवश्यकताओं के कारण पढ़ना-लिखना सीखने की तीव्र इच्छा पैदा हो जाती है। सहकारी समितियों की स्थापना के फलस्वरूप किसानों के पास सामूहिक शक्ति हो जाती है, उनकी परिस्थिति पूरी तरह बदल जाती है तथा वे खुद अपनी साक्षरता कक्षाएं खोल सकते हैं। पहले, श्रम-अंकों का हिसाब रखने के लिए उन्हें अपने गांव या श्याङ के लोगों और जगहों के नाम, कृषि-औजारों के नाम, विभिन्न प्रकार के कृषि-कार्यों के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द तथा दूसरे आवश्यक शब्द – जिनकी कुल संख्या दो या तीन सौ है – लिखना सीखना होगा। इसके बाद उन्हें अपने शब्द-भण्डार में बढ़ोतरी करनी होगी। इस प्रकार उनके लिए दो किस्म की पाठ्य-पुस्तकों की आवश्यकता है। पहली किस्म की पाठ्य-पुस्तक किसी स्थान विशेष की सहकारी समितियों की जरूरतों को ध्यान में रखकर स्थानीय शिक्षित लोगों द्वारा सहकारिता के कार्य का मार्गदर्शन करने वाले साथियों की सहायता से तैयार की जानी चाहिए। हर स्थान को अपनी अलग पाठ्य-पुस्तक तैयार करनी चाहिए, सबकी पाठ्य-पुस्तक एक जैसी नहीं होनी चाहिए। ऐसी पाठ्य-पुस्तक को ऊपर के प्राधिकरणों से मंजूर कराना जरूरी नहीं है। दूसरी किस्म की पाठ्य-पुस्तक में भी कुछ सौ शब्द ही होने चाहिए और उसे भी इसी तरीके से तैयार किया जाना चाहिए। उसे एक अपेक्षाकृत सीमित क्षेत्र में (मिसाल के लिए एक काउण्टी या प्रिफेक्चर में) इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं व शब्द-समूहों पर तथा साथ ही प्रान्त (या म्युनिसिपलटी अथवा स्वायत्त प्रदेश) और समूचे देश में इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं व शब्द-समूहों पर आधारित होना चाहिए। इस प्रकार की पाठ्य-पुस्तक का भी सभी स्थानों में एक जैसा होना जरूरी नहीं है, लेकिन काउण्टी, प्रिफेक्चर, अथवा प्रान्त (या म्युनिसिपलटी अथवा स्वायत्त प्रदेश) के शैक्षणिक प्राधिकरणों द्वारा इसकी तुरन्त जांच की जानी चाहिए। इन दो कदमों के बाद तीसरा कदम उठाया जाना चाहिए;

इसके अन्तर्गत हर प्रान्त (या म्युनिसिपलटी अथवा स्वायत्त प्रदेश) के शैक्षणिक प्राधिकरणों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे आम प्रयोग के लिए तीसरी किस्म की पाठ्य-पुस्तक तैयार करेंगे। बाद में और अधिक उन्नत स्तर की पाठ्य पुस्तकें तैयार करना जरूरी होगा। राष्ट्रीय स्तर के सांस्कृतिक व शैक्षणिक प्राधिकरणों को इस सिलसिले में समुचित मार्गदर्शन करना चाहिए। शानतुङ प्रान्त की च्वीनान काउण्टी के काओच्याल्यूकओ गांव में नौजवान संघ की शाखा ने एक सृजनात्मक कार्य किया है। वहां जिस तरह काम हो रहा है उसे देखकर बड़ी खुशी होती है। इस शाखा ने अपने श्याङ के प्राइमरी पास लोगों में से ही अध्यापक खोज निकाले हैं। प्रगति की रफ्तार तेज है और सौ से ज्यादा नौजवानों व बालिगों ने ढाई महीने में लगभग दो सौ शब्द सीख लिये हैं। अब वे अपने श्रम-अंकों का हिसाब खुद रख सकते हैं और उनमें से कुछ लोग सहकारी समिति के श्रम-अंक-प्रलेखक भी बन गए हैं। "श्रम-अंक-प्रलेखक का पाठ्यक्रम" – यह एक बिलकुल उचित नाम है। ऐसे पाठ्य-क्रम हर जगह खोले जाने चाहिए। नौजवान संघ के हर स्तर के संगठनों को इस कार्य का मार्गदर्शन करना चाहिए तथा पार्टी और सरकार के सभी संगठनों को इसका समर्थन करना चाहिए।

('च्वीनान काउण्टी के काओच्याल्यूकओ गांव में नौजवान संघ की शाखा द्वारा श्रम-अंक प्रलेखन पाठ्यक्रम आरम्भ करने में प्राप्त अनुभव' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

39

यह लेख स्वर्णतारा कृषि, जंगलात व पशुपालन उत्पादक सहकारी समिति के बारे में है, जिसका नेतृत्व ली शुन-ता करते हैं। अपनी स्थापना के बाद तीन वर्ष की अवधि में यह सहकारी समिति 283 परिवारों वाली एक विशाल सहकारी समिति बन गई है। यह थाएहाङ पर्वत के एक बंजर इलाके में स्थित है, लेकिन इन तीन वर्षों में सभी लोगों के कठोर परिश्रम के परिणामस्वरूप इसकी शक्ल बदलने लगी है। श्रमशक्ति के इस्तेमाल की दर अब जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध से पहले के व्यक्तिगत खेती के जमाने के मुकाबले 110.6 प्रतिशत बढ़ गई है तथा सहकारी समिति की स्थापना से पहले के आपसी-सहयोग दलों के जमाने के मुकाबले 74 प्रतिशत बढ़ गई है। सहकारी समिति की संचित निधि, जो उसकी स्थापना के बाद पहले वर्ष केवल 120 युवान थी, अब 11,000 युवान से ज्यादा हो गई है। 1955 में हर सदस्य के हिस्से औसतन 884 चिन अनाज आया, जो जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के पहले के जमाने के मुकाबले 77 प्रतिशत अधिक तथा आपसी-सहयोग दलों के जमाने के मुकाबले 25.1 प्रतिशत अधिक था। इस सहकारी समिति ने एक पंचवर्षीय योजना बनाई है, लेकिन केवल तीन वर्ष बाद ही सहकारी समिति का कुल उत्पादन-मूल्य योजना में निर्धारित लक्ष्यों को 100.6 प्रतिशत प्राप्त कर चुका है। इस सहकारी समिति के अनुभव को देखकर हमारे मन में सवाल उठता है : अगर प्रतिकूल प्राकृतिक स्थिति वाले स्थानों के उत्पादन में भी भारी बढ़ोतरी की जा सकती है तो भला अनुकूल प्राकृतिक स्थिति वाले स्थानों के उत्पादन

में इससे भी ज्यादा बढ़ोतरी क्यों नहीं की जा सकती ?

('सहकारी समितियों को मेहनत व किफायत से चलाओ, पहाड़ी इलाकों का विकास करो' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

40

यह एक सुसंचालित सहकारी समिति है। इसके मूल्यवान अनुभवों से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। छ्वीफू काउण्टी कनफ्यूशियस की जन्मभूमि है, जहां उस वयोवृद्ध व्यक्ति ने अनेक वर्षों तक एक विद्यालय चलाया और सुयोग्य शिष्यों की एक अच्छी खासी संख्या को शिक्षित किया। यह एक ऐसा तथ्य है जिसे काफी लोग जानते हैं। लेकिन उन्होंने जन-जीवन के आर्थिक पहलू की ओर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। जब कनफ्यूशियस के शिष्य फान छि ने उनसे पूछा कि खेती-बाड़ी कैसे की जाती है, तो उन्होंने न सिर्फ उसका प्रश्न टाल दिया बल्कि फान छि के पीठ पीछे उस पर "निम्न कोटि" का होने का लांछन लगाया। अब उनकी जन्मभूमि के लोगों ने समाजवादी सहकारी समितियां स्थापित कर ली हैं। तीन वर्ष तक सहकारी समितियों को चलाने के बाद, दो हजार वर्ष से ज्यादा समय से चली आई गरीबी व कंगाली से पीड़ित जनता के आर्थिक व सांस्कृतिक जीवन में तब्दीली आने लगी है। इससे जाहिर हो जाता है कि हमारे युग के समाजवाद की इतिहास में सचमुच कोई मिसाल नहीं मिलती। कनफ्यूशियस के "क्लासिकी ग्रन्थों" के मुकाबले समाजवाद बेइन्तहा बेहतर है। जो लोग कनफ्यूशियस के मन्दिर व समाधि के दर्शन करने के लिए वहां जाने में दिलचस्पी रखते हैं उन्हें मैं सलाह देना चाहता हूं कि वे रास्ते में वह सहकारी समिति देखने भी जाएं जिसका यहां वर्णन किया गया है।

('एक ऐसी कृषि उत्पादक सहकारी समिति जिसके उत्पादन में तीन वर्ष के अन्दर 67 प्रतिशत बढ़ोतरी हुई' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

41

यह लेख बहुत अच्छा और पढ़ने योग्य है। इस समय अधिकांश अर्ध-समाजवादी सहकारी समितियां छोटी-छोटी हैं और उनमें से हर सहकारी समिति में कोई बीस-तीस परिवार हैं, क्योंकि इस आकार की सहकारी समितियां कायम करना आसान है तथा इनसे कार्यकर्ताओं व सदस्यों को तुरन्त अनुभव प्राप्त करने का मौका मिल जाता है। लेकिन अपने थोड़े से सदस्यों, कम जमीन और अपर्याप्त धन के कारण एक छोटी सहकारी समिति बड़े पैमाने की गतिविधियों का आयोजन नहीं कर सकती अथवा मशीनरी का इस्तेमाल नहीं कर सकती। इतने छोटे आकार वाली सहकारी समितियां भी उत्पादक शक्तियों के विकास में बाधक होती हैं; उन्हें इस अवस्था में बहुत लम्बे समय तक नहीं रहना चाहिए, बल्कि कदम-ब-कदम उनका एक दूसरे में विलय हो जाना चाहिए। कुछ स्थानों में एक सहकारी समिति के अन्तर्गत एक पूरा श्याङ हो सकता

है, चन्द स्थानों में एक सहकारी समिति के अन्तर्गत कई श्याङ हो सकते हैं, लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि बहुत से अन्य स्थानों में एक ही श्याङ में कई सहकारी समितियां भी हो सकती हैं। मैदानी इलाकों में ही नहीं बल्कि पहाड़ी इलाकों में भी बड़ी सहकारी समितियां कायम की जा सकती हैं। आनहवेइ प्रान्त के उस श्याङ में जहां फोचालिङ जलाशय है, दर्जनों ली तक पहाड़ी इलाका फैला हुआ है। यही वह स्थान है जहां एक बड़ी सहकारी समिति कायम की गई है, जिसमें कृषि, जंगलात और पशुपालन का कार्य संयुक्त रूप से किया जाता है। निस्सन्देह, सहकारी समितियों के परस्पर विलय का काम सदस्यों की सहमति से कदम-ब-कदम सिर्फ तभी किया जाना चाहिए जब उपयुक्त कार्यकर्ता उपलब्ध हो जायं।

('बड़ी सहकारी समितियों की श्रेष्ठता' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

42

हाएनान द्वीप की लाल झण्डा सहकारी समिति के अनुभवों से फिर एक बार यह साबित हो गया है कि बड़ी सहकारी समितियां और उन्नत स्तर की सहकारी समितियां स्थापित करना बेहद फायदेमन्द है। अपनी स्थापना के केवल एक वर्ष बाद ही यह बड़ी सहकारी समिति उन्नत स्तर पर पहुंचने के लिए तैयार हो गई। बेशक, इसका मतलब यह नहीं है कि सभी सहकारी समितियों को ऐसा ही करना चाहिए, क्योंकि इस बात का फैसला करने से पहले कि परस्पर विलय कब किया जाय और उन्नत स्तर पर कब पहुंचा जाय, उन्हें यह देख लेना चाहिए कि उनकी स्थितियां परिपक्व हो चुकी हैं अथवा नहीं। लेकिन तीन वर्ष का समय आम तौर पर लगभग ठीक है। महत्वपूर्ण बात यह है कि किसानों के सामने मिसालें कायम की जायं। जब वे लोग यह देख लेंगे कि बड़ी सहकारी समितियों और उन्नत स्तर की सहकारी समितियों के फायदे छोटी और प्रारम्भिक स्तर की सहकारी समितियों के मुकाबले ज्यादा हैं, तो वे अपनी सहकारी समितियों का परस्पर विलय करना और उन्हें उन्नत स्तर की ओर ले जाना चाहेंगे।

('छुङशान काउण्टी में पहले जिले की लाल झण्डा कृषि उत्पादक सहकारी समिति प्राकृतिक विपत्ति और पूंजीवादी विचारधारा के खिलाफ संघर्ष के दौरान सुदृढ़ होती गई' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

43

यह जरूरी है कि स्थितियां परिपक्व होने पर प्रारम्भिक स्तर की सहकारी समितियों को उन्नत स्तर की सहकारी समितियों में बदलने पर गौर किया जाय, जिससे उनमें उत्पादक शक्तियों और उत्पादन का और अधिक विकास किया जा सके। चूंकि प्रारम्भिक सहकारी समितियों में अर्ध निजी मिल्कियत* मौजूद है, इसलिए जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा, इसकी वजह से उत्पादक शक्तियों के विकास में बाधाएं खड़ी होने लगेंगी और लोग मिल्कियत की इस व्यवस्था में परिवर्तन की मांग करने लगेंगे, ताकि सहकारी समिति को सामूहिक प्रबन्ध वाली एक ऐसी आर्थिक इकाई बनाया जा सके जिसमें उत्पादन के साधनों की मिल्कियत पूर्ण रूप से सामूहिक हो। जहां एक बार उत्पादक शक्तियों को और अधिक मुक्त कर दिया गया तो उत्पादन का और अधिक विकास होने लगेगा। कुछ स्थानों में यह परिवर्तन अपेक्षाकृत तेजी से हो सकता है, जबकि कुछ अन्य स्थानों में इसकी रफ्तार अपेक्षाकृत धीमी रखनी होगी। प्रारम्भिक स्तर की सहकारी समितियों को लगभग तीन वर्ष तक चलाए जाने के बाद उनमें आवश्यक स्थितियां बुनियादी तौर पर पैदा हो जाएंगी। हर प्रान्त, म्युनिसिपलटी और स्वायत्त प्रदेश के पार्टी-संगठनों को चाहिए कि वे इस मामले पर विचार करें और तैयारी करें, तथा 1956 व 1957 के दौरान जन-समुदाय की सहमति से प्रयोग के तौर पर अनेक उन्नत स्तर की सहकारी समितियों की स्थापना करें। फिलहाल सहकारी समितियां आम तौर पर छोटी हैं और जब वे उन्नत स्तर की सहकारी समितियों का रूप लेने लगें तो जन-समुदाय की सहमति से बहुत सी छोटी-छोटी सहकारी समितियों को मिलाकर बड़ी सहकारी समितियों की स्थापना की जानी चाहिए। अगर 1956 व 1957 में हर जिले के अन्दर इस प्रकार की एक या अनेक सहकारी समितियों को संगठित किया गया तथा प्रारम्भिक स्तर की सहकारी समितियों की तुलना में उनकी श्रेष्ठता को जन-समुदाय के बीच प्रकट होने दिया गया, तो इससे आने वाले कुछ वर्षों में सहकारी समितियों के परस्पर विलय के लिए और उन्नत स्तर पर पहुंचने के लिए अनुकूल स्थितियां पैदा हो जाएंगी। इस काम का तालमेल उत्पादन का विकास करने की चौतरफा योजना के साथ कायम करना जरूरी है। जब लोग यह देख लेंगे कि बड़ी सहकारी समितियों और उन्नत स्तर की सहकारी समितियों के फायदे छोटी सहकारी समितियों और प्रारम्भिक स्तर की सहकारी समितियों की तुलना में अपेक्षाकृत ज्यादा हैं, जब लोग यह देख लेंगे कि दीर्घकालीन योजना के जरिए भौतिक व सांस्कृतिक जीवन का स्तर कहीं ज्यादा उन्नत किया जा सकता है, तो वे अपनी सहकारी समितियों का परस्पर विलय करने और उन्नत स्तर की ओर बढ़ने के लिए सहमत हो जाएंगे। उन्नत स्तर पर पहुंचने का काम उपनगरीय क्षेत्रों में ज्यादा तेजी से होगा। पेकिङ की इस सहकारी समिति के अनुभव ऐसी ही स्थितियों वाली अन्य सहकारी समितियों के लिए सन्दर्भ-सामग्री का काम कर सकते हैं।

('एक ऐसी सहकारी समिति जो प्रारम्भिक स्तर से उन्नत स्तर पर पहुंच गई है' शीर्षक लेख पर टिप्पणी)

नोट

[1] शुरू के दिनों में वाङ क्वो फान सहकारी समिति के पास उत्पादन के साधनों की भारी कमी थी। लेकिन उसने राजकोष ऋण लेने के बजाय अपने सदस्यों को कोई तीस ली दूर पहाड़ी इलाके से ईंधन की लकड़ियां बटोरने के लिए संगठित किया और उन्हें बेचकर उत्पादन के साधन खरीदे। समिति सहकारी समिति के सदस्यों ने कहा कि उन्होंने बहुत से उत्पादन के साधनों को "पहाड़ों का दोहन करके प्राप्त कर लिया"।

[2] यहां "विपरीत प्रचार" का तात्पर्य है सहकारी समितियों के फायदों और अनुकूल स्थितियों का प्रचार-प्रसार करने के अलावा जन-समुदाय को उन कठिनाइयों व प्रतिकूल स्थितियों से स्पष्ट रूप से अवगत कराना जिनका सामना सहकारी समितियों की स्थापना के दौरान हो सकता था। यह केवल तब किया गया जब जन-समुदाय पूर्ण रूप से जागृत हो चुका था और लोगों ने बड़ी तादाद में सहकारी समितियों की सदस्यता के लिए आवेदन किया था, जिससे वे लोग इस मामले के हानि-लाभ को मुकम्मिल तौर पर समझ सकें और स्वेच्छा से शामिल हो सकें।

[3] चार प्रकार की तुलनाओं में यह देखा जाता था कि निम्नलिखित चीजों में कौन सी चीज बेहतर है : (1) सहकारी समिति, आपसी-सहयोग दल, अथवा व्यक्तिगत तौर पर खेती करने वाले किसान; (2) समाजवाद अथवा पूंजीवाद; (3) शोषण व्यवस्था अथवा शोषणहीन व्यवस्था; तथा (4) व्यक्तिगत खुशहाली अथवा सामूहिक समृद्धि। पांच प्रकार की गणनाओं के अन्तर्गत निम्नलिखित बातों के बारे में सहकारी समिति की श्रेष्ठता की गणना की जाती थी : (1) प्राकृतिक संकटों का मुकाबला करना; (2) सहायक धन्धों का विकास करके आमदनी बढ़ाना; (3) श्रम के प्रति उत्साह पैदा करके श्रम-अंकों में वृद्धि करना; (4) गरीब और मध्यम किसानों को परस्पर लाभ पहुंचाने वाली सहकारिता के परिणामस्वरूप उत्पादन बढ़ाना; तथा (5) उत्पादन और रहन-सहन के क्षेत्र में आने वाली कठिनाइयों पर काबू पाना।

[4] वी. आई. लेनिन, 'नौजवान संघों के कार्य'।

[5] 'कनफ्यूशियस का सूक्ति-संग्रह', खण्ड 13, 'च लू'।

[6] प्रारम्भिक स्तर की सहकारी समितियां, जिनकी विशेषता यह थी कि उनमें जमीन को शेयरों के रूप में सम्मिलित किया जाता था और एकीकृत प्रबन्ध पर अमल किया जाता था, स्वरूप की दृष्टि से अर्ध-समाजवादी थीं। उनमें जमीन, बुलाई-जुताई के काम आने वाले पशुओं और बड़े-बड़े कृषि-औजारों जैसे उत्पादन के साधनों पर सहकारी समितियों के सदस्यों की निजी मिलकियत मौजूद थी, तथा सहकारी समितियों को इनके इस्तेमाल के लिए अपने सदस्यों को "लाभांश" देना पड़ता था। इसलिए प्रारम्भिक स्तर की सहकारी समितियों के बारे में यह कहा जाता था कि उनमें अर्ध-निजी मिलकियत बनी हुई है।

कृषि से सम्बन्धित सत्रहसूत्री दस्तावेज पर राय देने का अनुरोध*

21 दिसम्बर 1955

कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा हाङचओ और थ्येनचिन में चौदह प्रान्तों और भीतरी मंगोलिया स्वायत्त प्रदेश की पार्टी कमेटियों के सचिवों के साथ सलाह-मशविरा करके इस साल नवम्बर में एक सत्रहसूत्री दस्तावेज तैयार किया गया। केन्द्रीय कमेटी यह समझती है कि उसके द्वारा 10 जनवरी को बुलाए जाने वाले सम्मेलन में, जिसमें प्रान्तों, म्युनिसिपलटियों और स्वायत्त प्रदेशों के सचिव भी शामिल होंगे, इस दस्तावेज की पुष्टि कर दी जाए, ताकि उसे 1956 की योजना में शामिल किया जा सके और बड़ी संजीदगी के साथ कार्यान्वित करना आरम्भ किया जा सके। इस उद्देश्य से, यह सन्देश मिलते ही कृपया अपने अधीन सभी प्रिफेक्चर पार्टी कमेटियों के सचिवों और कुछ काउण्टी पार्टी कमेटियों के सचिवों को निम्नलिखित प्रश्नों का विस्तार से अध्ययन करने के लिए बुला लें :

(1) क्या सभी धाराओं या केवल कुछ ही धाराओं को लागू किया जा सकता है अथवा नहीं और क्या हर धारा को लागू करने के लिए स्थितियां पर्याप्त रूप से अनुकूल हैं अथवा नहीं;

(2) क्या इन सत्रह धाराओं में किसी और धारा को जोड़ने की जरूरत है अथवा नहीं (ऐसी धाराओं को जोड़ा जा सकता है जिन्हें अमल में उतारा जा सके); और

(3) क्या आप इन सत्रह धाराओं को तुरन्त अपनी 1956 की योजना में सम्मिलित करके उन्हें कार्यान्वित करने के लिए तैयार हैं अथवा नहीं। कृपया 3 जनवरी 1956 तक इन समस्याओं के अध्ययन का काम पूरा कर लें और अपने सुझाव तैयार रखें।

ये सत्रह धाराएं इस प्रकार हैं :

1. जहां तक कृषि के सहकारी रूपान्तर की रफ्तार का ताल्लुक है, प्रारम्भिक स्तर की सहकारी समितियों की स्थापना का काम आम तौर पर 1956 की दूसरी छमाही तक पूरा कर लेना चाहिए, तथा प्रान्तों, म्युनिसिपलटियों और स्वायत्त प्रदेशों (सिनच्याङ को छोड़कर) के लिए यह मुनासिब होगा कि वे 75 फीसदी किसान परिवारों को सहकारी समितियों में शामिल करने का लक्ष्य निर्धारित करें तथा निचले स्तर की इकाइयों को इससे कुछ और आगे बढ़कर

* यह एक सरकुलर है, जिसका मसौदा कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किया था और जिसे पार्टी के शाखाई ब्यूरो और प्रान्तीय व स्वायत्त प्रदेशीय पार्टी-कमेटियों के पास भेजा गया था।

80 से 85 फीसदी किसान परिवारों को शामिल करने का लक्ष्य प्राप्त करने दें।

जहां तक उन्नत स्तर की सहकारी समितियों की स्थापना का सम्बन्ध है, आपको चाहिए कि 1960 तक उनकी स्थापना का काम बुनियादी तौर पर पूरा करने की भरपूर कोशिश करें या अगर हो सके तो एक साल पहले ही यानी 1959 तक उसे बुनियादी तौर पर पूरा कर लें। यह उद्देश्य पूरा करने के हेतु काउण्टियों के लिए और अगर हो सके तो जिलों के लिए यह आवश्यक है कि वह काउण्टी या हर जिले में एक या एक से ज्यादा उन्नत स्तर की बड़ी सहकारी समितियों (जिनमें से हर सहकारी समिति में 100 से अधिक परिवार हों) की स्थापना 1956 में करने तथा इसके बाद दूसरे समूह की स्थापना 1957 में करने का बीड़ा खुद उठा लें – इन दोनों समूहों में लगभग 25 फीसदी किसान परिवार शामिल हो जाने चाहिए तथा उन्हें दूसरों के लिए आदर्श बन जाना चाहिए। क्या यह सम्भव है या नहीं ? जब छोटी सहकारी समितियों को मिलाकर बड़ी सहकारी समितियों में गठित किया जाए, तो उनका आकार कितना बड़ा होना चाहिए ? एक श्याङ में कई सहकारी समितियों का होना, एक श्याङ में एक सहकारी समिति का होना अथवा एक ही सहकारी समिति का फैलाव अनेक श्याङों में होना – क्या ये तीनों ही रूप अमल में लाने योग्य हैं ? देश की कुल सहकारी समितियों के लिए कौन सी संख्या ज्यादा उपयुक्त है – 3,00,000 या 4,00,000 अथवा 5,00,000 ? सोवियत संघ में यह संख्या 1,00,000 है; क्या 3,00,000 से कुछ ज्यादा या 4,00,000 की संख्या हमारे लिए ज्यादा उपयुक्त रहेगी ? इसके अतिरिक्त कौन सा तरीका अच्छा है – सहकारी समितियों को पहले एक दूसरे के साथ मिला दिया जाए और तब उन्हें ऊंची मंजिल पर पहुंचाया जाए या उन्हें एक दूसरे के साथ मिलाने और ऊंची मंजिल पर पहुंचाने का काम साथ-साथ किया जाए, अथवा पहले उन्हें ऊंची मंजिल पर पहुंचा दिया जाए और फिर एक दूसरे के साथ मिलाया जाए ? कृपया इन सवालों पर विचार कीजिए।

2. जहां तक जमींदारों और धनी किसानों को सहकारी समितियों में शामिल करने का सवाल है, आप लोग 1956 के दौरान शायद आनह्वेइ, शानशी और हेलुङच्याङ प्रान्तों द्वारा दिए गए सुझावों पर अमल कर सकते हैं; यानी जिन लोगों का आचरण अच्छा हो उन्हें शामिल होने की इजाजत दे दें, जिन लोगों का आचरण न तो अच्छा हो और न बुरा उन्हें सहकारी समिति के सदस्य बनाए बगैर सहकारी समिति के उत्पादन में भाग लेने दें, तथा जिन लोगों का आचरण बुरा हो उन्हें सहकारी समिति के निरीक्षण में उत्पादन में शामिल होने के लिए बाध्य करें। यह तरीका वे सभी पुरानी सहकारी समितियां अपना सकती हैं जिनके कार्यकर्ता पुख्ता हैं। इसके कई फायदे हैं, हालांकि इसकी एक खामी भी है, यानी वे उच्च-मध्यम किसान जो अभी सहकारी समितियों में शामिल होने के लिए तैयार नहीं हैं, अनिवार्यतः ऐसा करने के लिए मजबूर हो जाएंगे; यही नहीं उन्हें धनी किसानों और जमींदारों से पहले सहकारी समितियों में शामिल करना पड़ेगा, जिससे उन्हें शर्मिन्दा न होना पड़े। क्या यह ठीक है या नहीं ? अथवा क्या हम ऊपर बताए गए तरीके पर अमल करना एक साल के लिए यानी 1957 तक स्थगित कर दें ? कृपया सोचिए, कौन सा विकल्प बेहतर होगा।

3. जहां तक सहकारी समिति के नेतृत्व की संरचना का सवाल है, उसके दो-तिहाई सदस्य, आज के गरीब किसानों तथा उन सभी नए निम्न-मध्यम किसानों में से लिये जाने

चाहिए जो पहले गरीब किसान थे, जबकि उसके एक-तिहाई सदस्य पुराने निम्न-मध्यम किसानों और नए व पुराने उच्च-मध्यम किसानों में से लिये जाने चाहिए।

4. उत्पादन बढ़ाने के लिए आवश्यक शर्तें : (क) कुछ बुनियादी उपायों को कार्यान्वित किया जाए (उनकी विषय-वस्तु पर विचार-विमर्श करना अभी बाकी है, और अलग-अलग जगहों के लिए कुछ भिन्नता की इजाजत दी जा सकती है); (ख) समुन्नत अनुभवों का प्रचार-प्रसार किया जाए (आदर्श सहकारी समितियों से सम्बन्धित सामग्री को हर साल जमा किया जाए और हर प्रान्त द्वारा पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाए)।

5. 1956 में हर प्रान्त, प्रिफेक्चर, काउण्टी, जिले और श्याङ को एक दीर्घकालीन चौतरफा योजना बनानी चाहिए, जिसमें सभी आवश्यक मुद्दे शामिल हों तथा काउण्टी व श्याङ की योजनाओं पर जोर दिया गया हो। साल की पहली छमाही में इस योजना का मसौदा तैयार कर लिया जाना चाहिए और दूसरी छमाही में उसे अन्तिम रूप दे दिया जाना चाहिए, तथा इसके बाद भी उसमें आवश्यक संशोधन किए जा सकेंगे। योजना कम से कम तीन साल की बनाई जाए, बेहतर यह होगा कि वह सात साल की बनाई जाए और अगर सम्भव हो तो बारह साल की भी बनाई जा सकती है। इस काम में जरा भी देरी नहीं होनी चाहिए। क्या आपने इस सम्बन्ध में कोई व्यवस्था कर ली है ? हालांकि यह भी सम्भव है कि बहुत सी योजनाएं अनुभव की कमी की वजह से काफी स्थूल रह जाएं, फिर भी आपको इस बात की भरपूर कोशिश करनी चाहिए कि कुछ काउण्टियों और श्याङों द्वारा वास्तविकता से अपेक्षाकृत अधिक मेल खाने वाली योजनाएं बनाई जाएं, जिससे उन्हें आदर्श मानने की सिफारिश की जा सके।

6. गाय-बैलों, घोड़ों, खच्चरों, गधों, सूअरों, भेड़ों, मुर्गियों और बतखों की रक्षा करने और उनकी नस्ल बढ़ाने तथा खास तौर से जानवरों के बच्चों की रक्षा करने के लिए चौतरफा योजना बनाई जाय। नस्ल बढ़ाने की योजनाओं पर विचार-विमर्श किया जाएगा, इसलिए कृपया इसके बारे में अपने सुझाव तैयार रखें।

7. नदी-घाटी योजनाओं के साथ तालमेल कायम करते हुए छोटी जल-संरक्षण परियोजनाओं का बड़े पैमाने पर निर्माण किया जाना चाहिए, ताकि साधारण बाढ़ व सूखे पर सात साल के अन्दर बुनियादी तौर पर काबू पाया जा सके।

8. सात साल के अन्दर फसलों के लिए हानिकारक कोई एक दर्जन किस्म के कीड़े-मकोड़ों तथा वनस्पति-रोगों को बुनियादी तौर पर खत्म कर दिया जाय।

9. बारह साल के अन्दर, ज्यादातर ऊसर जमीन और बंजर पहाड़ियों को उत्पादन के योग्य बना दिया जाय और जहां भी सम्भव हो एक निश्चित व्यवस्था के अनुसार वृक्षारोपण किया जाय, यानी हर घर व हर गांव के आसपास, सड़कों व जलस्रोतों के किनारे, तथा ऊसर जमीन व बंजर पहाड़ियों पर पेड़ लगाए जायं।

10. बारह साल के अन्दर अधिकांश क्षेत्रों में स्थानीय प्राधिकरण और सहकारी समितियां अपनी आवश्यकता का 90 फीसदी उर्वरक और कुछ क्षेत्रों में 100 फीसदी उर्वरक सप्लाई करने लगें।

11. बारह साल के भीतर, पीली नदी, छिनलिङ पर्वतशृंखला और पाएलुङ नदी के उत्तर में स्थित क्षेत्रों में तथा छिङहाए प्रान्त के अन्दर पीली नदी के उत्तर में स्थित क्षेत्र में अनाज की प्रति मू औसत पैदावार चार सौ चिन तक पहुंच जानी चाहिए, पीली नदी के दक्षिण में

तथा हवाए नदी के उत्तर में स्थित क्षेत्रों में पांच सौ चिन तक पहुंच जानी चाहिए, और हवाए नदी, छिनलिङ पर्वतशृंखला और पाएलुङ नदी के दक्षिण में स्थित क्षेत्रों में 800 चिन तक पहुंच जानी चाहिए। जहां तक कपास, तिलहन, सोयाबीन, रेशम, चाय, जूट, गन्ना, फल और दूसरी चीजों का सम्बन्ध है, कृपया हर चीज के उत्पादन-लक्ष्य के बारे में विचार विमर्श के लिए अपने सुझाव दें।

12. सात साल के भीतर, उन अनेक बीमारियों को बुनियादी तौर पर खत्म कर दिया जाए जो मनुष्यों व पशुओं के लिए अत्यन्त हानिकारक हैं, जैसे सिस्टोसोमियासिस, फाइलेरिया, गिल्टीदार प्लेग, मस्तिष्क-शोथ, मवेशी-प्लेग और सूअर-हैजा। कृपया इस बात का अध्ययन करें कि आपके प्रान्त या प्रदेश में, कौन सी स्थानीय-बीमारियां ऐसी हैं जिन्हें सात साल के भीतर बुनियादी तौर पर खत्म किया जा सकता है, कौन सी ऐसी बीमारियां हैं जिन्हें खत्म करने में अधिक लम्बा समय लगेगा तथा कौन सी बीमारियां ऐसी हैं जिन्हें मौजूदा स्थिति में खत्म नहीं किया जा सकता।

13. चार हानिकारक जन्तुओं का खात्मा कर दें, यानी सात साल के भीतर, चूहों (और दूसरे हानिकारक जन्तुओं), गौरैयों (और फसल को नुकसान पहुंचाने वाले दूसरे पक्षियों, ... कौवों के बारे में यह खोज करना अभी बाकी है कि उन्हें खत्म करना उचित है या नहीं), मक्खियों और मच्छरों[1] को बुनियादी तौर पर नष्ट कर दिया जाय।

14. सात साल के भीतर, साक्षरता के काम में 1,500 से 2,000 रेखाक्षरों के ज्ञान का लक्ष्य निर्धारित करते हुए निरक्षरता को बुनियादी तौर पर खत्म कर दिया जाए।

15. सात साल के भीतर, एक निश्चित व्यवस्था के अनुसार प्रान्तों, प्रिफेक्चर, काउण्टियों, जिलों और श्याङों के लिए आवश्यक विभिन्न प्रकार के मार्गों (राजमार्गों, सड़क और संकरे रास्तों) का निर्माण किया जाए।

16. सात साल के भीतर, तार प्रसारण-केन्द्रों का जाल बिछा दिया जाए, जिससे हर श्याङ और सहकारी समिति में तार प्रसारणों को सुना जा सके।

17. सात साल के भीतर सभी श्याङों और बड़ी सहकारी समितियों में टेलीफोन व्यवस्था का जाल बिछाने का काम पूरा कर लिया जाय।

कृपया ऊपर बताए गए मुद्दों के बारे में अन्य सम्बन्धित कामरेडों से विचार विमर्श करें और 3 जनवरी तक सारी तैयारी पूरी कर लें। केन्द्रीय कमेटी सम्भवत: 4 जनवरी के आसपास पहले कुछ प्रान्तीय पार्टी-कमेटियों के सचिवों की एक मीटिंग बुलाएगी, जिससे इन मामलों का कुछ दिनों तक अध्ययन किया जा सके तथा 10 जनवरी को होने वाले आगामी सम्मेलन के लिए सुझाव तैयार किए जा सकें।

नोट

[1] स्वास्थ्य कार्य से सम्बन्धित एक निदेश में, जिसका मसौदा कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए मार्च 1960 में तैयार किया था, कहा गया है ... और बात है। गौरैयों को मारना बन्द करो; इसके बदले खटमलों का सफाया करो। नारा ... चाहिए, 'चूहों, खटमलों, मक्खियों और मच्छरों का खात्मा कर दो'।"

दस्तकारी उद्योग के समाजवादी रूपान्तर की रफ्तार बढ़ाओ

5 मार्च 1956

1. मुझे लगता है कि व्यक्तिगत दस्तकारी उद्योग के समाजवादी रूपान्तर की रफ्तार जरा धीमी रही है। यह बात मैंने इस साल जनवरी में प्रान्तीय और म्युनिसिपल पार्टी-कमेटियों के सचिवों के सम्मेलन में कही थी। 1955 के अन्त तक केवल 20 लाख दस्तकारों को संगठित किया गया था। लेकिन इस साल केवल शुरू के दो महीनों में ही 30 लाख और दस्तकारों को संगठित किया जा चुका है, इसलिए यह काम इस साल मुख्य रूप से पूरा किया जा सकेगा; यह एक बहुत अच्छी बात है। आप लोग तीन पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान दस्तकारी उद्योग के कुल उत्पादन-मूल्य में औसतन 10.9 प्रतिशत वार्षिक बढ़ोतरी करने की बात सोच रहे हैं; यह बढ़ोतरी कुछ कम मालूम हो रही है। हमने पहली पंचवर्षीय योजना में अपना लक्ष्य कम रखा है, जिसके फलस्वरूप हमें कुछ नुकसान उठाना पड़ा है; अब इस लक्ष्य में परिवर्तन करने की जरूरत नहीं है, लेकिन आपको इस सम्बन्ध में अपनी ठोस स्थिति को देखते हुए निर्णय करना चाहिए।

2. जहां तक दस्तकारी सहकारी समितियों के आकार का सवाल है, आम तौर पर, एक सहकारी समिति में लगभग सौ लोगों का होना उचित होगा, हालांकि कुछ सहकारी समितियों में कई सौ लोग तथा कुछ में केवल कुछ ही दर्जन लोग भी हो सकते हैं।

3. गांवों में फेरी लगाकर कृषि-औजारों की मरम्मत करने तथा कृषि-उत्पादन की सेवा करने वाले लोहारों व बढ़इयों को सहकारी समितियों में संगठित करने का विचार बहुत अच्छा है; किसान इसका अवश्य स्वागत करेंगे। चीन के दस्तकारी उद्योग में हजारों सालों से ऐसे ही काम होता रहा है। सहकारी समितियों में संगठित होने पर दस्तकार अपने हस्तकौशल में सुधार कर सकते हैं तथा किसानों की और अच्छी तरह सेवा कर सकते हैं।

4. आपने कहा है कि दस्तकारी उद्योग के रूपान्तर के ऊंचे उभार के दौरान मरम्मत व सेवाकार्य से सम्बन्धित व्यवसायों में उत्पादन के केन्द्रीकरण की वजह से तथा बहुत से सेवा-केन्द्रों के बन्द होने की वजह से जनता असन्तुष्ट है। यह बहुत बुरी बात है! अब क्या किया जाय? "इस धरती पर सामान्य प्रवृत्ति यह है कि दीर्घकालीन विभाजन के बाद एकीकरण होना अनिवार्य है और दीर्घकालीन एकीकरण के बाद विभाजन होना अनिवार्य है।"

राज्य-परिषद के अधीन सम्बन्धित विभागों द्वारा दस्तकारी उद्योग के काम का ब्यौरा दिए जाने के अवसर पर दी गई हिदायतों का एक अंश।

5. मशीनीकृत और अर्ध-मशीनीकृत उत्पादन की अधिकतम श्रम-उत्पादकता दस्तकारी उत्पादन की न्यूनतम श्रम-उत्पादकता की तुलना में 30 गुनी से भी ज्यादा है। आधुनिकीकृत राजकीय उद्योगों का प्रति व्यक्ति वार्षिक उत्पादन-मूल्य औसतन 20,000 से 30,000 युवान तक, मशीनीकृत व अर्ध-मशीनीकृत सहकारी समितियों का 5,000 युवान, 100 से अधिक दस्तकारों वाली बड़ी सहकारी समितियों का 2,000 युवान, छोटी सहकारी समितियों का 1,500 युवान तथा व्यक्तिगत दस्तकारों का 800 से 900 युवान तक है। श्रम-उत्पादकता के अन्तर की तुलना करने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि दस्तकारी उद्योग का अर्ध-मशीनीकरण और मशीनीकरण की दिशा में विकास करना तथा श्रम-उत्पादकता को बढ़ाना आवश्यक है।

6. दस्तकारी उद्योग से सम्बन्धित सभी व्यवसाय उपयोगी योगदान करते हैं। वे खाना, कपड़ा और दैनिक उपयोग की वस्तुएं उपलब्ध कराते हैं। वे कलात्मक वस्तुएं और हस्तशिल्प-उत्पादन भी तैयार करते हैं, जैसे मीनाकारी वाली वस्तुएं अथवा ''छाङ परिवार की पांच अविवाहिताओं''[1] द्वारा बनाए गए कांच के अंगूर। इसके अलावा पेकिङ बतख को भूनने की तकनीक भी निर्यात के योग्य है। सेवाकार्य से सम्बन्धित कुछ व्यवसायों के लोग 'चाओ वाङ के बर्तनों की मरम्मत' नामक नाटक के पात्र की तरह गली-मोहल्लों और गांवों में फेरे लगाकर सब प्रकार की चीजों की मरम्मत करते हैं – ये लोग जगह-जगह घूमते रहते हैं और बहुत कुछ जानते हैं। पेकिङ के तुङश्याओ बाजार में छः हजार से ज्यादा किस्म की चीजें बिकती हैं।

ध्यान रहे, हमारे दस्तकारी उद्योग के श्रेष्ठ उत्पादनों को तिलांजलि न दी जाए। चेचक के दाग वाले वाङ की और चाङ श्याओ-छ्वेन की छुरी-कैंचियों को तिलांजलि न दी जाए, हरगिज तिलांजलि न दी जाए, आज से दस हजार साल बाद भी नहीं। हर ऐसी चीज को, जो अच्छी हो और चीन की विशेषताएं लिये हुए हो तथा जिसे पहले तिलांजलि दे दी गई हो, फिर से बहाल कर दिया जाना चाहिए तथा उसे पहले से ज्यादा बेहतर बनाया जाना चाहिए।

7. कला व हस्तशिल्प के गुण में सुधार करने तथा पुराने कुशल दस्तकारों की देखभाल करने का विचार अच्छा है। यह काम अभी से शुरू कर देना चाहिए और इसकी रफ्तार बढ़ा देनी चाहिए। इस सिलसिले में आप लोग संगठनों की स्थापना करने, स्कूल खोलने और सभा बुलाने का काम कर सकते हैं। हाथीदांत तराशने वाले शिल्पी याङ श-हवेङ वास्तव में एक मंजे हुए कलाकार हैं। एक बार उन्होंने और मैंने एक ही मेज पर खाना खाया था। मुझे देखकर उन्होंने मेरी प्रतिमा हाथीदांत पर तराश डाली। अगर मैं उन्हें कई दिनों तक देखता रहता, तो भी उनका चित्र शायद ही बना पाता।

8. राज्य द्वारा सहकारी समितियों को आवंटित साज-सामान और कच्चे माल के दाम युक्तियुक्त ढंग से निर्धारित किए जाने चाहिए तथा उन्हें सामान्य आवंटन-मूल्य के आधार पर निर्धारित नहीं किया जाना चाहिए। सहकारी समितियां राजकीय कारोबारों की तरह नहीं होतीं, और समाजवादी सामूहिक मिलकियत तथा समूची जनता की समाजवादी मिलकियत के बीच फर्क है। आरम्भ में सहकारी समितियों की आर्थिक बुनियाद ज्यादा मजबूत नहीं होती और उन्हें राज्य की सहायता की आवश्यकता होती है। यह एक अच्छा विचार है कि राज्य द्वारा उन पुरानी मशीनों को जिनकी जगह नई मशीनें लगाई गई हैं, तथा साथ ही उन मशीनों को और कारखानों की इमारतों को जो निजी कारखानों को संयुक्त राजकीय-निजी प्रबन्ध के अन्तर्गत एक दूसरे के साथ मिलाए जाने के परिणामस्वरूप फालतू हो गई हैं, कम दाम पर सहकारी समितियों को आवंटित कर दिया जाए। ''लेने के लिए पहले देना आवश्यक है''। जब सहकारी समितियों की बुनियाद काफी मजबूत हो जाएगी, तो राज्य उनसे ज्यादा टैक्स वसूल करेगा तथा कच्चे माल के दाम भी बढ़ा देगा। उस समय तक सहकारी समितियों की मिलकियत ऊपर से देखने पर सामूहिक होते हुए भी वास्तव में समूची जनता की हो जाएगी।

राज्य को चाहिए कि वह अर्ध-मशीनीकरण और मशीनीकरण में सहकारी समितियों की मदद करे और उन्हें स्वयं भी चाहिए कि वे इस लक्ष्य पर पहुंचने की कोशिश करें। जितनी तेजी से मशीनीकरण होता जाएगा, उतनी ही आपकी दस्तकारी सहकारी समितियों की जिन्दगी कम होती जाएगी। जितना ज्यादा आपका ''राज्य'' सिकुड़ता जाएगा, उतना ही ज्यादा हमारा मुश्तरका कार्य बेहतर होता जाएगा। आपको चाहिए कि मशीनीकरण जल्दी से जल्दी करने की कोशिश करें तथा राज्य के लिए अधिकाधिक योगदान करें।

9. जब दस्तकारी उद्योग का उत्पादन-मूल्य देश के कुल औद्योगिक उत्पादन-मूल्य का एक चौथाई भाग है, तो दस्तकारी उद्योग के लिए कच्चे माल की सप्लाई को और साथ ही उसके उत्पादन व विक्रय को राजकीय योजना का अंग क्यों नहीं बना दिया जाता ? दस्तकारी उद्योग का अंश इतना विशाल है कि उसे राजकीय योजना में अवश्य शामिल कर दिया जाना चाहिए।

10. कुछ जगहों पर पार्टी-कमेटियां दूसरे कामों में इतनी व्यस्त हैं कि उन्होंने दस्तकारी उद्योग को अपनी कार्यसूची में कतई नहीं रखा है; यह एक अच्छी बात नहीं है। कुछ कार्यकर्ता यह काम अपने हाथ में लेने से न जाने क्यों कतराते हैं ? मैं तो यह काम करना चाहता हूं, क्योंकि यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण काम है।

11. आपको चाहिए कि साठ हजार से ज्यादा दस्तकारी सहकारी समितियों में से कुछ मिसालें नमूने के तौर पर चुन लें और उनके विशिष्ट अनुभवों से सम्बन्धित सामग्री का संकलन करें, हर इलाके और व्यवसाय से मिसालें चुन लेनी चाहिए, तथा उनमें अच्छी और बुरी, छोटी और बड़ी, केन्द्रित और बिखरी हुई तथा साथ ही अर्ध-मशीनीकृत और मशीनीकृत सहकारी समितियों की मिसालें शामिल कर लेनी चाहिए। उन्हें 'चीन के देहातों में समाजवादी उभार' जैसी पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाना चाहिए।

नोट

[1] यहां पेकिङ के कुशल दस्तकार छाङ के परिवार की उन पांच अविवाहिताओं का उल्लेख किया गया है जो कांच के अंगूर बनाने के लिए मशहूर थीं।

दस मुख्य सम्बन्धों के बारे में

25 अप्रैल 1956

हाल के कुछ महीनों में, केन्द्रीय कमेटी के राजनीतिक ब्यूरो ने केन्द्रीय प्राधिकरणों के अन्तर्गत काम करने वाले चौंतीस विभागों के काम के बारे में, जिनमें उद्योग, कृषि, परिवहन, वाणिज्य, वित्त तथा अन्य विभाग शामिल हैं, रिपोर्टें सुनी हैं और इन रिपोर्टों के आधार पर समाजवादी निर्माण और समाजवादी रूपान्तर के कार्य से सम्बन्धित अनेक समस्याओं का पता लगा लिया है। ये समस्याएं कुल मिलाकर दस समस्याओं के रूप में या दस मुख्य सम्बन्धों के रूप में सामने आती हैं।

इन दस समस्याओं को एक बुनियादी नीति पर, अन्दरूनी और बाहरी सभी प्रकार के सकारात्मक तत्वों को गोलबन्द करने की बुनियादी नीति पर, ध्यान केन्द्रित करने के लिए ही उठाया जा रहा है, ताकि समाजवाद के कार्य की सेवा की जा सके। अतीत काल में, साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाह-पूंजीवाद के शासन को समाप्त करने के लिए और जनता की जनवादी क्रान्ति में विजय प्राप्त करने के लिए हमने सभी सकारात्मक तत्वों को गोलबन्द करने की इसी नीति का अनुसरण किया था। और अब हम समाजवादी क्रान्ति को चलाने के लिए तथा एक समाजवादी देश का निर्माण करने के लिए इसी नीति का अनुसरण कर रहे हैं। फिर भी, हमारे काम से सम्बन्धित कुछ समस्याएं ऐसी हैं, जिनके बारे में विचार-विमर्श करना जरूरी है। विशेष रूप से ध्यान देने योग्य बात यह है कि हाल ही में सोवियत संघ में कुछ ऐसी खामियां और गलतियां प्रकाश में आई हैं जो उस देश में समाजवाद का निर्माण करने के दौरान की गई थीं। क्या आप लोग भी उन्हीं चक्करदार रास्तों पर चलना चाहते हैं जिन पर वे लोग चले हैं ? उनके अनुभवों से सबक सीखकर ही हम अतीत काल में कुछ चक्करदार रास्तों से बच सके थे, और आज ऐसा करना हमारे लिए और भी ज्यादा जरूरी हो गया है।

आखिर अन्दरूनी और बाहरी सकारात्मक तत्व कौन-कौन से हैं ? अन्दरूनी तौर पर मजदूर और किसान हमारी बुनियादी शक्ति हैं। मध्यवर्ती शक्तियां इस प्रकार की शक्तियां हैं

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के राजनीतिक ब्यूरो के विस्तृत अधिवेशन में भाषण। सोवियत संघ के अनुभवों से हासिल होने वाले सबक को ध्यान में रखते हुए इस भाषण में कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीन के अनुभवों का निचोड़ निकाला, समाजवादी क्रान्ति व समाजवादी निर्माण के बारे में दस मुख्य सम्बन्धों की चर्चा की तथा ज्यादा से ज्यादा, जल्दी से जल्दी, अच्छे से अच्छे और कम से कम खर्च में समाजवाद का निर्माण करने की आम कार्यदिशा में, एक ऐसी कार्यदिशा में जो हमारे देश की परिस्थितियों के अनुकूल है, समाविष्ट बुनियादी विचारों का प्रतिपादन किया।

जिन्हें अपने पक्ष में किया जा सकता है। प्रतिक्रियावादी शक्तियां एक नकारात्मक तत्व हैं, तो भी हमें अपना काम अच्छी तरह करना चाहिए और जहां तक सम्भव हो इस नकारात्मक तत्व को एक सकारात्मक तत्व में बदल देना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में, उन तमाम शक्तियों के साथ एकता कायम की जानी चाहिए जिनके साथ एकता कायम की जा सकती है, जो शक्तियां तटस्थ नहीं हैं उन्हें अपने प्रयत्नों द्वारा तटस्थ बनाया जा सकता है, यहां तक कि प्रतिक्रियावादी शक्तियों को भी विभाजित किया जा सकता है और उनका भी इस्तेमाल किया जा सकता है। संक्षेप में, हमें प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष, सभी प्रकार की शक्तियों को गोलबन्द करना चाहिए और चीन को एक शक्तिशाली समाजवादी देश बनाने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

अब मैं इन दस समस्याओं के बारे में चर्चा करूंगा।

1. एक पक्ष में भारी उद्योग और दूसरे पक्ष में हल्के उद्योग व कृषि के बीच के सम्बन्ध

हमारे देश के निर्माण में भारी उद्योग पर जोर दिया जाता है। उत्पादन के साधनों के निर्माण के काम को प्राथमिकता देनी जरूरी है, यह बात बिलकुल तय है। लेकिन इसका यह मतलब हर्गिज नहीं कि जीवन-निर्वाह के साधनों, विशेष रूप से अनाज के उत्पादन की उपेक्षा की जा सकती है। पर्याप्त खाद्य-पदार्थों और दैनिक आवश्यकता की अन्य वस्तुओं के बिना पहली बात तो यह है कि मजदूरों का भरण-पोषण करना सम्भव न होगा, और ऐसी स्थिति में भारी उद्योग के विकास की बात करने का भला क्या अर्थ रह जाता है ? इसलिए, एक पक्ष में भारी उद्योग और दूसरे पक्ष में हल्के उद्योग व कृषि के बीच के सम्बन्धों के मसले को उचित ढंग से निपटाया जाना जरूरी है।

इस मसले को निपटाने में हमने उसूल सम्बन्धी गलतियां नहीं की हैं। इस क्षेत्र में हमारा काम सोवियत संघ और पूर्वी योरप के अनेक देशों की तुलना में बेहतर ही रहा है। अक्तूबर क्रान्ति से पहले के अनाज-उत्पादन के उच्चतम स्तर तक न पहुंच पाने की सोवियत संघ की दीर्घकालीन असफलता, पूर्वी योरप के कुछ देशों में भारी उद्योग के विकास और हल्के उद्योग के विकास के बीच भारी असन्तुलन से उत्पन्न गम्भीर समस्याएं – ये सब ऐसी समस्याएं हैं जो हमारे देश में विद्यमान नहीं हैं। इन देशों में कृषि और हल्के उद्योग की उपेक्षा करके भारी उद्योग पर एकतरफा ढंग से ज्यादा जोर दिए जाने के परिणामस्वरूप बाजारों में माल की कमी बनी रहती है तथा उनकी मुद्रा अस्थिर रहती है। दूसरी तरफ, हम कृषि और हल्के उद्योग को अपेक्षाकृत अधिक महत्व देते हैं। हम हमेशा से ही कृषि की ओर ध्यान देते आए हैं और उसका विकास करते रहे हैं। हमने औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक अनाज व कच्चे माल की सप्लाई की काफी हद तक गारण्टी कर दी है। हमारे यहां दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं अपेक्षाकृत प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं तथा चीजों के दाम और मुद्रा दोनों स्थिर हैं।

जो समस्या हमारे सामने इस समय मौजूद है वह है एक तरफ भारी उद्योग में तथा दूसरी तरफ कृषि व हल्के उद्योग इन दोनों में किए जाने वाले पूंजी निवेश के अनुपात में लगातार उचित सामंजस्य कायम करते रहना, ताकि कृषि और हल्के उद्योग का पहले से और ज्यादा

विकास किया जा सके। लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि भारी उद्योग की प्राथमिकता अब समाप्त हो गई है ? नहीं, ऐसा नहीं है, बल्कि उसकी प्राथमिकता अब भी कायम है। पूंजी-निवेश के मामले में हमारे द्वारा ज्यादा जोर अब भी भारी उद्योग पर ही दिया जाता रहेगा, किन्तु कृषि व हल्के उद्योग में किए जाने वाले पूंजी-निवेश के अनुपात में थोड़ी-बहुत वृद्धि करना अब जरूरी हो गया है।

इस वृद्धि के नतीजे क्या होंगे ? इसका पहला नतीजा यह होगा कि जनता की दैनिक आवश्यकताओं की पहले से अधिक पूर्ति हो सकेगी, दूसरा नतीजा यह होगा कि पूंजी के संचय की रफ्तार को बढ़ाया जा सकेगा, और इस प्रकार हम अपने भारी उद्योग का ज्यादा से ज्यादा और अच्छे से अच्छे नतीजे हासिल करते हुए विकास कर सकेंगे। भारी उद्योग के जरिए भी पूंजी का संचय सम्भव है, लेकिन हमारी मौजूदा आर्थिक परिस्थितियों को देखते हुए अपेक्षाकृत ज्यादा मात्रा में तथा अपेक्षाकृत ज्यादा तेज रफ्तार से पूंजी का संचय हल्के उद्योग व कृषि के जरिए ही सम्भव है।

अब यहां एक प्रश्न यह उठ खड़ा होता है : क्या भारी उद्योग का विकास करने की आपकी ख्वाहिश सच्ची है या बनावटी, जोरदार है या मामूली ? यदि आपकी ख्वाहिश केवल बनावटी या मामूली है, तो आप कृषि व हल्के उद्योग को नुकसान पहुंचाएंगे तथा इन धन्धों में कम पूंजी लगाएंगे। यदि आपके अन्दर एक सच्ची और जोरदार ख्वाहिश मौजूद है तो आप कृषि व हल्के उद्योग को ज्यादा महत्त्व देंगे, ताकि पहले से अधिक अनाज और हल्के उद्योग के काम आने वाला कच्चा माल प्राप्त किया जा सके तथा पहले से अधिक पूंजी जमा की जा सके और ऐसा होने पर भविष्य में भारी उद्योग के लिए पहले से अधिक धनराशि जुटाई जा सकेगी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारी उद्योग के विकास के बारे में हमारे सामने दो उपाय मौजूद हैं : पहला उपाय है कृषि व हल्के उद्योग का अपेक्षाकृत कम विकास करना, तथा दूसरा उपाय है उनका अपेक्षाकृत ज्यादा विकास करना। दूरदृष्टि से देखा जाए तो पहला उपाय अपनाने का नतीजा यह होगा कि आगे चलकर भारी उद्योग का अपेक्षाकृत कम विकास होगा और उसकी रफ्तार अपेक्षाकृत धीमी रहेगी, या कम से कम उसकी बुनियाद उतनी पुख्ता नहीं बन पाएगी, और अगली कुछ दशाब्दियों के बाद हिसाब लगाकर देखा जाएगा तो यह उपाय हमारे लिए लाभकारी सिद्ध नहीं होगा। इसके विपरीत दूसरा उपाय अपनाने से भारी उद्योग का अपेक्षाकृत अधिक विकास होगा तथा उसकी रफ्तार भी अपेक्षाकृत तेज रहेगी, और चूंकि इस उपाय से जनता के जीवन की आवश्यकताओं की गारण्टी हो जाती है इसलिए इससे भारी उद्योग के विकास की बुनियाद ज्यादा पुख्ता हो जाएगी।

2. तटवर्ती इलाकों में स्थित उद्योगों तथा भीतरी इलाकों में स्थित उद्योगों के बीच के सम्बन्ध

अतीत काल में, हमारे उद्योग समुद्रतटवर्ती इलाकों में केन्द्रित रहे हैं। समुद्र तटवर्ती इलाकों से हमारा मतलब है ल्याओनिङ, हपे, पेकिङ, थ्येनचिन, पूर्वी हनान, शानतुङ,

आनहवेइ, च्याङसू, शांघाई, चच्याङ, फूच्येन, क्वाङतुङ और क्वाङशी के इलाके। भारी और हल्के उद्योग सहित हमारे समूचे उद्योग का लगभग 70 प्रतिशत भाग समुद्रतटवर्ती इलाकों में फैला हुआ है और केवल 30 प्रतिशत भाग ही भीतरी इलाकों में स्थित है। यह असंगत स्थिति इतिहास की देन है। समुद्रतटवर्ती औद्योगिक केन्द्रों का पूरी तरह इस्तेमाल किया जाना चाहिए, लेकिन उद्योगों के विकास के दौरान उनके वितरण में सन्तुलन लाने के लिए यह भी जरूरी है कि भीतरी इलाकों में उद्योग के विकास को भरपूर बढ़ावा दिया जाए। इन दो प्रकार के इलाकों के उद्योगों के बीच के सम्बन्धों को लेकर हमने कोई बड़ी गलती नहीं की है। फिर भी, हाल के कुछ वर्षों में हम अपने समुद्रतटवर्ती उद्योगों के महत्त्व को कुछ हद तक कम करके आंकते रहे हैं तथा उनके विकास की ओर हमने बहुत अधिक ध्यान नहीं दिया है। इस स्थिति को बदलना जरूरी है।

कुछ समय पहले तक कोरिया में लड़ाई चल रही थी और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति काफी तनावपूर्ण थी; इसका प्रभाव समुद्रतटवर्ती उद्योगों के प्रति हमारे रवैये पर पड़ना स्वाभाविक ही था। लेकिन अब ऐसा नहीं लगता कि निकट भविष्य में चीन के विरुद्ध कोई नया आक्रमणकारी युद्ध या एक नया विश्वयुद्ध छिड़ने जा रहा है, बल्कि सम्भावना इस बात की है कि एक दशाब्दी या इससे कुछ अधिक समय तक शान्ति बनी रहेगी। इसलिए यदि हम अब भी अपने समुद्रतटवर्ती उद्योगों की संयंत्र-क्षमता और तकनीकी शक्ति का पूरी तरह इस्तेमाल नहीं कर पाते, तो यह एक गलत बात होगी। दस वर्षों की बात तो जाने दीजिए, अगर हमें केवल पांच वर्ष का समय ही मिल जाए, तो भी हमें कठोर परिश्रम करते हुए चार वर्षों तक तो समुद्रतटवर्ती इलाकों के उद्योगों का विकास करना चाहिए और पांचवें वर्ष युद्ध भड़क उठने की स्थिति में उन लोगों को वहां से स्थानान्तरित कर देना चाहिए। प्राप्त जानकारी के अनुसार, हल्के उद्योग के क्षेत्र में एक कारखाने का निर्माण और उसके द्वारा पूंजी-संचय आम तौर पर काफी जल्दी हो जाता है। समूचे कारखाने में उत्पादन-प्रक्रिया शुरू हो जाने के बाद वह चार वर्षों में इतनी कमाई कर सकता है कि उससे अपनी खुद की पूंजीगत लागत की पूर्ति करने के साथ-साथ तीन नए कारखानों, या दो या एक या कम से कम आधे कारखाने का निर्माण तो कर ही सकता है। हम इस तरह के लाभप्रद कार्य क्यों न करें ? यह सोचना कि परमाणु बम बस हमारे सिर पर मंडरा रहा है और कुछ ही क्षणों में हमारे ऊपर गिरने वाला है, एक ऐसा अनुमान है जो वास्तविकता से मेल नहीं खाता, और ऐसे अनुमान को आधार बनाकर समुद्रतटवर्ती उद्योगों के प्रति एक नकारात्मक रवैया अपनाना गलत होगा।

लेकिन इसका मतलब यह हरगिज नहीं कि सभी नए कारखाने समुद्रतटवर्ती इलाकों में ही बनाए जायं। निस्सन्देह, अधिकांश नए उद्योग-धन्धे भीतरी इलाकों में ही स्थापित किए जाने चाहिए, ताकि उद्योगों के वितरण में कदम-ब-कदम सन्तुलन लाया जा सके; इसके अलावा युद्ध के खिलाफ हमारी तैयारियों को मजबूत बनाने में भी यह सहायक सिद्ध होगा। फिर भी अनेक नई फैक्टरियां व खानें, जिनमें बड़ी फैक्टरियां व खानें शामिल हैं, समुद्रतटवर्ती इलाकों में कायम की जा सकती हैं। जहां तक समुद्रतटवर्ती इलाकों में पहले से ही कायम हल्के और भारी उद्योगों के विस्तार और पुनर्निर्माण का प्रश्न है, इस दिशा में हम पहले ही काफी काम कर चुके हैं और भविष्य में और अधिक करते रहेंगे।

समुद्रतटवर्ती इलाकों में स्थित पुराने उद्योगों की उत्पादन-क्षमता का समुचित उपयोग व विकास करके हम भीतरी इलाकों के उद्योगों को बढ़ावा देने तथा सहायता प्रदान करने की दृष्टि से पहले से कहीं अधिक मजबूत स्थिति में पहुंच जाएंगे। इस बारे में नकारात्मक रवैया अपनाने से भीतरी इलाकों में उद्योग के तीव्र विकास में रुकावटें पैदा हो जाएंगी। इसलिए यह सवाल भी एक इसी तरह का सवाल है कि भीतरी इलाकों में उद्योगों का विकास करने की हमारी ख्वाहिश सच्ची है अथवा नहीं। अगर यह सच्ची है, बनावटी नहीं, तो यह जरूरी है कि हम समुद्रतटवर्ती इलाकों के उद्योगों को, खास तौर से हल्के उद्योगों को, ज्यादा सक्रिय रूप से उपयोग में लाएं और बढ़ावा दें।

3. आर्थिक निर्माण और प्रतिरक्षा सम्बन्धी निर्माण के बीच के सम्बन्ध

राष्ट्रीय प्रतिरक्षा का कार्य एक अत्यावश्यक कार्य है। हमारी प्रतिरक्षा-क्षमता अब एक निश्चित स्तर तक पहुंच चुकी है। अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने के युद्ध के परिणामस्वरूप और कई वर्षों के प्रशिक्षण और सुदृढ़ीकरण के परिणामस्वरूप, हमारी सशस्त्र सेनाएं पहले से अधिक शक्तिशाली बन गई हैं और इस समय वे द्वितीय विश्वयुद्ध से पहले की सोवियत लाल सेना से भी ज्यादा शक्तिशाली हैं; इसके साथ-साथ हमारे अस्त्र-शस्त्रों में भी सुधार हुआ है। हमारे प्रतिरक्षा उद्योग का निर्माण किया जा रहा है। जबसे फान कू ने धरती और आकाश को एक दूसरे से अलग किया, हम विमानों और मोटर-गाड़ियों का उत्पादन करने की स्थिति में कभी नहीं पहुंच सके, लेकिन अब हमने उनका उत्पादन शुरू कर दिया है।

परमाणु बम अब भी हमारे पास नहीं है। लेकिन अतीत में हमारे पास हवाई जहाज व तोपें भी तो नहीं थीं। तो भी सिर्फ कोदों और बन्दूक के योग पर निर्भर रहकर ही हमने जापानी साम्राज्यवादियों और च्याङ काई-शेक को शिकस्त दे दी। अब हम पहले की अपेक्षा कहीं अधिक शक्तिशाली हैं तथा भविष्य में और भी अधिक शक्तिशाली बनते जाएंगे। हमारे पास न सिर्फ और ज्यादा संख्या में हवाईजहाज व तोपें होंगी बल्कि परमाणु बम भी होंगे। आज की दुनिया में अगर हम यह चाहते हैं कि हम पर कोई धौंस न जमाए, तो परमाणु बम के बिना हमारा काम हरगिज नहीं चल सकता। तब फिर इस सम्बन्ध में क्या किया जाना चाहिए ? एक विश्वसनीय तरीका यह है कि सैनिक और प्रशासनिक खर्चों में उचित अनुपात में कटौती करके आर्थिक निर्माण पर होने वाले व्यय में वृद्धि की जाए। आर्थिक निर्माण के विकास की रफ्तार को तेज करके ही प्रतिरक्षा सम्बन्धी निर्माण में पहले से ज्यादा प्रगति की जा सकती है।

हम अपनी पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी के 1950 में आयोजित तीसरे पूर्ण अधिवेशन में, राज्य के ढांचे को चुस्त-दुरुस्त बनाने और सैनिक तथा प्रशासनिक खर्चों में कटौती करने के सवाल को उठा चुके हैं और यह राय कायम कर चुके हैं कि यह उपाय हमारी वित्तीय व आर्थिक स्थिति को बुनियादी रूप से बेहतरी की ओर मोड़ने के लिए जरूरी तीन पूर्वशर्तों में से एक है। पहली पंचवर्षीय योजना की अवधि में, सैनिक तथा प्रशासनिक मदों पर होने

वाला व्यय हमारे राजकीय बजट के कुल व्यय का 30 प्रतिशत था। यह अनुपात बहुत अधिक है। दूसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में, हमें इस व्यय को घटाकर 20 प्रतिशत के आसपास लाना है, ताकि और अधिक कारखानों के निर्माण तथा और अधिक मशीनों के उत्पादन के लिए पहले से ज्यादा धनराशि जुटाई जा सके। कुछ समय बाद, हमारे पास न सिर्फ पर्याप्त संख्या में हवाईजहाज व तोपें हो जाएंगी, बल्कि सम्भवतः अपने खुद के परमाणु बम भी हो जाएंगे।

यहां फिर वही सवाल पैदा होता है : क्या परमाणु बम के लिए आपकी ख्वाहिश सच्ची और बहुत जोरदार है ? या कि इस बारे में आप की ख्वाहिश महज हल्की-फुल्की है और आप इसके लिए बहुत अधिक ख्वाहिशमन्द नहीं हैं ? अगर आपकी यह ख्वाहिश सच्ची और बहुत जोरदार है, तो फिर आप सैनिक और प्रशासनिक खर्चों के अनुपात में कमी कर देंगे तथा आर्थिक निर्माण पर होने वाले व्यय में वृद्धि कर देंगे। लेकिन अगर आपकी ख्वाहिश सच्ची नहीं और आप इसके लिए बहुत अधिक ख्वाहिशमन्द नहीं हैं, तो आप फिर पुरानी लीक पर ही चलते रहेंगे। यह एक रणनीतिक उसूल का मसला है, और मुझे उम्मीद है कि फौजी कमीशन इस पर विचार-विमर्श करेगा।

क्या यह उचित होगा कि अब हम अपनी तमाम फौजों को भंग कर दें ? नहीं, यह उचित नहीं होगा। कारण, हमारे दुश्मन अब भी मौजूद हैं, और वे हम पर धौंस जमा रहे हैं और हमें घेरे हुए हैं। हमें अपनी राष्ट्रीय प्रतिरक्षा को मजबूत बनाना होगा, और इस उद्देश्य से हमें सबसे पहले अपने आर्थिक निर्माण के कार्य को सुदृढ़ करना है।

4. राज्य, उत्पादन की इकाइयों तथा उत्पादकों के बीच के सम्बन्ध

एक पक्ष में राज्य और दूसरे पक्ष में कारखानों व कृषि सहकारी समितियों के बीच के सम्बन्धों तथा एक पक्ष में कारखानों व कृषि सहकारी समितियों और दूसरे पक्ष में उत्पादकों के बीच के सम्बन्धों – इन दोनों ही प्रकार के सम्बन्धों के मसले को सही ढंग से निपटाया जाना चाहिए। ऐसा करने के लिए यह निहायत जरूरी है कि हम केवल एक पक्ष को नहीं, बल्कि तीनों ही पक्षों को, यानी राज्य, समुदाय और व्यक्ति को ध्यान में रखें, या, जैसा कि हम कहा करते थे, "सेना और जनता इन दोनों को ही ध्यान में रखा जाए" तथा "सार्वजनिक हित और व्यक्तिगत हित इन दोनों को ही ध्यान में रखा जाए"। सोवियत संघ के अनुभवों और खुद हमारे अनुभवों को देखते हुए इस बात पर ध्यान देना जरूरी है कि अब से हम इस समस्या को बेहतर ढंग से हल करें।

मिसाल के तौर पर, मजदूरों को ही लीजिए। जैसे-जैसे उनकी श्रम-उत्पादकता बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे उनके काम की स्थितियों और सामूहिक कल्याण में भी कदम-ब-कदम सुधार होना चाहिए। हम हमेशा से ही सादा जीवन और कठोर परिश्रम के हिमायती रहे हैं और व्यक्तिगत भौतिक सुख-सुविधाओं को बाकी तमाम बातों की तुलना में सर्वोपरि रखने के विरोधी रहे हैं; साथ ही, हम हमेशा से ही जन-समुदाय की जीवन-स्थिति का खयाल रखने

की हिमायत करते रहे हैं तथा नौकरशाही का विरोध करते रहे हैं, जो जन-समुदाय के कल्याण के प्रति अन्यमनस्कता का रवैया अपनाती है। हमारी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के सर्वांगीण विकास के साथ साथ, तनखाहों को भी समुचित रूप से व्यवस्थित करते रहना चाहिए। हाल में हमने कुछ हद तक तनखाहें बढ़ाने का, मुख्य रूप से निचले स्तर पर काम करने वालों की तनखाहें, मजदूरों की तनखाहें बढ़ाने का फैसला किया है, ताकि उनके और ऊपर के कर्मचारियों के बीच तनखाहों के अन्तर को कम किया जा सके। आम तौर पर कहा जा सकता है कि हमारे यहां की तनखाहें अब भी ऊंची नहीं हैं, लेकिन अतीत की तुलना में हमारे मजदूरों के जीवन में काफी सुधार हुआ है, क्योंकि अन्य बातों के अलावा, अब पहले से ज्यादा लोग रोजगार में लगे हुए हैं तथा कीमतें कम व स्थिर हैं। सर्वहारा वर्ग के शासन के अन्तर्गत हमारे मजदूरों ने हमेशा से ही ऊंची राजनीतिक चेतना का और श्रम के प्रति जबरदस्त उत्साह का परिचय दिया है। पिछले साल के अन्त में जब केन्द्रीय कमेटी ने दक्षिणपंथी रूढ़िवाद के विरुद्ध संघर्ष का आवाहन किया, तो मजदूरों के समुदाय ने बड़े जोश के साथ उस पर अमल किया और एक अभूतपूर्व काम यह किया कि तीन महीने भरपूर शक्ति से काम करके इस साल की पहली तिमाही की योजना के लक्ष्यों की अतिपूर्ति कर ली। कठोर परिश्रम करने के इस जोश को हमें बढ़ावा देना चाहिए और साथ ही उनके काम व दैनिक जीवन से सम्बन्धित अत्यावश्यक समस्याओं को हल करने की ओर भी पहले से और ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

यहां मैं एकीकृत नेतृत्व के अन्तर्गत कारखानों की स्वतंत्रता के प्रश्न पर भी कुछ कहना चाहूंगा। मेरे खयाल में यह बात शायद उचित नहीं है कि कारखानों से सम्बन्धित हर मामले का फैसला केन्द्रीय प्राधिकरणों, अथवा प्रान्तीय और म्युनिसिपल प्राधिकरणों द्वारा किया जाए और कारखानों के पास उनका खुद का कोई प्राधिकार ही न रहे, उनके स्वतंत्र रूप से काम करने की कोई गुंजाइश ही न रहे, उन्हें कोई लाभ ही न प्राप्त हो। हमें केन्द्रीय प्राधिकरणों, प्रान्तीय व म्युनिसिपल प्राधिकरणों तथा कारखानों के बीच प्राधिकारों व मुनाफों का उचित बंटवारा करने के बारे में ज्यादा अनुभव नहीं है, और इस विषय में कुछ और अध्ययन करना चाहिए। जहां तक उसूल की बात है, केन्द्रीकरण और स्वतंत्रता ये दोनों दो परस्पर विरोधी पहलुओं की एकता के द्योतक हैं तथा केन्द्रीकरण और स्वतंत्रता दोनों ही का होना जरूरी है। मिसाल के तौर पर, हम लोग इस समय एक मीटिंग कर रहे हैं, यह केन्द्रीकरण का पहलू है; मीटिंग के बाद, हममें से कुछ लोग टहलने चले जाएंगे, कुछ लोग किताबें पढ़ने में लग जाएंगे और कुछ लोग भोजन करने चले जाएंगे, यह स्वतंत्रता का पहलू है। अगर हम मीटिंग को स्थगित न करें और हरेक को थोड़ी बहुत स्वतंत्रता न दें, बल्कि मीटिंग को लगातार जारी रखें, तो फिर इसका मतलब क्या हम सबकी मौत नहीं है ? यह बात जहां व्यक्तियों के बारे में सच है वहां कारखानों तथा उत्पादन की अन्य इकाइयों के बारे में भी उतनी ही सच है। यदि उत्पादन की प्रत्येक इकाई को और ज्यादा जोरदार ढंग से अपना विकास करना है तो उसे केन्द्रीकरण के साथ-साथ स्वतंत्रता का भी उपभोग करना चाहिए।

अब किसानों की बात को लें। किसानों के साथ हमारे सम्बन्ध हमेशा से ही अच्छे रहे हैं, लेकिन अनाज के सवाल को लेकर हम एक गलती कर चुके हैं। 1954 में बाढ़ की वजह से हमारे देश के कुछ इलाकों में उत्पादन कम हुआ, फिर भी उस साल हमने 700 करोड़

चिन अनाज ज्यादा खरीदा। उत्पादन में गिरावट और खरीद में बढ़ोतरी – इसका नतीजा यह हुआ कि विगत वसन्त में अनेक स्थानों पर अनाज का मसला लगभग हर आदमी की जबान पर था और लगभग प्रत्येक परिवार अनाज की खरीद-फरोख्त के राजकीय एकाधिकार की ही बात करता था। किसान असन्तुष्ट हो गए और पार्टी के भीतर और बाहर बहुत सी शिकायतें आने लगीं। यद्यपि कई लोगों ने जानबूझ कर मामले को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया और हम पर प्रहार करने के लिए मौके का फायदा उठाया, तो भी ऐसा नहीं कहा जा सकता कि हमारे काम में कोई कमी ही नहीं थी। पर्याप्त जांच-पड़ताल के अभाव में और स्थिति का सही जायजा न लिये जाने के परिणामस्वरूप 700 करोड़ चिन अनाज ज्यादा खरीद लिया गया – यह एक कमी थी। इस कमी का पता चल जाने पर हमने 1955 में 700 करोड़ चिन अनाज कम खरीदा और अनाज के उत्पादन का तथा अनाज की खरीद व बिक्री का कोटा निश्चित करने की व्यवस्था लागू कर दी, और इसके साथ ही उस साल फसल भी बढ़िया हुई। अनाज की खरीद में कमी और पैदावार में बढ़ोतरी के परिणामस्वरूप किसानों के हाथ में पहले के मुकाबले 2,000 करोड़ चिन ज्यादा अनाज आ गया। इस प्रकार अतीत में शिकायत करने वाले किसान भी कहने लगे कि "कम्युनिस्ट पार्टी सचमुच बहुत अच्छी है" समूची कम्युनिस्ट पार्टी को यह सबक याद रखना चाहिए।

सोवियत संघ ने कुछ ऐसे कदम उठाए हैं जो किसानों को बहुत ज्यादा निचोड़ लेते हैं। तथाकथित अनिवार्य बिक्री की व्यवस्था और अन्य उपायों के जरिए, वहां किसानों से बहुत कम कीमत पर बहुत ज्यादा पैदावार ले ली जाती है। पूंजी-संचय के इस तरीके के कारण उत्पादन के प्रति वहां के किसानों का उत्साह काफी ठण्डा पड़ गया है। आप चाहते तो हैं कि मुर्गी अंडे ज्यादा दे लेकिन उसे दाना नहीं चुगने देते, आप चाहते तो हैं कि घोड़ा तेज दौड़े लेकिन उसे घास नहीं चरने देते। कितनी बेहूदा बात है।

किसानों के प्रति हमारी नीति सोवियत संघ की नीति से भिन्न है तथा उसमें राज्य और किसान दोनों के ही हितों को ध्यान में रखा जाता है। हमारे यहां कृषि-टैक्स की दरें हमेशा ही अपेक्षाकृत कम रही हैं। औद्योगिक उत्पादनों और कृषि-उत्पादनों के विनिमय में, हम उनकी कीमतों के कैंचीनुमा अन्तर को कम करने की नीति का अनुसरण करते हैं, जो कि समान मूल्यों या लगभग समान मूल्यों का विनिमय करने की नीति है। राज्य द्वारा कृषि-उत्पादनों की खरीद प्रतिमानित कीमतों पर की जाती है और किसानों को कोई नुकसान नहीं उठाना पड़ता; यही नहीं, हमारे यहां खरीद की कीमतों में कदम-ब-कदम वृद्धि भी होती जा रही है। किसानों को तैयारशुदा औद्योगिक माल सप्लाई करने में थोड़ा-सा मुनाफा कमाकर ज्यादा से ज्यादा बिक्री बढ़ाने की नीति का और ऐसे माल की कीमतों को स्थिर रखने या उनमें उचित कटौती करने की नीति का अनुसरण किया जाता है; अनाज की कमी वाले इलाकों में किसानों को अनाज सप्लाई करते समय हम आम तौर पर सरकार की तरफ से कुछ न कुछ घाटा पूरा करके कम कीमत पर अनाज की बिक्री की व्यवस्था करते हैं। यह सब होते हुए भी, यदि हम सावधानी न बरतें तो किसी न किसी प्रकार की गलती अवश्य हो जाएगी। इस सवाल के बारे में सोवियत संघ में की गई गम्भीर गलतियों को ध्यान में रखते हुए, हमें और अधिक सावधानी बरतनी चाहिए तथा राज्य और किसानों के बीच के सम्बन्धों के मसले को भली-भांति निपटाना चाहिए।

इसी तरह सहकारी समितियों और किसानों के बीच के सम्बन्धों का मसला भी अच्छी तरह निपटाया जाना चाहिए। किसी सहकारी समिति की आमदनी का कितना भाग क्रमशः राज्य के पास, सहकारी समिति के पास और किसानों के पास जाना चाहिए और यह इन सबको किस रूप में मिलना चाहिए, इन बातों का फैसला उचित ढंग से किया जाना चाहिए। जो भाग सहकारी समिति को मिलता है उसे प्रत्यक्ष रूप से किसानों की ही सेवा में लगा दिया जाता है। उत्पादन सम्बन्धी खर्चे के बारे में किसी प्रकार के स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं, प्रबन्ध सम्बन्धी खर्चा भी जरूरी है, संचित कोष पुनरुत्पादन के विस्तार के लिए है तथा सार्वजनिक कल्याण कोष किसानों के कल्याण के लिए है। फिर भी, हमें इन अलग-अलग मदों पर किए जाने वाले खर्च के समुचित अनुपात को किसानों के साथ मिलकर तय करना चाहिए। हमें उत्पादन और प्रबन्ध सम्बन्धी खर्चे में सख्त किफायत बरतनी चाहिए। संचित कोष और सार्वजनिक कल्याण कोष को एक सीमा के अन्दर ही रखना चाहिए, और किसी को यह आशा नहीं करनी चाहिए कि सारी की सारी अच्छी बातें एक साल के अन्दर ही पूरी हो जाएंगी।

असाधारण प्राकृतिक विपत्ति की स्थिति को छोड़कर, हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कृषि-उत्पादन में वृद्धि के साथ- साथ हर साल सहकारी समिति के 90 प्रतिशत सदस्यों की आमदनी में कुछ न कुछ वृद्धि जरूरी होती रहे तथा शेष 10 प्रतिशत सदस्यों की आमदनी में भी कोई कमी न आने पाए, और अगर 10 प्रतिशत सदस्यों की आमदनी में कमी आ जाए तो यह जरूरी है कि समय रहते इस समस्या को हल करने के उपाय ढूंढ निकाले जाएं।

संक्षेप में, राज्य और कारखाने के बीच, राज्य और मजदूर के बीच, कारखाने और मजदूर के बीच, राज्य और सहकारी समिति के बीच, राज्य और किसान के बीच तथा सहकारी समिति और किसान के बीच के सम्बन्धों में दोनों ही पक्षों को ध्यान में रखना जरूरी है, महज एक पक्ष को नहीं। महज एक पक्ष की ओर ध्यान देना, वह चाहे कोई भी पक्ष क्यों न हो, समाजवाद के लिए और सर्वहारा अधिनायकत्व के लिए नुकसानदेह साबित होगा। यह एक बड़ा सवाल है जो 60 करोड़ लोगों से सम्बन्ध रखता है, तथा यह आवश्यक है कि इस सम्बन्ध में समूची पार्टी और समूचे राष्ट्र के अन्दर लोगों को बारम्बार शिक्षित किया जाए।

5. केन्द्रीय प्राधिकरणों और स्थानीय प्राधिकरणों के बीच के सम्बन्ध

केन्द्रीय प्राधिकरणों और स्थानीय प्राधिकरणों के बीच के सम्बन्धों का मसला एक अन्य अन्तरविरोध है। इस अन्तरविरोध को हल करने के लिए हमें अपना ध्यान अब इस ओर केन्द्रित करना है कि स्थानीय प्राधिकरणों के अधिकारों में कुछ सीमा तक वृद्धि कैसे की जाए, उन्हें और अधिक स्वतंत्रता किस प्रकार प्रदान की जाए तथा उन्हें और ज्यादा काम करने के अवसर कैसे दिया जाए, और यह सब हमें इस मान्यता के आधार पर करना है कि केन्द्रीय प्राधिकरणों का एकीकृत नेतृत्व मजबूत बने। ऐसा करना एक शक्तिशाली समाजवादी देश का निर्माण करने के हमारे कार्य के लिए लाभकारी सिद्ध होगा। हमारी प्रादेशिक भूमि इतनी विशाल है और

हमारी जनसंख्या अधिक है तथा हमारे यहां की परिस्थितियां इतनी जटिल हैं कि केन्द्रीय और स्थानीय दोनों ही स्तर के प्राधिकरणों द्वारा अपनी पहलकदमी इस्तेमाल किया जाना कहीं अधिक बेहतर होगा, बमुकाबले इसके कि केवल किसी एक पक्ष द्वारा पहलकदमी का इस्तेमाल किया जाए। हमें सोवियत संघ की नकल करके हर चीज को केन्द्रीय प्राधिकरणों के ही हाथ में केन्द्रित नहीं कर देना चाहिए, स्थानीय प्राधिकरणों को अनेक प्रकार के बन्धनों में नहीं जकड़ देना चाहिए तथा उन्हें स्वतंत्र रूप से काम करने के अधिकार से वंचित नहीं कर देना चाहिए।

केन्द्रीय प्राधिकरण उद्योग का विकास करना चाहते हैं और स्थानीय प्राधिकरण भी यही करना चाहते हैं। यहां तक कि ऐसे उद्योगों को भी, जो प्रत्यक्ष रूप से केन्द्रीय प्राधिकरणों के अधीन हैं, स्थानीय प्राधिकरणों से मदद लेने की जरूरत पड़ती रहती है। कृषि और वाणिज्य के बारे में तो यह बात और भी ज्यादा सच है। संक्षेप में, अगर हमें समाजवादी निर्माण को आगे बढ़ाना है तो यह जरूरी है कि हम स्थानीय प्राधिकरणों की पहलकदमी का विकास करें। अगर हमें केन्द्रीय प्राधिकरणों को मजबूत बनाना है तो यह जरूरी है कि हम स्थानीय प्राधिकरणों के हितों की ओर ध्यान दें।

इस समय स्थिति ऐसी है कि स्थानीय प्राधिकरणों में चारों तरफ से हस्तक्षेप होता रहता है, जिससे उनकी कठिनाइयां बढ़ जाती हैं। जैसे ही कोई मंत्रालय कायम किया जाता है, वह क्रान्ति कर देना चाहता है और इसलिए आदेश जारी करने लगता है। चूंकि विभिन्न मंत्रालय ये आदेश प्रान्तीय स्तर की पार्टी-कमेटियों या जन-परिषदों को देना उचित नहीं समझते, इसलिए वे प्रान्तों या म्युनिसिपलटियों के सम्बन्धित विभागों या ब्युरोओं से सीधे सम्पर्क कायम कर लेते हैं और प्रति दिन उन्हीं को आदेश देते रहते हैं। समझा यह जाता है कि ये सभी आदेश केन्द्रीय प्राधिकरणों द्वारा ही भेजे गए हैं, हालांकि न तो पार्टी की केन्द्रीय कमेटी को और न ही राज्य-परिषद को उनके बारे में कोई जानकारी होती है, और इन आदेशों के कारण स्थानीय प्राधिकरणों का बोझ काफी बढ़ जाता है। आंकड़े जमा करने के लिए बनाए गए विभिन्न प्रकार के फार्मों की इतनी ज्यादा भरमार हो गई है कि वे एक अभिशाप बन गए हैं। इस हालत को बदलना जरूरी हो गया है।

हमें एक ऐसी कार्यशैली को बढ़ावा देना चाहिए जिसके अन्तर्गत उन मसलों के बारे में स्थानीय प्राधिकरणों से परामर्श करना जरूरी हो जिन्हें हम अपने हाथ में लेने जा रहे हैं। स्थानीय प्राधिकरणों से परामर्श करना पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का दस्तूर है; वह पहले परामर्श किए बिना जल्दबाजी में कभी कोई आदेश जारी नहीं करती। हम आशा करते हैं कि केन्द्रीय प्राधिकरणों के अन्तर्गत काम करने वाले विभिन्न मंत्रालय और विभाग इस ओर अच्छी तरह ध्यान देंगे और सम्बन्धित मामलों के बारे में पहले स्थानीय प्राधिकरणों से सलाह-मशविरा कर लेंगे तथा पूर्ण रूप से परामर्श किए बिना कोई भी आदेश जारी नहीं करेंगे।

केन्द्रीय विभागों की दो श्रेणियां हैं। पहली श्रेणी में वे विभाग आते हैं जिन्हें निचले स्तर के कारोबारों तक नेतृत्व करने का अधिकार तो प्राप्त है, लेकिन जिनके स्थानीय प्रशासनिक कार्यालयों व कारोबारों पर स्थानीय प्राधिकरणों की देखरेख भी बनी रहती है। दूसरी श्रेणी में वे विभाग आते हैं जो मार्गदर्शक उसूल निर्धारित करने और योजनाएं बनाने का काम करते

हैं, जबकि उन्हें कार्यान्वित करने की जिम्मेदारी स्थानीय प्राधिकरण निभाते हैं।

हमारे जैसे विशाल देश के लिए और हमारी जैसी विशाल पार्टी के लिए केन्द्रीय और स्थानीय प्राधिकरणों के बीच के सम्बन्धों के मसले को बखूबी निपटाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कुछ पूंजीवादी देशों में भी इस मसले पर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है। हालांकि उनकी सामाजिक व्यवस्था हमारी सामाजिक व्यवस्था से बुनियादी तौर पर भिन्न है, फिर भी जो अनुभव उन्हें अपने विकास के दौरान प्राप्त हुए हैं वे हमारे लिए अध्ययन करने योग्य हैं। हम खुद अपने ही अनुभव को लें, हमारे लोक गणराज्य की स्थापना के प्रारम्भिक काल में वृहद प्रशासनिक क्षेत्र कायम किए जाने की व्यवस्था उस समय एक जरूरी चीज थी, फिर भी उसमें कुछ कमियां थीं जिनका बाद में काओ काङ व राओ शू-श के पार्टी-विरोधी गठजोड़ ने कमोबेश फायदा भी उठाया। बाद में वृहद प्रशासनिक क्षेत्रों को भंग करने और विभिन्न प्रान्तों को सीधे केन्द्रीय प्राधिकरणों के अन्तर्गत रखने का फैसला किया गया; यह एक सही फैसला था। लेकिन जब बात इतनी ज्यादा आगे बढ़ गई कि स्थानीय प्राधिकरणों को आवश्यक स्वतंत्रता से वंचित किया जाने लगा, तो इसका परिणाम भी उतना सन्तोषप्रद नहीं हुआ। हमारे संविधान के अनुसार, कानून बनाने के सारे प्राधिकार केन्द्रीय प्राधिकरणों के पास हैं। लेकिन स्थानीय प्राधिकरण अपनी ठोस परिस्थितियों और काम की विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपने लिए नियम-विनियम खुद बना सकते हैं और ठोस कदम खुद निर्धारित कर सकते हैं, बशर्ते कि केन्द्रीय प्राधिकरणों द्वारा निर्धारित उसूलों का उल्लंघन न होता हो; ऐसा करना संविधान के अन्तर्गत वर्जित नहीं है। हम एकता और विशिष्टता दोनों ही चाहते हैं; एक शक्तिशाली समाजवादी देश का निर्माण करने के लिए एक मजबूत व एकीकृत केन्द्रीय नेतृत्व का होना तथा समूचे देश में एकीकृत नियोजन व अनुशासन का होना बिलकुल अनिवार्य है; इस अनिवार्य एकता को भंग करने की इजाजत हरगिज नहीं दी जा सकती। साथ ही, यह भी जरूरी है कि स्थानीय प्राधिकरणों की पहलकदमी का पूरी तरह विकास किया जाए तथा प्रत्येक स्थानीय प्राधिकरण को उसकी स्थानीय स्थितियों के अनुकूल अपनी विशिष्टता बनाए रखने दिया जाय। यह विशिष्टता काओ काङ की तरह की विशिष्टता नहीं है, बल्कि एक ऐसी विशिष्टता है जो सम्पूर्ण के हित में है और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने की दृष्टि से आवश्यक है।

विभिन्न स्थानीय प्राधिकरणों के बीच के सम्बन्धों का मसला भी हमारे सामने है, और यहां मैं मुख्य रूप से ऊपर के स्तर के स्थानीय प्राधिकरणों और निचले स्तर के स्थानीय प्राधिकरणों के बीच के सम्बन्ध का उल्लेख करना चाहता हूं। जब केन्द्रीय विभागों के बारे में प्रान्तों और म्युनिसिपलटियों की शिकायतें पैदा होती रहती हैं तो क्या यह सम्भव है कि प्रान्तों और म्युनिसिपलटियों के बारे में प्रिफेक्चरों, काउण्टियों, जिलों या श्याङों की कोई भी शिकायतें न हों ? केन्द्रीय प्राधिकरणों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि वे प्रान्तों और म्युनिसिपलटियों को अपनी पहलकदमी का विकास करने का अवसर दें और इसी प्रकार प्रान्तों और म्युनिसिपलटियों को भी प्रिफेक्चरों, काउण्टियों, जिलों और श्याङों के साथ ऐसा ही करना चाहिए; दोनों ही सूरतों में यह हरगिज नहीं होना चाहिए कि निचले स्तर के प्राधिकरण अपने को एक जकड़जामे में बन्द महसूस करने लगें। निस्सन्देह, निचले स्तर के कामरेडों को इस

बात की जानकारी देते रहना चाहिए कि ऐसे कौन-कौन से मामले हैं जिनके बारे में केन्द्रीकरण का उसूल लागू करना जरूरी है, तथा उन्हें मनमाने ढंग से हरगिज काम नहीं करना चाहिए। संक्षेप में, केन्द्रीकरण के उसूल को वहीं लागू किया जाना चाहिए जहां ऐसा करना सम्भव और जरूरी हो, अन्यथा उसे हरगिज लागू नहीं किया जाना चाहिए। प्रान्तों, म्युनिसिपलटियों, प्रिफेक्चरों, काउण्टियों, जिलों और श्याङों सभी को अपनी-अपनी यथोचित स्वतंत्रता और अधिकारों का उपभोग करना चाहिए तथा उनके लिए संघर्ष करना चाहिए। समूचे राष्ट्र के हित में, किसी एक स्थानीय विभाग के हित में नहीं, इन अधिकारों के लिए संघर्ष करने को स्थानीयतावाद का नाम नहीं दिया जा सकता और न ही उसे स्वतंत्रता का अनुचित दावा करना कहा जा सकता है।

विभिन्न प्रान्तों और म्युनिसिपलटियों के बीच के सम्बन्ध भी विभिन्न स्थानीय प्राधिकरणों के बीच के सम्बन्धों का ही अन्य रूप हैं और इन सम्बन्धों के मसले को भी उचित ढंग से निपटाया जाना चाहिए। सामान्य हितों को ध्यान में रखने, एक दूसरे की सहायता करने और एक दूसरे की सहूलियत को ध्यान में रखकर काम करने की नीति की हिमायत करना एक ऐसा उसूल है जिसका हम अविचल रूप से पालन करते हैं।

केन्द्रीय और स्थानीय प्राधिकरणों के बीच के सम्बन्धों और विभिन्न स्थानीय प्राधिकरणों के बीच के सम्बन्धों के सवाल को हल करने के बारे में हमारा अनुभव अब भी अपर्याप्त और अपरिपक्व है। हम आशा करते हैं कि आप लोग बड़ी संजीदगी के साथ इस मसले पर गौर करेंगे तथा विचार-विनिमय करेंगे और समय-समय पर अपने अनुभवों का निचोड़ निकालते रहेंगे, ताकि हमारी उपलब्धियों को समृद्ध बनाया जा सके तथा खामियों को दूर किया जा सके।

6. हान राष्ट्रीयता और अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के बीच के सम्बन्ध

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो हान राष्ट्रीयता और अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के बीच के सम्बन्धों के बारे में हमारी नीति उचित है तथा उसे अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं का समर्थन प्राप्त है। हम हान शोविनिज्म का विरोध करने पर जोर देते हैं। स्थानीय-राष्ट्रीयता शोविनिज्म का विरोध करना भी जरूरी है, लेकिन आम तौर पर इस पर हम ज्यादा जोर नहीं देते।

हमारे देश की अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं की आबादी तो कम है, लेकिन वह इलाका जहां ये अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं रहती हैं, बहुत बड़ा है। देश की कुल आबादी में 94 प्रतिशत लोग हान राष्ट्रीयता के हैं, जो एक भारी बहुसंख्या है। अगर उन्होंने हान शोविनिज्म पर अमल किया और अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के लोगों के विरुद्ध भेदभाव बरता, तो यह एक बहुत बुरी बात होगी। और जमीन किसके पास ज्यादा है ? अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के पास, जिनके हाथ में 50 से 60 प्रतिशत तक जमीन है। हमारा कहना है कि चीन एक विशाल इलाके, प्रचुर साधन-स्रोतों और बड़ी आबादी वाला देश है; दरअसल आबादी तो हान राष्ट्रीयता की अधिक है, लेकिन इलाका अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं का बड़ा है तथा उन्हीं के पास प्रचुर साधन स्रोत हैं, या कम से कम, भूमि के नीचे मौजूद साधन-स्रोत तो सम्भवतः उन्हीं के पास ज्यादा हैं।

चीन के इतिहास के निर्माण में देश की सभी अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं ने योगदान किया है। हान राष्ट्रीयता की विशाल आबादी एक लम्बे अरसे के दौरान अनेक राष्ट्रीयताओं के परस्पर मिलन का परिणाम है। अतीत काल में, प्रतिक्रियावादी शासकों ने, जो मुख्य रूप से हान राष्ट्रीयता के ही थे, हमारी विभिन्न राष्ट्रीयताओं के बीच मनमुटाव की भावना पैदा की तथा अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के लोगों पर अत्याचार किए। उसके असर को, और लोगों की बात तो दूर, मेहनतकश लोगों के बीच से भी थोड़े समय में मिटा देना कोई आसान काम नहीं है इसलिए राष्ट्रीयताओं से सम्बन्धित अपनी सर्वहारा नीति के बारे में हमें अपने कार्यकर्ताओं और जन-समुदाय दोनों को व्यापक रूप से निरन्तर शिक्षित करते रहना चाहिए, तथा हान राष्ट्रीयता और अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के बीच के सम्बन्धों का बारम्बार पुनरावलोकन करने पर ध्यान देते रहना चाहिए। ऐसा ही एक पुनरावलोकन दो साल पहले किया गया था, और अब समय आ गया है कि एक बार फिर यह पुनरावलोकन कर लिया जाय। अगर उनके बीच के सम्बन्ध सामान्य नहीं हैं, तो यह जरूरी है कि हम इस मसले को बड़ी संजीदगी के साथ हल करें न कि सिर्फ जबानी जमा खर्च करते रहें।

हमें इस बात का अच्छी तरह अध्ययन करना होगा कि आर्थिक प्रबन्ध व वित्त से सम्बन्धित ऐसी कौन सी प्रणालियां हैं जो अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के इलाकों में अपनाए जाने योग्य हैं।

हमारे लिए यह जरूरी है कि हम अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं की सच्चे दिल से और सक्रिय रूप से मदद करें, ताकि वे अपनी अर्थव्यवस्था व संस्कृति का विकास कर सकें। सोवियत संघ में रूसी राष्ट्रीयता और वहां की अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के बीच के सम्बन्ध अत्यन्त असामान्य हैं; इससे हमें सबक लेना चाहिए। वातावरण में मौजूद वायु, धरती पर खड़े जंगल तथा जमीन के नीचे मौजूद सम्पदा ये सभी महत्वपूर्ण तत्व हैं जो समाजवाद के निर्माण के लिए जरूरी हैं, लेकिन इनमें से किसी भी भौतिक तत्व का दोहन और इस्तेमाल बिना मानव तत्व के सम्भव नहीं है। हमारे लिए यह जरूरी है कि हम हान राष्ट्रीयता और अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के बीच अच्छे सम्बन्धों का विकास करें और तमाम राष्ट्रीयताओं के बीच की एकता को सुदृढ़ बनाएं, ताकि हम अपने सम्मिलित प्रयास द्वारा अपनी महान समाजवादी मातृभूमि का निर्माण कर सकें।

7. पार्टी और गैर-पार्टी तत्वों के बीच के सम्बन्ध

हमारे यहां केवल एक पार्टी हो या कई पार्टियां, इन दोनों में कौन सी स्थिति बेहतर है? इस समय जैसी स्थिति है उसे देखते हुए बेहतर शायद यही है कि कई पार्टियां हों। यह बात अतीत में भी सच थी और सम्भवतः भविष्य में भी सच रहेगी; इसका मतलब यह है कि दीर्घकालीन सहअस्तित्व और पारस्परिक निरीक्षण की स्थिति बनी रहेगी।

हमारे देश में अनेक जनवादी पार्टियों का, जो मुख्य रूप से राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग और उसके बुद्धिजीवियों की पार्टियां हैं, जापानी-आक्रमण विरोधी युद्ध और च्यांग काई-शेक-विरोधी संघर्ष के दौरान उदय हुआ था, और वे आज तक कायम हैं। इस मायने में, चीन की स्थिति सोवियत संघ से भिन्न है, हमने सोच-समझकर जनवादी पार्टियों के अस्तित्व को कायम रखा है उन्हें अपने विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया है तथा उनके प्रति एकता और संघर्ष दोनों की नीति अपनाई है। हम ऐसे सभी गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों के साथ एकता कायम करने के पक्ष में हैं जो नेक इरादे से हमारे बारे में आलोचना करते हैं। क्वोमिन्ताङ की सेना और सरकार से आए वेई ली-हुवाङ और वङ वन-हाओ जैसे देशभक्त लोगों के उत्साह को बढ़ाने के लिए हमें लगातार प्रयास करते रहना चाहिए। यहां तक कि हमें लुङ युन, ल्याङ शू-मिङ और फङ ई-हू की तरह के गाली-गलौज करने वाले लोगों को भी जीवन-निर्वाह का खर्च देना चाहिए तथा उनकी बेहूदा बकवास का खण्डन करते हुए और उनके द्वारा की गई भर्त्सना में जो बात तर्कसंगत लगे उसे ग्रहण करते हुए उन्हें हमारी निन्दा करने की इजाजत दे देनी चाहिए। ऐसा करना पार्टी के लिए, जनता के लिए और समाजवाद के लिए फायदेमन्द है।

चूंकि चीन में वर्गों और वर्ग-संघर्ष का अस्तित्व अब भी कायम है, इसलिए किसी न किसी रूप में विरोधी पक्ष का बना रहना लाजिमी है। हालांकि सभी जनवादी पार्टियां और निर्दलीय गण्यमान्य जनवादी व्यक्ति चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व को स्वीकार करने का ऐलान कर चुके हैं, लेकिन वास्तव में उनमें से अनेक व्यक्ति कम या ज्यादा मात्रा में हमारे विरोध में खड़े हैं। "क्रान्ति को अन्त तक चलाने", अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने व कोरिया की सहायता करने के आन्दोलन और भूमि-सुधार जैसे मामलों में वे हमारे विरोधी भी थे और नहीं भी। प्रतिक्रान्तिकारियों के दमन के औचित्य के बारे में उनके मन में आज तक सन्देह बना हुआ है। वे नहीं चाहते थे कि हमारे यहां एक समाजवादी ढंग का संविधान हो, क्योंकि उनके कथनानुसार मुश्तरका प्रोग्राम बिलकुल दुरुस्त था, किन्तु जब संविधान का मसौदा पेश हुआ तो उन सभी व्यक्तियों ने उसके समर्थन में अपना हाथ उठा दिया। वस्तुएं अक्सर अपने विरोधी तत्वों में बदल जाती हैं, और यह बात अनेक सवालों पर जनवादी पार्टियों द्वारा अपनाए गए रवैये के बारे में भी सच है। ये पार्टियां जहां एक तरफ हमारे खिलाफ हैं वहां दूसरी तरफ हमारे खिलाफ नहीं भी हैं, और अक्सर ऐसा होता है कि वे हमारे विरोध करने की स्थिति से शुरू करके हमारा विरोध न करने की स्थिति में पहुंच जाती हैं।

कम्युनिस्ट पार्टी और जनवादी पार्टियां ये सभी इतिहास की देन हैं। इतिहास में जिस वस्तु का उदय होता है वह इतिहास में ही विलीन भी हो जाती है। इसलिए एक न एक दिन कम्युनिस्ट पार्टी अवश्य विलीन हो जाएगी और जनवादी पार्टियां भी अवश्य विलीन हो जाएंगी। क्या यह विलीनीकरण एक अप्रिय घटना होगी ? मेरी राय में तो यह एक बहुत सुखद घटना होगी। मैं तो इसे बहुत अच्छी बात समझता हूं कि एक दिन हम लोग कम्युनिस्ट पार्टी और सर्वहारा अधिनायकत्व को तिलांजलि दे सकेंगे। हमारा कार्य है उनके विलोप की प्रक्रिया को तेज कर देना। इस मुद्दे पर हम पहले भी कई बार अपने विचार प्रकट कर चुके हैं।

लेकिन वर्तमान काल में सर्वहारा पार्टी और सर्वहारा अधिनायकत्व के बिना हमारा काम नहीं चल सकता; यही नहीं, उन्हें और अधिक शक्तिशाली बनाना भी निहायत जरूरी है। अन्यथा हम प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने, साम्राज्यवादियों का प्रतिरोध करने और समाजवाद का निर्माण करने और समाजवाद का निर्माण होने पर उसे सुदृढ़ बनाने में कामयाब

न हो सकेंगे। यह कथन किसी भी सूरत में सही नहीं है कि सर्वहारा पार्टी और सर्वहारा अधिनायकत्व के बारे में लेनिन का सिद्धान्त ''पुराना पड़ गया है'', जैसा कि कुछ लोग कहते हैं। सर्वहारा अधिनायकत्व एक अत्यधिक दमनकारी वस्तु के सिवाय और कुछ हो ही नहीं सकता। तो भी, यह जरूरी है कि नौकरशाही का और एक बोझिल ढांचे का विरोध किया जाए। मेरा प्रस्ताव है कि पार्टी और सरकार के अंगों को मुकम्मिल तौर पर चुस्त-दुरुस्त बनाया जाए तथा उनमें दो-तिहाई की कटौती कर दी जाय, बशर्ते कि किसी की मृत्यु न हो जाय और कोई काम रुके नहीं।

लेकिन, पार्टी और सरकार के अंगों को चुस्त-दुरुस्त बनाने का यह मतलब नहीं है कि जनवादी पार्टियों से पिंड छुड़ा लिया जाय। मेरा सुझाव है कि उनके साथ अपने सम्बन्धों को बेहतर बनाने के उद्देश्य से आप लोगों को हमारे संयुक्त मोर्चे के काम की ओर ध्यान देना चाहिए और समाजवाद के कार्य के लिए उनके उत्साह को जागृत करने का हर सम्भव प्रयास करना चाहिए।

8. क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति के बीच के सम्बन्ध

प्रतिक्रान्तिकारियों की गिनती किस प्रकार के तत्वों में की जानी चाहिए? उनकी गिनती नकारात्मक तत्वों में, विध्वंसकारी तत्वों में की जानी चाहिए; वे सकारात्मक तत्वों का विरोध करने वाली शक्तियां हैं। क्या प्रतिक्रान्तिकारियों के लिए यह सम्भव है कि वे बदल जाएं ? निस्सन्देह, कट्टरपंथी लोग कभी नहीं बदलेंगे। लेकिन, हमारे देश की परिस्थितियों में, अधिकांश प्रतिक्रान्तिकारी लोग अन्ततः कम या ज्यादा सीमा तक बदल जाएंगे। हमारे द्वारा अपनाई गई सही नीति के परिणामस्वरूप बहुत से प्रतिक्रान्तिकारी लोगों का ऐसे व्यक्तियों में रूपान्तर हो चुका है जो अब क्रान्ति का विरोध नहीं करते, तथा उनमें से कुछ ने तो थोड़े-बहुत अच्छे काम भी किए हैं।

यहां पर निम्नोक्त मुद्दों की पुष्टि करना जरूरी है :

पहले, इस बात की पुष्टि कर देनी चाहिए कि 1951-52 में प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करना जरूरी था। एक दृष्टिकोण यह भी है कि यह आन्दोलन चलाने की जरूरत ही नहीं थी। यह दृष्टिकोण गलत है।

प्रतिक्रान्तिकारियों से निपटने में ये तरीके अपनाए जा सकते हैं : वध करना, कारावास में डाल देना, उन पर निगरानी रखना और उन्हें खुला छोड़ देना। वध करना – सभी लोग जानते हैं कि इसका क्या मतलब है। कारावास से हमारा मतलब है प्रतिक्रान्तिकारियों को जेल में रखकर श्रम के जरिए उनका नव रूपान्तर करना। निगरानी से हमारा मतलब है उन्हें समाज के बीच बने रहने देना और जन-समुदाय की देख-रेख में उनका नव रूपान्तर करना। जब हम उन्हें खुला छोड़ देने की बात करते हैं तो इसका मतलब यह है कि आम तौर से ऐसे लोगों को गिरफ्तार न किया जाए जिनकी केस गिरफ्तारी की दृष्टि से हाशिए पर है, अथवा यह कि गिरफ्तार किए गए ऐसे लोगों को रिहा कर दिया जाए जो अच्छा व्यवहार करें। यह आवश्यक है कि विभिन्न प्रकार के प्रतिक्रान्तिकारियों के मामलों को निपटते समय प्रत्येक केस

की ठोस स्थिति को ध्यान में रखते हुए अलग-अलग तरीके अपनाए जायं।

आइए, अब हम विशेष रूप से वध करने के बारे में विचार करें। यह सच है कि प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने के आन्दोलन के दौरान, जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है, हमने कुछ लोगों का वध किया। लेकिन ये किस तरह के लोग थे ? ये लोग ऐसे प्रतिक्रान्तिकारी थे जिनके ऊपर जनता के खून का बहुत ज्यादा कर्जा चढ़ गया था तथा जिनसे जनता बेहद नफरत करती थी। 60 करोड़ जनता की महान क्रान्ति में, अगर हमने ''पूरब के जालिम तानाशाह'' और ''पश्चिम के जालिम तानाशाह'' जैसे स्थानीय निरंकुश तत्वों का वध न किया होता तो जन-समुदाय का उठ खड़ा होना सम्भव नहीं था। अगर दमन का वह आन्दोलन न चलाया गया होता, तो जनता नरमी बरतने की हमारी मौजूदा नीति को भी स्वीकार न करती। चूंकि अब कुछ लोगों ने यह सुन लिया है कि स्तालिन ने कई लोगों का गलत तौर पर वध कर दिया था, इसलिए वे तुरन्त यह निष्कर्ष निकाल रहे हैं कि उन प्रतिक्रान्तिकारियों का वध करके हमने भी गलती की थी। नहीं, यह बात सही नहीं है। उन प्रतिक्रान्तिकारियों का वध किया जाना सर्वथा उचित था, इस बात की पुष्टि करना आज फौरी अहमियत रखता है।

दूसरे, इस बात की पुष्टि कर देनी चाहिए कि प्रतिक्रान्तिकारी लोग अब भी मौजूद हैं, हालांकि उनकी तादाद पहले से बहुत कम हो गई है। हू फङ का मामला रोशनी में आने के बाद यह जरूरी हो गया कि प्रतिक्रान्तिकारियों को ढूंढ निकाला जाए। जो प्रतिक्रान्तिकारी अभी तक छिपे हुए हैं उनको ढूंढकर उनका सफाया करने का प्रयास जारी रहना चाहिए। इस बात की पुष्टि कर देनी चाहिए कि थोड़े से प्रतिक्रान्तिकारी लोग अब भी बचे हुए हैं जो किसी न किसी प्रकार की प्रतिक्रान्तिकारी विध्वंसकारी गतिविधियां करते रहते हैं। मिसाल के तौर पर वे मवेशियों को मार देते हैं, अनाज जला डालते हैं, कारखानों को तबाह कर डालते हैं, गोपनीय जानकारी की चोरी करते हैं और प्रतिक्रियावादी पोस्टर लगाते रहते हैं। इसलिए यह कहना गलत है कि प्रतिक्रान्तिकारियों का पूरी तरह सफाया किया जा चुका है और हम इतमीनान से तकिए पर सिर रखकर गहरी नींद सो सकते हैं। चीन में और विश्व में जब तक वर्ग-संघर्ष मौजूद है, हम अपनी सतर्कता में हरगिज ढील नहीं आने दे सकते। लेकिन, इस बात पर जोर देना भी उतना ही गलत होगा कि प्रतिक्रान्तिकारी लोग अब भी भारी संख्या में मौजूद हैं।

तीसरे, समाज में मौजूद प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करते समय, अब से हमें इस बात को ध्यान में रखना होगा कि यथासम्भव कम संख्या में गिरफ्तारियां की जाएं तथा यथासम्भव कम संख्या में लोगों का वध किया जाए। ऐसे लोग जनता के जानी और करीबी दुश्मन हैं तथा जनता उनसे बेहद नफरत करती है, और इसलिए उनमें से थोड़े से लोगों का वध भी किया जाना चाहिए। लेकिन उनमें से ज्यादातर लोगों को कृषि सहकारी समितियों के सुपुर्द कर दिया जाना चाहिए तथा वहां उन पर निगरानी रखते हुए उनसे खेतीबाड़ी का काम लिया जाना चाहिए और श्रम के जरिए उनका नव रूपान्तर किया जाना चाहिए। इसके बावजूद, हम यह ऐलान नहीं कर सकते कि अब से किसी का वध नहीं किया जाएगा और न ही हम मृत्यु-दण्ड को दण्ड के रूप में समाप्त कर सकते हैं।

चौथे, पार्टी और सरकार के अंगों, विद्यालयों और फौजी यूनिटों से प्रतिक्रान्तिकारियों को ढूंढ निकालते समय यह जरूरी है कि एक भी व्यक्ति की जान न लेने और कम से कम लोगों

न हो सकेंगे। यह कथन किसी भी सूरत में सही नहीं है कि सर्वहारा पार्टी और सर्वहारा अधिनायकत्व के बारे में लेनिन का सिद्धान्त ''पुराना पड़ गया है'', जैसा कि कुछ लोग कहते हैं। सर्वहारा अधिनायकत्व एक अत्यधिक दमनकारी वस्तु के सिवाय और कुछ हो ही नहीं सकता। तो भी, यह जरूरी है कि नौकरशाही का और एक बोझिल ढांचे का विरोध किया जाए। मेरा प्रस्ताव है कि पार्टी और सरकार के अंगों को मुकम्मिल तौर पर चुस्त-दुरुस्त बनाया जाए तथा उनमें दो-तिहाई की कटौती कर दी जाय, बशर्ते कि किसी की मृत्यु न हो जाय और कोई काम रुके नहीं।

लेकिन, पार्टी और सरकार के अंगों को चुस्त-दुरुस्त बनाने का यह मतलब नहीं है कि जनवादी पार्टियों से पिंड छुड़ा लिया जाय। मेरा सुझाव है कि उनके साथ अपने सम्बन्धों को बेहतर बनाने के उद्देश्य से आप लोगों को हमारे संयुक्त मोर्चे के काम की ओर ध्यान देना चाहिए और समाजवाद के कार्य के लिए उनके उत्साह को जागृत करने का हर सम्भव प्रयास करना चाहिए।

8. क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति के बीच के सम्बन्ध

प्रतिक्रान्तिकारियों की गिनती किस प्रकार के तत्त्वों में की जानी चाहिए? उनकी गिनती नकारात्मक तत्त्वों में, विध्वंसकारी तत्त्वों में की जानी चाहिए; वे सकारात्मक तत्त्वों का विरोध करने वाली शक्तियां हैं। क्या प्रतिक्रान्तिकारियों के लिए यह सम्भव है कि वे बदल जाएं? निस्सन्देह, कट्टरपंथी लोग कभी नहीं बदलेंगे। लेकिन, हमारे देश की परिस्थितियों में, अधिकांश प्रतिक्रान्तिकारी लोग अन्ततः कम या ज्यादा सीमा तक बदल जाएंगे। हमारे द्वारा अपनाई गई सही नीति के परिणामस्वरूप बहुत से प्रतिक्रान्तिकारी लोगों का ऐसे व्यक्तियों में रूपान्तर हो चुका है जो अब क्रान्ति का विरोध नहीं करते, तथा उनमें से कुछ ने तो थोड़े-बहुत अच्छे काम भी किए हैं।

यहां पर निम्नोक्त मुद्दों की पुष्टि करना जरूरी है :

पहले, इस बात की पुष्टि कर देनी चाहिए कि 1951-52 में प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करना जरूरी था। एक दृष्टिकोण यह भी है कि यह आन्दोलन चलाने की जरूरत ही नहीं थी। यह दृष्टिकोण गलत है।

प्रतिक्रान्तिकारियों से निपटने में ये तरीके अपनाए जा सकते हैं : वध करना, कारावास में डाल देना, उन पर निगरानी रखना और उन्हें खुला छोड़ देना। वध करना – सभी लोग जानते हैं कि इसका क्या मतलब है। कारावास से हमारा मतलब है प्रतिक्रान्तिकारियों को जेल में रखकर श्रम के जरिए उनका नव रूपान्तर करना। निगरानी से हमारा मतलब है उन्हें समाज के बीच बने रहने देना और जन-समुदाय की देख-रेख में उनका नव रूपान्तर करना। जब हम उन्हें खुला छोड़ देने की बात करते हैं तो इसका मतलब यह है कि आम तौर से ऐसे लोगों को गिरफ्तार न किया जाए जिनकी केस गिरफ्तारी की दृष्टि से हाशिए पर है, अथवा यह कि गिरफ्तार किए गए ऐसे लोगों को रिहा कर दिया जाए जो अच्छा व्यवहार करें। यह आवश्यक है कि विभिन्न प्रकार के प्रतिक्रान्तिकारियों के मामलों को निपटते समय प्रत्येक केस की ठोस स्थिति को ध्यान में रखते हुए अलग-अलग तरीके अपनाए जायं।

आइए, अब हम विशेष रूप से वध करने के बारे में विचार करें। यह सच है कि प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने के आन्दोलन के दौरान, जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है, हमने कुछ लोगों का वध किया। लेकिन ये किस तरह के लोग थे ? ये लोग ऐसे प्रतिक्रान्तिकारी थे जिनके ऊपर जनता के खून का बहुत ज्यादा कर्जा चढ़ गया था तथा जिनसे जनता बेहद नफरत करती थी। 60 करोड़ जनता की महान क्रान्ति में, अगर हमने ''पूरब के जालिम तानाशाह'' और ''पश्चिम के जालिम तानाशाह'' जैसे स्थानीय निरंकुश तत्त्वों का वध न किया होता तो जन-समुदाय का उठ खड़ा होना सम्भव नहीं था। अगर दमन का वह आन्दोलन न चलाया गया होता, तो जनता नरमी बरतने की हमारी मौजूदा नीति को भी स्वीकार न करती। चूंकि अब कुछ लोगों ने यह सुन लिया है कि स्तालिन ने कई लोगों का गलत तौर पर वध कर दिया था, इसलिए वे तुरन्त यह निष्कर्ष निकाल रहे हैं कि उन प्रतिक्रान्तिकारियों का वध करके हमने भी गलती की थी। नहीं, यह बात सही नहीं है। उन प्रतिक्रान्तिकारियों का वध किया जाना सर्वथा उचित था, इस बात की पुष्टि करना आज फौरी अहमियत रखता है।

दूसरे, इस बात की पुष्टि कर देनी चाहिए कि प्रतिक्रान्तिकारी लोग अब भी मौजूद हैं, हालांकि उनकी तादाद पहले से बहुत कम हो गई है। हू फङ का मामला रोशनी में आने के बाद यह जरूरी हो गया कि प्रतिक्रान्तिकारियों को ढूंढ निकाला जाए। जो प्रतिक्रान्तिकारी अभी तक छिपे हुए हैं उनको ढूंढ़कर उनका सफाया करने का प्रयास जारी रहना चाहिए। इस बात की पुष्टि कर देनी चाहिए कि थोड़े से प्रतिक्रान्तिकारी लोग अब भी बचे हुए हैं जो किसी न किसी प्रकार की प्रतिक्रान्तिकारी विध्वंसकारी गतिविधियां करते रहते हैं। मिसाल के तौर पर वे मवेशियों को मार देते हैं, अनाज जला डालते हैं, कारखानों को तबाह कर डालते हैं, गोपनीय जानकारी की चोरी करते हैं और प्रतिक्रियावादी पोस्टर लगाते रहते हैं। इसलिए यह कहना गलत है कि प्रतिक्रान्तिकारियों का पूरी तरह सफाया किया जा चुका है और हम इतमीनान से तकिए पर सिर रखकर गहरी नींद सो सकते हैं। चीन में और विश्व में जब तक वर्ग-संघर्ष मौजूद है, हम अपनी सतर्कता में हरगिज ढील नहीं आने दे सकते। लेकिन, इस बात पर जोर देना भी उतना ही गलत होगा कि प्रतिक्रान्तिकारी लोग अब भी भारी संख्या में मौजूद हैं।

तीसरे, समाज में मौजूद प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करते समय, अब से हमें इस बात को ध्यान में रखना होगा कि यथासम्भव कम संख्या में गिरफ्तारियां की जाएं तथा यथासम्भव कम संख्या में लोगों का वध किया जाए। ऐसे लोग जनता के जानी और करीबी दुश्मन हैं तथा जनता उनसे बेहद नफरत करती है, और इसलिए उनमें से थोड़े से लोगों का वध भी किया जाना चाहिए। लेकिन उनमें से ज्यादातर लोगों को कृषि सहकारी समितियों के सुपुर्द कर दिया जाना चाहिए तथा वहां उन पर निगरानी रखते हुए उनसे खेतीबाड़ी का काम लिया जाना चाहिए और श्रम के जरिए उनका नव रूपान्तर किया जाना चाहिए। इसके बावजूद, हम यह ऐलान नहीं कर सकते कि अब से किसी का वध नहीं किया जाएगा और न ही हम मृत्यु-दण्ड को दण्ड के रूप में समाप्त कर सकते हैं।

चौथे, पार्टी और सरकार के अंगों, विद्यालयों और फौजी यूनिटों से प्रतिक्रान्तिकारियों को ढूंढ निकालते समय यह जरूरी है कि एक भी व्यक्ति की जान न लेने और कम से कम लोगों

को गिरफ्तार करने की नीति का पालन किया जाए, जिसकी शुरुआत येनान में की गई थी। तसदीकशुदा प्रतिक्रान्तिकारियों के बारे में सम्बन्धित संगठनों द्वारा ही जांच-पड़ताल की जाए और सार्वजनिक सुरक्षा ब्यूरोओं द्वारा किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार न किया जाए, प्राक्यूरेटोरेट अंगों द्वारा किसी भी व्यक्ति के खिलाफ कोई कानूनी कार्यवाही शुरू न की जाए तथा न्यायिक अदालतों द्वारा किसी भी व्यक्ति के खिलाफ मुकदमा न चलाया जाए। हर सौ प्रतिक्रान्तिकारियों में से 90 से भी अधिक लोगों के मामलों को इसी ढंग से निपटाया जाना चाहिए। कम से कम लोगों को गिरफ्तार करने से हमारा यही मतलब है। जहां तक वध करने का सवाल है, किसी की जान न ली जाए।

वे लोग, जिनका हम वध नहीं करते, आखिर किस तरह के लोग हैं ? जिनका हम वध नहीं करते वे हू फङ, फान हान-च्येन, राओ शू श जैसे लोग हैं या सम्राट फू ई और कांग त्से जैसे बन्दी बनाए गए युद्ध-अपराधी हैं। हमने उनका वध नहीं किया, इसका कारण यह नहीं था कि वे अपने अपराधों के आधार पर मृत्यु-दण्ड पाने लायक नहीं थे, बल्कि यह था कि उनका वध करने से कोई लाभ न होता। अगर ऐसे किसी एक अपराधी का वध कर दिया गया, तो उसके बाद दूसरा और फिर तीसरा अपराधी निकल आएगा, जिसके अपराधों की तुलना पहले वाले के अपराधों से की जाने लगेगी और फिर अनेक मुण्ड जमीन पर लोटने लगेंगे। यह पहली बात है। और दूसरी बात यह है कि अनेक लोगों का गलत तौर पर भी वध किया जा सकता है। इतिहास साक्षी है, किसी आदमी का सिर धड़ से अलग हो जाने के बाद उसे फिर से नहीं जोड़ा जा सकता, और न ही एक बार कट जाने के बाद वह चाइव के पौधे की भांति फिर से उग सकता है। अगर आप गलती से किसी का सिर काट बैठें, तो फिर चाहते हुए भी उस गलती को दुरुस्त करने का कोई रास्ता आपके पास नहीं रह जाता। तीसरी बात यह है कि ऐसा करके आप सबूत जुटाने का एक स्रोत ही नष्ट कर देते हैं। प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने के लिए आपको सबूत की आवश्यकता है। एक प्रतिक्रान्तिकारी व्यक्ति अक्सर दूसरे प्रतिक्रान्तिकारी व्यक्ति के विरुद्ध एक जिन्दा सबूत की भूमिका अदा कर सकता है, और ऐसे केस भी हो सकते हैं जिनमें आपको उसके साथ परामर्श करने की जरूरत महसूस हो। यदि आप उस व्यक्ति का सफाया कर चुके हैं, तो फिर बाद में आप सबूत भी हासिल नहीं कर सकेंगे। और यह स्थिति प्रतिक्रान्ति के लिए हितकारी होगी, न कि क्रान्ति के लिए। चौथी बात यह है कि इन प्रतिक्रान्तिकारियों के प्राण लेने से (1) न उत्पादन में कोई वृद्धि होगी, (2) न विज्ञान के क्षेत्र में देश का स्तर ऊंचा उठ सकेगा, (3) न चार प्रकार के हानिकारक जन्तुओं का सफाया करने में कोई मदद मिलेगी, (4) न राष्ट्रीय प्रतिरक्षा सुदृढ़ बन जाएगी और (5) न ही थाइवान को वापस लेने में कोई मदद मिलेगी। इससे केवल बन्दियों को मार डालने की शोहरत ही आपके हाथ लगेगी और बन्दियों को मार डालने वाले लोगों को हमेशा बदनामी ही नसीब होती है। एक बात और भी है और वह यह कि पार्टी और सरकार के अंगों के भीतर मौजूद प्रतिक्रान्तिकारी लोग समाज में मौजूद प्रतिक्रान्तिकारियों से भिन्न हैं। समाज में मौजूद प्रतिक्रान्तिकारी लोग जन-समुदाय के ऊपर सवारी गांठते फिरते हैं, जबकि पार्टी और सरकार के अंगों में मौजूद प्रतिक्रान्तिकारी लोग जन-समुदाय से थोड़ा अलग-थलग रहने के कारण लोगों से आम तौर पर दुश्मनी ठान लेते हैं, लेकिन ऐसे प्रतिक्रान्तिकारी कम हैं जो खास

तौर पर किसी एक व्यक्ति को अपना दुश्मन बना लें। अगर ऐसे किसी भी व्यक्ति के प्राण न लिये जाएं तो इसमें हर्ज ही क्या है ? जो लोग स्वास्थ्य की दृष्टि से शारीरिक श्रम करने लायक हैं उनका श्रम के जरिए नव रूपान्तर किया जाना चाहिए और जो लोग इस लायक नहीं हैं उनके गुजारे की व्यवस्था कर दी जानी चाहिए। प्रतिक्रान्तिकारी बिलकुल निकम्मे होते हैं, वे हानिकारक जन्तुओं की भांति होते हैं, लेकिन एक बार कब्जे में आ जाने पर आप उन्हें जनता की सेवा के किसी न किसी काम में लगा सकते हैं।

लेकिन क्या कोई ऐसा कानून बनाने की जरूरत है जिसमें यह प्रावधान किया गया हो कि पार्टी और सरकार के अंगों में मौजूद किसी भी प्रतिक्रान्तिकारी व्यक्ति का वध नहीं किया जाएगा ? यह हमारी अन्दरूनी नीति है, जिसका सार्वजनिक रूप से ऐलान करना जरूरी नहीं; जरूरत इस बात की है कि हम इस नीति को यथासम्भव कार्यान्वित करने का प्रयास करें। मान लीजिए कोई आदमी इस इमारत पर एक बम फेंक देता है और यहां मौजूद सभी व्यक्ति या उनमें से आधे या एक-तिहाई व्यक्ति मारे जाते हैं, तो फिर ऐसी स्थिति में आप क्या कहेंगे - उस आदमी का वध किया जाय अथवा नहीं ? निश्चय ही उसका वध किया जाना चाहिए।

पार्टी और सरकार के अंगों से प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करते समय किसी भी व्यक्ति को जान से न मारने की नीति का पालन करने का यह मतलब नहीं है कि उनके साथ सख्ती से पेश आने की भी मनाही है। लेकिन इससे हमें ऐसी गलतियों की रोकथाम करने में मदद मिलती है जिन्हें बाद में सुधारा नहीं जा सकता, और अगर कोई गलती हो भी जाए तो उसे दुरुस्त करने का मौका मिल जाता है। इस तरह बहुत से लोग इतमीनान की सांस ले सकेंगे तथा पार्टी के भीतर कामरेडों के बीच अविश्वास की भावना नहीं पनप सकेगी। अगर प्रतिक्रान्तिकारियों का वध नहीं किया जाता तो उन्हें खाना तो खिलाना ही होगा। सभी प्रतिक्रान्तिकारियों को रोजी दी जानी चाहिए, ताकि उन्हें अपना नव रूपान्तर करके नई जिन्दगी शुरू करने का मौका मिल सके। यह जनता के कार्य के हित में होगा और विदेशों में इसका अच्छा असर पड़ेगा।

प्रतिक्रान्तिकारियों के दमन के सिलसिले में हमें अब भी बड़ी मेहनत से काम करते रहना है। इस ओर जरा भी ढिलाई न आने देना जरूरी है। भविष्य में, हमें न सिर्फ समाज में मौजूद प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करते रहना है बल्कि पार्टी व सरकार के अंगों, विद्यालयों और फौजी यूनिटों में छिपे तमाम प्रतिक्रान्तिकारियों को भी खोज निकालना जारी रखना है। हमारे लिए यह बहुत जरूरी है कि हम अपने और दुश्मन के बीच एक स्पष्ट विभाजन-रेखा खींच लें। अगर दुश्मन को हमारी पांतों में और यहां तक कि हमारे नेतृत्वकारी अंगों में घुस आने का मौका दिया गया, तो इससे समाजवादी कार्य के लिए और सर्वहारा अधिनायकत्व के लिए कितना गम्भीर खतरा पैदा हो जाएगा, यह हमें भली भांति मालूम है।

9. सही और गलत के बीच के सम्बन्ध

चाहे पार्टी के भीतर हो या बाहर, सही और गलत के बीच एक स्पष्ट विभाजन-रेखा खींच लेनी जरूरी है। जिन लोगों ने गलतियां की हैं उनसे कैसे निपटा जाए, यह एक महत्वपूर्ण सवाल

है। उनके प्रति सही रवैया अपनाने का मतलब यह है कि "भावी गलतियों से बचने के लिए पिछली गलतियों से सबक सीखने और मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करने" की नीति अपनाई जाय और उनकी गलतियों को ठीक करने में उनकी मदद की जाए तथा उन्हें क्रान्ति में हिस्सा लेते रहने की इजाजत दी जाए। जिन दिनों हमारी पार्टी की बागडोर वाङ मिङ की अगुवाई में कठमुल्लावादियों के हाथ में थी, उन दिनों हमारी पार्टी ने इस सवाल के बारे में गलती की थी और स्तालिन की कार्यशैली के बुरे पहलू को अपना लिया था। वे लोग समाज के अन्दर मध्यवर्ती शक्तियों का बहिष्कार करते थे और पार्टी के भीतर लोगों को अपनी गलतियां सुधारने की इजाजत नहीं देते थे; वे इन दोनों ही प्रकार के लोगों को क्रान्ति से बहिष्कृत कर देते थे।

"आ क्यू की सच्ची कहानी" एक श्रेष्ठ कहानी है। मैं उन साथियों से, जिन्होंने यह कहानी पहले कभी पढ़ रखी है, इसे फिर एक बार पढ़ लेने की सिफारिश करूंगा और उन साथियों से, जिन्होंने इसे पहले कभी नहीं पढ़ा, इसे ध्यानपूर्वक पढ़ने को कहूंगा। इस कहानी में लू शुन ने मुख्य रूप से एक ऐसे किसान का चित्रण किया है जो पिछड़ा हुआ है तथा राजनीतिक रूप से जागृत नहीं है। उन्होंने "क्रान्ति से बहिष्कृत" नामक एक समूचे अध्याय में इस बात का वर्णन किया है कि एक नकली विदेशी दरिन्दा कैसे आ क्यू को क्रान्ति की पांतों में शामिल होने से रोक देता है। दरअसल आ क्यू की समझ में क्रान्ति का केवल यही मतलब था कि कुछ अन्य लोगों की तरह वह भी अपने लिए चन्द वस्तुएं इकट्ठी कर ले। लेकिन नकली विदेशी दरिन्दा उसे इस तरह की क्रान्ति करने से भी वंचित कर देता है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इस मायने में कुछ लोग बहुत कुछ उसी नकली विदेशी दरिन्दे की तरह के हैं। उन्होंने गलतियां करने और प्रतिक्रान्ति करने के बीच कोई फर्क न करते हुए ऐसे तमाम लोगों को क्रान्ति की पांतों से बहिष्कृत कर दिया जिन्होंने गलतियां की थीं, तथा वे इतने आगे बढ़ गए कि उन्होंने ऐसे अनेक लोगों को जान से मार डाला जो महज गलतियां करने के दोषी थे। हमें यह सबक अपने दिल में अच्छी तरह बैठा लेना चाहिए। पार्टी के बाहर के लोगों को क्रान्ति की पांतों से बहिष्कृत कर देना या पार्टी के भीतर गलतियां करने वाले कामरेडों को अपनी गलतियों को सुधारने का मौका न देना, ये दोनों ही बातें बुरी हैं।

जिन कामरेडों ने गलतियां की हैं उनके बारे में कुछ लोगों का कहना है कि हमें उनका पर्यवेक्षण करते रहना चाहिए और देखते रहना चाहिए कि वे अपनी गलतियां सुधार रहे हैं अथवा नहीं। लेकिन मेरा कहना है कि केवल पर्यवेक्षण करते रहने से काम नहीं चलेगा, बल्कि गलतियां सुधारने में हमें उनकी मदद भी करनी होगी। अर्थात पहली बात तो यह है कि हमें उनका पर्यवेक्षण करते रहना है और दूसरी बात यह है कि हमें उनकी मदद करते रहना है। हर व्यक्ति को मदद की जरूरत होती है; जिन लोगों ने कोई गलती नहीं की है उन्हें भी मदद की जरूरत होती है और जिन लोगों ने गलती की है उन्हें तो मदद की और भी ज्यादा जरूरत होती है। सम्भवत: ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो गलतियों से मुक्त हो, फर्क सिर्फ इतना है कि कोई ज्यादा गलती करता है तो कोई कम, और गलती करने के बाद सभी को मदद की जरूरत पड़ती है। महज पर्यवेक्षण करते रहने का मतलब है निष्क्रिय बने रहना; ऐसी परिस्थितियां पैदा करना जरूरी है जो गलतियां करने वाले लोगों के लिए अपनी गलतियां

सुधारने में मददगार साबित हो सकें। सही और गलत के बीच साफ तौर से विभाजन रेखा खींचनी जरूरी है, क्योंकि उसूल के सवाल को लेकर पार्टी के भीतर चलने वाले वाद विवाद वास्तव में समाज के अन्दर चलने वाले वर्ग-संघर्ष को ही पार्टी के भीतर प्रतिबिम्बित करते हैं, और इस सम्बन्ध में किसी भी किस्म के अस्पष्ट रुख की इजाजत नहीं दी जाएगी। यह एक स्वाभाविक बात है कि प्रत्येक मामले के गुणावगुणों को ध्यान में रखते हुए, उन कामरेडों की तथ्यों के आधार पर समुचित आलोचना की जाए जिन्होंने गलतियां की हैं, यहां तक कि उनके खिलाफ आवश्यक संघर्ष भी चलाया जाए; ऐसा करने का उद्देश्य गलतियों को सुधारने में मदद करना है। उनकी मदद करने के बजाय उनकी गलतियों पर बगलें बजाना संकीर्णतावाद का द्योतक है।

क्रान्ति के लिए यह हमेशा ही बेहतर होता है कि उसके पक्ष में ज्यादा से ज्यादा लोग हों। उन चन्द लोगों को छोड़कर जो अपनी गलतियों से चिपके रहते हैं। और बार-बार आगाह किए जाने के बावजूद अपनी गलतियां नहीं सुधारते, गलतियां करने वालों में ज्यादातर लोग ऐसे होते हैं जो अपनी गलतियों को सुधार सकते हैं। ऐसे लोग जो पहले कभी टाइफायड से पीड़ित रह चुके हैं, बाद में इस बीमारी से प्रतिरक्षित हो जाते हैं; इसी प्रकार ऐसे लोग, जिन्होंने गलतियां की हैं, बाद में कम गलतियां करेंगे, बशर्ते कि वे अपनी गलतियों से सबक सीखने में निपुण बन जाएं। दूसरी तरफ, ऐसे लोगों के मन में, जिन्होंने कभी गलतियां नहीं की हैं, अहंकार पैदा हो जाना एक आसान बात है, इसलिए उनके द्वारा गलतियां किए जाने की सम्भावना बढ़ जाती है। अतएव हमें सावधान रहना चाहिए, क्योंकि अक्सर ऐसा देखा गया है कि जो लोग गलतियां करने वालों के खिलाफ हद से ज्यादा संघर्ष करते हैं, अन्त में वे एक ऐसी स्थिति में फंस जाते हैं कि वे खुद ही संघर्ष का निशाना बन जाते हैं। काओ काङ ने एक बड़ा पत्थर उठाकर उसे दूसरों पर फेंकना चाहा, लेकिन अन्त में नतीजा केवल यही हुआ कि इस पत्थर ने खुद उसे ही धराशायी कर दिया। गलतियां करने वाले लोगों के साथ सद्भावनापूर्ण बरताव करने से लोगों का समर्थन प्राप्त होगा तथा लोगों में एकता कायम होगी। गलतियां करने वाले कामरेडों के प्रति सहायता का रुख अपनाया जाता है या शत्रुता का, यह इस बात को परखने की कसौटी है कि आपका इरादा सद्भावनापूर्ण है या दुर्भावनापूर्ण।

"भावी गलतियों से बचने के लिए पिछली गलतियों से सबक सीखने और मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करने" की नीति एक ऐसी नीति है जो समूची पार्टी को एकताबद्ध करती है। इस नीति पर डटे रहना हमारे लिए जरूरी है।

10. चीन और अन्य देशों के बीच के सम्बन्ध

हमने अन्य देशों से सीखने का नारा पेश किया है। मैं समझता हूं कि हमने ठीक किया है। आज कुछ देशों के नेतागण इस नारे को पेश करने में संकोच अनुभव करते हैं, यहां तक कि डर भी महसूस करते हैं। इस नारे को पेश करने के लिए थोड़े-बहुत साहस की जरूरत है; दूसरे शब्दों में, ऐसे करने के लिए थोथे अहंकार का परित्याग करना होगा।

इस बात को स्वीकार कर लेना चाहिए कि प्रत्येक राष्ट्र की अपनी खूबियां होती हैं। अगर

ऐसा न होता, तो वह अपना अस्तित्व कैसे कायम रख सकता ? तरक्की कैसे कर सकता ? दूसरी तरफ, प्रत्येक राष्ट्र की अपनी खामियां भी होती हैं। कुछ लोगों का विश्वास है कि समाजवाद एक बिल्कुल मुकम्मिल चीज है, जिसमें किसी प्रकार की त्रुटि है ही नहीं। लेकिन यह कैसे सच हो सकता है ? इस बात को मान लेना जरूरी है कि हर वस्तु के हमेशा दो पहलू होते हैं, उसमें खूबियां भी होती हैं और खामियां भी। हमारी पार्टी-शाखाओं के सचिवों, हमारी सेना के कम्पनी कमाण्डरों और प्लाटून लीडरों, इन सभी लोगों ने काम के अनुभवों का निचोड़ निकालते समय दोनों ही पहलुओं को, अर्थात खूबियों और खामियों को अपनी जेबी नोटबुक में लिख लेने के बारे में काफी कुछ सीख लिया है। वे सब इस तथ्य से भली भांति परिचित हैं कि हर वस्तु के दो पहलू होते हैं। तब फिर हम किसी एक ही पहलू का उल्लेख क्यों करें ? दो पहलुओं का अस्तित्व हमेशा ही कायम रहेगा, यहां तक कि अब से दस हजार साल बाद भी कायम रहेगा। प्रत्येक काल के, चाहे भविष्य हो या वर्तमान, दो पहलू होते हैं, तथा प्रत्येक व्यक्ति के भी दो पहलू होते हैं। संक्षेप में, हर वस्तु के हमेशा ही दो पहलू होते हैं, केवल एक नहीं। यह कहना कि केवल एक ही पहलू होता है, वास्तव में महज उसी एक पहलू के बारे में वाकिफ होना तथा दूसरे पहलू के बारे में नावाकिफ रहना है।

हमारी नीति सभी राष्ट्रों और सभी देशों की खूबियों से सीखने की नीति है, राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक क्षेत्रों में तथा कला-साहित्य के क्षेत्र में जो चीजें सचमुच अच्छी हैं, उन सबको सीखने की नीति है। लेकिन यह बात ध्यान में रखना जरूरी है कि सीखते समय एक विश्लेषणात्मक व आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाय और अन्धानुकरण न किया जाय, तथा जांच-परख किए बिना हर चीज की नकल न की जाय और न ही यांत्रिक ढंग से हर वस्तु को अपनाया जाय। जाहिर है कि हमें उनकी कमजोरियों व खामियों को नहीं अपनाना है।

यही दृष्टिकोण हमें सोवियत संघ व अन्य समाजवादी देशों के अनुभव से सीखते समय भी अपनाना चाहिए। पहले इस बारे में हमारे कुछ लोगों के दिमाग में सफाई नहीं थी तथा उन लोगों ने इन देशों की कमजोरियों को भी अपना लिया था। लेकिन जब वे लोग इन देशों से ली गई बातों को अपनाकर फूले नहीं समा रहे थे, तभी इन देशों में उन बातों का बाकायदा परित्याग किया जा रहा था; परिणामस्वरूप इन लोगों को कपिराज सुन ऊ-खुङ की भांति कलाबाजी खानी पड़ी। मिसाल के तौर पर, जब हमने चलचित्र मंत्रालय और संस्कृति ब्यूरो की स्थापना करने के बजाय, जैसा कि सोवियत संघ में किया गया था, संस्कृति मंत्रालय और चलचित्र ब्यूरो की स्थापना की, तो कुछ लोगों ने हमें उसूल सम्बन्धी गलती करने का दोषी ठहराया। तब उन्हें इस बात का आभास भी नहीं था कि थोड़े ही समय बाद सोवियत संघ में स्थिति बदल जाएगी और हमारी ही तरह वहां पर भी संस्कृति मंत्रालय की स्थापना कर दी जाएगी। कुछ लोग विश्लेषण करने की जहमत कभी नहीं उठाते, महज "हवा" का रुख देखकर ही काम करते हैं। अगर आज उत्तरी हवा चल रही है तो वे "उत्तरी हवा" वाले बहाव के साथ हो जाते हैं, अगर कल पछुवा हवा चलने लगे तो फिर वे "पछुवा हवा" वाले बहाव के साथ हो जाएंगे; उसके बाद अगर उत्तरी हवा कहीं फिर से चलने लगे तो वे फिर से "उत्तरी हवा" वाले बहाव की ओर वापस लौट जाएंगे। इन लोगों की अपनी कोई स्वतंत्र राय कभी

नहीं होती तथा वे अक्सर एक चरम सीमा से दूसरी चरम सीमा पर जा पहुंचते हैं।

सोवियत संघ में, जिन लोगों ने किसी समय स्तालिन की प्रशंसा के पुल बांध दिए थे उन्हीं लोगों ने आज स्तालिन को एक ही झपाटे में पापात्माओं के शुद्धगृह में पहुंचा दिया। हमारे यहां चीन में भी कुछ लोग उन्हीं के नक्शेकदम पर चल रहे हैं। केन्द्रीय कमेटी की राय है कि स्तालिन की गलतियां महज 30 प्रतिशत हैं, जबकि उनकी उपलब्धियां 70 प्रतिशत हैं, तथा सभी बातों पर गौर करने के बाद स्तालिन को एक महान मार्क्सवादी ही कहा जाएगा। इसी मूल्यांकन के आधार पर हमने अपना लेख 'सर्वहारा अधिनायकत्व के ऐतिहासिक अनुभव के बारे में' लिखा था। 30 प्रतिशत गलतियां और 70 प्रतिशत उपलब्धियां मानने वाला यह मूल्यांकन आम तौर पर ठीक है। चीन के सन्दर्भ में स्तालिन ने कई गलतियां की थीं। दूसरे क्रान्तिकारी गृहयुद्ध काल के उत्तरार्ध में वाङ मिङ का "वामपंथी" दुस्साहसवाद और जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के प्रारम्भिक काल में उसका दक्षिणपंथी अवसरवाद, इन दोनों का ही स्रोत स्तालिन की गलतियों में पाया जा सकता है। मुक्ति-युद्ध के समय, स्तालिन ने यह मत व्यक्त करते हुए कि अगर कहीं गृहयुद्ध भड़क उठता तो चीनी राष्ट्र के सामने खुद अपने ही विनाश का खतरा पैदा हो जाएगा, पहले तो हमें क्रान्ति को आगे बढ़ाने से मना कर दिया, और बाद में जब लड़ाई सचमुच भड़क उठी तो उन्होंने हमारे प्रति एक ऐसा रुख अपनाया जिसमें आधा विश्वास था और आधा शक। जब हमने युद्ध में विजय प्राप्त कर ली तो स्तालिन को यह शक होने लगा कि हमारी विजय भी टीटो की तरह की ही विजय है, और 1949 व 1950 में हमारे ऊपर उनका दबाव सचमुच ही बहुत बड़ा था। इन सब बातों के बावजूद, हम उनकी गलतियां 30 प्रतिशत और उपलब्धियां 70 प्रतिशत मानने के मूल्यांकन को ही सही समझते हैं। ऐसा करना ही उनके प्रति न्याय करना है।

सामाजिक-विज्ञान और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के क्षेत्र में जहां कहीं भी स्तालिन ने कोई सही बात कही हो, उसका हमें बड़ी लगन से अध्ययन करते रहना चाहिए। जो बातें सार्वभौमिक रूप से सत्य हैं, हमें उन सभी का अध्ययन करना चाहिए और साथ ही इस बात का ध्यान भी रखना चाहिए कि यह अध्ययन चीन की वास्तविकता के साथ जुड़ा हुआ हो। अगर हम प्रत्येक वाक्य का ज्यों का त्यों अनुसरण करने लग जाएं, चाहे वे वाक्य मार्क्स के ही कहे हुए क्यों न हों, तो फिर हर चीज गड़बड़-घोटाले में पड़ जाएगी। हमारा सिद्धान्त है मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सार्वभौमिक सत्य को चीनी क्रान्ति के ठोस व्यवहार के साथ मिलाना। एक समय था जबकि हमारी पार्टी के कुछ लोग कठमुल्लावाद की हिमायत करने लगे थे, और हमने इस बात की आलोचना की थी। फिर भी कठमुल्लावाद आज भी हमारे बीच मौजूद है। विद्याध्ययन के क्षेत्र में और आर्थिक क्षेत्र में यह आज भी मौजूद है।

प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में हम अपेक्षाकृत पिछड़े हुए हैं और इस क्षेत्र में विदेशों से सीखने के लिए हमें विशेष रूप से प्रयास करना होगा। लेकिन, हमें आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए उनसे सीखना है, उनका अन्धानुकरण नहीं करना है। प्रौद्योगिक क्षेत्र में, मैं समझता हूं कि हमें शुरू-शुरू में उनकी ज्यादातर बातों का अनुसरण करना होगा, और ऐसा करना हमारे लिए बेहतर भी है, क्योंकि हमारे पास प्रौद्योगिकी का अभाव है तथा उसके बारे में हमारी जानकारी बहुत कम है। लेकिन ऐसे मामलों के बारे में जिनकी हमें पूरी जानकारी

है, विदेशों की हर छोटी-बड़ी बात का अनुसरण करना हमारे लिए जरूरी नहीं।

यह जरूरी है कि हम विदेशों की सभी सड़ी-गली पूंजीवादी व्यवस्थाओं, विचारधाराओं और जीवन-पद्धतियों को दृढ़ता से ठुकरा दें और उनकी आलोचना करें। लेकिन पूंजीवादी देशों के समुन्नत विज्ञान व उनकी समुन्नत प्रौद्योगिकी को सीखने में तथा उनके कारोबारों की प्रबन्ध व्यवस्था में मौजूद सभी वैज्ञानिक बातों को सीखने में हमें कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं होनी चाहिए। उद्योग की दृष्टि से विकसित देशों के कारोबारों में लोग कम हैं और उत्पादकता अधिक है, तथा वे यह अच्छी तरह जानते हैं कि व्यापार कैसे किया जाता है। अपने उसूलों पर कायम रहते हुए, हमें इन सब बातों को अच्छी तरह सीख लेना चाहिए, ताकि हमारे कार्य में सुधार हो सके। आजकल जो लोग अध्ययन के विषय के रूप में अंग्रेजी को चुनते हैं, वे उसके अध्ययन में मेहनत नहीं करते, तथा विदेशों के साथ आदान-प्रदान के लिए हमारे अनुसन्धान पत्रों का अब अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन या जापानी भाषा में अनुवाद भी नहीं होता। यह भी एक किस्म का विवेकशून्य पूर्वाग्रह है। हर विदेशी वस्तु को, चाहे वह विज्ञान व प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित हो या संस्कृति से, अन्धाधुन्ध तरीके से ठुकरा देना, अथवा हर विदेशी वस्तु का अन्धानुकरण करना, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है – ये दोनों ही रवैये मार्क्सवादी दृष्टिकोण के साथ तनिक भी मेल नहीं खाते, तथा हमारे कार्य के लिए किसी भी मायने में हितकर नहीं हैं।

मेरी राय में, चीन की दो खामियां हैं, तो साथ ही उसकी दो खूबियां भी हैं।

पहले, अतीत काल में चीन एक औपनिवेशिक व अर्ध- औपनिवेशिक देश था, न कि एक साम्राज्यवादी शक्ति था, तथा दूसरे देश उस पर हमेशा सवारी गांठते रहते थे। उसके उद्योग व कृषि विकसित नहीं है तथा उसके विज्ञान व प्रौद्योगिकी का स्तर नीचा है; अपने विशाल इलाके, प्रचुर साधन-स्रोतों और बहुत बड़ी जनसंख्या, लम्बे इतिहास और साहित्य के क्षेत्र में 'लाल भवन का सपना' जैसी रचनाओं को छोड़कर, चीन कई मायनों में अन्य देशों से पीछे है, और इसलिए अहंकार करने का उसके लिए कोई सबब नहीं। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो एक बहुत लम्बे अरसे तक गुलाम रहने के कारण हर बात में अपने को हीन अनुभव करते हैं तथा विदेशियों के सम्मुख तनकर सीधे खड़े भी नहीं हो पाते। वे हू-ब-हू 'फामन मन्दिर' ऑपेरा के च्या क्वेइ ' नामक उस पात्र की तरह हैं जो बैठने के लिए कहे जाने पर भी ऐसा करने से इनकार कर देता है और यह बहाना बनाता है कि उसे तो सेवा-सुश्रूषा के लिए खड़े रहने की आदत सी पड़ गई है। यहां पर जरूरत इस बात की है कि हम अपने आपको हरकत में लाएं, अपने राष्ट्रीय आत्मविश्वास को बढ़ाएं तथा ''अमरीकी साम्राज्यवाद को नाचीज समझने'' की भावना को प्रोत्साहित करें, जिसे अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने के आन्दोलन के दौरान जागृत किया गया था।

दूसरे हमारे यहां क्रान्ति देर से हुई। हालांकि 1911 की क्रान्ति, जिसमें छिङ सम्राट का तख्ता पलट दिया गया था, रूसी क्रान्ति के पहले हुई थी, लेकिन उस समय कम्युनिस्ट पार्टी नहीं थी, इसलिए यह क्रान्ति असफल हो गई। जन-क्रान्ति की विजय अक्तूबर क्रान्ति के लगभग तीस साल बाद 1949 में हुई। इस लिहाज से भी हम ऐसी स्थिति में नहीं हैं कि अपने बारे में किसी प्रकार का अहंकार करें। सोवियत संघ की स्थिति हमारे देश की स्थिति से भिन्न है। पहले, जारशाही रूस एक साम्राज्यवादी शक्ति था और दूसरे, वहां पर अक्तूबर क्रान्ति हुई थी। नतीजे के तौर पर, सोवियत संघ में बहुत से लोग अहंकारी बन गए हैं और बहुत अधिक शेखी बघारने लगे हैं।

हमारी उक्त दो खामियां हमारी दो खूबियां भी हैं। जैसा कि मैंने अन्यत्र कहा है, पहली बात तो यह कि हम ''गरीब'' हैं और दूसरी बात यह कि हम ''कोरे'' हैं। ''गरीब'' होने से मेरा मतलब यह है कि हमारे पास उद्योग ज्यादा नहीं हैं तथा हमारी कृषि भी विकसित नहीं है। ''कोरे'' होने से मेरा मतलब यह है कि हम कागज के एक कोरे पृष्ठ की तरह हैं तथा हमारा सांस्कृतिक व वैज्ञानिक स्तर ऊंचा नहीं है। विकास की दृष्टि से यह कोई बुरी बात नहीं है। गरीब लोग ही तो क्रान्ति करना चाहते हैं, जबकि अमीरों में क्रान्ति की इच्छा होना एक मुश्किल बात है। जिन देशों में विज्ञान व प्रौद्योगिकी का स्तर ऊंचा होता है उनमें हेकड़ी कूट-कूट कर भरी होती है। हम लोग एक कोरे कागज की तरह हैं, जिस पर सुन्दर लिखाई की जा सकती है।

इसलिए ''गरीब'' और ''कोरा'' होना सब हमारे भले की बात है। भविष्य में जब एक दिन हमारा देश शक्तिशाली और समृद्ध बन जाएगा, तब भी हमारे लिए यह जरूरी होगा कि हम अपने क्रान्तिकारी रुख पर कायम रहें, विनम्र और विवेकशील बने रहें, दूसरे देशों से सीखते रहें और अहंकार से चूर होकर इतराने न लगें। यह जरूरी है कि हम न केवल अपनी पहली पंचवर्षीय योजना के दौरान दूसरे देशों से सीखते रहें बल्कि दसियों पंचवर्षीय योजनाओं के पूरा हो जाने के बाद भी सीखने का यह सिलसिला जारी रखें। अब से दस हजार साल बाद भी हमें सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए। ऐसा करने में क्या कोई बुराई है ?

मैंने कुल मिलाकर दस मसलों को लिया है। ये सभी दस सम्बन्ध दस अन्तरविरोध हैं। दुनिया में अन्तरविरोध ही अन्तरविरोध हैं। अन्तरविरोधों के बिना विश्व का अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा। हमारा कार्य इन अन्तरविरोधों को सही ढंग से हल करना है। जहां तक इस सवाल का ताल्लुक है कि व्यवहार में इन अन्तरविरोधों को सन्तोषजनक रूप से हल किया जा सकता है अथवा नहीं, इसके बारे में हमें दोनों ही सम्भावनाओं के लिए तैयार रहना चाहिए; यही नहीं, इन अन्तरविरोधों को हल करने के दौरान हमारे सामने नए अन्तरविरोधों, नई समस्याओं का पैदा होना भी लाजिमी है। लेकिन जैसा कि हम अक्सर कहते रहे हैं, आगे का रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा जरूर है लेकिन भविष्य हमारा उज्ज्वल है। यह जरूरी है कि हम पार्टी के भीतर और बाहर, देश में और विदेशों में, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सभी प्रकार के सकारात्मक तत्वों को गोलबन्द करने का भरसक प्रयास करें और चीन को एक शक्तिशाली समाजवादी देश बना दें।

नोट

अनाज के उत्पादन और खरीद-फरोख्त का कोटा निश्चित करने की व्यवस्था 1955 के बसन्त में लागू की गई थी। उस वर्ष अनाज-उत्पादन के लिए निश्चित किया गया कोटा सामान्य वर्षों के प्रति मू अनाज उत्पादन पर आधारित था तथा उत्पादन बढ़ने पर भी तीन वर्ष तक अतिरिक्त उत्पन्न उत्पन्न को न बेचने की व्यवस्था की गई थी। खरीद का कोटा निश्चित करने का मतलब है

राज्य द्वारा अतिरिक्त अनाज वाले किसान परिवारों से उनके अतिरिक्त अनाज को एक निश्चित अनुपात में खरीदना। बिक्री का कोटा निश्चित करने का मतलब है राज्य द्वारा अनाज की कमी वाले किसान परिवारों के लिए अनाज-सप्लाई का कोटा निश्चित करना। यह व्यवस्था उत्पादन-वृद्धि के हेतु किसानों का उत्साह बढ़ाने के लिए की गई थी।

[2] अनिवार्य बिक्री की व्यवस्था 1933 से 1957 तक सोवियत संघ में राज्य द्वारा कृषि-उपज खरीदने के लिए अपनाई जाने वाली एक मुख्य व्यवस्था थी, जिसके अन्तर्गत सामूहिक फार्मों और व्यक्तिगत किसान-परिवारों को हर साल राज्य द्वारा निर्धारित मूल्य पर और मात्रा में कृषि-उपज राज्य को सप्लाई करनी पड़ती थी।

[3] 'फामन मन्दिर' नामक पेकिङ ऑपेरा का एक पात्र च्वा कवेइ, जो मिङ वंश के खोजा ल्यू चिन का एक विश्वासपात्र दास था।

अमरीकी साम्राज्यवाद कागजी बाघ है

14 जुलाई 1956

अमरीका दूसरे देशों के खिलाफ आक्रमणकारी कार्यवाहियां करने के उद्देश्य से हर जगह कम्युनिस्ट-विरोधी पताका घुमा रहा है।

अमरीका को हर जगह कर्जा चुकाना है। उसे न केवल लातिन अमरीका, एशिया और अफ्रीका के देशों का कर्जा चुकाना है, बल्कि योरप और ओशेनिया के देशों का कर्जा भी चुकाना है। समूची दुनिया, जिसमें बरतानिया भी शामिल है, अमरीका को नापसन्द करती है। व्यापक जन-समुदाय उसे नापसन्द करता है। जापान अमरीका को इसलिए नापसन्द करता है क्योंकि वह उसका उत्पीड़न करता है। पूर्व का कोई भी देश अमरीकी आक्रमण से मुक्त नहीं है। अमरीका ने हमारे थाइवान प्रान्त पर आक्रमण किया है। जापान, कोरिया, फिलिपीन, वियतनाम और पाकिस्तान ये सभी देश अमरीकी आक्रमण से पीड़ित हैं, हालांकि इनमें से कुछ देश अमरीका के संश्रयकारी भी हैं। जनता असन्तुष्ट है और कुछ देशों में शासक भी असन्तुष्ट हैं।

सभी उत्पीड़ित राष्ट्र स्वाधीनता प्राप्त करना चाहते हैं।

सभी वस्तुएं परिवर्तनशील होती हैं। बड़ी ह्रासोन्मुख शक्तियों का स्थान छोटी नवोदित शक्तियां ले लेंगी। छोटी शक्तियां बड़ी शक्तियों में बदल जाएंगी, क्योंकि बहुसंख्य जनता इस परिवर्तन की मांग करती है। अमरीकी साम्राज्यवादी शक्तियां बड़ी से छोटी होती जाएंगी, क्योंकि अमरीकी जनता भी अपनी सरकार से असन्तुष्ट है।

मैं अपने जीवन-काल में ऐसे परिवर्तन स्वयं देख चुका हूं। यहां मौजूद हममें से कुछ लोग छिङ राजवंश के काल में पैदा हुए हैं तथा कुछ अन्य लोग 1911 की क्रान्ति के बाद पैदा हुए हैं।

छिङ राजवंश का तख्ता बहुत पहले ही पलटा जा चुका है। उसे किसने पलटा, उसे सुन यात-सेन के नेतृत्व में काम करने वाली पार्टी ने जनता के साथ मिलकर पलटा। सुन यात-सेन की शक्तियां इतनी छोटी थीं कि छिङ अफसर उन्हें नाचीज समझते रहे। उन्होंने बहुत से विद्रोहों का नेतृत्व किया, जो हर बार असफल रहे। लेकिन अन्त में सुन यात-सेन ने ही छिङ राजवंश का तख्ता पलट दिया। बड़ी शक्ति कोई ऐसी चीज नहीं है जिससे डरा जाए। बड़ी शक्तियों का तख्ता छोटी शक्तियों द्वारा पलट दिया जाएगा। छोटी शक्तियां बड़ी शक्तियां बन जाएंगी। छिङ राजवंश का तख्ता पलट देने के बाद, सुन यात-सेन को पराजय का सामना करना पड़ा। कारण, वे जनता की मांगों को पूरा करने में असफल रहे, जैसे उसकी जमीन की मांग और

लातिन अमरीका के दो गण्यमान्य व्यक्तियों के साथ बातचीत का एक अंश।

साम्राज्यवाद का विरोध करने की मांग। और न ही उन्होंने प्रतिक्रान्तिकारियों के दमन की आवश्यकता को समझा, जो उन दिनों आजादी से इधर-उधर घूम रहे थे। बाद में उन्हें उत्तरी युद्ध-सरदारों के सरगना युवान श-खाए के हाथों हार खानी पड़ी। युवान श-खाए की शक्तियां सुन यात-सेन की शक्तियों से बड़ी थीं। यहां फिर वही नियम लागू होता है : जनता के साथ नाता जोड़ने वाली छोटी शक्तियां मजबूत बन जाती हैं, जबकि जनता का विरोध करने वाली बड़ी शक्तियां कमजोर पड़ जाती हैं। आगे चलकर सुन यात-सेन के पूंजीवादी-जनवादी क्रान्तिकारियों ने हम कम्युनिस्टों के साथ सहयोग किया तथा हम दोनों ने एक साथ मिलकर युवान श-खाए द्वारा छोड़ी गई युद्ध-सरदारों की व्यवस्था को तहस-नहस कर दिया।

चीन में च्याङ काई-शेक के शासन को सभी देशों की सरकारों से मान्यता प्राप्त हुई और वह बाईस वर्ष तक जारी रहा तथा उसकी शक्ति सबसे बड़ी थी। हमारी शक्ति बहुत छोटी थी, पहले हमारे पास पचास हजार पार्टी-सदस्य थे, लेकिन प्रतिक्रान्तिकारी दमनचक्र के बाद कुछ ही हजार बाकी रह गए। दुश्मन ने हर जगह गड़बड़ी पैदा की। यहां फिर वही नियम लागू हुआ : बड़ी और मजबूत शक्तियां अन्त में इसलिए पराजित हो गई क्योंकि वे जनता से अलग-थलग रहीं, जबकि छोटी व कमजोर शक्तियां इसलिए विजयी हुईं, क्योंकि उन्होंने जनता के साथ नाता जोड़ लिया और उसके हित में काम किया। अन्त में ठीक यही परिणाम हुआ।

जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान जापान बहुत शक्तिशाली था, क्वोमिन्ताङ सेनाओं को दूरवर्ती प्रदेशों में खदेड़ दिया गया था, और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में काम करने वाली सशस्त्र सैन्य-शक्तियां भी केवल दुश्मन के पृष्ठभाग में स्थित ग्रामीण क्षेत्रों में ही छापामार युद्ध चला सकती थीं। जापान ने पेकिङ, थ्येनचिन, शांघाई, नानकिङ, ऊहान और क्वाङचओ जैसे बड़े-बड़े चीनी शहरों पर कब्जा कर लिया था। लेकिन जापानी सैन्यवादियों को और इसी तरह जर्मनी के हिटलर को भी उसी नियम के अनुसार कुछ ही वर्षों में धराशायी होना पड़ा।

हमें अनगिनत कठिनाइयों से गुजरना पड़ा और दक्षिण से उत्तर की तरफ खदेड़ दिया गया, तथा हमारी सैन्य-शक्ति कई लाख से घटकर दसियों हजार रह गई। 25,000 ली के लम्बे अभियान के अन्त में हमारे पास केवल 25,000 आदमी बाकी रह गए।

हमारी पार्टी के इतिहास में अनेक गलत "वामपंथी" और दक्षिणपंथी कार्य-दिशाएं अपनाई गई हैं। इनमें सबसे ज्यादा गम्भीर थीं छन तू-श्यू की दक्षिणपंथी भटकाव वाली कार्यदिशा और वाङ मिङ की "वामपंथी" भटकाव वाली कार्यदिशा। इनके अलावा चाङ क्वो-थाओ, काओ काङ और अन्य लोगों ने भी दक्षिणपंथी भटकाव वाली गलतियां कीं।

गलतियों का एक अच्छा पहलू भी होता है, क्योंकि वे जनता और पार्टी को शिक्षित कर सकती हैं। हमारे पास नकारात्मक उदाहरण से शिक्षा देने वाले बहुत से शिक्षक हैं, जैसे जापान, अमरीका, च्याङ काई-शेक, छन तू-श्यू, ली ली-सान, वाङ मिङ, चाङ क्वो-थाओ और काओ काङ। नकारात्मक उदाहरण से शिक्षा देने वाले इन शिक्षकों से सीखने के लिए हमने बहुत बड़ी कीमत चुकाई है। अतीत काल में बरतानिया ने हमारे खिलाफ कई बार युद्ध किया। बरतानिया, अमरीका, जापान, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जारशाही रूस और हालैण्ड, ये सभी हमारी भूमि पर नजर गड़ाए हुए थे। ये सभी नकारात्मक उदाहरण से शिक्षा देने वाले हमारे शिक्षक थे और हम उनके शिष्य थे।

प्रतिरोध युद्ध के दौरान जापान के खिलाफ लड़ते-लड़ते हमारे सैनिकों की संख्या बढ़ती गई और 9,00,000 तक पहुंच गई। उसके बाद मुक्ति-युद्ध शुरू हुआ। हमारे हथियार क्वोमिन्ताङ के हथियारों के मुकाबले घटिया किस्म के थे। तब क्वोमिन्ताङ की सैन्य-शक्ति चालीस लाख थी, लेकिन तीन साल की लड़ाई के दौरान हमने कुल मिलाकर उसके अस्सी लाख सैनिकों का सफाया कर दिया। अमरीकी साम्राज्यवाद की सहायता के बावजूद क्वोमिन्ताङ हमें नहीं हरा सकी। बड़ी और मजबूत शक्तियां विजयी नहीं हो सकतीं, हमेशा छोटी और कमजोर शक्तियां ही विजयी होती हैं।

इस समय अमरीकी साम्राज्यवाद काफी शक्तिशाली है, लेकिन वास्तव में वह ऐसा नहीं है। वह राजनीतिक रूप से बहुत कमजोर है, क्योंकि वह व्यापक जन-समुदाय से अलग-थलग है तथा उसे हर आदमी नापसन्द करता है और अमरीकी जनता भी नापसन्द करती है। देखने में तो वह बहुत शक्तिशाली मालूम होता है, लेकिन वास्तव में वह कोई ऐसी चीज नहीं है जिससे डरा जाए, वह एक कागजी बाघ है। बाहर से देखने पर तो यह एक बाघ मालूम होता है, लेकिन वास्तव में यह कागज से बना हुआ है तथा आंधी-वर्षा का सामना करने में असमर्थ है। मैं समझता हूं कि अमरीका महज एक कागजी बाघ है।

समूचा इतिहास, वर्ग-समाज का हजारों वर्षों का इतिहास यह साबित कर चुका है : मजबूत शक्तियों का स्थान अनिवार्य रूप से कमजोर शक्तियां ले लेती हैं। यह बात दोनों अमरीका महाद्वीपों के बारे में भी सच है।

जब साम्राज्यवाद को नेस्तनाबूद कर दिया जाएगा, केवल तभी शान्ति कायम हो सकती है। वह दिन जरूर आएगा जब कागजी बाघों का सफाया कर दिया जाएगा। लेकिन वे अपने आप खत्म नहीं हो जाएंगे, उन पर आंधी-वर्षा के थपेड़े पड़ना जरूरी है।

जब हम यह कहते हैं कि अमरीकी साम्राज्यवाद एक कागजी बाघ है तो हम यह बात रणनीति की दृष्टि से कहते हैं। सम्पूर्ण रूप से हमें उसे नाचीज समझना चाहिए। लेकिन अलग-अलग अंशों की दृष्टि से उसका पूरा-पूरा ब्यौरा नजर में रखना चाहिए। उसके पंजे और दांत हैं। हमें उसे अंश-अंश करके नष्ट करना है। उदाहरण के लिए अगर उसके दस दांत हों, तो पहली बार एक दांत तोड़ दो, बाकी नौ रह जाएंगे; दूसरी बार एक दांत और तोड़ दो, तब बाकी आठ रह जाएंगे। जब सब दांत तोड़ दिए जाएंगे, फिर भी पंजे बाकी रह जाएंगे। अगर हम उससे कदम-ब-कदम और संजीदगी के साथ निपटेंगे तो अन्त में निश्चित रूप से सफल हो जाएंगे।

रणनीति की दृष्टि से हमें अमरीकी साम्राज्यवाद को बिलकुल नाचीज समझना चाहिए। कार्यनीति की दृष्टि से हमें उसका पूरा-पूरा ब्यौरा नजर में रखना चाहिए। उसके खिलाफ संघर्ष करते समय हमें हर लड़ाई का, हर मुठभेड़ का पूरा-पूरा ब्यौरा नजर में रखना चाहिए। इस समय अमरीका शक्तिशाली है, लेकिन यदि व्यापक दृष्टि से, सम्पूर्ण रूप से और दीर्घकालीन दृष्टि से देखा जाए तो उसे जनता का समर्थन प्राप्त नहीं है, जनता उसकी नीतियों को नापसन्द करती है, क्योंकि वह जनता का उत्पीड़न और शोषण करता है। यही कारण है कि इस बाघ का सर्वनाश होना निश्चित है। अतएव वह कोई ऐसी चीज नहीं है जिससे डरा जाए, और उसे नाचीज समझा जा सकता है। लेकिन अमरीका आज भी शक्तिशाली है, वह प्रतिवर्ष 10 करोड़

टन से ज्यादा इस्पात तैयार करता है और हर जगह प्रहार करता है। यही कारण है कि हमें उसके खिलाफ अपना संघर्ष जारी रखना चाहिए, अपनी पूरी शक्ति से लड़ना चाहिए और एक के बाद एक मोर्चा फतह करते जाना चाहिए। और इसमें समय लगेगा।

ऐसा लगता है कि दोनों अमरीका महाद्वीपों तथा एशिया और अफ्रीका के देशों को अन्त तक, जब तक कागजी बाघ आंधी-वर्षा से नष्ट नहीं हो जाता, संयुक्त राज्य अमरीका के खिलाफ लड़ाई जारी रखनी होगी।

अमरीकी साम्राज्यवाद का विरोध करने के लिए, लातिन अमरीकी देशों में योरप मूल के लोगों को उन देशों के रैड-इंडियन मूल निवासियों के साथ एकता कायम करनी चाहिए। शायद योरप से वहां आकर बसने वाले श्वेत लोगों को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है, पहली श्रेणी में शासक हैं और दूसरी श्रेणी में शासित। इससे उत्पीड़ित श्वेत जनता के लिए स्थानीय जनता के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करना आसान हो जाएगा, क्योंकि उनकी स्थिति भी स्थानीय जनता जैसी ही है।

लातिन अमरीका, एशिया और अफ्रीका के हमारे दोस्त भी हमारी ही जैसी स्थिति में हैं और हमारे ही जैसा काम कर रहे हैं, साम्राज्यवादी उत्पीड़न कम करने के उद्देश्य से जनता के लिए कुछ काम कर रहे हैं। अगर हम अच्छी तरह काम करेंगे तो साम्राज्यवादी उत्पीड़न को जड़मूल से समाप्त कर सकेंगे। इस मसले के बारे में हम सब एक दूसरे के साथी हैं।

साम्राज्यवादी उत्पीड़न का विरोध करने में हमारा स्वरूप भी आपके ही समान है, केवल भौगोलिक स्थिति, राष्ट्रीयता और भाषा में भिन्नता है। लेकिन साम्राज्यवाद से हमारा स्वरूप बिलकुल भिन्न है, और उसे देखते ही हमारे दिल में कसमसाहट होने लगती है।

साम्राज्यवाद की आखिर क्या उपयोगिता है, चीनी जनता को उसकी जरूरत नहीं, और न दुनिया के दूसरे देशों की जनता को ही उसकी जरूरत है। साम्राज्यवाद का अस्तित्व कायम रहने का कोई कारण नहीं है।

पार्टी की एकता को बढ़ाओ और पार्टी की परम्पराओं को जारी रखो

30 अगस्त 1956

हम लोग आज पार्टी की आठवीं राष्ट्रीय कांग्रेस के लिए तैयारी मीटिंग शुरू कर रहे हैं। यह मीटिंग दस-पन्द्रह दिन तक चलेगी और इसके मुख्य कार्य इस प्रकार हैं : (1) पार्टी की कांग्रेस के लिए दस्तावेजों का मसौदा तैयार करना; (2) केन्द्रीय कमेटी का प्रारम्भिक चुनाव सम्पन्न करना; तथा (3) पार्टी कांग्रेस के लिए भाषण तैयार करना।

अब मुझे कुछ मुद्दों पर राय जाहिर करने की इजाजत दीजिए।

पहले, पार्टी कांग्रेस के उद्देश्य और प्रयोजन के बारे में। इस कांग्रेस में कौन-कौन से सवालों को हल किया जाना है और इसका उद्देश्य क्या है ? संक्षेप में, इसे पार्टी की सातवीं कांग्रेस के बाद प्राप्त अनुभवों का निचोड़ निकालना है, सारी पार्टी को एकताबद्ध करना है तथा देश-विदेश में उन तमाम शक्तियों के साथ एकता कायम करके जिनसे एकता कायम की जा सकती है, एक महान समाजवादी चीन का निर्माण करने के लिए संघर्ष करना है।

अनुभवों का निचोड़ निकालने के बारे में। यद्यपि हमारे पास अनुभवों का बेहद समृद्ध भंडार मौजूद है, लेकिन हमें तथ्यों के ढेर जमा नहीं कर लेना चाहिए, बल्कि मुख्य चीजों को पकड़कर, वास्तविकता से प्रस्थान करके मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुभवों का निचोड़ निकालना चाहिए। इस तरह अनुभवों का निचोड़ निकालकर हमारी सारी पार्टी को प्रोत्साहन प्राप्त होगा और हम अपना काम पहले से ज्यादा अच्छी तरह कर सकेंगे।

हमारी पार्टी एक महान, गौरवशाली और सही पार्टी है, यह एक ऐसा तथ्य है जिसे सारी दुनिया मानती है। पहले कुछ विदेशी कामरेडों को शक था कि हम वास्तव में न जाने क्या कर रहे हैं। बहुत से लोग राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के प्रति हमारी नीति को नहीं समझ पाते थे और हमारे दोष-निवारण आन्दोलन को भी साफ तौर पर नहीं समझते थे। आज मैं यह कह सकता हूं कि उन्हें पहले से ज्यादा लोग समझने लगे हैं और यह भी कहा जा सकता है कि अधिकांश लोग समझने लगे हैं। निस्सन्देह, अब भी कुछ लोग ऐसे हैं जो उन्हें नहीं समझ पाते। देश के अन्दर, यहां तक कि पार्टी के भीतर भी कुछ लोग ऐसे हैं जो उन्हें नहीं समझ पाते और यह मत रखते हैं कि पार्टी की सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस से अब तक हम जिस कार्यदिशा पर अमल करते आए हैं वह शायद उतनी सही नहीं है। लेकिन तथ्य हम सब लोगों के सामने

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की आठवीं राष्ट्रीय कांग्रेस की तैयारी मीटिंग के पहले अधिवेशन में भाषण।

मौजूद हैं; हमने दो क्रान्तियां चलाई हैं – राजसत्ता हथियाने के लिए पूंजीवादी-जनवादी क्रान्ति तथा समाजवादी रूपान्तर करने और एक समाजवादी देश का निर्माण करने के लिए सर्वहारा समाजवादी क्रान्ति। पार्टी की सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस से अब तक के इन ग्यारह वर्षों में हमने महान सफलताएं प्राप्त की हैं, जिसे सारा राष्ट्र मानता है, सारी दुनिया मानती है, यहां तक कि विदेशों में पूंजीपति वर्ग को भी मानना पड़ा है। इन दोनों क्रान्तियों से यह साबित हो गया है कि पार्टी की सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस से अब तक केन्द्रीय कमेटी की कार्यदिशा सही रही है।

अक्तूबर क्रान्ति ने पूंजीपति वर्ग का तख्ता पलट दिया। यह दुनिया के इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना थी। सभी देशों के पूंजीपति वर्ग ने बिना किसी अपवाद के, इस क्रान्ति की निन्दा की और इसके लिए कभी कोई अच्छी बात नहीं कही। रूस में पूंजीपति वर्ग एक प्रतिक्रान्तिकारी वर्ग था, जिसने उस समय राजकीय पूंजीवाद को ठुकरा दिया था, काम में ढील दिखाने और तोड़फोड़ करने की कार्यवाहियों को संगठित किया था और बन्दूकों का सहारा भी लिया था। रूसी सर्वहारा वर्ग के लिए उसे खत्म करने के सिवाय और कोई अन्य उपाय नहीं था। इससे अन्य देशों का पूंजीपति वर्ग गुस्से से आगबबूला हो गया और गाली-गलौज करने लगा। यहां चीन में हमने राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के साथ अपेक्षाकृत नरमी का बरताव किया है, इसलिए वह जरा इतमीनान महसूस करता है और उसे यह लगता है कि हमारी नीति में कुछ अच्छी बातें भी हैं। अमरीकी सम्वाददाताओं के चीन आने पर रोक लगाए जाने से यह जाहिर होता है कि आइजनहावर और डलेस को अब वास्तव में यह स्वीकार करना पड़ा है कि हमारी नीति में कुछ अच्छी बातें अवश्य मौजूद हैं। अगर हमारे यहां सभी चीजें पूर्ण रूप से अव्यवस्थित होतीं, तो वे अपने संवाददाताओं को जरूर आने देते, क्योंकि वे लोग यह समझते कि संवाददाता हमारे यहां आकर हमारी बुराई करने वाले लेख ही तो लिखेंगे। जिस चीज से वे सबसे ज्यादा डरते हैं वह यह है कि कहीं उनके लेखों में केवल बुराई करने के बदले किसी-किसी जगह कुछ अच्छी बातों का जिक्र भी न कर दिया जाए, और अगर ऐसा हुआ तो बड़ा गजब हो जाएगा।

चीन को पहले हमेशा "जीर्णशीर्ण साम्राज्य" और "पूर्वी एशिया का रुग्ण मानव" कहकर पुकारा जाता था। यह भी कहा जाता था कि चीन में आर्थिक व सांस्कृतिक पिछड़ापन है, लोगों को सफाई व स्वास्थ्य-रक्षा का ज्ञान नहीं है, गेंद के खेलों और तैराकी का स्तर नीचा है, महिलाओं के पैर बांधकर छोटे बना दिए जाते हैं, पुरुषों के सिर पर चुटियां होती हैं, खोजा लोग भी मौजूद हैं, तथा चीन एक ऐसा देश है जहां का चांद भी उतना अच्छा नहीं है और उसमें विदेशों में दिखने वाले चांद जैसी चमक नहीं है। संक्षेप में चीन में बहुत सी बुरी बातें थीं। लेकिन छः वर्ष के रूपान्तर के बाद हमने चीन की सूरत बदल दी है। हमारी सफलताओं से कोई इनकार नहीं कर सकता।

हमारी पार्टी हमारे क्रान्तिकारी कार्य का नेतृत्व-केन्द्र है। अनुभवों का निचोड़ निकालते समय इस पार्टी कांग्रेस का सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य होना चाहिए समूची पार्टी को और अधिक एकता के सूत्र में बांधना। इस वर्ष जून तक हमारे पार्टी-सदस्यों की संख्या 1,07,30,000 हो चुकी थी। एक करोड़ से ज्यादा इन पार्टी सदस्यों को शिक्षित करने, जागरूक बनाने और एकता के सूत्र में बांधने के लिए बहुत से काम करना जरूरी है, ताकि वे लोग

जनता के बीच केन्द्र की भूमिका अच्छी तरह निभा सकें। केवल पार्टी का होना ही काफी नहीं है; पार्टी सिर्फ एक केन्द्र है, उसके चारों ओर जन-समुदाय का होना भी जरूरी है। सभी क्षेत्रों में, जिनमें उद्योग, कृषि, वाणिज्य, संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र शामिल हैं, 90 फीसदी काम पार्टी-सदस्यों द्वारा नहीं बल्कि गैर-पार्टी व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। यही कारण है कि हमें जन-समुदाय के साथ एकता कायम करने और उन तमाम लोगों के साथ एकता कायम करने और मिलकर काम करने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए जिनके साथ एकता कायम की जा सकती है। समूची पार्टी को एकताबद्ध करने और पार्टी के बाहर के व्यक्तियों के साथ एकता कायम करने के हमारे प्रयास में अतीत काल में बहुत सी त्रुटियां थीं। इस कांग्रेस में और इसके बाद हमें प्रचार व शिक्षा का काम करना चाहिए, ताकि हम इस क्षेत्र में अपने काम को काफी बेहतर बना सकें।

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में, हमें दुनिया की उन तमाम शक्तियों के साथ एकता कायम करनी चाहिए जिनके साथ एकता कायम की जा सकती है, सबसे पहले सोवियत संघ, बिरादराना पार्टियों, बिरादराना देशों व उनकी जनता और तमाम शान्तिप्रिय देशों व उनकी जनता के साथ एकता कायम करनी चाहिए, तथा तमाम उपयोगी शक्तियों का समर्थन प्राप्त कर लेना चाहिए। इस बार पचास से ज्यादा देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों के प्रतिनिधि हमारी कांग्रेस में उपस्थित होंगे, यह एक बहुत अच्छी बात है। पहले हमने राजसत्ता प्राप्त नहीं की थी, दो क्रान्तियों में कामयाबी हासिल नहीं की थी और निर्माण-कार्य में भी सफलता प्राप्त नहीं की थी; अब स्थिति बिलकुल भिन्न है। हमारे विदेशी कामरेड हमारा काफी सम्मान करते हैं।

पार्टी के भीतर और बाहर तथा देश-विदेश की उन तमाम शक्तियों के साथ जिनसे एकता कायम की जा सकती है, एकता कायम करने का हमारा उद्देश्य आखिर क्या है ? वह है एक महान समाजवादी देश का निर्माण करना। हमारे जैसे देश को "महान" कहा जा सकता है और कहा भी जाना चाहिए। हमारी पार्टी एक महान पार्टी है, हमारी जनता एक महान जनता है, हमारी क्रान्ति एक महान क्रान्ति है, और हमारा निर्माण-कार्य भी एक महान निर्माण-कार्य है। 60 करोड़ आबादी वाला देश पृथ्वी पर केवल एक ही है और वह चीन ही है। अतीत काल में दूसरे लोग हमें नाचीज समझते थे और इस बात के कारण भी मौजूद थे। क्योंकि हमारा योगदान बहुत कम था, हमारा इस्पात-उत्पादन प्रतिवर्ष केवल कुछ ही लाख टन था और वह भी जापानियों के हाथ में था। च्याङ काई-शेक की क्वोमिन्ताङ के तानाशाही शासन में, जो बाईस वर्ष तक जारी रहा, इस्पात का वार्षिक उत्पादन केवल दसियों हजार टन सीमित रहा। हमारे पास अब भी ज्यादा इस्पात नहीं है, लेकिन एक आशाजनक शुरुआत हो चुकी है। इस वर्ष 40 लाख टन से ज्यादा इस्पात तैयार किया जाएगा, अगले वर्ष 50 लाख टन का लक्ष्य पार कर लिया जाएगा, तथा दूसरी पंचवर्षीय योजना के बाद एक करोड़ टन से ज्यादा और तीसरी पंचवर्षीय योजना के बाद सम्भवतः दो करोड़ टन से ज्यादा इस्पात बनने लगेगा। इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए हमें भरपूर प्रयास करना चाहिए। इस दुनिया में कुल देश सौ से कुछ ज्यादा हैं, लेकिन सिर्फ चन्द देश ही ऐसे हैं जिनका वार्षिक इस्पात-उत्पादन दो करोड़ टन से ज्यादा है। इसलिए जब चीन का अच्छी तरह निर्माण हो जाएगा तो वह एक महान समाजवादी देश बन जाएगा और पिछली एक शताब्दी से चली आई वह स्थिति पूरी तरह बदल

जाएगी जब चीन एक पिछड़ा हुआ देश था तथा दूसरे लोग उसे नाचीज व दीनहीन समझते थे। इतना ही नहीं, वह दुनिया के सबसे शक्तिशाली पूंजीवादी देश अमरीका के बराबर भी पहुंच सकेगा। अमरीका की आबादी केवल 17 करोड़ है। हमारी आबादी उससे कई गुना ज्यादा है, हमारे संसाधन भी उसी की तरह समृद्ध हैं और हमारी जलवायु भी उससे मिलती-जुलती है। इसलिए अमरीका के बराबर पहुंचना हमारे लिए सम्भव है। क्या हमें उसके बराबर नहीं पहुंच जाना चाहिए ? निश्चित रूप से पहुंच जाना चाहिए। आपकी 60 करोड़ जनता क्या कर रही है ? क्या वह सो रही है ? सोना ठीक है या काम करना ? अगर काम करना ठीक है, तो आपकी 60 करोड़ आबादी भला बीस-तीस करोड़ टन इस्पात क्यों तैयार नहीं कर सकती, जबकि अमरीका की 17 करोड़ आबादी दस करोड़ टन इस्पात तैयार कर सकती है ? अगर आप उसके बराबर नहीं पहुंच सकेंगे, तो अपने को सही प्रमाणित नहीं कर पाएंगे और इतने गौरवशाली व महान भी नहीं रह जाएंगे। अमरीका का इतिहास केवल एक सौ अस्सी वर्ष पुराना है और साठ वर्ष पहले उसका इस्पात-उत्पादन भी केवल 40 लाख टन था। इसलिए हम उससे साठ वर्ष पीछे हैं। पचास-साठ वर्ष का समय मिलने पर हमें अमरीका को अवश्य पछाड़ देना चाहिए। यह हमारा अनिवार्य कर्तव्य है। आपकी इतनी भारी आबादी है, इतनी विशाल भूमि है, इतने समृद्ध संसाधन हैं, और कहा जाता है कि आप समाजवाद का निर्माण कर रहे हैं, जिसे एक श्रेष्ठ व्यवस्था समझा जाता है; अगर पचास-साठ वर्ष के प्रयास के बाद भी आप अमरीका को न पछाड़ पाए, तो आपकी स्थिति कितनी शोचनीय हो जाएगी ! ऐसी हालत में आपका अस्तित्व पृथ्वी से मिट जाना चाहिए ! इसलिए अमरीका को पछाड़ देना न केवल सम्भव है, बल्कि अत्यन्त आवश्यक है और हमारा अनिवार्य कर्तव्य भी है। अगर हम उसे पछाड़ेंगे नहीं तो हमारा चीनी राष्ट्र अपने को दुनिया के अन्य राष्ट्रों की आशाओं के अनुरूप सिद्ध नहीं कर सकेगा और हम मानव जाति के लिए कोई बड़ा योगदान नहीं कर पाएंगे।

दूसरे, पार्टी की परम्परा को जारी रखने के बारे में। इस कांग्रेस को विचारधारा और कार्यशैली के बारे में पार्टी की श्रेष्ठ परम्पराओं को लगातार आगे बढ़ाते जाना चाहिए, मनोगतवाद व संकीर्णतावाद का कारगर रूप से विरोध करना चाहिए, तथा साथ ही नौकरशाही का भी विरोध करना चाहिए। आज मैं नौकरशाही की चर्चा नहीं करूंगा तथा केवल मनोगतवाद व संकीर्णतावाद के बारे में ही कुछ बताऊंगा। मनोगतवाद व संकीर्णतावाद ऐसी चीजें हैं जो काबू पाए जाने के बाद भी फिर से सिर उठाने लगती हैं और जिन पर फिर से काबू पाना आवश्यक है।

गलतियां करने से हमारा तात्पर्य है मनोगतवादी गलतियां करना, गलत तरीके से सोचना। स्तालिन की गलतियों की आलोचना करने वाले जिन बहुत से लेखों को हमने पढ़ा है उनमें इस विषय के बारे में बहुत कम उल्लेख किया गया है या इसका जिक्र ही नहीं किया गया है। आखिर स्तालिन ने गलतियां क्यों कीं ? क्योंकि अनेक मसलों पर उनके मनोगत विचार वस्तुगत यथार्थ से मेल नहीं खा पाए। हमारे काम में आज भी अक्सर ऐसी बातें होती रहती हैं। मनोगतवाद का तात्पर्य है वस्तुगत यथार्थ व वास्तविक सम्भावनाओं से नहीं बल्कि मनोगत इच्छाओं से प्रस्थान करना। हमारी इस कांग्रेस के दस्तावेजों में जिन बातों को तय किया जाना है और जिन बातों से निपटा जाना है, उन्हें यथासम्भव चीन की वास्तविक स्थितियों के अनुकूल

या निकट होना चाहिए। साथ ही, अपने अनुभवों की रोशनी में हमें वास्तविक स्थितियों के विपरीत दृष्टिकोणों की भी आलोचना करनी चाहिए, मनोगतवाद की आलोचना करनी चाहिए और उसके खिलाफ संघर्ष करना चाहिए। अपने लिए यह कार्य हम वर्षों पहले निर्धारित कर चुके हैं। इस समय हम समाजवादी क्रान्ति और समाजवादी निर्माण में दिखाई पड़ने वाले मनोगतवाद का विरोध कर रहे हैं। जनवादी क्रान्ति के दौरान एक लम्बे समय तक हमने मनोगतवाद के कारण भारी मुसीबतें झेलीं और भारी कीमत चुकाई। जब हम लगभग सभी आधार-क्षेत्रों में 90 प्रतिशत से ज्यादा क्रान्तिकारी शक्तियों को गंवा बैठे, सिर्फ तभी हमें होश आया। इस मसले को हम तब सही तौर पर नहीं समझ पाए जब तक येनान में दोष-निवारण आन्दोलन नहीं चलाया गया, जिसमें जांच-पड़ताल व अध्ययन पर जोर दिया गया था और वास्तविक स्थिति से प्रस्थान करने का रुख अपनाया गया था। यह निहायत जरूरी है कि मार्क्सवाद के सार्वभौमिक सत्य को चीनी क्रान्ति के ठोस अमल के साथ मिलाया जाए, अन्यथा हम कुछ नहीं कर पाएंगे। दूसरे शब्दों में, सिद्धान्त को व्यवहार के साथ मिलाया जाना चाहिए। सिद्धान्त को व्यवहार के साथ मिलाना मार्क्सवाद का एक बिलकुल बुनियादी उसूल है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के अनुसार, विचार को चाहिए कि वह वस्तुगत यथार्थ को प्रतिबिम्बित करे तथा उसे वस्तुगत व्यवहार में परखने और सही प्रमाणित करने के बाद ही सत्य माना जा सकता है, अन्यथा नहीं। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम में सफलताएं प्राप्त की हैं, फिर भी मनोगतवाद हर जगह दिखाई पड़ता है। मनोगतवाद केवल आज ही नहीं बल्कि भविष्य में भी प्रकट होगा, वह हमेशा प्रकट होता रहेगा, अब से दस हजार वर्ष बाद, यहां तक कि दस करोड़ वर्ष बाद भी प्रकट होगा और तब तक प्रकट होता रहेगा जब तक मानव जाति का अस्तित्व समाप्त नहीं हो जाता। जहां मनोगतवाद होता है वहां गलतियां भी अवश्य होती हैं।

और दूसरी चीज है संकीर्णतावाद। हर स्थान का अपना चौतरफा हित होता है, हर राष्ट्र का और समूची पृथ्वी का भी अपना-अपना चौतरफा हित होता है। इस समय मैं पृथ्वी के बाहर की बात नहीं कहूंगा, क्योंकि पृथ्वी से अन्य ग्रहों में जाने के रास्ते अभी खुले नहीं हैं। अगर किसी दिन मंगल ग्रह या शुक्र ग्रह पर मानव जाति का पता लग गया, सिर्फ तभी हमें उन लोगों के साथ एकता और संयुक्त मोर्चा कायम करने के बारे में विचार करना होगा। फिलहाल हम अपनी चर्चा का विषय केवल पार्टी के भीतर, देश के अन्दर और इस दुनिया के अन्दर की एकता के प्रश्न तक ही सीमित रखेंगे। हमारा उसूल यह है कि जो लोग विश्वशान्ति और मानव-प्रगति के कार्य के लिए जरा भी उपयोगी भूमिका अदा कर सकते हैं उनके साथ में एकता कायम कर लेनी चाहिए, चाहे वे विदेशी कम्युनिस्ट हों या विदेशी गैर-पार्टी व्यक्ति। सबसे पहले, हमें बीसियों कम्युनिस्ट पार्टियों और सोवियत संघ के साथ एकता कायम करनी चाहिए। चूंकि सोवियत संघ में कुछ गलतियां की गई हैं और उन गलतियों की इतनी ज्यादा चर्चा हो रही है और उनके बारे में इतनी ज्यादा अनाप-शनाप बातें कही जा रही हैं, इससे ऐसा लगता है मानो वे गलतियां अत्यन्त भयंकर हों। यह दृष्टिकोण अपनाना गलत है। ऐसा कोई भी राष्ट्र नहीं जो गलतियों से बिलकुल बच सकता हो, और चूंकि सोवियत संघ दुनिया का प्रथम समाजवादी देश है और इतने लम्बे समय से चला आ रहा है, इसलिए गलतियां

न करना उसके लिए असम्भव था। तब हमें सोवियत संघ की गलतियों को, उदाहरण के लिए, स्तालिन की गलतियों को किस तरह तौलना चाहिए ? उनका स्वरूप आंशिक और अस्थाई है। यद्यपि हमारे कान में यह भी पड़ा है कि कुछ चीजें बीस वर्षों से चली आ रही हैं, फिर भी वे आंशिक और अस्थाई हैं तथा उन्हें ठीक किया जा सकता है। सोवियत संघ में मुख्य धारा, मुख्य पहलू, मुख्य अंश सही है। रूस में लेनिनवाद का जन्म हुआ और अक्तूबर क्रान्ति के जरिए वह प्रथम समाजवादी देश बन गया। उसने समाजवाद का निर्माण किया, फासिस्टवाद को पराजित किया और एक शक्तिशाली औद्योगिक देश का रूप धारण कर लिया। सोवियत संघ में बहुत सी ऐसी चीजें हैं जिनसे हम सीख सकते हैं। यह स्वाभाविक है कि हमें उसके समुन्नत अनुभव से ही सीखना चाहिए, न कि पिछड़े हुए अनुभव से। जो नारा हम लगातार पेश करते आए हैं वह सोवियत संघ के समुन्नत अनुभव से सीखने का नारा है। कौन कहता है कि आप उसका पिछड़ा हुआ अनुभव बटोर लाएं ? कुछ लोग इतने विवेकहीन हैं कि उन्हें रूसी अपावनवायु में भी खुशबू आने लगती है। यह भी मनोगतवाद है। रूसी लोग खुद भी कहते हैं कि उससे बदबू आती है। इसलिए हमें विश्लेषणात्मक रवैया अपनाना चाहिए। हम अन्यत्र बता चुके हैं कि स्तालिन का मूल्यांकन करते समय उनकी उपलब्धियों को 70 प्रतिशत और गलतियों को 30 प्रतिशत मानना चाहिए। जहां तक सोवियत संघ का ताल्लुक है, वहां मुख्यत: और अधिकांश रूप से अच्छी व उपयोगी चीजें हैं और थोड़ी सी गलत चीजें भी हैं। हमारी भी कुछ चीजें अच्छी नहीं हैं; खुद हमें भी उन्हें तिलांजलि दे देनी चाहिए, दूसरे देशों को अपनाने देना तो दूर रहा। बुरी चीजें भी किसी मायने में एक तरह का अनुभव हैं और उपयोगी साबित हो सकती हैं। हमारे यहां छन तू-श्यू, ली ली-सान, वाङ मिङ, चाङ क्वो-थाओ, काओ काङ और राओ शू-श जैसे लोग हुए हैं, जिन्होंने हमारे शिक्षकों की भूमिका अदा की है। इनके अलावा हमारे कुछ अन्य शिक्षक भी हैं। देश के अन्दर सबसे अच्छा शिक्षक च्याङ काई-शेक है। जिन लोगों को हम कायल नहीं कर पाए, उन्हें च्याङ काई-शेक ने शिक्षित करके फौरन कायल कर डाला। च्याङ काई-शेक ने उन्हें आखिर कैसे शिक्षित किया था ? उसने उन्हें मशीनगनों, तोपों और विमानों के जरिए शिक्षित किया था। साम्राज्यवाद एक अन्य शिक्षक है, जिसने हमारी 60 करोड़ जनता को शिक्षित किया है। पिछले सौ वर्ष से ज्यादा समय में कुछ साम्राज्यवादी ताकतों ने हमारा उत्पीड़न किया और हमें शिक्षित किया। इस तरह बुरी चीजें भी शिक्षा प्रदान कर सकती हैं और हमारी आंखें खोल सकती हैं।

संकीर्णतावाद का विरोध करने के बारे में यह बात खास तौर पर बता देना जरूरी है कि ऐसे लोगों के साथ एकता कायम करनी चाहिए जो आपके खिलाफ संघर्ष छेड़ चुके हैं। वे लोग आपसे भिड़ चुके हैं, आपको धराशायी कर चुके हैं, आपको तकलीफ पहुंचा चुके हैं और आपकी प्रतिष्ठा को आघात पहुंचा चुके हैं, तथा यद्यपि आप इतने बुरे नहीं थे फिर भी आपको अवसरवादी की "उपाधि" से सम्मानित कर चुके हैं। अगर उनका प्रहार न्यायोचित था, तो उसे अवश्य किया जाना चाहिए था। अगर आप एक अवसरवादी थे, तो आपको प्रहार का निशाना क्यों नहीं बनाया जाना चाहिए था ? यहां मैं जिस बात की चर्चा कर रहा हूं वह अनौचित्यपूर्ण प्रहारों और संघर्षों के बारे में है। जिन लोगों ने आप पर प्रहार किया है, अगर वे अपना रवैया बदल लेते हैं और यह मान लेते हैं कि उन्होंने आपका विरोध करके गलती

की है और आपको अवसरवाद के राज्य का "राजा" घोषित करना ठीक नहीं था, तो मामले को वहीं समाप्त कर दिया जाना चाहिए। अगर चन्द लोग अपनी गलती नहीं मानते, तो क्या आप इन्तजार नहीं कर सकते ? मेरा खयाल है कि आप इन्तजार कर सकते हैं। एकता कायम करने से हमारा मतलब है उन लोगों के साथ एकता कायम करना जिनका आपसे मतभेद है, जो आपको नाचीज समझते हैं या आपका सम्मान नहीं करते, जिनका आपसे मनमुटाव रहा है या जिन्होंने आपके खिलाफ संघर्ष किया है तथा जिनके हाथों आपने तकलीफें झेली हैं। जहां तक उन लोगों का सवाल है जिनसे आपका दृष्टिकोण मिलता है, उनके साथ आप पहले ही एकताबद्ध हैं, इसलिए उनके साथ एकता कायम करने का सवाल ही नहीं उठता। यहां कठिनाई उन लोगों के बारे में है जिनके साथ एकता कायम करना अभी बाकी है। हमारा मतलब उन लोगों से है जो आपसे मतभेद रखते हैं या जिनमें गम्भीर खामियां हैं। उदाहरण के लिए, हमारी पार्टी में इस समय बहुत से ऐसे लोग हैं जो पार्टी में केवल संगठनात्मक रूप से शामिल हुए हैं, विचारधारात्मक रूप से नहीं। उन्होंने शायद आपके टक्कर न ली हो या लोहा न लिया हो, लेकिन चूंकि ऐसे लोग विचारधारात्मक रूप से पार्टी में शामिल नहीं हो पाए, इसलिए जो कुछ वे करते हैं वह अनिवार्यत: उतना संतोषजनक नहीं होता या त्रुटिपूर्ण होता है, यहां तक कि वे कुछ बुरे काम भी कर सकते हैं। ऐसे लोगों के साथ हमें एकता कायम करनी चाहिए, उन्हें शिक्षित करना चाहिए और उनकी सहायता करनी चाहिए। मैं पहले बता चुका हूं कि जिन लोगों में खामियां मौजूद हैं या जिन्होंने गलतियां की हैं, उन सभी से निपटते समय हमें न केवल यह देखना चाहिए कि वे अपने को सुधारने जा रहे हैं या नहीं, बल्कि उनकी खामियों व गलतियों को दूर करने में सहायता भी करनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमें पहले उनका पर्यवेक्षण करना चाहिए और उसके बाद उनकी सहायता करनी चाहिए। केवल पर्यवेक्षण करने का मतलब है एक तरफ खड़े होकर यह देखना कि वे क्या करते हैं। वे अगर अच्छा आचरण करते हैं तो बहुत अच्छी बात है, और अगर अच्छा आचरण नहीं करते तो उन्हें मुसीबत उठाने दी जाए। यह एक निष्क्रिय रवैया है, सक्रिय रवैया नहीं। मार्क्सवादियों को चाहिए कि वे सक्रिय रवैया अपनाएं, यानि न केवल पर्यवेक्षण करें बल्कि सहायता भी करें।

तीसरे, केन्द्रीय कमेटी के चुनाव के बारे में। कामरेड तङ श्याओ-फिङ ने अभी बताया है कि आठवीं केन्द्रीय कमेटी के सदस्यों की संख्या 150 से 170 तक होगी। यह संख्या सातवीं केन्द्रीय कमेटी के 77 सदस्यों की तुलना में दुगुनी से कुछ ज्यादा है और शायद अपेक्षाकृत उचित है। आगामी कुछ वर्षों तक या यों कहिए कि आगामी पांच वर्षों तक, केन्द्रीय कमेटी के सदस्यों की संख्या में बढ़ोतरी न करना शायद बेहतर होगा। आज जो बहुत से सुयोग्य व्यक्ति अत्यन्त उपयोगी काम कर रहे हैं उन्हें जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान प्रशिक्षित किया गया है और वे "सन 38 की किस्म" के कार्यकर्ता कहलाते हैं। ये लोग आज हमारे कार्य का मुख्य सम्बल हैं और इनके बिना हमारा काम नहीं चल सकता। लेकिन ऐसे कार्यकर्ताओं की संख्या बहुत बड़ी है, और अगर उन सबके लिए व्यवस्था की जाए तो केन्द्रीय कमेटी के सदस्यों की संख्या सैकड़ों तक पहुंच जाएगी। इसलिए इस बार हम ऐसी व्यवस्था नहीं करेंगे। हम यहां उपस्थित साथियों से इस बात पर विचार करने का अनुरोध करते हैं कि क्या केन्द्रीय कमेटी द्वारा प्रस्तावित 150 से 170 तक की संख्या उचित है या नहीं, और अगर उचित नहीं है तो

वह कितनी होनी चाहिए।

इस बात की पुष्टि की जानी चाहिए कि मौजूदा केन्द्रीय कमेटी के सदस्यों ने अच्छा काम किया है और वे सातवीं कांग्रेस के विश्वास के अनुरूप साबित हुए हैं। पिछले ग्यारह वर्षों में उन्होंने कोई भारी गलती किए बिना चीन की जनवादी क्रान्ति, समाजवादी क्रान्ति और समाजवादी निर्माण का सही नेतृत्व किया है, सभी प्रकार के अवसरवाद के खिलाफ संघर्ष किया है और गलत बातों के खिलाफ संघर्ष किया है, तथा इस प्रकार क्रान्ति और निर्माण के लिए प्रतिकूल सभी तत्वों पर विजय प्राप्त की है। उन्होंने उपलब्धियां प्राप्त की हैं और इन उपलब्धियों को प्राप्त करने में वे साथी भी शामिल थे जिन्होंने गलतियां की हैं। यहां मैं केन्द्रीय कमेटी के बारे में समूचे रूप में कह रहा हूं। इनेगिने साथियों के बारे में यह मूल्यांकन सही नहीं है, खास तौर पर वाङ मिङ के बारे में। सातवीं कांग्रेस में, अपनी चमड़ी बचाने के लिए उन्होंने एक लिखित बयान पेश किया, जिसमें उन्होंने यह स्वीकार किया कि केन्द्रीय कमेटी की कार्यदिशा सही है और कहा कि वे सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस की राजनीतिक रिपोर्ट को स्वीकार करते हैं और इसके निर्णयों का पालन करने को तैयार हैं। लेकिन कुछ समय बाद जब मैंने उनसे बातचीत की तो उन्होंने अपना रुख बिलकुल बदल दिया और वे अपने लिखित वक्तव्य को भी भूल गए। सोच-विचार करने के बाद दूसरे दिन उन्होंने कहा कि वे कुछ ऐसी चीज जरूर लिख चुके हैं जिसमें उन्होंने अपनी गलतियां मानी हैं। मैंने उनसे कहा कि इतने पर भी अगर वे अपनी गलतियां मानने से इनकार करना चाहते हों तो अपना लिखित वक्तव्य वापस ले लें। लेकिन उन्होंने अपना वक्तव्य वापस नहीं लिया। बाद में दूसरे पूर्ण अधिवेशन में हमने आशा व्यक्त की कि वे अपनी गलतियों के बारे में कुछ कहेंगे, लेकिन इसके बजाय उन्होंने कुछ दूसरी ही बातें कहीं और हमारी तारीफ के पुल बांध दिए। हमने कहा कि यह सब बताने की जरूरत नहीं है और वे केवल यह बताएं कि उन्होंने यानी खुद वाङ मिङ ने क्या-क्या गलतियां की हैं, लेकिन उन्होंने हमारी एक न सुनी। उन्होंने वचन दिया कि अधिवेशन के बाद वे एक आत्म-आलोचना लिखेंगे। लेकिन बाद में उन्होंने बताया कि वे बीमार पड़ गए थे और मानसिक काम नहीं कर सकते थे तथा ज्यों ही लिखना शुरू करते, बीमारी फिर भड़क उठती थी। शायद वे जानबूझकर बीमारी का बहाना कर रहे थे, यह बात निश्चयपूर्वक कहना कठिन है। वे अब भी बीमार चले आ रहे हैं और इस कांग्रेस में उपस्थित नहीं हो सकेंगे। क्या हम उन्हें चुनेंगे ? और क्या हम कामरेड ली ली-सान को भी चुनेंगे ? ऐसे कामरेडों की संख्या अधिक है जो ली ली-सान को माफ करने के लिए तैयार हैं, जबकि ऐसे कामरेड कम हैं जो वाङ मिङ को माफ करने के लिए तैयार हों। जैसा कि कामरेड तङ श्याओ-फिङ ने कहा है, अगर हम उन लोगों को चुनेंगे तो इसका अर्थ उन्हें सातवीं कांग्रेस में चुनने के समान ही होगा। सातवीं कांग्रेस के समय बहुत से डेलीगेट उन लोगों को (न केवल वाङ मिङ को बल्कि अन्य कई साथियों को) चुनने के लिए तैयार नहीं थे। उस समय हमने कहा था कि अगर हमने ऐसी नीति अपनाई है तो हम जरूर गलती कर बैठेंगे। जिन लोगों ने गलतियां की हैं उन्हें न चुनकर आखिर हम गलती क्यों कर बैठेंगे ? क्योंकि इसका मतलब यह होगा कि हम भी उन्हीं के पद चिन्हों पर चल रहे हैं। उनका तरीका यह था कि जहां एक बार किसी को अवसरवादी घोषित कर दिया गया तो उसे त्याज्य समझा जाए, चाहे उसने सचमुच गलती

की हो या नहीं। अगर हम यह तरीका अपनाते, तो हम भी उन्हीं की कार्यदिशा का, वाङ मिङ की ही कार्यदिशा या ली ली-सान की ही कार्यदिशा का अनुसरण करते। हम ऐसा कोई काम नहीं करेंगे, हम वाङ मिङ की या ली ली-सान की कार्यदिशा का किसी भी हालत में अनुसरण नहीं करेंगे। उनके प्रभाव में पार्टी के अन्दरूनी सम्बन्ध ऐसे हो गए थे कि उन तमाम साथियों को, जिन्होंने गलतियां की थीं या उनके खिलाफ संघर्ष किया था अथवा उन्हें अवसरवादी घोषित किया था, बिना किसी अपवाद के, बहिष्कृत कर दिया गया। उन्होंने अपने आपको सौ फीसदी बोलशेविक जतलाने की कोशिश की, लेकिन बाद में यह साबित हो गया कि वे सौ फीसदी अवसरवादी हैं, जबकि हम जैसे लोगों ने, जिन पर उन्होंने ''अवसरवादी'' का लेबिल लगाया था, कुछ मार्क्सवाद को आत्मसात कर लिया है।

यहां मामले का सारतत्व यह है कि वे लोग इक्के-दुक्के व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि निम्न-पूंजीपति वर्ग के एक काफी बड़े भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं। चीन में निम्न-पूंजीपति वर्ग का विशाल समुदाय मौजूद है। निम्न-पूंजीपति वर्ग का काफी बड़ा भाग डांवाडोल होता रहता है। उदाहरण के लिए, सब लोग साफ तौर पर समझते हैं कि खुशहाल मध्यम किसान हर क्रान्ति में हमेशा डांवाडोल बने रहते हैं और मजबूती से कभी नहीं टिकते, जब हर्षित होते हैं तो खुशी से पागल हो जाते हैं और जब निराश होते हैं तो सिर धुनने लगते हैं। अक्सर उनकी आंखों में अपनी वह रत्तीभर अनमोल सम्पत्ति समाई रहती है जिसमें एक-दो ढुलाई-जुताई पशुओं, एक छकड़े और एक दर्जन मू जमीन के सिवाय और कुछ नहीं होता। वे लोग हानि-लाभ के बारे में बड़े चिन्तित रहते हैं और अपनी सम्पत्ति को गंवाने से डरते हैं। वे गरीब किसानों से भिन्न होते हैं। गरीब किसानों की संख्या उत्तर चीन के देहातों की आबादी में 50 प्रतिशत और दक्षिण चीन के देहातों की आबादी में 70 प्रतिशत है। वर्ग-संरचना की दृष्टि से हमारी पार्टी मुख्य रूप से मजदूर और गरीब किसान, यानी सर्वहारा और अर्ध-सर्वहारा वर्ग के लोगों से बनी है। अर्ध-सर्वहारा वर्ग के लोग भी निम्न-पूंजीपति वर्ग के ही अन्तर्गत आते हैं, लेकिन वे मध्यम किसानों के मुकाबले कहीं अधिक अडिग होते हैं। हमारी पार्टी की पांतों में बुद्धिजीवियों का भी एक भाग शामिल किया गया है, और एक करोड़ से ज्यादा पार्टी-सदस्यों में उच्च, मध्यम और निम्न श्रेणी के बुद्धिजीवियों की संख्या लगभग दस लाख है। यह कहना उचित नहीं होगा कि ये दस लाख बुद्धिजीवी साम्राज्यवाद का अथवा जमींदार वर्ग, नौकरशाह पूंजीपति वर्ग या राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं; उन्हें निम्न-पूंजीपति वर्ग के अन्तर्गत रखना शायद अधिक उपयुक्त होगा। वे मुख्य रूप में निम्न-पूंजीपति वर्ग के किस भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं ? वे शहरी और देहाती निम्न-पूंजीपति वर्ग के उस भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसके पास उत्पादन के साधन अपेक्षाकृत अधिक हैं, जैसे खुशहाल मध्यम किसान। हमारी पार्टी के ये बुद्धिजीवी सदस्य ''आगे नाग और पीछे बाघ से डरते हैं'', वे हमेशा डांवाडोल होते रहते हैं, उनके अन्दर मनोगतवाद काफी ज्यादा होता है और संकीर्णतावाद भी कम नहीं होता। वाङ मिङ की कार्यदिशा और ली ली-सान की कार्यदिशा का प्रतिनिधित्व करने वाले इन दोनों व्यक्तियों का हमारे द्वारा चुना जाना किस बात का द्योतक है ? यह इस बात का द्योतक है कि हम विचारधारात्मक गलतियां करने वालों के साथ और प्रतिक्रान्तिकारियों व फूटपरस्त लोगों (छन तू-श्यू, चाङ क्वो-थाओ, काओ काङ और राओ

शु-श जैसे लोगों) के साथ अलग-अलग किस्म का बरताव करते हैं। वाङ मिङ और ली ली-सान ने खुले तौर पर अपने मनोगतवाद और संकीर्णतावाद का ढोल पीटा और अपने राजनीतिक प्रोग्राम के जरिए दूसरों पर धाक जमाने की कोशिश की। वाङ मिङ ने खुद अपना राजनीतिक प्रोग्राम पेश किया था और इसी तरह ली ली-सान ने भी। बेशक, छन तू-श्यू का भी अपना अलग राजनीतिक प्रोग्राम था, लेकिन उसने त्रात्स्की का रास्ता अपनाया, फूटपरस्ती पर अमल किया और बाहर से पार्टी-विरोधी सरगरमियां कीं। चाङ क्वो-थाओ षड्यंत्रकारिता और फूटपरस्ती में लगा हुआ था और अन्त में क्वोमिन्ताङ से जा मिला। इसलिए वाङ मिङ और ली ली-सान का मसला महज दो व्यक्तियों का मसला नहीं है; यहां महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे मसलों के सामाजिक कारण होते हैं। हमारी पार्टी में इन सामाजिक कारणों की अभिव्यक्ति का एक रूप यह है कि नाजुक घड़ी आने पर पार्टी-सदस्यों की एक अच्छी खासी तादाद डांवाडोल हो जाती है। डांवाडोल होने वाले ये तत्व अवसरवादी होते हैं। इसका मतलब यह है कि ऐसे लोग कोई काम केवल तभी करते हैं जब इससे उन्हें कोई लाभ हो, और अगर किसी काम से उन्हें लाभ न हो तो कोई दूसरा काम शुरू कर देते हैं। उनका कोई निश्चित सिद्धान्त नहीं होता, उनका कोई निश्चित नियम नहीं होता तथा उनकी कोई निश्चित दिशा नहीं होती; आज इस रास्ते पर चलते हैं तो कल कोई अन्य रास्ता पकड़ लेते हैं। उदाहरण के लिए, वाङ मिङ ठीक इसी तरह के आदमी हैं। पहले वे एक हद दर्जे के ''वामपंथी'' थे और बाद में एक हद दर्जे के दक्षिणपंथी बन गए।

सातवीं कांग्रेस में हमने बहुत से कामरेडों को समझा-बुझाकर वाङ मिङ और ली ली-सान को निर्वाचित कराया था। तब से अब तक इन ग्यारह वर्षों में क्या हमें इसके परिणामस्वरूप कोई नुकसान उठाना पड़ा है ? नहीं, कोई नुकसान नहीं उठाना पड़ा। वाङ मिङ और ली ली-सान के चुने जाने से हमें न तो क्रान्ति में हार खानी पड़ी और न विजय प्राप्त करने में कुछ महीनों की देरी हुई।

क्या इनके चुने जाने से गलतियां करने वाले लोगों को प्रोत्साहन मिला है ? ''जिन लोगों ने गलतियां की हैं वे अब केन्द्रीय कमेटी में पहुंच गए हैं, इसलिए हम लोग भी गलतियां करें, जिससे हमें भी केन्द्रीय कमेटी में चुने जाने का मौका मिल जाए !'' क्या ऐसा होगा ? नहीं, ऐसा नहीं होगा। जरा देखिए तो, हमारी केन्द्रीय कमेटी के सत्तर से ज्यादा सदस्यों में एक भी ऐसा नहीं है जिसने जानबूझकर महज इसलिए गलतियां की हों कि उसे फिर से केन्द्रीय कमेटी में चुना जा सके। जो लोग केन्द्रीय कमेटी के सदस्य नहीं हैं, वे चाहे 1938 के पहले, 1938 में या उसके बाद क्रान्ति में शामिल हुए हों, क्या वे केवल केन्द्रीय कमेटी में चुने जाने योग्य बनने के लिए ही वाङ मिङ और ली ली-सान का अनुसरण करते हुए दो कार्यदिशाएं और पेश करेंगे तथा इस प्रकार उनकी कुल संख्या चार तक पहुंचा देंगे ? नहीं, वे ऐसा नहीं करेंगे, कोई भी ऐसा नहीं करेगा। इसके विपरीत, उनकी गलतियों से सबक सीखकर हमारे साथी पहले से ज्यादा सतर्क हो जाएंगे।

यहां एक बात और बता दी जाय। अतीत काल में हमें ऐसी बातें सुनाई देती थीं : ''क्रान्ति में पहले शामिल होने के बदले बाद में शामिल होना ज्यादा अच्छा है, और सबसे अच्छा तो यह है कि हम क्रान्ति में शामिल ही न हों !'' अब वाङ मिङ और ली ली-सान के चुने जाने

से क्या पार्टी में यह धारणा पैदा नहीं होगी कि सही होने के मुकाबले गलत होना ज्यादा अच्छा है और छोटी गलतियां करने के मुकाबले बड़ी गलतियां करना ज्यादा अच्छा है ? अगर वाङ मिङ और ली ली-सान को, जिन्होंने पार्टी की कार्यदिशा से सम्बन्धित गलतियां की थीं, केन्द्रीय कमेटी में चुना जाता है, तो उनके वास्ते दो सीटें खाली रखने के लिए दो ऐसे साथियों को अलग हटना पड़ेगा जो सही साबित हुए हैं या केवल छोटी गलतियां कर चुके हैं। ऐसी व्यवस्था करना क्या दुनिया में अत्यन्त अन्यायपूर्ण नहीं है ? इस दृष्टि से देखा जाए तो ऐसा करना सचमुच अन्यायपूर्ण प्रतीत होगा। जरा देखिए तो, जो लोग सही साबित हुए हैं या जिन्होंने केवल छोटी गलतियां की हैं, उन्हें बड़ी गलतियां करने वालों के लिए जगह खाली रखनी पड़ती है। यह स्पष्टतः अन्याय है, इसे लेशमात्र भी न्यायसंगत नहीं माना जा सकता। अगर इस तरह तुलना की जाय, तो यह मानना पड़ेगा कि सही होने के मुकाबले गलत होना ज्यादा अच्छा है और छोटी गलतियां करने के मुकाबले बड़ी गलतियां करना ज्यादा अच्छा है। लेकिन अगर दूसरी दृष्टि से विचार किया जाए, तो मामला बिलकुल भिन्न प्रतीत होगा। पार्टी की कार्यदिशा से सम्बन्धित उनकी गलतियां सारे देश में और समूची दुनिया में ज्ञात हो चुकी हैं, और उनके चुने जाने का कारण ठीक यही है कि उनका नाम चारों तरफ फैल गया है। इस सिलसिले में आप क्या कर सकते हैं ? उनका नाम चारों तरफ फैल गया है; लेकिन गलतियां न करने या केवल छोटी गलतियां करने के बावजूद आपका नाम उनकी तरह चारों तरफ नहीं फैला हुआ है। हमारे जैसे देश में, जहां निम्न-पूंजीपति वर्ग के लोग भारी तादाद में मौजूद हैं, ये दोनों व्यक्ति पताकाओं की तरह हैं। अगर हम उन्हें चुन लेंगे तो बहुत से लोग कहेंगे : ''कम्युनिस्ट पार्टी उनके प्रति धीरज से काम लेने को तैयार है और उनके लिए दो सीटें खाली रखने के लिए भी सहमत है, ताकि वे अपनी गलतियां सुधार सकें।'' वे अपनी गलतियां सुधार सकेंगे या नहीं, यह दूसरी बात है और एक महत्त्वहीन बात है, जिससे केवल उन दोनों का सम्बन्ध है। बात दरअसल यह है कि हमारे देश में इतनी बड़ी संख्या में निम्न-पूंजीपति वर्ग के लोग मौजूद हैं, हमारी पार्टी में इतनी बड़ी संख्या में निम्न-पूंजीपति वर्ग से आए डांवाडोल तत्व मौजूद हैं और बुद्धिजीवियों के बीच इतनी बड़ी संख्या में इस प्रकार के डांवाडोल तत्व मौजूद हैं; वे सब इन्हें नमूना मानकर यह देखना चाहते हैं कि हम इनके मामलों को कैसे निपटाते हैं। जब वे यह देखेंगे कि ये दोनों पताकाएं अभी बरकरार हैं, तो उन्हें चैन मिलेगा, वे सुख की नींद सो सकेंगे और प्रसन्न होंगे। अगर आप इन दोनों पताकाओं को उखाड़ फेंकेंगे, तो वे शायद घबरा उठेंगे। इसलिए सवाल यह नहीं है कि वाङ मिङ और ली ली-सान अपनी गलतियां सुधार लेते हैं या नहीं, यह कोई ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात नहीं है। महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारी पार्टी में निम्न-पूंजीपति वर्ग से आए वे दसियों लाख सदस्य जो आसानी से डांवाडोल हो सकते हैं, और खास तौर पर बुद्धिजीवी यह देख रहे हैं कि वाङ मिङ और ली ली-सान के प्रति हम कैसे रवैया अपनाते हैं। यह भूमि-सुधार के दौरान हमारे द्वारा धनी किसानों के साथ किए गए बरताव की ही तरह है; जब हमने धनी किसानों को अछूता छोड़ दिया तो मध्यम किसान निश्चिन्त हो गए। अगर हम आठवीं कांग्रेस में भी इन दोनों व्यक्तियों के प्रति वैसा ही रवैया अपनाएंगे जैसा सातवीं कांग्रेस में अपनाया था, तो इससे हमारी पार्टी को कुछ उपलब्धि ही होगी, कुछ लाभ ही होगा, यानी सारे देश के निम्न-पूंजीपति वर्ग के व्यापक

को खोजने देहातों में जाते हैं तो वे लोग उनका विश्वास तब तक प्राप्त नहीं कर सकते जब तक वे उनके प्रति यथोचित रवैया नहीं अपना लेते। शहरी बुद्धिजीवी देहात के मामलों के बारे में और किसानों के मनोभावों के बारे में बहुत कम जानकारी रखते हैं, और वे किसानों की समस्याओं को अक्सर उतने ठीक ढंग से हल नहीं कर पाते। हमारा अनुभव है कि केवल लम्बी अवधि के बाद ही तथा किसानों के साथ सचमुच एकरूप होने और उन्हें इस बात का यकीन दिलाने के बाद ही कि हम उनके हितों के लिए लड़ रहे हैं, हमें विजय प्राप्त हो सकती है। ऐसा हरगिज न सोचें कि किसान हम पर फौरन विश्वास कर लेंगे। उनसे यह उम्मीद न करें कि ज्यों ही हम उनकी कुछ सहायता करेंगे, वे हम पर फौरन विश्वास करने लग जाएंगे।

किसान सर्वहारा वर्ग के मुख्य संश्रयकारी हैं। शुरू में हमारी पार्टी ने भी किसानों के बीच काम करने के महत्व को नहीं समझा था तथा शहरों के काम को पहला स्थान और देहातों के काम को दूसरा स्थान दिया था। मुझे ऐसा लगता है कि भारत और इण्डोनेशिया जैसे कुछ एशियाई देशों की पार्टियों ने देहातों में उतनी अच्छी तरह काम नहीं किया है।

शुरू में, हमारी पार्टी किसानों के बीच काम करने में सफल नहीं रही। बुद्धिजीवियों में एक तरह की बू थी, बुद्धिजीवी होने की बू थी। इसलिए वे देहातों में नहीं जाना चाहते थे और देहातों को हिकारत की नजर से देखते थे। किसान भी बुद्धिजीवियों को देखकर कसमसाहट महसूस करने लगते थे। इसके अतिरिक्त उस समय हमारी पार्टी देहातों को समझने का रास्ता नहीं खोज पाई थी। लेकिन बाद में जब हम फिर एक बार वहां गए, तो हमने रास्ता खोज लिया, देहाती इलाकों के विभिन्न वर्गों का विश्लेषण किया और किसानों की क्रान्तिकारी मांगों को समझ लिया।

पहले काल में हमें देहातों के बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं थी। छन तु-श्यू की दक्षिणपंथी अवसरवादी कार्यदिशा के अन्तर्गत किसानों का, जो हमारे मुख्य संश्रयकारी हैं, परित्याग कर दिया गया था। हमारे बहुत से कामरेड देहातों को एक समाकृति समझने के बदले एक समतल आकृति समझते थे, यानी वे यह नहीं जानते थे कि देहातों को वर्ग-दृष्टिकोण से कैसे समझा जाय। जब उन्होंने मार्क्सवाद को आत्मसात कर लिया, केवल तभी उन्होंने देहातों को समझने के लिए वर्ग-दृष्टिकोण अपनाना शुरू किया। देहातों की संरचना समतल नहीं थी, बल्कि वहां धनी लोगों, गरीब लोगों और बहुत गरीब लोगों की श्रेणियां मौजूद थीं, खेतिहर मजदूरों, गरीब किसानों, मध्यम किसानों, धनी किसानों और जमींदारों की श्रेणियां मौजूद थीं। इस काल में मैंने देहातों का अध्ययन किया और किसान आन्दोलन प्रतिष्ठानों की स्थापना करके उनमें कई शिक्षण-टर्म चलाए। हालांकि मुझे मार्क्सवाद का कुछ न कुछ ज्ञान था, फिर भी देहातों के बारे में मेरी समझदारी बहुत गहरी नहीं थी।

दूसरे काल में हमें अपने अच्छे शिक्षक च्याङ काई-शेक का शुक्रिया अदा करना चाहिए। उसने हमें देहातों में धकेल दिया। यह एक लम्बा काल था, गृह-युद्ध के दस वर्षों का काल था, जिसके दौरान हम उसके खिलाफ लड़ते रहे, और इस प्रकार हमें देहातों का अध्ययन करने के लिए मजबूर कर दिया गया। पहले कुछ वर्षों में, देहातों के बारे में हमारी समझदारी उतनी गहरी नहीं थी, लेकिन बाद में वह पहले से बेहतर और पहले से ज्यादा गहरी होती गई। इस काल में तीन "वामपंथी" अवसरवादी कार्य-दिशाओं ने, जिनका प्रतिनिधित्व क्रमशः छ्वी

छ्यु-पाए, ली ली-सान और वाङ मिङ ने किया, हमारी पार्टी को भारी नुकसान पहुंचाया, खास तौर पर वाङ मिङ की "वामपंथी" अवसरवादी कार्यदिशा ने हमारी पार्टी के अधिकांश देहाती आधार-क्षेत्रों को तहस-नहस कर डाला।

इसके बाद तीसरा काल यानी जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध का काल आया। जब जापानी साम्राज्यवादियों ने चीन पर आक्रमण कर दिया, तो हमने क्वोमिन्ताङ के खिलाफ लड़ना बन्द कर दिया और उसकी जगह जापानी साम्राज्यवादियों से लड़ने लगे। उस समय हमारे साथी क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों के शहरों में खुल्लमखुल्ला जा सकते थे। वाङ मिङ ने, जो पहले "वामपंथी" अवसरवादी कार्यदिशा अपनाने की गलती कर चुके थे, अब दक्षिणपंथी अवसरवादी कार्यदिशा अपनाने की गलती की। उन्होंने पहले कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की अति-वामपंथी नीति पर अमल किया था और अब अति-दक्षिणपंथी नीति पर अमल करने लगे। वे भी नकारात्मक उदाहरण से शिक्षित करने वाले एक अच्छे शिक्षक थे और उन्होंने भी हमारी पार्टी को शिक्षित किया। अपने नकारात्मक उदाहरण से हमें शिक्षित करने वाले एक अन्य अच्छे शिक्षक ली ली-सान थे। उस समय उन लोगों की मुख्य गलती थी कठमुल्लावाद पर अमल करना, विदेशी अनुभवों को यांत्रिक ढंग से लागू करना। हमारी पार्टी ने उनकी गलत कार्यदिशाओं को समाप्त कर दिया और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सार्वभौमिक सत्य को चीन की ठोस स्थितियों के साथ मिलाने का रास्ता सचमुच खोज निकाला। फलस्वरूप चौथे काल में जब च्याङ काई-शेक ने हम पर आक्रमण किया, तो हमारे लिए उसका तख्ता पलट देना और चीन लोक गणराज्य की स्थापना करना सम्भव हो सका।

चीन की क्रान्ति के अनुभव, यानी देहाती आधार-क्षेत्रों का निर्माण करना, देहातों की तरफ से शहरों को घेर लेना और अन्त में शहरों पर कब्जा कर लेना, सम्भवतः आपके बहुत से देशों में पूरी तरह लागू नहीं हो सकेंगे, हालांकि वे संदर्भ-सामग्री के रूप में आपके काम आ सकते हैं। मैं आपको विनम्रतापूर्वक परामर्श देना चाहता हूं कि चीन के अनुभवों को यांत्रिक रूप से लागू न करें। किसी भी अन्य देश के अनुभव केवल संदर्भ-सामग्री के रूप में ही काम आ सकते हैं, उन्हें कठमुल्ला सूत्र नहीं समझना चाहिए। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का सार्वभौमिक सत्य और आपके अपने देश की ठोस स्थितियां – इन दोनों को एक-दूसरे से मिलाना जरूरी है।

अगर आप किसानों को अपने पक्ष में करना चाहते हैं और उन पर निर्भर रहना चाहते हैं, तो आपको देहाती इलाकों में जांच-पड़ताल करनी चाहिए। इसका तरीका यह है कि एक या एक से ज्यादा गांवों में जाकर जांच-पड़ताल की जाए तथा देहातों की वर्ग-शक्तियों, आर्थिक स्थिति, रहन-सहन की हालत इत्यादि की स्पष्ट जानकारी हासिल करने के लिए कुछ हफ्ते वहां बिताए जायं। मुख्य नेताओं को, जैसे पार्टी के महासचिव को यह काम स्वयं करना चाहिए और एक या दो गांवों की जानकारी हासिल कर लेनी चाहिए; उन्हें इस काम के लिए समय निकाल लेना चाहिए, क्योंकि ऐसा करना लाभदायक है। हालांकि बहुत सी गौरैया हैं, लेकिन सबकी चीरफाड़ करना जरूरी नहीं है; केवल एक या दो की चीरफाड़ करना ही काफी होगा। जब पार्टी के महासचिव एक या दो गांवों की जांच-पड़ताल कर लेंगे और यह जान लेंगे कि वहां कैसी हालत है, तो वे गांवों की जानकारी प्राप्त करने तथा वहां की ठोस स्थितियों का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करने में अपने साथियों की मदद कर सकेंगे। मुझे लगता है कि बहुत

से देशों में पार्टियों के महासचिव एक या दो "गौरैयों" की चीरफाड़ करने के काम को महत्व नहीं देते; यह सच है कि वे देहातों के बारे में कुछ न कुछ जानते हैं, लेकिन उनकी जानकारी बहुत गहरी नहीं है, और इसलिए उनके द्वारा जारी किए गए निर्देश देहातों की स्थिति से ज्यादा मेल नहीं खाते। इसी तरह केन्द्रीय, प्रान्तीय और काउण्टी स्तर पर भी पार्टी के नेतृत्वकारी निकायों के इनचार्ज साथियों को स्वयं एक या दो गांवों की जांच पड़ताल करनी चाहिए अथवा एक या दो "गौरैयों" की चीरफाड़ करनी चाहिए। यह "शल्य-विज्ञान" कहलाता है।

जांच-पड़ताल करने के दो तरीके हैं : एक तरीका है घोड़े पर सवार होकर फूलों को देखना और दूसरा तरीका है घोड़े से उतर कर फूलों को देखना। अगर आप घोड़े पर सवार होकर फूलों को देखेंगे तो आप पर केवल सतही प्रभाव पड़ेगा, क्योंकि फूलों की तादाद इतनी ज्यादा है। लातिन अमरीका से एशिया आकर आप लोगों ने घोड़े पर सवार होकर फूलों को देखा है। आपके अपने देश में भी इतने ज्यादा फूल हैं कि उन्हें केवल एक झलक देखना और फिर आगे बढ़ जाना काफी नहीं है; इसलिए दूसरा तरीका अपनाना जरूरी है, यानी घोड़े से उतर कर फूलों को देखना, उनका निकट से अवलोकन करना और किसी एक "फूल" का विश्लेषण करना, अथवा किसी एक "गौरैया" की चीरफाड़ करना।

साम्राज्यवादी उत्पीड़न के शिकार देशों में पूंजीपति वर्ग दो प्रकार का होता है – राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग और दलाल पूंजीपति वर्ग। क्या आपके देशों में भी पूंजीपति वर्ग दो प्रकार का है ? शायद है।

दलाल-पूंजीपति वर्ग हमेशा ही साम्राज्यवाद का पालतू कुत्ता होता है और क्रान्ति के प्रहार का निशाना होता है। दलाल-पूंजीपति वर्ग के विभिन्न ग्रुपों का ताल्लुक अमरीका, बरतानिया और फ्रांस जैसे विभिन्न साम्राज्यवादी देशों के इजारेदार पूंजीपतियों के ग्रुपों से होता है। विभिन्न दलाल ग्रुपों के खिलाफ संघर्ष करते समय साम्राज्यवादी देशों के बीच के अन्तरविरोधों का फायदा उठाना जरूरी है, पहले उनमें से एक से निपट लिया जाए और केवल तात्कालिक मुख्य दुश्मन पर ही प्रहार किया जाए। उदाहरण के लिए, अतीत काल में चीन के दलाल-पूंजीपति वर्ग में बरतानिया-परस्त, अमरीका-परस्त और जापान-परस्त ग्रुप शामिल थे। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान हमने एक पक्ष में बरतानिया व अमरीका तथा दूसरे पक्ष में जापान के बीच के अन्तरविरोधों का फायदा उठाया, तथा पहले जापानी आक्रमणकारियों को और उन पर निर्भर दलाल ग्रुप को धराशायी किया। उसके बाद ही हम अमरीका व बरतानिया की आक्रमणकारी शक्तियों पर प्रहार करने और अमरीका-परस्त व बरतानिया-परस्त दलाल ग्रुपों को धराशायी करने के काम में लग गए। जमींदार वर्ग में भी कई धड़े होते हैं। बेहद प्रतिक्रियावादी जमींदारों की संख्या थोड़ी होती है, और जब हम प्रहार करें तो उन जमींदारों को जो देशभक्त हैं और साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ने के पक्षधर हैं, बेहद प्रतिक्रियावादी जमींदारों के समकक्ष न रखें। यही नहीं, बड़े और छोटे जमींदारों के बीच भी अवश्य फर्क करना चाहिए। एक ही समय में बहुत से दुश्मनों पर प्रहार न करें, केवल कुछ ही दुश्मनों पर प्रहार करें, यहां तक कि बड़े जमींदारों में से भी केवल मुट्ठीभर बेहद प्रतिक्रियावादी जमींदारों पर ही प्रहार करें। हर एक पर प्रहार करना देखने में तो बड़ा क्रान्तिकारी लगता है, लेकिन वास्तव में इससे भारी नुकसान होता है।

राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग हमारा विरोधी है। चीन में एक लोकप्रिय कहावत है, "प्रतिपक्षियों

का सदैव परस्पर मिलन होता है"। चीनी क्रान्ति का एक अनुभव यह है कि राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के साथ निपटते समय सावधानी बरतने की जरूरत है। वह जहां एक तरफ मजदूर वर्ग का विरोध करता है वहां दूसरी तरफ साम्राज्यवाद का भी विरोध करता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि हमारा मुख्य कार्य साम्राज्यवाद और सामन्तवाद के खिलाफ संघर्ष करना है तथा जब तक इन दोनों दुश्मनों का तख्ता नहीं पलट दिया जाता तब तक जनता की मुक्ति का प्रश्न ही नहीं उठता, चाहे जैसे भी हो, हमें राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग को साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष के पक्ष में कर लेना चाहिए। राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग को सामन्तवाद विरोधी संघर्ष में कोई दिलचस्पी नहीं है, क्योंकि जमींदार वर्ग के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। यही नहीं वह मजदूरों का उत्पीड़न व शोषण भी करता है। इसलिए हमें इसके खिलाफ संघर्ष करना चाहिए। लेकिन साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष में उसे अपने पक्ष में करने के लिए हमें यह जान लेना चाहिए कि संघर्ष के दौरान कब रुकना उचित है, यानी संघर्ष को न्यायोचित आधार पर, हमारे फायदे के लिए तथा संयम के साथ चलाया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमारे संघर्ष का एक न्यायोचित आधार होना चाहिए, उसमें विजय प्राप्त करने का पक्का विश्वास होना चाहिए, और समुचित मात्रा में विजय प्राप्त हो जाने पर हमें संयम से काम लेना चाहिए। अतएव यह जरूरी है कि दोनों पक्षों की स्थितियों की, मजदूरों और पूंजीपतियों दोनों की स्थितियों की जांच-पड़ताल की जाए। अगर हम केवल मजदूरों के बारे में जानते हैं और पूंजीपतियों के बारे में नहीं जानते, तो हम पूंजीपतियों के साथ वार्ता नहीं कर पाएंगे। इस सिलसिले में यह भी जरूरी है कि विशिष्ट नमूने चुनकर उनकी जांच-पड़ताल की जाए, अथवा एक या दो "गौरैयों" की चीरफाड़ की जाए; इसी तरह घोड़े पर सवार होकर फूलों को देखने और घोड़े से उतर कर फूलों को देखने के तरीकों को भी इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

साम्राज्यवाद और सामन्तवाद के खिलाफ संघर्ष के पूरे ऐतिहासिक काल में, हमें राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग को अपने पक्ष में कर लेना चाहिए तथा उसके साथ एकता कायम करनी चाहिए, जिससे वह साम्राज्यवाद का विरोध करने में जनता का साथ दे। साम्राज्यवाद और सामन्तवाद का विरोध करने का काम मुख्य रूप से पूरा हो जाने पर भी, हमें राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के साथ कुछ समय के लिए अपना संश्रय बनाए रखना चाहिए। यह साम्राज्यवादी आक्रमण से निपटने, उत्पादन का विकास करने और बाजार में स्थिरता बनाए रखने में तथा पूंजीवादी बुद्धिजीवियों को अपने पक्ष में करने और उनका नव रूपान्तर करने में फायदेमन्द साबित होगा।

आप लोग अभी राजसत्ता प्राप्त नहीं कर पाए, बल्कि उसे प्राप्त करने की तैयारी कर रहे हैं। राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के प्रति "एकता और संघर्ष दोनों पर अमल करने" की नीति अपनाई जानी चाहिए। साम्राज्यवाद-विरोधी मुश्तरका संघर्ष में उसके साथ एकता कायम करें और उसकी तमाम साम्राज्यवाद-विरोधी कथनी व करनी का समर्थन करें, जबकि उसकी प्रतिक्रियावादी, मजदूर वर्ग-विरोधी और कम्युनिस्ट-विरोधी कथनी व करनी के खिलाफ समुचित रूप से संघर्ष चलाएं। एकांगीपन ठीक नहीं होता; एकता के बिना संघर्ष करना "वामपंथी" भटकाव की गलती है और संघर्ष के बिना एकता कायम करना दक्षिणपंथी भटकाव की गलती है। हमारी पार्टी में ये दोनों ही तरह की गलतियां हो चुकी हैं और हम इनसे कड़वे सबक सीख चुके हैं। बाद में हमने इन दोनों प्रकार के अनुभवों का निचोड़ निकाला और तब से "एकता और संघर्ष दोनों पर अमल करने", यानी जब आवश्यक हो संघर्ष करने और जब सम्भव हो एकता

कायम करने की नीति को लागू किया। संघर्ष का उद्देश्य है राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के साथ एकता कायम करना और साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष में विजय प्राप्त करना।

साम्राज्यवादी और सामन्ती उत्पीड़न के शिकार देशों में, सर्वहारा वर्ग की राजनीतिक पार्टी को चाहिए कि वह राष्ट्रीय पताका को ऊंचा उठाए और राष्ट्रीय एकता के एक ऐसे प्रोग्राम पर अमल करे जिसके जरिए केवल साम्राज्यवाद के पालतू कुत्तों को छोड़कर, उन तमाम शक्तियों के साथ एकता कायम की जाए, जिनके साथ एकता कायम की जा सकती है। पूरे राष्ट्र को यह मालूम होने दिया जाए कि कम्युनिस्ट पार्टी कितनी देशभक्त है, कितनी शान्तिप्रिय है और राष्ट्रीय एकता के लिए कितनी इच्छुक है। इससे साम्राज्यवाद और उसके पालतू कुत्तों को, साथ ही बड़े जमींदारों के वर्ग और बड़े पूंजीपतियों के वर्ग को अलगाव की स्थिति में डालने में मदद मिलेगी।

कम्युनिस्टों को गलतियां करने से नहीं डरना चाहिए। गलतियों का दोहरा चरित्र होता है। एक तरफ तो वे पार्टी और जनता को नुकसान पहुंचाती हैं तथा दूसरी तरफ अच्छे शिक्षक की भूमिका निभाती हुई पार्टी और जनता दोनों को अच्छी शिक्षा देती हैं, और यह क्रान्ति के लिए लाभदायक है। असफलता सफलता की जननी है। अगर असफलता में कोई भी अच्छाई न हो तो वह सफलता की जननी कैसे बन सकती है ? जब बहुत सी गलतियां हो जाती हैं तो परिवर्तन होना अनिवार्य है। यह मार्क्सवाद है। ''वस्तुएं जब अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाती हैं तो अपने विपरीत तत्त्वों में बदल जाती हैं''; जब गलतियों का अम्बार लग जाता है तो प्रकाश की किरण ज्यादा दूर नहीं रह जाती।

डा. सुन यात-सेन की स्मृति में

12 नवम्बर 1956

आइए, हम अपने महान पूर्वगामी क्रान्तिकारी डा.सुन यात-सेन के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें !

हम उस तीव्र संघर्ष के लिए उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जिसे उन्होंने एक चीनी क्रान्तिकारी जनवादी का स्पष्ट रुख अपनाते हुए हमारी जनवादी क्रान्ति के तैयारी काल में चीन के सुधारवादियों के खिलाफ चलाया था। इस संघर्ष के दौरान वे चीन के क्रान्तिकारी जनवादियों के ध्वजवाहक थे।

हम उस असाधारण योगदान के लिए उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जिसे उन्होंने 1911 की क्रान्ति के दौरान जनता का नेतृत्व करके राजतंत्र का तख्ता पलट देने और गणराज्य की स्थापना करने के कार्य में किया था।

हम उस असाधारण योगदान के लिए उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जिसे उन्होंने क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी के बीच सहयोग के पहले दौर में पुराने तीन जन-सिद्धान्तों को नए तीन जन-सिद्धान्तों में विकसित करके किया था।

वे हमारे लिए बहुत सी ऐसी विरासत छोड़ गए हैं जो राजनीतिक विचारधारा के क्षेत्र में बहुत उपयोगी है।

केवल मुट्ठी भर प्रतिक्रियावादियों को छोड़कर, वर्तमान चीन की समूची जनता उस क्रान्तिकारी कार्य की उत्तराधिकारी है जिसके लिए डा. सुन यात-सेन ने अपने आपको समर्पित कर दिया था।

हमने डा. सुन यात-सेन द्वारा अधूरी छोड़ी गई जनवादी क्रान्ति को पूरा कर लिया है, और उसे समाजवादी क्रान्ति में विकसित कर दिया है। आज कल हम इस क्रान्ति को पूरा करने में जुटे हुए हैं।

वस्तुएं सदैव प्रगति करती रहती हैं। 1911 की क्रान्ति को अभी केवल पैंतालीस वर्ष हुए हैं, लेकिन चीन का रूप बिल्कुल बदल गया है। अगले पैंतालीस वर्षों में, यानी इक्कीसवीं शताब्दी के शुरू में 2001 ईसवी तक चीन में इससे भी ज्यादा बड़े परिवर्तन हो चुके होंगे। तब चीन एक शक्तिशाली समाजवादी औद्योगिक देश बन चुका होगा। और ऐसा ही उसे होना भी चाहिए। चीन एक ऐसा देश है जिसका क्षेत्रफल 96,00,000 वर्ग किलोमीटर है और जिसकी जनसंख्या 60 करोड़ है, तथा उसे मानव जाति के लिए अपेक्षाकृत अधिक योगदान करना

डा. सुन यात-सेन की नब्बेवीं जन्म-जयन्ती के उपलक्ष में लिखा गया लेख।

चाहिए। लेकिन अतीत काल में एक लम्बे समय तक उसका योगदान बहुत कम रहा है। इस बात का हमें खेद है।

लेकिन हमें विनम्र बने रहना चाहिए, न केवल आज विनम्र बने रहना चाहिए बल्कि पैंतालीस वर्ष बाद भी, दरअसल हमेशा ही विनम्र बने रहना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के क्षेत्र में, चीन के लोगों को बड़े राष्ट्र के शोविनिज्म से दृढ़ता के साथ, सर्वांगीण रूप से, समग्र रूप से और सम्पूर्ण रूप से छुटकारा पा लेना चाहिए।

डा. सुन एक विनम्र व्यक्ति थे। मैंने उनका भाषण कई अवसरों पर सुना था और मैं उनके चरित्र की दृढ़ता से बहुत प्रभावित हुआ था। उन्होंने चीन के अतीत और वर्तमान का तथा अन्य देशों का, जिनमें सोवियत संघ भी शामिल है, जिस लगन के साथ अध्ययन किया उसे देखकर मुझे मालूम हो गया कि वे एक ग्रहणशील व्यक्ति थे।

उन्होंने चीन के रूपान्तर के लिए तन-मन से काम किया तथा इस कार्य के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया; उनके बारे में यह कहना बिलकुल सही है कि जब तक उनके तन में प्राण रहे तब तक वे अपनी सम्पूर्ण योग्यता से, अपनी सम्पूर्ण सामर्थ्य से काम करते रहे।

इतिहास की उन अनेक महान विभूतियों की ही तरह जो घटनाक्रम के विकास का मार्गदर्शन करने में सबसे आगे रहते हैं, डा. सुन में भी कुछ खामियां मौजूद थीं। इन खामियों की व्याख्या ऐतिहासिक परिस्थितियों के प्रकाश में की जानी चाहिए, जिससे जनता उन्हें समझ सके; अपने पूर्वगामियों के प्रति हमें बहुत ज्यादा आलोचनात्मक रुख नहीं अपनाना चाहिए।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की आठवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे प्लेनरी अधिवेशन में भाषण

15 नवम्बर 1956

मैं चार समस्याओं की चर्चा करना चाहता हूं : अर्थव्यवस्था, अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति, चीन और सोवियत संघ के सम्बन्ध तथा वृहद जनवाद व अल्प जनवाद की समस्या।

1

हमें हर समस्या का चौतरफा विश्लेषण करना चाहिए, केवल तभी हम उसका यथोचित समाधान कर सकते हैं। आगे बढ़ने या पीछे हटने, घोड़े पर सवार होने या उससे उतरने की क्रिया का द्वन्द्ववाद के अनुरूप होना जरूरी है। दुनिया में घोड़े पर सवार होने या उससे उतरने, आगे बढ़ने या पीछे हटने की घटनाएं हमेशा होती रहती हैं। दिन भर घोड़े से उतरे बिना उस पर सवार रहना भला कैसे सम्भव है ? जब हम चलते हैं तो हमारे दोनों पांव एक साथ आगे नहीं बढ़ते, बल्कि एक पांव हमेशा दूसरे के पीछे रहता है। जब हम एक कदम बढ़ाते हैं तो हमारा एक पांव आगे बढ़ जाता है और दूसरा पीछे रह जाता है, और जब हम दूसरा कदम आगे बढ़ाते हैं, तो हमारा पीछे वाला पांव आगे बढ़ जाता है और आगे वाला पीछे रह जाता है। सिनेमा में हम देखते हैं कि सभी पात्र पर्दे पर लगातार गतिमान रहते हैं, लेकिन जब फिल्म-स्ट्रीप को देखते हैं तो उसका हर दृश्य गतिहीन होता है। 'च्वाङ च में आसमान के नीचे' शीर्षक निबन्ध में कहा गया है : ''उड़ते पक्षी की छाया गतिमान नहीं होती।'' सभी वस्तुएं गतिमान होने के साथ-साथ गतिहीन भी होती हैं – यह हमारी दुनिया का द्वन्द्ववाद है। न तो विशुद्ध गतिहीनता का अस्तित्व होता है और न विशुद्ध गति का। गति परिस्थिति निरपेक्ष होती है, जबकि स्थिरता अस्थायी और परिस्थिति सापेक्ष होती है।

हमारी योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था सन्तुलित होने के साथ-साथ असन्तुलित भी है। सन्तुलन अस्थायी और परिस्थिति सापेक्ष होती है। सन्तुलन अस्थायी रूप से कायम रहने के बाद असन्तुलन में बदल जाएगा। पहली छमाही का सन्तुलन दूसरी छमाही के असन्तुलन में बदल जाएगा; चालू वर्ष का सन्तुलन अगले वर्ष के असन्तुलन में परिणत हो जाएगा। बिना व्यवधान के हर समय सन्तुलन बनाए रखना असम्भव है। हम मार्क्सवादियों का विचार है कि असन्तुलन, अन्तरविरोध, संघर्ष और विकास निरपेक्ष होते हैं, जबकि सन्तुलन और स्थिरता सापेक्ष होते हैं। सापेक्ष होने का मतलब है अस्थायी और परिस्थिति सापेक्ष होना। इस दृष्टि से देखा जाए, तो क्या हमारी अर्थव्यवस्था आगे बढ़ रही है या पीछे हट रही है ? हमें कार्यकर्ताओं को और

विशाल जन-समुदाय को बता देना चाहिए कि वह आगे बढ़ने के साथ-साथ पीछे भी हट रही है, लेकिन मुख्यत: आगे बढ़ रही है, एक सीधी लाइन में नहीं, बल्कि लहरों की तरह आगे बढ़ रही है। हालांकि ऐसे मौके भी आते हैं जब हम घोड़े से उतर जाते हैं, फिर भी साधारणत: ज्यादातर समय ऐसा होता है जब हम उस पर सवार रहते हैं। हमारी सभी स्तरों की पार्टी कमेटियां, विभिन्न केन्द्रीय विभाग और सभी स्तरों की सरकारें क्या प्रगति को प्रोत्साहन दे रही हैं या प्रतिगमन को ? बुनियादी रूप से कहा जाए, तो वे प्रगति को प्रोत्साहन दे रही हैं। समाज निरन्तर आगे बढ़ता जा रहा है, प्रगति और विकास आम रुझान है।

क्या पहली पंचवर्षीय योजना सही है ? मैं इस राय से सहमत हूं कि वह बुनियादी रूप से सही है, जैसा कि उसे कार्यान्वित करने के प्रथम चार वर्षों में साफ तौर पर जाहिर हो गया है। यह सच है कि कुछ गलतियां भी हुई हैं, लेकिन उनसे बचना मुश्किल था क्योंकि हमारे पास अनुभव की कमी है। क्या हम भविष्य में तब भी गलतियां करते रहेंगे जब हमें अनेक पंचवर्षीय योजनाओं का अनुभव प्राप्त हो जाएगा ? जी हां, हम तब भी गलतियां करते रहेंगे। प्राप्त अनुभव कभी पर्याप्त नहीं होता। क्या दस हजार वर्ष बाद भी योजना बनाने में कोई गलती न करना सम्भव होगा ? दस हजार वर्ष बाद के मामलों का हम लोगों से कोई ताल्लुक नहीं है, लेकिन यह निश्चित है कि तब भी गलतियां की जाएंगी। नौजवान लोग गलतियां करेंगे तो क्या बूढ़े लोग गलतियां नहीं करेंगे ? कनफ्यूशियस ने कहा है कि 70 वर्ष की आयु में उन्होंने जो कुछ भी किया वह वस्तुगत नियम के अनुरूप था[1], लेकिन मुझे उनकी इस बात पर यकीन नहीं है, वे महज डींग मार रहे थे। अपनी पहली पंचवर्षीय योजना के लिए हमने निर्धारित प्रतिमान से ऊपर की कुछ निर्माण-परियोजनाओं के डिजाइन सोवियत संघ की सहायता से तैयार किए हैं, लेकिन ज्यादातर निर्माण-परियोजनाओं के डिजाइन खुद ही तैयार किए हैं। क्या आप यह समझते हैं कि चीन के लोग असमर्थ हैं ? ऐसी बात नहीं है, हम भी समर्थ हैं। लेकिन साथ ही यह मानना भी जरूरी है कि हम उतने ज्यादा समर्थ नहीं हैं, क्योंकि अब भी कुछ निर्माण परियोजनाओं के डिजाइन हम खुद नहीं बना सकते। पिछले कुछ वर्षों में हमारे निर्माण-कार्य में एक समस्या मौजूद रही है। जैसा कि कुछ साथियों ने कहा है, सिर्फ ''हड्डियों'' पर ही ध्यान दिया गया है, ''मांस'' पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। कारखानों की इमारतें खड़ी कर दी गई हैं और मशीनरी व अन्य साज-सामान लगा दिया गया है, लेकिन इनके साथ-साथ म्युनिसिपल निर्माण-कार्यों और सेवाओं की व्यवस्था नहीं की गई है, और यह भविष्य में एक बड़ी समस्या बन जाएगी। मेरे विचार से इसका असर पहली पंचवर्षीय योजना के दौरान नहीं बल्कि दूसरी या सम्भवत: तीसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान पड़ेगा। पहली पंचवर्षीय योजना सही है या नहीं, इसके बारे में हम एक आंशिक निष्कर्ष अभी निकाल सकते हैं और दूसरा अगले वर्ष, लेकिन पूर्ण निष्कर्ष निकालना दूसरी पंचवर्षीय योजना के अन्तिम दौर में ही सम्भव हो सकेगा। योजना बनाने में मनोगतवाद से सौ फीसदी बचना असम्भव है। थोड़ी-बहुत गलतियां करना उतना बुरा नहीं है। उपलब्धियों का दोहरा स्वरूप होता है, उसी तरह गलतियों का भी दोहरा स्वरूप होता है। उपलब्धियां आदमी को प्रोत्साहन देती हैं, लेकिन साथ ही उसे घमंडी भी बना सकती हैं; गलतियां आदमी को मायूस और बेचैन बना देती हैं, इसलिए वे हमारी दुश्मन हैं, लेकिन साथ ही वे हमारी अच्छी शिक्षक भी हैं। कुल

मिलाकर यह कहा जा सकता है कि पहली पंचवर्षीय योजना में अब तक कोई गम्भीर या बुनियादी गलती नजर नहीं आई है।

यह जरूरी है कि हम कार्यकर्ताओं व जन-समुदाय के उत्साह की हिफाजत करें तथा उस पर ठंडा पानी न उड़ेल दें। एक बार कुछ व्यक्तियों ने कृषि के समाजवादी रूपान्तर के कार्य पर ठंडा पानी उड़ेल दिया था, और उस समय ''प्रतिगमन को प्रोत्साहन देने वाली कमेटी'' मौजूद थी। बाद में हमने बताया कि ठंडा पानी उड़ेल देना ठीक नहीं है, इसलिए इसके विरुद्ध हमने प्रगति को प्रोत्साहन देने वाली कमेटी स्थापित कर ली। मूल योजना के अनुसार मिलकियत के समाजवादी रूपान्तर का कार्य बुनियादी तौर पर अठारह वर्ष में पूरा करना था, लेकिन प्रोत्साहन देने के परिणामस्वरूप उसे बहुत जल्दी पूरा कर लिया गया है। कृषि-विकास प्रोग्राम के मसौदे में प्रावधान है कि उच्च स्तर की कृषि सहकारिता को 1958 में पूरा कर लिया जाना चाहिए, लेकिन अब ऐसा लगता है कि हम इस वर्ष के जाड़ों या अगले वर्ष के वसन्त में ही उसे पूरा कर लेंगे। हालांकि इस प्रक्रिया के दौरान अनेक त्रुटियां भी रह जाएंगी, मगर फिर भी यह प्रतिगमन को प्रोत्साहन देने वाली कमेटी से बेहतर है; किसान लोग खुश हुए हैं और कृषि-उत्पादन बढ़ गया है। सहकारी रूपान्तर के बिना इस वर्ष इतने गम्भीर प्राकृतिक संकट की स्थिति में अनाज की पैदावार में 20 अरब चिन से अधिक की बढ़ोतरी होना असम्भव था। संकटग्रस्त इलाकों में सहकारी समितियों के होने की वजह से उत्पादन के जरिए राहत-कार्य करने में भी सहायता मिलती है। कार्यकर्ताओं व जन-समुदाय की खामियों तथा साथ ही हमारी खुद की खामियों की आलोचना करते समय इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि कार्यकर्ताओं व जन-समुदाय की पहलकदमी सुरक्षित रहे, और इस तरह उनके अन्दर पर्याप्त उत्साह पैदा हो जाएगा। जब जन-समुदाय कोई ऐसा काम कराना चाहता हो जिसे करना फिलहाल असम्भव है, तो इसका कारण उसे स्पष्ट रूप से समझा दिया जाना चाहिए, और ऐसा निश्चित रूप से किया जा सकता है।

वार्षिक राजकीय बजट तय करने से पहले उस पर तीन बार विचार-विमर्श किया जाना चाहिए। कहने का मतलब यह है कि हमारी केन्द्रीय कमेटी के कामरेडों और अन्य सम्बन्धित कामरेडों को उस पर विचार-विमर्श करने और उसे तय करने के लिए मीटिंगों का आयोजन करना चाहिए। इस प्रकार हम सब लोग बजट की विषय-वस्तु को समझ सकेंगे। वरना हमेशा की ही तरह केवल इनचार्ज कामरेड ही उसे अपेक्षाकृत अच्छी तरह समझ सकेंगे, जबकि हम लोग सिर्फ हां में हां मिलाते रहेंगे। तथापि क्या उसकी विषय-वस्तु के बारे में कुछ जानते हैं अथवा नहीं ? मैं कहता हूं, जानते भी हैं और नहीं भी, यानी उसके बारे में हमारी जानकारी बहुत ज्यादा नहीं है। तीन बार विचार-विमर्श करके तय करने का तरीका अपनाने के बाद क्या आप कह सकेंगे कि उसे अच्छी तरह समझ गए हैं ? शायद नहीं, और तब भी हमारे व इनचार्ज कामरेडों के बीच फर्क बना रहेगा। वे लोग रंगमंच पर काम करने वाले ऑपेरा-अभिनेताओं जैसे हैं, गाना जानते हैं; हम दर्शकों जैसे हैं, गाना नहीं जानते। लेकिन अगर हम अक्सर ऑपेरा देखने जाते हों, तो हम अपेक्षाकृत सही तौर पर पहचान सकते हैं कि कौन सा अभिनेता ज्यादा श्रेष्ठ है और कौन सा कम। आखिर अभिनेताओं की कला का मूल्यांकन दर्शकों द्वारा ही तो किया जाता है। और दर्शकों की ही मदद से तो अभिनेता अपनी खामियां दूर करते हैं। इसी

बात में दर्शक श्रेष्ठ हैं। अगर किसी ऑपेरा को जनता बारम्बार देखना पसन्द करती है तो उसका मंचन जारी रखा जा सकता है। जिन ऑपेराओं को जनता ज्यादा पसन्द नहीं करती उन्हें बदल दिया जाना चाहिए। यही कारण है कि हमारी केन्द्रीय कमेटी के अन्दर विशेषज्ञों और गैर-विशेषज्ञों के बीच का अन्तरविरोध मौजूद है। विशेषज्ञों की अपनी विशिष्टताएं हैं और गैर-विशेषज्ञों की अपनी। गैर-विशेषज्ञ यह बता सकते हैं कि क्या सही है और क्या गलत।

1956 की राजकीय बजट विषयक रिपोर्ट में ''यकीनी तौर पर विश्वसनीय'' वाक्यांश का प्रयोग किया गया है, और मेरा सुझाव है कि अब से इसे ''पूर्ण रूप से विश्वसनीय'' में बदल दिया जाय। इस वर्ष जनवरी में बुद्धिजीवियों की समस्या के बारे में आयोजित मीटिंग में मैंने ''पूर्ण रूप से विश्वसनीय'' वाक्यांश का प्रयोग किया था। ''यकीनी तौर पर'' और ''विश्वसनीय'' में पुनरुक्ति दोष मौजूद है। ''विश्वसनीय'' की विशेषता बताने के लिए ''यकीनी तौर पर'' का प्रयोग करने से न तो कोई चीज बढ़ती है और न सीमित होती है। विशेषण पद एक तरफ तो किसी वस्तु की विशेषता बताते हैं और दूसरी तरफ उसके अर्थ को सीमित कर देते हैं। किसी वस्तु को ''पूर्ण रूप से विश्वसनीय'' बताकर विश्वसनीयता के दर्जे का उल्लेख किया जाता है, यानी यह कहा जाता है कि वह साधारण रूप से विश्वसनीय नहीं बल्कि पूर्ण से विश्वसनीय है। किसी वस्तु को पूर्ण रूप से विश्वसनीय बनाना आसान नहीं है। जब इस वर्ष जून में आयोजित राष्ट्रीय जन-प्रतिनिधि सभा में बजट को स्वीकार किया गया तो सब लोग कहते थे कि वह विश्वसनीय है। अब ऐसा मालूम होता है कि इस बजट का दस प्रतिशत से कम भाग अविश्वसनीय है, क्योंकि कुछ मदों को समुचित प्राथमिकता नहीं दी गई है और कुछ में ज्यादा रकम खर्च करने की व्यवस्था की गई है। इसलिए यह जरूरी है कि भविष्य में हम बजट की कुछ मदों को प्राथमिकता देने पर ध्यान दें। ये प्राथमिकताएं आखिर ठीक हैं या नहीं इस पर विशेषज्ञों को ध्यान देना चाहिए, लेकिन साथ ही हमें भी ध्यान देना चाहिए, और खास तौर पर प्रान्तीय स्तर के साथियों को ध्यान देना चाहिए। बेशक, इस पर हर व्यक्ति को ध्यान देना चाहिए।

हमें और प्रान्तों, म्युनिसिपलटियों व स्वायत्त प्रदेशों की पार्टी कमेटियों के सचिवों को चाहिए कि वित्त व योजना से सम्बन्धित कार्यों को गिरफ्त में रखें। कुछ साथियों ने पहले इनकी ओर गम्भीरतापूर्वक ध्यान नहीं दिया। साथियो, कृपया आप लोग अनाज, सूअर के गोश्त, अण्डों और साग-सब्जियों आदि से सम्बन्धित सवालों पर ध्यान दें, क्योंकि ये काफी बड़ी समस्या खड़ी कर देते हैं। पिछले वर्ष जाड़ों से सारी शक्ति अनाज पर केन्द्रित करके सहायक धंधों व औद्योगिक फसलों की अवहेलना की गई। बाद में इस रुझान को दुरुस्त कर लिया गया, और इनकी ओर ध्यान दिया गया; खास तौर पर जब से अनाज तथा कपास, खाद्य तेल, सूअर व तम्बाकू जैसे बीस-तीस अन्य चीजों के बीच के भावों का अनुपात तय किया गया है, तब से किसान अनाज की अवहेलना करके सहायक धंधों व औद्योगिक फसलों में बहुत ज्यादा दिलचस्पी लेने लगे हैं। पहले केवल कागज पर जोर दिया गया और बाद में केवल सहायक धंधों और औद्योगिक फसलों पर। अनाज का भाव सस्ता होने की वजह से किसानों को हानि होती है; आपने अनाज का भाव इतना कम रखा है कि किसान अनाज उगाना ही बन्द कर देंगे। इस समस्या पर बहुत ध्यान देने की जरूरत है।

यह जरूरी है कि हम मेहनत व किफायत से अपने देश का निर्माण करें, शाहखर्ची व फिजूलखर्ची का विरोध करें, तथा मेहनत से काम करने व सादा जीवन बिताने और जन समुदाय के सुख-दुख में भागीदार बनने की भावना को प्रोत्साहन दें। कुछ कामरेडों ने यह सुझाव दिया है कि कारखानों के निदेशक और स्कूल कालेजों के प्रधान सायबानों में रहें, और मेरा विचार है कि यह एक अच्छा तरीका है, विशेषकर कठिन समय में। लम्बे अभियान के दौरान जब हम दलदली मैदानों को पार कर रहे थे तो वहां मकानों का नामोनिशान भी न था, हम लोग जहां सम्भव होता सो जाते, और कमाण्डर-इन-चीफ चू तेह ने भी चालीस दिन तक दलदली मैदान पार करते समय ऐसा ही किया था। इस कठिन परीक्षा से हम गुजर चुके हैं। हमारी फौजों के पास खाने को अनाज नहीं था और उन्होंने पेड़ की छाल व पत्तियां खा कर गुजारा किया था। जनता के सुख-दुख में भागीदार बनना – अतीत काल में हम ऐसा कर चुके हैं, तो भला अब क्यों नहीं कर सकते ? अगर हम ऐसा करना जारी रखेंगे तो जन-समुदाय से अलग-थलग नहीं होंगे।

हमें अखबार चलाने के कार्य को अपनी गिरफ्त में ले लेना चाहिए। जहां भी अखबार प्रकाशित होते हैं वहां केन्द्रीय कमेटी और सभी स्तरों की पार्टी कमेटियों को चाहिए कि वे अखबारों के संचालन के कार्य को एक भारी महत्त्व का कार्य समझें। इस साल के शुरू से ही समाचार-पत्रों ने जनता के रहन सहन में सुधार करने के बारे में एकतरफा व अव्यावहारिक प्रचार किया है, जबकि मेहनत व किफायत से देश का निर्माण करने, शाहखर्ची व फिजूलखर्ची का विरोध करने तथा मेहनत से काम करने व सादा जीवन बिताने और जन-समुदाय के सुख-दुख में भागीदार बनने की भावना को प्रोत्साहन देने का बहुत कम प्रचार किया है, जिसे अब से समाचार-पत्रों में हमारे प्रचार-कार्य का केन्द्र-बिन्दु बन जाना चाहिए। जो कुछ रेडियो-स्टेशनों से प्रसारित किया जाता है, शायद वह भी अखबारों से ही आता है। इसलिए यह जरूरी है कि सम्वाददाताओं, अखबार में काम करने वाले लोगों और रेडियो-कर्मचारियों की मीटिंगें बुलाकर उनके साथ विचार-विनिमय किया जाए और उन्हें प्रचार-कार्य के बारे में हमारे निदेशक उसूलों से अवगत करा दिया जाए।

यहां मैं एक अन्य समस्या की, प्रतिक्रान्तिकारियों के दमन की समस्या की भी चर्चा करना चाहता हूं। क्या उन स्थानीय निरंकुश तत्त्वों व बुरे शरीफजादों, निरंकुश शासकों व प्रतिक्रान्तिकारियों का वध कर दिया जाना चाहिए जिन्होंने अत्यन्त जघन्य अपराध किए हैं ? हां, कर दिया जाना चाहिए। कुछ गण्यमान्य जनवादी व्यक्ति कहते हैं कि उनका वध करना बुरा है, जबकि हम कहते हैं यह अच्छा है – यों कहा जा सकता है कि हम अलग-अलग राग अलाप रहे हैं। इस विषय में हम गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों के साथ कभी स्वर नहीं मिला सकते। जिन लोगों का हमने वध किया है वे ''छोटे च्याङ काई-शेक'' थे। जहां तक सम्राट फू ई, वाङ याओ-ऊ और तू यवी-मिङ जैसे ''बड़े च्याङ काई-शेकों'' का सवाल है, हम उनमें से किसी का वध नहीं करेंगे। लेकिन अगर उन ''छोटे च्याङ काई-शेकों'' का वध न किया जाता, तो हमारे पांवों तले रोज ''भूकम्प'' आता रहता और उत्पादक शक्तियों व मेहनतकश जनता को मुक्त न कराया जा सकता। उत्पादक शक्तियों में दो तत्त्व होते हैं, श्रमिक और उत्पादन के साधन। अगर हमने प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन न किया होता तो मेहनतकश जनता खुश न

होती। बैल और कुदालें भी खुश न होते और यहां तक कि जमीन को भी चैन न मिलता, क्योंकि किसान, जो बैलों, कुदालियों और जमीन का इस्तेमाल करते हैं, खुश न होते। इसलिए कुछ प्रतिक्रान्तिकारियों का वध जरूर किया जाना चाहिए, शेष प्रतिक्रान्तिकारियों में से कुछ लोगों को गिरफ्तार किया जाना चाहिए और कुछ को जनसाधारण के नियंत्रण में रखा जाना चाहिए।

2

कुल मिलाकर देखा जाए, तो अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति अच्छी है। कुछ साम्राज्यवादी शक्तियां अवश्य मौजूद हैं, लेकिन इससे क्या होने जा रहा है ? अगर दर्जनों साम्राज्यवादी शक्तियां और हो जाएं तो भी डरने की बात नहीं।

इस समय दो क्षेत्रों में, पूर्वी योरप और मध्य-पूर्व में, गड़बड़ी पैदा हो गई है। पोलैंड और हंगरी में उपद्रव हुए हैं[1], और बरतानिया व फ्रांस ने मिस्र पर सशस्त्र आक्रमण कर दिया है। मेरा विचार है कि ये बातें बुरी होने के साथ-साथ अच्छी भी हैं। मार्क्सवादियों की दृष्टि में बुरी बात का दोहरा स्वरूप होता है; वह एक तरफ बुरी बात होती है और दूसरी तरफ अच्छी। ''बात'' शब्द के पहले ''बुरी'' शब्द देखकर ज्यादातर लोग यह समझते हैं कि वह केवल बुरी है। लेकिन हम कहते हैं कि उसका एक अन्य पहलू भी है, यानी एक बुरी बात बुरी होने के साथ-साथ अच्छी होती है। ''असफलता सफलता की जननी है'' का यही मतलब होता है। हर असफलता, हर पराजय या हर गलती के, एक निश्चित स्थिति में, अच्छे नतीजे भी हो सकते हैं। चाहे पोलैण्ड हो या हंगरी, चूंकि वहां आग है, इसलिए वह देर-सबेर अवश्य भड़क उठेगी। उस आग को भड़कने देना अच्छा है अथवा न भड़कने देना ? आग को कागज में नहीं लपेटा जा सकता। अब वह भड़क उठी है तो यह ठीक ही हुआ है। इस प्रकार हंगरी में इतने ज्यादा प्रतिक्रान्तिकारी खुद-ब-खुद बेनकाब हो गए हैं। हंगरी की घटना ने हंगेरियाई जनता को शिक्षा दी है और साथ ही सोवियत संघ के कुछ कामरेडों तथा हमारे चीनी कामरेडों को भी शिक्षा दी है। जब बेरिया का पर्दाफाश किया गया तो बेहद अचम्भा हुआ। आखिर एक समाजवादी देश में बेरिया का अभ्युदय कैसे हो सका ? जब काओ काङ का पर्दाफाश किया गया तो फिर एक बार बेहद अचम्भा हुआ। हमें ठीक ऐसी ही परिघटनाओं से शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। ऐसी परिघटनाएं स्वाभाविक हैं और हमेशा घटती रहेंगी।

क्या भविष्य में तब भी क्रान्तियों का अस्तित्व बना रहेगा जब समूची दुनिया में सभी साम्राज्यवादियों का तख्ता पलट दिया जाएगा और वर्गों को मिटा दिया जाएगा ? आपका क्या विचार है ? मेरा विचार है, तब भी क्रान्ति की आवश्यकता बनी रहेगी, तब भी सामाजिक व्यवस्था के रूपान्तर की आवश्यकता बनी रहेगी और ''क्रान्ति'' शब्द का प्रयोग होता रहेगा। बेशक तब क्रान्ति का स्वरूप वर्ग संघर्ष के जमाने की क्रान्ति से भिन्न होगा। लेकिन तब भी उत्पादन-सम्बन्धों और उत्पादक शक्तियों के बीच तथा ऊपरी ढांचे और आर्थिक आधार के बीच अन्तरविरोध मौजूद रहेंगे। जब उत्पादन-सम्बन्ध अनुकूल नहीं रह जाएंगे तो उन्हें खत्म करना अनिवार्य हो जाएगा। अगर ऊपरी ढांचा (जिसमें विचारधारा और लोकमत शामिल हैं) ऐसे उत्पादन-सम्बन्धों की हिफाजत करेगा जिन्हें जनता नापसन्द करती है, तो जनता उसका रूपान्तर कर देगी। ऊपरी ढांचा खुद भी एक अन्य प्रकार का सामाजिक सम्बन्ध है। वह आर्थिक आधार पर खड़ा है। आर्थिक आधार का तात्पर्य उत्पादन-सम्बन्धों से है, मुख्यत: मिल्कियत से है। उत्पादक शक्तियां सर्वाधिक क्रान्तिकारी तत्त्व होती हैं। जब उत्पादक शक्तियां विकसित हो जाती हैं तो क्रान्ति अवश्य होती है। उत्पादक शक्तियों में दो तत्त्व होते हैं : मानव और औजार। औजार मानव द्वारा बनाए जाते हैं। जब औजार क्रान्ति की मांग करते हैं तो वे इसे मानव के जरिए, श्रमिकों के जरिए ही अभिव्यक्त करते हैं, जो पुराने उत्पादन-सम्बन्धों और पुराने सामाजिक सम्बन्धों को तहस-नहस कर देते हैं। ''शरीफ आदमी जबान का इस्तेमाल करते हैं, घूंसे का नहीं'', और सबसे अच्छा तरीका समझाने-बुझाने का तरीका है। लेकिन अगर समझाने-बुझाने पर भी अनसुनी की जाती है तो हथियारों से बात करनी पड़ती है। अगर हथियार न हों तो क्या किया जाय ? श्रमिकों के हाथ में औजार तो हैं और अगर औजार भी न हों तो पत्थरों का इस्तेमाल किया जा सकता है और अगर पत्थर भी न हों तो हर आदमी की दो मुट्ठियां तो हैं ही।

हमारे राजकीय अंग सर्वहारा अधिनायकत्व के अंग हैं। उदाहरण के लिए अदालतों को ही लीजिए। उनका काम प्रतिक्रान्तिकारियों के मामलों को निपटाना है, लेकिन यह उनका समूचा काम नहीं है, उन्हें जनता के बीच के बहुत से झगड़ों को निपटाने का काम भी करना होता है। ऐसा लगता है कि आगामी दस हजार वर्ष तक भी अदालतों की आवश्यकता बनी रहेगी। कारण, वर्गों का खात्मा होने के बाद भी आगे बढ़े हुए लोगों और पिछड़े हुए लोगों के बीच अन्तरविरोध मौजूद रहेंगे, लोगों के बीच संघर्ष और हाथापाई की घटनाएं होती रहेंगी, तथा तरह-तरह की गड़बड़ी पैदा होने की सम्भावना बनी रहेगी। अगर अदालतें नहीं रहेंगी तो कितनी अव्यवस्था पैदा हो जाएगी ! लेकिन तब संघर्षों का स्वरूप बदल जाएगा, वह वर्ग-संघर्ष से भिन्न होगा। अदालतों का स्वरूप भी बदल जाएगा। उस समय भी ऊपरी ढांचे में गड़बड़ी पैदा होने की सम्भावना बनी रहेगी। उदाहरण के लिए हो सकता है कि हम जैसे लोग गलतियां करें, संघर्ष में परास्त हो जाएं तथा पद से हटा दिए जाएं, और इस प्रकार कोई गोमुल्का सत्ता हथिया ले या किसी राओ शू-श को उठाया जाए। क्या आप समझते हैं कि ऐसी बातें नहीं होंगी ? मैं समझता हूं कि ऐसी बातें होती रहेंगी, एक हजार या दस हजार वर्ष बाद भी होती रहेंगी।

3

दुनिया में सभी वस्तुओं में विपरीत तत्त्वों की एकता होती है। विपरीत तत्त्वों की एकता से हमारा तात्पर्य भिन्न स्वरूप वाली वस्तुओं की एकता से है। मिसाल के लिए पानी को ही लीजिए, वह हाइड्रोजन व आक्सीजन नामक दो मूलतत्त्वों के संयोजन से बनता है। अगर आक्सीजन के बिना सिर्फ हाइड्रोजन ही हो या हाइड्रोजन के बिना सिर्फ आक्सीजन ही हो, तो पानी नहीं बन सकता। कहा जाता है कि अब तक दस लाख से ज्यादा किस्म के मिश्रणों का नामकरण किया जा चुका है, और बेनाम मिश्रणों की तो न जाने कितनी किस्में हैं। सभी

मिश्रण भिन्न स्वरूप वाले विपरीत तत्वों की एकता से बनते हैं। समाज में मौजूद वस्तुएं भी ऐसी होती हैं। केन्द्रीय प्राधिकरणों और स्थानीय प्राधिकरणों के बीच के सम्बन्धों में विपरीत तत्वों की एकता होती है, और इसी प्रकार किसी एक विभाग और दूसरे विभाग के बीच के सम्बन्धों में भी विपरीत तत्वों की एकता होती है।

दो देशों के बीच के सम्बन्धों में भी विपरीत तत्वों की एकता होती है। चीन और सोवियत संघ दोनों ही समाजवादी देश हैं। तो क्या इन दोनों में कोई अन्तर है ? हां, अन्तर है। राष्ट्रीयता की दृष्टि से ये दोनों भिन्न हैं। वहां उनतालीस वर्ष पहले अक्तूबर क्रान्ति हुई थी, जबकि हमें समूचे देश की राजसत्ता की बागडोर सम्भाले सिर्फ सात ही वर्ष हुए हैं। जहां तक काम का सम्बन्ध है, दोनों देशों द्वारा किए गए काम बहुत सी बातों में एक दूसरे से भिन्न हैं। मिसाल के लिए, हमारी कृषि का सामूहिकीकरण कई अवस्थाओं में किया गया है, जो उन लोगों से भिन्न है; इसी तरह पूंजीपतियों के प्रति हमारी नीति भी उन लोगों से भिन्न है, साथ ही बाजार भाव से सम्बन्धित हमारी नीति भी उन लोगों से भिन्न है तथा एक पक्ष में कृषि व हल्के उद्योग तथा दूसरे पक्ष में भारी उद्योग के बीच के सम्बन्धों के मसले को निपटाने का हमारा तरीका भी उन लोगों से भिन्न है; इसी तरह हमारी सेना की व्यवस्था और पार्टी की व्यवस्था भी उन लोगों से भिन्न है। हमने उन लोगों को बता दिया है : हम आप लोगों के कुछ कामों से सहमत नहीं हैं, और न मामलों को निपटाने के लिए आप लोगों द्वारा अपनाए जाने वाले कुछ तरीकों का अनुमोदन करते हैं।

कुछ कामरेड द्वन्द्ववाद पर ध्यान ही नहीं देते और वस्तुओं का विश्लेषण नहीं करते। वे लोग सोवियत संघ की सभी चीजों को अच्छा बताते हैं और उनका यांत्रिक ढंग से प्रतिरोपण कर देते हैं। दरअसल सभी चीजों का, चाहे वे चीनी हों अथवा विदेशी, विश्लेषण किया जा सकता है। कुछ चीजें अच्छी होती हैं और कुछ बुरी। प्रत्येक प्रान्त का काम भी ऐसा ही होता है, उसमें सफलताएं और खामियां दोनों मौजूद रहती हैं। और यही हममें से हर आदमी के बारे में भी सच है; हम सभी लोगों के केवल एक नहीं बल्कि दो पहलू होते हैं, अच्छाइयां भी होती हैं और बुराइयां भी। यह सिद्धान्त कि हर चीज का सिर्फ एक ही पहलू होता है, प्राचीन काल से चला आया है, और इसी तरह यह सिद्धान्त भी कि हर चीज के दो पहलू होते हैं, प्राचीन काल से चला आया है। इन्हें क्रमशः अधिभौतिकवाद और द्वन्द्ववाद कहते हैं। चीन के एक प्राचीन व्यक्ति ने कहा था : ''उजले और काले का मेल हर वस्तु में होता है''[3] न तो उजले के बिना सिर्फ काले का अस्तित्व सम्भव है और न काले के बिना सिर्फ उजले का। यह एक प्राचीन सिद्धान्त है, जो दोनों पहलुओं के अस्तित्व को मानता है। अधिभौतिकवाद एक ऐसा सिद्धान्त है जो सिर्फ एक पहलू के अस्तित्व को मानता है। और यह अब भी काफी ज्यादा कामरेडों में मौजूद है। वे लोग चीजों को एकतरफा रूप से देखते हैं और यह सोचते हैं कि सोवियत संघ की हर चीज अच्छी है और उसका अन्धाधुन्ध प्रतिरोपण कर देते हैं तथा बहुत सी ऐसी चीजों को भी यहां ले आए हैं, जिनका प्रतिरोपण हमारे यहां नहीं किया जाना चाहिए था। यह जरूरी है कि जिन चीजों का गलती से प्रतिरोपण किया गया है और जो हमारी इस भूमि से मेल नहीं खातीं, उन्हें बदल दिया जाए।

यहां मैं ''विदेशों के साथ अवैध सम्बन्ध रखने'' के सवाल का जिक्र करना चाहता हूं।

क्या हमारे देश में ऐसे व्यक्ति मौजूद हैं जो केन्द्रीय कमेटी की पीठ पीछे विदेशियों को सूचना देते हैं ? मेरी दृष्टि में ऐसे व्यक्ति अवश्य हैं। काओ काङ इस बात का एक उपयुक्त उदाहरण है। इसकी पुष्टि बहुत से तथ्यों से हो चुकी है।

24 दिसम्बर 1953 को काओ काङ का पर्दाफाश करने के लिए आयोजित केन्द्रीय कमेटी के राजनीतिक ब्यूरो के विस्तृत अधिवेशन में मैंने इस बात की घोषणा की थी कि पेकिङ शहर में पहले दो सदर-मुकाम थे, एक तो हम सभी उपस्थित लोगों का सदर-मुकाम था तथा वह खुली वायु प्रवाहित करता था और खुली आग प्रज्वलित करता था; इसके विपरीत, दूसरा सदर-मुकाम एक भूमिगत सदर-मुकाम था, और वह भी एक प्रकार की वायु, प्रच्छन्न वायु, प्रवाहित करता था और एक प्रकार की आग, प्रच्छन्न आग, प्रज्वलित करता था। चीन के एक क्लासिकी उपन्यास की स्त्री-पात्र लिन ताए-यूवी ने कहा है : ''या तो पुरवा हवा पछवा हवा पर हावी हो जाती है अथवा पछवा हवा पुरवा हवा पर।'' वर्तमान काल में या तो खुली हवा और खुली आग अनिष्टकारी हवा और अनिष्टकारी आग पर हावी हो जाती है अथवा अनिष्टकारी हवा और अनिष्टकारी आग खुली हवा और खुली आग पर। अनिष्टकारी हवा छोड़ने और अनिष्टकारी आग भड़काने वाले दूसरे सदर-मुकाम का उद्देश्य है खुली हवा को परास्त करना और खुली आग को बुझाना, यानी एक बड़ी तादाद में लोगों को धराशायी कर देना।

उच्च पदों और मध्यम पदों पर काम करने वाले हमारे कार्यकर्ताओं में अब भी इनेगिने व्यक्ति (जिनकी संख्या ज्यादा नहीं है) ऐसे हैं जो विदेशों के साथ अवैध सम्बन्ध रखते हैं। यह अच्छी बात नहीं है। आशा है कि आप सब साथी पार्टी के नेतृत्वकारी ग्रुपों तथा केन्द्रीय विभागों की पार्टी कमेटियों और साथ ही प्रान्त, म्युनिसिपलटी व स्वायत्त प्रदेश की स्तर की पार्टी कमेटियों में सभी लोगों को स्पष्ट रूप से बता देंगे कि वे ऐसा करना अवश्य बन्द कर दें। हम सोवियत संघ में किए जाने वाले कुछ कामों का समर्थन नहीं करते, और केन्द्रीय कमेटी यह बात सोवियत नेताओं को अनेक बार बता चुकी है; कुछ सवालों को, जिनका हमने जिक्र नहीं किया, बाद में उठाया जाएगा। अगर उन्हें उठाया जाए तो केन्द्रीय कमेटी द्वारा ही उठाया जाना चाहिए। जहां तक सूचनाओं का सवाल है, उन्हें पहुंचाने की कोशिश न करें। ऐसी सूचनाएं बिलकुल बेकार होती हैं, वे सिर्फ हानि ही पहुंचा सकती हैं। ऐसी सूचनाएं दोनों पार्टियों और दोनों देशों के बीच के सम्बन्धों की जड़ काट देती हैं। जो लोग ऐसी हरकतों में लगे हुए हैं, वे खुद भी बड़ी दुस्तर स्थिति में पड़ जाते हैं। चूंकि वे लोग ऐसी हरकतें पार्टी की पीठ पीछे करते हैं, इसलिए उनका अन्तःकरण सदैव अपराध-भावना से ग्रस्त रहता है। जिन लोगों ने सूचनाएं पहुंचाई हैं, उन्हें दिल खोलकर अपनी गलती स्वीकार कर लेनी चाहिए जिससे उनका मामला खत्म हो जाए, अन्यथा जांच की जाएगी और अगर पता चला कि वे दोषी हैं तो उन्हें समुचित सजा दी जाएगी।

मैं सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूं। मेरा विचार है वहां दो ''तलवारें'' हैं : एक लेनिन है और दूसरे स्तालिन। स्तालिन रूपी तलवार को अब रूसियों ने अलग फेंक दिया है। लेकिन गोमुल्का ने हंगरी में और कुछ व्यक्तियों ने सोवियत संघ की हत्या करने और तथाकथित स्तालिनवाद का विरोध करने के

लिए उसे उठा लिया है। योरप के बहुत से देशों की कम्युनिस्ट पार्टियां भी सोवियत संघ की आलोचना कर रही हैं, और उनके नेता तोग्लियाती हैं। साम्राज्यवादी भी जनता को कत्ल करने के लिए इस तलवार का इस्तेमाल करते हैं, जैसे डलेस कुछ समय के लिए इसे भांज चुके हैं। यह तलवार उधार नहीं दी गई है बल्कि अलग फेंक दी गई है। हम चीनियों ने इसे अलग नहीं फेंका। पहली बात यह है कि हम स्तालिन की रक्षा करते हैं, और दूसरी बात यह है कि साथ ही हम उनकी गलतियों की आलोचना भी करते हैं, तथा हमने 'सर्वहारा अधिनायकत्व के ऐतिहासिक अनुभव के बारे में' शीर्षक लेख भी लिखा है। जिन लोगों ने स्तालिन को बदनाम करने और नष्ट करने की कुचेष्टा की है, उन चन्द व्यक्तियों के विपरीत हम वास्तविक स्थिति के अनुरूप काम कर रहे हैं।

जहां तक लेनिन रूपी तलवार का सम्बन्ध है, क्या उसको भी कुछ सोवियत नेताओं ने किसी हद तक अलग नहीं फेंक दिया है ? मेरे विचार से उसको भी काफी हद तक अलग फेंक दिया गया है। क्या अक्तूबर क्रान्ति अब भी सुसंगत है ? क्या वह अब भी सभी देशों के लिए आदर्श बन सकती है ? सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस में प्रस्तुत ख्रुश्चोव की रिपोर्ट में कहा गया है कि संसदीय रास्ते से राजसत्ता हथियाई जा सकती है, जिसका मतलब यह है कि अब सभी देशों को अक्तूबर क्रान्ति से सीखने की जरूरत नहीं है। जहां एक बार यह दरवाजा खोल दिया गया, तो लेनिनवाद का बुनियादी तौर पर परित्याग कर दिया जाता है।

लेनिनवाद के सिद्धान्त ने मार्क्सवाद का विकास किया है। उसने इसका विकास किन-किन क्षेत्रों में किया है ? पहले, विश्व-दृष्टिकोण के क्षेत्र में, यानी भौतिकवाद और द्वन्द्ववाद के क्षेत्र में; और दूसरे, क्रान्तिकारी सिद्धान्त व कार्यनीति के क्षेत्रों में, विशेषकर वर्ग-संघर्ष, सर्वहारा अधिनायकत्व और सर्वहारा वर्ग की राजनीतिक पार्टी आदि समस्याओं के क्षेत्र में। और इसके अलावा समाजवादी निर्माण के बारे में भी लेनिन की शिक्षाएं हैं। निर्माण-कार्य 1917 की अक्तूबर क्रान्ति से आरम्भ होने के बाद क्रान्ति के दौरान लगातार चलता रहा, और इस प्रकार लेनिन को निर्माण-कार्य में सात वर्ष का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ, जो मार्क्स को प्राप्त नहीं हो सका था। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के ठीक इन्हीं बुनियादी उसूलों को हमने सीखा है।

जनवादी क्रान्ति और समाजवादी क्रान्ति इन दोनों ही क्रान्तियों में हमने वर्ग-संघर्ष चलाने के लिए जन-समुदाय को गोलबन्द किया है और उसके दौरान जनता को शिक्षित किया है। वर्ग-संघर्ष चलाना हमने अक्तूबर क्रान्ति से सीखा है। अक्तूबर क्रान्ति के दौरान, चाहे शहर हो या देहात, जन-समुदाय को वर्ग-संघर्ष चलाने के लिए पूर्ण रूप से गोलबन्द किया गया था। जिन लोगों को सोवियत संघ आज विशेषज्ञ के रूप में विभिन्न देशों में भेज रहा है, वे अक्तूबर क्रान्ति के समय सिर्फ बच्चे या किशोर ही थे और उनमें से बहुत से लोग ऐसे हैं जो इस व्यवहार को भूल चुके हैं। कुछ देशों के कामरेड कहते हैं कि चीन की जनदिशा ठीक नहीं है। वे लोग पितृसत्तावादी रुख अपनाना बहुत पसन्द करते हैं। अगर वे लोग ऐसा करना चाहते हैं, तो उन्हें रोका नहीं जा सकता; जो हो, हम लोग शान्तिपूर्ण सहजीवन के पांच सिद्धान्तों का पालन करते हैं, एक दूसरे के अन्दरूनी मामलों में दखल नहीं देते और एक दूसरे पर आक्रमण नहीं करते। अपने देश के अलावा, अर्थात चीन लोक गणराज्य के अलावा, किसी दूसरे देश का नेतृत्व करने का हमारा कोई इरादा नहीं है।

पूर्वी योरप के कुछ देशों की बुनियादी समस्या यह है कि उन्होंने वर्ग संघर्ष चलाने का काम अच्छी तरह नहीं किया है और इतने ज्यादा प्रतिक्रान्तिकारियों को खुला छोड़ दिया है; उन्होंने सर्वहारा वर्ग को वर्ग-संघर्ष में प्रशिक्षित नहीं किया है और यह सीखने में उसकी मदद नहीं की है कि जनता और दुश्मन के बीच, सही और गलत के बीच तथा आदर्शवाद और भौतिकवाद के बीच स्पष्ट विभाजन-रेखा कैसे खींची जाए। वे जैसा बो चुके हैं वैसा काट रहे हैं, जो आग वे खुद लाए हैं, वह उन्हीं को जला रही है।

आपके पास कितनी पूंजी है ? सिर्फ लेनिन और स्तालिन ही तो हैं। अब आप स्तालिन का परित्याग कर चुके हैं और वास्तव में लेनिन का भी लगभग पूरी तरह परित्याग कर चुके हैं; अब लेनिन के पांव नहीं रहे, या उनका केवल सिर बाकी रह गया है, अथवा उनका एक हाथ काट दिया गया है। हम मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन करने और अक्तूबर क्रान्ति से सीखने के रास्ते पर डटे हुए हैं। मार्क्स ने हमारे लिए बहुत सी रचनाओं का सृजन किया है, इसी तरह लेनिन ने भी। जन-समुदाय पर निर्भर रहना, जनदिशा का अनुसरण करना – यह सब हमने उन्हीं से सीखा है। वर्ग-संघर्ष चलाने में जन-समुदाय पर निर्भर न रहना तथा जनता और दुश्मन के बीच एक स्पष्ट विभाजन-रेखा न खींचना बहुत खतरनाक होगा।

4

विभाग प्रधान या ब्यूरो प्रधान के स्तर के कुछ बुद्धिजीवी कार्यकर्ता वृहद जनवाद की हिमायत करते हैं; उनका कहना है कि वे अल्प जनवाद से ज्यादा सन्तुष्ट नहीं हैं। उनके ''वृहद जनवाद'' का मतलब है पश्चिम की पूंजीवादी संसदीय प्रणाली को अंगीकार कर लेना तथा ''संसदीय जनवाद'', ''प्रेस की आजादी'' और ''बोलने की आजादी'' जैसे पश्चिम के कूड़े-कचरे की नकल करना। उनका यह विचार गलत है, क्योंकि उसमें मार्क्सवादी दृष्टिकोण और वर्ग-दृष्टिकोण का अभाव है। फिर भी वृहद जनवाद और अल्प जनवाद काफी सजीव चित्रण करने वाले शब्द हैं, इसलिए हमने इन्हें अपना लिया है।

जनवाद एक तरीका है, और इसका निर्णय इस बात से होना है कि इसे किसके प्रति और किस उद्देश्य से लागू किया जाए। हम वृहद जनवाद का पक्षपोषण करते हैं। हम सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में लागू किए जाने वाले वृहद जनवाद का पक्षपोषण करते हैं। हमने जन-समुदाय को गोलबन्द करके च्यांग काई-शेक से लोहा लिया और बीस वर्ष से ज्यादा समय तक संघर्ष करने के बाद उसे धराशायी कर दिया। भूमि-सुधार आन्दोलन में किसान समुदाय जमींदार वर्ग के खिलाफ उठ खड़ा हुआ तथा उसने तीन वर्ष तक संघर्ष चलाने के बाद जमीन हासिल कर ली। यह सब वृहद जनवाद के उदाहरण हैं। ''तीन बुराई''-विरोधी आन्दोलन उन कर्मचारियों के खिलाफ चलाया गया एक संघर्ष था जिन्हें पूंजीपति वर्ग द्वारा आचरण-भ्रष्ट कर दिया गया था। ''पांच बुराई'' विरोधी आन्दोलन पूंजीपति वर्ग के खिलाफ चलाया गया एक संघर्ष था। इन दोनों ही आन्दोलनों में निर्ममता से संघर्ष चलाया गया। ये सभी जोरदार जन-आन्दोलन थे और वृहद जनवाद के उदाहरण थे। कुछ दिन पहले, आंग्ल फ्रांसीसी आक्रमण के खिलाफ मिस्र के प्रतिरोध का समर्थन करने के लिए जन-समुदाय ने चीन स्थित बरतानवी कार्यदूत के

कार्यालय के सामने प्रदर्शन किया और कई लाख लोगों ने पेकिङ के थ्येनआनमन मैदान में एक रैली का आयोजन किया। यह भी वृहद जनवाद का ही एक उदाहरण था, जिसके प्रहार का निशाना साम्राज्यवाद था। ऐसे वृहद जनवाद को हम आखिर क्यों न पसन्द करें ? हम उसे सचमुच पसन्द करते हैं। इस वृहद जनवाद के प्रहार का निशाना आखिर कौन है ? इसके प्रहार का निशाना साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही पूंजीवाद तथा पूंजीवाद हैं। निजी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर के प्रहार का निशाना पूंजीवाद था। कृषि का समाजवादी रूपान्तर भी, जिसका उद्देश्य छोटे उत्पादकों की निजी मिल्कियत को समाप्त करना था, स्वरूप की दृष्टि से पूंजीवाद-विरोधी था। हमने जन-आन्दोलन का तरीका अपनाकर कृषि का समाजवादी रूपान्तर किया, किसानों को, मुख्यतः पहले गरीब व निम्न मध्यम किसानों को खुद-ब-खुद संगठित होने के लिए गोलबन्द किया, जिससे उच्च मध्यम किसानों के सामने भी सहमत होने के सिवाय और कोई चारा नहीं रह गया। जहां तक पूंजीपतियों का सम्बन्ध है, उन्होंने ढोल-घड़ियाल बजाते हुए समाजवादी रूपान्तर का इसलिए स्वागत किया क्योंकि देहातों में समाजवादी ज्वार उमड़ने के कारण और अपने नीचे के मजदूर समुदाय के दबाव के कारण पूंजीपतियों के सामने ऐसा करने के सिवाय कोई दूसरा रास्ता नहीं रह गया था।

अब अगर वृहद जनवाद पर फिर से अमल किया जाना है, तो मैं उसका हिमायती हूं। आप लोग जन-समुदाय के सड़क पर निकलने से डरते हैं, लेकिन मैं नहीं डरता, यहां तक कि अगर कई लाख लोग ऐसा करें, तो भी नहीं डरता। "जो आदमी हजार जख्म होने के बाद भी मृत्यु से नहीं डरता, वही शहंशाह को घोड़े से उतारने का साहस कर सकता है।" यह बात चीन के एक क्लासिकी उपन्यास की स्त्री-पात्र वाङ शी-फङ ने कही है, जिसे फङ बहन के नाम से भी पुकारा जाता है। सर्वहारा वर्ग द्वारा प्रवर्तित किए जाने वाले वृहद जनवाद के प्रहार का निशाना वर्ग-दुश्मन हैं। राष्ट्र के दुश्मन (जो साम्राज्यवाद और विदेशी इजारेदार पूंजीपतियों के अलावा और कोई नहीं हैं) भी वर्ग-दुश्मन हैं। वृहद जनवाद के प्रहार का निशाना नौकरशाहों को भी बनाया जा सकता है। अभी-अभी मैंने कहा है कि आज से दस हजार वर्ष बाद भी क्रान्ति मौजूद रहेगी, तब शायद वृहद जनवाद पर अमल करना भी आवश्यक होगा। अगर कुछ लोग जिन्दगी से ऊबकर नौकरशाह बन जाएंगे, अगर वे जन-समुदाय से मिलने पर बिना कोई स्नेहपूर्ण शब्द बोले सिर्फ डांट-फटकार ही लगाते रहेंगे, और अगर वे जन-समुदाय की किसी भी समस्या को हल नहीं करेंगे, तो उन्हें अवश्य धराशायी कर दिया जाएगा। इस समय यह खतरा मौजूद है। अगर आप जन-समुदाय से अलग-थलग रहेंगे और उनकी समस्याओं को हल नहीं करेंगे, तो किसान अपनी बहंगियों से प्रहार करेंगे, मजदूर सड़कों पर निकलकर प्रदर्शन करेंगे और विद्यार्थी उपद्रव खड़ा कर देंगे। जहां कहीं भी इस तरह की घटनाएं होती हैं, उन्हें पहले अच्छी बात समझना जरूरी है, और इस मामले के बारे में मेरा यही विचार है।

कुछ साल पहले, हनान प्रान्त के किसी स्थान पर एक हवाई अड्डा बनाया जाना था लेकिन वहां रहने वाले किसानों को उस स्थान से हटने के लिए मजबूर किया गया तथा इससे पहले न तो उनका किसी दूसरी जगह अच्छी तरह बन्दोबस्त किया गया और न उन्हें स्पष्ट रूप से समझाया-बुझाया गया। उस गांव के किसानों ने कहा कि अगर आप पेड़ पर बने चिड़िया के घोंसले को डण्डे से ढकेल कर नीचे गिरा देंगे, तो चिड़िया भी दो-चार चीखें जरूर मारेगी। आपका भी एक घोंसला है तङ श्याओ-फिङ साहब, और अगर हमने उसे तहस-नहस कर दिया, तो क्या आप दो-चार चीखें नहीं मारेंगे ? इसलिए वहां की जनता ने तीन रक्षा-पंक्तियां खड़ी कर दीं : पहली रक्षा-पंक्ति बच्चों की थी, दूसरी महिलाओं की, और तीसरी हृष्ट-पुष्ट नौजवानों की। जो लोग वहां सर्वेक्षण करने गए उन सभी को भगा दिया गया, और अन्त में किसानों की विजय हुई। बाद में, जब किसानों को सन्तोषजनक रूप से समझाया-बुझाया गया और उनका अन्यत्र बन्दोबस्त कर दिया गया, तो वे उस स्थान से हटने को तैयार हो गए और हवाई अड्डे का निर्माण किया जा सका। इस तरह की मिसालें कम नहीं हैं। अब कुछ ऐसे व्यक्ति भी देखने में आते हैं जो यह सोचते हैं कि राजसत्ता प्राप्त हो चुकी है, इसलिए वे निश्चिन्त होकर गहरी नींद सो सकते हैं और मनमानी कर सकते हैं। जन-समुदाय इस तरह के व्यक्तियों का विरोध करेगा, उन पर पत्थर फेंकेगा और अपनी कुदालियों से प्रहार करेगा, तथा मेरे विचार से यह बहुत ठीक होगा और इससे मुझे बेहद खुशी होगी। इसके अलावा, कभी-कभी समस्या का समाधान केवल लड़कर ही निकाला जा सकता है। कम्युनिस्ट पार्टी को सबक सीखने की जरूरत है। जब कभी विद्यार्थी और मजदूर सड़क पर निकलने लगें तो आप सब साथियों को उसे एक अच्छी बात समझना चाहिए। छङतू के एक सौ से ज्यादा विद्यार्थी अपनी याचिका प्रस्तुत करने के लिए पेकिङ आना चाहते थे, लेकिन एक रेलगाड़ी से आने वाले विद्यार्थियों को तो सछ्वान प्रान्त के क्वाङय्वान स्टेशन पर रोक दिया गया और दूसरी रेलगाड़ी से आने वाले विद्यार्थी सिर्फ लोयाङ तक पहुंच सके और पेकिङ पहुंचने में असफल रहे। मेरा और प्रधानमंत्री चओ का विचार है कि इन विद्यार्थियों को पेकिङ आने और सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों से मुलाकात करने की इजाजत दे दी जानी चाहिए थी। मजदूरों को हड़ताल करने और जन-समुदाय को प्रदर्शन करने की इजाजत दे दी जानी चाहिए। जुलूस निकालने और प्रदर्शन करने का हमारे संविधान में प्रावधान है। मेरा विचार है कि भविष्य में जब कभी संविधान में संशोधन किया जाए, तो उसमें हड़ताल करने की आजादी भी जोड़ दी जाए, जिससे मजदूरों को हड़ताल करने की इजाजत मिल जाए। इस प्रकार एक पक्ष में राज्य व कारखाने के निदेशक तथा दूसरे पक्ष में जन-समुदाय के बीच के अन्तरविरोधों को हल करने में मदद मिलेगी। आखिर ये अन्तरविरोध ही तो हैं। दुनिया अन्तरविरोधों से भरी पड़ी है। जनवादी क्रान्ति ने साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही पूंजीवाद के साथ हमारे अन्तरविरोधों के एक समूह को हल किया है। आज जबकि मिलकियत के बारे में हमारे और राष्ट्रीय पूंजीवाद के बीच के तथा हमारे और छोटे पैमाने के उत्पादन के बीच के अन्तरविरोधों को बुनियादी तौर पर हल कर लिया गया है, अन्य क्षेत्रों के अन्तरविरोध उभर आए हैं और नए अन्तरविरोध पैदा हो गए हैं। काउण्टी की पार्टी कमेटी और उसके ऊपर के स्तर के कार्यकर्ताओं की संख्या कई लाख है। देश के भाग्य की बागडोर उन्हीं के हाथों में है। अगर वे अच्छी तरह काम नहीं करेंगे, जन-समुदाय से अलग-थलग हो जाएंगे तथा सादा जीवन नहीं बिताएंगे और कठोर परिश्रम नहीं करेंगे, तो मजदूरों, किसानों और विद्यार्थियों के पास उन्हें अस्वीकार करने का समुचित कारण बना रहेगा। हमें इस बात से अवश्य सतर्क रहना चाहिए कि हम कहीं नौकरशाहाना कार्यशैली न अपना लें और जनता से अलग-थलग रहने वाला

एक अभिजात तबका न बन जाए। जो कोई नौकरशाही पर अमल करेगा, जन-समुदाय की समस्याओं को हल नहीं करेगा, लोगों को डांट फटकार लगाएगा, उन पर अत्याचार करेगा और अपने को सुधारने की जरा भी कोशिश नहीं करेगा, उसे पदच्युत करने का समुचित कारण जन-समुदाय के पास बना रहेगा। मैं कहता हूं कि ऐसे व्यक्तियों को हटा देना बहुत अच्छी बात है, और उन्हें हटा दिया जाना चाहिए।

इस समय जनवादी पार्टियां और पूंजीपति वर्ग सर्वहारा वर्ग के वृहद जनवाद का विरोध करते हैं। अगर हम फिर एक बार ''पांच बुराई''-विरोधी आन्दोलन चलाएंगे, तो वे इसे पसन्द नहीं करेंगे। उन्हें इस बात का बहुत डर है कि अगर वृहद जनवाद को लागू किया गया तो जनवादी पार्टियों का बहिष्कार कर दिया जाएगा और उन्हें दीर्घकालीन सहअस्तित्व का मौका नहीं मिलेगा। क्या प्रोफेसर लोग वृहद जनवाद को पसन्द करते हैं ? यह कहना भी मुश्किल है। लेकिन मेरे विचार से वे लोग इससे सतर्क रहते हैं, वे भी सर्वहारा वर्ग के वृहद जनवाद से डरते हैं। अगर वे लोग पूंजीपति वर्ग के वृहद जनवाद को लागू करना चाहते हैं, तो मैं दोष-निवारण यानी विचारधारात्मक नव रूपान्तर का प्रस्ताव रखूंगा। उनकी आलोचना करने के लिए सभी विद्यार्थियों को गोलबन्द किया जाएगा, और हर कालेज में एक ऐसी जांच-चौकी कायम कर दी जाएगी जिससे गुजरना उनके लिए जरूरी होगा, सिर्फ तभी उनके मामले को खत्म समझा जाएगा। इसलिए प्रोफेसर भी सर्वहारा वर्ग के वृहद जनवाद से डरते हैं।

यहां मैं एक अन्य विषय का, दलाई की समस्या का जिक्र करना चाहता हूं। महात्मा बुद्ध के निर्वाण को ढाई हजार वर्ष हो चुके हैं, और अब दलाई लामा व उसके साथी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने भारत जाना चाहते हैं। क्या हम उसे जाने दें या नहीं ? केन्द्रीय कमेटी का मत है कि उसे जाने देना न जाने देने की अपेक्षा बेहतर होगा। कुछ दिनों बाद वह रवाना होने वाला है। हमने उसे हवाई जहाज से जाने की सलाह दी, लेकिन उसने नहीं माना और कार से कालिमपोंग[4] होते हुए जाना चाहता है, जहां विभिन्न देशों के गुप्तचर और क्वोमिन्ताङ के जासूस मौजूद हैं। पहले से ही यह अनुमान लगाना जरूरी है कि दलाई शायद वापस नहीं आएगा और इसके अलावा वह शायद आए दिन हम पर ऐसे लांछन लगाता रहेगा कि ''कम्युनिस्टों ने तिब्बत पर आक्रमण किया है'', और शायद यहां तक आगे बढ़ जाएगा कि भारत में ''तिब्बत की स्वतंत्रता'' की घोषणा भी कर लेगा। यह अनुमान लगाना भी जरूरी है कि वह शायद तिब्बत के ऊंचे तबकों के प्रतिक्रियावादी तत्वों को बड़े पैमाने पर गड़बड़ी पैदा करने की अपील करने के लिए उकसाएगा, ताकि हमें वहां से भगा दिया जाए, जबकि खुद अपनी अनुपस्थिति को बहाने के तौर पर इस्तेमाल करके जिम्मेदारी से बचने की कोशिश करेगा। ज्यादा से ज्यादा बुरा हुआ तो ऐसा ही होगा। अगर ऐसी बुरी स्थिति पैदा हो गई तो भी मैं प्रसन्न होऊंगा। यह जरूरी है कि तिब्बत स्थित हमारी कार्य-कमेटी और फौजी टुकड़ियां तैयार रहें, किलेबन्दियों का निर्माण कर लें और पर्याप्त अनाज व पानी जमा कर लें। वहां हमारे सिर्फ कुछ ही सैनिक हैं; जो हो, हर पक्ष को अपनी मरजी के मुताबिक कार्यवाही करने की आजादी है। अगर आप लड़ना चाहेंगे, तो हम अपने बचाव के लिए तैयार हो जाएंगे; अगर आप आक्रमण करेंगे, तो हम आत्मरक्षा करेंगे। हमें पहले हरगिज आक्रमण नहीं करना चाहिए

बल्कि उन्हें आक्रमण करने देना चाहिए, और तब प्रत्याक्रमण करके अपने भीषण प्रहारों से आक्रमणकारियों के दांत खट्टे कर देने चाहिए। क्या एक दलाई के भाग जाने पर मुझे दुख होगा ? अगर नौ दलाई और भी शामिल हो जाएं और कुल दस दलाई भाग जाएं, तो भी मुझे दुख नहीं होगा। हमारा अनुभव है कि चाङ क्वो-थाओ का भाग जाना बुरी बात साबित नहीं हुई। आप एक पुरुष और एक स्त्री को एक साथ बांधकर पति-पत्नी नहीं बना सकते। जब किसी के दिल में आपकी जगह से प्यार नहीं रहा और वह यहां से जाना चाहता है, तो उसे जाने दीजिए। उसके जाने से आखिर हमें क्या हानि होगी ? कुछ नहीं। वह हमारे खिलाफ गाली-गलौज करने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकता। हमारी कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ पैंतीस वर्ष तक गाली-गलौज की जा चुकी है। और इस गाली गलौज में सिर्फ ऐसी ही पुरानी व बेहूदा बातें कही गई हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी ''बेहद खूंखार'' है, वह ''सम्पत्ति और महिलाओं का साम्यीकरण कर देती है'', और ''बड़ी नृशंस और अमानुषिक है''। अगर गाली-गलौज करने वालों में एक दलाई या कोई अन्य व्यक्ति शामिल हो जाए, तो इससे क्या फर्क पड़ने जा रहा है ? अगर गाली-गलौज पैंतीस वर्ष और जारी रही तो कुल मिलाकर केवल सत्तर वर्ष ही तो हो जाएंगे। मेरे विचार में गाली-गलौज से डरना कोई अच्छी बात नहीं है। कुछ व्यक्ति इस बात से डरते हैं कि शायद गोपनीय सूचनाओं का भेद खुल जाएगा। क्या च्याङ क्वो-थाओ को बहुत सी गोपनीय सूचनाओं की जानकारी नहीं थी ? लेकिन यह बात कभी सुनने में नहीं आई कि च्याङ क्वो-थाओ द्वारा गोपनीय सूचनाओं का भेद खोल दिए जाने के कारण हमारा काम बिगड़ गया हो।

हमारी पार्टी में दसियों लाख अनुभवी कार्यकर्ता हैं। उनमें ज्यादातर कार्यकर्ता अच्छे हैं, जिनका जन्म और पालन-पोषण हमारी मातृभूमि की गोद में हुआ है तथा जो जन-समुदाय के साथ घनिष्ठ सम्पर्क बनाए रखते हैं और दीर्घकालीन संघर्षों में खरे उतर चुके हैं। हमारे पास ऐसे कार्यकर्ताओं की एक सम्पूर्ण वाहिनी है जो पार्टी की स्थापना के काल में, उत्तरी अभियान के काल और भूमि-क्रान्ति युद्ध, जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध व मुक्ति-युद्ध के काल में तथा समूची मुख्यभूमि की मुक्ति के बाद क्रान्ति में शामिल हुए हैं। ये सब लोग हमारे देश की मूल्यवान निधि हैं। पूर्वी योरप के कुछ देशों की परिस्थिति में ज्यादा स्थायित्व न होने का एक मुख्य कारण यह भी है कि उनके पास इस तरह के कार्यकर्ताओं की एक सम्पूर्ण वाहिनी नहीं है। चूंकि हमारे पास ऐसे कार्यकर्ताओं की एक सम्पूर्ण वाहिनी मौजूद है जो क्रान्ति के विभिन्न कालों में खरे उतर चुके हैं, इसलिए हम ''उमड़ती हवाओं और घुमड़ती लहरों में भी माहीगीरी-नाव पर स्थिरता से बैठने'' में समर्थ हैं। हमें इतना आत्मविश्वास अवश्य होना चाहिए। हम साम्राज्यवाद से भी नहीं डरते, तो फिर वृहद जनवाद से क्यों डरें ? विद्यार्थियों के सड़कों पर निकलने से क्यों डरें ? फिर भी हमारे पार्टी-सदस्यों में कुछ लोग ऐसे हैं जो वृहद जनवाद से डरते हैं, यह कोई अच्छी बात नहीं है। वृहद जनवाद से डरने वाले नौकरशाहों के लिए यह जरूरी है कि वे मार्क्सवाद का अच्छी तरह अध्ययन करें और अपने तौर-तरीकों में सुधार करें।

हम अगले वर्ष एक दोष-निवारण आन्दोलन चलाना चाहते हैं। तीन बुरी कार्यशैलियों में सुधार करना होगा : (1) मनोगतवाद, (2) संकीर्णतावाद और (3) नौकरशाही। केन्द्रीय कमेटी

के निर्णय के बाद पहले एक सरकुलर जारी किया जाएगा, जिसमें विभिन्न मदों की एक सूची बनाई जाएगी। उदाहरण के लिए, नौकरशाही में अनेक मदें शामिल हैं, जैसे कार्यकर्ताओं और जन समुदाय के साथ सम्पर्क न रखना, हालत का पता लगाने के लिए निचली इकाइयों में न जाना और जन समुदाय के सुख दुख में भागीदार न बनना तथा भ्रष्टाचार और फिजूलखर्ची इत्यादि पर अमल करना। अगर अगले वर्ष की पहली छमाही में यह सरकुलर जारी कर दिया जाए, तो दूसरी छमाही में दोष निवारण आन्दोलन शुरू किया जा सकता है, और इस बीच कई महीने का समय मिल जाएगा। जिस किसी ने सार्वजनिक धन का गबन किया हो, उसे अपनी गलती मान लेनी चाहिए और उस दौरान उसे वापस लौटा देना चाहिए, या बाद में किस्तों में लौटा देना चाहिए, अथवा अगर किस्तों में लौटाना सम्भव न हो तो कोई अन्य उपाय न होने पर उसे माफी भी दी जा सकती है; ये दोनों ही तरीके ठीक हैं। लेकिन हर सूरत में यह जरूरी है कि वह अपनी गलती को स्वीकार करे और गबन की गई रकम का ब्यौरा स्पष्ट बता दे। यह उसके लिए एक तरह की सीढ़ी है, जिससे वह कदम-ब-कदम नीचे उतर सकता है। दूसरी गल्तियों के प्रति भी यही तरीका अपनाया जाना चाहिए। ''चेतावनी दिए बिना दण्ड देने'' के बजाय पहले सूचना दी जाए और फिर एक निश्चित समय पर दोष-निवारण आन्दोलन चलाया जाए – यह अल्प जनवाद पर अमल करने का एक तरीका है। कुछ लोगों का कहना है कि अगर यह तरीका अपनाया गया तो अगले वर्ष की दूसरी छमाही में दोष निवारण के लिए शायद ज्यादा काम बाकी नहीं रह जाएगा। हम ठीक यही उद्देश्य प्राप्त करना चाहते हैं। हमें आशा है कि दोष निवारण आन्दोलन औपचारिक रूप से शुरू होने तक मनोगतवाद, संकीर्णतावाद और नौकरशाही में काफी कमी आ जाएगी। हमारे इतिहास में दोष-निवारण आन्दोलन एक कारगर तरीका साबित हो चुका है। अब से जनता के बीच या पार्टी के भीतर सभी समस्याओं का दोष-निवारण के जरिए, आलोचना व आत्म-आलोचना के जरिए हल किया जाना चाहिए, न कि बल-प्रयोग के जरिए। हम ''मन्द-मन्थर बयार और हल्की फुहार'' के तरीके के पक्ष में हैं, हालांकि चन्द मामलों में कुछ अधिक उग्रता की स्थिति से बचना जरा मुश्किल है, फिर भी कुल मिलाकर हम चाहते हैं कि मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज किया जाय तथा केवल जबानी जमा-खर्च न करते हुए इस मकसद को सचमुच हासिल किया जाय। पहला उसूल है आदमी की हिफाजत करना और दूसरा उसूल है उसकी आलोचना करना। पहले उसकी हिफाजत की जानी चाहिए, क्योंकि वह प्रतिक्रान्तिकारी नहीं है। इसका मतलब है एकता की आकांक्षा से प्रेरित होना, तथा आलोचना व आत्म-आलोचना के जरिए, एक नए आधार पर एक नई एकता कायम करना। जनता की पांतों के अन्दर अगर हमने गल्तियां करने वाले सभी व्यक्तियों के प्रति हिफाजत करने और साथ ही आलोचना करने का तरीका अपनाया, तो हम जनता का दिल जीत लेंगे, समूची जनता को एकताबद्ध कर सकेंगे और समाजवाद का निर्माण करने के लिए हमारी साठ करोड़ जनता में मौजूद तमाम सक्रिय तत्वों को गोलबन्द कर सकेंगे।

मैं इस विचार का समर्थन करता हूं कि शान्ति-काल में फौजी कार्यकर्ताओं और गैर-फौजी कार्यकर्ताओं के वेतन के अन्तर को कदम-ब-कदम कम किया जाए, लेकिन इसका मतलब पूर्ण समानतावाद पर अमल करना हरगिज नहीं है। मेरा सैदव यह विचार

रहा है कि सेना को सादा जीवन बिताना चाहिए और कठोर परिश्रम करना चाहिए तथा दूसरों के सामने एक आदर्श उपस्थित करना चाहिए। [illegible] में यहां आयोजित एक मीटिंग में हमारे किसी जनरल ने प्रस्ताव रखा था कि सेना में वेतन बढ़ा दिया जाना चाहिए, और बहुत से कामरेडों ने उनके प्रस्ताव का समर्थन भी किया था, पर मैंने उसका विरोध किया था। उन्होंने यह उदाहरण पेश किया था कि एक पूंजीपति के एक वक्त के भोजन में पांच व्यंजन होते हैं, जबकि जन-मुक्ति सेना के सिपाही के पास व्यंजन के नाम पर सिर्फ नमकीन पानी और कुछ पातगोभी के अचार के सिवाय और कुछ नहीं होता, तथा उन्होंने यह कहा था कि ऐसी हालत नहीं चलेगी। इसके विपरीत मैंने कहा था कि यह बड़ी अच्छी बात है। वे लोग पांच व्यंजन वाला भोजन करते हैं, जबकि हम केवल अचार के साथ खाना खाते हैं। इस अचार में राजनीति है, उसमें से आदर्श उपस्थित करने वाले लोग पैदा होते हैं। इस अचार के कारण ही जन मुक्ति सेना ने जनता का दिल जीत लिया है; बेशक, इसके दूसरे कारण भी हैं। अब सेना के भोजन में सुधार हो गया है और सिर्फ अचार के साथ खाना खाने की स्थिति बदल गई है। लेकिन सबसे बुनियादी बात यह है कि हमें सादा जीवन बिताने और कठोर परिश्रम करने का पक्षपोषण करना चाहिए, जो हमारा सहज राजनीतिक गुण है। चिनचओ क्षेत्र में सेब पैदा होते हैं। ल्याओशी मुहिम के दौरान शरद का मौसम था, और गांव वालों के घरों में प्रचुर मात्रा में सेब मौजूद थे। मगर हमारे योद्धाओं ने एक भी सेब नहीं उठाया। यह खबर पढ़कर मैं बहुत प्रभावित हुआ। यहां योद्धाओं ने जागरूकता के साथ यह महसूस किया कि सेब न खाना एक बहुत उदात्त आचरण है, जबकि उसे खाना एक बहुत नीचतापूर्ण आचरण है, क्योंकि वे सेब जनता के थे। हमारा अनुशासन ऐसी ही चेतना पर आधारित है। यह हमारी पार्टी के नेतृत्व और उसकी शिक्षा का फल है। आदमी में कुछ चेतना होनी चाहिए, और सर्वहारा वर्ग की क्रान्तिकारी भावना ऐसी ही चेतना से उत्पन्न होती है। क्या कोई आदमी सेब न खाने के कारण भी भूखों मरा है ? नहीं, क्योंकि कोदों और अचार का योग तो हमारे पास था ही। जरूरत पड़ने पर यहां उपस्थित आप सब साथियों को सायबानों में भी रहना पड़ सकता है। जब हम दलदली मैदान पार कर रहे थे, तो बिना सायबानों के भी सो सकते थे। आज जबकि हमारे पास सायबान हैं, हम उनमें क्यों नहीं रह सकते ? पिछले कुछ दिनों में फौज के लोगों का एक सम्मेलन हुआ है, और उन्होंने बड़े जोश के साथ यह विचार व्यक्त किया है कि वे आत्म-नियंत्रण और किफायत पर अमल करना चाहते हैं। आज जबकि सेना भी ऐसा कर रही है, दूसरे लोगों के लिए सादा जीवन बिताने व कठोर परिश्रम करने के और भी ज्यादा कारण मौजूद हैं। वरना उन्हें फौज के लोग चुनौती दे देंगे। यहां असैनिक और सैनिक दोनों उपस्थित हैं, हम सैनिकों द्वारा असैनिकों को चुनौती दिलाएंगे। जन-मुक्ति सेना एक श्रेष्ठ सेना है, और मैं उसे बेहद प्यार करता हूं।

यह जरूरी है कि राजनीतिक काम को सुदृढ़ बनाया जाय। यह जरूरी है कि हर क्षेत्र में, चाहे असैनिकों के बीच हो या सैनिकों के, चाहे कारखानों, देहातों, दुकानों व विद्यालयों में हो या फौजी यूनिटों में, चाहे पार्टी व सरकार के अंगों में हो या जन-संगठनों में, उसे खूब सुदृढ़ बनाया जाए, ताकि कार्यकर्ताओं और जन समुदाय के राजनीतिक स्तर को ऊंचा उठाया जा सके।

के निर्णय के बाद पहले एक सरकुलर जारी किया जाएगा, जिसमें विभिन्न मदों की एक सूची बनाई जाएगी। उदाहरण के लिए, नौकरशाही में अनेक मदें शामिल हैं, जैसे कार्यकर्ताओं और जन समुदाय के साथ सम्पर्क न रखना, हालत का पता लगाने के लिए निचली इकाइयों में न जाना और जन समुदाय के सुख दुख में भागीदार न बनना तथा भ्रष्टाचार और फिजूलखर्ची इत्यादि पर अमल करना। अगर अगले वर्ष की पहली छमाही में यह सरकुलर जारी कर दिया जाए, तो दूसरी छमाही में दोष निवारण आन्दोलन शुरू किया जा सकता है, और इस बीच कई महीने का समय मिल जाएगा। जिस किसी ने सार्वजनिक धन का गबन किया हो, उसे अपनी गलती मान लेनी चाहिए और उस दौरान उसे वापस लौटा देना चाहिए, या बाद में किस्तों में लौटा देना चाहिए, अथवा अगर किस्तों में लौटाना सम्भव न हो तो कोई अन्य उपाय न होने पर उसे माफी भी दी जा सकती है; ये दोनों ही तरीके ठीक हैं। लेकिन हर सूरत में यह जरूरी है कि वह अपनी गलती को स्वीकार करे और गबन की गई रकम का ब्यौरा स्पष्ट बता दे। यह उसके लिए एक तरह की सीढ़ी है, जिससे वह कदम-ब-कदम नीचे उतर सकता है। दूसरी गलतियों के प्रति भी यही तरीका अपनाया जाना चाहिए। "चेतावनी दिए बिना दण्ड देने" के बजाय पहले सूचना दी जाए और फिर एक निश्चित समय पर दोष-निवारण आन्दोलन चलाया जाए – यह अल्प जनवाद पर अमल करने का एक तरीका है। कुछ लोगों का कहना है कि अगर यह तरीका अपनाया गया तो अगले वर्ष की दूसरी छमाही में दोष निवारण के लिए शायद ज्यादा काम बाकी नहीं रह जाएगा। हम ठीक यही उद्देश्य प्राप्त करना चाहते हैं। हमें आशा है कि दोष निवारण आन्दोलन औपचारिक रूप से शुरू होने तक मनोगतवाद, संकीर्णतावाद और नौकरशाही में काफी कमी आ जाएगी। हमारे इतिहास में दोष-निवारण आन्दोलन एक कारगर तरीका साबित हो चुका है। अब से जनता के बीच या पार्टी के भीतर सभी समस्याओं को दोष-निवारण के जरिए, आलोचना व आत्म-आलोचना के जरिए हल किया जाना चाहिए, न कि बल-प्रयोग के जरिए। हम "मन्द-मन्थर बयार और हल्की फुहार" के तरीके के पक्ष में हैं, हालांकि चन्द मामलों में कुछ अधिक उग्रता की स्थिति से बचना जरा मुश्किल है, फिर भी कुल मिलाकर हम चाहते हैं कि मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज किया जाय तथा केवल जबानी जमा-खर्च न करते हुए इस मकसद को सचमुच हासिल किया जाय। पहला उसूल है आदमी की हिफाजत करना और दूसरा उसूल है उसकी आलोचना करना। पहले उसकी हिफाजत की जानी चाहिए, क्योंकि वह प्रतिक्रान्तिकारी नहीं है। इसका मतलब है एकता की आकांक्षा से प्रेरित होना, तथा आलोचना व आत्म-आलोचना के जरिए, एक नए आधार पर एक नई एकता कायम करना। जनता की पांतों के अन्दर अगर हमने गलतियां करने वाले सभी व्यक्तियों के प्रति हिफाजत करने और साथ ही आलोचना करने का तरीका अपनाया, तो हम जनता का दिल जीत लेंगे, समूची जनता को एकताबद्ध कर सकेंगे और समाजवाद का निर्माण करने के लिए हमारी साठ करोड़ जनता में मौजूद तमाम सक्रिय तत्वों को गोलबन्द कर सकेंगे।

मैं इस विचार का समर्थन करता हूं कि शान्ति-काल में फौजी कार्यकर्ताओं और गैर-फौजी कार्यकर्ताओं के ऊंचे वेतन के अन्तर को कदम-ब-कदम कम किया जाए, लेकिन इसका मतलब पूर्ण समानतावाद पर अमल करना हरगिज नहीं है। मेरा सैदव यह विचार

रहा है कि सेना को सादा जीवन बिताना चाहिए और कठोर परिश्रम करना चाहिए तथा दूसरों के सामने एक आदर्श उपस्थित करना चाहिए। 1949 में यहां आयोजित एक मीटिंग में हमारे किसी जनरल ने प्रस्ताव रखा था कि सेना में वेतन बढ़ा दिए जाने चाहिए, और बहुत से कमांडरों ने उनके प्रस्ताव का समर्थन भी किया था, पर मैंने उसका विरोध किया था। उन्होंने यह उदाहरण पेश किया था कि एक पूंजीपति के एक वक्त के भोजन में पांच व्यंजन होते हैं, जबकि जन-मुक्ति सेना के सिपाही के पास व्यंजन के नाम पर सिर्फ नमकीन पानी और कुछ शलगमों के अचार के सिवाय और कुछ नहीं होता, तथा उन्होंने यह कहा था कि ऐसी हालत नहीं चलेगी। इसके विपरीत मैंने कहा था कि यह बड़ी अच्छी बात है। वे लोग पांच व्यंजन वाला भोजन करते हैं, जबकि हम केवल अचार के साथ खाना खाते हैं। इस अचार में राजनीति है, इसमें से आदर्श उपस्थित करने वाले लोग पैदा होते हैं। इस अचार के कारण ही जन मुक्ति सेना ने जनता का दिल जीत लिया है; बेशक, इसके दूसरे कारण भी हैं। अब सेना के भोजन में सुधार हो गया है और सिर्फ अचार के साथ खाना खाने की स्थिति बदल गई है। लेकिन सबसे बुनियादी बात यह है कि हम सादा जीवन बिताने और कठोर परिश्रम करने का पक्षपोषण करना चाहिए, जो हमारा सहज राजनीतिक गुण है। चिनचओ क्षेत्र में सेब पैदा होते हैं। ल्याओशी मुहिम के दौरान शरद का मौसम था, और गांव वालों के घरों में प्रचुर मात्रा में सेब मौजूद थे। मगर हमारे योद्धाओं ने एक भी सेब नहीं उठाया। यह खबर पढ़कर मैं बहुत प्रभावित हुआ। वहां योद्धाओं ने जागरूकता के साथ यह महसूस किया कि सेब न खाना एक बहुत उदात्त आचरण है, जबकि उसे खाना एक बहुत नीचतापूर्ण आचरण है, क्योंकि वे सेब जनता के थे। हमारा अनुशासन ऐसी ही चेतना पर आधारित है। यह हमारी पार्टी के नेतृत्व और उसकी शिक्षा का फल है। आदमी में कुछ चेतना होनी चाहिए, और सर्वहारा वर्ग की क्रान्तिकारी भावना ऐसी ही चेतना से उत्पन्न होती है। क्या कोई आदमी सेब न खाने के कारण भी भूखों मरा है? नहीं, क्योंकि कोदो और अचार का योग तो हमारे पास था ही। जरूरत पड़ने पर यहां उपस्थित आप सब साथियों को सायबानों में भी रहना पड़ सकता है। जब हम दलदली मैदान पार कर रहे थे, तो बिना सायबानों के भी सो सकते थे। आज जबकि हमारे पास सायबान हैं, हम उनमें क्यों नहीं रह सकते? पिछले कुछ दिनों में फौज के लोगों का एक सम्मेलन हुआ है, और उन्होंने बड़े जोश के साथ यह विचार व्यक्त किया है कि वे आत्म-नियंत्रण और किफायत पर अमल करना चाहते हैं। आज जबकि सेना भी ऐसा कर रही है, दूसरे लोगों के लिए सादा जीवन बिताने व कठोर परिश्रम करने के और भी ज्यादा कारण मौजूद हैं। वरना उन्हें फौज के लोग चुनौती दे देंगे। यहां असैनिक और सैनिक दोनों उपस्थित हैं, हम सैनिकों द्वारा असैनिकों को चुनौती दिलाएंगे। जन-मुक्ति सेना एक श्रेष्ठ सेना है, और मैं उसे बेहद प्यार करता हूं।

यह जरूरी है कि राजनीतिक काम को सुदृढ़ बनाया जाय। यह जरूरी है कि हर क्षेत्र में, चाहे असैनिकों के बीच हो या सैनिकों के, चाहे कारखानों, देहातों, दुकानों व विद्यालयों में हो या फौजी यूनिटों में, चाहे पार्टी व सरकार के अंगों में हो या जन-संगठनों में, उसे खूब सुदृढ़ बनाया जाए, ताकि कार्यकर्ताओं और जन समुदाय के राजनीतिक स्तर को ऊंचा उठाया जा सके।

सहकारी समिति या व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था ? यह सवाल फिर एक बार उठाया गया है। पिछले साल जिन स्थानों में अच्छी फसल हुई थी या जिन इलाकों में भारी प्राकृतिक विपत्तियों का सामना करना पड़ा था, वहां यह सवाल नहीं उठा। यह केवल उन सहकारी समितियों में उठा है, जहां प्राकृतिक विपत्तियों का सामना तो करना पड़ा, लेकिन वे गम्भीर नहीं थीं तथा जहां फसल तो काटी गई, लेकिन वह अच्छी नहीं हुई। उन सहकारी समितियों में श्रम अंकों का नकद मूल्य लक्ष्य में निर्धारित मूल्य से कम निकला, जिससे समिति के सदस्यों की आमदनी में बढ़ोतरी नहीं हुई या बढ़ोतरी होने के बजाय दरअसल कुछ कटौती हो गई। नतीजे के तौर पर ऐसी बातें सुनाई देने लगीं : ''क्या सहकारी समितियों को अब भी अच्छा और कायम रखने लायक समझा जाए ?'' इस प्रकार की बातें हमारे कुछ पार्टी-कार्यकर्ताओं में भी प्रतिध्वनित होने लगी हैं। कुछ कार्यकर्ता कहते हैं कि सहकारी समितियां किसी भी सूरत में श्रेष्ठ नहीं हैं। सरकार के कुछ मंत्रियों ने थोड़े समय के लिए देहातों का दौरा किया और पेकिङ लौटने पर यह आशंकापूर्ण विचार फैलाया कि किसान उदासीन हैं, उनका खेतीबाड़ी का उत्साह ठण्डा पड़ गया है, ऐसा लगता है मानो सहकारी समितियां बस टूटने ही वाली हों, बस खत्म होने ही वाली हों। कुछ सहकारी समितियों के निदेशक अपना सिर ऊंचा नहीं रख सकते, क्योंकि उन पर अगल-बगल के आक्षेप आते रहते हैं तथा ऊपर की इकाइयों और अखबारों के जरिए उनकी आलोचना होती रहती है। पार्टी-कमेटियों के प्रचार-विभागों के कुछ प्रधान ऐसे हैं जिन्हें सहकारी समितियों की श्रेष्ठता का प्रचार करने में संकोच अनुभव होता है। कृषि मंत्री ल्याओ लू-येन, जो पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के ग्रामीण-कार्य विभाग के उपनिदेशक भी हैं, यह कहते हैं कि उनका उत्साह ठण्डा पड़ चुका है और उनके नीचे काम करने वाले जिम्मेदार कार्यकर्ताओं का उत्साह भी ठण्डा पड़ चुका है, तथा सहकारी समितियां किसी भी हालत में नहीं चल पाएंगी और कृषि के विकास का चालीससूत्री कार्यक्रम भी अब सार्थक नहीं रह गया है। किसी आदमी का उत्साह ठण्डा पड़ जाए तो हमें उसके प्रति क्या करना चाहिए ? यह बड़ा आसान काम है। अगर किसी आदमी का उत्साह ठण्डा पड़ जाए, तो हम उसे कुछ प्रोत्साहन देते हैं। अब अखबारों ने अपने प्रचार-कार्य की तर्ज बदल दी है। वे बड़े जोर-शोर से सहकारी समितियों की श्रेष्ठता का बखान कर रहे हैं, सिर्फ उनकी अच्छाइयों की चर्चा कर रहे हैं और बुराइयों के बारे में चुप्पी साध लेते हैं। कुछ प्रोत्साहन देने के लिए चन्द महीनों तक ऐसा ही करते रहना चाहिए।

पिछले से पिछले वर्ष दक्षिणपंथी भटकाव के खिलाफ संघर्ष किया गया तथा पिछले वर्ष ''दुस्साहस के साथ आगे बढ़ने'' की प्रवृत्ति के खिलाफ संघर्ष किया गया, जिसके परिणामस्वरूप एक अन्य दक्षिणपंथी भटकाव का सामना करना पड़ा। यहां मेरा तात्पर्य समाजवादी क्रान्ति के सवाल से तथा मुख्य रूप से ग्रामीण समाजवादी रूपान्तर के सवाल से सम्बन्धित दक्षिणपंथी भटकाव से है। खास ध्यान देने लायक बात यह है कि हमारे कार्यकर्ताओं के बीच हवा का एक झोंका तूफान की सी शक्ति लेकर आया है। हमारे मंत्रियों, उपमंत्रियों, विभाग प्रधानों व ब्यूरो प्रधानों तथा प्रान्तीय स्तर के कार्यकर्ताओं में काफी बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है जो जमींदारों, धनी किसानों या खुशहाल मध्यम किसानों के परिवारों से आए हैं, तथा कुछ लोगों के पिता ऐसे जमींदार हैं जिन्हें अभी तक चुनाव के अधिकार से वंचित रखा गया है। जब ये

कार्यकर्ता परिवारजनों से मिलने अपने घर जाते हैं तो उनसे इन उल्टी बातों के सिवाय और कुछ नहीं सुनते कि सहकारी समितियां अच्छी नहीं हैं और वे ज्यादा दिन नहीं टिक सकतीं। खुशहाल मध्यम किसानों की श्रेणी एक डांवाडोल सामाजिक श्रेणी है, उसमें व्यक्तिगत रूप से खेतीबाड़ी करने की प्रवृत्ति फिर से पनपने लगी है और कुछ लोग सहकारी समितियों से अलग होना चाहते हैं। हमारे कार्यकर्ताओं के बीच आने वाला हवा का झोंका इन्हीं वर्गों और श्रेणियों के विचारों को प्रतिबिम्बित करता है।

कृषि-सहकारिता अवश्य सफल होगी, लेकिन यह एक-दो वर्ष के अन्दर पूरी तरह सफल नहीं हो सकती। यह बात पार्टी, सरकार, सेना और विभिन्न जन-संगठनों के कार्यकर्ताओं को साफ-साफ बता दी जानी चाहिए। सहकारी समितियों का इतिहास अभी बहुत छोटा है, अधिकांश सहकारी समितियों की स्थापना को अभी केवल एक या डेढ़ साल हुआ है और उनके पास अनुभवों की कमी है। जो लोग अपने जीवन के अधिकांश काल में क्रान्तिकारी कार्य करते आए हैं वे भी गलतियां कर बैठते हैं, इसलिए आप यह उम्मीद कैसे कर सकते हैं कि जो लोग केवल एकाध वर्ष से इस कार्य में जुटे हुए हैं वे कोई गलती नहीं करेंगे ? मामूली सी हवा और वर्षा का सामना होते ही यह कहना कि सहकारिता नहीं चल पाएगी, खुद भी एक भारी गलती है। वास्तविकता यह है कि अधिकांश सहकारी समितियां अच्छी तरह या अपेक्षाकृत अच्छी तरह चलाई जा रही हैं। अगर आप एक भी ऐसी सहकारी समिति की मिसाल पेश करें जिसका संचालन अच्छी तरह किया जाता हो, तो सहकारिता का विरोध करने वाली तमाम बेहूदा दलीलों का खण्डन कर सकते हैं। अगर इस सहकारी समिति को अच्छी तरह चलाया जा सकता है, तो भला दूसरी सहकारी समितियों को अच्छी तरह क्यों नहीं चलाया जा सकता ? अगर यह सहकारी समिति श्रेष्ठता प्रदर्शित कर सकती है, तो भला दूसरी सहकारी समितियां क्यों नहीं कर सकतीं ? आप लोग जहां भी जाएं इस सहकारी समिति के अनुभवों का प्रचार-प्रसार करते रहें। हर प्रान्त में कम से कम एक ऐसी मिसाल खोज निकाली जा सकती है। एक ऐसी सहकारी समिति को खोज निकालिए जहां की स्थिति बेहद बुरी हो, जहां की भूस्थिति अच्छी न हो, जहां पहले बहुत कम पैदावार होती हो और जहां बहुत गरीबी हो। ऐसी सहकारी समिति को न चुनें जहां की स्थिति पहले से ही अच्छी हो। बेशक, अगर आपके पास दर्जनों मिसालें हों तो अच्छी बात है, लेकिन अगर आप एक भी सहकारी समिति को अच्छी तरह चलाकर उसे नमूने के तौर पर पेश कर सकें, तो यह साबित हो जाएगा कि आप कामयाब हो गए हैं।

स्कूल-कालेजों में भी गड़बड़ी पैदा हो गई है और कुछ स्थानों में विद्यार्थियों ने उपद्रव किए हैं। शच्याच्वाङ के एक विद्यालय में अन्तिम वर्ष की परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले कुछ विद्यार्थियों के लिए अस्थाई रूप से रोजगार उपलब्ध नहीं कराया जा सका और उन्हें विद्यालय में ही एक वर्ष और पढ़ना पड़ा। इससे उनमें असन्तोष पैदा हो गया। मुट्ठीभर प्रतिक्रान्तिकारियों ने इस मौके का फायदा उठाकर उकसावा दिया, जुलूस संगठित किया और शच्याच्वाङ रेडियो-स्टेशन पर कब्जा करने और ''हंगरी'' बना देने की धमकी दी। उन्होंने बहुत से पोस्टर लगाए, जिनमें ये तीन नारे सबसे ज्यादा ध्यान देने लायक थे : ''फासिज्म का नाश हो !'' ''हम युद्ध चाहते हैं, शान्ति नहीं !'' और ''समाजवाद किसी भी सूरत में श्रेष्ठ नहीं है !'' उनके

कथनानुसार कम्युनिस्ट पार्टी फासिस्ट है और हम जैसे लोगों को धराशायी कर दिया जाना चाहिए। उनके द्वारा पेश किए गए नारे इतने ज्यादा प्रतिक्रियावादी थे कि उन लोगों के प्रति मजदूरों, किसानों और सभी दायरों की जनता में जरा भी सहानुभूति नहीं रही। पेकिङ के छिङह्वा विश्वविद्यालय में एक विद्यार्थी ने खुलेआम यह ऐलान किया : "वह दिन जरूर आएगा जब मैं हजारों लोगों को मौत के घाट उतार दूंगा !" सौ फूल खिलने देने और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने देने की नीति पेश करने से यह "विचारशाखा" भी प्रकाश में आ गई। कामरेड तङ श्याओ फिङ इस विश्वविद्यालय में गए और उन्होंने वहां एक भाषण दिया। उन्होंने कहा, अगर आप हजारों लोगों को मौत के घाट उतारना चाहते हैं, तो हमें आपके खिलाफ अधिनायकत्व लागू करना पड़ेगा।

पेकिङ में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार हमारे कालेज-विद्यार्थियों में अधिकांश लोग जमींदारों, धनी किसानों, पूंजीपतियों और खुशहाल मध्यम किसानों की सन्तान हैं, जबकि मजदूर वर्ग और गरीब व निम्न-मध्यम किसानों के परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों की संख्या 20 फीसदी से भी कम है। देश के अन्य स्थानों में भी शायद ऐसी ही हालत है। इस स्थिति को बदल दिया जाना चाहिए, लेकिन इसमें समय लगेगा। हमारे कुछ कालेज-विद्यार्थियों में गोमुल्का बहुत लोकप्रिय है, टीटो और कार्डेल भी काफी लोकप्रिय हैं। दूसरी तरफ, जब पोलैण्ड और हंगरी में दंगे हुए, उस समय देहातों में अधिकांश जमींदारों और धनी किसानों ने तथा शहरों में अधिकांश पूंजीपतियों और जनवादी पार्टियों के सदस्यों ने अपेक्षाकृत अच्छा व्यवहार किया, गड़बड़ी पैदा करने की कोशिश नहीं की तथा हजारों लोगों को मार डालने की धमकी भी नहीं दी। लेकिन उनके इस व्यवहार का भी विश्लेषण किया जाना चाहिए। इसका कारण यह है कि उनके पास अब राजनीतिक पूंजी नहीं रह गई, मजदूर और गरीब व निम्न-मध्यम किसान उनकी बात नहीं सुनते, तथा उनके लिए पांव टिकाने की जगह नहीं रह गई है। अगर परमाणु बम द्वारा पेकिङ और शांघाई को उड़ा देने जैसी कोई घटना हो जाए, तो भी क्या ये लोग नहीं बदलेंगे ? आप पक्के तौर पर यह नहीं कह सकते कि वे नहीं बदलेंगे। ऐसी स्थिति आने पर जमींदारों, धनी किसानों, पूंजीपतियों और जनवादी पार्टियों के सदस्यों की नए सिरे से पांतबन्दी होने लगेगी। ये लोग दुनियादारी जानते हैं और उनमें से अनेक लोग अब भी दुबक कर चुपचाप पड़े हुए हैं। उनकी सन्तान – स्कूल-कालेजों में पढ़ने वाले बच्चे – अनुभवहीन हैं, और ऐसे ही लोग "मैं हजारों लोगों को मौत के घाट उतार दूंगा" और "समाजवाद किसी भी सूरत में श्रेष्ठ नहीं है" जैसी बातें कहकर अपने असली चेहरे को जाहिर कर देते हैं।

कुछ प्रोफेसर भी अजीबोगरीब बातें करते रहते हैं, जैसे कम्युनिस्ट पार्टी की जरूरत नहीं है, कम्युनिस्ट पार्टी उनका नेतृत्व नहीं कर सकती, समाजवाद अच्छा नहीं है, वगैरह-वगैरह। पहले वे अपने इन विचारों को मन में संजोए हुए थे, लेकिन जब सौ विचारशाखाओं में होड़ होने देने की नीति ने उन्हें बोलने का मौका दिया तो ये सब बातें झट बाहर निकल आईं। क्या आप लोगों ने "ऊ श्युन की जीवनी" नामक फिल्म देखी है ? उसमें दर्जनों फुट लम्बी एक कूची दिखाई गई है, जो "विद्वान व्यक्तियों" का प्रतीक है। यह कूची हिलाकर किसी भी चीज को मिटाने का चमत्कार किया जा सकता है। अब वे लोग बाहर निकल रहे हैं, शायद हमें मिटाने के इरादे से। क्या वे वास्तव में पुरानी व्यवस्था की पुनर्स्थापना की कोशिश तो नहीं कर रहे ?

पिछले साल दुनिया में कई तूफान उठे। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस में स्तालिन का बड़े जोर-शोर से विरोध किया गया। इसके बाद साम्राज्यवादियों ने कम्युनिज्म के खिलाफ दो तूफान खड़े किए, और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में भी दो तूफानी वाक्‌युद्ध हुए। इन तूफानों में योरप और दोनों अमरीकी महाद्वीपों की कुछ कम्युनिस्ट पार्टियों को काफी भारी आघात सहना पड़ा और हानि उठानी पड़ी, लेकिन पूर्व के विभिन्न देशों की पार्टियों को अपेक्षाकृत कम आघात सहना पड़ा और कम हानि उठानी पड़ी। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस बुलाने के फलस्वरूप कुछ लोग, जो पहले स्तालिन का बेहद उत्साह के साथ समर्थन करते थे, बड़ी उग्रता के साथ उनका विरोध करने लगे। मेरा विचार है कि ऐसे लोग मार्क्सवाद-लेनिनवाद पर कायम नहीं रहते, वे समस्याओं के प्रति विश्लेषणात्मक रवैया नहीं अपनाते और उनमें क्रान्तिकारी नैतिकता की भी कमी होती है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद में सर्वहारा वर्ग की क्रान्तिकारी नैतिकता भी शामिल है। चूंकि पहले आप स्तालिन का भरपूर समर्थन करते थे, इसलिए अब अपना रुख एकदम पलट देने का आपको कम से कम कोई कारण तो बताना ही चाहिए। लेकिन आप अपना रुख अचानक पलट देने का कोई कारण नहीं बताते मानो आपने अपनी जिन्दगी में स्तालिन का समर्थन कभी न किया हो, हालांकि पहले वास्तव में आप स्तालिन का पूरा समर्थन करते थे। स्तालिन का सवाल सारे अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन से और सभी देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों से सम्बन्धित है।

हमारी पार्टी के अधिसंख्य कार्यकर्ता सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस से असन्तुष्ट हैं और यह सोचते हैं कि उसमें स्तालिन पर हद से आगे बढ़कर प्रहार किया गया है। यह एक सामान्य भावना और सामान्य प्रतिक्रिया है। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो डांवाडोल होने लगे हैं। तूफान आने पर वर्षा के पहले ही चींटियां अपने बिलों से बाहर निकल आती हैं, उनकी "नाक" बहुत संवेदनशील होती है और वे ऋतु-विज्ञान भी जानती हैं। ज्यों ही सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस का तूफान आया, चीन में कुछ चींटियां अपने बिलों से बाहर निकल आईं। ये चींटियां पार्टी के अन्दर के वे ढुलमुल तत्व हैं जो जरा भी हलचल होते ही डांवाडोल होने लगते हैं। जब उन्होंने यह सुना कि स्तालिन की भरपूर निन्दा की गई है, तो उन्हें बहुत अच्छा लगा और वे फौरन दूसरी तरफ झुक गए, जिन्दाबाद के नारे लगाने लगे और कहने लगे कि ख्रुश्चोव सभी बातों में ठीक हैं और उनकी राय पहले से ही ऐसी रही है। बाद में जब साम्राज्यवादियों ने कुछ प्रहार किए और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के भीतर से भी कुछ प्रहार किए गए, तो खुद ख्रुश्चोव को भी अपनी तर्ज थोड़ी-बहुत बदलनी पड़ी, और इसलिए वे लोग फिर एक बार दोलायमान होकर इस ओर वापस आ गए। एक अप्रतिहत प्रवृत्ति का सामना होने पर उनके पास दोलायमान होकर वापस आने के सिवाय कोई और चारा नहीं था। दीवार पर उगने वाली घास का एक गुच्छा हवा में दाएं-बाएं दोलायमान होता रहता है। ढुलमुल लोगों का इरादा दोलायमान होकर हमारी ओर आना नहीं बल्कि दूसरी ओर जाना था। यह एक अच्छी बात है कि पार्टी के भीतर और बाहर कुछ लोगों ने पोलैण्ड और हंगरी की घटनाओं की तारीफ की। वे मुंह खोलते ही पोजनान और हंगरी की चर्चा किए बिना नहीं रह सके। ऐसा करके उन्होंने अपना असली चेहरा जाहिर कर दिया। चींटियां अपने बिलों से बाहर निकल आईं, कछुए और पृथ्वी के सभी कीड़े मकोड़े

अपने-अपने छिपने के स्थानों से बाहर निकल आए। वे गोमुल्का के इशारे पर नाचने लगे। जब गोमुल्का ने वृहद जनवाद की चर्चा की, तो उन्होंने भी उसकी हां में हां मिलाई। अब परिस्थिति बदल गई है और उन्होंने अपना मुंह बन्द कर लिया है। लेकिन वे लोग दरअसल चुप्पी नहीं साधना चाहते, बल्कि दिल से चाहते हैं कि कुछ बोलें।

जब तूफान आता है, तो ढुलमुल तत्व उसका मुकाबला नहीं कर पाते और डांवाडोल होने लगते हैं। यह एक नियम है। मैं आप लोगों का ध्यान इसकी ओर आकर्षित करना चाहता हूं। कुछ लोग कई बार डांवाडोल होने के बाद अनुभव प्राप्त कर लेते हैं और ढुलमुल नहीं रह जाते। लेकिन एक तरह के लोग ऐसे भी होते हैं जो हमेशा डांवाडोल होते रहते हैं। वे धान के पौधों जैसे होते हैं जो हवा का झोंका आते ही दोलायमान हो उठते हैं, क्योंकि उनके डण्ठल कमजोर होते हैं। बाजरे और मक्के के पौधे बेहतर साबित होते हैं, क्योंकि उनके डण्ठल ज्यादा मजबूत होते हैं। केवल बड़े-बड़े पेड़ ही अडिग रूप से सीधे खड़े रहते हैं। तूफान हर साल आता है। इसी तरह देश-विदेश में विचारधारात्मक व राजनीतिक तूफान भी हर साल आते हैं। यह समाज की एक स्वाभाविक परिघटना है। राजनीतिक पार्टी एक प्रकार का समाज है, एक प्रकार का राजनीतिक समाज है। इस राजनीतिक समाज की मुख्य श्रेणी में राजनीतिक पार्टियां और राजनीतिक ग्रुप आते हैं। हर राजनीतिक पार्टी एक वर्ग-संगठन है। हमारी चीनी कम्युनिस्ट पार्टी सर्वहारा वर्ग की राजनीतिक पार्टी है, जिसमें मुख्य रूप से मजदूर वर्ग और अर्ध-सर्वहारा गरीब किसानों के परिवारों से आए लोग शामिल हैं। लेकिन बहुत से ऐसे पार्टी-सदस्य भी हैं जो जमींदारों, धनी किसानों और पूंजीपतियों के परिवारों से आए हैं या खुशहाल मध्यम किसान परिवारों अथवा शहरी निम्न पूंजीपति परिवारों में पैदा हुए हैं। यद्यपि उनमें ऐसे लोगों की संख्या काफी है जो एक लम्बे अरसे तक भीषण संघर्षों में कम या ज्यादा मात्रा में तप चुके हैं, फिर भी वे मार्क्सवाद को ज्यादा आत्मसात नहीं कर पाए, इसलिए विचारधारात्मक और मानसिक रूप से वे धान के उन पौधों की तरह हैं जो हवा के झोंके से दोलायमान हो उठते हैं।

कुछ पार्टी सदस्यों को, जो पहले बहुत सी कसौटियों पर खरे उतर चुके हैं, अब समाजवाद की कसौटी पर खरे उतरना मुश्किल जान पड़ रहा है। श्वे श्युन इसकी एक जीती जागती मिसाल हैं। पहले वे हपे प्रान्त की पार्टी-कमेटी की उपसचिव और प्रान्त की उपराज्यपाल थीं। आखिर वे कब से डांवाडोल होने लगीं ? उस समय से जब अनाज की खरीद-फरोख्त पर राजकीय इजारा कायम किया गया। यह समाजवाद को लागू करने का एक महत्वपूर्ण कदम था। लेकिन वे इसके सख्त खिलाफ थीं और उन्होंने हर हालत में इसका विरोध किया। दूसरा उदाहरण मङ यूङ-छ्येन का है, जो अखिल चीन सप्लाई व क्रय-विक्रय सहकारी समिति महासंघ के उपनिदेशक थे। उन्होंने भी एक याचिका में इस राजकीय इजारेदारी का दृढ़ता से विरोध किया। जब कृषि-सहकारिता को कार्यान्वित किया जा रहा था, उस समय फिर एक बार पार्टी के भीतर कुछ लोगों ने इसका विरोध किया। संक्षेप में, ऊंचे ओहदों पर काम करने वाले कुछ पार्टी-कार्यकर्ता ऐसे हैं जो डांवाडोल हो चुके हैं और समाजवाद की कसौटी पर खरे नहीं उतर पाए। क्या ऐसी हालत खत्म हो चुकी है ? नहीं, अभी खत्म नहीं हुई। क्या अब से दस वर्ष बाद ये लोग अडिग बन सकेंगे और समाजवाद में सचमुच आस्था रखने लगेंगे ? यह पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता। दस वर्ष बाद अगर कोई समस्या पैदा होगी, तो ये सम्भवत:

फिर कहने लगेंगे कि उन्होंने बहुत पहले ही इसका पूर्वानुमान कर लिया था।

यहां कुछ सामग्री उपस्थित कामरेडों के बीच बांटी जाने वाली है, जिसमें सेना के कुछ कार्यकर्ताओं के विचारधारात्मक रुझानों पर प्रकाश डाला गया है। यद्यपि इनके द्वारा व्यक्त किए गए मतों में कुछ बातें युक्तिसंगत भी हैं, उदाहरण के लिए, उनका यह कथन कि कुछ कार्यकर्ताओं का वेतन बहुत ऊंचा है और किसानों को यह बात पसन्द नहीं है, तथापि उनकी आम प्रवृत्ति सही नहीं है और जिस बुनियादी कार्यदिशा का वे अनुसरण करते हैं वह गलत है। वे लोग हमारी पार्टी की नीतियों की आलोचना करते हुए कहते हैं कि देहातों के बारे में तो हमारी नीति "वामपंथी" है और शहरों के बारे में दक्षिणपंथी। 96 लाख वर्ग किलोमीटर भूमि वाला चीन केवल दो घटकों से बना है, शहर और देहात। उनकी राय में दोनों ही घटकों के बारे में हमारी नीतियां गलत हैं।

जब वे लोग यह कहते हैं कि देहातों के बारे में हमारी नीति में "वामपंथी" भटकाव मौजूद है, तो उनका मतलब यह होता है कि किसानों की आमदनी ज्यादा नहीं है, मजदूरों की आमदनी से कम है। यहां हमें विश्लेषण करना चाहिए कि केवल आमदनी के आधार पर निर्णय नहीं करना चाहिए। यह सच है कि मजदूरों की आमदनी आम तौर पर किसानों से ज्यादा है, लेकिन उनके उत्पादन का मूल्य भी ज्यादा है, तथा इसके अलावा उन्हें अपनी रोजमर्रा की आवश्यकताओं के लिए भी ज्यादा खर्च करना पड़ता है। किसानों के रहन-सहन में सुधार होना मुख्य रूप से उत्पादन बढ़ाने की उनकी कोशिशों पर निर्भर है। सरकार भी उनकी भरपूर मदद करती है, जैसे जल-संरक्षण परियोजनाओं का निर्माण करना, उन्हें कृषि-ऋण देना, इत्यादि। हमारे कृषि-उत्पादनों पर लगाया गया टैक्स, जिसमें सहायक धंधों के उत्पादनों पर लगाया गया टैक्स भी शामिल है, किसानों के कुल उत्पादन-मूल्य का लगभग 8 फीसदी है और बहुत से सहायक धन्धों के उत्पादनों पर कोई टैक्स वसूल नहीं किया जाता। राज्य द्वारा अनाज को प्रतिमानित दामों पर खरीदा जाता है। औद्योगिक उत्पादनों और किसानों के कृषि-उत्पादनों के विनिमय में राज्य बहुत कम मुनाफा लेता है। हमने सोवियत संघ की तरह अनिवार्य बिक्री की व्यवस्था लागू नहीं की है। कृषि-उत्पादनों के साथ औद्योगिक उत्पादनों को विनिमय करते समय हम मूल्यों के कैंचीनुमा अन्तर को कम करने की कोशिश करते हैं, न कि सोवियत संघ की तरह उसे बढ़ाते हैं। हमारी नीति और सोवियत संघ की नीति में भारी अन्तर है। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि देहातों के बारे में हमारी नीति में "वामपंथी" भटकाव मौजूद है।

हमारी सेना में ऊंचे पद पर काम करने वाले कार्यकर्ताओं में से कुछ लोग खुशहाल मध्यम किसानों, धनी किसानों या जमींदारों की बातों से प्रभावित होकर, जिन्हें उन्होंने शायद अपने जन्म स्थान की यात्रा के दौरान या अपने यहां आने वाले रिश्तेदारों से सुना है, किसानों की तरफ से शिकायतें पेश करते हैं। 1955 की पहली छमाही में बहुत से पार्टी-सदस्यों ने ल्याङ शू-मिङ जैसे लोगों के सुर में सुर मिलाते हुए किसानों की ओर से शिकायतें पेश कीं, मानो केवल इन्हीं दो दायरों के लोग किसानों का प्रतिनिधित्व करते हों और केवल वे ही किसानों के दुख को समझते हों। उनकी नजरों में किसानों का प्रतिनिधित्व न तो हमारी केन्द्रीय कमेटी करती है और न प्रान्तीय पार्टी-कमेटियां और अधिसंख्य पार्टी-सदस्य। च्याङसू प्रान्त के एक सर्वेक्षण से पता चला है कि कुछ क्षेत्रों में काउण्टी, जिले और श्याङ के स्तर के 30 फीसदी

कार्यकर्ताओं ने किसानों की ओर से शिकायतें पेश कीं। बाद में जांच-पड़ताल करने पर मालूम हुआ कि इनमें अधिकांश लोग अपेक्षाकृत खुशहाल परिवारों के हैं और उनके पास बेचने के लिए अतिरिक्त अनाज भी है। जिस चीज को वे लोग "दुख" कहते हैं वह दरअसल अतिरिक्त अनाज होना ही है। जब वे यह कहते हैं कि "किसानों की मदद करो" और "किसानों का खयाल करो" तो उनका मतलब यह होता है कि राज्य को अतिरिक्त अनाज न बेचा जाए। शिकायतें पेश करने वाले ये लोग आखिर किसका प्रतिनिधित्व करते हैं ? ये लोग व्यापक किसान-समुदाय का प्रतिनिधित्व नहीं करते बल्कि उन खुशहाल किसानों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनकी संख्या बहुत कम है।

जहां तक इस आरोप का ताल्लुक है कि शहरों के बारे में हमारी नीति में दक्षिणपंथी भटकाव मौजूद है, यह देखने में कुछ सही मालूम होता है, क्योंकि हमने पूंजीपतियों की जीविका का बन्दोबस्त कर दिया है और उन्हें सात साल तक एक निश्चित दर से ब्याज[1] भी दे रहे हैं। सात साल बाद क्या किया जाएगा ? इसका निर्णय उस समय की परिस्थिति के अनुसार किया जाएगा। अच्छा यह होगा कि इस सिलसिले को बन्द न किया जाए, यानी उन्हें निश्चित ब्याज के रूप में कुछ रकम देना जरूरी रखा जाए। यह थोड़ी सी रकम खर्च करके हम इस वर्ग को खरीद रहे हैं। केन्द्रीय कमेटी ने इस नीति पर बड़ी सावधानी से सोच-विचार किया है। आम तौर पर, पूंजीपतियों और उनसे सम्बन्धित गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों व बुद्धिजीवियों का सांस्कृतिक व तकनीकी जानकारी का स्तर अपेक्षाकृत ऊंचा है। इस वर्ग को खरीदकर हमने उन्हें राजनीतिक पूंजी से वंचित कर दिया है और उनके मुंह बन्द कर दिए हैं। उन्हें इससे वंचित करने का तरीका है उन्हें खरीद लेना और यथोचित काम देने का बन्दोबस्त करना। ऐसा करने से राजनीतिक पूंजी उनके हाथ में नहीं रहेगी, बल्कि हमारे हाथ में आ जाएगी। यह जरूरी है कि हम उन्हें अपनी राजनीतिक पूंजी से पूर्ण रूप से वंचित कर दें और यह सिलसिला तब तक जारी रखें जब तक उनके पास इस पूंजी का जरा भी अंश बाकी रहे। इसलिए यह भी नहीं कहा जा सकता कि शहरों के बारे में हमारी नीति में दक्षिणपंथी भटकाव मौजूद है।

देहातों के बारे में हमारी नीति सही है और इसी तरह शहरों के बारे में भी हमारी नीति सही है। यही कारण है कि हमारे यहां हंगरी की घटना जैसा देशव्यापी उपद्रव नहीं हो सकता। ज्यादा से ज्यादा यह हो सकता है कि चन्द लोग इधर-उधर गड़बड़ी पैदा कर दें और तथाकथित वृहद जनवाद के लिए शोरगुल मचाने लगें। वृहद जनवाद भी कोई भयंकर चीज नहीं है। इस सवाल के बारे में मेरा दृष्टिकोण आपके बीच मौजूद कुछ लोगों से भिन्न है, जो इससे बहुत डरते जान पड़ते हैं। मेरा खयाल है कि अगर वृहद जनवाद आ भी जाए, तो आप लोगों को पहले तो उससे डरना नहीं चाहिए तथा दूसरे उसके पक्षधरों की कथनी और करनी का विश्लेषण करना चाहिए। तथाकथित वृहद जनवाद को अमल में उतारते समय वे बुरे तत्त्व कोई न कोई गलत काम अवश्य कर बैठेंगे या कोई न कोई गलत बात अवश्य कह डालेंगे, जिससे केवल उनकी अपनी ही कलई खुल जाएगी और वे खुद ही अलगाव में पड़ जाएंगे। "हजारों लोगों को मौत के घाट उतारना" – क्या यह एक ऐसा तरीका है जिससे जनता के बीच अन्तर्विरोधों को हल किया जा सकता है ? क्या इससे अधिसंख्य जनता की सहानुभूति प्राप्त की जा सकती है ? "फासिज्म का नाश हो", "समाजवाद किसी भी सूरत में श्रेष्ठ नहीं है" – क्या यह कथन संविधान का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन नहीं करता ? कम्युनिस्ट पार्टी और उसके नेतृत्व में चलने वाली राजसत्ता क्रान्तिकारी है तथा समाजवाद श्रेष्ठ है; यह तो संविधान में लिखा हुआ है और इसे सारे देश की जनता मानती है। "हम युद्ध चाहते हैं, शान्ति नहीं" – वाह, क्या बात कही है ! तो आप युद्ध का आवाहन कर रहे हैं। लेकिन जिसे आप बटोर सकते हैं वह सिर्फ एक छोटा सा दस्ता है, आपके सिपाहियों की संख्या काफी नहीं है और अफसर भी प्रशिक्षित नहीं हैं। ये दुधमुंहे बच्चे सचमुच पागल हो गए हैं ! शच्याच्वाङ के उस विद्यालय में उपरोक्त तीन नारों के बारे में वाद-विवाद किया गया, और सत्तर प्रतिनिधियों में से केवल एक दर्जन ने इनका समर्थन किया, बाकी पचास से ज्यादा लोगों ने इनका विरोध किया। बाद में इन नारों के बारे में चार हजार विद्यार्थियों द्वारा वाद-विवाद किया गया और सबने इनका विरोध किया। तब वे एक दर्जन लोग अलगाव में पड़ गए। ये नारे पेश करने और इन पर डटे रहने वाले घोर प्रतिक्रियावादी लोग केवल मुट्ठीभर हैं। अगर वे लोग जगह जगह वृहद जनवाद का शोर न मचाते और इस तरह के पोस्टर न लगाते, तो हमें यह कैसे मालूम होता कि वे क्या करना चाहते हैं। जहां एक बार उन लोगों ने वृहद जनवाद का ढोल पीटना शुरू किया तो उनकी दुम पकड़ ली गई। हंगरी की घटना से एक अच्छी बात यह हुई कि चीन में इन चींटियों को प्रलोभन देकर बिलों से बाहर निकाला जा सका।

हंगरी में वृहद जनवाद लागू करते ही पार्टी, सरकार और सेना को एकदम छिन्न-भिन्न कर दिया गया। चीन में ऐसी स्थिति नहीं आएगी। अगर मुट्ठी भर दुधमुंहे विद्यार्थी ताकत के जोर से हमारी पार्टी, सरकार और सेना को छिन्न-भिन्न कर सकते हैं, तो हम सब लोग जरूर निरे मूर्ख हैं। इसलिए, वृहद जनवाद से हरगिज न डरें। अगर गड़बड़ी पैदा होती है, तो पका हुआ फोड़ा फूटने में मदद मिलेगी और यह एक अच्छी बात है। हम साम्राज्यवाद से न तो पहले डरते थे और न अब डरते हैं। च्याङ काई-शेक से भी हम कभी नहीं डरे। क्या हमें अब वृहद जनवाद से डरना चाहिए ? मेरा खयाल है नहीं डरना चाहिए। अगर कोई आदमी तथाकथित वृहद जनवाद की आड़ लेकर समाजवादी व्यवस्था का विरोध करता है और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व को धराशायी करने की कोशिश करता है, तो हम उसके खिलाफ सर्वहारा अधिनायकत्व लागू करेंगे।

बुद्धिजीवियों के सवाल के बारे में आजकल एक प्रवृत्ति यह है कि उनके नव रूपान्तर पर ध्यान न देकर उनके लिए तरह-तरह का बन्दोबस्त करने पर जोर दिया जाता है; उनके लिए तरह-तरह का बन्दोबस्त करने पर बहुत ध्यान दिया जाता है और उनके नव रूपान्तर पर बहुत कम। सौ फूल खिलने देने और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने देने की नीति लागू करने के बाद से बुद्धिजीवियों का नव रूपान्तर करने में कुछ बुजदिली से काम लिया जा रहा है। जब हमने पूंजीपतियों का नव रूपान्तर करने में बुजदिली नहीं दिखाई, तो भला बुद्धिजीवियों और गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों का नव रूपान्तर करने में क्यों दिखाई जाए ?

सौ फूल खिलने दो – मेरा खयाल है कि हमें इस नीति को जारी रखना चाहिए। कुछ साथियों की राय है कि केवल सुगन्धित फूलों को ही खिलने देना चाहिए और जहरीली खरपतवार को नहीं उगने देना चाहिए। इस राय से जाहिर होता है कि वे लोग सौ फूल खिलने देने और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने देने की नीति को अच्छी तरह नहीं समझते। आम

तौर पर प्रतिक्रान्तिकारी कथनों का निषेध किया जाना स्वाभाविक है। लेकिन, जब उन्हें प्रतिक्रान्तिकारी कथनों के रूप में नहीं बल्कि क्रान्तिकारी कथनों का मुलम्मा चढ़ा कर पेश किया जाता है, तो आपको उनकी अभिव्यक्ति की इजाजत देनी पड़ेगी। इससे हमें इन कथनों को परखने और इनके खिलाफ संघर्ष करने में मदद मिलेगी। खेतों में दो प्रकार के पौधे उगते हैं, अनाज और खरपतवार। खरपतवार को खेतों से हर साल उखाड़ा जाना चाहिए और साल में कई बार उखाड़ा जाना चाहिए। अगर आप कहते हैं कि केवल सुगन्धित फूल खिलने देंगे और जहरीली खरपतवार नहीं उगने देंगे, तो इसका मतलब यह होता है कि आप खेतों में केवल अनाज के पौधों को उगने देंगे और खरपतवार का एक तिनका भी नहीं उगने देंगे। आप चाहे कुछ भी क्यों न कहें, जो आदमी खेतों में जा चुका है उसे मालूम है कि अगर खरपतवार को उखाड़ने का काम नहीं किया गया तो खेतों में खरपतवार ही खरपतवार हो जाएगी। एक तरह से खरपतवार भी उपयोगी है – जब उसे गोड़कर जमीन के नीचे दबा दिया जाता है तो वह खाद बन जाती है। क्या आप कहते हैं कि वह उपयोगी नहीं है ? एक अनुपयोगी चीज को उपयोगी चीज में बदला जा सकता है। किसानों को हर साल खेतों में खरपतवार के खिलाफ संघर्ष करना चाहिए, इसी प्रकार हमारी पार्टी के लेखकों, कलाकारों, समालोचकों और प्रोफेसरों को भी हर साल विचारधारा के क्षेत्र में खरपतवार के खिलाफ संघर्ष करना चाहिए। जब हम यह कहते हैं कि कोई चीज तप कर फौलाद बन गई है, तो इसका मतलब यह होता है कि उसे संघर्ष के दौरान परखा जा चुका है। अगर खरपतवार उग जाती है तो हम उसे उखाड़ देते हैं। अन्तरविरोध का यह विपरीत पक्ष लगातार प्रकट होता रहता है। खरपतवार अब से दस हजार वर्ष बाद भी उगते रहेंगे, इसलिए हमें इतने लम्बे समय तक संघर्ष करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

सारांश में, 1956 का वर्ष हमारे लिए एक घटना-प्रधान वर्ष था। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में यह एक ऐसा वर्ष था जिसमें ख्रुश्चोव व गोमुल्का ने तूफान खड़े किए, और देश के अन्दर यह एक ऐसा वर्ष था जिसमें बड़ा जबरदस्त समाजवादी रूपान्तर किया गया। अब भी घटना-प्रधान काल चल रहा है, और विविध प्रकार के विचार प्रकट होते रहेंगे। मैं आशा करता हूं कि यहां उपस्थित आप सब कामरेड इस बात पर ध्यान देंगे।

II. 27 जनवरी का भाषण

अब मुझे कुछ बातें कहने की इजाजत दीजिए।

पहले, हमें अपनी कामयाबियों का पर्याप्त मूल्यांकन करना चाहिए। हमारी क्रान्ति में और हमारे निर्माण-कार्य में उपलब्धियां मुख्य हैं, यद्यपि खामियां और गलतियां भी हैं। हमारी उपलब्धियां चाहे कितनी ही क्यों न हों, उनके बारे में अतिशयोक्ति नहीं की जानी चाहिए, लेकिन उनका मूल्य कम आंकने में गलतियां होंगी, शायद भारी गलतियां होंगी। इस सवाल को आठवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन में हल कर लिया गया था, लेकिन इस सम्मेलन में इसकी बारम्बार चर्चा किए जाने से यह जाहिर होता है कि कुछ साथियों के दिमाग में यह सवाल अब भी हल नहीं हुआ। खास तौर पर गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों में ऐसी

टिप्पणियां होती रहती हैं : ''आप लोग हमेशा यह कहते हैं कि उपलब्धियां बुनियादी चीज होती हैं। इससे किसी भी समस्या को हल नहीं किया जा सकता। कौन नहीं जानता कि उपलब्धियां बुनियादी चीज होती हैं, लेकिन खामियों और गलतियों के बारे में क्या कहा जाए ?'' फिर भी, दरअसल उपलब्धियां ही बुनियादी चीज होती हैं, और अगर इस बात की अभिपुष्टि नहीं की जाएगी तो लोग हतोत्साहित हो जाएंगे। क्या ऐसे लोग नहीं हैं जो सहकारी रूपान्तर के बारे में हतोत्साह हो चुके हैं ?

दूसरे, सर्वांगीण नियोजन और चौतरफा बन्दोबस्त किया जाना जरूरी है, ताकि हर आदमी के लिए यथोचित प्रबन्ध किया जा सके। यह हमारी अविचल नीति रही है। येनान के दिनों में भी हमारी यही नीति थी। अगस्त 1944 में 'ता कुङ पाओ' नामक अखबार ने एक सम्पादकीय में कहा था : ''अपनी खिचड़ी अलग न पकाओ।'' छुङछिङ समझौता-वार्ता के दौरान मैंने 'ता कुङ पाओ' के इनचार्ज से कहा था कि मैं उनकी उस बात से पूरी तरह सहमत हूं, बशर्ते कि जनरलिस्मो च्याङ काई-शेक हमारे भोजन का प्रबन्ध कर दें, अन्यथा अपनी खिचड़ी अलग पकाने के सिवाय हम क्या कर सकते हैं ? उस समय हमने च्याङ काई-शेक का मुकाबला करने के लिए यह नारा पेश किया था कि हर आदमी के लिए यथोचित प्रबन्ध किया जाए। अब हम देश का संचालन कर रहे हैं। हमारी नीति अब भी सर्वांगीण नियोजन और चौतरफा बन्दोबस्त की है, ताकि हर आदमी के लिए यथोचित प्रबन्ध किया जा सके। इसमें क्वोमिन्ताङ द्वारा छोड़े गए तमाम फौजी व सरकारी कर्मचारियों के लिए यथोचित प्रबन्ध करना शामिल है। यहां तक कि जो लोग थाइवान भाग गए हैं वे भी वापस आ सकते हैं। जिन प्रतिक्रान्तिकारियों का वध नहीं किया गया उन सब का नव रूपान्तर किया जाएगा और उन्हें जीवन-निर्वाह के अवसर प्रदान किए जाएंगे। जनवादी पार्टियों को बनाए रखा जाएगा और उनका लम्बे अरसे तक हमारे साथ सहअस्तित्व बना रहेगा, तथा उनके सदस्यों के लिए जीविका का बन्दोबस्त किया जाएगा। संक्षेप में, हम सारे देश की 60 करोड़ जनता की देखभाल करेंगे। उदाहरण के लिए, अनाज की खरीद फरोख्त में राजकीय इजारा कायम करने के जरिए हम तमाम शहरी आबादी और अनाज की कमी वाले देहाती परिवारों की देखभाल करते हैं। एक अन्य उदाहरण शहरी नौजवानों का है। उनके लिए किसी न किसी तरह का प्रबन्ध तो करना ही होगा – वे लोग स्कूल में भरती हो सकते हैं, या देहात में, कारखाने में अथवा सीमान्त क्षेत्र में काम करने जा सकते हैं। जिन परिवारों में किसी भी सदस्य के पास रोजगार नहीं है उन्हें आर्थिक सहायता दी जाएगी, हमारा उसूल यह है कि किसी को भूखा न मरने दिया जाए। यह सब सर्वांगीण नियोजन और चौतरफा बन्दोबस्त के दायरे के अन्दर आता है। यह आखिर किस प्रकार का उसूल है ? यह समाजवाद का निर्माण करने के लिए तमाम सकारात्मक शक्तियों को एकजुट करने का उसूल है। यह एक रणनीतिक उसूल है। यह उसूल अपनाना बेहतर है, और इससे गड़बड़ी कम पैदा होगी। सर्वांगीण नियोजन और चौतरफा बन्दोबस्त की बात सब लोगों को साफ-साफ बता दी जानी चाहिए।

कामरेड ख छिङ शी ने कहा है कि हमें सभी सम्भव उपायों को खोजना चाहिए। उन्होंने बहुत ठीक कहा है, क्योंकि हमें सभी सम्भव उपायों को खोजकर कठिनाइयों को दूर कर लेना चाहिए। इस नारे का प्रचार किया जाना चाहिए। हमारे सामने ज्यादा बड़ी कठिनाइयां मौजूद

नहीं हैं, तो भला उनसे भयभीत होने की क्या जरूरत है ! क्या अब स्थिति कम से कम लम्बे अभियान से बेहतर नहीं है जब हमें बर्फीले पहाड़ों और दलदली मैदानों को पार करना पड़ा था ? लम्बे अभियान के दौरान तातू नदी पार करने के बाद हमारे सामने यह सवाल था कि किस रास्ते से जाए ? उत्तर में गगनचुम्बी पर्वतमाला के अलावा कुछ नहीं था और वहां आबादी भी बहुत कम थी। उस समय हमने आवाहन किया कि हजार तरीकों और सौ उपायों से कठिनाइयों पर काबू पा लिया जाय। हजार तरीकों और सौ उपायों का तात्पर्य आखिर क्या है ? हजार तरीकों का तात्पर्य है 999 तरीकों में एक तरीका और जोड़ देना, सौ उपायों का मतलब है 99 उपायों में एक उपाय और मिला देना। आप लोगों ने अब तक बहुत कम तरीके या उपाय सुझाए हैं। विभिन्न प्रान्तों और केन्द्रीय विभागों के पास न जाने कितने तरीके और उपाय मौजूद हैं ? हर सम्भव उपाय खोजा जाए तो कठिनाइयों को अवश्य दूर किया जा सकेगा।

तीसरे, अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति। मध्य-पूर्व में स्वेज नहर घटना हुई थी। नासिर नामक एक व्यक्ति ने नहर का राष्ट्रीयकरण कर डाला, एडन नामक दूसरे व्यक्ति ने आक्रमणकारी सेना भेज दी और आइजनहावर नामक तीसरे व्यक्ति ने उसके पीछे-पीछे वहां पहुंचकर बरतानवियों को मार भगाया और उस जगह को केवल अपने कब्जे में रखना चाहा। बरतानवी पूंजीपति वर्ग, जो साजिशें रचने और दावंपेच खेलने में उस्ताद है, यह खूब अच्छी तरह जानता है कि कब समझौता किया जाए। लेकिन इस बार वह चूक गया और उसने मध्य-पूर्व को अमरीकियों के हाथ में जाने दिया। यह कितनी भारी गलती थी ! इतनी भारी गलतियां बरतानवी पूंजीपति वर्ग के इतिहास में आखिर कितनी हुई हैं ? क्या कारण था कि इस बार उसकी अक्ल पथरा गई और वह इतनी भारी गलती कर बैठा ? इसका कारण यह था कि अमरीका का दबाव बेहद भारी था और बरतानवी पूंजीपति वर्ग मध्य-पूर्व पर फिर से कब्जा करने और अमरीका को रोकने के लिए इतना बेचैन था कि अपना सन्तुलन खो बैठा। क्या बरतानिया ने अपने प्रहार का मुख्य निशाना मिस्र को बनाया ? नहीं, बरतानिया की चालें अमरीका के खिलाफ थीं, जबकि अमरीका की चालें बरतानिया के खिलाफ थीं।

इस घटना से हम आज की दुनिया के संघर्ष के गुरुत्व-केन्द्र को देख सकते हैं। साम्राज्यवादी देशों और समाजवादी देशों के बीच का अन्तरविरोध निश्चय ही एक अत्यन्त तीव्र अन्तरविरोध है। लेकिन साम्राज्यवादी देश इस समय कम्युनिज्म विरोध के नाम पर विभिन्न क्षेत्रों पर अपना कब्जा कायम करने के लिए आपस में छीना-झपटी कर रहे हैं। वे किन-किन क्षेत्रों के लिए छीना-झपटी कर रहे हैं ? एशिया और अफ्रीका के उन क्षेत्रों के लिए जिनकी आबादी 100 करोड़ है। आजकल उनकी छीना-झपटी भारी रणनीतिक महत्व वाले मध्य-पूर्व पर, और खास तौर से मिस्र के स्वेज नहर क्षेत्र पर केन्द्रित है। मध्य-पूर्व में दो प्रकार के अन्तरविरोध इस प्रकार हैं : पहले, विभिन्न साम्राज्यवादी ताकतों के बीच अन्तरविरोधों और तीन प्रकार की शक्तियों के बीच टकराव हो-रहा है। ये दो प्रकार के अन्तरविरोध, यानी अमरीका और बरतानिया के तथा अमरीका और फ्रांस के बीच के अन्तरविरोध; दूसरे, साम्राज्यवादी ताकतों और उत्पीड़ित राष्ट्रों के बीच के अन्तरविरोध। ये तीन प्रकार की शक्तियां इस प्रकार हैं : पहली, अमरीका, जो सबसे बड़ी साम्राज्यवादी शक्ति है; दूसरी, बरतानिया और फ्रांस, जो दूसरे दर्जे की साम्राज्यवादी शक्तियां हैं; और तीसरी, उत्पीड़ित राष्ट्र। एशिया और अफ्रीका आज

साम्राज्यवादियों की छीना-झपटी के मुख्य क्षेत्र हैं। इन क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलनों का उदय हुआ है। अमरीका जिन तरीकों को अपनाता है वे कभी हिंसात्मक होते हैं तो कभी अहिंसात्मक, तथा मध्य-पूर्व में वह ऐसी ही चाल चल रहा है।

उनके आपसी कलह से हमारा हित सिद्ध होता है। हम समाजवादी देशों को चाहिए कि हम खुद अपने को सुदृढ़ बनाने और अपनी एक भी इंच भूमि हाथ से न निकलने देने की नीति पर अमल करें। जो कोई भी हमारी भूमि हड़पने की कोशिश करेगा उसके खिलाफ हम अवश्य संघर्ष करेंगे। यह हमारी लक्ष्मण रेखा है, जिसके बाहर उन्हें आपस में झगड़ा करने की इजाजत दी जा सकती है। तो क्या हम बोलेंगे या नहीं ? हां, हम बोलेंगे। हम एशिया, अफ्रीका और लातिन अमरीका की जनता के साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्षों तथा विभिन्न देशों की जनता के क्रान्तिकारी संघर्षों का निश्चय ही समर्थन करेंगे।

जहां तक साम्राज्यवादी देशों और हमारे बीच के सम्बन्धों की बात है, ''वे हमारे बीच मौजूद हैं और हम उनके बीच''। हम उन देशों की जन-क्रान्तियों का समर्थन करते हैं और वे हमारे यहां उन्मूलनकारी कार्यवाहियां करते हैं। उनके बीच हमारे आदमी मौजूद हैं और वे हैं उन देशों के कम्युनिस्ट तथा क्रान्तिकारी मजदूर, किसान, बुद्धिजीवी व प्रगतिशील व्यक्ति। हमारे बीच भी उनके आदमी मौजूद हैं। चीन का ही उदाहरण लीजिए, हमारे यहां उनके आदमी मौजूद हैं – पूंजीपति वर्ग व जनवादी पार्टियों के बहुत से लोग तथा जमींदार वर्ग। इस समय ये लोग यथोचित व्यवहार करते मालूम होते हैं और गड़बड़ी पैदा नहीं कर रहे। लेकिन अगर पेकिङ पर एक परमाणु बम गिरा दिया गया, तो वे लोग क्या करेंगे ? क्या वे विप्लव नहीं करेंगे ? यह अत्यन्त सन्देहास्पद है। जहां तक श्रम के जरिए सुधारे जाने वाले अपराधियों का सवाल है, शच्याच्वाङ के विद्यालय में गड़बड़ी पैदा करने वाले सरगनाओं का सवाल है और पेकिङ के उस कालेज-विद्यार्थी का सवाल है जो हजारों लोगों को गोली से उड़ा देना चाहता था, उनके बारे में यह बात और भी लागू होती है। हमें उन लोगों को अपने अन्दर जज्ब कर लेना चाहिए और जमींदारों व पूंजीपतियों को श्रमिकों में बदल देना चाहिए। यह भी एक रणनीतिक उसूल है। वर्गों को मिटाने के लिए एक लम्बे अरसे की आवश्यकता होती है।

संक्षेप में, अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के बारे में हमारा मूल्यांकन अब भी यही है कि उपनिवेशों के लिए छीना-झपटी करने वाले साम्राज्यवादी देशों का झगड़ा एक अपेक्षाकृत बड़ा अन्तरविरोध है। अपने और हमारे बीच के अन्तरविरोधों की आड़ में वे लोग अपने बीच के अन्तरविरोधों को ढकने की कोशिश कर रहे हैं। हम उनके अन्तरविरोधों का फायदा उठा सकते हैं, इस सम्बन्ध में बहुत किया जा सकता है। हमारी विदेश नीति के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण बात है।

अब चीन-अमरीका सम्बन्धों के बारे में चन्द बातें कह दूं। हमने च्याङ काई-शेक के नाम आइजनहावर के पत्र की प्रतिलिपियां तैयार कराकर आप लोगों के बीच बांटी हैं। मेरा विचार है कि इस पत्र का तात्पर्य मुख्य रूप से च्याङ काई शेक पर ठण्डा पानी उड़ेल देना और बाद में उसके अन्दर थोड़ा सा साहस भर देना है। पत्र में बताया गया है कि दिमाग को ठण्डा रखना और भावावेग में न बह जाना जरूरी है, जिसका मतलब है युद्ध का सहारा न लेना, बल्कि संयुक्त राष्ट्र संघ पर निर्भर रहना। यह च्याङ काई-शेक पर ठण्डा पानी उड़ेल देना है, क्योंकि च्याङ काई शेक दरअसल थोड़ा-बहुत भावावेग में बह गया है। च्याङ

च्याङ काई-शेक के अन्दर साहस भरने के लिए आइजनहावर कहते हैं कि वे कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति लगातार कड़ी नीति अपनाते रहेंगे तथा अपनी आशाओं को हमारे बीच होने वाली गड़बड़ी पर केन्द्रित किए हुए हैं। आइजनहावर के विचार में गड़बड़ी दरअसल पैदा हो चुकी है और उसे रोकने का कम्युनिस्ट पार्टी के पास कोई उपाय नहीं है। जो हो, चीजों को देखने का हर आदमी का अपना-अपना दृष्टिकोण होता है।

मैं अब भी यह सोचता हूं कि अमरीका के साथ राजनयिक सम्बन्ध कायम करने के काम को कुछ वर्षों तक टाल देना ज्यादा अच्छा होगा। यह हमारे हितों के अधिक अनुकूल होगा। सोवियत संघ ने अक्तूबर क्रान्ति के सत्रह वर्ष बाद ही अमरीका के साथ राजनयिक सम्बन्ध कायम किए थे। 1929 में एक विश्वव्यापी आर्थिक संकट पैदा हुआ, जो 1933 तक जारी रहा। 1933 में जर्मनी में हिटलर सत्तारूढ़ हुआ और अमरीका में रूजवेल्ट। केवल तभी सोवियत संघ और अमरीका के बीच राजनयिक सम्बन्ध कायम किए जा सके। हो सकता है कि हम अपनी तीसरी पंचवर्षीय योजना पूरी होने पर, यानी मुक्ति के बाद अट्ठारह वर्ष या उससे भी ज्यादा लम्बा समय बीतने पर, अमरीका के साथ राजनयिक सम्बन्ध कायम कर पाएंगे। हम संयुक्त राष्ट्र संघ में अपना स्थान बहाल करवाने के लिए भी उतावले नहीं हैं, ठीक उसी तरह जैसे हम अमरीका के साथ राजनयिक सम्बन्ध कायम करने के लिए उतावले नहीं हैं। यह नीति अपनाकर हम अमरीका को यथासम्भव राजनीतिक पूंजी से वंचित कर देते हैं तथा उसकी अयुक्तियुक्तता साबित कर देते हैं और उसे अलगाव की स्थिति में डाल देते हैं। आप हमें संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रवेश करने से रोकते हैं और हमारे साथ राजनयिक सम्बन्ध कायम नहीं करना चाहते; तो ठीक है, आप जितने ज्यादा समय तक बाधा डालते रहेंगे, आप पर हमारा उतना ही ज्यादा कर्जा चढ़ता जाएगा। आप जितने ज्यादा समय तक बाधा डालते रहेंगे, अपने देश में और विश्व लोकमत के सामने उतने ही ज्यादा अयुक्तियुक्त साबित होते जाएंगे और अलगाव की स्थिति में पड़ते जाएंगे। एक बार मैंने येनान में एक अमरीकी से कहा था कि अमरीका सौ साल तक हमारी सरकार को मान्यता देने से इनकार कर सकता है, लेकिन मुझे शक है कि 101वें वर्ष भी वह ऐसा करने में कामयाब हो सकेगा। एक न एक दिन अमरीका को हमारे साथ राजनयिक सम्बन्ध कायम करने ही पड़ेंगे। उस समय जब अमरीकी चीन आएंगे और चारों ओर देखेंगे तो उन्हें लगेगा कि पछताने के लिए भी देर हो गई है। क्योंकि तब चीन की यह धरती बिलकुल बदल चुकी होगी, घर की पूरी सफाई हो चुकी होगी और "चार हानिकारक जन्तुओं" का नाश हो चुका होगा; उन्हें ज्यादा दोस्त नहीं मिलेंगे और वे कुछ कीटाणु भी फैला देंगे तो भी ज्यादा नुकसान नहीं होगा।

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद पूंजीवादी देशों को बेहद अस्थायित्व और भारी उथल-पुथल का सामना करना पड़ रहा है और उनकी जनता में भारी बेचैनी फैली हुई है। सभी देशों में बेचैनी फैली हुई है, जिनमें चीन भी शामिल है। लेकिन अन्य देशों के मुकाबले चीन में कम बेचैनी है। आप लोग जरा इस मामले पर गौर कीजिए और देखिए कि दरअसल कौन किससे डरता है – समाजवादी देश साम्राज्यवादी देशों से, मुख्य रूप से अमरीका से, डरते हैं या उसका बिलकुल उल्टा है। मैं कहता हूं कि दोनों पक्षों में डर मौजूद है। सवाल है कौन सा पक्ष दूसरे पक्ष से ज्यादा डरता है ? मेरा झुकाव यह सोचने की तरफ है कि साम्राज्यवादी देश हमसे ज्यादा

डरते हैं। यह मूल्यांकन करने में शायद कुछ खतरा मौजूद है, क्योंकि हो सकता है कि इससे हम सब लोग बेखबर होकर सो जाएं और तीन दिन तक लगातार सोते रहें। इसलिए हमें दोनों सम्भावनाओं को ध्यान में रखना चाहिए। अनुकूल सम्भावना के अलावा प्रतिकूल सम्भावना भी मौजूद है, और वह यह है कि साम्राज्यवादी अचानक अपना मानसिक सन्तुलन खो सकते हैं। वे अच्छी नीयत नहीं रखते और हमेशा गड़बड़ी पैदा करने की कोशिश करते रहते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि आज उनके लिए एक अन्य विश्वयुद्ध छेड़ना इतना आसान नहीं है, क्योंकि उन्हें इसके नतीजों के बारे में सोच-विचार करना पड़ता है।

अब मैं चीन-सोवियत सम्बन्धों के बारे में कुछ कहना चाहता हूं। मेरा खयाल है कि आपस में तकरार होना अनिवार्य है। यह न सोचिए कि कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच तकरार नहीं हो सकती। यह कैसे हो सकता है कि हमारी दुनिया में तकरार न हो ? खुद मार्क्सवाद भी एक ऐसा वाद है जो तकरार से ताल्लुक रखता है, जो अन्तरविरोधों और संघर्षों से ताल्लुक रखता है। अन्तरविरोध हमेशा मौजूद रहते हैं और जहां अन्तरविरोध मौजूद रहते हैं वहां संघर्ष भी होते रहते हैं। इस समय चीन और सोवियत संघ के बीच भी कुछ अन्तरविरोध मौजूद हैं। उन लोगों के सोचने व काम करने के तरीके तथा उनकी परम्परागत आदतें भिन्न हैं। इसलिए यह जरूरी है कि हम उनके बीच समझाने-बुझाने का काम करें। मैं हमेशा कहता रहता हूं कि हमें अपने कामरेडों के बीच समझाने-बुझाने का काम करना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं, चूंकि वे लोग कम्युनिस्ट हैं इसलिए उन्हें भी हमारी ही तरह अच्छा होना चाहिए, उनके बीच समझाने-बुझाने का काम करने की क्या जरूरत है ? लोगों के बीच समझाने-बुझाने का काम करने का मतलब है संयुक्त मोर्चे का काम करना, गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों के बीच समझाने-बुझाने का काम करना, लेकिन आखिर कम्युनिस्टों के बीच समझाने-बुझाने का काम क्यों किया जाए ? यह एक गलत दृष्टिकोण है। कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर भी भिन्न-भिन्न रायें मौजूद हैं। कुछ लोग संगठनात्मक रूप से तो पार्टी में शामिल हो चुके हैं, लेकिन विचारधारात्मक रूप से अभी अपने को नहीं ढाल पाए हैं, यहां तक कि पुराने कार्यकर्ताओं में भी कुछ लोग ऐसे हैं जो अब भी हमारे समान भाषा का प्रयोग नहीं कर पाते। इसलिए यह जरूरी है कि लोगों को विचारधारात्मक रूप से अपने को ढालने में मदद देने के लिए अक्सर दिल खोलकर बातचीत की जाए, व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से विचार-विनिमय किया जाए और अनेक मीटिंगें बुलाई जाएं।

मेरा खयाल है कि परिस्थितियां कुछ व्यक्तियों से, यहां तक कि बड़े-बड़े अफसरों से भी अधिक शक्तिशाली होती हैं। अगर सोवियत संघ के कट्टरपंथी तत्व बड़े राष्ट्र के शॉविनिज्म पर अमल करना जारी रखेंगे, तो वे परिस्थितियों से मजबूर होकर कुछ भी नहीं कर पाएंगे। हमारी वर्तमान नीति अब भी यही है कि उनके साथ प्रत्यक्ष बातचीत के जरिए उनकी मदद की जाए। इस बार जब हमारा प्रतिनिधिमण्डल सोवियत संघ गया, तो हमने कुछ सवालों की प्रत्यक्ष चर्चा की। मैंने फोन पर कामरेड चओ ऐन-लाइ से कहा कि ये लोग अपनी भौतिक उपलब्धियों के कारण अन्धे हो चुके हैं और इनसे निपटने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि इन्हें खूब फटकार लगाई जाय। उनकी ये भौतिक उपलब्धियां आखिर क्या हैं ? ये दरअसल 5 करोड़ टन इस्पात, 40 करोड़ टन कोयला और 8 करोड़ टन पेट्रोलियम के सिवाय और कुछ

नहीं है। क्या यह कोई बड़ी बात है ? हरगिज नहीं। सिर्फ इतनी ही चीजों को देखकर उनके दिमाग चढ़ गए हैं। ये आखिर कैसे कम्युनिस्ट हैं ! ये आखिर कैसे मार्क्सवादी हैं ! मैं कहता हूं कि यह दस गुना हो जाए, यहां तक कि सौ गुना हो जाए, फिर भी इसका कोई महत्व नहीं है। आप लोगों ने जो कुछ किया है वह धरती से कुछ चीजें निकालकर उन्हें इस्पात में बदल देने और फिर कारों, हवाई जहाजों तथा ऐसी अन्य चीजों को बनाने के सिवाय और कुछ नहीं है। यह कौन सी बड़ी बात है ? फिर भी आप लोग इन सबको इतना भारी बोझा बनाकर अपनी पीठ पर लाद लेते हैं कि तमाम क्रान्तिकारी उसूलों को भी छोड़ बैठते हैं। यह भौतिक उपलब्धियों से अन्धा होना नहीं तो और क्या है ? जब एक आदमी ऊंचे पद पर पहुंच जाता है, तो वह भी भौतिक उपलब्धियों से अन्धा हो सकता है। प्रथम सचिव होना भी एक प्रकार की भौतिक उपलब्धि है, जिससे आदमी का दिमाग चढ़ सकता है। जब किसी आदमी का दिमाग बहुत चढ़ जाता है, तो हमें किसी न किसी तरीके से उसे खूब फटकार लगानी पड़ती है। इस बार मास्को में कामरेड चओ ऐन-लाई ने तकल्लुफ छोड़कर उनकी भर्त्सना की; नतीजे के तौर पर उन्होंने भी खूब शोरगुल मचाया। यह अच्छा हुआ कि सब बातें एक दूसरे के सामने प्रत्यक्ष रूप से हो गईं। उन्होंने हमें प्रभावित करने की कोशिश की और हमने उनको। लेकिन हमने सभी सवालों की चर्चा नहीं की, अपने सभी पत्ते नहीं दिखाए, बल्कि कुछ पत्तों को अपनी आस्तीन में छिपाए रखा। अन्तरविरोध हमेशा मौजूद रहेंगे। जब तक चीजें आम तौर पर ठीक रहेंगी, तब तक हम समान आधार खोज कर मतभेदों को अलग रख सकते हैं और उनको बाद में निपटा सकते हैं। यदि वे लोग हठधर्मी के साथ इसी रास्ते पर चलते रहे, तो एक न एक दिन हमें सब चीजों को खुले में लाना पड़ेगा।

जहां तक हमारी बात है, हमें अपने वैदेशिक प्रचार में अतिशयोक्ति से काम नहीं लेना चाहिए। हमें नम्रता, बुद्धि-विवेक से काम लेना चाहिए, या यों कहिए कि अपनी दुम को दोनों टांगों के बीच दबा कर रखना चाहिए। यह जरूरी है कि हम सोवियत संघ से सीखना जारी रखें। लेकिन हमें सिर्फ चुनिन्दा चीजों को ही सीखना चाहिए, सिर्फ समुन्नत चीजों को ही सीखना चाहिए, न कि पिछड़ी हुई चीजों को। जो चीजें पिछड़ी हुई हैं उनसे निपटने का एक अन्य तरीका है और वह है उन्हें बिलकुल न सीखना। जहां तक उनकी गलतियों का सवाल है, अगर हम उन गलतियों से परिचित हैं तो उन्हें दोहराने से बच सकते हैं। उनकी जो भी चीजें हमारे लिए उपयोगी हैं, उन्हें अवश्य सीख लेना चाहिए। हम दुनिया के सभी देशों से सभी उपयोगी चीजें सीख लेंगे। हर जगह जाकर ज्ञान की खोज की जानी चाहिए। केवल एक जगह जाकर चीजों की खोज करना नीरस और बेमजा होता है।

चौथे, सौ फूल खिलने दो और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने दो। यह नीति हू फङ प्रतिक्रान्तिकारी गुट का खण्डन किए जाने के बाद पेश की गई है और मेरा खयाल है कि यह ठीक है, क्योंकि यह द्वन्द्ववाद के अनुरूप है।

द्वन्द्ववाद के बारे में लेनिन ने कहा है : ''संक्षेप में, द्वन्द्ववाद को विपरीत तत्त्वों की एकता का सिद्धान्त कहा जा सकता है। ऐसा कहने से उसका सारतत्त्व तो पकड़ में आ जाता है, लेकिन उसका स्पष्टीकरण करने और उसे भरा-पूरा बनाने की आवश्यकता बनी रहती है।''[7] इस सिद्धान्त की व्याख्या करना और इसे विकसित करना हमारा काम है। इसकी व्याख्या करने

की आवश्यकता है और हमने अब तक इस दिशा में जो कुछ भी किया है वह बहुत थोड़ा है। इसे विकसित करने की आवश्यकता है; क्रान्ति में प्राप्त अपने समृद्ध अनुभवों के आधार पर हमें इस सिद्धान्त को विकसित करना चाहिए। लेनिन ने यह भी कहा है : ''विपरीत तत्त्वों की एकता (संयोग, एकरूपता, समान कार्यवाही) परिस्थितिबद्ध, क्षणिक, अस्थाई और सापेक्ष होती है। एक दूसरे को बहिष्कृत करने वाले विपरीत तत्त्वों का संघर्ष विकास और गति के समान ही निरपेक्ष होता है।''[8] इस धारणा से प्रस्थान करते हुए हमने सौ फूल खिलने देने और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने देने की नीति पेश की।

सत्य का अस्तित्व असत्य की तुलना में विद्यमान रहता है और वह असत्य के खिलाफ संघर्ष के दौरान विकसित होता है। सुन्दर का अस्तित्व असुन्दर की तुलना में विद्यमान रहता है और वह असुन्दर के खिलाफ संघर्ष के दौरान विकसित होता है। शिव और अशिव पर भी यही बात लागू होती है, यानी शिव कार्यों व शिव व्यक्तियों का अस्तित्व अशिव कार्यों व अशिव व्यक्तियों की तुलना में विद्यमान रहता है और वे अशिव कार्यों व अशिव व्यक्तियों के खिलाफ संघर्ष के दौरान विकसित होते हैं। संक्षेप में, सुगन्धित फूलों का अस्तित्व जहरीली खरपतवार की तुलना में विद्यमान रहता है और वे जहरीली खरपतवार के खिलाफ संघर्ष के दौरान विकसित होते हैं। लोगों को असत्य, असुन्दर, शत्रुतापूर्ण तत्त्वों, आदर्शवाद और अधिभौतिकवाद के सम्पर्क में तथा कनफ्यूशियस, लाओ च और च्याङ काई-शेक की बेहूदा बातों के सम्पर्क में न आने देने की नीति एक खतरनाक नीति है। यह लोगों को मानसिक अधोगति व बौद्धिक एकतरफापन की ओर ले जाएगी तथा इसकी वजह से लोग दुनिया का मुकाबला करने और चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार नहीं हो पाएंगे।

दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में भौतिकवाद और आदर्शवाद विपरीत तत्त्वों की एकता की मिसाल हैं और वे एक दूसरे के खिलाफ संघर्ष करते हैं। विपरीत तत्त्वों के एक अन्य युगल – द्वन्द्ववाद और अधिभौतिकवाद - पर भी यही बात लागू होती है। जब कभी लोग दर्शनशास्त्र की चर्चा करते हैं, तो वे विपरीत तत्त्वों वाले इन दो युगलों का नाम अवश्य लेते हैं। अब सोवियत संघ में ऐसे ''युगलों'' का नाम लेना छोड़ दिया गया है और केवल ''एकलों'' पर ही जोर दिया जा रहा है। वे कहते हैं कि उनके यहां केवल सुगन्धित फूल ही खिलते हैं और जहरीली खरपतवार का नामोनिशान भी नहीं है। वे यह नहीं मानते कि समाजवादी देश में आदर्शवाद और अधिभौतिकवाद का अस्तित्व भी होता है। वास्तव में आदर्शवाद, अधिभौतिकवाद और जहरीली खरपतवार हर देश में मौजूद है। सोवियत संघ में बहुत सी जहरीली खरपतवार सुगन्धित फूल के रूप में प्रकट होती है, तथा बहुत से बेतुके कथनों को भौतिकवाद या समाजवादी यथार्थवाद का नाम दिया जाता है। हम खुलेआम यह मानते हैं कि भौतिकवाद और आदर्शवाद के बीच, द्वन्द्ववाद और अधिभौतिकवाद के बीच, तथा सुगन्धित फूलों और जहरीली खरपतवार के बीच संघर्ष होता रहता है। यह संघर्ष सदैव होता रहेगा और हर मंजिल पर एक कदम आगे बढ़ता जाएगा।

अगर यहां उपस्थित आप सब साथी भौतिकवाद और द्वन्द्ववाद की जानकारी रखते हैं, तो मैं आप लोगों को सुझाव देना चाहता हूं कि अपनी जानकारी की अनुपूर्ति करने के लिए इनके विपरीत तत्त्वों, यानी आदर्शवाद और अधिभौतिकवाद का भी कुछ अध्ययन करें। आप लोगों

को काण्ट और हेगेल तथा कनफ्यूशियस और च्याङ काई-शेक की रचनाओं को, जो सब नकारात्मक चीजें हैं, पढ़ना चाहिए। अगर आप आदर्शवाद और अधिभौतिकवाद के बारे में कुछ नहीं जानते, अगर आपने उनके खिलाफ कभी संघर्ष नहीं किया है, तो आपका भौतिकवाद और द्वन्द्ववाद पुख्ता नहीं बन पाएगा। हमारे कुछ पार्टी-सदस्यों और पार्टी-बुद्धिजीवियों में ठीक यही कमी है कि वे नकारात्मक चीजों के बारे में बहुत कम जानते हैं। मार्क्स की दो-चार किताबें पढ़ने के बाद वे केवल इन किताबों में लिखी बातों को ही दोहराते रहते हैं और उनके कथन बिलकुल नीरस और बेमजा होते हैं। उनके भाषणों और लेखों में दूसरों को कायल करने की क्षमता नहीं होती। अगर आप नकारात्मक चीजों का अध्ययन नहीं करेंगे, तो उनका खण्डन भी नहीं कर सकेंगे। न मार्क्स न एंगेल्स ने ऐसा किया था और न लेनिन ने। उन्होंने सभी समकालीन और पूर्वकालीन चीजों का ज्ञान प्राप्त करने और उनका अध्ययन करने का भारी प्रयास किया था, और दूसरे लोगों को भी ऐसा ही करने की शिक्षा दी थी। मार्क्सवाद के तीन संघटक अंगों की उत्पत्ति जर्मन क्लासिकी दर्शनशास्त्र, बरतानवी क्लासिकी राजनीतिक अर्थशास्त्र और फ्रांसीसी काल्पनिक समाजवाद जैसी पूंजीवादी चीजों का अध्ययन करने और उनके खिलाफ संघर्ष करने की प्रक्रिया के दौरान ही हुई थी। इस दृष्टि से स्तालिन उतने अच्छे साबित नहीं होते। उदाहरण के लिए, उनके जमाने में जर्मन क्लासिकी आदर्शवादी दर्शन को फ्रांसीसी क्रान्ति के प्रति जर्मन अभिजात वर्ग की एक प्रतिक्रिया बताया गया। इस निष्कर्ष ने जर्मन क्लासिकी आदर्शवादी दर्शन का पूर्ण निषेध कर डाला। स्तालिन ने जर्मन सैन्य-विज्ञान का निषेध किया और कहा, चूंकि जर्मन पराजित किए जा चुके हैं इसलिए उनका सैन्य-विज्ञान बेकार हो गया है और क्लाउजेविज्ज की पुस्तकें अब पढ़ने लायक नहीं रह गई हैं।

स्तालिन में काफी मात्रा में अधिभौतिकवाद मौजूद था और उन्होंने बहुत से लोगों को अधिभौतिकवाद का अनुसरण करना सिखाया। 'सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का इतिहास, संक्षिप्त कोर्स' में स्तालिन ने कहा है कि मार्क्सवादी द्वन्द्ववाद की चार प्रधान विशेषताएं होती हैं। पहली विशेषता के रूप में उन्होंने वस्तुओं के अन्तरसम्बन्धों की चर्चा की है, मानो सभी चीजें अकारण ही अन्तरसम्बन्धित हों। आखिर कौन सी चीजें ऐसी हैं जो अन्तरसम्बन्धित होती हैं? ये चीजें किसी वस्तु के दो विपरीत पहलू ही हैं, जो अन्तरसम्बन्धित होते हैं। हर वस्तु के दो विपरीत पहलू होते हैं। चौथी विशेषता के रूप में उन्होंने सभी वस्तुओं के अन्दर अन्तर्विरोध के अस्तित्व की बात कही है, लेकिन उन्होंने केवल विपरीत तत्वों के संघर्ष की ही चर्चा की है, उनकी एकता का जिक्र तक नहीं किया। द्वन्द्ववाद के बुनियादी नियम, यानी विपरीत तत्वों की एकता के नियम के अनुसार विपरीत तत्वों के बीच संघर्ष भी होता है और एकता भी, वे एक दूसरे को बहिष्कृत भी करते हैं और अन्तरसम्बन्धित भी होते हैं, तथा परिस्थिति विशेष में एक दूसरे में बदल जाते हैं।

सोवियत संघ में संकलित 'दर्शनशास्त्र के संक्षिप्त कोश' के चौथे संस्करण में की गई "एकरूपता" की व्याख्या में स्तालिन का दृष्टिकोण प्रतिबिम्बित होता है। उसमें बताया गया है : "युद्ध और शान्ति, पूंजीपति वर्ग और सर्वहारा वर्ग, जीवन और मरण, तथा ऐसी ही अन्य परिघटनाओं में एकरूपता नहीं हो सकती, क्योंकि वे मूलतः एक दूसरे का विरोध और एक दूसरे को बहिष्कृत करते हैं।" दूसरे शब्दों में, मूलतः एक दूसरे का विरोध करने वाली इन परिघटनाओं के बीच मार्क्सवादी अर्थ में एकरूपता नहीं है; वे केवल एक दूसरे को बहिष्कृत करती हैं, अन्तरसम्बन्धित नहीं हैं तथा परिस्थिति विशेष में एक दूसरे में नहीं बदल सकतीं। यह व्याख्या सरासर गलत है।

उनके विचार में, युद्ध महज युद्ध है और शान्ति महज शान्ति है, ये दोनों केवल एक दूसरे को बहिष्कृत करते हैं और इनके बीच किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं है, तथा न तो युद्ध शान्ति में बदल सकता है और न शान्ति युद्ध में। लेनिन ने क्लाउजेविज्ज के इस कथन को उद्धृत किया है : "युद्ध अन्य साधनों के जरिए राजनीति का ही जारी रूप है।" शान्ति-काल का संघर्ष राजनीति ही है, युद्ध भी राजनीति ही है, यद्यपि उसमें कुछ विशेष साधनों का इस्तेमाल किया जाता है। युद्ध और शान्ति एक दूसरे को बहिष्कृत भी करते हैं और अन्तरसम्बन्धित भी हैं, तथा परिस्थिति विशेष में एक दूसरे में बदल सकते हैं। अगर शान्ति-काल में युद्ध की ओर ले जाने वाले तत्व न पनपते रहें, तो युद्ध एकाएक कैसे भड़क सकता है? अगर युद्ध-काल में शान्ति की ओर ले जाने वाले तत्व न पनपते रहें, तो शान्ति अचानक कैसे कायम हो सकती है?

अगर जीवन और मरण एक दूसरे में नहीं बदल सकते, तो कृपया यह बताइए कि जीव-जन्तु कहां से आए हैं? पृथ्वी पर पहले केवल जड़ पदार्थ थे तथा कोई भी जीव-जन्तु जड़ पदार्थों यानी मृत पदार्थों से रूपान्तरित होने के पहले अस्तित्व में नहीं आया। सभी चेतन पदार्थों में चयापचय-क्रिया होती है, वे बढ़ते हैं, प्रजनन करते हैं और मर जाते हैं। जीवन-काल में जीवन और मरण के बीच हमेशा संघर्ष होता रहता है और वे सदैव एक दूसरे में बदलते रहते हैं।

अगर पूंजीपति वर्ग और सर्वहारा वर्ग एक दूसरे में नहीं बदल सकते, तो भला क्रान्ति के जरिए सर्वहारा वर्ग शासक कैसे बन सकता है और पूंजीपति वर्ग शासित कैसे बन सकता है? उदाहरण के लिए, हम लोग और च्याङ काई-शेक की क्वोमिन्ताङ एक दूसरे के एकदम विपरीत हैं। दो विपरीत पहलुओं द्वारा परस्पर संघर्ष किए जाने और एक दूसरे को बहिष्कृत किए जाने के परिणामस्वरूप हमारी हैसियत और क्वोमिन्ताङ की हैसियत में परिवर्तन हो गया, यानी वे लोग शासक से शासित बन गए, जबकि हम शासित से शासक बन गए। क्वोमिन्ताङ के जो लोग थाइवान भाग गए वे केवल दस फीसदी थे, बाकी नब्बे फीसदी लोग मुख्यभूमि में ही रह गए। हम इन नब्बे फीसदी लोगों का नव रूपान्तर कर रहे हैं; यह नई परिस्थितियों में विपरीत तत्वों की एकता है। जो दस फीसदी लोग थाइवान भाग गए, उनके साथ भी हमारे सम्बन्ध विपरीत तत्वों की एकता ही कहलाएंगे और उनका भी संघर्ष के जरिए रूपान्तर किया जाएगा।

स्तालिन विपरीत तत्वों के संघर्ष और उनकी एकता के बीच के सम्बन्धों को देखने में असफल रहे। सोवियत संघ में कुछ लोगों के सोचने का तरीका इतना अधिभौतिकवादी और गैर-लचीला है कि वे चीजों को या तो एक तरह का समझते हैं या बिलकुल दूसरी तरह का, तथा विपरीत तत्वों की एकता को नहीं मानते। यही कारण है कि वहां राजनीतिक गलतियां हुई हैं। हम विपरीत तत्वों की एकता की धारणा पर डटे हुए हैं और "सौ फूल खिलने दो और

सौ विचारशाखाओं में होड़ होने देने की नीति अपनाते हैं। जब सुगन्धित फूल खिल रहे हों, तो जहरीली खरपतवार उगना अनिवार्य है। इसमें डरने की कोई बात नहीं है, परिस्थिति विशेष में उसे एक उपयोगी वस्तु में भी बदला जा सकता है।

कुछ परिघटनाएं एक काल विशेष में अनिवार्य होती हैं और उनके प्रकट होने के बाद ही उनसे निपटने का उपाय खोजा जा सकता है। उदाहरण के लिए, पहले नाट्य-भण्डार पर कड़ा नियंत्रण रखा जाता था और कभी इस नाटक पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाता था तो कभी उस नाटक पर। ज्योंही यह प्रतिबन्ध हटाया गया, तो दैत्यों व दानवों के बारे में 'प्रेतों के काले बॉसिन की कहानी' और 'वज्रदेव द्वारा प्रतिशोध' जैसे नाटक-ऑपेरा रंगमंच पर आने लगे। इस परिघटना के बारे में आप लोग क्या सोचते हैं ? मैं समझता हूं कि इनका रंगमंच पर आना एक अच्छी बात है। बहुत से लोगों ने दैत्यों व दानवों को रंगमंच पर कभी नहीं देखा, और जब वे इन भद्दे पात्रों की छवि देखेंगे तो समझ जाएंगे कि जो चीजें रंगमंच पर प्रस्तुत की जा रही हैं उन्हें वास्तव में प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए। तब ऐसे नाटक-ऑपेराओं का खण्डन किया जाएगा, उनमें परिवर्तन किया जाएगा या उन पर प्रतिबन्ध लगाया जाएगा। कुछ लोग कहते हैं कि चन्द स्थानीय ऑपेरा इतने खराब हैं कि स्थानीय लोग भी उनका विरोध करते हैं। मेरा विचार है कि उनमें से कुछ रचनाओं को रंगमंच पर प्रस्तुत करने में कोई हर्ज नहीं है। व्यवहार के जरिए इस बात का निर्णय होने दिया जाय कि ये रचनाएं टिक सकती हैं या नहीं और कितने दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित कर पाती हैं; जल्दबाजी से उन पर प्रतिबन्ध न लगाया जाय।

अब हमने निर्णय किया है कि 'सन्दर्भ समाचार' का वितरण दो हजार प्रतियों से बढ़ाकर चार लाख प्रतियों तक पहुंचा दिया जाय, ताकि पार्टी के अन्दर और बाहर के लोग इसे पढ़ सकें। इसे कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा साम्राज्यवाद की तरफ से प्रकाशित किया जाने वाला अखबार माना जा सकता है, क्योंकि इसमें हम पर कीचड़ उछालने वाले प्रतिक्रियावादी बयान भी प्रकाशित किए जाते हैं। हम ऐसा क्यों करते हैं ? इसका उद्देश्य है जहरीली खरपतवार को और गैर-मार्क्सवाद या मार्क्सवाद-विरोधी चीजों को अपने कामरेडों, जन समुदाय और गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों के सामने पेश करना, ताकि वे तपकर फौलाद बन सकें। इन चीजों को ताले में बन्द करके न रखें, ऐसा करना बहुत खतरनाक साबित होगा। इस सिलसिले में हमारा तरीका सोवियत संघ के तरीके से भिन्न है। आखिर चेचक का टीका लगाने की आवश्यकता क्यों होती है ? एक विषाणु को कृत्रिम रूप से मानव शरीर में प्रविष्ट कराकर उसके खिलाफ ''कीटाणु युद्ध'' छेड़ा जाता है, ताकि शरीर में रोग-अवरोधकता पैदा हो सके। 'संदर्भ समाचार' और अन्य नकारात्मक अध्ययन-सामग्री को प्रकाशित करना दरअसल कार्यकर्ताओं और जन समुदाय की राजनीतिक रोग-अवरोधकता को बढ़ाने के लिए ''चेचक का टीका लगाने'' के ही समान है।

हानिकारक कथनों का समय रहते पुरजोर खण्डन किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, 'जन दैनिक' में प्रकाशित 'अनिवार्यता के बारे में' शीर्षक लेख में कहा गया है कि हमारे काम में गलतियां होना अनिवार्य नहीं है तथा 'अनिवार्य' शब्द को हम अपने को निर्दोष साबित करने के लिए बहाने के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। यह एक हानिकारक कथन है। मालूम होता है

कि इस लेख को प्रकाशित नहीं किया जाना चाहिए था। और अगर इसे प्रकाशित करना ही था तो चुनौती का मुकाबला करने के लिए समय पर इसका खण्डन करने की तैयारी भी की जानी चाहिए थी। जैसा की अतीत के अनुभवों से साबित हो चुका है, हमारी क्रान्ति और निर्माण के काम में कुछ गलतियों का होना हर हालत में अनिवार्य है। 'सर्वहारा अधिनायकत्व के ऐतिहासिक अनुभवों का पुनर्विवेचन' शीर्षक लेख में ठीक अनिवार्यता के ही एक मुख्य मामले पर विचार किया गया है हमारे कामरेडों में आखिर कौन ऐसा है जो गलतियां करना चाहता है ? गलतियों का पता केवल तभी लगता है जब वे हो जाती हैं, और शुरू में सभी लोग अपने को सौ फीसदी मार्क्सवादी समझते हैं। बेशक, हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि चूंकि गलतियां होना अनिवार्य है, इसलिए यदि हम कुछ गलतियां कर लें तो कोई बात नहीं है। फिर भी यह मानकर चलना चाहिए कि काम में कोई भी गलती न होना सचमुच असम्भव है। ध्यान में रखने की बात यह है कि गलतियां कम से कम और छोटी से छोटी हों।

समाज में बुरे रुझानों पर अवश्य काबू पा लिया जाना चाहिए। बुरे रुझानों पर, यानी ऐसी गलतियों पर जो इनेगिने लोगों की गलतियां नहीं रह जातीं बल्कि रुझानों का रूप धारण कर लेती हैं, चाहे वे पार्टी के अन्दर हों अथवा गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों या विद्यार्थियों में, अवश्य काबू पा लिया जाना चाहिए। इसके लिए तर्क के जरिए समझाने का तरीका अपनाया जाना चाहिए। अगर समझाने के लिए दी गई दलीलें कायल करने वाली होंगी, तो बुरे रुझानों पर काबू पाया जा सकता है। अगर वे कायल करने वाली नहीं होंगी और केवल भर्त्सना करने वाली दो-चार बातें ही कही जाएंगी, तो ये बुरे रुझान गम्भीर रूप धारण करते जाएंगे। जहां महत्वपूर्ण मुद्दे हों, वहां पूरी तैयारी की जानी चाहिए और जब सफलता निश्चित हो जाए, तो खण्डन करने के लिए पूरी तरह कायल करने वाले लेख प्रकाशित किए जाने चाहिए। पार्टी-सचिवों को चाहिए कि वे स्वयं अखबारों की देखभाल करें और लेख लिखें।

एकता की स्थिति में परस्पर संघर्ष करने वाले दो विपरीत पहलुओं में से एक पहलू जरूर प्रधान होता है और दूसरा अप्रधान। निस्सन्देह, सर्वहारा अधिनायकत्व वाले हमारे राज्य में जहरीली खरपतवार को बेरोक-टोक उगने की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए। चाहे पार्टी में हो या विचारधारा और कला-साहित्य के क्षेत्र में, हमें इस बात की गारण्टी करने की कोशिश करनी चाहिए कि सुगन्धित फूल और मार्क्सवाद मुख्य और प्रभुत्वकारी स्थिति में बने रहें। जहरीली खरपतवार और गैर-मार्क्सवादी व मार्क्सवाद-विरोधी चीजों को अधीनता की स्थिति में रखा जाना चाहिए। एक अर्थ में इन दोनों के बीच के सम्बन्धों की तुलना परमाणु के नाभिकेन्द्र और इलेक्ट्रॉन के बीच के सम्बन्धों से की जा सकती है। परमाणु के दो भाग होते हैं, नाभिकेन्द्र और इलेक्ट्रॉन। नाभिकेन्द्र बहुत छोटा लेकिन बहुत भारी होता है। इलेक्ट्रॉन बहुत हल्के होते हैं, एक इलेक्ट्रॉन का वजन दरअसल सबसे हल्के नाभिकेन्द्र के वजन का लगभग 1800वां हिस्सा होता है। परमाणु के नाभिकेन्द्र को खंडित भी किया जा सकता है, केवल उसकी जुड़ने की शक्ति अधिक होती है। इलेक्ट्रॉन कुछ ''उदारतावाद'' के दोषी होते हैं, उनमें से कुछ कभी चले जाते हैं और कुछ कभी आ जाते हैं। परमाणु के नाभिकेन्द्र और इलेक्ट्रॉनों के बीच के सम्बन्ध भी विपरीत तत्वों की एकता के द्योतक हैं। उनमें एक प्रधान है और दूसरा अप्रधान। इस दृष्टिकोण से देखा जाए, तो सौ फूल खिलने देने और सौ विचारशाखाओं में होड़

होने देने की नीति लाभदायक है, हानिकारक नहीं।

पांचवें, उपद्रवों का सवाल। समाजवादी समाज में थोड़े से लोगों द्वारा उपद्रव किया जाना एक नई समस्या है, जिस पर विचार करना बहुत आवश्यक है।

समाज के अन्दर हर चीज में विपरीत तत्त्वों की एकता है। समाजवादी समाज में भी विपरीत तत्त्वों की एकता है, विपरीत तत्त्वों की यह एकता जनता की पांतों के भीतर तथा हमारे और दुश्मन के बीच भी मौजूद है। हमारे देश में थोड़े से लोग उपद्रव क्यों करते हैं ? इसका बुनियादी कारण यह है कि समाज के अन्दर सभी किस्म के सकारात्मक और नकारात्मक विपरीत पहलू अब भी मौजूद हैं, विरोधी वर्ग, विरोधी लोग और विपरीत मत अब भी मौजूद हैं।

हमने उत्पादन के साधनों की मिलकियत के समाजवादी रूपान्तर का काम बुनियादी रूप से पूरा कर लिया है, लेकिन पूंजीपति वर्ग अब भी मौजूद है, साथ ही जमींदार, धनी किसान, स्थानीय निरंकुश तत्त्व और प्रतिक्रान्तिकारी अब भी मौजूद हैं। ये सब ऐसे वर्ग हैं जिनकी सत्ता-सम्पत्ति छिन चुकी है और जिनका हम दमन करते हैं। उनके दिल में नफरत भरी हुई है और उनमें से बहुत से लोग मौका पाते ही बदला लेने की कोशिश करेंगे। हंगरी की घटना के समय उन्होंने उम्मीद की थी कि हंगरी में अव्यवस्था पैदा हो जाएगी और सबसे अच्छा यह होगा कि चीन में भी ऐसी ही स्थिति पैदा हो जाए। यह उनके वर्ग की सहज प्रवृत्ति है।

कुछ गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों और प्रोफेसरों द्वारा कही गई अजीबोगरीब बातें भी हमारे विचारों के विपरीत हैं। वे लोग आदर्शवाद का प्रचार करते हैं, जबकि हम भौतिकवाद के पक्षधर हैं। वे लोग कहते हैं, कम्युनिस्ट पार्टी विज्ञान का निदेशन करने में असमर्थ है, समाजवाद बिलकुल श्रेष्ठ नहीं है और सहकारी रूपान्तर एक बहुत बुरी चीज है, जबकि हम कहते हैं, कम्युनिस्ट पार्टी विज्ञान का निदेशन करने में समर्थ है, समाजवाद श्रेष्ठ है और सहकारी रूपान्तर एक बहुत अच्छी चीज है।

विद्यार्थियों में भी ऐसे लोग कम नहीं हैं जो हमारा विरोध करते हैं। चूंकि आज के अधिकांश कालेज-विद्यार्थी शोषक वर्गों के परिवारों से आए हैं, इसलिए इसमें कोई ताज्जुब नहीं कि उनमें से कुछ लोग हमारा विरोध करते हैं। ऐसे लोग पेकिङ, शच्याच्याङ और अन्य स्थानों में भी मिल सकते हैं।

समाज में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो हमारी प्रान्तीय कमेटियों को "सूखी लाशें" कहकर उन पर लांछन लगाते हैं। क्या वे सचमुच सूखी लाशें हैं ? मेरा खयाल है कि वे मरी नहीं हैं, इसलिए सूखी लाशें कैसे बन सकती हैं ? ये लोग हमारी प्रान्तीय कमेटियों को "सूखी लाशें" कहकर उन पर लांछन लगाते हैं और हम कहते हैं कि वे सूखी लाशें नहीं हैं; ये दोनों मत एक दूसरे के विपरीत हैं।

हमारी पार्टी के भीतर भी तरह-तरह के विपरीत मत मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस द्वारा एक ही वार से स्तालिन का खत्मा कर दिए जाने के बारे में दो विपरीत मत मौजूद हैं, एक मत इसका विरोध करता है और दूसरा समर्थन। पार्टी के अन्दर मतभेद हमेशा पैदा होते रहते हैं, मतैक्य स्थापित होने के एक-दो महीने के अन्दर ही नए मतभेद पैदा हो जाते हैं।

जहां तक लोगों के सोचने के तरीके का ताल्लुक है, तथ्यों के जरिए सत्य की तलाश करना और मनोगतवाद, ये दोनों एक दूसरे के विपरीत हैं। मेरा मत है कि मनोगतवाद हमेशा बना रहेगा। क्या आज से दस हजार साल बाद मनोगतवाद का नामोनिशान नहीं रहेगा, मैं ऐसा नहीं समझता।

विपरीत पहलू हर कारखाने, हर कृषि सहकारी समिति, हर विद्यालय, हर संगठन या परिवार में, संक्षेप में, हर जगह और हर समय मौजूद रहते हैं। इसलिए समाज में थोड़े से लोगों द्वारा किए जाने वाले उपद्रव हर साल होते रहेंगे।

तो क्या हमें उपद्रवों से डरना चाहिए या नहीं ? हम कम्युनिस्ट लोग साम्राज्यवाद, च्याङ काई-शेक की क्वोमिन्ताङ, जमींदार वर्ग और पूंजीपति वर्ग से भी कभी भयभीत नहीं हुए, और अगर अब हम विद्यार्थियों द्वारा किए गए उपद्रवों और किसानों द्वारा सहकारी समिति में मचाए गए उत्पात से डरने लगें तो यह बड़े ताज्जुब की बात होगी ! केवल त्वान छी-रुइ और च्याङ काई-शेक ही ऐसे थे जो जन-समुदाय के उपद्रवों से भयभीत हो जाते थे। हंगरी और सोवियत संघ में भी कुछ लोग ऐसे हैं जो इन उपद्रवों से डरते हैं। थोड़े से लोगों द्वारा किए जाने वाले उपद्रवों के प्रति हमें एक सकारात्मक रवैया अपनाना चाहिए, न कि नकारात्मक रवैया; इसका मतलब यह है कि हमें उनसे डरना नहीं चाहिए, बल्कि उनसे निपटने के लिए तैयार रहना चाहिए। डरने से समस्या का समाधान नहीं होता। आप जितना ज्यादा डरेंगे, भूत-प्रेत आपको उतना ही ज्यादा सताएंगे। अगर आप उपद्रवों से नहीं डरेंगे और उनसे निपटने के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं रहेंगे, तो आप पहलकदमी खो बैठने की स्थिति में फंस जाएंगे। मैं सोचता हूं कि हमें बड़ी-बड़ी घटनाओं के लिए तैयार रहना चाहिए। अगर आप उनके लिए तैयार रहेंगे तो हो सकता है कि ऐसी घटनाएं घटित ही न हों, लेकिन अगर आप उनके लिए तैयार नहीं रहेंगे तो उपद्रव हो सकते हैं।

किसी वस्तु के विकास की प्रक्रिया में केवल दो सम्भावनाएं होती हैं, एक अच्छी और एक बुरी। अन्तर्राष्ट्रीय और घरेलू समस्याओं से निपटते समय इन दोनों ही सम्भावनाओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए। आप कहते हैं कि यह वर्ष एक शान्तिपूर्ण वर्ष होगा, और शायद ऐसा हो भी। लेकिन अपने काम को इस अनुमान के आधार पर निर्धारित करना ठीक नहीं होगा, इसके विपरीत आपको अपने काम को इस अनुमान के आधार पर निर्धारित करना चाहिए कि बुरी से बुरी स्थिति भी आ सकती है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बुरी से बुरी स्थिति यह होगी कि विश्वयुद्ध छिड़ जाएगा और परमाणु-बम गिराये जाएंगे। देश के भीतर, बुरी से बुरी स्थिति यह होगी कि देशव्यापी उपद्रव हो जाएंगे अथवा एक "हंगरी की घटना" हो जाएगी, तथा दसियों लाख लोग हमारे खिलाफ उठ खड़े होंगे, कई सौ काउण्टियों पर कब्जा कर लेंगे और पेकिङ पर चढ़ाई कर देंगे। ज्यादा से ज्यादा यह होगा कि हमें फिर से येनान जाना पड़ेगा, जहां से हम आए हैं। हमें पेकिङ में रहते सात वर्ष हो चुके हैं, अगर आठवें वर्ष हम से येनान लौटने का अनुरोध किया जाएगा, तो हम क्या करेंगे ? क्या हम अपनी क्षति के लिए हाहाकार मचाएंगे और आंसुओं का दरिया बहा देंगे ? बेशक, अब हम येनान लौटने के हेतु, "भुलावा देने के लिए नकली आक्रमण करने और घोड़े की लगाम खींचकर पीछे हट जाने" को तैयार नहीं हैं। पार्टी की सातवीं कांग्रेस में मैंने कहा था कि हमें सत्रह कठिनाइयों का पहले से ही

अनुमान लगा लेना चाहिए, जिनमें एक हजार ली तक फैली सूखाग्रस्त भूमि, गम्भीर प्राकृतिक संकटों और अकाल का होना तथा सभी काउण्टी केन्द्रों को गंवा बैठना शामिल थे। हमने इन सब बातों को ध्यान में रखा था, इसलिए पहल हमेशा हमारे हाथ में रही। अब हमने राजसत्ता प्राप्त कर ली है, फिर भी हमें बुरी से बुरी सम्भावनाओं का पहले से ही अनुमान लगा लेना चाहिए।

कुछ मामलों में, थोड़े से लोगों द्वारा उपद्रव किए जाने का कारण था नेतृत्व में नौकरशाही व मनोगतवाद का होना तथा हमारी राजनीतिक या आर्थिक नीतियों में गलतियों का होना। अन्य मामलों में, इसका कारण हमारी नीतियों का त्रुटिपूर्ण होना नहीं बल्कि हमारी कार्यशैली का त्रुटिपूर्ण होना था, जो बेहद गैर-लचीली थी। एक अन्य कारण यह भी था कि प्रतिक्रान्तिकारी और बुरे तत्व मौजूद थे। थोड़े से लोगों द्वारा किए जाने वाले उपद्रवों की पूरी तरह रोकथाम करना असम्भव है। यह अनिवार्यता की एक अन्य मिसाल है। लेकिन जब तक हम राजनीतिक कार्यदिशा में बड़ी गलतियां नहीं करेंगे, तब तक देशव्यापी उपद्रव नहीं होंगे। अगर ऐसी गलतियों की वजह से देशव्यापी उपद्रव हो भी जाएं, तो भी मेरे विचार में वे जल्दी ही शान्त हो जाएंगे और देश को पतन की ओर नहीं ले जाएंगे। निस्सन्देह, अगर हम अपना काम अच्छी तरह नहीं करेंगे, तो अब भी यह बिलकुल सम्भव है कि इतिहास का चक्र पीछे की ओर मुड़ जाए और कुछ दूरी तक पीछे चला जाए। 1911 की क्रान्ति को पराजयों का सामना करना पड़ा था; उसने एक सम्राट को गद्दी से उतारा तो दूसरे सम्राट ने और बाद में युद्ध-सरदारों ने सत्ता हथिया ली। समस्याएं क्रान्ति को जन्म देती हैं और क्रान्ति होने के बाद अन्य समस्याएं पैदा हो जाती हैं। मुझे विश्वास है कि अगर एक देशव्यापी भारी उपद्रव होता है, तो जन-समुदाय और उसके नेतागण, शायद हम खुद या दूसरे लोग, अवश्य सामने आकर स्थिति को व्यवस्थित कर देंगे। इस तरह के एक भारी उपद्रव के जरिए जब फोड़ा फूट जाएगा, तो हमारा देश और ज्यादा मजबूत बन जाएगा। कुछ भी क्यों न हो, चीन जरूर आगे बढ़ता जाएगा।

जहां तक थोड़े से लोगों द्वारा किए जाने वाले उपद्रवों का ताल्लुक है, पहली बात यह है कि हम उन्हें प्रोत्साहित नहीं करते, और दूसरी बात यह है कि अगर कुछ लोग उपद्रव करने पर तुले रहें, तो हम उन्हें ऐसा करने देते हैं। हमारे संविधान में किए गए प्रावधान के अनुसार जुलूस निकालने और प्रदर्शन करने की आजादी है, तथा हालांकि हड़ताल करने की आजादी नहीं है, लेकिन उस पर प्रतिबन्ध भी नहीं लगाया गया है; इसलिए हड़ताल करना संविधान का उल्लंघन करना नहीं है। अगर कुछ लोग हड़ताल करना चाहते हैं या याचिका पेश करना चाहते हैं और आप जबरन उन्हें रोकने की कोशिश करते हैं, तो इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा। मेरा विचार है कि अगर कोई व्यक्ति गड़बड़ी पैदा करना चाहता है, तो उसे तब तक गड़बड़ी पैदा करने दी जाए जब तक वह ऐसा करना चाहे, और अगर एक महीना काफी न हो तो दो महीने तक ऐसा करने दिया जाए, संक्षेप में, इस मामले को तब तक समाप्त न किया जाए जब तक उसका मन न भर जाए। अगर आप जल्दबाजी के साथ उसे समाप्त कर देंगे, तो एक न एक दिन वह फिर गड़बड़ी पैदा करेगा। जिस विद्यालय में विद्यार्थी गड़बड़ी पैदा करें, उसमें छुट्टी न होने दो और संघर्ष के जरिए मामले को हल कर लो, जैसे प्राचीन काल में छीपी के युद्ध में किया गया था। इससे क्या फायदा होगा ? इससे समस्या को पूरी तरह प्रकाश

में लाने में तथा सही और गलत के बीच स्पष्ट विभाजन-रेखा खींचने में मदद मिलेगी, और इस प्रकार सब लोग तप कर फौलाद बन सकेंगे तथा जो लोग विवेकशून्य और बुरे हैं वे पराजित हो जाएंगे।

आप लोगों को नेतृत्व की यह कला सीख लेनी चाहिए। हमेशा हर चीज की पर्दापोशी करने की कोशिश न कीजिए। जब कभी लोग अजीबोगरीब बातें कहने लगते हैं, हड़ताल करने लगते हैं या याचिका पेश करने लगते हैं, तो आप एक ही प्रहार से उन्हें पीछे हटाने की कोशिश करते हैं और हमेशा यह सोचते रहते हैं कि ऐसी बातें होनी ही नहीं चाहिए। जो बातें होनी ही नहीं चाहिए, वे आखिर क्यों होती हैं ? इस तथ्य से साबित हो जाता है कि उनका होना अनिवार्य है। आप लोगों को हड़ताल करने, याचिका पेश करने और प्रतिकूल बातें कहने की इजाजत नहीं देते, हर मामले में दमन का ही सहारा लेते हैं, और ऐसा करते-करते एक दिन शाकोसी बन जाते हैं। यह बात पार्टी के भीतर भी सच है और बाहर भी। जहां तक अजीबोगरीब बातों, विचित्र घटनाओं और अन्तरविरोधों का ताल्लुक है, उन्हें प्रकाश में आने देना बेहतर है। यह जरूरी है कि अन्तरविरोधों को प्रकाश में आने दिया जाए और फिर उन्हें हल कर लिया जाए।

उपद्रवों को कई श्रेणियों में विभाजित किया जाना चाहिए और तदनुरूप ही निपटाया जाना चाहिए। एक श्रेणी में वे उपद्रव आते हैं जो न्यायसंगत हैं, और ऐसी स्थिति में हमें अपनी गलतियों को मान लेना चाहिए तथा उन्हें सुधार लेना चाहिए। दूसरी श्रेणी में वे उपद्रव आते हैं जो अन्यायसंगत हैं, और ऐसे उपद्रवों का हमें खण्डन करना चाहिए। न्यायसंगत उपद्रव होने चाहिए, जबकि अन्यायसंगत उपद्रव कहीं भी सफल नहीं होंगे। तीसरी श्रेणी में वे उपद्रव आते हैं जो कुछ हद तक तो न्यायसंगत हैं और कुछ हद तक नहीं; हमें उनकी न्यायसंगत बातों को मान लेना चाहिए और अन्यायसंगत बातों की आलोचना करनी चाहिए; यहां हमें यह नहीं करना चाहिए कि उसूल की पूरी तरह अवहेलना करके हर कदम पीछे हटाते जाएं और हर मांग पूरी करने का वचन दे दें। केवल बड़े पैमाने के असली प्रतिक्रान्तिकारी विद्रोह को छोड़कर, जिसका सशस्त्र दमन किया जाना जरूरी है, लोगों पर बलप्रयोग करने और फायरिंग करने में उतावलापन न दिखाएं। 18 मार्च के हत्याकाण्ड[6] में, जिसे त्वान छी-रुइ ने रचा था, फायरिंग कराई गई थी। नतीजे के तौर पर स्वयं त्वान छी-रुइ ही धराशायी हो गई। हमें उसका अनुसरण नहीं करना चाहिए।

जो लोग उपद्रवों में लगे हुए हैं, उन्हें विभाजित करने और अल्पसंख्या को बहुसंख्या से पृथक करने के लिए हमें उनके बीच अच्छी तरह काम करना चाहिए। उनकी बहुसंख्या का अच्छी तरह मार्गदर्शन किया जाना चाहिए और उन्हें समुचित शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि वे लोग कदम-ब-कदम अपने को बदल सकें; उन्हें क्षति नहीं पहुंचाई जानी चाहिए। मैं समझता हूं यह बात हर जगह सच साबित होती है कि दोनों छोरों पर कम लोग होते हैं और बीच में ज्यादा। मध्यपंथी लोगों को कदम-ब-कदम अपने पक्ष में कर लेना चाहिए इससे हमारा पलड़ा भारी हो जाएगा। हमें उपद्रव के अगुवाओं का विश्लेषण करना चाहिए। जो लोग उपद्रव की अगुवाई का साहस करते हैं उनमें से कुछ लोगों को शिक्षित करने के बाद उपयोगी व्यक्ति भी बनाया जा सकता है। जहां तक मुट्ठीभर बुरे आदमियों का सवाल है, केवल अत्यन्त गम्भीर

अपराध करने वाले लोगों को छोड़कर, बाकी लोगों में से किसी को गिरफ्तार करने, जेल में डालने या बरखास्त करने की जरूरत नहीं है। उन्हें अपनी पुरानी इकाई में ही रहने दिया जाए, लेकिन समस्त राजनीतिक पूंजी से वंचित कर दिया जाए, अलगाव की स्थिति में डाल दिया जाए और नकारात्मक उदाहरण से शिक्षित करने वाले शिक्षक के रूप में इस्तेमाल किया जाए। जब कामरेड तङ श्याओ-फिङ छिङहवा विश्वविद्यालय में भाषण देने गए, तो उन्होंने उस विद्यार्थी से अध्यापक बनने को कहा जिसने हजारों लोगों को मौत के घाट उतारने की धमकी दी थी। वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसके पास कोई हथियार नहीं है, एक पिस्तौल तक नहीं है, फिर आप उससे डरते क्यों हैं ? अगर आप उसे एकदम निकाल देंगे, तो आपके यहां सफाई तो हो जाएगी लेकिन आपको लोगों का व्यापक समर्थन नहीं मिल पाएगा। अगर आप उसे अपने यहां से निकाल देंगे तो उसे दूसरी जगह रोजगार ढूंढ़ना पड़ेगा। इसलिए उसके जैसे लोगों को जल्दबाजी से निकाल देना एक अच्छा तरीका नहीं है। ऐसे लोग प्रतिक्रियावादी वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं और यह सिर्फ चन्द व्यक्तियों का सवाल नहीं है। उनके मामलों को तुरत-फुरत निपटाने से आंख की किरकिरी तो निकल जाएगी लेकिन नकारात्मक उदाहरण के रूप में उनकी भूमिका का पूरा फायदा नहीं उठाया जा सकेगा। सोवियत संघ में जब कालेज-विद्यार्थी गड़बड़ी पैदा करते हैं तो उनके चन्द अगुवाओं को निकाल दिया जाता है और वह इस बात का एहसास नहीं है कि बुरी चीजें भी शिक्षण-सामग्री के रूप में हमारी सेवा कर सकती हैं। बेशक, हंगरी की घटना जैसे प्रतिक्रान्तिकारी विद्रोह करने वाले चन्द लोगों पर अधिनायकत्व लागू किया जाना जरूरी है।

हमें गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों को इस बात की इजाजत दे देनी चाहिए कि वे अपने विपरीत मतों के जरिए हमें चुनौती दें और बिना संकोच के हमारी आलोचना करें। अन्यथा हम कमोबेश क्वोमिन्ताङ की तरह हो जाएंगे। क्वोमिन्ताङ आलोचना से बेहद डरती थी, और जब भी राजनीतिक परिषद का अधिवेशन होता था तो वह डर के मारे कांपने लगती थी। गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली आलोचनाएं केवल दो किस्म की हो सकती हैं, गलत किस्म की और सही किस्म की। जो आलोचनाएं गलत किस्म की नहीं होतीं, वे हमारी खामियों को दूर करने में मदद कर सकती हैं, और जो आलोचनाएं गलत किस्म की होती हैं उनका खण्डन किया जाना चाहिए। जहां तक ल्याङ शू-मिङ, फङ ई-हू और चाङ नाए-छी जैसे लोगों का ताल्लुक है, अगर वे हवा छोड़ना चाहते हों तो उन्हें इसे छोड़ने दिया जाए। यह बात हमारे लिए फायदेमन्द है, क्योंकि इससे सब लोग इस बात की जांच-कर सकते हैं कि वह हवा खुशबूदार है या बदबूदार, और इस प्रकार वाद-विवाद के जरिए बहुसंख्या को अपने पक्ष में किया जा सकता है तथा ऐसे लोगों को अलगाव की स्थिति में डाला जा सकता है। अगर वे गड़बड़ी पैदा करना चाहते हैं तो उन्हें जी भर कर गड़बड़ी पैदा करने दो। जो कोई बहुत ज्यादा अन्याय करता है उसका आत्मनाश अवश्यम्भावी है। उसकी बातें जितनी ज्यादा झूठी होंगी, और उसकी गलतियां जितनी ज्यादा बड़ी होंगी, उतना ही अच्छा होगा, क्योंकि इससे वह और ज्यादा अलगाव की स्थिति में पड़ जाएगा और अपने नकारात्मक उदाहरण के जरिए जनता को और ज्यादा अच्छी तरह शिक्षित कर सकेगा। हमें चाहिए कि गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों के साथ एकता भी कायम करें और उनके खिलाफ संघर्ष भी करें, तथा परिस्थिति

के अनुसार कुछ मामलों में पहलकदमी के साथ उनके बीच काम करें, जबकि अन्य कुछ मामलों में उनके खिलाफ कार्यवाही करने के पहले ही उन्हें अपना चेहरा जाहिर करने दें, न कि पहले उन पर प्रहार करें।

पूंजीवादी विचारधारा के खिलाफ, बुरे व्यक्तियों के खिलाफ और बुरी चीजों के खिलाफ किया जाने वाला संघर्ष एक दीर्घकालीन संघर्ष है, जो कई दशाब्दियों तक, यहां तक कि कई शताब्दियों तक चलेगा। इस संघर्ष के दौरान, मजदूर वर्ग, मेहनतकश जनता के बीच के हिस्से और क्रान्तिकारी बुद्धिजीवी अनुभव प्राप्त करेंगे और तप कर फौलाद बन जाएंगे, तथा यह बड़ा फायदेमन्द होगा।

हर बुरी चीज का दोहरा स्वरूप होता है – वह बुरी भी होती है और अच्छी भी। इस मुद्दे के बारे में अभी तक बहुत से कामरेडों के विचारों में स्पष्टता नहीं आ पाई। एक बुरी चीज में अच्छे तत्व भी निहित होते हैं। बुरे व्यक्तियों और बुरी चीजों को केवल बुरा ही समझना समस्याओं को एकतरफा और अधिभौतिकवादी दृष्टिकोण से देखना है, द्वन्द्ववादी अथवा मार्क्सवादी दृष्टिकोण से नहीं, बुरे व्यक्ति और बुरी चीजें एक तरफ तो खराब होती हैं, लेकिन दूसरी तरफ अच्छी भूमिका भी निभा सकती हैं। मिसाल के लिए, वाङ मिङ जैसा बुरा आदमी नकारात्मक उदाहरण के जरिए शिक्षित करने वाले शिक्षक के रूप में एक अच्छी भूमिका अदा करता है। इसी तरह एक अच्छी चीज में भी बुरे तत्व निहित होते हैं। उदाहरण के लिए, मुक्ति के बाद सात वर्षों के दौरान प्राप्त भारी सफलताओं, खास तौर पर पिछले वर्ष प्राप्त भारी सफलताओं से कुछ कामरेडों के दिमाग चढ़ गए हैं और वे घमंडी बन गए हैं। जब थोड़े से लोग एकाएक उपद्रव करने लगते हैं तो इन कामरेडों को ऐसा लगता है मानो यह सब उनके अनुमान के बाहर की बात हो।

एक तरफ उपद्रवों से डरने और दूसरी तरफ ऐसे मामलों को तुरत-फुरत निपटाने का मूल कारण है यह मानने से इनकार करना कि समाजवादी समाज विपरीत तत्वों की एकता वाला समाज है, जिसमें अन्तरविरोधों, वर्गों और वर्ग-संघर्ष का अस्तित्व मौजूद रहता है।

एक लम्बे समय तक स्तालिन यह मानने से इनकार करते रहे कि समाजवादी व्यवस्था में उत्पादन-सम्बन्धों और उत्पादक शक्तियों के बीच तथा ऊपरी ढांचे और आर्थिक आधार के बीच अन्तरविरोध मौजूद रहते हैं। अपने देहान्त के एक वर्ष पहले जब उन्होंने 'सोवियत संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएं' नामक पुस्तक लिखी, तब कहीं उन्होंने हिचकिचाते हुए समाजवादी व्यवस्था में उत्पादन-सम्बन्धों और उत्पादक शक्तियों के बीच के अन्तरविरोधों का जिक्र किया और यह माना कि अगर नीतियां सही न हों और अच्छी तरह समायोजन न किया जाए तो समस्याएं पैदा हो जाएंगी। तथापि उन्होंने न तो समाजवादी व्यवस्था में उत्पादन-सम्बन्धों और उत्पादक शक्तियों के बीच के अन्तरविरोधों तथा ऊपरी ढांचे और आर्थिक आधार के बीच के अन्तरविरोधों को सर्वांगव्यापी महत्व के सवाल के रूप में पेश किया और न यह समझा कि ये अन्तरविरोध समाजवादी समाज को आगे बढ़ाने वाले बुनियादी अन्तरविरोध हैं। वे यह सोचते थे कि उनके शासन में सब कुछ सुरक्षित है। हमें यह नहीं समझना चाहिए कि हमारे शासन में सब कुछ सुरक्षित है; वह सुरक्षित है भी और नहीं भी।

द्वन्द्ववाद के अनुसार, जैसे मनुष्य की एक न एक दिन अवश्य मृत्यु हो जाती है, वैसे ही

समाजवादी व्यवस्था का भी एक ऐतिहासिक परिघटना के रूप में एक न एक दिन अवश्य अन्त हो जाएगा और कम्युनिस्ट व्यवस्था द्वारा उसे मिटा दिया जाएगा। अगर यह कहा जाए कि समाजवादी व्यवस्था तथा उसके उत्पादन-सम्बन्धों और ऊपरी ढांचे का अन्त नहीं होगा, तो यह किस किस्म का मार्क्सवाद कहलाएगा ? क्या यह एक धर्मसूत्र या ऐसे धर्मशास्त्र के समान नहीं है जो यह प्रचार करता है कि ईश्वर अजर-अमर है ?

समाजवादी समाज में जनता और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोधों तथा जनता के बीच के अन्तरविरोधों को किस तरह हल किया जाए, यह विज्ञान की एक ऐसी शाखा है जिसका बड़े मनोयोगपूर्वक अध्ययन किया जाना चाहिए। हमारे देश की परिस्थिति में, यद्यपि मौजूदा वर्ग-संघर्ष में जनता और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोध आंशिक रूप से ही समाविष्ट हैं, तथापि वे जनता के बीच के अन्तरविरोधों के रूप में बड़े पैमाने पर अभिव्यक्त होते हैं। आजकल थोड़े से लोगों द्वारा जो उपद्रव किए जा रहे हैं वे इसी परिस्थिति को प्रतिबिम्बित करते हैं। अगर पृथ्वी को अब से दस हजार वर्ष बाद नष्ट होना है, तो कम से कम इन दस हजार वर्षों के दौरान तो उपद्रव होते ही रहेंगे। लेकिन दूर भविष्य में दस हजार वर्ष के बाद होने वाली घटनाओं से निपटना हमारा काम नहीं है। हमारा काम केवल यह है कि उनके पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में इस समस्या को हल करने का अनुभव प्राप्त करने की बड़ी संजीदगी के साथ कोशिश करें।

हमारे काम को सुदृढ़ बनाओ और हमारी गलतियों व खामियों को दुरुस्त करो। आखिर किस किस्म के काम को सुदृढ़ बनाया जाए ? उद्योग, कृषि, वाणिज्य और संस्कृति व शिक्षा के क्षेत्रों में तथा सेना, सरकार और पार्टी के अन्दर राजनीतिक व विचारधारात्मक काम को सुदृढ़ बनाया जाना चाहिए। आप सब लोग अपने-अपने व्यवसाय से सम्बन्धित काम को निपटाने में, आर्थिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक, तथा राष्ट्रीय प्रतिरक्षा व पार्टी के मामलों से सम्बन्धित अपने रोजमर्रा के काम को निपटाने में व्यस्त हैं, लेकिन अगर आप लोग राजनीतिक व विचारधारात्मक काम पर ध्यान नहीं देंगे, तो यह बड़ा खतरनाक साबित होगा। अब हमारी पार्टी के महासचिव कामरेड तङ श्याओ-फिङ ने खुद छिङह्वा विश्वविद्यालय में जाकर भाषण दिया है, मैं आशा करता हूं कि आप लोग भी खुद मैदान में उतर जाएंगे। केन्द्रीय कमेटी और प्रान्तीय, म्युनिसिपल व स्वायत्त प्रदेशीय पार्टी कमेटियों के नेतृत्वकारी साथियों को चाहिए कि वे भी खुद राजनीतिक व विचारधारात्मक काम सम्भाल लें। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी और पूर्वी योरप की कुछ पार्टियां मार्क्सवाद के बुनियादी उसूलों के प्रति उदासीन हो गईं। उन्होंने वर्ग-संघर्ष, सर्वहारा अधिनायकत्व, पार्टी-नेतृत्व, जनवादी केन्द्रीयता तथा पार्टी और जन-समुदाय के बीच के सम्बन्धों पर ध्यान देना छोड़ दिया, तथा वहां राजनीतिक वातावरण में कमी आ गई। परिणामस्वरूप हंगरी की घटना हो गई। हमें मार्क्सवाद के बुनियादी उसूलों पर डटे रहना चाहिए। हर प्रान्त को और हर म्युनिसिपलटी व स्वायत्त प्रदेशों को चाहिए कि वह सैद्धान्तिक काम करे तथा मार्क्सवादी सिद्धान्तकारों और टिप्पणीकारों को योजनापूर्वक प्रशिक्षित करे।

हमारे संगठनों को चुस्त-दुरुस्त बनाया जाए। राज्य वर्ग-संघर्ष का ही एक उपकरण होता है। किसी एक वर्ग को राज्य के समकक्ष नहीं रखा जा सकता, जिसका संगठन प्रभुत्वकारी

स्थिति वाले वर्ग के लोगों की एक निश्चित संख्या (थोड़ी सी संख्या) द्वारा किया जाता है। दफ्तर के काम के लिए कुछ लोगों की अवश्य जरूरत होती है, लेकिन वे लोग जितने ही कम हों उतना अच्छा है। इस समय राज्य-मशीनरी बहुत ज्यादा भारी-भरकम हो गई है, जिसमें बहुत से विभाग हो गए हैं और बहुत से लोग दफ्तरों में बैठे-बैठे मक्खी मारते रहते हैं। इस समस्या को हल किया जाना चाहिए। पहले, कर्मचारियों की संख्या में कटौती की जाए; दूसरे, जिन कर्मचारियों की छंटनी की जाए, उनके लिए समुचित व्यवस्था की जाए, ताकि उन सबको यथोचित स्थान में भेजा जा सके। यह बात पार्टी, सरकार और सेना तीनों पर लागू होती है।

बुनियादी इकाइयों में जाकर वहां समस्याओं का अध्ययन किया जाना चाहिए। मैं आशा करता हूं कि केन्द्रीय कमेटी के साथी और प्रान्तों, म्युनिसिपलटियों व स्वायत्त प्रदेशों तथा विभिन्न केन्द्रीय विभागों के सभी नेतृत्वकारी साथी ऐसा करेंगे। मैंने सुना है कि अब बहुत से नेतृत्वकारी साथियों ने ऐसा करना छोड़ दिया है, यह अच्छी बात नहीं है। केन्द्रीय संगठन बड़े कष्टदायक स्थान हैं, जहां बैठकर आप कोई जानकारी प्राप्त नहीं कर सकते। अगर आप दफ्तर में बैठे-बैठे जानकारी प्राप्त करना चाहें, तो आपके हाथ कुछ नहीं आएगा। असली जानकारी का स्रोत कारखाने, सहकारी समितियां और दुकानें ही हैं। दफ्तर में बैठकर आपको स्पष्ट रूप से यह कभी मालूम नहीं हो सकता कि कारखानों, सहकारी समितियों और दुकानों को कैसे चलाया जाता है। जितना ऊंचा दफ्तर होता है, वहां उतनी ही कम जानकारी होती है। समस्याओं को हल करने के लिए आपको खुद नीचे जाना चाहिए या नीचे के लोगों को ऊपर बुलाना चाहिए। अगर आप न तो खुद नीचे जाते और न नीचे के लोगों को ऊपर बुलाते, तो आप कोई समस्या हल नहीं कर पाएंगे। मेरा सुझाव है कि प्रान्तीय, म्युनिसिपल और स्वायत्त प्रदेशीय पार्टी-कमेटियों के सचिव सहवर्ती पदाधिकारी के रूप में एक काउण्टी या कारखाने अथवा विद्यालय की पार्टी-कमेटी के सचिव का काम भी करें। तथा प्रिफेक्चर या काउण्टी की पार्टी-कमेटियों के सचिव सहवर्ती पदाधिकारी के रूप में एक अधीनस्थ इकाई की पार्टी-कमेटी के सचिव का काम भी करें। इस प्रकार वे चौतरफा मार्गदर्शन करने के लिए अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

जन-समुदाय से घनिष्ठ सम्बन्ध बनाए रखें। जन-समुदाय से अलग-थलग रहने और नौकरशाही पर अमल करने के परिणाम स्वरूप आपको जरूर मार खानी पड़ेगी। हंगरी के नेता जांच-पड़ताल व अध्ययन के अभाव के कारण जन-समुदाय की हालत से परिचित नहीं थे, तथा जब बड़े पैमाने के उपद्रव फैलने लगे, तो उन्हें यह मालूम नहीं हो पाया कि इनका कारण क्या है। पिछले दिनों ऐसे मामले भी देखने में आए जब हमारे कुछ केन्द्रीय विभागों तथा प्रान्तों, म्युनिसिपलटियों और स्वायत्त प्रदेशों की पार्टी-कमेटियों के नेतृत्वकारी साथी जन-समुदाय के विचारधारात्मक रुझानों का पता नहीं लगा पाए और इस बात से बिलकुल बेखबर रहे कि कुछ लोग उपद्रव मचाने और दंगे करने की तैयारी कर रहे हैं, तथा इसके परिणामस्वरूप अगर कोई बात हो जाती थी तो उनके हाथ-पांव फूल जाते थे। हमें ऐसी स्थिति से सबक लेना चाहिए। केन्द्रीय कमेटी के साथियों तथा विभिन्न प्रान्तों, म्युनिसिपलटियों व स्वायत्त प्रदेशों और केन्द्रीय विभागों के इनचार्ज नेतृत्वकारी साथियों को चाहिए कि वे हर साल कुछ समय निकालकर कारखानों, सहकारी समितियों, दुकानों और विद्यालयों जैसी बुनियादी

इकाइयों में जाकर जांच-पड़ताल व अध्ययन करें, इस बात का पता लगा लें कि जन-समुदाय की राजनीतिक स्थिति कैसी है, आगे बढ़े हुए, दरमियानी दर्जे के और पिछड़े हुए लोग कितने हैं तथा हमारा जनकार्य अच्छी तरह किया जा रहा है अथवा नहीं, और इस प्रकार स्थिति की स्पष्ट जानकारी प्राप्त कर लें। मजदूर वर्ग पर, गरीब व निम्न-मध्यम किसानों पर और आगे बढ़े हुए तत्वों पर निर्भर रहना चाहिए, कारण किसी न किसी पर निर्भर रहना जरूरी है। केवल इस प्रकार हंगरी जैसी घटनाओं से बचा जा सकता है।

छठे, विधि-व्यवस्था का सवाल। मैं इसके बारे में तीन बातें बताना चाहता हूं : कानून का अवश्य पालन करना चाहिए, प्रतिक्रान्तिकारियों का अवश्य सफाया कर देना चाहिए और प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने में प्राप्त हमारी उपलब्धियों की अवश्य पुष्टि की जानी चाहिए।

कानून का अवश्य पालन करना चाहिए और क्रान्तिकारी विधि-व्यवस्था का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। विभिन्न कानून ऊपरी ढांचे का ही एक भाग हैं। हमारे कानून मेहनतकश जनता ने खुद बनाए हैं। वे क्रान्तिकारी व्यवस्था को बनाए रखते हैं तथा मेहनतकश जनता के हितों, समाजवादी आर्थिक आधार और उत्पादक शक्तियों की रक्षा करते हैं। हम केवल गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों से ही नहीं बल्कि सभी लोगों से मांग करते हैं कि वे क्रान्तिकारी विधि-व्यवस्था का पालन करें।

प्रतिक्रान्तिकारियों का अवश्य सफाया कर देना चाहिए। जहां यह कार्य अभी योजना के अनुसार पूरा नहीं किया गया, वहां उसे इस वर्ष पूरा कर लेना चाहिए, तथा अगर इस वर्ष के अन्त तक वह कुछ बाकी रह जाए तो अगले वर्ष अवश्य पूरा कर लेना चाहिए। कुछ इकाइयों में प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने का आन्दोलन चलाया गया, लेकिन उनका पूरी तरह सफाया नहीं किया गया, तथा संघर्ष के दौरान उन सभी का कदम-ब-कदम पूरा सफाया कर देना जरूरी है। इस तथ्य को मान लेना चाहिए कि प्रतिक्रान्तिकारी ज्यादा संख्या में बाकी नहीं रह गए हैं। जहां कहीं उपद्रव होंगे वहां जन-समुदाय प्रतिक्रान्तिकारियों का अनुसरण नहीं करेगा, तथा जो लोग उनका अनुसरण करेंगे उनकी संख्या बहुत कम है और वे अभी केवल थोड़े समय तक ही उनका अनुसरण करेंगे। दूसरी तरफ, यह मानना भी जरूरी है कि प्रतिक्रान्तिकारी अब भी मौजूद हैं और उनका सफाया करने का काम अभी पूरा नहीं हुआ।

प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने में प्राप्त उपलब्धियों की अवश्य पुष्टि की जानी चाहिए। ये महान उपलब्धियां हैं। गलतियां भी हुई हैं, जिनके प्रति निस्सन्देह संजीदगी का रुख अपनाया जाना चाहिए। हमें प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने वाले कार्यकर्ताओं की हिमायत करनी चाहिए और कुछ गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली गाली-गलौज के कारण अपना रुख नरम नहीं पड़ने देना चाहिए। वे लोग रोजमर्रा गाली-गलौज करते रहते हैं, भरपेट खाने के बाद वे लोग सिवाय गाली-गलौज के और कोई काम नहीं करते; उन्हें गाली-गलौज करने दो। मेरा विचार है कि वे जितना ज्यादा गाली-गलौज करते हैं उतना ही अच्छा है। जो तीन बातें मैंने बताई हैं उनका खण्डन इन लोगों के गाली-गलौज करने से तो नहीं किया जा सकता।

यह बात कोई नहीं जानता कि कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ कितनी गाली-गलौज की जा

चुकी है। क्वोमिन्ताङ हमें ''कम्युनिस्ट डाकू'' कहकर लांछित करती थी, और अगर कोई हमारे साथ जरा भी सम्पर्क रखता था तो उस पर ''डाकुओं से सम्पर्क रखने'' का आरोप लगाया जाता था। अन्त में यह साबित हो गया कि ''डाकू'' ही उन ''गैर-डाकुओं'' से बेहतर हैं। प्राचीन काल से कोई भी प्रगतिशील चीज ऐसी नहीं हुई जिसका शुरू से स्वागत किया गया हो और हर प्रगतिशील चीज को अनिवार्य रूप से गाली-गलौज का सामना करना पड़ा है। मार्क्सवाद और कम्युनिस्ट पार्टी को शुरू से ही गाली-गलौज का सामना करना पड़ा है। आज से दस हजार वर्ष बाद भी जब प्रगतिशील चीजों का उदय होगा तो शुरू में उन्हें गाली-गलौज का सामना अवश्य करना पड़ेगा।

प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करना जारी रखना चाहिए, और जहां भी प्रतिक्रान्तिकारी हों, उनका सफाया कर देना चाहिए। विधि-व्यवस्था का पालन करना चाहिए। कानून के मुताबिक काम करने का मतलब यह नहीं है कि अपने हाथ-पांव बांध लिये जायं। प्रतिक्रान्तिकारियों का पता लगने पर भी अपने हाथ-पांव बांधे रखना और उनका सफाया न करना गलत है। कानून के मुताबिक और बन्धन-मुक्त हाथ-पांवों से कार्यवाही करना आवश्यक है।

सातवें, कृषि का सवाल। हमें इस साल शानदार फसल प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। अगर इस साल शानदार फसल प्राप्त कर ली गई तो लोगों के मन में आशंका नहीं रह जाएगी और सहकारी समितियां काफी सुदृढ़ हो जाएंगी। सोवियत संघ में और पूर्वी योरप के कुछ देशों में कृषि में सामूहिकीकरण के कारण अनेक वर्षों तक अनाज का उत्पादन अनिवार्य रूप से घटता रहा। हमने कुछ वर्षों तक कृषि-सहकारिता पर अमल किया और पिछले वर्ष जोर-शोर से अमल किया, लेकिन हमारे अनाज-उत्पादन में गिरावट आने की जगह बढ़ोतरी ही होती गई है। अगर इस वर्ष फिर शानदार फसल होती है, तो इसे कृषि-सहकारिता के इतिहास में और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के इतिहास में बेमिसाल समझा जाएगा।

समूची पार्टी को चाहिए कि वह कृषि को अवश्य भारी महत्त्व दे। कृषि का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और जनता के रहन-सहन से गहरा सम्बन्ध है। इस पर ध्यान दीजिए, क्योंकि अनाज-उत्पादन को गिरफ्त में न रखना बड़ा खतरनाक होता है। अगर इस पर ध्यान न दिया गया, तो एक न एक दिन भारी अव्यवस्था फैल जाएगी।

(1) कृषि देहातों की 50 करोड़ आबादी को अनाज, गोश्त व खाद्य-तेल की और रोजमर्रा के काम आने वाले अन्य गैर-बिकाऊ कृषि-उत्पादनों की सप्लाई के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। कृषि-उत्पादनों का वह भाग जिसका उपभोग किसान स्वयं करते हैं, बेहद बड़ा है। उदाहरण के लिए, पिछले वर्ष पैदा किए गए 36,000 करोड़ चिन अनाज में से बिकाऊ अनाज, जिसमें राज्य को कृषि-कर के रूप में दिया जाने वाला अनाज भी शामिल था, लगभग 8,000 करोड़ चिन था, जो कुल उत्पादन का एक-चौथाई भाग भी नहीं था, जबकि तीन-चौथाई से ज्यादा अनाज किसानों के पास गया। अगर कृषि का प्रबन्ध अच्छी तरह किया जाएगा और किसान आत्म-निर्भर बन जाएंगे, तो 50 करोड़ जनता निश्चिन्त हो जाएगी।

(2) कृषि शहरों और औद्योगिक व खान क्षेत्रों के निवासियों को खाद्य-पदार्थ सप्लाई करने के लिए भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जब बिकने के लिए बाजार में जाने वाले

कृषि-उत्पादनों की पैदावार बढ़ जाती है, केवल तभी औद्योगिक आबादी की मांग पूरी की जा सकती है और उद्योग का विकास किया जा सकता है। कृषि-उत्पादन के विकास के साथ-साथ, बिकने के लिए बाजार में जाने वाली कृषि-उपजों और खास तौर पर बिकाऊ अनाज का अनुपात कदम-ब-कदम बढ़ाते जाना चाहिए। जब हर व्यक्ति को भोजन प्राप्त हो जाएगा, तो हमें मुट्ठी भर लोगों द्वारा विद्यालयों व कारखानों में गड़बड़ी पैदा किए जाने की चिन्ता करने की जरूरत नहीं रह जाएगी।

(3) कृषि हल्के उद्योग के लिए कच्चे माल का मुख्य स्रोत है और देहाती इलाका हल्के उद्योग का एक महत्त्वपूर्ण बाजार है। जब कृषि का विकास हो जाता है, केवल तभी हल्के उद्योग के लिए पर्याप्त कच्चा माल उपलब्ध हो सकता है और उसके तैयार माल के लिए व्यापक बाजार मिल सकता है।

(4) देहाती इलाका भारी उद्योग का भी एक महत्त्वपूर्ण बाजार है। उदाहरण के लिए, रासायनिक खाद, तरह-तरह की कृषि-मशीनों और विद्युत-शक्ति, कोयले व पेट्रोलियम के एक अंश को देहातों में सप्लाई किया जाता है, तथा रेलमार्ग, राजमार्ग और बड़ी-बड़ी जल-संरक्षण परियोजनाएं, ये सब भी कृषि की सेवा करती हैं। आज जबकि हमने समाजवादी कृषि-अर्थव्यवस्था का निर्माण कर लिया है, देहाती इलाके हमारे विकासशील भारी उद्योग और हल्के उद्योग के तैयारशुदा माल का एक बेहद बड़ा बाजार बनते जा रहे हैं।

(5) इस समय हमारे निर्यात-माल में मुख्य रूप से कृषि-उत्पादन शामिल हैं। इससे हम विदेशी मुद्रा कमाते हैं, जिसके जरिए तरह-तरह का औद्योगिक साज-सामान खरीदा जा सकता है।

(6) कृषि पूंजी-संचय का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। इसका विकास करके औद्योगिक विकास के लिए और ज्यादा पूंजी जमा की जा सकती है।

इसलिए हम कह सकते हैं कि एक मायने में कृषि स्वयं भी एक उद्योग है। हमें औद्योगिक विभागों को यह समझाना चाहिए कि वे देहातों की ओर ध्यान दें और कृषि का समर्थन करें। औद्योगीकरण को साकार रूप देने के लिए ऐसा करना निहायत जरूरी है।

सहकारी समितियों की आय में कृषि के लिए निर्धारित संचित-कोष और राज्य द्वारा कृषि से प्राप्त किए जाने वाले संचित-कोष का सही अनुपात क्या होना चाहिए ? कृपया आप लोग इस मामले पर विचार-विनिमय करें और एक समुचित अनुपात तय कर लें। इसका उद्देश्य है कृषि को पुनरुत्पादन का विस्तार करने, उद्योग के लिए और ज्यादा बड़ा बाजार उपलब्ध कराने तथा पूंजी-संचय का और ज्यादा बड़ा स्रोत बनने में समर्थ बना देना। पहले कृषि को अपने लिए और ज्यादा पूंजी-संचय करने दिया जाए, केवल तभी वह उद्योग के लिए ज्यादा से ज्यादा पूंजी-संचय कर सकती है। अगर कृषि केवल उद्योग के लिए ही पूंजी-संचय करती है और अपने लिए बहुत कम करती है या बिलकुल नहीं करती, तो यह "सारी मछलियां पकड़ने के लिए तालाब का समूचा पानी निकाल देने" के समान होगा और उद्योग के विकास के लिए हानिकारक साबित होगा।

सहकारी समिति के संचित-कोष और उसके सदस्यों की आमदनी के अनुपात पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। संचित-कोष को कदम-ब-कदम बढ़ाने के लिए सहकारी समितियों

को मूल्य के नियम का इस्तेमाल करते हुए आर्थिक लेखा तैयार करना चाहिए तथा मेहनत व किफायत से काम करना चाहिए। अगर इस साल शानदार फसल होती है, तो पूंजी-संचय पिछले साल के मुकाबले कुछ ज्यादा होना चाहिए, लेकिन बहुत ज्यादा नहीं, क्योंकि अच्छा यह होगा कि पहले किसानों को अधिक खाद्य-पदार्थ प्राप्त होने दिए जाएं। अच्छी फसल वाले वर्षों में ज्यादा पूंजी-संचय किया जाए, जबकि गम्भीर या कम गम्भीर प्राकृतिक संकटों वाले वर्षों में बिलकुल पूंजी-संचय न किया जाए या कम पूंजी-संचय किया जाए। दूसरे शब्दों में पूंजी-संचय लहरों की तरह या चक्करदार रास्ते से आगे बढ़ता है। चूंकि दुनिया में हर चीज स्वयं भी एक अन्तरविरोध है, विपरीत तत्वों की एकता है, इसलिए उसकी गति और उसका विकास हमेशा लहरों की तरह होता है। सूर्य के प्रकाश को प्रकाश-तरंग कहा जाता है, रेडियो-स्टेशनों से प्रसारित तरंग को रेडियो-तरंग कहा जाता है, और ध्वनि का प्रसार ध्वनि-तरंगों के जरिए होता है। पानी जल-तरंगों के रूप में प्रवाहित होता है और ताप ताप-तरंगों के रूप में। चलने की क्रिया भी एक तरह से लहरों में ही सम्पन्न की जाती है, कदम-ब-कदम चलना लहरों का ही एक रूप है। ऑपेरा-गायन भी लहरों में ही किया जाता है, क्योंकि गायक एक पद गाने के बाद दूसरा पद गाता है, सात-आठ पद एक साथ नहीं गाता। लिखना भी लहरों में ही किया जाता है, क्योंकि लोग शब्दों को एक-एक करके लिखते हैं, कलम पकड़ते ही एक साथ सैकड़ों शब्द नहीं लिख डालते। इस प्रकार सभी वस्तुओं में विपरीत तत्वों की गति का स्वरूप लहरदार होता है।

संक्षेप में, हमें द्वन्द्ववाद के अनुरूप आचरण करना चाहिए। कामरेड तङ श्याओ-फिङ यही कहते हैं। मेरा खयाल है कि सारी पार्टी को द्वन्द्ववाद का अध्ययन करना चाहिए और द्वन्द्ववाद के अनुरूप आचरण का पक्षपोषण करना चाहिए। समूची पार्टी को चाहिए कि वह विचारधारात्मक व सैद्धान्तिक काम पर ध्यान दे, मार्क्सवादी सैद्धान्तिक कार्यकर्ताओं के दस्ते तैयार करे तथा मार्क्सवादी सिद्धान्त के अध्ययन व प्रचार-प्रसार का और अधिक प्रयास करे। समाजवादी समाज में वर्ग अन्तरविरोधों और वर्ग-संघर्ष से सम्बन्धित नई-नई समस्याओं तथा अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष से सम्बन्धित नई-नई समस्याओं की जांच करने और उनका समाधान करने के लिए यह जरूरी है कि विपरीत तत्वों की एकता के मार्क्सवादी सिद्धान्त को लागू किया जाए।

नोट

[1] एक निश्चित दर में ब्याज देने का तरीका चीन में समाजवादी रूपान्तर के दौरान राज्य द्वारा राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के उत्पादन के साधनों का अधिग्रहण मुआवजा देकर करने की नीति को लागू करते समय अपनाया गया था। 1956 में पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के सभी कारोबारों को संयुक्त राजकीय-निजी कारोबारों में बदलने के बाद एक निश्चित अवधि तक राज्य द्वारा हर साल राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग को उसकी पूंजी के मूल्य के अनुरूप एक निश्चित दर में ब्याज दिया जाता था। यह ब्याज भी स्वरूप की दृष्टि से शोषण का ही एक रूप था।

[2] वी.आई. लेनिन, 'हेगेल की रचना ''तर्क-विज्ञान'' की रूपरेखा'।

[3] वी. आई. लेनिन, 'द्वन्द्ववाद के सवाल के बारे में'।

[4] कार्ल वॉन क्लाउसेवित्ज (1780-1831), एक सुप्रसिद्ध जर्मन पूंजीवादी सैन्य-वैज्ञानिक थे। 'युद्ध के बारे में' उनकी एक प्रमुख रचना है। क्लाउसेवित्ज के बारे में स्तालिन की टिप्पणी के लिए देखिए स्तालिन की रचना 'कामरेड राजिन के पत्र का उत्तर'।

[5] वी.आई. लेनिन, 'युद्ध और क्रान्ति'।

[6] मार्च 1926 में, जब फङ युवी श्याङ की राष्ट्रीय सेना और उत्तर-पूर्व के युद्ध-सरदार चाङ च्वो-लिन के बीच युद्ध हो रहा था और चाङ की सेना ताकू बन्दरगाह पर तैनात फङ की सेना पर आक्रमण करने जा रही थी, तो जापानी साम्राज्यवादियों ने चाङ की सेना को आड़ देने के लिए बड़ी बेहयाई के साथ अपने नौपोत भेजे। हार खाने के बाद, जापानी आक्रमणकारियों ने अन्य सात देशों के साथ सांठगांठ करके, जिनमें बरतानिया और अमरीका भी शामिल थे, चीन सरकार को एक अल्टीमेटम दे दिया, जिसमें ताकू बन्दरगाह की प्रतिरक्षात्मक मोर्चेबन्दी को तोड़ने की मांग जैसी धृष्टतापूर्ण मांगें भी पेश की गई थीं। 18 मार्च को, इसका विरोध करने के लिए पेकिङ के हजारों मजदूरों, विद्यार्थियों व नागरिकों ने थ्येनआनमन के सामने एक जनसभा बुलाई और प्रदर्शन शुरू किया। जब प्रदर्शनकारी सरकार के प्रधान कार्यालय के पास पहुंचे और आठ ताकतों के अल्टीमेटम को अस्वीकार करने की मांग करने लगे, तो उत्तरी युद्ध-सरदारों की सरकार के सरगना त्वान छी-रुइ ने अपने रक्षकों को गोली चलाने का आदेश दे दिया और इस तरह प्रदर्शनकारियों का बड़ी निर्ममता के साथ कत्लेआम कर दिया गया।

जनता के बीच के अन्तरविरोधों को सही ढंग से हल करने के बारे में

27 फरवरी 1957

जनता के बीच के अन्तरविरोधों को सही ढंग से हल कैसे किया जाए, यह हमारी बातचीत का आम विषय है। सुविधा के लिए हम इसकी व्याख्या बारह उपशीर्षकों के अन्तर्गत करेंगे। यद्यपि यहां दुश्मन और हमारे बीच के अन्तरविरोधों का उल्लेख भी किया जाएगा, लेकिन मुख्य रूप से जनता के बीच के अन्तरविरोधों की ही चर्चा की जाएगी।

1. भिन्न स्वरूप वाले दो अलग-अलग प्रकार के अन्तरविरोध

हमारा देश पहले कभी उतना एकताबद्ध नहीं रहा जितना कि आज है। पूंजीवादी-जनवादी क्रान्ति और समाजवादी क्रान्ति की विजय तथा समाजवादी निर्माण की सफलताओं ने बड़ी तेजी से पुराने चीन की शक्ल बदल डाली है। अब हमें अपने सामने अपनी मातृभूमि का और भी सुन्दर भविष्य दिखाई पड़ रहा है। राष्ट्रीय फूट और अव्यवस्था के वे दिन जिनसे हमारी जनता घृणा करती थी, हमेशा-हमेशा के लिए लद गए हैं। हमारी 60 करोड़ जनता, मजदूर वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में एकदिल होकर समाजवादी निर्माण के महान कार्य में जुटी हुई है। देश का एकीकरण, जनता की एकता और हमारी विभिन्न राष्ट्रीयताओं की एकता – ये सब हमारे कार्य की निश्चित विजय की बुनियादी गारण्टी हैं। लेकिन, इसका मतलब यह नहीं कि अब हमारे समाज में कोई अन्तरविरोध नहीं रह गया है। यह सोचना कि अब कोई अन्तरविरोध मौजूद नहीं रह गया है, महज भोलापन होगा; यह वस्तुगत सच्चाई से मेल नहीं खाता। हमारे सामने दो तरह के सामाजिक अन्तरविरोध मौजूद हैं – हमारे और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोध तथा जनता के बीच के अन्तरविरोध। इन दोनों प्रकार के अन्तरविरोधों का स्वरूप एक दूसरे से बिलकुल भिन्न है।

इन दो भिन्न प्रकार के अन्तरविरोधों को सही तौर पर समझने के लिए, सबसे पहले हमें स्पष्ट रूप से यह समझना होगा कि ''जनता'' का अर्थ क्या है और ''दुश्मन'' का अर्थ क्या

सर्वोच्च राज्य सम्मेलन के ग्यारहवें अधिवेशन (विस्तृत) में दिया गया भाषण, जिसे 19 जून 1957 को 'जन दैनिक' में प्रकाशित किया गया था। प्रकाशन से पहले कामरेड माओ त्सेतुङ ने इसके शब्दश: रिकार्ड को जांचने के बाद उसमें कुछ सामग्री जोड़ दी थी।

है। भिन्न-भिन्न देशों में और हर देश के भिन्न-भिन्न ऐतिहासिक कालों में "जनता" शब्द की धारणा अन्तर्वस्तु की दृष्टि से अलग-अलग होती है। मिसाल के लिए हमारे ही देश को लीजिए। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के काल में जापानी आक्रमण का विरोध करने वाले सभी वर्ग, तबके व सामाजिक ग्रुप जनता की श्रेणी में आते थे, जबकि जापानी साम्राज्यवादी, चीनी गद्दार व जापान-परस्त तत्व जनता के दुश्मनों की श्रेणी में आते थे। मुक्ति युद्ध के काल में अमरीकी साम्राज्यवादी और उनके गुर्गे – नौकरशाह-पूंजीपति वर्ग, जमींदार वर्ग और इन दोनों वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादी – जनता के दुश्मन थे, जबकि इन दुश्मनों का विरोध करने वाले दूसरे सभी वर्ग, तबके व सामाजिक ग्रुप जनता की श्रेणी में आते थे। मौजूदा दौर में, समाजवादी निर्माण के काल में, समाजवादी निर्माण के कार्य का अनुमोदन व समर्थन करने वाले और उसके लिए काम करने वाले सभी वर्ग, तबके व सामाजिक ग्रुप जनता की श्रेणी में आते हैं, जबकि समाजवादी क्रान्ति का विरोध करने वाली तथा समाजवादी निर्माण से दुश्मनी रखने और उसमें तोड़-फोड़ करने वाली समस्त सामाजिक शक्तियां व ग्रुप जनता के दुश्मन हैं।

हमारे और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोध शत्रुतापूर्ण अन्तरविरोध होते हैं। जनता की पांतों के अन्दर, मेहनतकश जनता के बीच के अन्तरविरोध अशत्रुतापूर्ण होते हैं, जबकि शोषित और शोषक वर्गों के बीच के अन्तरविरोधों का जहां एक पहलू शत्रुतापूर्ण होता है, वहां दूसरा पहलू अशत्रुतापूर्ण भी होता है। जनता के बीच अन्तरविरोध हमेशा मौजूद रहते हैं। लेकिन उनकी अन्तर्वस्तु क्रान्ति के हर काल में तथा समाजवादी निर्माण के काल में भिन्न-भिन्न होती है। चीन की मौजूदा स्थितियों में, जनता के बीच के अन्तरविरोधों में ये शामिल हैं : मजदूर वर्ग के अन्दर के अन्तरविरोध, किसान वर्ग के अन्दर के अन्तरविरोध, बुद्धिजीवियों के अन्दर के अन्तरविरोध, मजदूर वर्ग और किसान वर्ग के बीच के अन्तरविरोध, एक पक्ष में मजदूरों व किसानों तथा दूसरे पक्ष में बुद्धिजीवियों के बीच के अन्तरविरोध, एक पक्ष में मजदूर वर्ग व मेहनतकश जनता के अन्य भागों और दूसरे पक्ष में राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के बीच के अन्तरविरोध, तथा राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के अन्दर के अन्तरविरोध, इत्यादि। हमारी जन-सरकार एक ऐसी सरकार है जो जनता के हितों का सच्चे अर्थों में प्रतिनिधित्व करती है और उसकी सेवा करती है। फिर भी इस सरकार और जनता के बीच कुछ अन्तरविरोध अब भी मौजूद हैं। उनमें ये अन्तरविरोध शामिल हैं : एक पक्ष में राज्य के हितों व सामूहिक हितों और दूसरे पक्ष में व्यक्तिगत हितों के बीच के अन्तरविरोध, जनवाद और केन्द्रीयता के बीच के अन्तरविरोध, नेतृत्व करने वालों और मातहत काम करने वालों के बीच अन्तरविरोध, तथा कुछ सरकारी कार्यकर्ताओं द्वारा जन-समुदाय के साथ अपने सम्बन्धों को निभाते समय अपनाई गई नौकरशाहाना कार्यशैली की वजह से पैदा होने वाले अन्तरविरोध। ये सभी अन्तरविरोध जनता के बीच के अन्तरविरोध हैं आम तौर पर, जनता के बीच के अन्तरविरोध जनता के हितों की बुनियादी एकरूपता पर आधारित होते हैं।

हमारे देश में, मजदूर वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के बीच का अन्तरविरोध जनता के बीच के अन्तरविरोधों की श्रेणी में आता है। इन दोनों के बीच चलने वाला वर्ग-संघर्ष, मोटे तौर पर, जनता की पांतों के अन्दर का वर्ग-संघर्ष है, क्योंकि चीन के राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग

का चरित्र दुरंगा है। पूंजीवादी जनवादी क्रान्ति के काल में, उसके चरित्र का एक पहलू जहां क्रान्तिकारी था वहां उसका दूसरा पहलू सुलह समझौतावादी था। समाजवादी क्रान्ति के काल में, मुनाफा कमाने के लिए मजदूर वर्ग का शोषण करना उसके चरित्र का एक पहलू है, जबकि संविधान का समर्थन करना और समाजवादी रूपान्तर को स्वीकार करने की इच्छा रखना उसका दूसरा पहलू है। राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग साम्राज्यवादियों, जमींदार वर्ग तथा नौकरशाह पूंजीपति वर्ग से भिन्न है। राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग और मजदूर वर्ग के बीच का अन्तरविरोध शोषकों और शोषितों के बीच का अन्तरविरोध है, जो अपने स्वभाव से ही एक शत्रुतापूर्ण अन्तरविरोध है। लेकिन चीन की ठोस परिस्थितियों में, इस शत्रुतापूर्ण वर्ग-अन्तरविरोध को अगर सही ढंग से हल किया जाए तो इसे अशत्रुतापूर्ण अन्तरविरोध में बदला जा सकता है और शान्तिपूर्ण तरीके से सुलझाया जा सकता है। लेकिन अगर हमने उसे ठीक ढंग से हल नहीं किया तथा राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के साथ एकता कायम करने, उसकी आलोचना करने और उसे शिक्षित करने की नीति पर अमल नहीं किया, अथवा राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग ने हमारी इस नीति को स्वीकार नहीं किया, तो मजदूर वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के बीच का अन्तरविरोध हमारे और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोध में बदल जाएगा।

चूंकि हमारे और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोध तथा जनता के बीच के अन्तरविरोध स्वरूप की दृष्टि से एक दूसरे से भिन्न होते हैं, इसलिए उन्हें भिन्न-भिन्न तरीकों से हल किया जाना चाहिए। संक्षेप में कहा जाए तो पहली तरह के अन्तरविरोधों का मसला हमारे और दुश्मन के बीच एक स्पष्ट विभाजन-रेखा खींचने का मसला है, जबकि दूसरी तरह के अन्तरविरोधों का मसला सही और गलत के बीच एक स्पष्ट विभाजन-रेखा खींचने का मसला है। यह ठीक है कि हमारे और दुश्मन के बीच फर्क करने का मसला भी सही और गलत के बीच फर्क करने का ही मसला है। मिसाल के तौर पर, यह सवाल भी कि हममें और घरेलू व विदेशी प्रतिक्रियावादियों – साम्राज्यवादियों, सामन्तवादियों तथा नौकरशाह-पूंजीपतियों – में से कौन सही है और कौन गलत, सही और गलत के बीच फर्क करने का ही मसला है, लेकिन यह मसला स्वरूप की दृष्टि से जनता के बीच के सही और गलत के सवालों से भिन्न एक अन्य श्रेणी का मसला है।

हमारा राज्य जनता के जनवादी अधिनायकत्व वाला राज्य है, जिसका नेतृत्व मजदूर वर्ग करता है और जो मजदूर-किसान संश्रय पर आधारित है। इस अधिनायकत्व का आखिर मकसद क्या है ? इसका पहला कार्य है हमारे देश में मौजूद प्रतिक्रियावादी वर्गों व तत्वों का दमन करना तथा उन शोषकों का दमन करना जो समाजवादी क्रान्ति का प्रतिरोध करते हैं, उन लोगों का दमन करना जो हमारे समाजवादी निर्माण को नष्ट करने की कोशिश करते हैं, अथवा दूसरे शब्दों में, हमारे और घरेलू दुश्मन के बीच के अन्तरविरोधों को हल करना। उदाहरण के लिए, कुछ प्रतिक्रान्तिकारियों को गिरफ्तार करना, उन पर मुकदमा चलाना और उन्हें सजा देना, तथा एक निश्चित अरसे के लिए जमींदारों व नौकरशाह-पूंजीपतियों को मतदान के अधिकार और भाषण की स्वतंत्रता से वंचित करना -- यह सब हमारे अधिनायकत्व के दायरे में है। सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए और जनता के हितों की रक्षा करने के लिए यह भी जरूरी है कि चोर-डाकुओं, धोखेबाजों, कातिलों, आगजनी करने वालों, गुंडों

के गिरोहों और उन बुरे तत्त्वों के खिलाफ जो सार्वजनिक व्यवस्था को गम्भीर रूप से नष्ट कर देते हैं, अधिनायकत्व का इस्तेमाल किया जाए। इस अधिनायकत्व का दूसरा कार्य है बाहरी दुश्मनों द्वारा की जाने वाली उन्मूलनकारी कार्यवाहियों से तथा उनके सम्भावित आक्रमण से अपने देश की रक्षा करना। अगर कहीं ऐसा हो जाए, तो इस अधिनायकत्व का कर्तव्य हो जाता है कि वह हमारे और बाहरी दुश्मन के बीच के अन्तरविरोध को हल करे। इस अधिनायकत्व का उद्देश्य है हमारी समूची जनता की रक्षा करना, ताकि वह शान्तिपूर्वक श्रम में भाग ले सके तथा चीन को एक आधुनिक उद्योग, आधुनिक कृषि और आधुनिक विज्ञान व संस्कृति से लैस समाजवादी देश बना सके। इस अधिनायकत्व को लागू कौन करता है ? जाहिर है कि मजदूर वर्ग और उसके नेतृत्व में चलने वाली समूची जनता ही इसे लागू करती है। अधिनायकत्व को जनता की पांतों के अन्दर लागू नहीं किया जाना चाहिए। जनता खुद अपने ही ऊपर अधिनायकत्व लागू नहीं कर सकती, और न उसके एक हिस्से को दूसरे हिस्से का दमन ही करना चाहिए। जनता के बीच कानून तोड़ने वाले तत्त्वों को कानून के अनुसार सजा दी जाएगी, लेकिन यह जनता के दुश्मनों को दबाने के लिए अधिनायकत्व के प्रयोग से उसूलन भिन्न है। जनता के बीच तो जनवादी केन्द्रीयता को लागू किया जाता है। हमारे संविधान में यह प्रावधान है कि चीन लोक गणराज्य के नागरिकों को भाषण, प्रेस, सभा, संगठन, जुलूस, प्रदर्शन, धार्मिक विश्वास आदि की आजादी है। हमारे संविधान में यह व्यवस्था भी की गई है कि राजकीय अंगों को जनवादी केन्द्रीयता पर अमल करना चाहिए और आम जनता पर निर्भर रहना चाहिए तथा उनके कर्मचारियों को जनता की सेवा करनी चाहिए। हमारा समाजवादी जनवाद सबसे व्यापक जनवाद है, एक ऐसा जनवाद है जिसका होना किसी भी पूंजीवादी राज्य में असम्भव है। हमारा अधिनायकत्व जनता का जनवादी अधिनायकत्व है, जिसका नेतृत्व मजदूर वर्ग करता है और जो मजदूर-किसान संश्रय पर आधारित है। इसका मतलब यह है कि जनवाद को जनता की पांतों के अन्दर लागू किया जाता है, जबकि मजदूर वर्ग उन तमाम लोगों के साथ जिन्हें नागरिक अधिकार प्राप्त हैं, और सबसे पहले किसानों के साथ एकता स्थापित करके प्रतिक्रियावादी वर्गों व तत्त्वों पर और उन सभी लोगों पर अधिनायकत्व लागू करता है जो समाजवादी रूपान्तर का प्रतिरोध करते हैं और समाजवादी निर्माण का विरोध करते हैं। राजनीतिक दृष्टि से, नागरिक अधिकारों से हमारा तात्पर्य आजादी और जनवाद के अधिकारों से होता है।

लेकिन यह आजादी एक ऐसी आजादी है जो नेतृत्व की अधीनता में रहती है, और यह जनवाद एक ऐसा जनवाद है जो केन्द्रीयता के मार्गदर्शन में रहता है; यह अराजकता नहीं है। अराजकता जनता के हितों या उसकी आकांक्षाओं से मेल नहीं खाती।

जब हंगरी की घटना हुई, तो हमारे देश में कुछ लोग बड़े खुश हुए थे। उन्हें उम्मीद थी कि चीन में भी इसी तरह की कोई घटना होगी, यह कि हजारों-लाखों लोग जन-सरकार के खिलाफ सड़कों पर निकल कर प्रदर्शन करेंगे। उनकी यह उम्मीद जन-समुदाय के हितों के खिलाफ थी, और इसीलिए यह सम्भव नहीं था कि उन्हें जन-समुदाय का समर्थन प्राप्त होता। हंगरी में, घरेलू और विदेशी प्रतिक्रान्तिकारियों के धोखे में आकर जनता के एक हिस्से ने जन-सरकार के खिलाफ हिंसात्मक कार्यवाहियां करने की गलती की, जिसका नतीजा ये हुआ

कि राज्य और जनता दोनों को नुकसान उठाना पड़ा। कुछ ही हफ्तों के दंगे-फसाद से देश की अर्थव्यवस्था को जो नुकसान हुआ उसे पूरा करने में काफी समय लगेगा। हमारे देश में कुछ अन्य लोगों ने हंगरी की घटना के प्रति ढुलमुल रुख अपनाया है, क्योंकि वे दुनिया की वास्तविक परिस्थिति से अनभिज्ञ हैं। वे समझते हैं कि हमारी जनता को लोकशाही में बहुत कम आजादी है और पश्चिम की संसदीय लोकशाही में अधिक आजादी है। उनकी मांग है कि पश्चिम की दो-पार्टी व्यवस्था अपनाई जाए, जहां एक पार्टी सत्तारूढ़ रहती है और दूसरी पार्टी सत्ता-विहीन रहती है। लेकिन यह तथाकथित दो-पार्टी व्यवस्था पूंजीपति वर्ग के अधिनायकत्व को कायम रखने की युक्ति के सिवाय और कुछ नहीं; यह मेहनतकश जनता के आजादी के अधिकार की गारण्टी हरगिज नहीं कर सकती। दरअसल, आजादी और जनवाद कोई अमूर्त वस्तुएं नहीं, बल्कि ठोस वस्तुएं हैं। एक ऐसे समाज में जहां वर्ग-संघर्ष चल रहा है, जहां शोषक वर्गों को मेहनतकश जनता का शोषण करने की आजादी है, वहां मेहनतकश जनता को शोषण से बचने की कोई आजादी नहीं है; जहां पूंजीपति वर्ग के लिए जनवाद है, वहां सर्वहारा वर्ग और अन्य मेहनतकश लोगों के लिए कोई जनवाद नहीं है। कुछ पूंजीवादी देशों में कम्युनिस्ट पार्टी को कानूनी तौर पर अपना अस्तित्व बनाए रखने दिया जाता है, लेकिन उसका अस्तित्व केवल उसी हद तक कानूनी बना रहता है जब तक कि वह पूंजीपति वर्ग के बुनियादी हितों को नुकसान नहीं पहुंचाती; इससे आगे बढ़ने पर उसे कानूनी तौर पर बर्दाश्त नहीं किया जाता। जो लोग अमूर्त आजादी और जनवाद की मांग करते हैं, वे जनवाद को साध्य मानते हैं साधन नहीं। कभी-कभी जनवाद साध्य के रूप में भी दिखाई पड़ता है। लेकिन दरअसल यह केवल साधन ही है। मार्क्सवाद हमें सिखाता है कि जनवाद ऊपरी ढांचे का एक अंग है और यह राजनीति की श्रेणी में आता है। इसका मतलब यह हुआ कि अन्ततोगत्वा वह आर्थिक आधार की ही सेवा करता है। यही बात आजादी के लिए भी सच है। जनवाद और आजादी दोनों ही सापेक्ष वस्तुएं हैं, निरपेक्ष नहीं, और दोनों ही विशिष्ट ऐतिहासिक परिस्थितियों में पैदा होती हैं और विकसित होती हैं। जनता की पांतों के अन्दर जनवाद केन्द्रीयता से जुड़ा रहता है और आजादी अनुशासन से। ये दोनों एक ही वस्तु के दो विपरीत पहलू हैं जो परस्पर विरोधी भी हैं और एकताबद्ध भी, तथा हमें इनमें से एक पर एकतरफा तौर पर जोर देकर दूसरे को ठुकरा नहीं देना चाहिए। जनता की पांतों के अन्दर न तो आजादी के बिना हमारा काम चल सकता है और न अनुशासन के बिना; न तो जनवाद के बिना हमारा काम चल सकता है और न केन्द्रीयता के बिना। हमारी जनवादी केन्द्रीयता जनवाद और केन्द्रीयता की एकता तथा आजादी और अनुशासन की एकता से ही बनती है। इस व्यवस्था में, जनता व्यापक जनवाद और आजादी का उपभोग करती है, लेकिन साथ ही उसे समाजवादी अनुशासन की सीमाओं के भीतर रहना पड़ता है। व्यापक जन-समुदाय इन सब बातों को अच्छी तरह समझता है।

जब हम नेतृत्व की अधीनता में आजादी और केन्द्रीयता के मार्गदर्शन में जनवाद का पक्षपोषण करते हैं, तो हमारा मतलब किसी भी मायने में यह नहीं होता कि जनता के बीच के विचारधारात्मक सवालों तथा सही और गलत के बीच फर्क करने से सम्बन्धित सवालों को हल करने के लिए जोर-जबरदस्ती के तरीके अपनाए जायं। किसी भी विचारधारात्मक सवाल

अथवा सही और गलत के बीच के सवाल को हल करने के लिए प्रशासनिक आदेश अथवा जोर-जबरदस्ती का तरीका इस्तेमाल करने की कोशिश न सिर्फ व्यर्थ साबित होगी, बल्कि नुकसानदेह भी साबित होगी। हम प्रशासनिक आदेशों के जरिए धर्म को खत्म नहीं कर सकते, और न जोर-जबरदस्ती से लोगों को इस बात के लिए मजबूर कर सकते हैं कि वे धर्म पर विश्वास न करें। हम लोगों को आदर्शवाद का त्याग करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते, इसी तरह हम उन्हें इस बात के लिए भी मजबूर नहीं कर सकते कि वे मार्क्सवाद पर विश्वास करें। विचारधारात्मक प्रश्नों को या जनता के बीच के विवादास्पद सवालों को हल करने का एकमात्र उपाय यह है कि हम केवल जनवादी तरीके का, वाद-विवाद के तरीके का, आलोचना के तरीके का, समझाने-बुझाने व शिक्षित करने के तरीके का ही इस्तेमाल करें, न कि जोर-जबरदस्ती करने या दमन करने के तरीके का। अपने उत्पादन-कार्य और अध्ययन-कार्य को कारगर रूप से चलाने के लिए तथा अपने जीवन की समुचित व्यवस्था के लिए, जनता अपनी सरकार से तथा उत्पादन-कार्य के और सांस्कृतिक व शैक्षणिक संगठनों के कर्ताधर्ता लोगों से यह उम्मीद करती है कि वे उपयुक्त प्रशासनिक आदेश जारी करें, जिनका पालन करना सबके लिए अनिवार्य हो। यह एक आम समझदारी की बात है कि इस प्रकार के प्रशासनिक आदेशों के बिना सार्वजनिक व्यवस्था को बनाए रखना असम्भव हो जाएगा। ये प्रशासनिक आदेश और समझाने-बुझाने व शिक्षित करने का यह तरीका जनता के बीच के अन्तरविरोधों को हल करने के लिए एक दूसरे के पूरक हैं। सार्वजनिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए प्रशासनिक आदेश जारी करने के साथ-साथ समझाने-बुझाने व शिक्षित करने का काम भी किया जाना चाहिए, क्योंकि बहुत से मामलों में केवल प्रशासनिक आदेशों से ही काम नहीं चलता।

जनता के बीच के अन्तरविरोधों को हल करने के इस जनवादी तरीके का सारांश 1942 में हमने "एकता – आलोचना – एकता" के फार्मूले के रूप में पेश किया था। अगर जरा विस्तार से कहा जाय, तो इसका मतलब है एकता की आकांक्षा से प्रस्थान करना, आलोचना या संघर्ष के जरिए अन्तरविरोधों को हल करना तथा इस प्रकार एक नए आधार पर एक नई एकता कायम करना। हमारा अनुभव बताता है कि जनता के बीच के अन्तरविरोधों को हल करने का सही तरीका यही है। 1942 में, हमने कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर के अन्तरविरोधों को, अर्थात कठमुल्लावादियों और अधिसंख्य आम सदस्यों के बीच के अन्तरविरोधों तथा कठमुल्लावाद और मार्क्सवाद के बीच के अन्तरविरोधों को हल करने में यही तरीका अपनाया था। पार्टी के अन्दरूनी संघर्ष के दौरान एक समय ऐसा आया जब "वामपंथी" कठमुल्लावादियों ने "निर्मम संघर्ष और निष्ठुर प्रहार" का तरीका अपनाया। यह एक गलत तरीका था। "वामपंथी" कठमुल्लावादियों की आलोचना करते हुए, हमने यह पुराना तरीका नहीं अपनाया बल्कि एक नया तरीका अपनाया : अर्थात एकता की आकांक्षा से प्रस्थान करना, आलोचना या संघर्ष के जरिए सही और गलत के बीच के फर्क को स्पष्ट करना और फिर नए आधार पर एक नई एकता कायम करना। 1942 के दोष-निवारण आन्दोलन में यही तरीका अपनाया गया। इसके कुछ साल बाद 1945 में, जब चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस हुई, तो समूची पार्टी में, जैसी कि आशा थी, एकता स्थापित की गई और इसके फलस्वरूप जन-क्रान्ति को

महान विजय प्राप्त हो गई। यहां मुख्य बात यह है कि एकता की आकांक्षा से प्रस्थान किया जाए। अगर एकता की आकांक्षा के बिना ही संघर्ष छेड़ा गया, तो मामला बिगड़ जाएगा और वह अवश्य ही हमारे काबू के बाहर हो जाएगा। तो क्या वह "निर्मम संघर्ष और निष्ठुर प्रहारों" जैसा ही रूप धारण नहीं कर लेगा ? फिर क्या पार्टी-एकता नाम की कोई चीज बाकी रह जाएगी ? इसी अनुभव के आधार पर हमने यह फार्मूला खोज निकाला : "एकता – आलोचना – एकता"। अथवा, दूसरे शब्दों में, "भावी गलतियों से बचने के लिए पिछली गलतियों से सबक सीखना और मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करना"। हमने इस तरीके को पार्टी के बाहर भी अपनाया। जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों में नेतृत्व और जन-समुदाय के बीच के सम्बन्धों, सेना और जनता के बीच के सम्बन्धों, अफसरों और सिपाहियों के बीच के सम्बन्धों, विभिन्न फौजी यूनिटों के बीच के सम्बन्धों तथा कार्यकर्ताओं के विभिन्न ग्रुपों के बीच के सम्बन्धों के मसले निपटाने में इसका बड़ी सफलता से इस्तेमाल किया गया। अगर हम पार्टी के इतिहास पर नजर डालें, तो हमें मालूम हो जाएगा कि इस तरीके का इस्तेमाल इससे पहले भी किया जा चुका है। 1927 में, जब हमने दक्षिण में अपनी क्रान्तिकारी सशस्त्र सेनाओं और आधार-क्षेत्रों की स्थापना शुरू की थी, तभी से हमने पार्टी और जन-समुदाय, सेना और जनता, अफसरों और सिपाहियों के बीच के सम्बन्धों तथा जनता के बीच के अन्य सम्बन्धों के मसले निपटाने में इस तरीके का इस्तेमाल किया। फर्क सिर्फ यह था कि जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान इस तरीके का इस्तेमाल और अधिक जागरूक होकर किया गया। सारे देश की मुक्ति के बाद हमने इसी "एकता – आलोचना – एकता" के तरीके को अपने और जनवादी पार्टियों के बीच के सम्बन्धों तथा अपने और उद्योग व वाणिज्य के दायरों के बीच के सम्बन्धों के मसले निपटाने में भी लागू किया। अब हमारा कार्य यह है कि हम जनता की समस्त पांतों में इस तरीके को फैलाते जाएं तथा इसे और अच्छी तरह लागू करें। हम चाहते हैं कि हमारे सभी कारखाने, सहकारी समितियां, दुकानें, स्कूल, सहकारी दफ्तर, जन-संगठन – संक्षेप में, हमारी समूची 60 करोड़ जनता अपने बीच के अन्तरविरोधों को हल करने में इसी तरीके को काम में लाए।

साधारण परिस्थितियों में, जनता के बीच के अन्तरविरोध शत्रुतापूर्ण नहीं होते। लेकिन अगर उन्हें ठीक ढंग से हल न किया जाए, या अगर हम अपनी सतर्कता और चौकसी में कमी आ जाने दें, तो शत्रुता पैदा हो सकती है। किसी समाजवादी देश में इस प्रकार का परिस्थिति-विकास अक्सर स्थानीय और अस्थाई ही होता है। इसकी वजह यह है कि वहां मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण की व्यवस्था खत्म हो चुकी है और जनता के हित बुनियादी तौर पर समान हैं। हंगरी की घटना में जो शत्रुतापूर्ण कार्यवाहियां काफी व्यापक रूप से की गईं उनकी वजह थी घरेलू और विदेशी प्रतिक्रान्तिकारी तत्वों की करतूतें। यह एक विशेष प्रकार की परिघटना थी, और साथ ही एक अस्थाई परिघटना भी थी। यह एक ऐसी घटना थी जिसमें एक समाजवादी देश के भीतर मौजूद प्रतिक्रियावादियों ने, साम्राज्यवादियों के साथ सांठगांठ करके जनता के बीच के अन्तरविरोधों का फायदा उठाकर फूट डालने और गड़बड़ी फैलाने की कोशिश की, ताकि वे अपने साजिश भरे मकसदों को पूरा कर सकें। हंगरी की घटना से हासिल होने वाला यह एक सबक ध्यान देने योग्य है।

बहुत से लोग यह सोचते हैं कि जनता के बीच के अन्तरविरोधों को हल करने के लिए जनवादी तरीकों का इस्तेमाल करने का सवाल एक नया सवाल है। लेकिन वास्तव में ऐसी बात नहीं है। मार्क्सवादियों का सदैव यह मत रहा है कि सर्वहारा वर्ग का कार्य केवल विशाल जन-समुदाय पर निर्भर रहकर ही पूरा किया जा सकता है; मेहनतकश जनता के बीच काम करते समय कम्युनिस्टों को चाहिए कि वे समझाने-बुझाने और शिक्षित करने का जनवादी तरीका इस्तेमाल करें और फरमानशाही या जोर-जबरदस्ती के तरीके का इस्तेमाल हरगिज न करें। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी इस मार्क्सवादी-लेनिनवादी उसूल पर बड़ी वफादारी के साथ अमल करती है। हमारा सदैव यह मत रहा है कि जनता के जनवादी अधिनायकत्व में दो अलग-अलग स्वरूप वाले अन्तरविरोधों -- हमारे और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोधों और जनता के बीच के अन्तरविरोधों – को हल करते समय दो भिन्न प्रकार के तरीकों – अधिनायकत्व के तरीके और जनवादी तरीके – को इस्तेमाल करना चाहिए। इस विचार को हमारे पार्टी दस्तावेजों और बहुत से जिम्मेदार पार्टी-नेताओं के भाषणों में बार-बार स्पष्ट किया जा चुका है। 1949 में, मैंने 'जनता के जनवादी अधिनायकत्व के बारे में' शीर्षक अपने लेख में कहा था : "इन दोनों बातों का मेल – यानी जनता के लिए जनवाद और प्रतिक्रियावादियों के लिए अधिनायकत्व – ही जनता का जनवादी अधिनायकत्व है।" मैंने यह भी कहा था कि जनता की पांतों के अन्दर के मसलों को हल करने के लिए "हम जो तरीके इस्तेमाल करते हैं वे जनवादी हैं, यानी हम जोर-जबरदस्ती के नहीं, बल्कि समझाने-बुझाने के तरीके इस्तेमाल करते हैं।" जून 1950 में राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की पहली राष्ट्रीय कमेटी के दूसरे अधिवेशन में अपने भाषण के दौरान मैंने यह भी कहा था :

> जनता का जनवादी अधिनायकत्व दो तरीके इस्तेमाल करता है। दुश्मनों के प्रति वह अधिनायकत्व का तरीका इस्तेमाल करता है, अर्थात, जितने समय के लिए आवश्यक हो, उन्हें राजनीतिक गतिविधियों में भाग नहीं लेने देता तथा जन सरकार के कानूनों का पालन करने और श्रम के जरिए नए इनसान के रूप में अपना नव रूपान्तर करने के उद्देश्य से श्रम में भाग लेने के लिए बाध्य करता है। इसके विपरीत, जनता के प्रति वह मजबूर करने का तरीका नहीं बल्कि जनवाद का तरीका इस्तेमाल करता है, अर्थात उसे अनिवार्य रूप से राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने देता है और कोई भी काम करने के लिए मजबूर करने के बजाय उसे शिक्षित करने तथा समझाने-बुझाने का जनवादी तरीका इस्तेमाल करता है। ऐसी शिक्षा जनता के लिए एक तरह की आत्म-शिक्षा है, और आलोचना व आत्म-आलोचना इसका बुनियादी तरीका है।

इस प्रकार जनता के बीच के अन्तरविरोधों को हल करने के लिए जनवादी तरीका अपनाने के सवाल की हम अनेक अवसरों पर चर्चा कर चुके हैं और अपने काम के दौरान हमने इस तरीके पर आम तौर पर अमल भी किया है, तथा बहुत से कार्यकर्ता और बहुत से अन्य लोग वास्तव में अमल के दौरान इससे परिचित हो चुके हैं। तो फिर कुछ लोग आज यह क्यों महसूस करते हैं कि यह एक नया मसला है ? इसका कारण यह है कि अतीत काल में देश के भीतर और बाहर दोनों जगह हमारे और दुश्मन के बीच अत्यन्त तीव्र संघर्ष चल

रहा था तथा जनता के बीच के अन्तरविरोधों ने हमारा ध्यान अपनी ओर उतना अधिक आकर्षित नहीं किया जितना कि वे आज करते हैं।

काफी लोग हमारे और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोधों तथा जनता के बीच के अन्तरविरोधों – इन दो भिन्न स्वरूप वाले अन्तरविरोधों के बीच साफ-साफ फर्क करने में असफल रहते हैं और दोनों को सहज रूप से परस्पर उलझा देते हैं। यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी दोनों को एक दूसरे के साथ आसानी से उलझाया जा सकता है। हमारे पिछले कार्यों में इसके प्रमाण मिलते हैं। प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने के काम में कभी-कभी कुछ अच्छे लोगों को भी बुरा समझने की गलती की जा चुकी है। ऐसी बात पहले भी हो चुकी है और आज भी होती है। हम अपनी गलतियों को सीमित रखने में सफल रहे हैं, क्योंकि हमारी नीति यह रही है कि अपने और दुश्मन के बीच स्पष्ट विभाजन-रेखा खींची जाए और जब भी गलती का पता चले तो उसे सुधार लिया जाए।

मार्क्सवादी दर्शन का मत है कि विपरीत तत्वों की एकता का नियम ब्रह्माण्ड का बुनियादी नियम है। यह नियम सर्वत्र लागू होता है, चाहे प्राकृतिक जगत हो, चाहे मानव समाज अथवा मनुष्य की विचारधारा। किसी अन्तरविरोध में विपरीत तत्वों के बीच एकता भी होती है और संघर्ष भी होता है, तथा इसी से प्रेरित होकर वस्तुएं गतिमान होती हैं और उनमें परिवर्तन होता है। अन्तरविरोध हर जगह मौजूद रहते हैं, लेकिन वे अलग-अलग वस्तुओं की अलग-अलग प्रकृति के अनुरूप अलग-अलग स्वरूप वाले होते हैं। किसी वस्तु विशेष में विपरीत तत्वों की एकता परिस्थितियों से बंधी, अस्थाई व संक्रमणशील होती है और इसलिए सापेक्ष होती है, जबकि विपरीत तत्वों का संघर्ष एक निरपेक्ष वस्तु होता है। लेनिन ने इस नियम की बिलकुल स्पष्ट व्याख्या की है। हमारे देश में अधिकाधिक लोग इस नियम को समझते जा रहे हैं। लेकिन बहुत से लोगों के लिए इस नियम को स्वीकार करना एक बात है, तथा समस्याओं की जांच-पड़ताल करने और उनका समाधान करने में उसे लागू करना बिलकुल दूसरी बात है। बहुत से लोग खुले रूप में यह स्वीकार करने में हिम्मत नहीं करते कि आज भी हमारी जनता के बीच अन्तरविरोध मौजूद हैं तथा ठीक ये ही अन्तरविरोध हमारे समाज को आगे बढ़ाने वाली प्रेरक शक्ति हैं। बहुत से लोग यह मानने से इनकार करते हैं कि समाजवादी समाज में भी अन्तरविरोध मौजूद रहते हैं, जिसका नतीजा यह होता है कि जब उन्हें सामाजिक अन्तरविरोधों का सामना करना पड़ता है तो वे हिचकिचाने लगते हैं और निष्क्रिय बन जाते हैं। उनकी समझ में यह नहीं आता कि अन्तरविरोधों को लगातार सही ढंग से हल करते रहने और सुलझाते रहने से ही समाजवादी समाज और अधिक एकताबद्ध और मजबूत होता जाता है। यही कारण है कि हमें अपनी जनता को, सबसे पहले अपने कार्यकर्ताओं को ये सब बातें बताने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें समाजवादी समाज के अन्तरविरोधों को समझने में और उन्हें हल करने का सही तरीका सीखने में मदद मिल सके।

समाजवादी समाज के अन्तरविरोध पुराने समाजों के, जैसे पूंजीवादी समाज के, अन्तरविरोधों से बुनियादी तौर पर भिन्न होते हैं। पूंजीवादी समाज में अन्तरविरोध तीव्र शत्रुता और मुठभेड़ों के रूप में, तीक्ष्ण वर्ग-संघर्ष के रूप में प्रकट होते हैं; उन्हें पूंजीवादी व्यवस्था खुद हल नहीं कर सकती और केवल समाजवादी क्रान्ति ही हल कर सकती है। लेकिन इसके विपरीत,

समाजवादी समाज के अन्तरविरोध शत्रुतापूर्ण नहीं होते और उन्हें खुद समाजवादी व्यवस्था द्वारा एक के बाद एक हल कर सकती है।

समाजवादी समाज में भी बुनियादी अन्तरविरोध उत्पादन सम्बन्धों और उत्पादक शक्तियों के बीच के तथा ऊपरी ढांचे और आर्थिक आधार के बीच के अन्तरविरोध ही होते हैं। लेकिन इन अन्तरविरोधों का स्वरूप पुराने समाज के उत्पादन सम्बन्धों और उत्पादक शक्तियों के बीच के तथा ऊपरी ढांचे और आर्थिक आधार के बीच के अन्तरविरोधों से बुनियादी तौर पर भिन्न होता है और इनकी अपनी अलग विशेषताएं होती हैं। हमारे देश की वर्तमान समाज-व्यवस्था अतीत काल की समाज-व्यवस्था से कहीं बेहतर है। अगर ऐसा न होता तो न तो पुरानी व्यवस्था को उखाड़ फेंका जाता और न नई व्यवस्था की स्थापना की जा सकती। जब हम यह कहते हैं कि समाजवादी उत्पादन-सम्बन्ध पुराने उत्पादन-सम्बन्धों की तुलना में उत्पादक शक्तियों के स्वरूप के अधिक अनुकूल है, तो हमारा मतलब यह होता है कि समाजवादी उत्पादन-सम्बन्धों के जरिए उत्पादक शक्तियों का विकास जितनी तेजी से आज होता है उतनी तेजी से पुराने समाज में नहीं हो सकता था; इससे उत्पादन निरन्तर बढ़ता जाता है और लोगों की लगातार बढ़ती हुई आवश्यकताओं की कदम-ब-कदम पूर्ति होती जाती है। पुराने चीन में, साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाह-पूंजीवाद के शासन में उत्पादक शक्तियों का विकास बड़ी धीमी रफ्तार से हुआ। मुक्ति के पहले 50 से अधिक वर्षों तक, चीन में हर साल मुश्किल से दसियों हजार टन इस्पात तैयार किया गया। इसमें उत्तर-पूर्व के प्रान्तों का उत्पादन शामिल नहीं था। अगर इन प्रान्तों के उत्पादन को भी मिला लिया जाए, तो हमारे देश में इस्पात का सबसे अधिक वार्षिक उत्पादन 9 लाख टन से कुछ अधिक हुआ था। 1949 में देश में इस्पात के उत्पादन की मात्रा केवल 1 लाख टन से कुछ अधिक थी। आज देश की मुक्ति के केवल सात साल बाद ही हमारा इस्पात-उत्पादन 40 लाख टन से भी अधिक हो गया है। पुराने चीन में मोटर उद्योग और विमान उद्योग तो दूर रहे, मशीन-निर्माण उद्योग भी नहीं के बराबर था; अब ये सब उद्योग हमारे पास हो गए हैं। जब जनता ने साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद के शासन को उखाड़ फेंका, तो बहुत से लोग यह बात स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाते थे कि चीन को किस दिशा में जाना चाहिए – पूंजीवाद की तरफ या समाजवाद की तरफ। आज तथ्यों ने इसका जवाब दे दिया है : सिर्फ समाजवाद ही चीन का उद्धार कर सकता है। समाजवादी व्यवस्था ने हमारे देश की उत्पादक शक्तियों के तीव्र विकास को आगे बढ़ाया है – यह एक ऐसा तथ्य है जिसे विदेशों में हमारे दुश्मनों को भी मंजूर करना पड़ता है।

लेकिन हमारी समाजवादी व्यवस्था अभी-अभी कायम की गई है; यह न तो अभी पूरी तरह स्थापित हुई है और न पूरी तरह मजबूत ही हुई है। संयुक्त राजकीय-निजी औद्योगिक-वाणिज्यिक कारोबारों में पूंजीपतियों को अब भी उनकी पूंजी के लिए एक निश्चित दर पर सूद मिलता है, जिसका मतलब यह है कि शोषण अब भी मौजूद है। जहां तक मिलकियत का सम्बन्ध है, ये कारोबार अभी तक पूर्ण समाजवादी स्वरूप वाले नहीं हैं। हमारी कुछ कृषि और दस्तकारी उत्पादक सहकारी-समितियां अब भी अर्ध-समाजवादी स्वरूप वाली हैं; साथ ही पूर्ण समाजवादी सहकारी समितियों में भी मिलकियत से सम्बन्धित कुछ प्रश्नों को हल करना अभी बाकी है। हमारी अर्थव्यवस्था के विभिन्न विभागों में, उत्पादन और विनिमय के बीच के सम्बन्धों की स्थापना अब कदम ब-कदम समाजवादी उसूलों के मुताबिक होती जा रही है तथा अधिकाधिक उचित तरीकों की कदम ब-कदम खोज की जा रही है। समूची जनता की मिलकियत वाले क्षेत्र में और सामूहिक मिलकियत वाले क्षेत्र में, तथा समाजवादी अर्थव्यवस्था के इन दोनों क्षेत्रों के बीच संचय और उपभोग का उपयुक्त अनुपात निर्धारित करना एक जटिल समस्या है। इस समस्या का एकबारगी कोई बिलकुल युक्तियुक्त हल ढूंढ़ निकालना आसान नहीं है। संक्षेप में, समाजवादी उत्पादन-सम्बन्ध स्थापित हो चुके हैं तथा वे उत्पादक शक्तियों के विकास के अनुरूप हैं, लेकिन वे अब भी पूर्णता से बहुत दूर हैं, और उनके अपूर्ण पहलू उत्पादक शक्तियों के विकास के मार्ग में अन्तरविरोध के रूप में खड़े हैं। उत्पादन-सम्बन्धों और उत्पादक शक्तियों के विकास के बीच अनुरूपता के साथ-साथ अन्तरविरोध मौजूद होने के अलावा ऊपरी ढांचे और आर्थिक आधार के बीच भी अनुरूपता के साथ-साथ अन्तरविरोध मौजूद हैं। ऊपरी ढांचे ने – अर्थात जनता के जनवादी अधिनायकत्व की राज्य-व्यवस्था व उसके कानूनों और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के मार्गदर्शन में समाजवादी विचारधारा ने समाजवादी रूपान्तर में सफलता प्राप्त करने और समाजवादी श्रम-संगठन कायम करने में सकारात्मक भूमिका अदा की है; यह समाजवादी आर्थिक आधार के, यानी समाजवादी उत्पादन-सम्बन्धों के अनुरूप है। लेकिन पूंजीवादी विचारधारा की मौजूदगी, राजकीय अंगों में काम करने के नौकरशाहाना तरीके और राज्य व्यवस्था की कुछ कड़ियों की त्रुटियां – ये सब समाजवाद के आर्थिक आधार के खिलाफ अन्तरविरोध के रूप में खड़े हो जाते हैं। हमें ठोस परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इन अन्तरविरोधों को लगातार हल करते रहना चाहिए। यह सच है कि इन अन्तरविरोधों के हल होने पर, नई-नई समस्याएं फिर उठ खड़ी होंगी। और तब नए-नए अन्तरविरोधों को हल करना और अधिक जरूरी हो जाएगा। उदाहरण के लिए, समाज के उत्पादन और समाज की आवश्यकताओं के बीच के अन्तरविरोध को, जो लम्बे समय तक एक वस्तुगत तथ्य के रूप में मौजूद रहेगा, हल करने के लिए राजकीय योजना के जरिए निरन्तर पुनर्व्यवस्थित करते रहने की आवश्यकता होती है। हर साल हमारा देश संचय और उपभोग के बीच एक उचित अनुपात कायम करने के लिए एक आर्थिक योजना बनाता है, ताकि उत्पादन और आवश्यकताओं के बीच सन्तुलन कायम किया जा सके। सन्तुलन महज विपरीत तत्वों की अस्थाई, सापेक्ष एकता ही है। हर साल के अन्त में, समूचे रूप में देखा जाए तो विपरीत तत्वों के बीच के संघर्ष के परिणामस्वरूप यह सन्तुलन बिगड़ जाता है, एकता में परिवर्तन हो जाता है, संतुलन असंतुलन में बदल जाता है, एकता विच्छिन्नता में बदल जाती है, और अगले वर्ष के लिए फिर एक बार सन्तुलन और एकता स्थापित करना आवश्यक हो जाता है। यही हमारी योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था की श्रेष्ठता है। सच तो यह है कि यह सन्तुलन और एकता आंशिक रूप से हर महीने और हर तिमाही में बिगड़ते रहते हैं, तथा उन्हें आंशिक रूप से पुनर्व्यवस्थित करते रहना पड़ता है। कभी कभी अन्तरविरोध इसलिए पैदा होते हैं और सन्तुलन इसलिए बिगड़ जाता है क्योंकि हमारा मनोगत प्रबन्ध वस्तुगत स्थिति से मेल नहीं खाता; इसी को हम गलती करना कहते हैं। अन्तरविरोधों का लगातार पैदा होते रहना और लगातार हल होते रहना ही वस्तुओं के विकास का द्वन्द्ववादी नियम है।

आज की परिस्थिति ऐसी है : जन-समुदाय के बड़े पैमाने के तूफानी वर्ग-संघर्ष, जो पहले

के क्रान्तिकारी कालों की विशेषता रहे हैं, आम तौर पर समाप्त हो चुके हैं, लेकिन वर्ग संघर्ष अभी पूर्ण रूप से हरगिज समाप्त नहीं हुआ। व्यापक जन समुदाय नई व्यवस्था का स्वागत करता है, पर साथ ही वह अभी तक इसका पूर्ण रूप से आदी नहीं हुआ है। सरकारी कर्मचारी यथेष्ट रूप से अनुभवी नहीं हैं और उन्हें चाहिए कि वे ठोस नीतियों से सम्बन्धित मसलों का अध्ययन करना और उनकी खोजबीन करना जारी रखें। दूसरे शब्दों में, हमारी समाजवादी व्यवस्था को सुस्थापित और सुदृढ़ बनने में, जन-समुदाय को इस नई व्यवस्था का आदी होने में, और सरकारी कर्मचारियों को अध्ययन करने और अनुभव प्राप्त करने में अभी समय लगेगा। अतएव इस समय यह अत्यन्त आवश्यक हो गया है कि हम अपने और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोधों तथा जनता के बीच के अन्तरविरोधों में भेद करने का मसला उठाएं तथा साथ ही जनता के अन्तरविरोधों को सही ढंग से हल करने का मसला भी उठाएं, ताकि हम अपने देश की तमाम राष्ट्रीयताओं की जनता को एक नए संघर्ष के लिए – प्रकृति के विरुद्ध किए जाने वाले संघर्ष के लिए – गोलबन्द कर सकें, अपनी अर्थव्यवस्था व संस्कृति का विकास कर सकें, अपनी समूची जनता को इस संक्रमण काल से अपेक्षाकृत निर्विघ्न रूप से गुजरने में सहायता दे सकें, अपनी नई व्यवस्था को सुदृढ़ बना सकें तथा अपने नए राज्य का निर्माण कर सकें।

2. प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने का सवाल

प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने का सवाल हमारे और दुश्मन के बीच के संघर्ष का, दो विपरीत तत्वों के बीच के संघर्ष का सवाल है। जनता के बीच, कुछ लोग ऐसे हैं जो इस सवाल के बारे में जरा भिन्न दृष्टिकोण रखते हैं। जिन लोगों का दृष्टिकोण हमसे भिन्न है, वे दो प्रकार के हैं। दक्षिणपंथी विचारों वाले लोग हमारे और दुश्मन के बीच कोई फर्क नहीं करते और दुश्मन को हमारा अपना ही आदमी मान बैठते हैं। वे लोग ऐसे व्यक्तियों को अपना मित्र मान बैठते हैं जिन्हें व्यापक जन-समुदाय अपना शत्रु समझता है। "वामपंथी" विचारों वाले लोग हमारे और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोधों को इतना ज्यादा बढ़ा-चढ़ा देते हैं कि जनता के बीच के कुछ अन्तरविरोधों को भी हमारे और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोध मान बैठते हैं, तथा ऐसे लोगों को भी प्रतिक्रान्तिकारी व्यक्ति मान बैठते हैं जो वास्तव में प्रतिक्रान्तिकारी नहीं हैं। ये दोनों ही दृष्टिकोण गलत हैं। इन दोनों में एक भी दृष्टिकोण ऐसा नहीं है जिससे प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने के सवाल को सही ढंग से हल किया जा सके अथवा इस काम का ठीक-ठीक मूल्यांकन किया जा सके।

प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने के काम का सही मूल्यांकन करने के लिए हम यह देखें कि हंगरी की घटना का हमारे देश में क्या प्रभाव पड़ा। इस घटना से हमारे कुछ बुद्धिजीवियों ने थोड़ा-बहुत सन्तुलन अवश्य खोया, मगर उनके बीच कोई उपद्रव नहीं हुआ। भला क्यों ? इसका एक कारण, जिसे अवश्य बता देना चाहिए, यह था कि हम प्रतिक्रान्तिकारियों का करीब-करीब पूरी तरह सफाया करने में सफल हो चुके थे।

निस्सन्देह, हमारे राज्य के सुदृढ़ होने का मुख्य कारण प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करना

नहीं है। इसका मुख्य कारण यह है कि हमारे यहां एक ऐसी कम्युनिस्ट पार्टी और एक ऐसी मुक्ति सेना है जो अनेक दशाब्दियों के क्रान्तिकारी संघर्ष में तपकर फौलाद बन चुकी है, तथा एक ऐसी मेहनतकश जनता है जो इसी तरह क्रान्तिकारी संघर्ष में तपकर फौलाद बन चुकी है। हमारी पार्टी और हमारी सैन्य शक्ति की जड़ें जन-समुदाय के बीच हैं; वे दीर्घकालीन क्रान्ति की ज्वालाओं में तप चुकी हैं; उनमें लड़ने की शक्ति है। हमारा लोक गणराज्य रातोंरात बनकर नहीं खड़ा हो गया, वह क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों से कदम-ब-कदम विकसित हुआ है। कुछ गण्यमान्य जनवादी व्यक्ति भी किसी न किसी हद तक इस संघर्ष की अग्नि-परीक्षा में खरे उतर चुके हैं तथा वे भी हमारे साथ मुसीबतों में से गुजर चुके हैं। साम्राज्यवाद-विरोधी और प्रतिक्रियावाद-विरोधी संघर्ष की आग में कुछ बुद्धिजीवी भी तप चुके हैं; मुक्ति के बाद उनमें से बहुत से लोग विचारधारात्मक नव रूपान्तर की प्रक्रिया से गुजर चुके हैं, जिसका उद्देश्य है अपने और शत्रु के बीच स्पष्ट रूप से भेद करना। इसके अतिरिक्त, हमारे राज्य के सुदृढ़ होने का कारण यह भी है कि हमारे द्वारा उठाए गए आर्थिक कदम बुनियादी रूप से सही हैं, जनता का जीवन सुरक्षित है और उसमें लगातार सुधार होता जा रहा है, तथा राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग और अन्य वर्गों के प्रति हमारी नीति सही है, वगैरह-वगैरह। फिर भी, प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने में प्राप्त की गई हमारी सफलता निस्सन्देह हमारे राज्य के सुदृढ़ होने का एक महत्वपूर्ण कारण है। इन्हीं सब बातों की वजह से, यद्यपि हमारे बहुत से कालेज-विद्यार्थी मेहनतकश परिवारों से नहीं हैं, फिर भी अपवाद के रूप में कुछ लोगों को छोड़कर वे सभी अपने देश से प्रेम करते हैं और समाजवाद का समर्थन करते हैं; हंगरी की घटना के दौरान उन्होंने अपना सन्तुलन नहीं खोया। राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के सम्बन्ध में भी यही बात लागू होती है; बुनियादी जन-समुदाय – मजदूरों और किसानों – के विषय में तो कहने की जरूरत ही नहीं।

मुक्ति के बाद हमने अनेक प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया कर डाला। कुछ लोगों को मौत की सजा दी गई, क्योंकि उन्होंने गम्भीर अपराध किए थे। यह बिलकुल जरूरी था, यह व्यापक जन-समुदाय की मांग थी, यह जनता को प्रतिक्रान्तिकारियों और तरह-तरह के स्थानीय निरंकुश तत्वों के दीर्घकालीन दमन से मुक्त कराने के लिए किया गया था; दूसरे शब्दों में, यह उत्पादक शक्तियों को मुक्त कराने के लिए किया गया था। अगर हम ऐसा न करते, तो जन-समुदाय अपना सिर ऊंचा न कर पाता। मगर 1956 से परिस्थिति में बुनियादी परिवर्तन हो गया है। समूचे देश में प्रतिक्रान्ति की मुख्य शक्ति का सफाया कर दिया गया है। हमारा बुनियादी काम अब उत्पादक शक्तियों को मुक्त कराने की जगह नए उत्पादन-सम्बन्धों की पृष्ठभूमि में उत्पादक शक्तियों को सुरक्षित और विकसित कराना हो गया है। कुछ लोग यह नहीं समझ पाते कि हमारी मौजूदा नीति मौजूदा परिस्थिति के अनुकूल है और हमारी पहले की नीति पहले की परिस्थिति के अनुकूल थी। वे पुराने फैसलों को बदलवाने के लिए मौजूदा नीति का इस्तेमाल करना चाहते हैं और प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने में हमारे द्वारा प्राप्त की गई महान सफलताओं से इनकार करना चाहते हैं। यह बिलकुल गलत है और जन-समुदाय इसकी इजाजत नहीं देगा।

प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने के काम में हमें मुख्य रूप से सफलताएं ही प्राप्त

हुई हैं, मगर इस काम में गलतियां भी हुई हैं। कुछ मामलों में ज्यादतियां हुई हैं तो कुछ मामलों में चन्द प्रतिक्रान्तिकारी हमारे जाल से बच निकले हैं। हमारी नीति यह है : "जब भी प्रतिक्रान्तिकारियों का पता चले, उनका सफाया कर दो और जब भी गलतियों का पता चले, उन्हें सुधार लो।" हमने प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने के काम में जो कार्य-दिशा अपनाई, वह जनदिशा थी। बेशक, जनदिशा अपनाने के बाद भी हमारे काम में गलतियां होती रहेंगी, मगर तब वे अपेक्षाकृत थोड़ी होंगी और उन्हें ठीक करना कुछ आसान होगा। संघर्ष से जन-समुदाय को तजुरबा हासिल होता है। जब काम ठीक ढंग से किया जाता है तो जन-समुदाय को इस बात का तजुरबा हासिल होता है कि काम ठीक ढंग से कैसे किया जाता है। जब काम में गलतियां होती हैं तो जन-समुदाय को इस बात का तजुरबा हासिल होता है कि गलतियां क्यों होती हैं।

प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने के काम में जहां कहीं भी गलतियों का पता चला है, उन्हें सुधारने के लिए कदम उठाए गए हैं अथवा उठाए जा रहे हैं। जिन गलतियों का अभी पता नहीं चला, उसका पता चलते ही उन्हें ठीक कर लिया जाएगा। दोषमुक्त करने और पुनर्प्रतिष्ठित करने के फैसलों का भी मूल गलत फैसलों की ही तरह व्यापक रूप से ऐलान किया जाना चाहिए। मेरा सुझाव है कि प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने के काम की इस वर्ष या अगले वर्ष चौतरफा जांच-पड़ताल की जाए, ताकि अनुभवों का निचोड़ निकाला जा सके, न्यायपरायणता की भावना को आगे बढ़ाया जा सके और अस्वस्थ प्रवृत्तियों पर प्रहार किया जा सके। राष्ट्रीय स्तर पर यह काम राष्ट्रीय जन-प्रतिनिधि सभा की स्थायी समिति और राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की राष्ट्रीय कमेटी की स्थायी समिति के संचालन में किया जाना चाहिए, और स्थानीय स्तर पर, यह काम प्रान्तों और म्युनिसिपलटियों की जन-परिषदों तथा राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की कमेटियों के संचालन में किया जाना चाहिए। इस जांच पड़ताल में हमें उन व्यापक कार्यकर्ताओं और सक्रिय तत्वों की सहायता करनी चाहिए जिन्होंने इस काम में हिस्सा लिया है, न कि उनके उत्साह पर ठण्डा पानी उड़ेल देना चाहिए। उनके उत्साह पर ठण्डा पानी उड़ेल देना ठीक नहीं है। फिर भी गलतियों का पता चलते ही उन्हें ठीक कर लिया जाना चाहिए। सभी सार्वजनिक सुरक्षा संगठनों, प्रोक्यूरेटर-कार्यालयों और न्याय विभागों, जेलों या उन एजेन्सियों को जिन पर श्रम द्वारा अपराधियों को सुधारने की जिम्मेदारी है, यही रुख अपनाना चाहिए। हमें आशा है कि जहां भी सम्भव हो, राष्ट्रीय जन-प्रतिनिधि सभा की स्थायी समिति के सदस्य, राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की राष्ट्रीय कमेटी के सदस्य और जन-प्रतिनिधि इस जांच-पड़ताल में भाग लेंगे। अपनी न्याय-व्यवस्था को सर्वांगपूर्ण बनाने और प्रतिक्रान्तिकारियों व अन्य अपराधियों से सही ढंग से निपटने में इससे सहायता मिलेगी।

प्रतिक्रान्तिकारियों के बारे में वर्तमान स्थिति का वर्णन इन शब्दों में किया जा सकता है : आज भी प्रतिक्रान्तिकारी मौजूद हैं, मगर उनकी तादाद ज्यादा नहीं है। पहली बात यह है कि आज भी प्रतिक्रान्तिकारी मौजूद हैं। कुछ लोग कहते हैं कि प्रतिक्रान्तिकारी अब बिलकुल नहीं रहे और अब सब तरफ अमन-चैन है, इसलिए हम बेखटके सुख की नींद सो सकते हैं। मगर वास्तविक स्थिति ऐसी नहीं है। वास्तविकता यह है कि प्रतिक्रान्तिकारी अब भी मौजूद हैं

(बेशक, इसका अर्थ यह नहीं कि वे आपको हर जगह और हर इकाई में मिल सकते हैं), और हमें उनके खिलाफ संघर्ष जारी रखना होगा। यह समझ लेना चाहिए कि छिपे हुए प्रतिक्रान्तिकारी चुपचाप बैठे नहीं रहेंगे, बल्कि कोई न कोई बखेड़ा खड़ा करने के लिए अवश्य हर मौके का फायदा उठाएंगे। अमरीकी साम्राज्यवादी तथा च्याङ काई-शेक गुट तोड़फोड़ करने के लिए अपने गुप्त एजेण्ट बराबर भेजते रहते हैं। यहां तक कि जब तमाम वर्तमान प्रतिक्रान्तिकारियों को नेस्तनाबूद कर दिया जाएगा, तब भी नए प्रतिक्रान्तिकारियों के पैदा होने की सम्भावना बनी रहेगी। अगर हम सतर्क रहना छोड़ देंगे, तो हम बुरी तरह धोखा खाएंगे और हमें भारी क्षति उठानी पड़ेगी। प्रतिक्रान्तिकारी जहां कहीं भी गड़बड़ी करते नजर आएं, उन्हें दृढ़ता से नेस्तनाबूद कर देना चाहिए। लेकिन अगर पूरे देश को देखा जाए, तो सचमुच प्रतिक्रान्तिकारियों की तादाद अधिक नहीं है। यह कहना भी गलत होगा कि चीन में अब भी प्रतिक्रान्तिकारी बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह दृष्टिकोण अपना लेने से भी अन्त में बड़ी गड़बड़ी पैदा हो जाएगी।

3. कृषि के सहकारी रूपान्तर का सवाल

हमारे यहां 50 करोड़ से अधिक ग्रामीण जनसंख्या है, इसलिए हमारी अर्थव्यवस्था के विकास और राजसत्ता के सुदृढ़ीकरण पर हमारे किसानों की स्थिति का बहुत महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। मेरे खयाल से, स्थिति बुनियादी रूप से अच्छी है। कृषि का सहकारी रूपान्तर सफलतापूर्वक पूरा हो गया है और इसने हमारे देश के एक बड़े अन्तरविरोध को – समाजवादी औद्योगीकरण और किसानों की व्यक्तिगत खेतीबाड़ी के बीच के अन्तरविरोध को – हल कर दिया है। चूंकि कृषि के सहकारी रूपान्तर का काम बड़ी तेजी से पूरा किया गया, इसलिए कुछ लोग चिन्तित थे कि कहीं कोई उत्पात न हो जाए। कुछ त्रुटियां अवश्य रह गईं, मगर सौभाग्य से वे ज्यादा गम्भीर नहीं थीं और कुल मिलाकर यह आन्दोलन स्वस्थ रहा। किसान बड़े उत्साह के साथ काम कर रहे हैं, और गत वर्ष पिछले कुछ वर्षों की सबसे ज्यादा भारी बाढ़, सूखे और तूफान के बावजूद समूचे देश में अनाज की पैदावार बढ़ गई। अब कुछ लोग एक छोटा-सा तूफान खड़ा कर रहे हैं; वे शिकायत कर रहे हैं कि सहकारिता अच्छी चीज नहीं है, वह किसी भी मायने में श्रेष्ठ नहीं है। क्या सहकारिता एक श्रेष्ठ वस्तु है अथवा नहीं ? आज की मीटिंग में जो दस्तावेज बांटे गए हैं, उनमें हपे प्रान्त की चुनह्वा काउण्टी की वाङ क्वो-फान सहकारी समिति से सम्बन्धित एक दस्तावेज भी है, जिसे मेरी राय में आप लोग पढ़ लें। यह सहकारी समिति एक पहाड़ी क्षेत्र में है, जो पहले बड़ा गरीब इलाका था और कई सालों से जन सरकार द्वारा सहायतार्थ भेजे गए अनाज पर निर्भर रहता था। 1953 में जब यह सहकारी समिति कायम ही की गई थी, तो लोग इसे "कंगालों की सहकारी समिति" कहा करते थे। लेकिन इस सहकारी समिति की हालत हर वर्ष सुधरती गई, और चार वर्ष के कठोर संघर्ष के बाद अब इसके अधिकांश परिवारों के पास अतिरिक्त अनाज भी होने लगा है। जो कुछ यह सहकारी समिति कर सकी, उसे सामान्य परिस्थितियों में अन्य सहकारी समितियों को भी कर सकना चाहिए, चाहे समय कुछ अधिक ही क्यों न लगे। इस प्रकार यह कहना स्पष्ट रूप से बेबुनियाद

है कि कृषि-सहकारिता में कोई खराबी पैदा हो गई है।

यह भी स्पष्ट है कि सहकारी समितियों का निर्माण करने के लिए कठोर संघर्ष की जरूरत होती है। नई वस्तुओं को अपने विकास के दौरान सदैव कठिनाइयों और असफलताओं का सामना करना पड़ता है। यह सोचना महज एक खाम-खयाली है कि समाजवाद का समूचा कार्य बड़ा सुगम-सरल है, इस कार्य में आसानी से सफलता प्राप्त की जा सकती है, इसमें कठिनाइयों और असफलताओं का सामना नहीं करना पड़ेगा अथवा इसमें भरपूर प्रयास करने की जरूरत नहीं है।

सहकारी समितियों के सक्रिय समर्थक कौन लोग हैं ? वे हैं अधिसंख्य गरीब किसान और निम्न-मध्यम किसान। उनकी संख्या कुल ग्रामीण आबादी के 70 प्रतिशत से अधिक है। बाकी लोगों में से भी अधिकांश लोग ऐसे हैं जो सहकारी समितियों पर उम्मीदें टिकाये हुए हैं। सिर्फ एक छोटी-सी अल्पसंख्या ही ऐसे लोगों की है जो सचमुच असन्तुष्ट हैं। काफी लोगों ने इस परिस्थिति का विश्लेषण नहीं किया है तथा सहकारी समितियों की सफलताओं व खामियों की तथा खामियों के कारणों की चौतरफा छानबीन नहीं की है, और वे केवल एक अंश या केवल एक पहलू को ही सम्पूर्ण वस्तु मान बैठे हैं। इस प्रकार कुछ लोगों के बीच एक छोटा-सा तूफान उठ खड़ा हुआ है, जो यह उलाहना दे रहे हैं कि सहकारी समितियां श्रेष्ठ नहीं हैं।

सहकारी समितियों को सुदृढ़ बनाने में और उनके विषय में यह तर्क खत्म करने में कि वे श्रेष्ठ नहीं हैं, आखिर कितना समय लगेगा ? अनेक सहकारी समितियों के विकास के वास्तविक अनुभवों को देखते हुए इसमें शायद पांच वर्ष या कुछ अधिक समय लग जाएगा। चूंकि हमारी अधिकांश सहकारी समितियां एक वर्ष से कुछ ही अधिक पुरानी हैं, इसलिए उनसे इतनी जल्दी बहुत अधिक आशा करना युक्तिसंगत नहीं होगा। मेरे विचार से अगर हम पहली पंचवर्षीय योजना के काल में सहकारी समितियों की स्थापना करने के बाद दूसरी पंचवर्षीय योजना के काल में उन्हें सुदृढ़ बनाने में सफल हो जाएं, तो यह काफी होगा।

अब हमारी सहकारी समितियां कदम-ब-कदम सुदृढ़ बनने की प्रक्रिया में से गुजर रही हैं। कुछ अन्तरविरोधों को हल करना अभी बाकी है, जैसे राज्य और सहकारी समितियों के बीच के अन्तरविरोध, तथा सहकारी समितियों के अन्दर के और विभिन्न सहकारी समितियों के बीच के अन्तरविरोध।

उपरोक्त अन्तरविरोधों को हल करते समय हमें उत्पादन और वितरण की समस्याओं को बराबर ध्यान में रखना चाहिए। उत्पादन के प्रश्न को ही लीजिए। एक तरफ सहकारी अर्थव्यवस्था को राज्य की एकीकृत आर्थिक योजना के मातहत होना चाहिए, मगर साथ ही उसे एक ऐसे लचीलेपन व स्वतंत्रता की इजाजत दी जाए जो राज्य की एकीकृत योजना और राज्य की नीतियों, कानूनों व नियमों के खिलाफ न हो। दूसरी तरफ सहकारी समिति के प्रत्येक परिवार को, व्यक्तिगत इस्तेमाल के लिए सुरक्षित जमीन और व्यक्तिगत रूप से चलाए जाने वाले कुछ उद्यमों को छोड़कर, जिनके लिए वह खुद उचित योजना बना सकता है, अपनी सहकारी समिति या उत्पादक-दल की आम योजना पर अमल करना चाहिए। आमदनी के वितरण के प्रश्न के बारे में हमें राज्य, समुदाय तथा व्यक्ति के हितों को ध्यान में रखना चाहिए। राज्य के कृषि-कर, सहकारी समितियों की संचित निधि और किसानों की व्यक्तिगत आय के

बीच के तिहरे सम्बन्धों के मसले को हमें सही ढंग से निपटाना चाहिए, तथा उन्हें पुनर्व्यवस्थित करने की तरफ लगातार ध्यान देना चाहिए, ताकि ज्यों ही अन्तरविरोध पैदा हों, उन्हें हल कर लिया जाए। राज्य और सहकारी समिति दोनों के लिए निधि-संचय जरूरी है, लेकिन दोनों को ही इसमें अति नहीं करनी चाहिए। उत्पादन-वृद्धि के आधार पर, हमें सामान्य वर्षों में प्रतिवर्ष व्यक्तिगत आय बढ़ाने में किसानों की सहायता करने का हर सम्भव प्रयास करना चाहिए।

बहुत से लोग कहते हैं कि किसान बड़ा कठिन जीवन बिताते हैं। क्या यह सच है ? एक अर्थ में यह सच है। इसका अर्थ यह है कि चूंकि साम्राज्यवादियों और उनके दलालों ने एक शताब्दी से अधिक समय तक हमारे देश का उत्पीड़न व शोषण किया, इसलिए हमारा देश गरीब है; न सिर्फ हमारे देश के किसानों का, बल्कि हमारे मजदूरों और बुद्धिजीवियों का रहन-सहन का स्तर भी अभी नीचा है। अपनी समूची जनता का जीवन-स्तर कदम ब-कदम ऊंचा उठाने के लिए हमें कई दशाब्दियों तक भरपूर प्रयास करना होगा। इस अर्थ में ''कठिन'' शब्द का प्रयोग ठीक है। लेकिन दूसरे अर्थ में इसे ''कठिन'' कहना सही नहीं होगा। हम यहां उस आरोप का उल्लेख कर रहे हैं जिसमें कहा जाता है कि मुक्ति के बाद के सात वर्षों में केवल मजदूरों का ही जीवन सुधरा है, किसानों का नहीं। वास्तविकता यह है कि बहुत थोड़े अपवादों को छोड़कर, मजदूर और किसान दोनों के ही जीवन में पहले से कुछ सुधार हुआ है। मुक्ति के बाद किसानों ने जमींदारों के शोषण से मुक्ति प्राप्त कर ली है और उनका उत्पादन साल-दर-साल बढ़ता जा रहा है। अनाज की पैदावार की ही मिसाल लीजिए। 1949 में देश में अनाज की पैदावार केवल 21,000 करोड़ चिन से कुछ ज्यादा थी। 1956 तक यह बढ़कर 36,000 करोड़ चिन से कुछ ज्यादा हो गई, यानी उसमें करीब 15,000 करोड़ चिन की वृद्धि हुई। राजकीय कृषि-कर भारी नहीं है, यह प्रतिवर्ष सिर्फ 3,000 करोड़ चिन से कुछ ज्यादा होता है। प्रतिवर्ष सामान्य कीमतों पर किसान से खरीदा गया कुल गल्ला केवल 5,000 करोड़ चिन से कुछ ज्यादा होता है। इन दोनों मदों का योग 8,000 करोड़ चिन से कुछ ज्यादा होता है। इसमें से आधे से अधिक गल्ला गांवों में या गांव के नजदीक के कस्बों में बेच दिया जाता है। अतएव यह कोई नहीं कह सकता कि किसानों के जीवन में सुधार नहीं हुआ। हम आगामी कई वर्षों तक प्रतिवर्ष कृषि-कर और सरकार द्वारा खरीदे जाने वाले गल्ले के योग को लगभग 8,000 करोड़ चिन तक स्थिर रखने के लिए तैयार हैं, ताकि कृषि का विकास करने और सहकारी समितियों को मजबूत बनाने में सहायता मिले। इस तरह देहातों में जिन थोड़े से परिवारों के पास आज भी गल्ले की कमी है, उनके सामने गल्ले की कमी नहीं रहेगी और उन चन्द किसान परिवारों को छोड़कर जो औद्योगिक फसलें उगाते हैं, सभी किसान परिवारों के पास अतिरिक्त गल्ला हो जाएगा अथवा वे कम से कम आत्मनिर्भर जरूर बन जाएंगे; वहां कोई भी गरीब किसान नहीं रह जाएगा और सभी किसानों के रहन-सहन का स्तर मध्यम किसानों के स्तर तक पहुंच जाएगा या उससे भी आगे बढ़ जाएगा। किसानों और मजदूरों की औसत वार्षिक आय की तुलना सतही रूप से करना और यह नतीजा निकाल लेना कि एक की आय नीची है और दूसरे की ऊंची, उचित नहीं होगा। मजदूरों की उत्पादकता किसानों के मुकाबले बहुत ऊंची है, जबकि किसानों के रहन-सहन का खर्चा शहरों में मजदूरों के रहन-सहन के खर्च से कहीं कम है, इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि मजदूरों को राज्य

की तरफ से विशेष सुविधाएं प्रदान की गई हैं। थोड़े से मजदूरों तथा कुछ सहकारी कर्मचारियों के वेतन जरा ऊंचे हैं, और इस तरह किसानों के असन्तुष्ट होने का कारण मौजूद है, इसलिए यह आवश्यक है कि ठोस परिस्थितियों को देखते हुए उन्हें समुचित रूप से कुछ पुनर्व्यवस्थित किया जाए।

4. उद्योगपतियों और व्यापारियों का सवाल

हमारी समाज-व्यवस्था के रूपान्तर के दौरान 1956 में कृषि और दस्तकारी के सहकारी रूपान्तर के साथ-साथ, निजी औद्योगिक और वाणिज्यिक कारोबारों को भी संयुक्त राजकीय-निजी कारोबारों में बदल दिया गया। जिस तेज रफ्तार और सुगमता के साथ यह काम पूरा किया गया उसका इस बात से घनिष्ठ सम्बन्ध था कि हम मजदूर वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के बीच के अन्तरविरोध को जनता के बीच के अन्तरविरोध मानकर चले। क्या यह वर्ग-अन्तरविरोध पूरी तरह हल हो गया है ? नहीं, यह अभी पूरी तरह हल नहीं हुआ। इसमें अभी और काफी समय लग जाएगा। लेकिन कुछ लोग यह कहते हैं कि पूंजीपतियों का इतना विचारधारात्मक नव रूपान्तर हो चुका है कि अब उनमें और मजदूरों में कोई खास फर्क नहीं रह गया है, तथा उनका और अधिक नव रूपान्तर करने की आवश्यकता नहीं रह गई है। कुछ लोग यहां तक कहते हैं कि पूंजीपति मजदूरों से भी बेहतर हैं। कुछ अन्य लोग यह पूछते हैं कि अगर नव रूपान्तर आवश्यक है तो मजदूर वर्ग का नव रूपान्तर क्यों नहीं किया जाता ? क्या ये विचार सही हैं ? बेशक, ये सही नहीं हैं।

समाजवादी समाज के निर्माण के दौरान सभी को अपने नव रूपान्तर की आवश्यकता होती है – शोषकों को भी और मेहनतकश जनता को भी। कौन कहता है कि मजदूर वर्ग को इसकी जरूरत नहीं होती ? हां, शोषकों का नव रूपान्तर और मेहनतकश जनता का नव रूपान्तर स्वरूप की दृष्टि से दो अलग-अलग किस्म के नव रूपान्तर हैं। इन्हें एक दूसरे से उलझाया नहीं जाना चाहिए। वर्ग-संघर्ष में और प्रकृति के विरुद्ध संघर्ष में, मजदूर वर्ग समूचे समाज का नव रूपान्तर करता है, और साथ ही अपना खुद का भी नव रूपान्तर करता है। अपने काम के दौरान उसे लगातार सीखते रहना चाहिए और कदम-ब-कदम अपनी खामियों को दूर करते रहना चाहिए, तथा ऐसा करना कभी उसे बन्द नहीं करना चाहिए। यहां मौजूद हम लोगों की ही मिसाल लीजिए। हममें से बहुत से लोग हर साल कुछ न कुछ उन्नति करते हैं; कहने का तात्पर्य यह है कि हमारा हर साल कुछ न कुछ नव रूपान्तर होता जाता है। मेरा ही उदाहरण लीजिए। पहले खुद मेरे अन्दर भी बहुत से गैर-मार्क्सवादी विचार मौजूद थे और मार्क्सवाद को मैंने बाद में ही अपनाया। मैंने किताबों से थोड़ा-बहुत मार्क्सवाद सीखा और इस तरह अपने विचारों का प्रारम्भिक नव रूपान्तर किया, लेकिन मुख्यत: अनेक वर्षों तक वर्ग संघर्ष में भाग लेने से ही मेरा नव रूपान्तर हो सका। और अगर मुझे आगे प्रगति करनी है, तो सीखने का यह क्रम जारी रखना चाहिए, वरना मैं पिछड़ जाऊंगा। क्या पूंजीपति इतने बेहतर हो सकते हैं कि उन्हें अपना और अधिक नव रूपान्तर करने की आवश्यकता ही न रह जाए ?

कुछ लोग यह तर्क पेश करते हैं कि अब चीनी पूंजीपति वर्ग के चरित्र के दो पहलू नहीं रह गए हैं, बल्कि केवल एक ही पहलू रह गया है। क्या यह सच है ? नहीं। एक तरफ तो पूंजीपति वर्ग के लोग संयुक्त राजकीय-निजी कारोबारों के प्रशासनिक कर्मचारी बन गए हैं तथा उन्हें शोषकों से बदलकर स्वयं अपने श्रम से रोजी कमाने वाले मेहनतकशों में रूपान्तरित किया जा रहा है। दूसरी तरफ, संयुक्त कारोबारों में लगी हुई उनकी पूंजी पर उन्हें अब भी निश्चित दर पर ब्याज मिलता है, यानी उन्होंने अभी तक शोषण-व्यवस्था से अपना सम्बन्ध-विच्छेद नहीं किया है। अब भी विचारधारा, मनोभावों और आदतों में उनके और मजदूर वर्ग के बीच काफी अन्तर है। फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि अब उनके चरित्र के दो पहलू नहीं रहे ? जब वे लोग निश्चित दर पर ब्याज की रकम पाना बन्द कर देंगे और उनका "पूंजीपति" का लेबिल उतार फेंका जाएगा, तब भी काफी समय तक उनके विचारधारात्मक नव रूपान्तर की आवश्यकता बनी रहेगी। अगर यह मान लिया जाए कि अब पूंजीपति वर्ग का चरित्र दुरंगा नहीं रह गया है, तो पूंजीपतियों के लिए अध्ययन करने और अपना नव रूपान्तर करने का काम मौजूद नहीं रह जाता।

यह बता देना चाहिए कि ऐसा दृष्टिकोण न तो हमारे उद्योगपतियों और व्यापारियों की वास्तविक स्थिति से मेल खाता है, और न उनमें से अधिकांश लोगों की ख्वाहिश से। पिछले कुछ वर्षों में, उनमें से अधिकांश लोगों में अध्ययन करने की इच्छा मौजूद रही है और उन्होंने उल्लेखनीय प्रगति की है। हमारे उद्योगपतियों और व्यापारियों का पूर्ण नव रूपान्तर सिर्फ काम के दौरान ही हो सकता है। कारोबारों में उन्हें कर्मचारियों और मजदूरों के साथ मिलकर श्रम करना चाहिए और इन कारोबारों को ही ऐसे मुख्य स्थान बना लेना चाहिए जहां वे अपना नव रूपान्तर कर सकें। उनके लिए यह भी महत्वपूर्ण है कि वे अध्ययन के जरिए अपने कुछ पुराने दृष्टिकोणों को बदल डालें। यह अध्ययन स्वेच्छा के आधार पर किया जाना चाहिए। कुछ हफ्तों तक अध्ययन-गोष्ठी में शामिल होने के बाद कारोबारों में वापस लौटने पर बहुत से उद्योगपतियों और व्यापारियों को यह अनुभव हुआ है कि वे मजदूरों के साथ और राजकीय शेयरों के प्रतिनिधियों के साथ पहले से अधिक समान भाषा में बात कर सकते हैं, और इसलिए उनके साथ काम करने की बेहतर स्थितियां पैदा हो गई हैं। वे लोग अपने व्यक्तिगत अनुभव से यह समझ गए हैं कि अध्ययन जारी रखने और अपना नव रूपान्तर करते रहने से उन्हें लाभ होता है। अध्ययन और नव रूपान्तर को अनावश्यक समझने का विचार, जिसकी चर्चा अभी-अभी की गई है, बहुसंख्य उद्योगपतियों और व्यापारियों का नहीं, बल्कि थोड़े से लोगों का प्रतिनिधित्व करता है।

5. बुद्धिजीवियों का सवाल

हमारे देश में, जनता की पांतों के भीतर के अन्तरविरोध, बुद्धिजीवियों के बीच भी प्रकट होते हैं। दसियों लाख बुद्धिजीवी, जो पहले पुराने समाज के लिए काम करते थे, आज नए समाज की सेवा करने लगे हैं। अब प्रश्न उठता है कि वे किस तरह अपने को नए समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल बना सकते हैं और ऐसा करने में हम किस तरह की सहायता

कर सकते हैं। यह भी जनता के बीच का एक अन्तरविरोध है।

पिछले सात वर्षों में हमारे अधिकांश बुद्धिजीवियों ने उल्लेखनीय प्रगति की है। उन्होंने यह जाहिर कर दिया है कि वे समाजवादी व्यवस्था का पक्षपोषण करते हैं। उनमें बहुत से लोग मेहनत से मार्क्सवाद का अध्ययन कर रहे हैं और कुछ लोग कम्युनिस्ट भी बन गए हैं । ऐसे लोगों की संख्या हालांकि अभी थोड़ी है, मगर वह बराबर बढ़ती जा रही है। निस्सन्देह अब भी कुछ ऐसे बुद्धिजीवी हैं जो समाजवाद को शक की नजर से देखते हैं या उसका अनुमोदन नहीं करते, मगर वे अल्पसंख्या में हैं।

समाजवादी निर्माण के भारी कार्य को पूरा करने के लिए चीन को अधिक से अधिक बुद्धिजीवियों की सेवाओं की आवश्यकता है। जो बुद्धिजीवी सचमुच समाजवाद के कार्य की सेवा करने के इच्छुक हों, उन पर हमें विश्वास करना चाहिए, उनके साथ अपने सम्बन्धों में आमूल सुधार कर लेना चाहिए और जिन समस्याओं को हल करना जरूरी हो उन्हें हल करने में उनकी सहायता करनी चाहिए, ताकि वे अपनी योग्यता का सक्रिय रूप से इस्तेमाल कर सकें। हमारे बहुत से साथी बुद्धिजीवियों के साथ एकता कायम करने में कुशल नहीं हैं। वे लोग उनके साथ सख्ती से पेश आते हैं, उनके काम का सम्मान नहीं करते तथा कुछ ऐसे वैज्ञानिक व सांस्कृतिक मामलों में अनुचित रूप से दखल देते हैं जिनमें दखल नहीं देना चाहिए। इस तरह की तमाम खामियों को हमें दूर कर लेना चाहिए।

हमारे बुद्धिजीवियों के व्यापक समुदाय ने कुछ प्रगति की है, मगर इससे उन्हें खुशफहमी नहीं हो जानी चाहिए। उन्हें अपना नव रूपान्तर जारी रखना चाहिए, कदम-ब-कदम अपना पूंजीवादी विश्व-दृष्टिकोण त्याग देना चाहिए और सर्वहारा, कम्युनिस्ट विश्व-दृष्टिकोण अपना लेना चाहिए, ताकि वे अपने को समग्र रूप से नए समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल ढाल सकें तथा मजदूरों व किसानों के साथ घनिष्ठ एकता कायम कर सकें। विश्व-दृष्टिकोण में यह परिवर्तन एक बुनियादी परिवर्तन है और अभी यह नहीं कहा जा सकता कि अधिकांश बुद्धिजीवियों ने अपने विश्व-दृष्टिकोण में पूर्ण परिवर्तन कर लिया है। हम आशा करते हैं कि वे प्रगति करना जारी रखेंगे और अपने काम व अध्ययन के दौरान कदम-ब-कदम कम्युनिस्ट विश्व-दृष्टिकोण अपनाते जाएंगे, मार्क्सवाद लेनिनवाद को आत्मसात करते जाएंगे तथा मजदूरों व किसानों के साथ एकरूप होते जाएंगे। हम आशा करते हैं कि वे आधे रास्ते में ही नहीं रुक जाएंगे, या इससे भी बदतर, पीछे की तरफ नहीं लुढ़क जाएंगे, क्योंकि पीछे की तरफ लुढ़कने पर उनके लिए कोई भविष्य नहीं रह जाएगा। चूंकि हमारे देश की समाज-व्यवस्था बदल चुकी है और पूंजीवादी विचारधारा के आर्थिक आधार को मुख्य रूप से नष्ट किया जा चुका है, इसलिए हमारे बुद्धिजीवियों के विशाल समुदाय के लिए यह न सिर्फ आवश्यक है बल्कि सम्भव भी है कि वे अपना विश्व-दृष्टिकोण बदल डालें । लेकिन विश्व-दृष्टिकोण पूरी तरह बदलने में काफी समय लग जाता है, इसलिए इस बारे में हमें धैर्य से काम लेना चाहिए, जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। वास्तव में कुछ लोग ऐसे अवश्य होंगे जो विचारधारा की दृष्टि से हमेशा मार्क्सवाद-लेनिनवाद और कम्युनिज्म को स्वीकार करने में अनिच्छा प्रकट करेंगे। हम उनसे जो अपेक्षा रखते हैं उसे पूरा करने में हमें ज्यादा सख्ती से पेश नहीं आना चाहिए; जब तक वे राज्य की आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य करते रहते हैं और कानूनी धन्धों में लगे रहते हैं, तब तक उनके लिए यथोचित काम की व्यवस्था की जानी चाहिए।

बुद्धिजीवियों और नौजवान विद्यार्थियों के बीच विचारधारात्मक और राजनीतिक कार्य में पिछले दिनों कुछ शिथिलता आ गई है और कुछ अस्वस्थ प्रवृत्तियां प्रगट हुई हैं। कुछ लोग यह सोचते जान पड़ते हैं कि अब राजनीति के बारे में, अपनी मातृभूमि के भविष्य और मानव जाति के आदर्शों के बारे में दिलचस्पी रखने की कोई जरूरत नहीं रह गई। ऐसा लगता है कि जिस मार्क्सवाद का कभी इतना बोलबाला था उसका अब फैशन नहीं रह गया। इन प्रवृत्तियों का मुकाबला करने के लिए हमें अपने विचारधारात्मक और राजनीतिक काम को सुदृढ़ बनाना चाहिए। बुद्धिजीवियों और नौजवान विद्यार्थियों दोनों को ही मेहनत से अध्ययन करना चाहिए। अपने विशिष्ट विषयों के अलावा उन्हें विचारधारात्मक और राजनीतिक दोनों ही दृष्टियों से प्रगति करनी चाहिए जिसका अर्थ यह है कि उन्हें मार्क्सवाद, सामयिक घटनाओं और राजनीतिक मामलों का भी अध्ययन करना चाहिए। सही राजनीतिक दृष्टिकोण न होने का मतलब है शरीर में आत्मा का न होना। विगत काल में विचारधारात्मक नव रूपान्तर जरूरी था और उसके सकारात्मक परिणाम भी निकले हैं। लेकिन यह कार्य कुछ सख्ती के साथ और भौंड़े तरीके से किया गया और कुछ लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंची। यह अच्छा नहीं हुआ। भविष्य में हमें इन खामियों से बचना चाहिए। विचारधारात्मक और राजनीतिक कार्य के प्रति सभी सम्बन्धित विभागों और संगठनों को अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। यह बात कम्युनिस्ट पार्टी, नौजवान संघ, तथा इस काम के लिए जिम्मेदार सरकारी विभागों पर और विशेषकर शिक्षा प्रतिष्ठानों के प्रधानों और अध्यापकों पर लागू होती है। हमारी शिक्षा नीति ऐसी होनी चाहिए कि शिक्षा प्राप्त करने वाले हर व्यक्ति को नैतिक, बौद्धिक और शारीरिक रूप से विकास करने का मौका मिले और वह समाजवादी चेतना और संस्कृति दोनों से लैस श्रमिक बन जाए। हमें मेहनत और किफायत से देश का निर्माण करने की भावना का प्रसार करना चाहिए। हमें इस बात को समझने में अपने तमाम नौजवानों की मदद करनी चाहिए कि हमारा देश अब भी बहुत गरीब है, इस स्थिति को हम थोड़े से ही समय में बुनियादी रूप से नहीं बदल सकते तथा केवल मात्र अपनी नौजवान पीढ़ी और समस्त जनता के संयुक्त प्रयत्नों के जरिए और खुद अपने हाथों से काम करके ही कुछ दशाब्दियों में हम अपने देश को शक्तिशाली और समृद्ध बना सकते हैं। समाजवादी व्यवस्था कायम होने से भविष्य के एक आदर्श समाज तक पहुंचने का रास्ता खुल गया है, लेकिन इस आदर्श को वास्तविक रूप देने के लिए हमें कठोर परिश्रम करना होगा। कुछ नौजवान यह सोचते हैं कि एक बार समाजवादी समाज कायम हो जाने पर, हर चीज को बिलकुल सर्वांगपूर्ण हो जाना चाहिए और उन्हें बिना कुछ किए, धरे ही एक बनी-बनाई खुशहाल जिन्दगी का उपभोग कर सकना चाहिए। यह महज खाम-खयाली है।

6. अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं का सवाल

हमारे देश में अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं की जनसंख्या 3 करोड़ से अधिक है। यद्यपि यह आबादी चीन की कुल आबादी की तुलना में केवल 6 फीसदी है, मगर ये लोग देश के विशाल

इलाकों में बसे हुए हैं, जिनका क्षेत्रफल चीन के कुल क्षेत्रफल का 50 से 60 प्रतिशत तक है। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हान राष्ट्रीयता और अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के बीच अच्छे सम्बन्धों को विकसित किया जाए। इस प्रश्न को हल करने की कुंजी है हान शोविनिज्म को दूर करना। साथ ही जहां कहीं अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं में स्थानीय-राष्ट्रीयता शोविनिज्म मौजूद हो, वहां उसे दूर करने का प्रयत्न भी करना चाहिए। विभिन्न राष्ट्रीयताओं की एकता के लिए हान शोविनिज्म और स्थानीय-राष्ट्रीयता शोविनिज्म दोनों ही हानिकर हैं। यह जनता के बीच का अन्तर्विरोध है, जिसे हल किया जाना चाहिए। इस क्षेत्र में हमने कुछ काम भी किया है। अधिकांश ऐसे इलाकों में जहां अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएं बसी हुई हैं, विभिन्न राष्ट्रीयताओं के आपसी सम्बन्धों में भारी सुधार हुआ है। लेकिन कुछ समस्याओं को हल करना अब भी बाकी है। कुछ जगहों पर हान शोविनिज्म और स्थानीय-राष्ट्रीयता शोविनिज्म अब भी गम्भीर रूप से मौजूद है और हमें इन पर यथेष्ट ध्यान देना चाहिए। पिछले कुछ वर्षों में, सभी राष्ट्रीयताओं की जनता के प्रयत्नों के फलस्वरूप अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के अधिकांश क्षेत्रों में जनवादी सुधार और समाजवादी रूपान्तर का काम बुनियादी तौर पर पूरा किया जा चुका है। चूंकि तिब्बत में स्थितियां अभी परिपक्व नहीं हुई हैं, इसलिए वहां अभी तक जनवादी सुधार लागू नहीं किए जा सके। केन्द्रीय जन-सरकार और तिब्बत की स्थानीय सरकार के बीच जो सत्रहसूत्री समझौता हुआ है उसके अनुसार समाज-व्यवस्था में सुधार अवश्य किया जाना है। लेकिन यह कब किया जाए, इसका निर्णय सिर्फ तभी किया जा सकेगा जब तिब्बत की जनता की विशाल बहुसंख्या और उसका नेतृत्व करने वाले स्थानीय सार्वजनिक नेता उसे व्यावहारिक समझेंगे, और इस सम्बन्ध में किसी को भी अधीर नहीं होना चाहिए। अब यह निर्णय किया गया है कि दूसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि के अन्दर तिब्बत में जनवादी सुधार शुरू न किए जाएं। उन्हें तीसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में किया जाएगा या नहीं, इसका फैसला हम उस समय की परिस्थिति के अनुसार करेंगे।

7. सर्वांगीण नियोजन और समुचित बन्दोबस्त

सर्वांगीण नियोजन से यहां हमारा तात्पर्य एक ऐसे नियोजन से है जिसमें हमारे देश की 60 करोड़ आबादी के हितों को ध्यान में रखा गया हो। योजना बनाते समय, किसी मसले को निपटाते समय या समस्याओं पर विचार करते समय, हमें सबसे पहले इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि चीन की आबादी 60 करोड़ है, और हमें इस बात को कभी नहीं भूलना चाहिए। सवाल है आखिर इस बात पर हम क्यों जोर देते हैं ? क्या कुछ लोग अब भी यह नहीं जानते कि हमारे यहां की आबादी 60 करोड़ है ? निस्सन्देह सभी इस बात को जानते हैं। मगर ऐन अमल के वक्त कुछ लोग इसे भूल जाते हैं और ऐसे पेश आते हैं मानो जितने थोड़े लोग होंगे और जितना छोटा दायरा होगा, उतना ही बेहतर होगा। जो लोग "छोटे दायरे" की मनोवृत्ति रखते हैं, वे इस विचार के विरोधी हैं कि समाजवादी समाज का निर्माण करने के महान कार्य की सेवा के उद्देश्य से सभी सकारात्मक तत्वों को गोलबन्द किया जाए, ऐसे सभी लोगों के साथ एकता कायम की जाए जिनके साथ एकता कायम की जा सकती है, और

नकारात्मक तत्वों को सकारात्मक तत्वों में बदलने के लिए हर सम्भव उपाय किया जाए। मुझे आशा है कि ऐसे लोग व्यापक दृष्टिकोण अपनाएंगे, और इस तथ्य को सचमुच स्वीकार कर लेंगे कि हमारे यहां 60 करोड़ आबादी है, यह एक वस्तुगत तथ्य है और यही हमारी सम्पत्ति है। हमारी आबादी का विशाल होना एक अच्छी बात है, मगर निस्सन्देह इसके कारण कुछ कठिनाइयां भी खड़ी हो जाती हैं। सभी मोर्चों पर निर्माण-कार्य जोरों से और सफलता के साथ चल रहा है, मगर जबरदस्त सामाजिक परिवर्तनों के वर्तमान संक्रमण-काल में हमें अब भी अनेक कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। प्रगति के साथ-साथ कठिनाइयां – यह एक अन्तर्विरोध है। मगर सभी अन्तर्विरोधों को न केवल हल किया जाना चाहिए, बल्कि उन्हें निश्चित रूप से हल किया जा सकता है। हमारा मार्गदर्शक उसूल है सर्वांगीण नियोजन और समुचित बन्दोबस्त। चाहे वह अनाज का मसला हो, अथवा प्राकृतिक विपत्तियों, रोजगार, शिक्षा, बुद्धिजीवियों, सभी देशभक्तिपूर्ण शक्तियों के संयुक्त मोर्चे और अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं से सम्बन्धित मसला या कोई अन्य मसला हो, हमें हमेशा समूची जनता के लिए सर्वांगीण नियोजन का दृष्टिकोण अपना कर प्रस्थान करना चाहिए, तथा समय और स्थान विशेष की विशिष्ट सम्भावनाओं के अनुसार, और सभी सम्बन्धित लोगों से राय लेने के बाद समुचित बन्दोबस्त करना चाहिए। किसी भी सूरत में हम यह शिकायत न करते फिरें कि लोग बहुत ज्यादा हैं, वे पिछड़े हुए हैं तथा मामले बड़े पेचीदा हैं और उनसे निपटना बड़ा कठिन है, तथा इस प्रकार मामलों को ताक पर न रख दें। क्या मेरी बात का यह अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक मामले की परवाह केवल सरकार को ही करनी चाहिए ? बेशक, ऐसा नहीं है। अनेक स्थितियों में उन्हें सामाजिक संगठनों और सीधे जन-समुदाय के जिम्मे छोड़ा जा सकता है – इन दोनों ही में मसलों से निपटने के लिए अच्छे उपाय खोज निकालने की क्षमता है। यह भी सर्वांगीण नियोजन और समुचित बन्दोबस्त के उसूल के अन्तर्गत आ जाता है। इस सम्बन्ध में हमें सामाजिक संगठनों और विभिन्न स्थानों के जन-समुदाय का मार्गदर्शन करना चाहिए।

8. "सौ फूल खिलने दो और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने दो" तथा "दीर्घकालीन सह-अस्तित्व व पारस्परिक निरीक्षण" के बारे में

"सौ फूल खिलने दो और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने दो" तथा "दीर्घकालीन सह-अस्तित्व और पारस्परिक निरीक्षण" – ये नारे आखिर कैसे पेश किए गए ? ये नारे चीन में मौजूद विशिष्ट स्थितियों को ध्यान में रखते हुए, इस तथ्य को स्वीकार करने के आधार पर कि समाजवादी समाज में अब भी विभिन्न प्रकार के अन्तर्विरोध मौजूद हैं, और देश के आर्थिक व सांस्कृतिक विकास की रफ्तार तेज करने की फौरी आवश्यकता के अनुरूप पेश किए गए हैं। "सौ फूल खिलने दो और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने दो" की नीति कला व विज्ञान की प्रगति को प्रोत्साहन देने तथा हमारे देश में एक समृद्ध समाजवादी संस्कृति का विकास करने की नीति है। कला के क्षेत्र में विभिन्न रूपों और शैलियों का स्वतंत्र रूप से

विकास होना चाहिए और विज्ञान के क्षेत्र में विभिन्न विचारशाखाओं में स्वतंत्र रूप से वाद-विवाद होना चाहिए। हमारा विचार है कि अगर किसी एक शैली या विचारशाखा को लादने और किसी दूसरी शैली या विचारशाखा पर पाबन्दी लगाने के लिए प्रशासकीय कार्यवाही की जाएगी, तो वह कला और विज्ञान के विकास के लिए हानिकारक सिद्ध होगी। कला और विज्ञान के क्षेत्र में सही और गलत के प्रश्न को कला जगत और विज्ञान जगत में स्वतंत्र वाद विवाद के जरिए तथा इन क्षेत्रों में व्यावहारिक कार्य के जरिए हल किया जाना चाहिए। उन्हें तुरत-फुरत ढंग से हल नहीं किया जाना चाहिए। कोई चीज सही है या गलत, इसे निश्चित करने के लिए अक्सर एक परीक्षण-काल की आवश्यकता होती है। समूचे इतिहास में, नई और सही वस्तुएं शुरू में अक्सर अधिसंख्य लोगों से मान्यता पाने में असफल रहीं और उन्हें कई टेढ़े-मेढ़े रास्तों से गुजर कर संघर्ष करते हुए आगे बढ़ना पड़ा। अक्सर सही और अच्छी चीजों को शुरू में सुगन्धित फूल नहीं बल्कि जहरीली खरपतवार माना गया। सूर्यमण्डल के बारे में कोपरनिकस के सिद्धान्त[1] और डार्विन के विकासवाद के सिद्धान्त[2] को किसी समय गलत मानकर ठुकरा दिया गया था, तथा उन्हें कड़े विरोध का मुकाबला करके ही विजय प्राप्त हुई थी। चीन के इतिहास में भी इस तरह की अनेक मिसालें मौजूद हैं। समाजवादी समाज में पुराने समाज की अपेक्षा नई चीजों के विकास के लिए, बुनियादी रूप से भिन्न और कहीं बेहतर स्थितियां मौजूद रहती हैं। फिर भी अक्सर ऐसा होता है कि नई, उदीयमान शक्तियों और युक्तिसंगत सुझावों को दबा दिया जाता है। नई चीजों के विकास में जानबूझकर दबाव डाले बिना, सिर्फ विवेचन की कमी के कारण भी रुकावट आ सकती है। इसीलिए, कला और विज्ञान के क्षेत्र में सही और गलत के सवाल पर सावधानी का रुख अपनाना, स्वतंत्र वाद-विवाद को प्रोत्साहन देना और जल्दीबाजी से नतीजे निकालने से बचना हमारे लिए जरूरी है। हमारा विचार है कि इस रुख से कला और विज्ञान का अपेक्षाकृत सुगमता से विकास करने में मदद मिलेगी।

मार्क्सवाद का भी संघर्ष के द्वारा ही विकास हुआ है। शुरू में मार्क्सवाद पर भी हर तरह के प्रहार हुए थे और उसे जहरीली खरपतवार समझा जाता था। दुनिया के अनेक हिस्सों में आज भी ऐसी ही हालत है। इसके विपरीत समाजवादी देशों में मार्क्सवाद की स्थिति भिन्न है। लेकिन इन देशों में भी गैर-मार्क्सवादी और मार्क्सवाद-विरोधी विचारधाराएं मौजूद हैं। चीन में, हालांकि मिलकियत की व्यवस्था का समाजवादी रूपान्तर मुख्य रूप से पूरा हो चुका है, और हालांकि जन-समुदाय के बड़े पैमाने के तूफानी वर्ग-संघर्ष, जो पहले के क्रान्तिकारी कालों की विशेषता रहे हैं, मुख्य रूप से समाप्त हो चुके हैं, फिर भी सत्ताच्युत जमींदार वर्ग और दलाल-पूंजीपति वर्ग के अवशेष अब भी मौजूद हैं, पूंजीपति वर्ग अब भी मौजूद है और निम्न-पूंजीपति वर्ग का नव रूपान्तर करना अभी सिर्फ शुरू ही हुआ है। वर्ग-संघर्ष अभी हरगिज समाप्त नहीं हुआ है। सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच का वर्ग-संघर्ष, विभिन्न राजनीतिक शक्तियों के बीच का वर्ग-संघर्ष, तथा विचारधारा के क्षेत्र में सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच का वर्ग-संघर्ष अब भी एक दीर्घकालीन और टेढ़ा-मेढ़ा संघर्ष बना रहेगा, यहां तक कि कभी-कभी वह बहुत तीक्ष्ण भी हो जाएगा। सर्वहारा वर्ग अपने विश्व-दृष्टिकोण के अनुसार, दुनिया को बदलना चाहता है और पूंजीपति वर्ग अपने विश्व-दृष्टिकोण के

अनुसार, इस बारे में, यह सवाल कि अन्त में समाजवाद विजयी होगा या पूंजीवाद, वास्तव में अभी तय नहीं हुआ। मार्क्सवादी लोग अब भी समूची आबादी में अथवा बुद्धिजीवियों में अल्पसंख्या में हैं। इसलिए मार्क्सवाद का अब भी केवल संघर्ष द्वारा ही विकास होगा। मार्क्सवाद का सिर्फ संघर्ष के जरिए ही विकास हो सकता है – यह बात न सिर्फ अतीत काल में सही थी और वर्तमान काल में सही है, बल्कि अनिवार्य रूप से भविष्य में भी सही साबित होगी। जो चीज सही होती है, उसका हमेशा गलत के खिलाफ संघर्ष के दौरान विकास होता है। सत्य, शिव और सुन्दर हमेशा असत्य, अशिव और असुन्दर की तुलना में विद्यमान रहते हैं और इन्हीं के खिलाफ संघर्ष के जरिए विकसित होते हैं। ज्यों ही मानव जाति किसी गलत बात को ठुकरा देती है और किसी सच्चाई को अंगीकार कर लेती है, तो नई सच्चाइयां नई गलतियों से संघर्ष करने लगती हैं। इस तरह के संघर्षों का कभी अन्त नहीं होगा। यह सत्य के विकास का नियम है, और कुदरती तौर पर मार्क्सवाद के विकास का नियम भी यही है।

हमारे देश में समाजवाद और पूंजीवाद के बीच के विचारधारात्मक संघर्ष में कौन जीतेगा, इस मसले को तय करने में काफी लम्बा अरसा लगेगा। कारण यह है कि पूंजीपति वर्ग तथा पुराने समाज से आए हुए बुद्धिजीवियों के प्रभाव का अस्तित्व, उनकी वर्ग-विचारधारा का अस्तित्व, हमारे देश में आगे भी बहुत दिनों तक बना रहेगा। अगर हमने इस बात को पर्याप्त रूप से नहीं समझा या बिलकुल नहीं समझा, तो हमसे अत्यन्त गम्भीर गलतियां होंगी और हम विचारधारा के क्षेत्र में संघर्ष चलाने की आवश्यकता को नजरअन्दाज कर देंगे। विचारधारात्मक संघर्ष का रूप अन्य संघर्षों की तरह नहीं होता। इस संघर्ष में भौंडे ढंग से जोर-जबरदस्ती करने का तरीका नहीं बल्कि केवल प्रयत्नपूर्वक तर्क करने का तरीका अपनाया जाना चाहिए। विचारधारात्मक संघर्ष में आज समाजवाद के लिए अनुकूल परिस्थितियां मौजूद हैं। राज्य की मुख्य सत्ता सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में चलने वाली मेहनतकश जनता के हाथ में है। कम्युनिस्ट पार्टी शक्तिशाली है और उसकी प्रतिष्ठा बहुत ऊंची है। यद्यपि हमारे काम में खामियां और गलतियां हैं, फिर भी हर न्यायप्रिय व्यक्ति यह देख सकता है कि हम जनता के प्रति वफादार हैं और जनता के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर अपनी मातृभूमि का निर्माण करने के लिए संकल्पबद्ध व समर्थ हैं, और हमने महान सफलताएं प्राप्त की हैं तथा भविष्य में हम और भी बड़ी सफलताएं प्राप्त करते रहेंगे। पूंजीपतियों और पुराने समाज से आए बुद्धिजीवियों में एक विशाल बहुसंख्या देशभक्तों की है; वे लोग फलती-फूलती समाजवादी मातृभूमि की सेवा करने के लिए तैयार हैं और यह जानते हैं कि अगर वे समाजवादी कार्य से और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चलने वाली मेहनतकश जनता से मुंह मोड़ लेंगे तो असहाय हो जाएंगे और उनका भविष्य उज्ज्वल नहीं होगा।

लोग शायद पूछें : चूंकि हमारे देश की अधिसंख्य जनता मार्क्सवाद को मार्गदर्शक विचारधारा के रूप में स्वीकार कर चुकी है तो क्या मार्क्सवाद की आलोचना की जा सकती है ? निश्चय ही उसकी आलोचना की जा सकती है। मार्क्सवाद एक वैज्ञानिक सत्य है और वह किसी भी आलोचना से नहीं डरता। अगर वह आलोचना से डर जाता है और तर्क में मात खा जाता है, तो फिर वह निकम्मा साबित हो जाएगा। वास्तव में क्या आदर्शवादी लोग आए दिन हर तरीके से इसकी आलोचना नहीं करते ? और जो लोग पूंजीवादी और निम्न-पूंजीवादी

विचारों से चिपके हुए हैं तथा अपने को बदलना नहीं चाहते, क्या वे भी हर तरह से मार्क्सवाद की आलोचना नहीं करते ? मार्क्सवादियों को किसी की आलोचना से नहीं डरना चाहिए। इसके विपरीत जरूरत इस बात की है कि वे आलोचना और संघर्ष के तूफान में अपने को फौलादी बना लें और विकसित करें तथा नए-नए मोर्चे पर जीत हासिल करते जाएं। गलत विचारों के खिलाफ संघर्ष करना रोग की रोकथाम के लिए टीका लगवाने के समान है। टीके का असर हो जाने के बाद आदमी में रोग का मुकाबला करने की शक्ति बढ़ जाती है। हरारतखानों के अन्दर उगाये गए पौधों में अधिक जीवन-शक्ति नहीं आ सकती। ''सौ फूल खिलने दो और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने दो'' की नीति पर चलने से विचारधारात्मक क्षेत्र में मार्क्सवाद की नायकत्व की स्थिति कमजोर नहीं बल्कि मजबूत होती जाएगी।

गैर-मार्क्सवादी विचारों के प्रति हमारी नीति क्या होनी चाहिए ? जहां तक साबितशुदा प्रतिक्रान्तिकारियों तथा समाजवादी निर्माण में तोड़-फोड़ करने वाले लोगों का सम्बन्ध है, उनका मामला आसान है : उनकी भाषण की स्वतंत्रता छीन लेने से ही काम चल जाएगा। लेकिन जब जनता के बीच फैले हुए गलत विचारों से साबका पड़ता है तो बात बिलकुल भिन्न होती है। तब क्या इस तरह के विचारों पर पाबन्दी लगाने और उन्हें व्यक्त करने का अवसर न देने से काम चल जाएगा ? हरगिज नहीं। जनता के बीच उठने वाले विचारधारात्मक प्रश्नों को, मनुष्य के मानसिक जगत से सम्बन्धित सवालों को तुरत-फुरत ढंग से हल करने के तरीके इस्तेमाल करना न सिर्फ निष्फल सिद्ध होगा बल्कि बहुत ज्यादा हानिकारक भी साबित होगा। आप गलत विचारों को प्रकट करने पर रोक लगा सकते हैं, मगर गलत विचार फिर भी मौजूद रहेंगे। दूसरी ओर, अगर सही विचारों को हरारतखानों में ही बन्द रखकर पाला-पोसा जाएगा तथा तूफानों के सम्पर्क में नहीं आने दिया जाएगा और उनके अन्दर रोगों से लड़ने की शक्ति नहीं पैदा की जाएगी, तो वे गलत विचारों से साबका पड़ने पर विजय प्राप्त नहीं कर सकेंगे। यही कारण है कि बहस, आलोचना और तर्क-वितर्क का तरीका इस्तेमाल करके ही हम वास्तव में सही विचारों को पुष्ट कर सकेंगे, गलत विचारों को दूर कर सकेंगे, और समस्याओं का वास्तव में समाधान कर सकेंगे।

यह अनिवार्य है कि पूंजीपति वर्ग और निम्न-पूंजीपति वर्ग के लोग अपनी विचारधारा को व्यक्त करेंगे। यह भी अनिवार्य है कि वे राजनीतिक और विचारधारात्मक प्रश्नों के बारे में हर सम्भव तरीके से बड़ी हठधर्मी के साथ अपने इरादे जाहिर करते रहेंगे। उनसे ऐसा न करने की आशा हम नहीं कर सकते। उन्हें अपने इरादे जाहिर करने से रोकने के लिए हमें उनके खिलाफ दमन का तरीका इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें अपने इरादे जाहिर करने का मौका देना चाहिए और साथ ही उनसे वाद-विवाद करना चाहिए तथा उनकी समुचित आलोचना करनी चाहिए। निस्सन्देह, हमें हर किस्म के गलत विचारों की आलोचना करनी चाहिए। गलत विचारों की आलोचना न करना गलत विचारों को बेरोक-टोक फैलते देखकर भी चुप रहना और उन्हें अपना प्रभुत्व कायम करने देना, किसी भी सूरत में ठीक नहीं होगा। गलतियों की आलोचना की जानी चाहिए, और जहां भी जहरीली खरपतवार पैदा हो, उसके खिलाफ संघर्ष चलाना चाहिए। लेकिन ऐसी आलोचना कठमुल्लावादी नहीं होनी चाहिए तथा हमें अधिभौतिकवादी पद्धति को नहीं बल्कि द्वन्द्वात्मक पद्धति को इस्तेमाल करने की कोशिश

करनी चाहिए। जरूरत है वैज्ञानिक विश्लेषण की और अकाट्य तर्कों की। कठमुल्लावादी आलोचना से कोई मसला हल नहीं होता। हम हर किस्म की जहरीली खरपतवार के खिलाफ हैं, मगर इस बात का फर्क सावधानी से समझ लेना चाहिए कि कौन सी चीज असली जहरीली खरपतवार है और कौन सी चीज असली सुगन्धित फूल है। इनके बीच सावधानी से कैसे भेद किया जाए, यह हमें जन-समुदाय के साथ मिलकर सीख लेना चाहिए, और उसके साथ मिलकर जहरीली खरपतवार के खिलाफ लड़ने के लिए सही तरीके अपनाने चाहिए।

कठमुल्लावाद की आलोचना करने के साथ-साथ हमें संशोधनवाद की आलोचना करने की तरफ भी ध्यान देना चाहिए। संशोधनवाद या दक्षिणपंथी अवसरवाद एक पूंजीवादी विचारधारात्मक रुझान है जो कठमुल्लावाद से भी ज्यादा खतरनाक है। संशोधनवादी या दक्षिणपंथी अवसरवादी, मार्क्सवाद के प्रति महज जबानी जमा खर्च करते हैं; वे भी ''कठमुल्लावाद'' पर प्रहार करते हैं। लेकिन जिस चीज पर वे वस्तुत: प्रहार करते हैं वह मार्क्सवाद की मूल वस्तु है। वे भौतिकवाद और द्वन्द्ववाद का विरोध करते हैं या उन्हें तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं, जनता के जनवादी अधिनायकत्व और कम्युनिस्ट पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका का विरोध करते हैं या उन्हें कमजोर बनाने की कोशिश करते हैं, तथा समाजवादी रूपान्तर और समाजवादी निर्माण का विरोध करते हैं या उन्हें कमजोर बनाने की कोशिश करते हैं। हमारी समाजवादी क्रान्ति के बुनियादी तौर पर विजयी हो जाने के बाद भी हमारे समाज में कुछ ऐसे लोग मौजूद रहेंगे जो पूंजीवादी व्यवस्था को पुनर्स्थापित करने के सपने देखा करते हैं, तथा हर मोर्चे पर, जिसमें विचारधारात्मक मोर्चा भी शामिल है, मजदूर वर्ग के खिलाफ संघर्ष करते हैं। और इस संघर्ष में संशोधनवादी लोग उनके दाहिने हाथ की भूमिका अदा करते हैं।

शाब्दिक रूप से इन दोनों नारों – सौ फूल खिलने दो और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने दो – का कोई वर्ग-चरित्र नहीं होता; इनका उपयोग जहां सर्वहारा वर्ग कर सकता है वहां पूंजीपति वर्ग और अन्य लोग भी कर सकते हैं। विभिन्न वर्गों, श्रेणियों और सामाजिक ग्रुपों में प्रत्येक के इस सम्बन्ध में अपने अलग-अलग विचार होते हैं कि कौन सी चीज सुगन्धित फूल है और कौन सी जहरीली खरपतवार। तो आज व्यापक जन-समुदाय के दृष्टिकोण से, सुगन्धित फूल और जहरीली खरपतवार के बीच अन्तर करने की कसौटी आखिर क्या होनी चाहिए ? हमारी जनता के राजनीतिक जीवन में यह कैसे तय किया जाए कि किसी की कथनी और करनी में क्या सही है और क्या गलत ? हमारे संविधान के उसूलों, हमारी जनता की भारी बहुसंख्या के संकल्प और हमारे देश की विभिन्न राजनीतिक पार्टियों और ग्रुपों द्वारा विभिन्न अवसरों पर व्यक्त की गई मुश्तरका राजनीतिक धारणाओं के आधार पर, हम यह समझते हैं कि इस बात को तय करने के लिए मोटे तौर पर निम्नोक्त कसौटियां होनी चाहिए :

(1) उनकी कथनी और करनी हमारे देश की विभिन्न राष्ट्रीयताओं की जनता को एकताबद्ध करने में सहायक हो, न कि उसकी पांतों में फूट डालती हो;

(2) वह समाजवादी रूपान्तर और समाजवादी निर्माण के लिए लाभदायक साबित हो, न कि हानिकारक साबित हो;

(3) वह जनता के जनवादी अधिनायकत्व को सुदृढ़ बनाने में सहायक हो, न कि उसकी जड़ काटती हो या उसे कमजोर बनाती हो;

(4) वह जनवादी केन्द्रीयता को सुदृढ़ बनाने में सहायक हो, न कि उसकी जड़ काटती हो या उसे कमजोर बनाती हो;

(5) वह कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व को मजबूत बनाने में सहायक हो, न कि उससे विमुख रहती हो या उसे कमजोर बनाती हो;

(6) वह अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी एकता और दुनिया की शान्तिप्रिय जनता की एकता के लिए लाभदायक साबित हो, न कि हानिकारक साबित हो।

इन छः कसौटियों में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण दो कसौटियां समाजवादी रास्ते और पार्टी के नेतृत्व के बारे में हैं। ये कसौटियां इसलिए बनाई गई हैं ताकि विभिन्न प्रश्नों पर जनता के बीच स्वतंत्र बहस को प्रोत्साहन मिले, न कि उसमें रुकावट पड़े। जो लोग इन कसौटियों से सहमत नहीं हैं, वे अब भी अपने विचार प्रकट कर सकते हैं और अपनी बात के पक्ष में तर्क पेश कर सकते हैं। लेकिन जब जनता की एक विशाल बहुसंख्या को ये स्पष्ट कसौटियां प्राप्त हो जाएंगी, तो आलोचना और आत्म-आलोचना को सही दिशा की तरफ संचालित किया जा सकेगा, तथा यह तय करने के लिए कि लोगों की कथनी और करनी सही है या गलत और वह सुगंधित फूल है या जहरीली खरपतवार, इन कसौटियों को लागू किया जा सकेगा। ये कसौटियां राजनीतिक कसौटियां हैं। स्वाभाविक है कि वैज्ञानिक सिद्धान्तों की सच्चाई का निर्णय करने के लिए या कलाकृतियों का सौन्दर्यात्मक मूल्यांकन करने के लिए, अन्य विषयानुकूल कसौटियों की आवश्यकता होगी, लेकिन ये छः राजनीतिक कसौटियां कला या विज्ञान की तमाम गतिविधियों पर भी लागू होती हैं। हमारे जैसे समाजवादी देश में क्या कोई ऐसी उपयोगी वैज्ञानिक या कलात्मक गतिविधि हो सकती है जो इन राजनीतिक कसौटियों के प्रतिकूल हो ?

ऊपर जो कसौटियां बताई गई हैं वे हमारे देश की विशिष्ट ऐतिहासिक स्थितियों पर आधारित हैं। चूंकि विभिन्न समाजवादी देशों में और विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के सामने भिन्न-भिन्न स्थितियां हैं, इसलिए हम यह नहीं समझते कि उन्हें चीन के ही तरीके अपनाने चाहिए अथवा उनके लिए ये तरीके अपनाना जरूरी है।

"दीर्घकालीन सह-अस्तित्व और पारस्परिक निरीक्षण" का नारा भी हमारे देश की विशिष्ट ऐतिहासिक स्थितियों की ही उपज है। इसे अकस्मात पेश नहीं कर दिया गया, बल्कि यह तो कई वर्षों से आकार ग्रहण कर रहा था। दीर्घकालीन सह-अस्तित्व का विचार एक लम्बे अरसे से चला आ रहा था। लेकिन पिछले साल जब समाजवादी व्यवस्था बुनियादी रूप से कायम हो गई, तो यह नारा स्पष्ट शब्दों में पेश कर दिया गया। पूंजीपति और निम्न-पूंजीपति वर्गों की जनवादी पार्टियों को मजदूर वर्ग की राजनीतिक पार्टी के साथ-साथ लम्बे अरसे तक क्यों बने रहने देना चाहिए ? क्योंकि हमारे सामने इस बात का कोई कारण मौजूद नहीं है कि हम उन सभी जनवादी पार्टियों के प्रति जो समाजवाद के कार्य के लिए जनता को एकताबद्ध करने के काम में सच्चे दिल से लगी हुई हैं और जिन्हें जनता का विश्वास प्राप्त है, दीर्घकालीन सह-अस्तित्व की नीति न अपनाएं। मैंने बहुत पहले, जून 1950 में ही राजनीतिक सलाहकार

सम्मेलन की पहली राष्ट्रीय कमेटी के दूसरे अधिवेशन में इस मामले को इन शब्दों में पेश किया था :

> अगर कोई व्यक्ति सचमुच जनता की सेवा करना चाहता हो, कठिन समय में जनता की सचमुच सहायता कर चुका हो, अच्छे काम कर चुका हो और उन कामों को बीच में छोड़े बगैर लगातार करता रहा हो, तो कोई वजह नहीं कि जनता और जन-सरकार उसे ठुकरा दें या अपनी रोजी कमाने और अपनी सेवाएं देश को अर्पित करने का अवसर प्रदान न करें।

मैंने यहां जो व्याख्या की है, वह विभिन्न पार्टियों के दीर्घकालीन सह-अस्तित्व का राजनीतिक आधार है। कम्युनिस्ट पार्टी की आकांक्षा और नीति यह है कि वह एक लम्बे समय तक जनवादी पार्टियों के साथ बनी रहे। इन जनवादी पार्टियों का अस्तित्व लम्बे समय तक कायम रह सकता है या नहीं, यह सिर्फ कम्युनिस्ट पार्टी की आकांक्षा पर ही नहीं, बल्कि इस बात पर भी निर्भर है कि ये जनवादी पार्टियां खुद कैसे व्यवहार करती हैं और इन पर जनता का विश्वास बना रहता है या नहीं। विभिन्न पार्टियों का पारस्परिक निरीक्षण भी दीर्घकाल से प्रस्थापित एक तथ्य है, इस अर्थ में कि वे एक दूसरे को सलाह देती रही हैं और एक दूसरे की आलोचना करती रही हैं। जाहिर है, पारस्परिक निरीक्षण कोई एकतरफा मामला नहीं; इसका अर्थ यह है कि कम्युनिस्ट पार्टी जनवादी पार्टियों का निरीक्षण कर सकती है और जनवादी पार्टियां कम्युनिस्ट पार्टी का। जनवादी पार्टियों को कम्युनिस्ट पार्टी का निरीक्षण करने की अनुमति क्यों दी जानी चाहिए ? यह इसलिए दी जानी चाहिए क्योंकि एक व्यक्ति की ही तरह एक पार्टी के लिए भी यह अत्यधिक आवश्यक है कि वह अपने से भिन्न रायों को सुने। हम सब जानते हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी पर मुख्यतया मेहनतकश जनता और पार्टी-सदस्यों का निरीक्षण रहता है। लेकिन जनवादी पार्टियों द्वारा किया जाने वाला निरीक्षण हमारे लिए अधिक लाभदायक होगा। बेशक, कम्युनिस्ट पार्टी और जनवादी पार्टियों के बीच आपसी सलाह-मशविरा और आपसी आलोचना किया जाना उनके पारस्परिक निरीक्षण के दौरान सिर्फ तभी सकारात्मक भूमिका अदा कर सकेगा जब वह ऊपर बताई गई छः राजनीतिक कसौटियों के अनुरूप होगा। इसलिए हम आशा करते हैं कि सभी जनवादी पार्टियां विचारधारात्मक नव रूपान्तर की तरफ ध्यान देंगी और कम्युनिस्ट पार्टी के साथ दीर्घकालीन सह-अस्तित्व और पारस्परिक निरीक्षण के लिए प्रयत्नशील रहेंगी, ताकि वे अपने को नए समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल ढाल सकें।

9. थोड़े से लोगों द्वारा किए जाने वाले उपद्रवों के सवाल के बारे में

1956 में थोड़े से मजदूरों और विद्यार्थियों ने इनेगिने स्थानों में हड़तालें की थीं। इन उपद्रवों का फौरी कारण यह था कि किन्हीं भौतिक फायदों से सम्बन्धित उनकी कुछ मांगें पूरी नहीं की जा सकी थीं, जिनमें से कुछ मांगें ऐसी थीं जिन्हें पूरा किया जाना चाहिए था और किया जा

सकता था, तथा कुछ मांगें ऐसी थीं जो अनुचित या हद से ज्यादा थीं और इसलिए कुछ समय तक पूरी नहीं की जा सकती थीं। लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण कारण था नेतृत्व द्वारा नौकरशाही पर अमल किया जाना। कुछ मामलों में, इस प्रकार की नौकरशाही की गलतियों के लिए उच्चतर अधिकारियों को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए और नीचे के अधिकारियों पर ये सब दोष नहीं लगाए जाने चाहिए। इन उपद्रवों का एक और कारण था मजदूरों और विद्यार्थियों के बीच विचारधारात्मक और राजनीतिक शिक्षा की कमी। उसी साल कृषि सहकारी समितियों के कुछ सदस्यों ने भी उपद्रव किए, और इसका मुख्य कारण भी नेतृत्व द्वारा नौकरशाही पर अमल किया जाना और जन-समुदाय में शिक्षा-कार्य की कमी होना ही था।

यह बात माननी पड़ेगी कि जन-समुदाय के बीच कुछ लोगों का ध्यान अक्सर फौरी, आंशिक और व्यक्तिगत हितों पर रहता है तथा वे दीर्घकालीन, राष्ट्रव्यापी और सामूहिक हितों की बात नहीं समझ पाते या पर्याप्त रूप से नहीं समझ पाते। राजनीतिक अनुभव और सामाजिक जीवन के अनुभव की कमी की वजह से नौजवानों की काफी बड़ी संख्या पुराने और नए चीन की तुलना नहीं कर पाती; उनके लिए यह बात पूरी तरह समझ पाना आसान नहीं कि साम्राज्यवादियों और क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों के उत्पीड़न से मुक्ति प्राप्त करने के संघर्ष में हमारे देश की जनता ने कितनी मुसीबतें उठाई हैं, या खुशहाल समाजवादी समाज की स्थापना कर सकने के पहले कितने लम्बे समय तक कठोर परिश्रम करने की आवश्यकता है। यही कारण है कि हमें जन-समुदाय के बीच राजनीतिक शिक्षा का काम बड़े सजीव और पुरअसर तरीके से जारी रखना चाहिए, जो भी कठिनाइयां हमारे सामने आ खड़ी हों उनसे सम्बन्धित तथ्यों से जन-समुदाय को हमेशा परिचित कराते रहना चाहिए, तथा इन कठिनाइयों को दूर करने के उपायों के बारे में जन-समुदाय के साथ विचार-विमर्श करते रहना चाहिए।

उपद्रवों का हम समर्थन नहीं करते, क्योंकि जनता के बीच के अन्तरविरोधों को "एकता – आलोचना – एकता" के फार्मूले के अनुसार हल किया जा सकता है, जबकि उपद्रवों से अनिवार्य रूप से कुछ नुकसान होता है और समाजवादी कार्य की प्रगति में बाधा पड़ती है। हमें विश्वास है कि हमारा व्यापक जन-समुदाय समाजवाद का पक्षपोषण करता है, जागरूक होकर अनुशासन का पालन करता है और तर्कसंगत बातों का अनुमोदन करता है, तथा वह अकारण ही उपद्रव हरगिज नहीं करता। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हमारे देश में आम लोगों द्वारा उपद्रव किए जाने की सम्भावना ही नहीं है। इस प्रश्न के सिलसिले में, हमें इन बातों की तरफ ध्यान देना चाहिए : (1) उपद्रवों के कारण को जड़मूल से खत्म कर देने के लिए हमें नौकरशाही को दृढ़ता से दूर करना चाहिए, विचारधारात्मक और राजनीतिक शिक्षा पर भारी जोर देना चाहिए और सभी अन्तरविरोधों को समुचित ढंग से हल कर लेना चाहिए। अगर ऐसा किया गया, तो आम तौर पर कोई उपद्रव नहीं होगा। (2) अगर उपद्रव हमारे त्रुटिपूर्ण काम के कारण हुए हों, तो हमें ऐसे उपद्रवों में शरीक होने वाले लोगों को सही रास्ते पर लाने के लिए उनका पथ-प्रदर्शन करना चाहिए, इन उपद्रवों को अपने काम में सुधार करने के लिए और अपने कार्यकर्ताओं व जन-समुदाय को शिक्षित करने के लिए विशेष साधन के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए तथा उन समस्याओं को सुलझा लेना चाहिए जो अतीत काल में अनसुलझी ही रह गई हों। किसी भी उपद्रव से निपटने में हमें सावधानी बरतनी चाहिए और

न तो अनाड़ीपन से काम लेना चाहिए और न ही जल्दीबाजी से मसले को समाप्त घोषित कर देना चाहिए। उपद्रव के अगुआओं को तुरत-फुरत ढंग से काम से हटाया या निकाला नहीं जाना चाहिए – सिवाय उन लोगों के जिन्होंने दण्ड-विधान का उल्लंघन किया हो अथवा जो सक्रिय प्रतिक्रान्तिकारी हों, और जिनसे कानून के अनुसार निपटा जाना जरूरी हो। हमारे जैसे विशाल देश में अगर थोड़े से लोग उपद्रव मचाएं भी, तो भी घबड़ाने की कोई बात नहीं है, उलटे, ऐसे उपद्रवों से नौकरशाही को दूर करने में मदद मिलेगी।

हमारे समाज में, चन्द लोग ऐसे भी हैं जो सार्वजनिक हितों की परवाह नहीं करते, मनमाने ढंग से कानून तोड़ते हैं तथा अपराध करते हैं। ऐसे लोग हमारी नीतियों का फायदा उठा सकते हैं, उन्हें तोड़-मरोड़ सकते हैं, जनता को उत्तेजित करने के लिए जानबूझकर अयुक्तिसंगत मांगें पेश कर सकते हैं अथवा समाज की सामान्य व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने के लिए जानबूझकर अफवाहें फैला सकते हैं और गड़बड़ी पैदा कर सकते हैं। हम ऐसे लोगों को खुली छूट देने के पक्ष में नहीं हैं। इसके विपरीत, उनके खिलाफ आवश्यक कानूनी कार्यवाही की जानी चाहिए। व्यापक जन-समुदाय की मांग है कि ऐसे व्यक्तियों को सजा दी जाए। ऐसा न करना जन-समुदाय की इच्छा के प्रतिकूल आचरण करना होगा।

10. क्या बुरी चीजों को अच्छी चीजों में बदला जा सकता है ?

जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं, हमारे समाज में अगर लोग उपद्रव करते हैं तो यह एक बुरी चीज है और हम इसका समर्थन नहीं करते। मगर जब उपद्रव हो जाते हैं, तो वे हमें सबक सीखने, नौकरशाही को दूर करने और कार्यकर्ताओं व जन-समुदाय को शिक्षित करने के लिए मजबूर कर देते हैं। इस अर्थ में, बुरी चीजों को अच्छी चीजों में बदला जा सकता है। इस प्रकार, हर उपद्रव के दो पहलू होते हैं। सभी प्रकार के उपद्रवों को इसी तरह देखा जा सकता है।

यह बात सभी को साफ-साफ मालूम है कि हंगरी की घटना अच्छी चीज नहीं थी। मगर उसके भी दो पहलू थे। चूंकि हमारे हंगेरियन कामरेडों ने इस घटना के दौरान समुचित कार्यवाही की, इसलिए एक बुरी चीज को अन्ततोगत्वा एक अच्छी चीज में बदल दिया गया। हंगरी अब पहले से कहीं अधिक मजबूत हो गया है, और समाजवादी खेमे के अन्य सभी देशों ने भी उससे सबक सीखा है।

इसी प्रकार, विश्वव्यापी कम्युनिस्ट विरोधी और जन-विरोधी मुहिम भी, जिसे 1956 की दूसरी छमाही में छेड़ा गया था, निश्चय ही एक बुरी चीज थी। लेकिन उसने सभी देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों व मजदूर वर्ग को शिक्षित किया और फौलादी बनाया, तथा इस प्रकार वह एक अच्छी चीज बन गई। इस तूफानी दौर में, अनेक देशों में कम्युनिस्ट पार्टियों से काफी सदस्य अलग हो गए। उनके पार्टी से अलग हो जाने के कारण पार्टी-सदस्यों की संख्या कम हो गई और यह निश्चय ही एक बुरी चीज थी। लेकिन इसका एक अच्छा पहलू भी था। चूंकि ऐसे ढुलमुल तत्त्व जो आगे नहीं बढ़ना चाहते थे बाहर चले गए, इसलिए पार्टी के अडिग सदस्यों

की एक विशाल बहुसंख्या संघर्ष के लिए और अधिक एकताबद्ध हो गई। आखिर यह एक अच्छी चीज क्यों नहीं थी ?

संक्षेप में, हमें यह सीख लेना चाहिए कि हम समस्याओं के सभी पहलुओं पर ध्यान दें, उनके सीधे पहलू पर ही नहीं बल्कि उल्टे पहलू पर भी ध्यान दें। किसी विशेष परिस्थिति में एक बुरी चीज के भी अच्छे नतीजे निकल सकते हैं और एक अच्छी चीज के भी बुरे नतीजे निकल सकते हैं। दो हजार वर्ष से भी अधिक समय पहले लाओ च ने कहा था : "दुर्भाग्य में सौभाग्य निहित है, और सौभाग्य में दुर्भाग्य।"[1] जब जापानी चीन में घुस आए, तो उन्होंने इसे अपनी विजय कहा। उन्होंने चीन के विशाल क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया, और चीनियों ने इसे अपनी पराजय कहा। लेकिन चीन की पराजय में उसकी विजय के बीज निहित थे और जापान की विजय में उसकी पराजय के बीज निहित थे। क्या इतिहास ने इसे साबित नहीं कर दिखाया ?

आज सारी दुनिया के लोग यह बहस कर रहे हैं कि तीसरा विश्वयुद्ध छिड़ेगा या नहीं। इस प्रश्न के बारे में भी हमें अपने को मानसिक रूप से तैयार रखना चाहिए और साथ ही कुछ विश्लेषण भी करना चाहिए। हम दृढ़ता के साथ शान्ति का पक्षपोषण करते हैं और युद्ध का विरोध करते हैं। लेकिन अगर साम्राज्यवादी एक और युद्ध छेड़ने पर उतारू हो जाएं, तो हमें डरना नहीं चाहिए। इस प्रश्न के बारे में भी हम वही रुख अपनाते हैं जो किसी उपद्रव के बारे में अपनाते हैं : पहले, हम इसके खिलाफ हैं; दूसरे, हम इससे डरते नहीं। पहले विश्वयुद्ध के बाद 20 करोड़ आबादी वाले सोवियत संघ का जन्म हुआ। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद समाजवादी खेमे का जन्म हुआ, जिसकी कुल आबादी 90 करोड़ है। अगर साम्राज्यवादी तीसरा विश्वयुद्ध छेड़ने पर आमादा रहें, तो यह निश्चित है कि दसियों करोड़ अन्य लोग समाजवाद की ओर आ जाएंगे, और तब साम्राज्यवादियों के लिए दुनिया में ज्यादा जगह नहीं रह जाएगी; इस बात की भी सम्भावना है कि साम्राज्यवाद का समूचा ढांचा पूरी तरह चकनाचूर हो जाए।

विशेष स्थितियों में हर अन्तरविरोध के दो विरोधी पहलू आपसी संघर्ष के फलस्वरूप अनिवार्य रूप से एक दूसरे में बदल जाते हैं। इसमें स्थितियों का भारी महत्त्व होता है। विशेष स्थितियों के बिना, ये दोनों विरोधी पहलू एक दूसरे में नहीं बदल सकते। दुनिया के सभी वर्गों में सर्वहारा वर्ग अपनी हालत बदलने के लिए सर्वाधिक उत्सुक रहता है और उसके बाद अर्ध-सर्वहारा वर्ग आता है, क्योंकि सर्वहारा वर्ग के पास कुछ नहीं होता और अर्ध-सर्वहारा वर्ग की स्थिति भी ज्यादा अच्छी नहीं होती। मौजूदा स्थिति, जिसमें अमरीका संयुक्त राष्ट्र संघ में बहुमत को अपने नियंत्रण में किए हुए है और दुनिया के अनेक भागों पर प्रभुत्व जमाये हुए है, एक अस्थायी स्थिति है जो एक न एक दिन अवश्य बदल जाएगी। एक गरीब देश के रूप में चीन की स्थिति भी, जिसे अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में उसके अधिकारों से वंचित रखा गया है, बदल जाएगी – एक गरीब देश एक समृद्ध देश में बदल जाएगा, एक अधिकार-वंचित राष्ट्र एक अधिकार-सम्पन्न राष्ट्र बन जाएगा – यानी वस्तुओं का अपने विपरीत तत्त्वों में रूपान्तर हो जाएगा। यहां निर्णयात्मक स्थितियां हैं समाजवादी व्यवस्था तथा एकताबद्ध जनता का सम्मिलित प्रयास।

11. किफायत पर अमल के बारे में

यहां मैं किफायत पर अमल के बारे में संक्षेप में कुछ कहना चाहता हूं। हम बड़े पैमाने पर निर्माण-कार्य करना चाहते हैं, लेकिन हमारा देश अब भी बहुत गरीब है – यह एक अन्तरविरोध है। इस अन्तरविरोध को हल करने का एक रास्ता यह है कि हर क्षेत्र में सख्ती से किफायत पर अमल करने के लिए लगातार प्रयत्न किया जाए।

1952 में "तीन बुराई"-विरोधी आन्दोलन के दौरान, हमने भ्रष्टाचार, फिजूलखर्ची और नौकरशाही का विरोध किया और भ्रष्टाचार का विरोध करने पर जोर दिया। 1955 में हमने किफायत पर अमल करने का पक्षपोषण किया, जिसमें हमें काफी सफलता मिली; तब हमने इस बात पर जोर दिया था कि पूंजीगत निर्माण में गैर-उत्पादनशील परियोजनाओं के लिए आवश्यकता से ज्यादा ऊंचे प्रतिमान निर्धारित न किए जायं और औद्योगिक उत्पादन में कच्चे माल के उपयोग में किफायत से काम लिया जाय। लेकिन उस समय किफायत को मार्गदर्शक उसूल मानकर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओं में या आम सरकारी दफ्तरों, फौजी यूनिटों, विद्यालयों और जन-संगठनों में उस पर संजीदगी से अमल नहीं किया गया। इस वर्ष हम देशभर में, हर क्षेत्र में किफायत करने और फिजूलखर्ची को दूर करने का आवाहन कर रहे हैं। निर्माण-कार्य के बारे में अब भी हमारे अन्दर अनुभव की कमी है। पिछले कुछ वर्षों में बड़ी-बड़ी सफलताएं प्राप्त की गईं, लेकिन साथ ही फिजूलखर्ची भी हुई। हमें अपने उद्योगों के मुख्य आधार-स्तम्भ के रूप में कदम-ब-कदम बड़े आकार के अनेक आधुनिक कारोबार कायम करने हैं; इस मुख्य आधार-स्तम्भ के बिना हम अपने देश को कुछ ही दशाब्दियों के अन्दर एक शक्तिशाली आधुनिक औद्योगिक देश नहीं बना सकेंगे। लेकिन हमारे अधिकांश कारोबारों का आकार इतना बड़ा नहीं होना चाहिए; हमें छोटे और मझोले कारोबारों की स्थापना ज्यादा संख्या में करनी चाहिए और पुराने समाज से चले आए उद्योगों का पूर्ण उपयोग करना चाहिए, ताकि अधिक से अधिक किफायत हो सके और थोड़े धन से अधिक काम किया जा सके। नवम्बर 1956 में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन में किफायत पर सख्ती से अमल करने और फिजूलखर्ची का विरोध करने के उसूल पर और अधिक जोर दिए जाने के बाद से कुछ ही महीनों में अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं। मौजूदा किफायत आन्दोलन को सर्वांगीण रूप से निरन्तर जारी रखना चाहिए। खामियों और गलतियों की आलोचना की ही तरह फिजूलखर्ची का विरोध करना भी दरअसल अपना मुंह धोने के समान है। क्या लोग प्रतिदिन अपना मुंह नहीं धोते ? चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को, जनवादी पार्टियों, गण्यमान्य गैर-पार्टी जनवादी व्यक्तियों, बुद्धिजीवियों, उद्योगपतियों व व्यापारियों, मजदूरों, किसानों व दस्तकारों को – संक्षेप में हमारे देश के 60 करोड़ लोगों को – उत्पादन बढ़ाने व किफायत करने, तथा शाहखर्ची व फिजूलखर्ची का विरोध करने का प्रयत्न करना चाहिए। यह न सिर्फ आर्थिक दृष्टि से बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी भारी महत्त्व की बात है। हमारे अनेक कार्यकर्ताओं में इधर एक खतरनाक प्रवृत्ति दिखाई देने लगी है -- आम जनता के सुख-दुख में साथ देने के प्रति उदासीन रहना तथा व्यक्तिगत मशहूरी और व्यक्तिगत लाभ के बारे में सोचते रहना। यह बहुत बुरी बात है। इस प्रवृत्ति को दूर करने का एक उपाय यह

है कि हम उत्पादन बढ़ाने और किफायत करने के आन्दोलन के दौरान अपने संगठनों को चुस्त-दुरुस्त बना लें, और कार्यकर्ताओं को नीचे के संगठनों में भेज दें, ताकि उनकी काफी संख्या फिर से उत्पादन-कार्य में लौट जाय। हमें इस बात पर जोर देना चाहिए कि हमारे सभी कार्यकर्ताओं और हमारी समूची जनता को यह बात लगातार याद रहे कि हमारा देश एक विशाल समाजवादी देश होने के साथ-साथ आर्थिक दृष्टि से एक पिछड़ा हुआ और गरीब देश भी है, तथा यह एक बहुत बड़ा अन्तरविरोध है। चीन को समृद्ध और शक्तिशाली बनाने के लिए हमें अनेक दशाब्दियों तक कठोर संघर्ष करना होगा, जिसमें अन्य बातों के अलावा यह भी शामिल है कि हम सख्त किफायत करने और फिजूलखर्ची से जूझने का प्रयत्न करें, यानी परिश्रम और मितव्ययिता से अपने देश का निर्माण करने की नीति लागू करें।

12. चीन के औद्योगीकरण का रास्ता

औद्योगीकरण के रास्ते की चर्चा करते समय, हम यहां मुख्यतया भारी उद्योग, हल्के उद्योग और कृषि के विकास के बीच के सम्बन्धों के बारे में कहना चाहते हैं। इस बात की पुष्टि की जानी चाहिए कि भारी उद्योग चीन के आर्थिक निर्माण का केन्द्रबिन्दु है। लेकिन साथ ही, कृषि और हल्के उद्योग के विकास की ओर भी पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिए।

चूंकि चीन एक ऐसा विशाल कृषि-प्रधान देश है जिसकी 80 फीसदी से अधिक आबादी देहातों में रहती है, इसलिए उसके उद्योग और कृषि का एक साथ विकास किया जाना जरूरी है। सिर्फ तभी हमारे उद्योग के लिए कच्चा माल और बाजार उपलब्ध हो सकेगा तथा एक शक्तिशाली भारी उद्योग का निर्माण करने के लिए और अधिक धन संचित करना सम्भव हो सकेगा। यह बात सभी लोग जानते हैं कि हल्के उद्योग का कृषि से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। कृषि के बिना कोई भी हल्का उद्योग कायम नहीं हो सकता। लेकिन इस बात को उतने स्पष्ट रूप से नहीं समझा गया है कि कृषि भारी उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण बाजार उपलब्ध कराती है। मगर, जैसे-जैसे कृषि का कदम-ब-कदम तकनीकी रूपान्तर और आधुनिकीकरण होता जाएगा तथा कृषि के लिए मशीनों, रासायनिक खादों, जल-संरक्षण परियोजनाओं व बिजली-परियोजनाओं और यातायात की सुविधाओं की मांग तथा साथ ही ग्रामीण उपभोक्ताओं के लिए ईंधन व इमारती सामग्री की मांग अधिकाधिक बढ़ती जाएगी, वैसे-वैसे लोग इस बात को ज्यादा आसानी से समझते जाएंगे। अगर हम दूसरी और तीसरी पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान कृषि का और अधिक विकास कर सकेंगे और इसके परिणामस्वरूप हल्के उद्योग के क्षेत्र में भी तदनुरूप अधिक प्रगति कर सकेंगे, तो हमारी समूची राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को लाभ पहुंचेगा। कृषि और हल्के उद्योग के विकास से भारी उद्योग के लिए बाजार और धन मिलने की गारण्टी हो जाएगी तथा वह और भी ज्यादा तेज रफ्तार से आगे बढ़ेगा। इस प्रकार औद्योगीकरण की गति यद्यपि धीमी मालूम पड़ती है, मगर वास्तव में वह धीमी नहीं है, और दरअसल उसकी गति ज्यादा तेज भी हो सकती है। तीन पंचवर्षीय योजनाओं के बाद या शायद उससे कुछ अधिक समय में, चीन का वार्षिक इस्पात उत्पादन, मुक्ति से पहले के सर्वाधिक उत्पादन वाले वर्ष

यानी 1943 के उत्पादन की तुलना में कोई 9,00,000 टन से बढ़कर 2,00,00,000 टन या इससे भी अधिक हो जाएगा। इससे शहरों और गांवों दोनों जगह के लोग प्रसन्न होंगे।

आर्थिक प्रश्नों के बारे में आज मैं ज्यादा नहीं कहना चाहता। केवल सात वर्ष तक आर्थिक निर्माण-कार्य करने के कारण हमारे पास अब भी अनुभव की कमी है तथा और अधिक अनुभव संचित करने की जरूरत है। क्रान्ति शुरू करते समय भी हमें कोई अनुभव नहीं था और कई ठोकरें खाने और सबक सीखने के बाद ही हमने राष्ट्रव्यापी विजय प्राप्त की। आज हमारी मांग यह है कि जितना समय हमने क्रान्ति का अनुभव प्राप्त करने में लिया था, आर्थिक निर्माण का अनुभव प्राप्त करने में उसके मुकाबले कम समय लें तथा उसे प्राप्त करने के लिए उतनी ज्यादा ऊंची कीमत भी न चुकाएं। हमें कुछ न कुछ कीमत तो चुकानी ही पड़ेगी, लेकिन मुझे आशा है कि यह उतनी ज्यादा ऊंची नहीं होगी जितनी कि क्रान्तिकारी काल में चुकाई गई थी। हमें यह समझ लेना चाहिए कि इस मामले में एक अन्तरविरोध – समाजवादी समाज की अर्थव्यवस्था के विकास के वस्तुगत नियमों तथा उनके बारे में हमारी मनोगत समझदारी के बीच का अन्तरविरोध – मौजूद है, जिसे अमल के दौरान हल करना होगा। यह अन्तरविरोध भी अलग-अलग व्यक्तियों के बीच के अन्तरविरोध के रूप में, यानी वस्तुगत नियमों की अपेक्षाकृत सही समझ रखने वाले लोगों तथा अपेक्षाकृत गलत समझ रखने वाले लोगों के बीच के अन्तरविरोध के रूप में अभिव्यक्त होगा, और इसलिए यह अन्तरविरोध भी जनता के बीच का ही अन्तरविरोध है। हर अन्तरविरोध एक वस्तुगत यथार्थ होता है और हमारा कर्तव्य है कि हम उसे यथासम्भव सही ढंग से समझें और हल करें।

अपने देश को एक औद्योगिक देश में बदलने के लिए, हमें सोवियत संघ के समुन्नत अनुभवों से संजीदगी के साथ सीखना चाहिए। सोवियत संघ पिछले 40 वर्षों से समाजवाद का निर्माण कर रहा है और उसके अनुभव हमारे लिए बहुत मूल्यवान हैं। जरा सोचिए तो, आखिर हमारे लिए इतने महत्वपूर्ण कारखानों के डिजाइन किसने बनाए हैं, उनका साज-सामान किसने दिया है ? क्या यह अमरीका है ? या बरतानिया है ? नहीं, इनमें से कोई भी नहीं है। सिर्फ सोवियत संघ ही ऐसा करने को तैयार हुआ क्योंकि वह एक समाजवादी देश है और हमारा संश्रयकारी भी है। सोवियत संघ के अलावा, पूर्वी योरप के बिरादराना देशों ने भी हमें कुछ सहायता दी है। इसके बारे में वाद-विवाद की कोई गुंजाइश नहीं है कि हमें सभी देशों के, चाहे वे समाजवादी देश हों या पूंजीवादी, श्रेष्ठ अनुभवों से सीखना चाहिए। लेकिन फिर भी मुख्य बात यह है कि हम सोवियत संघ से सीखें। दूसरों से सीखने के बारे में दो अलग-अलग रुख हैं। एक तो कठमुल्लावादी रुख है : यानी हर चीज को, चाहे वह हमारे देश की परिस्थितियों के अनुरूप हो या न हो, ज्यों का त्यों अपना लेना। यह ठीक नहीं है। दूसरा रुख यह है कि हम अपने दिमाग को इस्तेमाल करें और सिर्फ उन्हीं चीजों को सीखें जो हमारे देश की परिस्थितियों के अनुकूल हों, यानी केवल उन्हीं अनुभवों को ग्रहण करें जो हमारे लिए उपयोगी हों। हमें ऐसा ही रुख अपनाना चाहिए।

सोवियत संघ के साथ अपनी एकता को मजबूत बनाना, सभी समाजवादी देशों के साथ अपनी एकता को मजबूत बनाना -- यह हमारी बुनियादी नीति है, इसी में हमारा बुनियादी हित निहित है। इसके अलावा एशियाई और अफ्रीकी देश भी हैं और सभी शान्तिप्रेमी देश और

जनगण भी हैं – हमें उनके साथ अपनी एकता को मजबूत बनाना चाहिए और उसका विकास करना चाहिए। इन दोनों शक्तियों के साथ एकता कायम करने के बाद हम अकेले नहीं रह जाएंगे। जहां तक साम्राज्यवादी देशों का सवाल है, हमें उनकी जनता के साथ भी एकता कायम करनी चाहिए और उन देशों के साथ शान्तिपूर्ण सहजीवन पर अमल करना चाहिए, उनके साथ व्यापार करने की कोशिश करनी चाहिए तथा सम्भावित युद्ध को रोकने का प्रयास करना चाहिए, लेकिन किसी भी परिस्थिति में हमें इन देशों के बारे में कोई भी ऐसी धारणा नहीं रखनी चाहिए जो वास्तविकता पर आधारित न हो।

नोट

[1] कोपरनिकस (1473-1543) पोलैण्ड के मशहूर नक्षत्र-वैज्ञानिक थे, जिन्होंने 'द रिवोल्यूश्योनीबस' नामक अपनी रचना में यह साबित किया था कि पृथ्वी अपनी धुरी पर परिक्रमा करती रहती है और अन्य ग्रहों के साथ सूर्य के चारों ओर घूमती रहती है। उनकी इस प्रस्थापना ने दो हजार वर्ष से चली आई इस भ्रान्त धारणा का खण्डन कर दिया कि पृथ्वी स्थिर रहती है।

[2] डार्विन (1809-82) बरतानिया के मशहूर जीव-वैज्ञानिक थे, जिन्होंने 'जीव-जातियों की उत्पत्ति' (ओरिजिन ऑफ स्पीशिज) और अन्य रचनाओं में विकासवाद के सिद्धान्त की स्थापना की थी, तथा जीव-जन्तुओं के उद्भव, परिवर्तन व विकास के नियम की खोज की थी।

[3] देखिए 'लाओ च', अध्याय 58 ।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रचार-कार्य सम्बन्धी राष्ट्रीय सम्मेलन में भाषण

12 मार्च 1957

साथियो ! हमारा यह सम्मेलन बहुत अच्छी तरह चला है। सम्मेलन के दौरान बहुत से सवाल उठाए गए हैं और हमें बहुत सी बातों की जानकारी हासिल हुई है। अब मैं उन सवालों के बारे में चन्द बातें कहना चाहता हूं जिन पर हमारे साथी विचार-विनिमय कर रहे हैं।

हम एक ऐसे युग में रहते हैं जिसमें भारी सामाजिक परिवर्तन हो रहे हैं। चीनी समाज काफी लम्बे समय से भारी परिवर्तनों से गुजर रहा है। भारी परिवर्तनों का एक काल जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध का काल था और दूसरा मुक्ति युद्ध का काल। लेकिन वर्तमान परिवर्तनों का स्वरूप पिछले परिवर्तनों के मुकाबले कहीं अधिक गहन है। अब हम समाजवाद का निर्माण कर रहे हैं। दसियों करोड़ जनता समाजवादी रूपान्तर के आन्दोलन में भाग ले रही है। देशभर में विभिन्न वर्गों के आपसी सम्बन्धों में तब्दीली आती जा रही है। कृषि व दस्तकारी के क्षेत्र में निम्न-पूंजीपति वर्ग के अन्दर और उद्योग व वाणिज्य के क्षेत्र में पूंजीपति वर्ग के अन्दर परिवर्तन हुआ है। सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था बदल गई है; व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था का सामूहिक अर्थव्यवस्था में रूपान्तर कर दिया गया है, तथा पूंजीवादी निजी मिलकियत का समाजवादी सार्वजनिक मिलकियत में रूपान्तर किया जा रहा है। इतने भारी परिवर्तन निस्सन्देह लोगों के मस्तिष्क पर भी प्रतिबिम्बित होते हैं। मनुष्य का सामाजिक अस्तित्व ही उसकी चेतना का निर्णय करता है। हमारी समाज-व्यवस्था के ये भारी परिवर्तन विभिन्न वर्गों, श्रेणियों, और सामाजिक ग्रुपों के लोगों के मस्तिष्क पर अलग-अलग रूपों में प्रतिबिम्बित होते हैं। व्यापक जन-समुदाय उनका हार्दिक समर्थन करता है, क्योंकि वास्तविक जीवन इस बात की पुष्टि कर चुका है कि चीन के लिए समाजवाद का रास्ता ही एकमात्र रास्ता है। पुरानी समाज-व्यवस्था को उखाड़ फेंकना और एक नई समाज-व्यवस्था को, समाजवादी व्यवस्था को, कायम करना एक महान संघर्ष है, समाज-व्यवस्था में और मनुष्यों के आपसी सम्बन्धों में एक महान परिवर्तन है। यह कहा जा सकता है कि परिस्थिति बुनियादी तौर पर अच्छी है। लेकिन नई समाज-व्यवस्था की अभी केवल स्थापना ही हुई है और उसके सुदृढ़ होने में अभी समय लगेगा। यह नहीं समझना चाहिए कि नई समाज-व्यवस्था की स्थापना होते ही वह पूर्ण रूप से सुदृढ़ बन गई है; यह असम्भव है। उसे कदम-ब-कदम ही सुदृढ़ बनाना होगा। उसे अन्तिम रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए, न केवल देश का समाजवादी औद्योगीकरण पूरा करना और आर्थिक मोर्चे पर समाजवादी क्रान्ति को चलाते रहना जरूरी है, बल्कि राजनीतिक और विचारधारात्मक मोर्चों पर भी निरन्तर कठोर समाजवादी क्रान्तिकारी संघर्ष और समाजवादी

शिक्षा का कार्य चलाते रहना जरूरी है। यही नहीं, सहायक भूमिका अदा करने वाली अनेक अन्तर्राष्ट्रीय स्थितियों का होना भी उसके लिए जरूरी है। चीन में समाजवादी व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए, इस बात का निर्णय करने के लिए कि अन्तिम विजय समाजवाद की होगी या पूंजीवाद की, अब भी एक लम्बे ऐतिहासिक काल तक संघर्ष करना होगा। लेकिन यह बात हम सबको समझ लेनी चाहिए कि इस नई समाजवादी व्यवस्था को निश्चित रूप से सुदृढ़ बनाया जाएगा। आधुनिक उद्योग, आधुनिक कृषि तथा आधुनिक विज्ञान व संस्कृति वाले एक समाजवादी राज्य का निर्माण हम अवश्य कर सकते हैं। यह पहली बात है जिसे मैं बताना चाहता हूं।

दूसरी बात हमारे देश के बुद्धिजीवियों की स्थिति के बारे में है। चीन में बुद्धिजीवियों की संख्या आखिर कितनी है, इसके बारे में सही-सही आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। कुछ लोगों का अनुमान है कि सभी तरह के बुद्धिजीवियों की कुल तादाद लगभग 50 लाख है, जिनमें ऊंचे दर्जे के और साधारण दर्जे के बुद्धिजीवी शामिल हैं। इन 50 लाख बुद्धिजीवियों में भारी बहुसंख्या ऐसे लोगों की है जो देशभक्त हैं, जो हमारे लोक गणराज्य को प्यार करते हैं तथा जनता और समाजवादी राज्य की सेवा करना चाहते हैं। उनमें केवल थोड़े से लोग ऐसे हैं जिन्हें समाजवादी व्यवस्था उतनी पसन्द नहीं है और जो ज्यादा खुश नहीं हैं। वे अब भी समाजवाद को सन्देह की नजर से देखते हैं, लेकिन साम्राज्यवाद का मुकाबला करते समय वे भी देशभक्तिपूर्ण रुख अपनाते हैं। ऐसे बुद्धिजीवियों की संख्या बहुत थोड़ी है जो राज्य के प्रति शत्रुता की भावना रखते हैं। वे हमारे सर्वहारा अधिनायकत्व वाले राज्य को पसन्द नहीं करते, और पुराने समाज के लिए लालायित रहते हैं। ऐसे लोग कोई भी मौका हाथ आने पर गड़बड़ी पैदा करने से नहीं चूकेंगे तथा कम्युनिस्ट पार्टी को उखाड़ फेंकने और पुराने चीन की पुनर्स्थापना करने की कोशिश करेंगे। सर्वहारा कार्यदिशा और पूंजीवादी कार्यदिशा में से, समाजवादी कार्यदिशा और पूंजीवादी कार्यदिशा में से, ये लोग बाद वाली कार्यदिशा का अनुसरण करने पर आमादा रहते हैं। किन्तु वास्तव में इस कार्यदिशा पर चलना व्यवहार्य नहीं है, और इसलिए ये लोग वास्तव में साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही पूंजीवाद के सामने आत्मसमर्पण करने के लिए तैयार रहते हैं। ऐसे लोग राजनीतिक क्षेत्र में, तथा उद्योग व वाणिज्य के क्षेत्र में, संस्कृति व शिक्षा के क्षेत्र में, विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में और धार्मिक क्षेत्र में मौजूद हैं, तथा वे अत्यन्त प्रतिक्रियावादी हैं। उनकी तादाद 50 लाख बुद्धिजीवियों में सिर्फ एक या दो अथवा तीन प्रतिशत है। बुद्धिजीवियों की भारी बहुसंख्या, यानी 50 लाख लोगों में 90 प्रतिशत से ज्यादा बुद्धिजीवी, अलग-अलग मात्रा में समाजवादी व्यवस्था का समर्थन करते हैं। उनमें बहुत से लोग अभी तक यह बात साफ-साफ नहीं समझ पाए कि समाजवादी व्यवस्था के अन्तर्गत काम कैसे किया जाना चाहिए तथा बहुत-सी नई समस्याओं को कैसे समझना चाहिए, उनसे कैसे निपटना चाहिए और उन्हें कैसे हल करना चाहिए।

जहां तक मार्क्सवाद के प्रति इन 50 लाख बुद्धिजीवियों के रुख का सवाल है, इसके बारे में यह कहा जा सकता है कि उनमें 10 प्रतिशत से ज्यादा लोग, जिनमें कम्युनिस्ट और पार्टी के हमदर्द शामिल हैं, मार्क्सवाद से अपेक्षाकृत रूप से परिचित हैं और सुदृढ़ रुख – सर्वहारा वर्ग का रुख – अपनाते हैं। कुल 50 लाख बुद्धिजीवियों में ऐसे लोग अल्पसंख्या में

हैं, लेकिन वे केन्द्र-बिन्दु हैं और एक जोरदार शक्ति हैं। ऐसे बुद्धिजीवी बहुसंख्या में हैं, जिनके अन्दर मार्क्सवाद का अध्ययन करने की आकांक्षा मौजूद है और जो उसे थोड़ा बहुत सीख भी चुके हैं लेकिन अभी उससे अच्छी तरह परिचित नहीं हो पाए। उनमें कुछ लोगों के मन में अभी शंकाएं मौजूद हैं, उनका रुख अभी सुदृढ़ नहीं बन पाया और नाजुक घड़ी आने पर वे डांवाडोल होने लगते हैं। इस श्रेणी के बुद्धिजीवी, जो 50 लाख बुद्धिजीवियों में बहुसंख्या में हैं, अब भी बीच की स्थिति में हैं। जो बुद्धिजीवी मार्क्सवाद का कड़ा विरोध करते हैं अथवा उसके प्रति शत्रुता का रुख अपनाते हैं, उनकी तादाद बहुत कम है। कुछ बुद्धिजीवी वास्तव में मार्क्सवाद से सहमत नहीं हैं, हालांकि वे खुलेआम ऐसा नहीं कहते। इस प्रकार के बुद्धिजीवी भविष्य में काफी लम्बे समय तक मौजूद रहेंगे, तथा हमें उनको भिन्न मत रखने की इजाजत दे देनी चाहिए। मिसाल के लिए कुछ आदर्शवादियों को ही लीजिए। ऐसे लोग समाजवाद की राजनीतिक व आर्थिक व्यवस्था का समर्थन कर सकते हैं, लेकिन वे मार्क्सवादी विश्व-दृष्टिकोण को नहीं मानते। यही बात धार्मिक क्षेत्र के देशभक्त व्यक्तियों पर भी लागू होती है। वे लोग आस्तिक हैं, जबकि हम लोग नास्तिक हैं। हम उन्हें मार्क्सवादी विश्व-दृष्टिकोण अपनाने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। संक्षेप में, 50 लाख बुद्धिजीवियों द्वारा मार्क्सवाद के प्रति अपनाए जाने वाले रुख का सारांश इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है : जो बुद्धिजीवी मार्क्सवाद का समर्थन करते हैं और उससे अपेक्षाकृत रूप से परिचित हैं, वे अल्पसंख्या में हैं; जो बुद्धिजीवी मार्क्सवाद का विरोध करते हैं वे भी अल्पसंख्या में हैं; जो बुद्धिजीवी मार्क्सवाद का समर्थन तो करते हैं लेकिन उससे परिचित नहीं हैं वे बहुसंख्या में हैं, तथा वे लोग उसका अलग-अलग मात्रा में समर्थन करते हैं। यहां तीन अलग-अलग किस्म के रुख अपनाए जाते हैं – सुदृढ़, ढुलमुल और शत्रुतापूर्ण। और हमें यह मानकर चलना चाहिए कि यह स्थिति एक लम्बे समय तक जारी रहेगी। अगर हम इस तथ्य को नहीं समझ पाए, तो दूसरों से तो हद से ज्यादा बड़ी मांग करने लगेंगे और खुद अपने लिए बहुत छोटा कार्य निर्धारित कर लेंगे। प्रचार-कार्य करने वाले हमारे साथियों के सामने मार्क्सवाद का प्रचार-प्रसार करने का कार्य मौजूद है। इसे कदम-ब-कदम करना होगा और अच्छी तरह करना होगा, ताकि लोग इसे स्वेच्छापूर्वक स्वीकार कर लें। लोगों को मार्क्सवाद स्वीकार करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता, उन्हें केवल समझाया-बुझाया जा सकता है। अगर कुछ पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में हमारे बुद्धिजीवियों की एक अपेक्षाकृत बड़ी संख्या मार्क्सवाद को स्वीकार कर ले तथा अपने कार्य व जीवन के व्यवहार के जरिए, वर्ग-संघर्ष, उत्पादन-कार्य और वैज्ञानिक गतिविधि के व्यवहार के जरिए, मार्क्सवाद को अपेक्षाकृत अच्छी तरह आत्मसात कर ले, तो बड़ा अच्छा होगा। और हमें उम्मीद है कि ठीक ऐसा ही होगा।

तीसरी बात बुद्धिजीवियों के नव रूपान्तर के बारे में है। हमारा देश सांस्कृतिक दृष्टि से एक अविकसित देश है। हमारे जैसे विशाल देश के लिए 50 लाख बुद्धिजीवी बहुत कम हैं। बुद्धिजीवियों के बिना हमारा काम अच्छी तरह नहीं चल सकता, इसलिए हमें उनके साथ एकता कायम करने का कार्य अच्छी तरह करना चाहिए। समाजवादी समाज में मुख्य रूप से तीन प्रकार के लोग होते हैं – मजदूर, किसान और बुद्धिजीवी। बुद्धिजीवी लोग बौद्धिक श्रम करते हैं। उनका कार्य जनता की सेवा के लिए है, यानी मजदूरों व किसानों की सेवा के

लिए है। जहां तक बुद्धिजीवियों की बहुसंख्या का सवाल है, वे लोग नए चीन की सेवा कर सकते हैं, जैसे वे पुराने चीन की सेवा कर सकते थे, सर्वहारा वर्ग की सेवा कर सकते हैं, जैसे वे पूंजीपति वर्ग की सेवा कर सकते थे। जब बुद्धिजीवी पुराने चीन की सेवा करते थे, तो उनमें से वामपक्ष के लोग प्रतिरोध करते थे, मध्यवर्ती लोग डांवाडोल होते थे तथा केवल दक्षिणपक्ष के लोग सुदृढ़ रहते थे। आज जबकि नए समाज की सेवा करने का मौका आया है, तो स्थिति बिलकुल उलटी है। वामपक्ष के लोग दृढ़ रहते हैं, मध्यवर्ती लोग डांवाडोल होते हैं (उनका नए समाज में डांवाडोल होना पुराने समाज में डांवाडोल होने के मुकाबले भिन्न प्रकार का है), तथा दक्षिणपक्ष के लोग प्रतिरोध करते हैं। यही नहीं, बुद्धिजीवी शिक्षा देने का कार्य भी करते हैं। हमारे समाचारपत्र रोजाना जनता को शिक्षित करते हैं। हमारे साहित्यकार व कलाकार, वैज्ञानिक व तकनीशियन, प्रोफेसर व अध्यापक, ये सभी विद्यार्थियों को शिक्षित करते हैं, जनता को शिक्षित करते हैं। शिक्षक और अध्यापक होने के नाते उनका यह कर्तव्य है कि सबसे पहले खुद शिक्षित हो जाएं। वर्तमान काल में, जबकि समाज-व्यवस्था में भारी परिवर्तन हो रहा है, यह बात और भी अधिक लागू होती है। पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने थोड़ी मार्क्सवादी शिक्षा प्राप्त की है, तथा उनमें से कुछ लोगों ने परिश्रमपूर्वक अध्ययन किया है और भारी प्रगति की है। लेकिन बहुसंख्यक बुद्धिजीवियों को पूंजीवादी विश्व-दृष्टिकोण की जगह पूर्णतया सर्वहारा विश्व-दृष्टिकोण कायम करने में काफी लम्बा रास्ता तय करना पड़ेगा। कुछ लोगों ने चन्द मार्क्सवादी किताबें पढ़ डाली हैं और वे अपने को काफी विद्वान समझने लगे हैं; लेकिन जो कुछ उन्होंने पढ़ा है वह उनके दिमाग में घुसा ही नहीं, जड़ ही नहीं जमा पाया, और इसकी वजह से उन्हें इसका इस्तेमाल करना नहीं आता तथा उनकी वर्ग-भावना पहले की ही तरह बनी रहती है। कुछ अन्य लोग घमण्ड में चूर हो जाते हैं और थोड़ा-सा किताबी ज्ञान प्राप्त करके ही अपने को धुरंधर विद्वान समझने लगते हैं और बड़ी-बड़ी डींगें हांकने लगते हैं; लेकिन जब भी कोई तूफान आता है, तो वे मजदूरों और बहुसंख्यक मेहनतकश किसानों के रुख से बिलकुल भिन्न रुख अपना लेते हैं। ऐसे लोग ढुलमुलपन दिखाते हैं जबकि मजदूर-किसान मजबूती से खड़े रहते हैं, ऐसे लोग गोलमोल बात करते हैं जबकि मजदूर-किसान साफ-साफ दो टूक बात करते हैं। इसलिए यह सोचना गलत है कि जो लोग दूसरों को शिक्षित करते हैं उन्हें खुद को शिक्षित करने और खुद अध्ययन करने की कोई जरूरत नहीं होती, अथवा यह कि समाजवादी नव रूपान्तर का मतलब है केवल दूसरे लोगों – जमींदारों, पूंजीपतियों और व्यक्तिगत उत्पादकों – का नव रूपान्तर करना, बुद्धिजीवियों का नहीं। बुद्धिजीवियों को भी नव रूपान्तर की जरूरत होती है, न सिर्फ उन बुद्धिजीवियों को जिन्होंने अभी अपना बुनियादी रुख नहीं बदला बल्कि हर आदमी को अध्ययन करना चाहिए और अपना नव रूपान्तर करना चाहिए। मैंने ''हर आदमी'' शब्द का इस्तेमाल किया है, जिसमें यहां उपस्थित हम सभी लोग हैं। स्थितियां निरन्तर बदलती रहती हैं, तथा अपने विचारों को नई स्थितियों के अनुरूप ढालने के लिए अध्ययन करना आवश्यक है। जो लोग मार्क्सवाद को अपेक्षाकृत अच्छी तरह आत्मसात कर चुके हैं तथा जिनका सर्वहारा रुख अपेक्षाकृत अधिक मजबूत है, उन्हें भी अपना अध्ययन लगातार जारी रखना होगा, नई-नई बातों को आत्मसात करना होगा तथा नई-नई समस्याओं का अध्ययन करना होगा। बुद्धिजीवी लोग जब तक अपने दिमाग से उन

तमाम बातों को बाहर नहीं निकाल देते जो अयुक्तिसंगत हैं, तब तक वे दूसरों को शिक्षित करने के कार्य नहीं कर सकते। स्वाभाविक है कि हमें दूसरों को शिक्षित करने के साथ साथ खुद भी सीखना होगा तथा शिक्षक का कार्य करने के साथ-साथ खुद शिष्य भी बन जाना होगा। एक अच्छा शिक्षक बनने के लिए पहले हमें एक अच्छा शिष्य बनना होगा। बहुत सी चीजें ऐसी हैं जिन्हें सिर्फ किताबों से ही नहीं सीखा जा सकता; हमें उत्पादन-कार्य में जुटे हुए लोगों से सीखना चाहिए, मजदूरों से और किसानों से सीखना चाहिए, तथा विद्यालयों में विद्यार्थियों से, उन लोगों से जिन्हें हम पढ़ाते हैं, सीखना चाहिए। मेरा विचार है कि हमारे बुद्धिजीवियों में बहुसंख्या ऐसे लोगों की है जो सीखने की इच्छा रखते हैं। हमारा फर्ज है कि उनकी अध्ययन की इच्छा के अनुरूप बड़ी गरमजोशी के साथ उनकी मदद करें; हमें समुचित ढंग से उनकी मदद करनी चाहिए तथा जोर-जबरदस्ती का तरीका अपनाकर उन्हें अध्ययन के लिए मजबूर नहीं करना चाहिए।

चौथी बात बुद्धिजीवियों के मजदूर-किसान जन-समुदाय के साथ एकरूप हो जाने के बारे में है। चूंकि बुद्धिजीवियों का कार्य मजदूर-किसान जन-समुदाय की सेवा करना है, इसलिए बुद्धिजीवियों को सबसे पहले उनका परिचय प्राप्त कर लेना चाहिए तथा उनके जीवन, कार्य और विचारों की जानकारी हासिल कर लेनी चाहिए। हम लोग बुद्धिजीवियों को जन-समुदाय के बीच जाने, कारखानों और गांवों में जाने के लिए प्रोत्साहन देते हैं। अगर आप जिन्दगीभर किसी मजदूर या किसान से नहीं मिलते, तो यह एक बहुत बुरी बात होगी। हमारे सरकारी कर्मचारियों, साहित्यकारों, कलाकारों, अध्यापकों और वैज्ञानिक अनुसन्धानकर्ताओं को, जहां तक हो सके, हर मौके का फायदा उठाकर मजदूरों और किसानों के साथ घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित करना चाहिए। कुछ लोग केवल देखने के लिए कारखानों या गांवों में जा सकते हैं; ''यह घोड़े पर सवार होकर फूलों को देखना'' कहलाएगा तथा ऐसा करना बिलकुल न जाने और न देखने की अपेक्षा बेहतर होगा। दूसरे लोग कुछ महीनों के लिए वहां ठहर सकते हैं, जांच-पड़ताल कर सकते हैं और वहां अपने मित्र बना सकते हैं; यह ''घोड़े से उतर कर फूलों को देखना'' कहलाएगा। कुछ अन्य लोग काफी अरसे तक, दो या तीन वर्ष अथवा इससे भी ज्यादा समय तक वहां ठहर सकते हैं; यह वहां ''जमकर रहना'' कहलाएगा। कुछ बुद्धिजीवी हमेशा मजदूरों व किसानों के बीच रहते हैं, मिसाल के लिए कारखाने के औद्योगिक तकनीशियन, तथा देहातों के कृषि-तकनीशियन और स्कूल-अध्यापक । उन्हें अपना काम अच्छी तरह करना चाहिए और मजदूरों व किसानों के साथ एकरूप हो जाना चाहिए। हमें बुद्धिजीवियों द्वारा मजदूरों व किसानों के साथ घनिष्ठ सम्पर्क कायम किए जाने के काम को एक आम रिवाज के रूप में अपना लेना चाहिए; दूसरे शब्दों में, हमारे बुद्धिजीवियों की एक विशाल संख्या को ऐसा ही करना चाहिए। बेशक, उनमें सभी लोग ऐसे नहीं हैं जो ऐसा कर पाते हैं; कुछ लोग किसी न किसी वजह से उनके बीच नहीं जा पाते, लेकिन हमें उम्मीद है कि यथासम्भव अधिक से अधिक लोग उनके बीच जाएंगे। वे सभी लोग एक साथ तो नहीं जा सकते, लेकिन अलग-अलग समय में, अलग-अलग ग्रुपों में जा सकते हैं। पुराने समय में जब हम येनान में थे, तो बुद्धिजीवियों को मजदूरों व किसानों के साथ सीधा सम्पर्क कायम करने के लिए प्रेरित किया जाता था। उस वक्त येनान में बहुत से बुद्धिजीवियों के विचारों में

उलझन मौजूद थी तथा वे तरह-तरह के अजीबोगरीब तर्क पेश किया करते थे। हमने एक गोष्ठी का आयोजन किया और उन्हें जन-समुदाय के बीच जाने की सलाह दी। बाद में बहुत से लोग जन-समुदाय के बीच गए और बहुत अच्छे नतीजे हासिल हुए। जब तक बुद्धिजीवी लोग अपने किताबी ज्ञान को व्यवहार के साथ नहीं मिलाते, तब तक वह ज्ञान पूर्ण नहीं बन सकता अथवा बिलुकल अधूरा ही रह जाता है। बुद्धिजीवी लोग अपने पूर्ववर्ती लोगों के अनुभवों की जानकारी मुख्य रूप से किताबें पढ़कर प्राप्त करते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि किताबें पढ़ना जरूरी है, लेकिन केवल किताबें पढ़ने से ही समस्याएं हल नहीं हो जातीं। यह निहायत जरूरी है कि वे वर्तमान परिस्थिति का अध्ययन करें, व्यावहारिक अनुभव और ठोस सामग्री का अध्ययन करें, तथा मजदूरों और किसानों के साथ मित्रता कायम करें। मजदूरों और किसानों के साथ मित्रता कायम करना कोई आसान काम नहीं है। आज भी कुछ लोग कारखानों या गांवों में जाते हैं, उनमें से किसी को तो सफलता मिलती है और किसी को नहीं। यहां सवाल रुख अथवा रवैये का, यानी विश्व-दृष्टिकोण का है। हम लोग इस बात का पक्षपोषण करते हैं कि "सौ विचारशाखाओं में होड़ होने दी जाए", या विद्याध्ययन के हर क्षेत्र में बहुत सी विचारशाखाएं और प्रवृत्तियां मौजूद रह सकती हैं; लेकिन विश्व-दृष्टिकोण के क्षेत्र में आज बुनियादी रूप से केवल दो ही शाखाएं मौजूद हैं – सर्वहारा विश्व-दृष्टिकोण और पूंजीवादी विश्व-दृष्टिकोण। इन दोनों में से एक का होना जरूरी है, या तो सर्वहारा विश्व-दृष्टिकोण होता है अथवा पूंजीवादी विश्व-दृष्टिकोण। कम्युनिस्ट विश्व-दृष्टिकोण सर्वहारा वर्ग का ही विश्व-दृष्टिकोण है, किसी अन्य वर्ग का नहीं। हमारे वर्तमान बुद्धिजीवियों में से अधिकांश लोग पुराने समाज से आए हैं और गैर-मेहनतकश परिवारों में पैदा हुए हैं। यहां तक कि जो लोग मजदूरों और किसानों के परिवारों में पैदा हुए हैं वे भी अभी पूंजीपति वर्ग के बुद्धिजीवी ही हैं, क्योंकि मुक्ति से पहले उन्होंने पूंजीवादी शिक्षा ही प्राप्त की थी तथा उनका विश्व-दृष्टिकोण बुनियादी तौर पर पूंजीपति वर्ग का ही है। अगर वे पुराने विश्व-दृष्टिकोण को बदलते नहीं और उसकी जगह सर्वहारा विश्व-दृष्टिकोण की स्थापना नहीं करते, तो उनका दृष्टिकोण, उनका रुख और उनकी भावना मजदूरों व किसानों से भिन्न होगी तथा वे गोल छेद के लिए चौकोर खूंटी साबित होंगे, और मजदूर व किसान उनके साथ दिल खोलकर बातें नहीं कर पाएंगे। अगर बुद्धिजीवी लोग मजदूरों व किसानों के साथ एकरूप हो जाएंगे तथा उनसे मित्रता स्थापित कर लेंगे, तो किताबों से सीखा हुआ मार्क्सवाद भी सच्चे अर्थों में उनकी अपनी चीज बन जाएगा। मार्क्सवाद को सच्चे मायनों में आत्मसात करने के लिए, हमें उसे न सिर्फ किताबों से सीखना चाहिए बल्कि मुख्यतया वर्ग-संघर्ष के जरिए, अमली काम के जरिए और मजदूरों व किसानों के समुदाय के साथ घनिष्ठ सम्पर्क के जरिए सीखना चाहिए। जब हमारे बुद्धिजीवी कुछ मार्क्सवादी किताबें पढ़ने के अलावा मजदूरों व किसानों के समुदाय के साथ घनिष्ठ सम्पर्क के जरिए और अपने अमली काम के जरिए कुछ समझ प्राप्त कर लेंगे, तो हम सब लोग एक ही भाषा में बोलने लगेंगे, न सिर्फ देशभक्ति की समान भाषा में, और समाजवादी व्यवस्था की समान भाषा में बोलने लगेंगे, बल्कि शायद कम्युनिस्ट विश्व-दृष्टिकोण की समान भाषा में भी बोलने लगेंगे। अगर ऐसा हो गया, तो यह निश्चित है कि हम सब लोग और अच्छी तरह कार्य कर सकेंगे।

पांचवीं बात दोष-निवारण के बारे में है। दोष-निवारण का मतलब है अपनी विचार-पद्धति

और कार्यशैली को सुधारना। कम्युनिस्ट पार्टी की भीतर दोष निवारण आन्दोलन एक बार जापानी-आक्रमण विरोधी युद्ध के दौरान, एक बार मुक्ति युद्ध के दौरान तथा फिर एक बार चीन लोक गणराज्य की स्थापना के बाद के आरम्भिक काल में चलाया गया। अब कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने फैसला किया है कि वह इस साल पार्टी के भीतर एक अन्य दोष-निवारण आन्दोलन शुरू करेगी। इसमें गैर-पार्टी व्यक्ति भी भाग ले सकेंगे, मगर जिनकी इच्छा न हो वे भाग न लें। इस दोष-निवारण आन्दोलन में मुख्य रूप से हमारी विचार-पद्धति और कार्य-शैली की इन तीन त्रुटियों की आलोचना की जाएगी – मनोगतवाद, नौकरशाही और संकीर्णतावाद। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान चलाए गए दोष-निवारण आन्दोलन की ही तरह इस बार भी वही तरीका अपनाया जाएगा : पहले कुछ दस्तावेजों का अध्ययन करना और तब उस अध्ययन के आधार पर अपने खुद के विचारों व काम की जांच-पड़ताल करना तथा गलतियों और खामियों का पर्दाफाश करने के लिए तथा सही व अच्छी बातों को प्रोत्साहन देने के लिए आलोचना और आत्म-आलोचना करना। एक तरफ तो हमें संजीदगी का रवैया अपनाना चाहिए तथा गलतियों व खामियों की आलोचना और आत्म-आलोचना गम्भीरतापूर्वक करनी चाहिए, न कि सतही तौर पर, तथा उन्हें अवश्य सुधार लेना चाहिए; दूसरी तरफ, हमें "मन्द-मन्थर बयार और हल्की फुहार" का तरीका तथा "भावी गलतियों से बचने के लिए पिछली गलतियों से सबक सीखने और मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करने" का तरीका अपनाना चाहिए तथा "एक ही वार से लोगों का काम तमाम कर देने" के तरीके का विरोध करना चाहिए।

हमारी पार्टी एक महान पार्टी है, एक गौरवशाली पार्टी है, एक सही पार्टी है। इस बात की एक तथ्य के रूप में अभिपुष्टि की जानी चाहिए। लेकिन हमारे अन्दर अब भी खामियां मौजूद हैं और इस बात की भी एक तथ्य के रूप में अभिपुष्टि की जानी चाहिए। हमें अपनी हर चीज की अभिपुष्टि नहीं करनी चाहिए बल्कि सिर्फ उसी चीज की अभिपुष्टि करनी चाहिए जो सही है; साथ ही हमें अपनी हर चीज का निषेध भी नहीं करना चाहिए बल्कि सिर्फ उसी चीज का निषेध करना चाहिए जो गलत है। उपलब्धियां हमारे कार्य की मुख्य वस्तु रही हैं, फिर भी हमारी खामियों और गलतियों की तादाद कम नहीं है। यही वजह है कि हमें एक दोष-निवारण आन्दोलन की जरूरत है। अगर हम अपने खुद के मनोगतवाद, नौकरशाही और संकीर्णतावाद की आलोचना करेंगे, तो क्या इससे हमारी पार्टी की प्रतिष्ठा को हानि पहुंचेगी ? मैं समझता हूं ऐसा नहीं होगा। इसके विपरीत इससे हमारी पार्टी की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान चलाए गए दोष-निवारण आन्दोलन ने यह बात साबित कर दी थी कि इससे हमारी पार्टी, हमारे पार्टी-कामरेडों और हमारे पुराने कार्यकर्ताओं की प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी हुई तथा नए कार्यकर्ताओं ने भी भारी प्रगति की। दोनों पार्टियों में से आखिर कौन सी पार्टी आलोचना से डरती थी, कम्युनिस्ट पार्टी या क्वोमिन्ताङ ? क्वोमिन्ताङ डरती थी। उसने आलोचना पर पाबन्दी लगा दी थी, लेकिन इससे वह अन्तिम पराजय से नहीं बच सकी। कम्युनिस्ट पार्टी आलोचना से डरती नहीं, क्योंकि हम मार्क्सवादी हैं, सच्चाई हमारे पक्ष में है तथा बुनियादी जन-समुदाय यानी मजदूर व किसान लोग हमारे पक्ष में हैं। जैसा कि हम कहा करते थे, दोष-निवारण आन्दोलन "मार्क्सवादी शिक्षा का एक व्यापक आन्दोलन"।

है। दोष-निवारण का मतलब है समूची पार्टी द्वारा आलोचना और आत्म-आलोचना के जरिए मार्क्सवाद का अध्ययन किया जाना। दोष निवारण आन्दोलन के दौरान हम निश्चित रूप से मार्क्सवाद की पहले से ज्यादा शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

चीन के रूपान्तर और निर्माण का नेतृत्व कार्य हम पर निर्भर है। जब हम अपनी विचार पद्धति और कार्य-शैली को सुधार लेंगे, तो हमारे अन्दर पहले से ज्यादा पहलकदमी आ जाएगी, हम पहले से ज्यादा योग्य बन जाएंगे और पहले से ज्यादा अच्छी तरह काम करने लगेंगे। हमारे देश में बहुत से ऐसे लोगों की जरूरत है जो तन-मन से जनता और समाजवादी कार्य की सेवा करें तथा जो परिवर्तन लाने का पक्का संकल्प रखते हों। हम तमाम कम्युनिस्टों को इसी प्रकार का होना चाहिए। पुराने चीन में सुधार की बात करना एक जुर्म था तथा यह जुर्म करने वालों को कत्ल कर दिया जाता था अथवा जेल में ठूंस दिया जाता था। फिर भी उस जमाने में पक्के इरादे वाले सुधारक हुए, जिन्होंने किसी भी चीज से न डरते हुए हर तरह की कठिन परिस्थितियों में किताबों और अखबारों को प्रकाशित किया, जनता को शिक्षित और संगठित किया, तथा अदम्य संघर्ष चलाए। जनता के जनवादी अधिनायकत्व वाली राजसत्ता ने हमारे देश का आर्थिक और सांस्कृतिक विकास तेजी से करने के लिए रास्ता खोल दिया है। हमारी राजसत्ता की स्थापना हुए अभी सिर्फ कुछ ही वर्ष हुए हैं, फिर भी लोग इस बात को देख सकते हैं कि हमारी अर्थव्यवस्था, संस्कृति, शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व समृद्धि प्राप्त हुई है। नए चीन का निर्माण करने में हम कम्युनिस्ट लोग किसी भी प्रकार की कठिनाइयों के सामने नहीं झुकते। लेकिन इस कार्य को हम अकेले ही पूरा नहीं कर सकते। हमें अनेक ऐसे गैर-पार्टी लोगों की भी जरूरत है जो उच्च आदर्शों से प्रेरित होकर समाजवाद और कम्युनिज्म की दिशा में हमारे समाज का रूपान्तर और निर्माण करने के लिए साहस के साथ हमारे कन्धे से कन्धा मिलाकर संघर्ष करें। चीन की दसियों करोड़ जनता के लिए एक बेहतर जिन्दगी की व्यवस्था करना और आर्थिक व सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़े हुए अपने देश को एक समुन्नत संस्कृति वाला समृद्ध व शक्तिशाली देश बना देना एक बहुत कठिन कार्य है। ठीक इसी कार्य को और ज्यादा निपुणता के साथ पूरा कर सकने के लिए तथा ऐसे सभी गैर-पार्टी लोगों के साथ मिलकर जो उच्च आदर्शों से प्रेरित हैं और सुधारों को लागू करने के लिए संकल्पबद्ध हैं, पहले से और ज्यादा सुचारु रूप से कार्य करने के लिए ही हमें इस समय तथा भविष्य में भी दोष-निवारण आन्दोलनों को चलाते रहना चाहिए तथा अपनी गलतियों को लगातार सुधारते रहना चाहिए। पूर्ण भौतिकवादी लोग निर्भय होते हैं; हमें उम्मीद है कि हमारे सभी सहयोद्धा अपनी-अपनी जिम्मेदारियों को साहस के साथ निभाएंगे और तमाम मुश्किलों पर काबू पा लेंगे, असफलताओं या छींटाकशी से नहीं डरेंगे, और न हम कम्युनिस्टों की आलोचना करने और हमें राय देने से ही डरेंगे। ''जो आदमी हजार जख्म होने के बाद भी मृत्यु से नहीं डरता, वही शाहंशाह को घोड़े से उतारने का साहस कर सकता है'' – समाजवाद और कम्युनिज्म का निर्माण करने के हमारे संघर्ष में इसी प्रकार की अपराजेय भावना की जरूरत है। अपनी तरफ से हम कम्युनिस्टों को चाहिए कि हम ऐसी स्थितियां पैदा कर दें जो हमारे साथ सहयोग करने वालों के लिए सहायक हों, अपने मुश्तरका काम में उनके साथ कामरेडों जैसे अच्छे सम्बन्ध कायम करें तथा अपने संयुक्त संघर्ष में उनके साथ एकता कायम करें।

छठी बात एकांगीपन के बारे में है। एकांगीपन का मतलब है निरपेक्ष दृष्टि से विचार करना, अर्थात समस्याओं के प्रति अधिभौतिकवादी रुख अपनाना। हमारे काम का मूल्यांकन करते समय हर चीज को पूर्णतया सकारात्मक अथवा पूर्णतया नकारात्मक समझना एकांगीपन कहलाएगा। ऐसा करने वाले लोग कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर कम नहीं हैं और बहुत से उसके बाहर भी हैं। हर चीज को केवल सकारात्मक समझने का मतलब है केवल अच्छाई को देखना और बुराई को न देखना, तथा केवल प्रशंसा को पसन्द करना और आलोचना को बर्दाश्त न करना। ऐसी बातें करना तथ्यों के अनुकूल नहीं है जिनसे यह मालूम होता हो कि हमारा काम हर लिहाज से अच्छा है। यह कहना ठीक नहीं है कि सब कुछ अच्छा ही अच्छा है; अब भी खामियां और गलतियां मौजूद हैं। और न यह कहना ही ठीक है कि सब कुछ बुरा ही बुरा है, क्योंकि यह भी तथ्यों के अनुकूल नहीं है। यहां विश्लेषण करना जरूरी है। हर चीज को केवल नकारात्मक समझने का मतलब है किसी किस्म का विश्लेषण किए बिना ही यह सोचना कि अब तक कोई भी काम अच्छा नहीं हुआ, तथा समाजवादी निर्माण का महान कार्य, वह महान संघर्ष जिसमें दसियों करोड़ लोग हिस्सा ले रहे हैं, मुकम्मिल तौर पर एक गड़बड़-घोटाला है, जिसमें कोई भी चीज तारीफ के लायक नहीं है। हालांकि इस प्रकार के विचार रखने वाले अनेक लोगों और समाजवादी व्यवस्था से शत्रुता रखने वाले लोगों के बीच फर्क है, फिर भी ऐसे विचार बिलकुल गलत और बहुत नुकसानदेह हैं तथा इनसे लोगों का सिर्फ हौसला ही टूटता है। हमारे काम का मूल्यांकन करते समय, जहां हर चीज को सकारात्मक समझने का दृष्टिकोण अपनाना गलत है वहां हर चीज को नकारात्मक समझने का दृष्टिकोण अपनाना भी गलत है। जो लोग ऐसा एकांगी दृष्टिकोण अपनाते हैं, उनकी हमें आलोचना करनी चाहिए, लेकिन निस्सन्देह उनकी आलोचना करते समय हमें ''भावी गलतियों से बचने के लिए पिछली गलतियों से सबक सीखने और मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करने'' का रवैया अपनाना चाहिए और उनकी मदद करनी चाहिए।

कुछ लोग कहते हैं : चूंकि एक दोष-निवारण आन्दोलन चलाया जाने वाला है और चूंकि हर आदमी से यह कहा जाएगा कि वह अपनी राय दे, ऐसी सूरत में एकांगीपन से बचना नामुमकिन है, और एकांगीपन को खत्म करने का आवाहन करने का मतलब है लोगों को बोलने का मौका ही न देना। क्या यह धारणा सही है ? स्वाभाविक है कि हर आदमी के लिए एकांगीपन से पूरी तरह बचना मुश्किल है। लोग हमेशा अपने खुद के अनुभवों की रोशनी में समस्याओं की जांच-पड़ताल करते हैं, उनसे निपटते हैं और अपनी राय देते हैं, तथा यह अनिवार्य है कि वे कभी न कभी कुछ न कुछ एकांगीपन दिखाएंगे। लेकिन क्या हमें उनसे यह मांग नहीं करनी चाहिए कि वे उत्तरोत्तर अपने एकांगीपन पर काबू पाते जाएं तथा समस्याओं पर अपेक्षाकृत सर्वांगीण रूप से विचार करें ? मेरा विचार है कि हमें ऐसा जरूर करना चाहिए। इसके विपरीत, अगर हम यह मांग नहीं करेंगे कि दिन-ब-दिन और वर्ष-प्रति-वर्ष अधिकाधिक लोग समस्याओं पर अपेक्षाकृत सर्वांगीण रूप से विचार करें, तो हमारे अन्दर ठहराव पैदा हो जाएगा, हम एकांगीपन की पुष्टि करने लगेंगे तथा दोष-निवारण आन्दोलन के समूचे उद्देश्य के विपरीत जा खड़े होंगे। एकांगीपन का अर्थ है द्वन्द्ववाद का उल्लंघन करना। हम कदम-ब-कदम द्वन्द्ववाद का प्रचार-प्रसार करना चाहते हैं तथा हर आदमी

से अनुरोध करना चाहते हैं कि वह कदम-ब-कदम वैज्ञानिक द्वन्द्ववादी तरीका इस्तेमाल करना सीख ले। आजकल प्रकाशित होने वाले कुछ लेखों में शब्दाडम्बर तो बहुत होता है, तथा उनकी दलीलों का दूसरों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इस प्रकार के लेख उत्तरोत्तर कम लिखे जाने चाहिए। लेख लिखते समय हमें यह नहीं सोचते रहना चाहिए कि "मैं कितना होशियार आदमी हूं !" बल्कि अपने को पूर्ण रूप से पाठकों के समकक्ष रखना चाहिए। हो सकता है कि आप काफी लम्बे समय से क्रान्तिकारी कार्य करते आए हों, लेकिन अगर आप कोई गलत बात कहेंगे तो लोग आपका खण्डन करेंगे। आप जितना ज्यादा घमण्ड करेंगे, लोग आपका उतना ही कम पक्षपोषण करेंगे और आपके लेख पढ़ने की ओर उतना ही कम ध्यान देंगे। हमें अपना काम ईमानदारी से करना चाहिए, विश्लेषणात्मक तरीका अपनाना चाहिए, प्रभावशाली तर्क वाले लेख लिखने चाहिए तथा आडम्बर का सहारा लेकर दूसरों पर रौब नहीं जमाना चाहिए।

कुछ लोग कहते हैं कि लम्बे लेख में तो एकांगीपन से बचा जा सकता है लेकिन छोटे निबन्ध में उससे बचना असम्भव है। क्या छोटा निबन्ध हमेशा एकांगी होता है ? जैसा कि मैंने अभी-अभी कहा है, एकांगीपन से बचना आम तौर पर मुश्किल है तथा यदि किसी मात्रा में एकांगीपन आ भी जाए तो घबराने की कोई बात नहीं। अगर हर आदमी से यह मांग की जाए कि वह समस्याओं पर सौ फीसदी सर्वांगीण रूप से विचार करे, तो आलोचना में अवरोध पैदा हो जाएगा। फिर भी हम हर आदमी से यह मांग अवश्य करते हैं कि वह समस्याओं पर अपेक्षाकृत सर्वांगीण रूप से विचार करने की कोशिश करे, तथा लम्बे और छोटे दोनों प्रकार के लेखों में, जिनमें छोटे निबन्ध भी शामिल हैं, एकांगीपन से बचने की कोशिश करे। कुछ लोग दलील देते हैं कि कुछ सौ अथवा एक-दो हजार शब्दों के निबन्ध में विश्लेषण करना कैसे सम्भव हो सकता है ? मैं कहता हूं ऐसा क्यों नहीं हो सकता ? क्या लू शुन ने ऐसा नहीं किया ? विश्लेषणात्मक तरीका द्वन्द्वात्मक तरीका ही होता है। विश्लेषण से हमारा तात्पर्य होता है किसी वस्तु के अन्दर मौजूद अन्तरविरोधों का विश्लेषण करना। जीवन का गहरा ज्ञान प्राप्त किए बिना और सम्बन्धित अन्तरविरोधों को सही तौर पर समझे बिना गहन विश्लेषण करना असम्भव है। लू शुन द्वारा बाद में लिखे गए निबन्ध इतने पैने और शक्तिशाली होते हुए भी एकांगीपन से ठीक इसलिए मुक्त हैं क्योंकि लू शुन तब द्वन्द्ववाद को आत्मसात कर चुके थे। लेनिन के भी कुछ लेख छोटे निबन्ध कहला सकते हैं; वे व्यंग्यपूर्ण और पैने होते हुए भी एकांगीपन से मुक्त हैं। लू शुन के लगभग सभी निबन्धों में प्रहार का निशाना दुश्मन को बनाया गया है; मगर लेनिन के कुछ निबन्धों में तो दुश्मन को निशाना बनाया गया है और कुछ अन्य निबन्धों में साथियों को। क्या लू शुन के निबन्धों जैसी रचनाओं को जनता की पांतों के भीतर मौजूद गलतियों और खामियों का विरोध करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है ? मैं समझता हूं किया जा सकता है। बेशक, हमें दुश्मन और अपने बीच फर्क करना चाहिए तथा अपने साथियों के साथ शत्रुतापूर्ण रुख अपनाकर दुश्मनों जैसा बरताव नहीं करना चाहिए। अपनी बात कहते समय हमारे मन में जनता के कार्य की रक्षा करने और जनता की राजनीतिक चेतना का स्तर उन्नत करने की उत्कट इच्छा होनी चाहिए, तथा हमें दूसरों की खिल्ली उड़ाने या उन पर प्रहार करने का रुख नहीं अपनाना चाहिए।

अगर कोई लिखने का साहस ही न करे तो क्या होगा ? कुछ लोग कहते हैं, उन्हें जब

कुछ कहना होता है तो भी लिखने की हिम्मत नहीं होती, इस डर से कि कहीं लोग उनसे नाराज नहीं हो जाएं और उन्हें उनकी आलोचना न सुननी पड़े। मेरा खयाल है कि इस प्रकार की चिन्ता छोड़ देनी चाहिए। हमारा राज्य जनता का जनवादी राज्य है और इसमें एक ऐसा वातावरण मौजूद है जो जनता की सेवा के लिए लिखने में सहायक है। सौ फूल खिलने देने और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने देने की नीति से विज्ञान और कला के पल्लवित-पुष्पित होने की एक नई गारण्टी हो जाती है। जो कुछ आप लिखें अगर वह सही हो तो आपको आलोचना से नहीं डरना चाहिए, तथा वाद-विवाद के जरिए आप अपने सही विचारों की और अधिक व्याख्या कर सकते हैं। जो कुछ आपने लिखा है अगर वह गलत है तो आलोचना से आपको अपनी गलतियां सुधारने में मदद मिल सकती है, और यह कोई बुरी बात नहीं है। हमारे समाज में जुझारू क्रान्तिकारी आलोचना और प्रत्यालोचना का तरीका एक अच्छा तरीका है, जिसे अन्तरविरोधों को उद्घाटित और हल करने, विज्ञान और कला का विकास करने तथा हमारे सभी कामों की सफलता की गारण्टी करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

सातवीं बात है "खुली छूट दी जाए" या "रोक लगाई जाए" ? यह नीति एक मसला है। "सौ फूल खिलने दो और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने दो" की नीति एक बुनियादी नीति है और साथ ही यह एक दीर्घकालीन नीति भी है; यह महज एक अस्थायी नीति नहीं है। विचार-विमर्श के दौरान साथियों ने "रोक लगाने" के बारे में अपनी असहमति प्रकट की है, और मेरा मत है कि यह विचार सही है। पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का यह विचार है कि हमें "खुली छूट देनी" चाहिए, न कि "रोक लगानी" चाहिए।

अपने देश का नेतृत्व करने में इन दो वैकल्पिक तरीकों को, दूसरे शब्दों में इन दो वैकल्पिक नीतियों को अपनाया जा सकता है – "खुली छूट देना" अथवा "रोक लगाना"। "खुली छूट देने" का मतलब है तमाम लोगों को खुलकर राय देने का मौका देना, ताकि वे साहस के साथ बोल सकें, साहस के साथ आलोचना कर सकें और साहस के साथ वाद-विवाद कर सकें; इसका मतलब यह है कि हम गलत विचारों से और किसी भी जहरीली चीज से न डरें; इसका मतलब यह है कि भिन्न विचार रखने वाले लोगों के बीच तर्क-वितर्क और आलोचना को प्रोत्साहन दिया जाए तथा आलोचना और प्रत्यालोचना दोनों की आजादी दी जाए; इसका मतलब यह है कि गलत विचारों को दबाया न जाए, बल्कि लोगों को तर्क के जरिए समझाया जाए। "रोक लगाने" का मतलब यह है कि लोगों को भिन्न विचार प्रकट करने और गलत विचार प्रकट करने से रोका जाए तथा अगर वे ऐसा करें तो उनका "महज एक ही वार से काम तमाम कर दिया जाए"। यह अन्तरविरोधों को भड़काने का तरीका है, न कि उन्हें हल करने का। "खुली छूट देना" अथवा "रोक लगाना" – इन दोनों में से एक नीति को चुन लेना चाहिए। हम "खुली छूट देने" की नीति को चुनते हैं, क्योंकि यह एक ऐसी नीति है जो हमारे देश को सुदृढ़ बनाने और हमारी संस्कृति का विकास करने में सहायक होगी।

हम "खुली छूट देने" की नीति को लागू करने के लिए इसलिए तैयार हैं ताकि हम दसियों लाख बुद्धिजीवियों के साथ एकता कायम कर सकें और उनके वर्तमान दृष्टिकोण को बदल सकें। जैसा कि मैंने ऊपर बताया है, हमारे देश के बुद्धिजीवियों की भारी बहुसंख्या प्रगति करना चाहती है और अपना नव रूपान्तर करना चाहती है तथा वे लोग अपना नव रूपान्तर करने

की पूरी सामर्थ्य रखते हैं। इस सिलसिले में हमारे द्वारा अपनाई जाने वाली नीति बड़ी जोरदार भूमिका अदा करेगी। बुद्धिजीवियों का सवाल मुख्यतया एक विचारधारात्मक सवाल है, तथा विचारधारात्मक सवालों को हल करने के लिए भोंड़ेपन और जोर जबरदस्ती का तरीका अपनाना फायदेमन्द नहीं बल्कि नुकसानदेह होता है। बुद्धिजीवियों का नव रूपान्तर करना और खास तौर पर उनका विश्व-दृष्टिकोण बदलना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके लिए लम्बे समय की जरूरत होती है। हमारे साथियों को यह बात अवश्य समझ लेनी चाहिए कि विचारधारात्मक नव रूपान्तर करने के लिए दीर्घकाल तक, धीरज के साथ और बारीकी से काम करने की जरूरत होती है, तथा लोगों की विचारधारा को, जिसे बनने में उनकी जिन्दगी की कई दशाब्दियां लगी हैं, सिर्फ चन्द लेक्चर झाड़ कर अथवा चन्द मीटिंगें बुलाकर बदल डालने की कोशिश नहीं करना चाहिए। लोगों को कायल करने का एकमात्र तरीका है समझाना-बुझाना, न कि जोर-जबरदस्ती करना। जोर- जबरदस्ती के जरिए उन्हें हरगिज नहीं समझाया जा सकेगा। जोर-जबरदस्ती के जरिए उन्हें समझाने की कोशिशें हरगिज कामयाब नहीं होंगी। इस प्रकार का तरीका दुश्मन से निपटने के लिए अपनाया जा सकता है तथा साथियों और मित्रों से निपटने के लिए इसकी इजाजत हरगिज नहीं दी जा सकती। अगर हम दूसरों को कायल करने का तरीका न जानते हों तो फिर क्या किया जाए ? हमें उसे सीख लेना चाहिए। हमें वाद-विवाद और तर्क-वितर्क के जरिए गलत विचारों पर विजय प्राप्त करना सीख लेना चाहिए।

''सौ फूल खिलने दो'' का तरीका कला का विकास करने का तरीका है, तथा ''सौ विचारशाखाओं में होड़ होने दो'' का तरीका विज्ञान का विकास करने का तरीका है। इस नीति पर अमल करना न सिर्फ विज्ञान और कला का विकास करने का एक अच्छा तरीका है, बल्कि अगर व्यापक रूप से लागू किया जाए तो यह हमारे सभी कार्यों को करने का एक अच्छा तरीका बन सकता है। इससे हमारी गलतियां कम होने लगती हैं। बहुत सी चीजें ऐसी होती हैं जिन्हें हम समझ नहीं पाते और इसलिए उनसे निपटने में असमर्थ होते हैं, लेकिन वाद-विवाद और संघर्ष के जरिए हम उन्हें समझते जाएंगे और उनसे निपटने का तरीका सीख लेंगे। सत्य का विकास विभिन्न मतों के बीच होने वाले वाद-विवाद के जरिए होता है। यही तरीका उन तमाम चीजों के बारे में भी अपनाया जा सकता है जो जहरीली और मार्क्सवाद-विरोधी हैं, क्योंकि उनके खिलाफ किए जाने वाले संघर्ष के दौरान मार्क्सवाद का विकास होगा। यह विपरीत तत्वों के बीच के संघर्ष के जरिए होने वाला विकास है, द्वन्द्ववाद के अनुरूप विकास है।

क्या लोग प्राचीन काल से ही सत्य, शिव और सुन्दर की चर्चा नहीं करते आए हैं ? इनके विपरीत तत्व हैं असत्य, अशिव और असुन्दर। पहले तीन का अस्तित्व दूसरे तीन के बिना नहीं हो सकता। सत्य का अस्तित्व असत्य की तुलना में विद्यमान रहता है। मानव समाज और प्रकृति में भी हर वस्तु अनिवार्य रूप से अलग-अलग भागों में विभक्त हो जाती है, केवल अलग-अलग ठोस स्थितियों में ही उसकी अन्तर्वस्तु और बाह्य रूप में भिन्नता आ जाती है। कोई न कोई गलत बात हमेशा होती रहेगी, अशिव और असुन्दर हमेशा मौजूद रहेंगे। सही और गलत, शिव और अशिव, सुन्दर और असुन्दर, ये विपरीत तत्व हमेशा मौजूद रहेंगे। यही बात सुगन्धित फूलों और जहरीली खरपतवार के बारे में भी सच है। इनके बीच के सम्बन्ध

विपरीत तत्वों की एकता और संघर्ष वाले सम्बन्ध होते हैं। तुलना किए बिना भेद करना असम्भव है। भेद किए बिना और संघर्ष किए बिना विकास करना असम्भव है। सत्य का विकास असत्य के विरुद्ध संघर्ष के जरिए ही होता है। मार्क्सवाद का भी इसी प्रकार विकास होता है। मार्क्सवाद का विकास पूंजीवादी और निम्न-पूंजीवादी विचारधारा के विरुद्ध संघर्ष के दौरान ही होता है, और उसका विकास केवल संघर्ष के जरिए ही होता है।

हम ''खुली छूट देने'' की नीति का पक्षपोषण करते हैं; अब तक ऐसा बहुत ज्यादा नहीं बल्कि बहुत कम किया गया है। हमें ''खुली छूट देने'' से नहीं डरना चाहिए, और न आलोचना तथा जहरीली खरपतवार से ही डरना चाहिए। मार्क्सवाद एक वैज्ञानिक सत्य है; वह आलोचना से नहीं डरता और उसे आलोचना के जरिए शिकस्त नहीं दी जा सकती। यही बात कम्युनिस्ट पार्टी और जन सरकार पर भी लागू होती है; वे आलोचना से नहीं डरतीं और उन्हें आलोचना के जरिए शिकस्त नहीं दी जा सकती। कोई न कोई गलत बात हमेशा ही होती रहेगी, और उससे डरने की जरूरत नहीं है। हाल ही में कुछ दैत्यों और दानवों को रंगमंच पर प्रस्तुत किया गया है। यह देखकर कुछ साथी बहुत चिन्तित हो उठे हैं। मेरा विचार है कि इस तरह की चीजों के थोड़ी मात्रा में मौजूद रहने से भयभीत होने की जरूरत नहीं है; कुछ ही दशाब्दियों में इस प्रकार के दैत्य और दानव रंगमंच से बिलकुल गायब हो जाएंगे और ढूंढे से भी नहीं मिलेंगे। जो बात सही है उसे हमें आगे बढ़ाना चाहिए और जो बात गलत है उसका विरोध करना चाहिए, लेकिन अगर लोग गलत बातों के सम्पर्क में आ भी जाएं तो भी हमें भयभीत नहीं होना चाहिए। महज ऐसे प्रशासनिक आदेश जारी करने से जिनमें लोगों को उल्टी-सुल्टी व बुरी बातों और गलत विचारों से सम्पर्क रखने की, अथवा रंगमंच पर दैत्यों व दानवों को देखने की मनाही की गई हो, कोई समस्या हल नहीं होती। बेशक, मैं दैत्यों व दानवों के प्रचार प्रसार की पैरवी नहीं कर रहा, मैं केवल यह कह रहा हूं, ''इस तरह की चीजों के थोड़ी मात्रा में मौजूद रहने के कारण भयभीत होने की जरूरत नहीं है''। कुछ गलत चीजों का अस्तित्व होना कोई ताज्जुब की बात नहीं, और उनसे डरने का कोई कारण नहीं; निस्सन्देह, इससे लोगों को गलत चीजों के खिलाफ और अच्छी तरह संघर्ष करना सीखने में मदद मिलेगी। भारी तूफान भी कोई डरने की चीज नहीं है। मानव समाज भारी तूफानों के बीच ही प्रगति करता है।

हमारे देश में पूंजीवादी व निम्न-पूंजीवादी विचारधारा और मार्क्सवाद-विरोधी विचारधाराओं का अस्तित्व अभी एक लम्बे समय तक बना रहेगा। बुनियादी तौर पर, हमारे देश में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना की जा चुकी है। उत्पादन के साधनों की मिलकियत का रूपान्तर करने में हम बुनियादी रूप से विजय प्राप्त कर चुके हैं, लेकिन राजनीतिक और विचारधारात्मक मोर्चों पर पूर्ण विजय हम अब भी प्राप्त नहीं कर पाए। यह सवाल कि विचारधारा के क्षेत्र में सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच के संघर्ष में अन्ततोगत्वा कौन विजयी होगा, वास्तव में अभी तय नहीं हुआ है। हमें अभी पूंजीवादी और निम्न-पूंजीवादी विचारधारा के विरुद्ध एक दीर्घकालीन संघर्ष चलाते रहना है। इस बात को न समझना तथा विचारधारात्मक संघर्ष का परित्याग कर देना गलत होगा। सभी किस्म के गलत विचारों, सभी किस्म की जहरीली खरपतवार और सभी किस्म के दैत्यों व दानवों की आलोचना की जानी चाहिए। किसी भी परिस्थिति में उन्हें बेलगाम होकर अपनी गतिविधियों का प्रसार नहीं करने देना चाहिए। लेकिन,

यह आलोचना पूर्णतया तर्कसंगत, विश्लेषणात्मक और माकूल होनी चाहिए, तथा उद्दण्डतापूर्ण, नौकरशाहाना, अधिभौतिकवादी और कठमुल्लावादी नहीं होना चाहिए।

लोग एक लम्बे समय से कठमुल्लावाद की काफी आलोचना करते आए हैं। ऐसा होना भी चाहिए। लेकिन संशोधनवाद की आलोचना के कार्य की वे अक्सर उपेक्षा करते हैं। कठमुल्लावाद और संशोधनवाद दोनों ही मार्क्सवाद का विरोध करते हैं। मार्क्सवाद को निश्चित रूप से प्रगति करनी चाहिए; उसे व्यवहार के विकास के साथ विकसित होना चाहिए और वह गतिहीन नहीं रह सकता। यदि वह गतिहीन और पुरानी लीक पीटने वाला बन गया तो निष्प्राण हो जाएगा। लेकिन मार्क्सवाद के बुनियादी उसूलों का उल्लंघन कभी नहीं किया जाना चाहिए, अन्यथा हम गलतियां कर बैठेंगे। मार्क्सवाद के प्रति एक अधिभौतिकवादी दृष्टिकोण अपनाना और उसे एक गैर-लचीली चीज समझना कठमुल्लावाद है। मार्क्सवाद के बुनियादी उसूलों का निषेध करना और उसके सार्वभौमिक सत्य का निषेध करना संशोधनवाद है। संशोधनवाद, पूंजीवादी विचारधारा का ही एक रूप है। संशोधनवादी लोग इस बात से इनकार करते हैं कि समाजवाद और पूंजीवाद के बीच फर्क है, सर्वहारा अधिनायकत्व और पूंजीवादी अधिनायकत्व के बीच फर्क है। जिस कार्यदिशा की वे लोग पैरवी करते हैं, वह वस्तुतः समाजवादी कार्यदिशा नहीं बल्कि पूंजीवादी कार्यदिशा है। वर्तमान परिस्थितियों में कठमुल्लावाद की अपेक्षा संशोधनवाद ज्यादा हानिकारक है। संशोधनवाद की आलोचना करना इस समय विचारधारात्मक मोर्चे पर हमारा एक महत्त्वपूर्ण कार्य है।

आठवीं और अन्तिम बात यह है कि प्रान्तों, म्युनिसिपलटियों और स्वायत्त प्रदेशों के पार्टी-कमेटियों को चाहिए कि वे विचारधारा के सवाल को निपटाएं। यहां उपस्थित कुछ साथी यह चाहते हैं कि मैं इस सम्बन्ध में कुछ बताऊं। बहुत सी जगहों में पार्टी-कमेटियों ने भी विचारधारा के सवाल को नहीं निपटाया अथवा इस सिलसिले में बहुत कम काम किया है। इसका मुख्य कारण यह है कि वे व्यस्त हैं। लेकिन उन्हें इसे अवश्य निपटा लेना चाहिए। ''निपटाने'' से मेरा तात्पर्य यह है कि उसे कार्यसूची में शामिल कर लिया जाना चाहिए और उसका अध्ययन किया जाना चाहिए। जन-समुदाय के बड़े पैमाने के प्रचण्ड वर्ग-संघर्ष, जो पिछले क्रान्तिकारी कालों की विशेषता रहे हैं, अब आम तौर पर समाप्त हो चुके हैं, लेकिन वर्ग-संघर्ष – मुख्यतः राजनीतिक और विचारधारात्मक मोर्चों पर – अब भी जारी है और अब भी बड़ी तीव्रता से चल रहा है। विचारधारा का सवाल अब एक बहुत महत्त्वपूर्ण सवाल बन गया है। सभी इलाकों की पार्टी-कमेटियों के प्रथम सचिवों को चाहिए कि वे इस सवाल को स्वयं निपटाएं। इसे सही ढंग से सिर्फ तभी हल किया जा सकेगा जब वे लोग इसकी ओर गम्भीरतापूर्वक ध्यान देंगे और इसका अध्ययन करेंगे। सभी इलाकों को चाहिए कि वे प्रचार-कार्य के बारे में हमारे वर्तमान सम्मेलन के ही समान मीटिंगें बुलाएं, जिनमें स्थानीय विचारधारात्मक कार्य और उससे सम्बन्धित तमाम समस्याओं पर विचार किया जाए। इस प्रकार की मीटिंगों में न सिर्फ पार्टी के साथी भाग लें, बल्कि पार्टी के बाहर के व्यक्ति भी, और साथ ही भिन्न मत रखने वाले लोग भी भाग लें। इसका अच्छा नतीजा निकलेगा और इससे कोई नुकसान नहीं होगा, जैसा कि वर्तमान सम्मेलन के अनुभव से साबित हो चुका है।

नोट

[1] देखिए 'सेना द्वारा आत्मनिर्भरता के लिए किए जाने वाले उत्पादन के बारे में तथा दोष-निवारण और उत्पादन के महान आन्दोलन के महत्त्व के बारे में', 'माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं', ग्रन्थ 3।

सादा जीवन और कठोर परिश्रम पर अविचल रहो, जनता के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बनाए रखो

मार्च 1957

1

हमारी पार्टी एक दोष-निवारण आन्दोलन चलाने जा रही है। यह आलोचना और आत्म-आलोचना के जरिए पार्टी के भीतर के अन्तरविरोधों को हल करने का एक तरीका है तथा साथ ही पार्टी और जनता के बीच के अन्तरविरोधों को हल करने का एक तरीका भी है। इस बार के आन्दोलन में प्रहार का निशाना तीन बुरी कार्यशैलियों – नौकरशाही, संकीर्णतावाद और मनोगतवाद – को बनाया जाएगा। यह जरूरी है कि हम दोष-निवारण के जरिए अपनी पार्टी की सादा जीवन और कठोर परिश्रम की परम्परा को विकसित करने के लिए भरपूर प्रयास करें। क्रान्ति में विजय प्राप्त होने के बाद हमारे कुछ कामरेडों के क्रान्तिकारी संकल्प में शिथिलता आती जा रही है, उनका क्रान्तिकारी उत्साह ठण्डा पड़ता जा रहा है, दिलोजान से जनता की सेवा करने की भावना क्षीण होती जा रही है और अपनी जान की परवाह न करके संघर्ष करने की भावना भी, जिसे उन्होंने दुश्मन के खिलाफ लड़ते समय प्रदर्शित किया था, क्षीण होती जा रही है; साथ ही उन लोगों में पद और नाम के पीछे दौड़ने, खाने-कपड़े पर खास ध्यान देने, वेतन के लिए एक दूसरे से होड़ करने तथा यश और धन प्राप्त करने के लिए छीना-झपटी करने का रुझान दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। मैंने सुना है कि पिछले वर्ष जब कार्यकर्ताओं की दर्जेबन्दी की गई तो कुछ लोग रोने-धोने व आंसू बहाने लगे और उन्होंने एक भद्दा दृश्य उपस्थित कर दिया। मनुष्य की दो आंखें होती हैं, होती हैं कि नहीं ? आंखों में भर आने वाला पानी आंसू कहलाता है। जब उनकी दर्जेबन्दी उनकी इच्छा के अनुरूप नहीं आती तो उनकी आंखों से आंसू बहने लगते हैं। च्यांग काई-शेक के खिलाफ युद्ध में, अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने के आन्दोलन में, भूमि-सुधार में और प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने में उन्होंने कभी आंसू नहीं बहाए, समाजवाद का निर्माण करने में भी उनकी आंखों से कभी एक भी बूंद आंसू नहीं गिरा, लेकिन जब उनके व्यक्तिगत हितों को आघात पहुंचा तो उनकी आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई।

इस लेख का पहला भाग 18 मार्च 1957 को चीनान में पार्टी कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में दिए गए भाषण का एक अंश है, और दूसरा भाग 19 मार्च 1957 को नानकिङ में पार्टी-कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में दिए गए भाषण का एक अंश है।

मैंने यहां तक सुना है कि एक व्यक्ति तीन दिन तक खाना खाने से इनकार करता रहा। मैं कह देना चाहता हूं कि अगर एक आदमी तीन दिन तक खाना न खाए तो कोई बड़ी बात नहीं, लेकिन अगर वह एक हफ्ते तक खाना न खाए तो मामला जरा खतरनाक हो जाएगा। संक्षेप में, नाम और पद के लिए होड़ करने तथा वेतन, खाने कपड़े और सुख-सुविधाओं की तुलना करने का रुझान पैदा हो गया है। व्यक्तिगत हितों के लिए भूख हड़ताल करने और आंसू बहाने को भी एक तरह से जनता के ही बीच का अन्तरविरोध समझा जा सकता है। किसी ऑपेरा में 'लिन छुङ का रातोंरात पलायन' नामक एक अंक है, जिसकी एक पंक्ति इस प्रकार है : "जब तक पुरुष का दिल टुकड़े-टुकड़े नहीं हो जाता, तब तक वह आसानी से आंसू नहीं बहाता"। अब हमारे कामरेडों में कुछ ऐसे पुरुष (शायद महिलाएं भी) हैं, जिनके बारे में यह कहा जा सकता है कि जब तक दर्जेबन्दी करने का समय नहीं आता तब तक वे आसानी से आंसू नहीं बहाते। ऐसे व्यवहार को सुधारना भी जरूरी है, है कि नहीं ? आसानी से आंसू न बहाना तो ठीक है, लेकिन किसी का दिल आखिर कब टुकड़े-टुकड़े हो जाता है ? वह तब टुकड़े-टुकड़े हो जाता है जब मजदूर वर्ग और व्यापक मेहनतकश जनता का भाग्य जोखिम में पड़ गया हो। उस समय हम कुछ आंसू बहा सकते हैं। जहां तक दर्जेबन्दी करने का सवाल है, चाहे आपको गलत दर्जे में ही क्यों न रखा गया हो, उसे स्वीकार कर लेना चाहिए और आंसू नहीं बहाने चाहिए, बल्कि उन्हें आंखों में समेट कर रखना चाहिए। दुनिया में बहुत सी अन्यायपूर्ण बातें होती हैं, और हो सकता है कि आपको समुचित दर्जे में न रखा गया हो। तो भी हाय-तोबा मचाने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि यह एक मामूली सी बात है और जब तक आपको भरपेट खाना मिल रहा है तब तक सन्तुष्ट बने रहना चाहिए। आखिर हमारी पार्टी एक क्रान्तिकारी पार्टी है, इसलिए हमारा उसूल है कि किसी को भूखा न मरने दिया जाए। जब तक कोई व्यक्ति भूखा न मर रहा हो तब तक उसे क्रान्तिकारी कार्य करते रहना चाहिए और संघर्ष चलाते रहना चाहिए। आज से दस हजार साल बाद भी लोगों को कठोर परिश्रम करना चाहिए। एक कम्युनिस्ट के लिए यह जरूरी है कि वह कठोर परिश्रम करे और पूरे मन से जनता की सेवा करे, न कि आधे मन से या दो तिहाई मन से। जिन लोगों का क्रान्तिकारी संकल्प शिथिल पड़ता जा रहा है, उन्हें दोष-निवारण के जरिए फिर एक बार उसमें नई शक्ति का संचार करना चाहिए।

2

हमें वैसी ही ओजस्विता, वैसा ही क्रान्तिकारी उत्साह और वैसी ही जान की परवाह न करने की भावना बनाए रखनी चाहिए जैसी हमने क्रान्तिकारी युद्ध के काल में प्रदर्शित की थी, तथा क्रान्तिकारी कार्य को अन्त तक जारी रखना चाहिए। जान की परवाह न करने का मतलब क्या है ? 'कछार के वीर' नामक उपन्यास में एक पात्र का नाम है "जान की परवाह न करने वाला तीसरा भाई श श्यू", जिसकी भावना बिलकुल वैसी ही है जैसी हम चाहते हैं। अतीत काल में हम इसी भावना से प्रेरित होकर क्रान्ति चलाते रहे हैं। हर आदमी की सिर्फ एक जिन्दगी होती है। यह जिन्दगी साठ, सत्तर, अस्सी या नब्बे साल की हो सकती है, यह

उसकी उम्र पर निर्भर है। जब तक आपके अन्दर काम करने की शक्ति है, तब तक आपको कुछ न कुछ काम अवश्य करना चाहिए। आपको क्रान्तिकारी उत्साह और जान की परवाह न करने की भावना से काम करना चाहिए। कुछ कामरेडों में इस उत्साह और इस भावना की कमी है और उन्होंने प्रगति करना बन्द कर दिया है। यह हालत अच्छी नहीं है और इन कामरेडों को शिक्षित किया जाना चाहिए।

समूची पार्टी को चाहिए कि वह राजनीतिक और विचारधारात्मक काम पर जोर दे। आज के सम्मेलन में उपस्थित बहुत से लोग सेना से आए हैं। सेना में हालत कैसी है ? क्या शान्तिकालीन और युद्धकालीन राजनीतिक कार्य में कोई फर्क है या नहीं ? युद्धकाल में जन-समुदाय से घनिष्ठ सम्बन्ध बनाए रखना जरूरी है, अफसरों का सिपाहियों के साथ घुलमिलकर रहना और सेना का जनता के साथ घुलमिल कर रहना जरूरी है। ऐसे समय अगर हमारे अन्दर कुछ खामियां भी रह जाएं तो जनता हमें माफ कर सकती है। अब शान्तिकाल है, हम लड़ाइयां नहीं लड़ रहे और हमें केवल ट्रेनिंग देने का काम ही करना है; अगर हम अविचल रूप से जन-समुदाय के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध न बनाए रखें, तो यह स्वाभाविक है कि हमारी खामियों को माफ करना जन-समुदाय के लिए कठिन होगा। हालांकि अब फौजी रैंक व्यवस्था[2] और अन्य व्यवस्थाएं लागू कर दी गई हैं, फिर भी उच्चतर रैंक वाले लोगों को अपने मातहत लोगों के साथ घुलमिलकर रहना चाहिए और कार्यकर्ताओं को सिपाहियों के साथ घुलमिलकर रहना चाहिएं, तथा मातहत लोगों को अपने वरिष्ठ पदाधिकारियों की आलोचना करने की और सिपाहियों को कार्यकर्ताओं की आलोचना करने की इजाजत दी जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, आलोचना करने का मौका देने के लिए पार्टी के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन बुलाया जा सकता है। ''तीन बुराई''-विरोधी आन्दोलन के दौरान कामरेड छन ई ने बहुत अच्छा कहा था : इतने वर्षों से हम लोग आदेश जारी करते आए हैं, ऐसा करना हमारे लिए बिलकुल ठीक था; क्या अब हमारे लिए यह भी बिलकुल ठीक नहीं होगा कि हम अपने मातहत लोगों को कुछ समय के लिए, एकाध हफ्ते के लिए, इस बात की इजाजत दे दें कि वे हमारी आलोचना करें ? उनका मतलब यह था कि ऐसा करना बिलकुल ठीक है। मैं उनसे सहमत हूं; मातहत लोगों को एक हफ्ते तक हमारी आलोचना करने दी जाए। आलोचना शुरू होने के पहले हम कुछ तैयारी करें, एक तरह की रिपोर्ट पेश करें और अपनी खामियों के बारे में कुछ कहें, जिसमें कुल मिलाकर शायद एक, दो, तीन या चार मुद्दे हों। इसके बाद साथियों को अपनी बात कहने दें, कुछ अन्य खामियों पर रोशनी डालने दें और आलोचना करने दें। जन-समुदाय बड़ा इंसाफपसन्द होता है, वह हमारे अच्छे काम के रिकार्ड को मिटाएगा नहीं। कम्पनी व प्लाटून कमाण्डरों को भी चाहिए कि वे अपने सैनिकों को आलोचना करने का मौका दें और सबसे अच्छा यह होगा कि साल में एक बार आलोचना करने के लिए कुछ दिनों तक मीटिंग बुलाई जाए। विगत काल में हमने सेना में इस तरह के जनवाद को लागू किया और अच्छे नतीजे हासिल किए। फौजी रैंक व्यवस्था और अन्य व्यवस्थाएं अपनाने की वजह से उच्चतर स्तरों और निम्नतर स्तरों के बीच, अफसरों और सिपाहियों के बीच, सेना और जनता के बीच तथा सशस्त्र सैन्य-शक्तियों और स्थानीय प्राधिकरणों के बीच के घनिष्ठ सम्बन्धों को क्षति न पहुंचने दी जाए। इसमें सन्देह नहीं कि

उच्चतर स्तरों को निम्नतर स्तरों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बनाए रखने चाहिए तथा उनके बीच के सम्बन्ध कामरेडों जैसे होने चाहिए। कार्यकर्ताओं को सिपाहियों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध कायम करने चाहिए और उनके साथ घुल मिल कर रहना चाहिए। सशस्त्र सैन्य-शक्तियों को भी जनता के साथ और पार्टी व सरकार के स्थानीय संगठनों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बनाए रखने चाहिए।

हमारे साथियों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि वे महज अपने पदाधिकार, ऊंचे पद और वरिष्ठता के भरोसे न रहें। जहां तक वरिष्ठता की बात है, हम अनेक वर्षों से क्रान्ति करते आ रहे हैं और हालांकि इस रिकार्ड की गणना की जा सकती है, फिर भी हमें इसी रिकार्ड के भरोसे नहीं रहना चाहिए। यह सच है कि आप एक पुराने साथी हैं, और अनेक दशकों तक काम कर चुके हैं। लेकिन यह सब होने पर भी अगर आप कोई बेवकूफी कर बैठें और कोई बेहूदा बात कह दें, तो जनता आपको माफ नहीं करेगी। पहले आपने चाहे कितने ही अच्छे काम क्यों न किए हों और आपका पद चाहे कितना ही ऊंचा क्यों न हो, अगर आज आप अपना काम अच्छी तरह नहीं करते, समस्याओं को सही ढंग से हल नहीं करते और इस प्रकार जनता के हितों को क्षति पहुंचाते हैं, तो जनता आपको माफ नहीं करेगी। इसलिए हमारे साथियों को चाहिए कि वे वरिष्ठता पर नहीं बल्कि समस्याओं को सही ढंग से हल करने पर निर्भर रहें। यहां निर्णायक बात है सही होना, वरिष्ठता होना नहीं। चूंकि आप अपनी वरिष्ठता के भरोसे नहीं रह सकते, इसलिए अच्छा यह होगा कि आप उसे भूल जाएं, मानो अब तक आप कभी अफसर रहे ही न हों; दूसरे शब्दों में, यह जरूरी है कि आप नवाबों जैसे और नौकरशाहों जैसे अहंकारी न बनें, अपने अहंकार को तिलांजलि दे दें तथा जनता के बीच और अपने मातहत लोगों के बीच जाएं। यह एक ऐसी बात है जिसे हमारे कार्यकर्ताओं को और खास तौर पर पुराने कार्यकर्ताओं को ध्यान में रखना चाहिए। आम तौर पर नए कार्यकर्ताओं के दिमाग पर इस तरह का बोझ नहीं होता, वे इससे अपेक्षाकृत मुक्त होते हैं। पुराने कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे नए कार्यकर्ताओं के साथ बराबरी का बरताव करें। बहुत सी बातों में पुराने कार्यकर्ता नए कार्यकर्ताओं से पीछे हैं, और उन्हें नए कार्यकर्ताओं से सीखना चाहिए।

नोट

[1] 'लिन छुङ का रातोंरात पलायन' मिङ वंश में रचित 'तलवार की कहानी' नामक खुनछ्वी ऑपेरा का एक अंक है। खुनछ्वी ऑपेरा का जन्म च्याङसू प्रान्त के खुनशान में हुआ था।

[2] फौजी रैंक व्यवस्था सितम्बर 1955 में शुरू की गई थी और मई 1965 में खत्म कर दी गई थी।

परिवर्तन होने लगा है

15 मई 1957

सामाजिक जीवन में विपरीत तत्वों के बीच एकता और संघर्ष सार्वभौमिक परिघटनाएं हैं। संघर्ष के परिणामस्वरूप विपरीत तत्व एक दूसरे में बदल जाते हैं और एक नई एकता कायम हो जाती है, तथा इस प्रकार सामाजिक जीवन एक कदम और आगे बढ़ जाता है।

कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर चलाया गया दोष-निवारण आन्दोलन एक ही वस्तु में मौजूद दो कार्यशैलियों के बीच का संघर्ष है। यह बात कम्युनिस्ट पार्टी के लिए सही है तथा साथ ही समूची जनता के लिए भी सही है।

कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर तरह-तरह के लोग हैं। उनमें मार्क्सवादी हैं, जो बहुसंख्या में हैं। इन लोगों में भी खामियां हैं, लेकिन गम्भीर खामियां नहीं हैं। कुछ लोग ऐसे हैं जिनके विचारों में कठमुल्लावाद की गलती मौजूद है। इनमें से अधिकांश लोग अडिग-अविचल और विश्वसनीय हैं, तथा पार्टी और देश के प्रति वफादार हैं, केवल समस्याओं के प्रति उनके दृष्टिकोण में ''वामपंथी'' एकतरफापन दिखाई देता है। अगर इस एकतरफापन को दूर कर दिया जाए, तो वे एक लम्बा डग भरते हुए आगे बढ़ जाएंगे। कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनके विचारों में संशोधनवाद या दक्षिणपंथी अवसरवाद की गलती मौजूद है। ऐसे लोगों से ज्यादा खतरा है, क्योंकि उनके विचार पार्टी के भीतर पूंजीवादी विचारधारा के प्रतिबिम्ब हैं, और क्योंकि वे पूंजीवादी उदारतावाद के लिए लालायित रहते हैं, हर चीज को नकार देते हैं और पार्टी के बाहर के पूंजीवादी बुद्धिजीवियों के साथ हजारों तरह के सम्बन्ध रखते हैं। पिछले चन्द महीनों में लोगों ने कठमुल्लावाद की तो आलोचना की है लेकिन संशोधनवाद को बिना चुनौती दिए खुला छोड़ दिया है। कठमुल्लावाद की आलोचना की जानी चाहिए, अन्यथा बहुत सी गलतियों को सुधारा नहीं जा सकेगा। अब समय आ गया है कि हम अपना ध्यान संशोधनवाद की आलोचना पर केन्द्रित करें। जब कठमुल्लावाद अपने विपरीत तत्व में बदल जाता है तो वह या तो मार्क्सवाद बन जाता है या संशोधनवाद। हमारी पार्टी के अनुभव से यह जाहिर होता है कि कठमुल्लावाद के मार्क्सवाद में बदलने के उदाहरण ज्यादा हैं और संशोधनवाद में बदलने के बहुत कम। कारण, कठमुल्लावाद सर्वहारा विचारधारा की एक ऐसी शाखा का प्रतिनिधित्व करता है जिस पर निम्न-पूंजीवादी उन्माद की छाप होती है। कुछ मामलों में जिस चीज को ''कठमुल्लावाद'' का नाम देकर प्रहार का निशाना बनाया जाता है वह दरअसल केवल काम के दौरान होने वाली गलतियां होती हैं। अन्य मामलों में जिस चीज को ''कठमुल्लावाद'' का

पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच वितरित एक लेख।

नाम देकर प्रहार का निशाना बनाया जाता है वह मार्क्सवाद ही होता है, जिसे कुछ लोग गलती से ''कठमुल्लावाद'' समझकर उस पर प्रहार करते हैं। असली कठमुल्लावादी यह सोचते हैं कि ''वामपंथी'' होना दक्षिणपंथी होने से ज्यादा अच्छा है, और उनके ऐसा सोचने का कारण भी है – वे लोग क्रान्ति करना चाहते हैं। लेकिन क्रान्तिकारी कार्य को पहुंचने वाली क्षति की दृष्टि से ''वामपंथी'' होना दक्षिणपंथी होने से किसी भी हालत में बेहतर नहीं है, इसलिए इस गलती को दृढ़ता के साथ सुधार लिया जाना चाहिए। कुछ गलतियां केन्द्रीय प्राधिकरणों की नीतियों को लागू करने की वजह से होती हैं; उनके लिए निचले स्तरों पर काम करने वाले लोगों की बहुत ज्यादा निन्दा नहीं की जानी चाहिए। हमारी पार्टी में एक बड़ी संख्या ऐसे नए सदस्यों की है (नौजवान संघ में यह संख्या और भी ज्यादा बड़ी है) जो बुद्धिजीवी हैं और यह सच है कि उनमें से कुछ लोग संशोधनवादी विचारों से बुरी तरह आक्रान्त हैं। वे लोग समाचारपत्रों की पार्टी भावना को और उनके वर्ग-स्वरूप को स्वीकार नहीं करते, सर्वहारा पत्रकारिता और पूंजीवादी पत्रकारिता के बीच के उसूली फर्क को गड्डमड्ड कर देते हैं, तथा समाजवादी देशों की सामूहिक अर्थव्यवस्था को प्रतिबिम्बित करने वाली पत्रकारिता और पूंजीवादी देशों की अर्थव्यवस्था को, जिसमें अराजकता की स्थिति और इजारेदार ग्रुपों के बीच की प्रतिस्पर्द्धा मौजूद रहती है, प्रतिबिम्बित करने वाली पत्रकारिता के बीच के फर्क को गड्डमड्ड कर देते हैं। वे लोग पूंजीवादी उदारतावाद की सराहना करते हैं और पार्टी के नेतृत्व का विरोध करते हैं। वे लोग जनवाद की हिमायत करते हैं और केन्द्रीयता का विरोध करते हैं। वे लोग संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्रों में (जिनमें पत्रकारिता भी शामिल है) आवश्यक और समुचित केन्द्रीयता वाले नेतृत्व, नियोजन और नियंत्रण का, जो योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था को लागू करने के लिए अनिवार्य है, विरोध करते हैं। वे लोग पार्टी के बाहर के दक्षिणपक्षी बुद्धिजीवियों के सुर में सुर मिलाते हैं और उनके साथ मेल-मिलाप रखते हैं, मानो वे एक दूसरे के सगे भाई हों। कठमुल्लावादी की आलोचना करने वालों में तरह-तरह के लोग हैं। उनमें कम्युनिस्ट यानी मार्क्सवादी लोग हैं; तथाकथित कम्युनिस्ट, यानी कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर मौजूद दक्षिणपंथी या संशोधनवादी लोग हैं। पार्टी के बाहर वामपंथी, मध्यवर्ती और दक्षिणपंथी लोग भी इसकी आलोचना करते हैं। मध्यवर्ती लोगों की संख्या बहुत बड़ी है, यह पार्टी के बाहर के बुद्धिजीवियों की कुल संख्या की लगभग 70 प्रतिशत है, जबकि वामपंथियों की संख्या लगभग 20 प्रतिशत और दक्षिणपंथियों की संख्या अलग-अलग स्थिति के अनुसार लगभग एक, तीन, पांच, या दस प्रतिशत है।

आजकल जनवादी पार्टियों और उच्च शिक्षा प्रतिष्ठानों में दक्षिणपंथी सबसे ज्यादा दृढ़ता और उग्रता के साथ प्रकट हो रहे हैं। वे समझते हैं कि मध्यवर्ती तत्व उनके पक्ष में हैं और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व का अनुसरण नहीं करेंगे, लेकिन यह वास्तव में एक दिवास्वप्न है। मध्यवर्ती तत्वों में कुछ लोग ढुलमुल होते हैं, वे कभी दायीं ओर तो कभी बायीं ओर भटक सकते हैं, और यह भी हो सकता है कि वे दक्षिणपंथियों के उन्मादपूर्ण प्रहार के सामने फिलहाल मौन धारण करना चाहें तथा कुछ समय तक प्रतीक्षा करना चाहें और देखना चाहें कि आगे क्या होता है। दक्षिणपंथी अभी अपने आक्रमण की चरम सीमा पर नहीं पहुंचे और जोर-शोर से प्रहार करने में जुटे हुए हैं। दक्षिणपंथियों को, चाहे वे पार्टी के भीतर हों या बाहर,

द्वन्द्ववाद की कोई जानकारी नहीं है – वस्तुएं जब अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाती हैं तो वे अपने विपरीत तत्वों में बदल जाती हैं। हम लोग दक्षिणपंथियों को कुछ समय तक उन्मत्त होकर दौड़ने देंगे और उन्हें अपनी चरम सीमा पर पहुंचने देंगे। वे जितने ज्यादा उन्मत्त होकर दौड़ेंगे, हमारे लिए उतना ही फायदेमन्द होगा। कुछ लोग कहते हैं, उन्हें इस बात का डर है कि कहीं उन्हें मछली की तरह कांटे में न फंसा लिया जाए, कुछ अन्य लोग कहते हैं, उन्हें इस बात का डर है कि कहीं उन्हें भुलावा देकर किसी गहरी जगह ले जाकर और घेरा डालकर उनका सफाया न कर दिया जाए। अब चूंकि बेशुमार मछलियां खुद-ब-खुद पानी की सतह पर आ गई हैं, इसलिए उन्हें कांटे में फंसाने की जरूरत नहीं है। ये मछलियां साधारण किस्म की नहीं हैं, बल्कि पैने दांतों वाली नरभक्षी शार्क मछलियां जैसी हैं। ऐसी ही शार्क मछलियों के पंख लोग खाते भी हैं। दक्षिणपंथियों के खिलाफ हमारा संघर्ष उन मध्यवर्ती तत्वों को अपने पक्ष में करने के काम पर केन्द्रित है जिन्हें हमारे पक्ष में किया जा सकता है। दक्षिणपंथियों का यह दावा कि वे जनता के जनवादी अधिनायकत्व, जन-सरकार, समाजवाद और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व का समर्थन करते हैं, महज एक झूठ का पुलिन्दा है, और उस पर किसी भी सूरत में विश्वास नहीं किया जाना चाहिए। यह बात सभी दक्षिणपंथियों पर लागू होती है, चाहे वे जनवादी पार्टियों में हों अथवा शिक्षा, कला-साहित्य, पत्रकारिता, विज्ञान-प्रौद्योगिकी तथा उद्योग व वाणिज्य के क्षेत्र में। दो किस्म के लोग सबसे ज्यादा अड़ियल हैं – वामपंथी और दक्षिणपंथी। ये दोनों ही मध्यवर्ती तत्वों को अपने पक्ष में करने और उन पर अपना नेतृत्व कायम करने की कोशिश कर रहे हैं। दक्षिणपंथियों की यह कोशिश रहती है कि पहले उनके एक हिस्से को और बाद में सबको अपने पक्ष में कर लिया जाए। शुरू में वे पत्रकारिता, शिक्षा, कला-साहित्य और विज्ञान-प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में नेतृत्व हथियाने की कोशिश कर रहे हैं। वे जानते हैं कि इन क्षेत्रों में कम्युनिस्ट उनकी तुलना में ज्यादा निपुण नहीं हैं, और असली हालत भी ठीक ऐसी ही है। वे समझते हैं कि वे "राष्ट्र के अनमोल रत्न" हैं, और उन्हें छूने-छेड़ने की इजाजत नहीं है। "तीन बुराई"-विरोधी आन्दोलन चलाना, प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करना और विचारधारात्मक नव रूपान्तर करना – कैसा अन्याय है, कैसी धृष्टता है ! वे यह भी जानते हैं कि बहुत से कालेज-विद्यार्थी जमींदारों, धनी किसानों और पूंजीपतियों के परिवारों से आए हैं तथा उन्हें विश्वास है कि ये विद्यार्थी उनके आवाहन पर उठ खड़े होंगे। जिन विद्यार्थियों के दिमाग में दक्षिणपंथी भटकाववादी विचार मौजूद हैं, उनका ऐसा करना सम्भव है। लेकिन यह सोचना कि अधिकांश विद्यार्थी ऐसा ही करेंगे, महज एक खाम-खयाली है। इस बात के संकेत भी मौजूद हैं कि पत्रकारिता के क्षेत्र में काम करने वाले दक्षिणपंथी लोग मजदूरों और किसानों को सरकार का विरोध करने के लिए उकसावा दे रहे हैं।

कुछ लोग राजनीतिक लेबिल लगाने का विरोध करते हैं, लेकिन वे इसका विरोध केवल तभी करते हैं जब कम्युनिस्ट पार्टी उन पर लेबिल लगा रही हो। जब कम्युनिस्टों, जनवादी पार्टियों तथा समाज के विविध व्यवसायों के वामपंथी व मध्यवर्ती तत्वों पर वे स्वयं लेबिल लगाते हैं, तो अपने को पूरी तरह आजाद समझते हैं। पिछले चन्द महीनों में दक्षिणपंथियों ने न जाने कितने लेबिल गढ़कर अखबारों में प्रकाशित कराये हैं ! मध्यवर्ती तत्व लेबिल लगाने का बड़ी ईमानदारी से विरोध करते हैं। मध्यवर्ती तत्वों पर हमने पहले जितने भी अनुचित

लेबिल लगाए हैं उन सबको हटा दिया जाना चाहिए और भविष्य में भी अन्धाधुन्ध तरीके से लेबिल नहीं लगाए जाने चाहिए। "तीन बुराई"-विरोधी आन्दोलन में, प्रतिक्रान्तिकारियों का दमन करने में और विचारधारात्मक नव रूपान्तर करने में, अगर सचमुच किसी व्यक्ति के साथ, चाहे वह कोई भी क्यों न हो, अन्याय हुआ है, तो उस गलती को सार्वजनिक रूप से सुधार लेना चाहिए। लेकिन दक्षिणपंथियों पर लेबिल लगाना दूसरी बात है। फिर भी यह लेबिल उचित होना चाहिए और दक्षिणपंथी का लेबिल सिर्फ उन्हीं लोगों पर लगाया जाना चाहिए जो सचमुच दक्षिणपंथी हैं। कुछ इने-गिने व्यक्तियों को छोड़कर, दक्षिणपंथियों के नामों का ऐलान सार्वजनिक रूप से करने की जरूरत नहीं है, उनके उद्धार का रास्ता खुला रखा जाना चाहिए, ताकि अनुकूल परिस्थिति आने पर वे आसानी से समझौता कर सकें। जब हम कहते हैं कि दक्षिणपंथियों की संख्या एक, तीन, पांच या दस प्रतिशत है, तो यह केवल एक अनुमान है, उनकी संख्या इससे कुछ ज्यादा या कुछ कम भी हो सकती है। इसके अलावा अलग-अलग इकाइयों की स्थिति भी अलग-अलग है, इसलिए पुख्ता सबूत हासिल करना, तथ्यों के जरिए सत्य की तलाश करना और ज्यादतियां करने से बचना आवश्यक है, क्योंकि ज्यादतियां करना गलत है।

पूंजीपति वर्ग के लोग और बहुत से ऐसे बुद्धिजीवी जो पहले पुराने समाज की सेवा करते थे, अनिवार्य रूप से बड़ी हठधर्मी के साथ अपना इरादा जता रहे हैं, अनिवार्य रूप से अपनी पुरानी दुनिया के लिए लालायित रहते हैं और अनिवार्य रूप से अपने को नई दुनिया के अनुकूल नहीं समझते। उनका नव रूपान्तर करने के लिए एक लम्बे समय की आवश्यकता होगी, और इस प्रक्रिया में सख्त उपायों का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। दूसरी तरफ हमें इस तथ्य को भी ध्यान में रखना चाहिए कि मुक्ति के बाद के आरम्भिक काल के मुकाबले उनमें से अधिकांश लोगों ने काफी उन्नति की है, तथा हमारे काम के बारे में उनकी ज्यादातर आलोचनाएं सही हैं और उन्हें अपना लिया जाना चाहिए। केवल कुछ ही आलोचनाएं गलत हैं, और ऐसे मामलों में समस्याओं का स्पष्टीकरण कर दिया जाना चाहिए। उनकी यह मांग उचित है कि उन पर विश्वास किया जाए और उन्हें ओहदे के मुताबिक प्राधिकार दिया जाए; यह जरूरी है कि उन पर विश्वास किया जाए और उन्हें प्राधिकार और उत्तरदायित्व दिए जाएं। दक्षिणपंथियों द्वारा की गई आलोचनाओं में भी कुछ आलोचनाएं सही हैं और उन्हें एकदम ठुकरा नहीं दिया जाना चाहिए। उनके द्वारा की गई जो आलोचनाएं सही हैं उन्हें स्वीकार कर लिया जाना चाहिए। दक्षिणपंथियों की विशेषता है उनका दक्षिणपंथी राजनीतिक रुख। वे लोग हमारे साथ जो सहयोग कर रहे हैं वह केवल बाहरी दिखावा वाला है, असली सहयोग नहीं है। कुछ मामलों में उनका सहयोग रहता है, अन्य मामलों में नहीं। सामान्य स्थिति में उनका सहयोग रहता है, लेकिन जब कभी कोई ऐसा मौका होता है जिसका वे फायदा उठा सकें, जैसा कि इस समय है, तो वे दरअसल कोई सहयोग नहीं करना चाहते। ऐसे समय वे कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व स्वीकार करने की अपनी प्रतिज्ञा का उल्लंघन कर देते हैं। और इस नेतृत्व से छुटकारा पाने की कोशिश करते हैं। लेकिन इस नेतृत्व के बिना समाजवाद का निर्माण करना असम्भव हो जाएगा और हमारा राष्ट्र भारी संकट में पड़ जाएगा।

चीन में पूंजीवादी तत्व और ऐसे बुद्धिजीवी, जिन्होंने पहले पुराने समाज की सेवा की है,

दसियों लाख हैं और हमें अपने काम के लिए उनकी जरूरत है; हमें उनके साथ अपने सम्बन्धों को और ज्यादा बेहतर बना लेना चाहिए, ताकि वे लोग और अधिक कारगर रूप से समाजवादी कार्य की सेवा कर सकें, ताकि हम उनका और ज्यादा अच्छी तरह नव रूपान्तर कर सकें और कदम-ब-कदम मजदूर वर्ग का हिस्सा बनने में उनकी मदद कर सकें, तथा इस प्रकार उनकी वर्तमान स्थिति को उसकी विपरीत स्थिति में बदल सकें। उनमें से अधिकांश लोग इस लक्ष्य तक अवश्य पहुंच सकते हैं। नव रूपान्तर करने में एकता और संघर्ष दोनों शामिल हैं, संघर्ष एकता कायम करने का साधन है तो एकता साध्य है। संघर्ष पारस्परिक होता है; आज ऐसा समय है जबकि बहुत से लोग हमारे खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं। अधिकांश लोगों द्वारा की गई आलोचनाएं युक्तिसंगत हैं या बुनियादी तौर पर युक्तिसंगत हैं, जिनमें पेकिङ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर फू इङ द्वारा की गई आलोचना जैसी कड़ी आलोचनाएं भी शामिल हैं, जो समाचारपत्रों में प्रकाशित नहीं की गईं। वे लोग इस उम्मीद से आलोचना करते हैं कि हमारे साथ उनके सम्बन्ध सुधर जाएं, इसलिए ये आलोचनाएं अच्छे आशय से की गई हैं। लेकिन दक्षिणपंथियों द्वारा की गई आलोचनाएं आम तौर पर द्वेषपूर्ण होती हैं, क्योंकि वे हमसे शत्रुता रखते हैं। आशय अच्छा है या बुरा, यह केवल अनुमान का सवाल नहीं है बल्कि इसे साफ तौर पर देखा जा सकता है।

मौजूदा आलोचना व दोष-निवारण आन्दोलन कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा छेड़ा गया है। जैसा कि हमारा अनुमान था और हमें आशा थी, सुगंधित फूलों के साथ-साथ जहरीली खरपतवार भी उगती जा रही है और एकश्रृंगी दैवीपशु व अमरपक्षी के साथ-साथ भूत-प्रेत व दैत्य-दानव भी दृष्टिगोचर होते जा रहे हैं। फिर भी अच्छी चीजें बुरी चीजों से ज्यादा हैं। कुछ लोग कहते हैं कि हम बड़ी मछलियां पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं, हम कहते हैं कि हम जहरीली खरपतवार को उखाड़ रहे हैं; बात एक ही है, मगर कहने के तरीके अलग-अलग हैं। दक्षिणपंथी, जो कम्युनिस्ट-विरोधी भावना रखते हैं, अपना मकसद हासिल करने के लिए चीन में फसलों व मकानों को तबाह करने वाला सातवें दर्जे से भी बड़ा तूफान बरपा करने की हरचन्द कोशिश कर रहे हैं। वे जितना ज्यादा अनौचित्य प्रदर्शित करेंगे उतनी ही जल्दी कम्युनिस्ट पार्टी से सहयोग करने और उसका नेतृत्व स्वीकार करने के विपरीत, जिसका वे अब तक स्वांग रचते रहे हैं, अपनी असलियत जाहिर कर देंगे, और इस प्रकार जनता समझ जाएगी कि वे केवल कम्युनिस्ट पार्टी और जनता का विरोध करने वाले मुट्ठीभर दैत्य-दानव ही हैं। तब वे अपनी कब्र स्वयं खोद लेंगे। क्या इसमें कोई बुराई है ?

दक्षिणपंथियों के सामने दो विकल्प हैं : एक है अपनी दुम दोनों टांगों के बीच दबाकर बैठे रहना और अपनी गलतियों को सुधार लेना। दूसरा है उपद्रव करना जारी रखना और अपने विनाश को आमंत्रित करना। दक्षिणपंथी महानुभावो, आप लोग इनमें जिसे चाहें चुन सकते हैं, पहल (थोड़े समय के लिए) आपके हाथ में है।

हमारे देश में पूंजीपति वर्ग और पूंजीवादी बुद्धिजीवियों के राजनीतिक रूप से ईमानदार या बेईमान होने और अच्छे या बुरे होने की जांच करने की कई कसौटियां हैं। मुख्य चीज यह देखना है कि वे सचमुच समाजवाद चाहते हैं या नहीं और सचमुच कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व स्वीकार करते हैं या नहीं। इन दोनों बातों से वे बहुत पहले ही सहमत हो गए थे, लेकिन

अब कुछ लोग अपने वचन से पीछे हटना चाहते हैं, और ऐसा करने की इजाजत नहीं दी जा सकती। अगर वे इन दो बातों को स्वीकार नहीं करते, तो चीन लोक गणराज्य में उनके लिए कोई स्थान नहीं है। आप पश्चिमी दुनिया (जिसे आजाद दुनिया भी कहा जाता है) के आदर्शों से प्रेरित हैं, अच्छा होगा कि आप वहीं चले जाएं !

इतने प्रतिक्रियावादी और जहरीले बयानों को अखबारों में प्रकाशित करने की इजाजत क्यों दी गई है ? इसलिए कि जनता को इन जहरीली खरपतवारों और अनिष्टकारी गैसों के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त हो जाए, ताकि वह इनको उखाड़ फेंके या नष्ट कर दे।

"इस बात को आप लोगों ने पहले क्यों नहीं बताया ?" नहीं बताया ? क्या हमने बहुत पहले ही यह नहीं बता दिया था कि तमाम जहरीली खरपतवारों को उखाड़ फेंका जाना चाहिए ?

"आप लोग जन-समुदाय को वामपंथी, मध्यवर्ती और दक्षिणपंथी लोगों में विभाजित करते हैं, क्या यह वास्तविक स्थिति के विपरीत नहीं है ?" निर्जन रेगिस्तान को छोड़कर, जहां कहीं भी जन-समुदाय है, वह अनिवार्य रूप से वामपंथी, मध्यवर्ती और दक्षिणपंथी लोगों में विभाजित है और दस हजार साल बाद भी ऐसी ही हालत बनी रहेगी। क्या यह वास्तविक स्थिति के विपरीत है ? इस विभाजन से जन-समुदाय को लोगों की जांच-पड़ताल करने में मार्गदर्शन प्राप्त होगा तथा मध्यवर्ती तत्वों को अपने पक्ष में करना और दक्षिणपंथियों को अलगाव में डालना आसान हो जाएगा।

"दक्षिणपंथियों को अपने पक्ष में क्यों नहीं कर लेते ?" हम इसकी कोशिश करेंगे। लेकिन उन्हें अपने पक्ष में करना तब तक सम्भव नहीं होगा जब तक वे अलगाव महसूस नहीं करने लगेंगे। इस समय तो वे हवाई घोड़े पर सवार हैं और कम्युनिस्ट पार्टी को खत्म करने पर तुले हुए हैं, ऐसी हालत में भला उन्हें काबू में कैसे किया जा सकता है ? अलगाव से उनमें विभाजन पैदा हो जाएगा और हमें दक्षिणपंथियों के बीच विभाजन पैदा कर देना चाहिए। हम शुरू से ही जन-समुदाय को वामपंथी, मध्यवर्ती और दक्षिणपंथी लोगों में, यानी प्रगतिशील, दरमियानी और पिछड़े हुए लोगों में बांटते आए हैं; यह कोई नई बात नहीं है, केवल कुछ लोगों की याददाश्त जरा कमजोर है।

क्या आप पूरी ताकत से लोगों की "खबर लेने" जा रहे हैं ? यह इस बात पर निर्भर है कि दक्षिणपंथी महानुभाव कैसे आचरण करते हैं। हमें जहरीली खरपतवार को उखाड़ फेंकना है, और इसका मतलब है विचारधारात्मक जहरीली खरपतवार को उखाड़ फेंकना। लोगों की "खबर लेना" दूसरी बात है। किसी भी व्यक्ति की तब तक "खबर नहीं ली" जाएगी जब तक वह "गम्भीर रूप से कानून का उल्लंघन" नहीं करेगा। "गम्भीर रूप से कानून का उल्लंघन" करने का क्या मतलब है ? इसका मतलब है बारम्बार चेतावनी दिए जाने पर भी दुष्ट जनों द्वारा जान-बूझकर किए गए वे काले कारनामे जिसके परिणामस्वरूप राज्य और जनता के हितों को भारी नुकसान पहुंचता है। जहां तक उन लोगों का सवाल है जो साधारण गलतियां करते हैं, उनके प्रति मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करने का सिद्धान्त अपनाने के और भी ज्यादा कारण मौजूद हैं। यह एक उचित फर्क है, जिसे पार्टी के अन्दर और बाहर दोनों जगह लागू किया जाना चाहिए। "खबर लेने" का मतलब भी मरीज

को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करना ही है।

दोष निवारण का कार्य पूरा करने में पार्टी को कितना समय लगेगा ? घटनाचक्र बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा है तथा पार्टी और जन समुदाय के बीच के सम्बन्ध तेजी से सुधरते जाएंगे। जाहिर है कि यह कार्य कुछ स्थानों में चन्द हफ्तों में, कुछ स्थानों में चन्द महीनों में और कुछ अन्य स्थानों में (उदाहरण के लिए देहाती इलाकों में) लगभग एक साल में पूरा हो जाएगा। लेकिन मार्क्सवाद का अध्ययन करने और विचारधारात्मक स्तर उन्नत करने में काफी ज्यादा समय लगेगा।

पूंजीपति वर्ग और बुद्धिजीवियों के साथ हमारी एकता और हमारे संघर्ष का अस्तित्व एक लम्बे समय तक जारी रहेगा। जब कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर दोष निवारण आन्दोलन बुनियादी तौर पर समाप्त हो जाएगा, तो हम सुझाव देंगे कि जनवादी पार्टियां और समाज के विभिन्न व्यवसायों के लोग भी अपना-अपना दोष-निवारण करें, जिससे उनकी उन्नति की रफ्तार बढ़ सके और मुट्ठीभर दक्षिणपंथी लोगों को अलगाव की स्थिति में डालना आसान हो जाए। इस समय पार्टी के बाहर के लोग हमारे दोष-निवारण में हमारी मदद कर रहे हैं। कुछ समय बाद हम उनके दोष-निवारण में उनकी मदद करेंगे। इस प्रकार की आपसी मदद के जरिए जो कुछ बुरा है उसे दूर कर दिया जाएगा, यानी उसके विपरीत तत्व में, एक अच्छी चीज में, बदल दिया जाएगा। जनता हमसे ठीक यही अपेक्षा करती है, और हमें उसकी आकांक्षा को पूरा कर चाहिए।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी समूची चीनी जनता का नेतृत्व केन्द्र है

25 मई 1957

आप लोगों की यह कांग्रेस बड़ी सफल रही है। मैं आशा करता हूं कि आप लोग एकताबद्ध हो जाएंगे और समूचे चीन के नौजवानों का नेतृत्व केन्द्र बन जाएंगे।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी समूची चीनी जनता का नेतृत्व-केन्द्र है। इस केन्द्र के बिना समाजवाद का कार्य विजयी नहीं हो सकता।

आप लोगों की यह कांग्रेस एकता की कांग्रेस है तथा इसका समूचे चीन के नौजवानों पर भारी असर पड़ेगा। मैं आप लोगों को बधाई देता हूं।

साथियो, एक हो जाओ तथा दृढ़ता और साहस के साथ समाजवाद के महान कार्य के लिए संघर्ष करो। हर ऐसी कथनी और करनी सरासर गलत है जो समाजवाद से मेल नहीं खाती।

चीनी नव जनवादी नौजवान संघ की तीसरी राष्ट्रीय कांग्रेस के समस्त डेलीगेटों से मुलाकात के समय प्रकट किए गए उद्गार।

दक्षिणपंथियों के उन्मादपूर्ण प्रहार का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए हमारी शक्तियों को एकजुट करो

8 जून 1957

प्रान्तीय व म्युनिसिपल स्तर के संगठनों तथा कालेजों व विश्वविद्यालयों में दिल खोलकर राय पेश करने के लिए लगभग पन्द्रह दिन का समय काफी होगा। प्रतिक्रियावादी तत्वों ने उन्मादपूर्ण प्रहार किया है। पार्टी और नौजवान संघ के सदस्यों में जो लोग ढुलमुल थे वे हमारा साथ छोड़कर या तो उनकी ओर जा मिले हैं अथवा जा मिलने की सोच रहे हैं। पार्टी और नौजवान संघ के व्यापक सदस्यों में से सक्रिय और मध्यवर्ती तत्व उनका मुकाबला करने के लिए मैदान में कूद पड़े हैं। बड़े अक्षर वाले पोस्टर को हथियार के तौर पर इस्तेमाल करते हुए दोनों पक्ष संघर्ष के दौरान अनुभव प्राप्त करते जा रहे हैं और उसकी आग में तपते जा रहे हैं। हमें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि प्रतिक्रियावादी तत्वों की संख्या केवल कुछ ही प्रतिशत है और अत्यन्त उन्मादपूर्ण तत्वों की संख्या एक प्रतिशत से ज्यादा नहीं है। इस बात से भयभीत न हों कि इस समय आसमान काले बादलों से घिरा मालूम होता है। प्रतिक्रियावादी तत्व अपने संगठनों और स्कूल-कालेजों से बाहर निकल कर कारखानों में और अन्य स्कूल-कालेजों में सरगरमियां करने जाएंगे; उन्हें रोकने के लिए एहतियाती कदम उठाए जाने चाहिए। कारखानों में मुख्य कार्यकर्ताओं और अनुभवी मजदूरों की मीटिंग बुलाई जाए और उन्हें समझाया जाए कि कुछ बुरे पूंजीपति, बुरे बुद्धिजीवी और समाज में मौजूद प्रतिक्रियावादी तत्व मजदूर वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी पर बड़े पागलपन के साथ प्रहार कर रहे हैं और मजदूर वर्ग के नेतृत्व वाली राजसत्ता का तख्ता उलट देने की कोशिश कर रहे हैं, तथा उनसे सतर्क रहना चाहिए और उनके धोखे में नहीं आना चाहिए। जो कोई भी जनता को भड़काने की कोशिश कर रहा हो, उसकी करतूतों को रोक दिया जाए। सड़कों की दीवारों पर लगाए जाने वाले प्रतिक्रियावादी पोस्टरों को फाड़ देने के लिए जन-समुदाय को गोलबन्द किया जाए। कारखानों के मजदूरों के लिए यह जरूरी है कि वे समूची परिस्थिति को स्पष्ट रूप से समझ लें और कोई गड़बड़ी पैदा न करें। इस बीच उन्हें अपने कल्याण-कार्य और वेतन इत्यादि से सम्बन्धित मामलों को नहीं उठाना चाहिए, बल्कि एक होकर अपनी गतिविधियों को प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ केन्द्रित करना चाहिए।

जनवादी पार्टियों में मौजूद प्रतिक्रियावादी तत्वों के उन्मादपूर्ण प्रहार पर ध्यान दिया जाय।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए तैयार किए गए एक अन्तःपार्टी निदेश का मसौदा।

इन पार्टियों में से हर पार्टी को खुद अपनी गोष्ठी बुलाने के लिए प्रेरित किया जाय, जिसमें वामपंथी, मध्यवर्ती और दक्षिणपंथी तत्व शामिल हों, तथा उसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह की रायों को पेश करने दिया जाए और गोष्ठी में हुए वाद-विवाद की रिपोर्ट तैयार करने के लिए सम्वाददाताओं को भेजा जाए। हमें बड़ी होशियारी के साथ वामपंथी और मध्यवर्ती तत्वों को गोष्ठी में बोलने और दक्षिणपंथियों पर प्रत्याक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। यह एक बहुत कारगर तरीका है। हर जगह के पार्टी-अखबारों को चाहिए कि वे दर्जनों लेख तैयार रखें और जब वहां दक्षिणपंथियों के प्रहार के ज्वार में उतार आने लगे तो उन्हें रोजाना प्रकाशित करते रहें। मध्यवर्ती और वामपंथी तत्वों को अखबारों के लिए लेख लिखवाने के उद्देश्य से संगठित करने की ओर ध्यान दिया जाए। लेकिन पार्टी-अखबारों को चाहिए कि वे ज्वार में उतार आने के पहले सकारात्मक दृष्टिकोण प्रकट करने वाले लेखों की संख्या सीमित रखें (वे मध्यवर्ती तत्वों द्वारा लिखे गए लेख प्रकाशित कर सकते हैं) दक्षिणपंथियों द्वारा लगाए गए बड़े अक्षर वाले पोस्टरों का खण्डन करने की जन-समुदाय को खुली छूट दी जाए। कालेजों और विश्वविद्यालयों में गोष्ठियां बुलाकर प्रोफेसरों को पार्टी के बारे में अपनी राय प्रकट करने दी जाए तथा जहां तक हो सके दक्षिणपंथियों को अपना सारा जहर उगलने का पूरा मौका दिया जाए, जिसे अखबारों में प्रकाशित कर दिया जाएगा। प्रोफेसरों को तकरीरें करने दी जाएं और विद्यार्थियों को आजादी से राय जाहिर करने दी जाए। अच्छा यह होगा कि प्रतिक्रियावादी प्रोफेसरों, लेक्चररों, सहायक लेक्चररों और विद्यार्थियों को अपना सारा जहर उगलने दिया जाए और बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी बात कहने दी जाए। वे लोग सबसे अच्छे शिक्षक होते हैं। समुचित अवसर पर फौरन पार्टी और नौजवान संघ के सदस्यों की अलग-अलग मीटिंगें बुलाकर उनमें आलोचनाओं का श्रेणी-विभाजन कर लिया जाए; जो आलोचनाएं रचनात्मक हैं उन्हें अपना लिया जाए और गलतियों व खामियों को दूर कर लिया जाए; लेकिन जो आलोचनाएं विध्वंसकारी हैं उनका खण्डन किया जाए। साथ ही कुछ गैर-पार्टी व्यक्तियों को भाषण देने और सही दृष्टिकोण प्रकट करने के लिए संगठित किया जाए। इसके बाद पार्टी का एक जिम्मेदार कार्यकर्ता, जिसकी जन-समुदाय में प्रतिष्ठा हो, सारांश निकालने वाला भाषण दे, जिसमें विश्लेषण किया गया हो और अकाट्य तर्क दिए गए हों तथा जो वातावरण में पूरा परिवर्तन ला सके। अगर सब कुछ ठीक चलता रहे तो सारी प्रक्रिया के लिए लगभग एक महीने का समय काफी होगा और तब हम पार्टी के भीतर दोष-निवारण शुरू कर सकेंगे, जिसे ''मन्द मन्थर बयार और हल्की फुहार'' की तरह चलाया जाएगा।

यह एक महान राजनीतिक और विचारधारात्मक संघर्ष है। केवल इसे चलाकर ही हमारी पार्टी पहल अपने हाथ में रख सकती है, अपने कार्यकर्ताओं को फौलाद जैसा बना सकती है, जन-समुदाय को शिक्षित कर सकती है, प्रतिक्रियावादियों को अलगाव की स्थिति में डाल सकती है और बचाव की स्थिति में पहुंचा सकती है। पिछले सात वर्षों में ऐसा लगता था मानो पहल हमारे हाथ में हो, लेकिन यह बात ज्यादा से ज्यादा सिर्फ आधी ही सच है। प्रतिक्रियावादियों द्वारा किया गया आत्मसमर्पण एक झूठा आत्मसमर्पण था और मध्यवर्ती तत्वों में भी बहुत से लोगों ने स्वेच्छा से अधीनता स्वीकार नहीं की थी। अब स्थिति बदलने लगी

है। हालांकि देखने में हम बचाव की स्थिति में मालूम होते हैं, लेकिन वास्तव में पहल हमारे हाथ में आती जा रही है। इसका कारण यह है कि हम बड़ी संजीदगी के साथ दोष-निवारण कर रहे हैं। प्रतिक्रियावादियों के हाथ में, जो अपनी बुद्धि खो बैठे हैं और बड़े पागलपन के साथ सरगरमी कर रहे हैं, पहल केवल देखने मात्र को मौजूद है, लेकिन वे दरअसल बहुत आगे बढ़ गए हैं और फलस्वरूप जन-समुदाय से अलग-थलग हो गए हैं तथा अपने को बचाव की स्थिति में पा रहे हैं। चूंकि अलग-अलग स्थानों की स्थिति अलग-अलग है, इसलिए आप लोग अपनी कार्यनीति और कार्य-विन्यास में लचीलापन ला सकते हैं।

संक्षेप में, यह एक विशाल संग्राम है (संग्राम-क्षेत्र पार्टी के भीतर और बाहर दोनों जगह है)। अगर हम इस संग्राम में विजय प्राप्त नहीं करेंगे तो समाजवाद का निर्माण करना असम्भव हो जाएगा, यहां तक कि ''हंगरी की घटना'' होने का भी कुछ खतरा पैदा हो जाएगा। अब पहल अपने हाथ में रखते हुए हमने दोष-निवारण के जरिए जानबूझकर एक सम्भावित ''हंगरी की घटना'' को आमंत्रित किया है, मगर उसे विभिन्न संगठनों व स्कूल कालेजों की बहुत सी छोटी-छोटी ''हंगरी की घटनाओं'' में खण्डित कर दिया है तथा अलग-अलग निपटाया है। इसके अलावा पार्टी और सरकार आम तौर पर अस्तव्यस्तता की स्थिति में नहीं फंसी, केवल एक बहुत छोटा सा भाग इसका अपवाद है (अच्छा है कि यह छोटा सा भाग एक पके हुए फोड़े की तरह फूट गया है और उसका मवाद बाहर निकाला जा चुका है)। यह सब बहुत फायदेमन्द है। चूंकि हमारे समाज में प्रतिक्रियावादी मौजूद थे, चूंकि मध्यवर्ती तत्वों को पहले कभी ऐसे सबक नहीं मिले जैसे कि उन्हें अब मिल रहे हैं, और चूंकि हमारी पार्टी पहले कभी ऐसी परीक्षा से नहीं गुजरी जिससे कि वह आज गुजर रही है, इसलिए एक न एक दिन गड़बड़ी पैदा होना अनिवार्य था।

आज देश के अन्दर बड़ी शानदार परिस्थिति मौजूद है; मजदूर-किसान, पार्टी, सरकार, सेना और अधिकांश विद्यार्थी दृढ़ता के साथ हमारे पक्ष में हैं। अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति बहुत अच्छी है और अमरीका को बड़ी कठिन स्थिति का सामना करना पड़ रहा है।

'वन हुवेइ पाओ' की पूंजीवादी दिशा का खण्डन किया जाना चाहिए

1 जुलाई 1957

14 जून से, जब हमारे सम्पादकीय विभाग ने ''एक अरसे तक 'वन हुवेइ पाओ' द्वारा अपनाई गई पूंजीवादी दिशा'' शीर्षक लेख प्रकाशित किया, 'वन हुवेइ पाओ' और 'क्वाङमिङ दैनिक' ने इस सवाल के बारे में कुछ आत्म आलोचना की है।

'क्वाङमिङ दैनिक' के कर्मचारियों ने कई मीटिंगें बुलाई और उसके निदेशक चाङ पो-च्युन और प्रधान सम्पादक छू आन-फिङ की गलत दिशा की कड़ी आलोचना की। यह आलोचना अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में की गई थी, और अब इस दैनिक के दृष्टिबिन्दु में बुनियादी परिवर्तन हो गया है, चाङ पो-च्युन और छू आन-फिङ की कम्युनिस्ट पार्टी-विरोधी, जन-विरोधी और समाजवाद-विरोधी पूंजीवादी कार्यदिशा के बदले क्रान्तिकारी समाजवादी कार्यदिशा अपना ली गई है। नतीजे के तौर पर 'क्वाङमिङ दैनिक' ने फिर से पाठकों का विश्वास प्राप्त कर लिया है और वह पढ़ने में एक समाजवादी अखबार मालूम होने लगा है। केवल उसकी साज-सज्जा की तकनीक में कुछ सुधार की गुंजाइश अब भी बनी हुई है। साज-सज्जा की तकनीक और साज-सज्जा का राजनीतिक दृष्टिकोण दो बिलकुल भिन्न चीजें हैं। जहां तक 'क्वाङमिङ दैनिक' का सवाल है, उसकी साज-सज्जा की तकनीक में कमी होते हुए भी उसकी साज-सज्जा का राजनीतिक दृष्टिकोण पर्याप्त है। तकनीक एक ऐसी चीज है जिसे सुधारना पूरी तरह सम्भव है। साज-सज्जा की तकनीक में परिवर्तन होने से अखबार एक नई शक्ल अख्तियार कर लेगा और उसे देखकर पाठक खुश हो जाएंगे। लेकिन यह एक आसान काम नहीं है; हमारा अखबार बहुत पहले ही इस काम को अच्छी तरह करने का संकल्प कर चुका है और कुछ सुधार भी हुआ है, लेकिन अभी अपेक्षा के अनुरूप सफलता प्राप्त नहीं हो पाई।

'वन हुवेइ पाओ' ने अपनी आत्म-आलोचना प्रकाशित की है, जिससे ऐसा मालूम होता है कि उसकी दिशा बदल गई है। साथ ही उसने सकारात्मक दिशा को प्रतिबिम्बित करने वाले बहुत से समाचार और लेख भी छापे हैं – इसमें सन्देह नहीं कि यह सब एक अच्छी बात है। लेकिन फिर भी कुछ कमियां मालूम होती हैं। जैसे रंगमंच पर अभिनय करने वाले कुछ अभिनेता बुरे आचरण वाले पात्रों की भूमिका में तो बहुत अच्छा अभिनय कर सकते हैं लेकिन अच्छे आचरण वाले पात्रों की भूमिका में कभी सफलता प्राप्त कर नहीं पाते और इस भूमिका

'रनमिन रपाओ' (जन दैनिक) के लिए लिखा गया एक सम्पादकीय।

में उनका अभिनय बिलकुल बनावटी और अस्वाभाविक होता है। इसके विपरीत अमल उनके लिए सचमुच बड़ा कठिन है। या तो पुरवा हवा पछवा हवा पर हावी हो जाती है अथवा पछवा हवा पुरवा हवा पर; दो कार्य दिशाओं के सवाल के बारे में समझौता करने की कोई गुंजाइश नहीं है। बहुत से सम्पादकों और सम्वाददाताओं को पुरानी घिसीपिटी लीक पर चलने की आदत पड़ चुकी है, और उनके लिए एकदम बदल जाना आसान नहीं है। लेकिन बदलना उन्हें अवश्य होगा, चाहे इसमें उन्हें कितनी ही कुढ़न और तकलीफ क्यों न महसूस हो, क्योंकि इसका नियमन आम रुझान द्वारा होता है। जब लोग यह कहते हैं कि बदलने की यह प्रक्रिया बड़ी सरल और सुखद है, तो वे ऐसा केवल परम्परागत शिष्टाचार के नाते कहते हैं। यह सर्वथा मानवोचित है और इसे क्षमा कर दिया जाना चाहिए। जहां तक 'वन हुवेइ पाओ' के सम्पादकीय विभाग का सम्बन्ध है, उसका मामला गम्भीर है, क्योंकि जब इस अखबार ने पूंजीवादी दिशा में हो-हल्ला मचाया था उस समय इसकी कमान उसी सम्पादकीय विभाग के हाथ में थी, इसलिए उसके कन्धों पर अब भी भारी बोझ मौजूद है जिसे आसानी से नहीं उतार फेंका जा सकता। क्या उसके ऊपर कोई अन्य कमाण्डर भी है ? जो लोग ऐसा आरोप लगाते हैं वे इस प्रश्न का उत्तर "हां" में देते हैं और जो लोग प्रतिवाद करते हैं वे इसका उत्तर "ना" में देते हैं; इतना ही नहीं, उस कमाण्डर का नाम भी बता दिया गया है और वह है चाङ पो-च्युन और ल्वो लुङ-ची के गठजोड़ का सदस्य ल्वो लुङ-ची। इन दोनों कमाण्डरों के बीच फू शी-श्यू नामक एक तीसरा व्यक्ति भी मौजूद है, जो एक सुयोग्य व कर्मठ महिला है और 'वन हुवेइ पाओ' के पेकिङ कार्यालय की इनचार्ज है। लोग कहते हैं कि ल्वो लुङ-ची, फू शी-श्यू और 'वन हुवेइ पाओ' का सम्पादकीय विभाग ये तीनों ही जनवादी संघ के दक्षिणपंथियों की कमान की उस शृंखला का प्रतिनिधित्व करते हैं जो 'वन हुवेइ पाओ' का निदेशन करती है।

जनवादी संघ ने सौ विचारशाखाओं की होड़ और दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान एक खास बुरी भूमिका अदा की है। वह संगठित रूप से क्रियाशील रहता है तथा उसकी एक सम्पूर्ण योजना, प्रोग्राम और कार्य-दिशा भी है; ये तीनों उसे जनता से अलग कर देते हैं और कम्युनिस्ट पार्टी व समाजवाद का विरोध करते हैं। इसके अलावा एक मजदूर-किसान जनवादी पार्टी भी है, जिसने बिलकुल ऐसी ही भूमिका अदा की है। इन दोनों पार्टियों ने प्रचण्ड तूफान के दिनों में अपने असली चेहरे को खास तौर पर जाहिर किया है। तूफान चाङ-ल्वो गठजोड़ ने ही खड़ा किया है। अन्य पार्टियों ने भी अपनी-अपनी भूमिका अदा की है और उनके भी कुछ सदस्य बड़े दुष्ट हैं। लेकिन उनकी संख्या अपेक्षाकृत कम है और उनकी कमान की शृंखला भी इतनी स्पष्ट नहीं है। जहां तक जनवादी संघ और मजदूर-किसान जनवादी पार्टी के आम सदस्यों का सवाल है, उनमें न तो सब लोग और न अधिकांश लोग इस मामले से सम्बन्धित हैं। दरअसल केवल मुट्ठीभर लोग, यानी प्रमुख पूंजीवादी दक्षिणपंथी लोग ही ऐसे हैं जो तूफान खड़ा करते हैं और लहरें पैदा करते हैं, गुप्त रूप से षड्यंत्र करते हैं, जन-समुदाय में असन्तोष भड़काते हैं, ऊपर और नीचे के सभी स्तरों पर सम्पर्क रखते हैं तथा चारों तरफ अनुकूल प्रतिक्रिया की तलाश में रहते हैं; केवल वही लोग ऐसे हैं जो वर्तमान परिस्थिति के बारे में यह अनुमान करते हैं कि हर जगह भारी गड़बड़ी पैदा होने से सत्ता उनके हाथ में आ सकेगी और जिनका अन्तिम उद्देश्य है अपनी इस शानदार स्कीम को कदम-ब-कदम पूरा करना।

इन पार्टियों के सदस्यों में कुछ लोग ऐसे हैं जो अपने दिमाग ठण्डे रखते हैं, बहुत से लोग ऐसे हैं जो धोखे में आ जाते हैं और केवल मुट्ठीभर लोग ही ऐसे हैं जो दक्षिण पक्ष का नाभिकेन्द्र बन जाते हैं। यद्यपि ये लोग मुट्ठीभर ही होते हैं, तथापि नाभिकेन्द्र होने की वजह से इनमें जोड़तोड़ करने की पर्याप्त शक्ति होती है। इस वर्ष पूरे वसन्त काल में चीन के आसमान पर सहसा काले बादल घिर आए थे, और इस संकट का स्रोत चाङ-ल्वो गठजोड़ में ही खोजा जा सकता है।

पत्रकार संघ द्वारा दो मीटिंगें बुलाई जा चुकी हैं। पहली मीटिंग में प्रतिवाद किया गया था और दूसरी में प्रतिवाद का प्रतिवाद। ये दोनों ही मीटिंगें केवल एक महीने से कुछ ज्यादा समय के अन्दर बुलाई गईं, जिससे यह जाहिर होता है कि चीन की परिस्थिति में कितनी तेजी से परिवर्तन हुआ है। ये मीटिंगें बहुत लाभदायक रही हैं। पहली मीटिंग के समय, जैसा कि पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी कार्यदिशा ने खुद दावा किया था, "शहर के आकाश में उमड़ने वाले काले बादलों ने उसे तहस-नहस करने का खतरा पैदा कर दिया"। लेकिन हाल ही में हुई दूसरी मीटिंग में वातावरण बदल गया है, और यद्यपि दक्षिणपंथी अब भी बड़ी हठधर्मी के साथ प्रतिरोध कर रहे हैं तथापि यह कहा जा सकता है कि अधिकांश लोगों ने सही दिशा खोज ली है।

14 जून को 'वन हुवेइ पाओ' ने आत्म-आलोचना की और यह स्वीकार किया कि उसने कुछ गलतियां की हैं। आत्म-आलोचना करना एक अच्छी बात है और हम इसका स्वागत करते हैं। लेकिन हम समझते हैं कि 'वन हुवेइ पाओ' की आत्म-आलोचना अपर्याप्त है। और जिन बातों के अभाव के कारण वह अपर्याप्त है उनका स्वरूप बुनियादी है। इसका मतलब यह है कि इस अखबार ने बुनियादी बातों के बारे में कोई आत्म-आलोचना नहीं की। इसके विपरीत 14 जून के अपने सम्पादकीय में उसने अपनी गलतियों के लिए सफाई पेश करते हुए कहा : "दिल खोलकर राय जाहिर करने के बारे में पार्टी की नीति का हमने एकतरफा और गलत अर्थ समझा, तथा यह सोचा कि दिल खोलकर राय जाहिर करने के तरीके को बिना शर्त प्रोत्साहन देना ही दोष-निवारण आन्दोलन में पार्टी की मदद करना होगा, और यह सोचा कि सकारात्मक रायों को और गलत रायों का खण्डन करने वाली आलोचनाओं को अखबार में ज्यादा जगह देना दिल खोलकर राय जाहिर करने की प्रक्रिया में बाधक होगा"। क्या यह सच है ? हरगिज नहीं। वसन्त में 'वन हुवेइ पाओ' ने जनवादी संघ के केन्द्रीय अधिकारियों की कम्युनिस्ट पार्टी-विरोधी, जन-विरोधी और समाजवाद-विरोधी नीति पर अमल करते हुए सर्वहारा वर्ग के खिलाफ बड़ी उग्रता के साथ प्रहार किया, जो कम्युनिस्ट पार्टी की नीति के बिलकुल खिलाफ था। उनकी नीति का मकसद था कम्युनिस्ट पार्टी को नेस्तनाबूद कर देना और हर जगह गड़बड़ी पैदा करना, ताकि वे स्वयं कम्युनिस्ट पार्टी की जगह ले सकें। क्या इसे सचमुच "दोष-निवारण आन्दोलन में मदद देना" कहा जा सकता है ? नहीं, यह बिलकुल झूठ है, सरासर धोखेबाजी है। क्या कुछ समय के लिए एक भी सकारात्मक राय को प्रकाशित न करना या केवल चन्द सकारात्मक रायों को प्रकाशित करना तथा गलत रायों का खण्डन न करना गलत था ? 8 मई से 7 जून तक कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के आदेशानुसार हमारे अखबार ने और अन्य सब पार्टी-अखबारों ने ठीक ऐसा ही किया था। इसका उद्देश्य

था दैत्य-दानवों और प्रेत-पिशाचों को ''दिल खोलकर राय जाहिर करने'' देना और जहरीली खरपतवार को अंकुरित होने और खूब पनपने देना, ताकि जनता यह देखकर अचम्भे में पड़ जाए कि दुनिया में अब भी ऐसी भद्दी चीजें मौजूद हैं तथा उठकर उनका सफाया कर दे। दूसरे शब्दों में, कम्युनिस्ट पार्टी ने पहले से ही अनुमान कर लिया था कि पूंजीपति वर्ग और सर्वहारा वर्ग के बीच का यह वर्ग-संघर्ष अनिवार्य है। पूंजीपति वर्ग और पूंजीवादी बुद्धिजीवियों को यह संग्राम छेड़ने दिया गया, तथा कुछ समय तक अखबारों में सकारात्मक रायें बिलकुल प्रकाशित नहीं की गईं या केवल अल्प मात्रा में ही प्रकाशित की गईं, पूंजीवादी प्रतिक्रियावादी दक्षिणपंथियों के उन्मादपूर्ण प्रहारों का जवाब नहीं दिया गया और जिन संगठनों व स्कूल-कालेजों में दोष-निवारण आन्दोलन चल रहा था वहां के पार्टी-संगठनों ने कुछ समय तक इन उन्मादपूर्ण प्रहारों का जवाब नहीं दिया। इस प्रकार जन-समुदाय स्पष्ट रूप से यह देख सका कि किन लोगों ने अच्छी नीयत से राय दी है और किन लोगों ने बुरी नीयत से, तथा इस तरह शक्तियों को एकजुट किया जा सका और मौका आने पर प्रत्याक्रमण किया जा सका। कुछ लोग कहते हैं कि यह एक गुप्त योजना थी। हम कहते हैं कि यह गुप्त नहीं बल्कि खुली योजना थी। कारण, हमने दुश्मन को पहले ही बता दिया था कि दैत्य-दानवों और प्रेत-पिशाचों का केवल तभी सफाया किया जा सकता है जब उन्हें प्रकाश में आने दिया जाए, जहरीली खरपतवार को केवल तभी उखाड़ फेंका जा सकता है जब उसे अंकुरित होने और जमीन के बाहर निकलने दिया जाए। क्या किसान लोग हर साल कई बार जमीन गोड़कर खरपतवार को नहीं उखाड़ फेंकते ? उखाड़ने के बाद खरपतवार को खाद के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। वर्ग-शत्रु मौका ढूंढकर अनिवार्य रूप से अपने मनसूबे जाहिर करेंगे। राजसत्ता और सम्पत्ति से वंचित होने के कारण वे सन्तुष्ट होकर हरगिज नहीं बैठेंगे। कम्युनिस्ट पार्टी अपने दुश्मनों को पहले से चाहे कितनी ही चेतावनी क्यों न दे और अपनी बुनियादी रणनीति को खुले तौर पर क्यों न बता दे, फिर भी वे लोग प्रहार करने से बाज नहीं आएंगे। वर्ग-संघर्ष अनिवार्य है। लोग अगर इसे टालना चाहें तो भी नहीं टाल सकते। एकमात्र उपाय यह है कि परिस्थिति का बेहतरीन इस्तेमाल करके संघर्ष को विजय तक पहुंचा दिया जाए। प्रतिक्रियावादी वर्ग-शत्रु आखिर खुद-ब-खुद जाल में क्यों फंस जाते हैं ? प्रतिक्रियावादी सामाजिक ग्रुप होने के नाते वे लाभ के प्रलोभन से अन्धे हो जाते हैं और सर्वहारा वर्ग की मुकम्मिल बरतरी की हालत को मुकम्मिल कमतरी की हालत समझ बैठते हैं। जगह-जगह आग भड़काने से मजदूरों और किसानों को उकसाया जा सकेगा, विद्यार्थियों द्वारा लिखे जानेवाले बड़े अक्षर वाले पोस्टरों से विद्यालयों को हथियाने का काम आसान हो जाएगा, दिल खोलकर राय जाहिर करने से एक विस्फोटक स्थिति पैदा हो जाएगी, हर जगह फौरन अव्यवस्था पैदा हो जाएगी और कम्युनिस्ट पार्टी तुरन्त टूट जाएगी – यह चाङ पो-च्युन द्वारा 6 जून को पेकिङ में छः प्रोफेसरों के समक्ष किया गया परिस्थिति का मूल्यांकन है। क्या यह लाभ के प्रलोभन से अन्धा होना नहीं है ? ''लाभ'' का मतलब है सत्ताधिकार हथियाना। उनके पास अखबार कम नहीं हैं, जिनमें से एक 'वन ह्वेइ पाओ' भी है। इस अखबार ने उपरोक्त प्रतिक्रियावादी नीति पर अमल किया, लेकिन 14 जून को उसने जनता को धोखा देने की कोशिश की और अच्छी नीयत से काम करने का दिखावा किया। उसने कहा : ''इस गलत समझदारी का कारण यह है कि हमारे दिमाग में

पत्रकारिता के बारे में पूंजीवादी विचारों के अवशेष मौजूद हैं।'' नहीं, यहां ''अवशेष'' की जगह ''भरमार'' होना चाहिए। कई महीनों तक यह अखबार उन प्रतिक्रियावादियों का मुखपत्र बना रहा जिन्होंने सर्वहारा वर्ग पर पागलपन के साथ आक्रमण किया था, और इसने अपनी दिशा को कम्युनिस्ट पार्टी, जनता और समाजवाद का विरोध करने वाली दिशा यानी पूंजीवादी दिशा के रूप में बदल दिया – यह सब करने के लिए क्या पूंजीवादी विचारों के कुछ अवशेष होना काफी था ? यह कैसा तर्क है ? एक विशिष्ट स्थापना के आधार पर सर्वव्यापी निष्कर्ष निकालना – ऐसा है 'वन ह्वेइ पाओ' का तर्क। 'वन ह्वेइ पाओ' ने तथ्यों के विपरीत बेशुमार प्रतिक्रियावादी रिपोर्टों को प्रकाशित किया है, बेशुमार प्रतिक्रियावादी कथनों को छापा है, तथा सर्वहारा वर्ग पर प्रहार करने के लिए, साधन के रूप में, बड़े पैमाने पर प्रतिक्रियावादी साज-सज्जा का प्रयोग किया है, लेकिन इन सब बातों के लिए वह आज तक अपनी आलोचना करने को तैयार नहीं है। 'शिन मिन पाओ' की हालत भिन्न है। वह अपेक्षाकृत संजीदगी के साथ कई बार आत्म-आलोचना कर चुका है। 'शिन मिन पाओ' की गलतियां 'वन ह्वेइ पाओ' की गलतियों जैसी गम्भीर नहीं थीं, और जब उसे मालूम हुआ कि उसने गलतियां की हैं तो बड़ी संजीदगी के साथ उन्हें सुधारना शुरू कर दिया। इससे जाहिर होता है कि इस अखबार के जिम्मेदार व्यक्तियों और सम्वाददाताओं ने जनता के कार्य के प्रति अपनी जिम्मेदारी महसूस की है, तथा इस प्रकार पाठकों की नजरों में यह अखबार अपनी संकटपूर्ण स्थिति से छुटकारा पाने लगा है। 'वन ह्वेइ पाओ' की जिम्मेदारी की भावना कहां चली गई है ? वह 'शिन मिन पाओ' का अनुसरण कब करेगा ? कर्जा चुकाना जरूरी है, 'वन ह्वेइ पाओ' अपना कर्जा चुकाना कब शुरू करेगा ? मालूम होता है 'शिन मिन पाओ' ने आत्म-आलोचना करके 'वन ह्वेइ पाओ' के लिए बहुत से कठिन सवाल खड़े कर दिए हैं, और पाठक यह पूछना चाहते हैं कि 'वन ह्वेइ पाओ' कब 'शिन मिन पाओ' के बराबर पहुंच सकेगा ? 'वन ह्वेइ पाओ' की दशा इस समय बेहद संकटपूर्ण है। जब तक 'शिन मिन पाओ' ने आत्म-आलोचना नहीं की थी तब तक ऐसा लगता था कि 'वन ह्वेइ पाओ' कुछ दिनों के लिए जैसे-तैसे काम चला लेगा, लेकिन 'शिन मिन पाओ' की आत्म-आलोचना के बाद उसकी स्थिति कठिन हो गई है। एक बुरी स्थिति एक अच्छी स्थिति में बदल सकती है, बशर्ते कि ईमानदारी के साथ 'शिन मिन पाओ' का अनुकरण किया जाए।

अब हम फिर एक बार ''पूंजीवादी दक्षिणपंथी'' शब्द की चर्चा करना चाहते हैं। पूंजीवादी दक्षिणपंथी ऊपर बताए गए वे पूंजीवादी प्रतिक्रियावादी हैं जो कम्युनिस्ट पार्टी, जनता और समाजवाद का विरोध करते हैं; यह परिभाषा वैज्ञानिक है और वास्तविकता के अनुरूप है। वे केवल मुट्ठी भर लोग हैं, जो जनवादी पार्टियों में, बुद्धिजीवियों, पूंजीपतियों व विद्यार्थियों के बीच तथा कम्युनिस्ट पार्टी और नौजवान संघ में मौजूद हैं, तथा इस बार के तूफान में ऊपर निकल आए हैं। उनकी संख्या तो बहुत कम है, लेकिन जनवादी पार्टियों में, खास तौर पर कुछ जनवादी पार्टियों में उनकी ताकत काफी है, इसलिए उनकी अवहेलना नहीं की जानी चाहिए। इन लोगों ने न सिर्फ कथनी के जरिए बल्कि करनी के जरिए भी अपने को जाहिर कर दिया है; ये लोग अपराधी हैं। ''कहने वाले को दोषी न ठहराने'' का उसूल इन पर लागू नहीं होता। ये लोग न केवल कहने वाले हैं, बल्कि करने वाले भी हैं। क्या इन्हें कानून के

मुताबिक सजा दी जानी चाहिए ? फिलहाल तो इसकी आवश्यकता नहीं मालूम होती। कारण, जनता का राज्य बिल्कुल सुरक्षित है और इनमें से अनेक लोग जाने-माने व्यक्ति भी हैं। उनके साथ नरमी से बरताव किया जा सकता है, सजा देने की जरूरत नहीं है। आम तौर पर उन्हें "दक्षिणपंथी" कहना ही काफी है, प्रतिक्रियावादी कहने की आवश्यकता नहीं है। इसका एकमात्र अपवाद केवल वे लोग हैं जो बार-बार चेतावनी दिए जाने पर भी अपनी गलतियां सुधारने से इनकार करते हैं तथा कानून का उल्लंघन करके लगातार तोड़फोड़ जारी रखते हैं; ऐसे लोगों को सजा देना आवश्यक है। भावी गलतियों से बचने के लिए पिछली गलतियों से सबक सीखने और मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करने तथा नकारात्मक तत्त्वों को सकारात्मक तत्त्वों में बदल देने के उसूल दक्षिणपंथियों पर भी लागू होते हैं। इसके अलावा दूसरी किस्म के दक्षिणपंथी भी हैं, जिन्होंने केवल कथनी में अपने को जाहिर किया है, करनी में नहीं। उनकी कथनी उपरोक्त दक्षिणपंथियों से मिलती है, लेकिन उन्होंने किसी विध्वंसकारी गतिविधि में भाग नहीं लिया है। ऐसे लोगों के साथ तो और भी ज्यादा नरमी से बरताव किया जाना चाहिए। उनके गलत कथनों का बिना किसी रियायत के मुकम्मिल तौर पर खण्डन किया जाना चाहिए, लेकिन उन लोगों को अपनी राय कायम रखने की इजाजत दी जानी चाहिए। ऊपर बताए गए विभिन्न प्रकार के दक्षिणपंथियों को भी बोलने की आजादी दी गई है। एक महान, सुरक्षित देश में थोड़ी संख्या में ऐसे लोगों के बने रहने से कोई खास हर्ज नहीं होने जा रहा, जबकि व्यापक जन-समुदाय को उनकी गलतियां मालूम हो चुकी हैं। यह समझ लेना जरूरी है कि दक्षिणपंथी ऐसे लोग हैं जो हमें अपने नकारात्मक उदाहरण से शिक्षित करते हैं। इस अर्थ में जहरीली खरपतवार भी उपयोगी साबित हो सकती है। वह ठीक इसलिए उपयोगी साबित हो सकती है क्योंकि वह जहरीली है और क्योंकि पहले उसके द्वारा फैलाए गए जहर से जनता को हानि पहुंच चुकी है।

कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर दोष-निवारण का काम जारी है और जनवादी पार्टियों ने भी अपना-अपना दोष-निवारण का काम शुरू कर दिया है। आज जबकि दक्षिणपंथियों के उन्मादपूर्ण प्रहारों को जनता द्वारा पराजित किया जा चुका है, दोष-निवारण आन्दोलन सुचारु रूप से चलाया जा सकता है।

पूंजीवादी दक्षिणपंथियों के प्रहारों का मुंहतोड़ जवाब दो

9 जुलाई 1957

मार्च में यहां मैंने पार्टी के कुछ कार्यकर्ताओं को सम्बोधित किया था। तब से सौ दिन बीत चुके हैं। इन सौ दिनों के अन्दर परिस्थिति में भारी परिवर्तन हो गया है। हमने पूंजीवादी दक्षिणपंथियों से लोहा लिया है और जनता की राजनीतिक चेतना का स्तर ऊंचा हो गया है, दरअसल काफी ऊंचा हो गया है। उस समय भी हमने इस हालत का अनुमान कर लिया था। उदाहरण के लिए, मैंने तब यहां कहा था कि जब लोग आलोचना करना शुरू करेंगे, या जब आग भड़कने लगेगी, तो क्या दर्द नहीं होगा ? मैंने यह भी कहा था कि हमें अपनी कपाल-त्वचा को पुख्ता बना कर उसे बर्दाश्त करना चाहिए। शरीर का यह भाग कपाल कहलाता है और कपाल की खाल को कपाल-त्वचा कहते हैं। अपनी कपाल-त्वचा को पुख्ता बना कर बर्दाश्त करने का मतलब यह है कि जब आप मेरी आलोचना करेंगे तो मैं अपनी कपाल-त्वचा को पुख्ता बना कर कुछ समय तक उसे सुनता रहूंगा। इसके बाद मैं आपकी बातों का विश्लेषण करूंगा और जवाब दूंगा, तथा जो कुछ ठीक है उसे स्वीकार करूंगा और जो कुछ गलत है उसकी आलोचना करूंगा।

हमारे अन्दर यह विश्वास होना चाहिए कि चाहे चीन में हो या दुनिया के किसी अन्य स्थानों में, ज्यादातर लोग अच्छे होते हैं। ज्यादातर लोगों से हमारा मतलब 51 प्रतिशत से नहीं बल्कि 90 प्रतिशत से भी अधिक लोगों से है। हमारे देश की 60 करोड़ जनता में मजदूर और किसान हमारा मुख्य सम्बल हैं। कम्युनिस्ट पार्टी, नौजवान संघ व जनवादी पार्टियों के अन्दर तथा विद्यार्थियों व बुद्धिजीवियों के बीच अधिकांश लोग निश्चित रूप से अच्छे हैं। वे सहृदय व ईमानदार हैं तथा धूर्त व बुरी नियत वाले नहीं हैं। हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए। हर राजनीतिक आन्दोलन से साबित हो चुका है। वर्तमान आन्दोलन में विद्यार्थियों की ही मिसाल लीजिए। पेकिङ विश्वविद्यालय में सात हजार से ज्यादा विद्यार्थी हैं, लेकिन दक्षिणपंथी उनमें से केवल एक, दो या तीन प्रतिशत लोग ही हैं। इस एक, दो या तीन प्रतिशत का मतलब वास्तव में क्या है ? इसका मतलब यह है कि आधार-स्तम्भ की भूमिका अदा करने वाले वे कट्टरपंथी तत्व जो समय समय पर आसमान सिर पर उठा लेते हैं, कोई पचास से ज्यादा नहीं हैं, या एक प्रतिशत से भी कम हैं। बाकी एक-दो प्रतिशत लोग उनके चारण मात्र हैं।

आग प्रज्वलित करना और उसकी लपटों को अपने यहां भी फैला देना आसान काम नहीं

शांघाई में आयोजित एक कार्यकर्ता सम्मेलन में दिया गया भाषण।

है। अब मैंने सुना है कि इस शहर के कुछ साथियों को इस बात का पछतावा है कि आग को काफी मात्रा में प्रज्वलित नहीं किया गया। मेरा खयाल है कि शांघाई में आग को लगभग ठीक ही मात्रा में प्रज्वलित किया गया था, वह लगभग काफी थी, लेकिन इतनी तेज नहीं थी कि सन्तोष हो जाए। अगर आप इसके अद्भुत प्रभाव का पहले से ही अनुमान कर सकते, तो क्या उसे प्रज्वलित न होने देते ? जहरीली खरपतवार को अंकुरित होने दें, दैत्यों व दानवों को प्रकट होने दें। उनसे डरते क्यों हैं ? मार्च में भी मैंने कहा था कि उनसे डरने की जरूरत नहीं है। लेकिन हमारी पार्टी में कुछ साथियों को डर है कि कहीं सारे देश में अव्यवस्था न फैल जाए। मेरा खयाल है, ये साथी अडिग-अविचल हैं तथा पार्टी और देश के प्रति वफादार हैं, लेकिन सम्पूर्ण स्थिति को नहीं देख पाते और यह भी नहीं देख पाते कि अधिसंख्य लोग, यानी 90 प्रतिशत से भी ज्यादा लोग अच्छे हैं। जन-समुदाय से न डरो, वह हमारे साथ है। वह हमें गाली दे सकता है, लेकिन घूंसा नहीं मारेगा। दक्षिणपंथी केवल मुट्ठी भर हैं और जैसा कि मैंने अभी-अभी कहा है, पेकिङ विश्वविद्यालय में केवल एक, दो या तीन प्रतिशत हैं। यह केवल विद्यार्थियों पर लागू होता है। जहां तक प्रोफेसरों और एसोसिएट प्रोफेसरों का सवाल है, उनकी हालत कुछ भिन्न है, तथा उनमें लगभग दस प्रतिशत लोग दक्षिणपंथी हैं। वामपंथी भी लगभग दस प्रतिशत हैं। दोनों पक्षों की शक्ति बराबर है। मध्यवर्ती लोग लगभग 80 प्रतिशत हैं। इसलिए डरने की क्या बात है ? लेकिन हमारे कुछ साथी कभी इस चीज से डरते हैं तो कभी उस चीज से, कभी मकान टूटने से डरते हैं तो कभी आसमान गिरने से। प्राचीन काल से अब तक केवल "छी राज्य के एक आदमी को यह आशंका हुई थी कि कहीं आसमान न गिर जाए"', जिसका मतलब यह है कि केवल उस हनान वासी को ही ऐसी आशंका हुई थी तथा उसे छोड़कर किसी और को ऐसी शंका नहीं हुई। जहां तक मकान का सवाल है, मैं यकीन दिला सकता हूं कि यह मकान नहीं टूटेगा क्योंकि इसका निर्माण हुए अभी ज्यादा दिन नहीं बीते। यह भला इतनी आसानी से कैसे टूट सकता है ?

संक्षेप में, हर जगह 90 प्रतिशत से ज्यादा लोग हमारे दोस्त और साथी हैं। डरना हरगिज नहीं चाहिए। जन-समुदाय से डरने की क्या जरूरत है ? डरने का कोई कारण नहीं है। नेतृत्वकारी व्यक्ति कौन लोग हैं ? ग्रुप-लीडर, टीम-लीडर, पार्टी शाखा के सचिव, स्कूल-कालेजों के प्रधान और पार्टी-कमेटी के सचिव ये सब नेतृत्वकारी व्यक्ति हैं। कामरेड ख छिङ-श उन्हीं में से एक हैं और मैं भी उन्हीं में गिना जाता हूं। जो हो, हम सब लोगों के पास कुछ न कुछ राजनीतिक पूंजी अवश्य है, यानी हमने जनता की कुछ न कुछ सेवा अवश्य की है। अब आग प्रज्वलित हो उठी है और 90 प्रतिशत से ज्यादा लोग यह उम्मीद करते हैं कि हमारे साथी इस आग में तप कर फौलाद बन जाएंगे। हमारे सब साथियों में कोई न कोई खामी मौजूद है। कौन ऐसा आदमी है जिसके अन्दर कोई खामी न हो ? "आदमी महात्मा नहीं होता, वह गलतियां किए बिना कैसे रह सकता है ?" हम किसी न किसी रूप में या तो कोई गलत बात कहते हैं या कोई गलत काम करते हैं, जैसे नौकरशाही पर अमल करना। ये सब गलतियां अक्सर अनजाने में की जाती हैं।

यह जरूरी है कि एक निश्चित अवधि के बाद बार-बार "आग प्रज्वलित की जाए।" उसे आखिर कितनी अवधि के बाद प्रज्वलित किया जाए ? हर वर्ष किया जाए या हर तीन

वर्ष में एक बार, आप लोगों का क्या खयाल है ? मेरा खयाल है कि उसे हर पंचवर्षीय योजना की अवधि में कम से कम दो बार प्रज्वलित किया जाना चाहिए, जैसे चान्द्र लीपवर्ष का अधिमास तीन वर्ष में एक बार और पांच वर्ष में दो बार आता है। वानरराज सुन ऊ-खुङ सर्वशक्तिमान देवता की आठ रेखाकृतियों वाली जादू की घड़िया में तपकर पहले से और अधिक शक्तिशाली बन गया। क्या सुन ऊ-खुङ असीमित चमत्कारी शक्तियों से सम्पन्न पात्र नहीं है ? सुन ऊ-खुङ को भी, जो "देवलोक के राजा के समकक्ष महात्मा" कहलाता है, आठ रेखाकृतियों वाली जादू की घड़िया में तपना पड़ा। क्या हम तपने की चर्चा नहीं करते ? तपने का मतलब है गढ़ाई व शोधन की प्रक्रिया से गुजरना। गढ़ाई का मतलब है हथौड़े से पीटकर आकार देना और शोधन का मतलब है धमनभट्ठी में लोहा गलाना या खुली भट्ठी में इस्पात बनाना। जब इस्पात तैयार हो जाता है तो उसकी गढ़ाई की जरूरत होती है। आजकल यह काम वायुचालित हथौड़े से किया जाता है। यह हथौड़ा बड़ी भयंकर चोट करता है ! हम मनुष्यों के लिए भी तपना जरूरी है। कुछ साथियों से जब तपने के बारे में पूछा जाता है तो वे बड़ी दिलचस्पी दिखाते हैं और कहते हैं : "ठीक है, मेरे अन्दर खामियां हैं। मैं तपने के लिए बड़ा उत्सुक हूं।" हर व्यक्ति कहता है कि वह तपना चाहता है। तपने की बात करना तो आसान है, लेकिन जब सचमुच तपने का मौका आता है, सचमुच वायु-चालित हथौड़े से "गढ़ाई" की जाती है, तो वह पीछे हट जाता है और डर के मारे उसके प्राण सूख जाते हैं। इस समय हम तपने की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। कुछ समय के लिए ऊपर-नीचे सब जगह अन्धकार ही अन्धकार फैला हुआ था तथा चांद-सूरज की रोशनी कहीं नजर नहीं आती थी। उस समय दो तरह की हवाएं बह रही थीं, एक तरह की हवा जनता की भारी बहुसंख्या की तरफ से, अच्छे लोगों की तरफ से बह रही थी, जिन्होंने बड़े अक्षर वाले पोस्टर लगाकर यह कहा था कि कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर कुछ खामियां मौजूद हैं और उन्हें दूर करने की जरूरत है। दूसरी तरह की हवा उन मुट्ठी भर दक्षिणपंथियों की तरफ से बह रही थी जिन्होंने हम पर प्रहार किए। इन दोनों ही प्रकार के प्रहारों का निशाना एक ही था। लेकिन अधिकांश लोगों द्वारा किए गए प्रहार न्यायोचित थे, ठीक थे। यह हमारे लिए एक प्रकार की तपने की प्रक्रिया थी। दक्षिणपंथियों द्वारा प्रहार किया जाना भी हमारे लिए एक प्रकार की तपने की प्रक्रिया थी। इस बार हमें सच्चे मायनों में तपने का मौका मिला, जिसके लिए हम दक्षिणपंथियों के आभारी हैं। उन्होंने हमारी पार्टी, जन-समुदाय, मजदूर वर्ग, किसानों, विद्यार्थियों और जनवादी पार्टियों को बेहद भारी सबक सिखाया है। हर शहर में दक्षिणपंथी मौजूद हैं और वे हमें धराशायी करना चाहते हैं। अब हम उन्हें अपनी घेरेबन्दी के अन्दर जकड़ते जा रहे हैं।

हमारी क्रान्ति एक जन-क्रान्ति है, सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में 60 करोड़ जनता की क्रान्ति है; यह जनता का कार्य है। जनवादी क्रान्ति जनता का कार्य थी, समाजवादी क्रान्ति जनता का कार्य है और समाजवादी निर्माण भी जनता का ही कार्य है। तो क्या समाजवादी क्रान्ति और समाजवादी निर्माण अच्छी चीज हैं अथवा नहीं ? क्या उपलब्धियां प्राप्त की गई हैं या नहीं ? मुख्य चीज उपलब्धियां हैं या गलतियां ? दक्षिणपंथी लोग जनता के कार्य की उपलब्धियों का निषेध करते हैं। यह पहली बात है। दूसरी बात यह है कि किस दिशा में बढ़ा जाए ? एक रास्ता समाजवाद की तरफ जाता है और दूसरा पूंजीवाद की तरफ। दक्षिणपंथी चाहते हैं कि

हम अपनी दिशा बदल दें और पूंजीवादी रास्ता अपना लें। तीसरी बात यह है कि समाजवादी निर्माण में नेतृत्व कौन करे ? सर्वहारा वर्ग या पूंजीपति वर्ग ? कम्युनिस्ट पार्टी या पूंजीवादी दक्षिणपंथी ? दक्षिणपंथी कहते हैं कि वे कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व नहीं चाहते। मेरा खयाल है कि इस बार इन्हीं तीन प्रश्नों को केन्द्र बनाकर एक वृहद वाद-विवाद किया गया है। ऐसा वाद-विवाद करना अच्छा है। पहले इन प्रश्नों के बारे में वाद-विवाद नहीं किया गया था।

जनवादी क्रान्ति के दौरान लम्बे अरसे तक वाद-विवाद होते रहे। छिङ वंश के अन्तिम वर्ष से 1911 की क्रान्ति तक तथा युवान श-खाए-विरोधी संघर्ष में, उत्तरी अभियान में और जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में – इन सभी कालों में वाद विवाद होते रहे। सवाल था जापानी आक्रमण का विरोध किया जाए या न किया जाए ? एक पक्ष ने इस सिद्धान्त का प्रचार किया कि हथियार ही सब कुछ तय करते हैं। उन लोगों का कहना था कि चीन के पास हथियारों की कमी है, इसलिए वह जापान का मुकाबला नहीं कर सकता। दूसरे पक्ष का मत था कि डरने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मुख्य तत्व मनुष्य ही होता है, इसलिए हथियार की दृष्टि से कमजोर होने पर भी हम युद्ध कर सकते हैं। इसके बाद मुक्ति युद्ध होने से पहले भी उसके बारे में वाद-विवाद हुए। छुङकिङ समझौता- वार्ता, छुङकिङ में आयोजित पुराना राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन और नानकिङ समझौता-वार्ता, ये सब वाद-विवाद ही थे। च्याङ काई-शेक ने हमारी राय और जनता की राय को बिलकुल अनसुनी कर दी। वह केवल युद्ध करना चाहता था। युद्ध का परिणाम यह हुआ कि उसे हार खानी पड़ी। इस तरह जनवादी क्रान्ति के दौरान भी वाद-विवाद हुए थे और लम्बे अरसे तक मानसिक तैयारी की गई थी।

समाजवादी क्रान्ति बड़ी तेजी के साथ आई। केवल छः-सात वर्ष के अन्दर ही पूंजीवादी मिलकियत और छोटे-छोटे उत्पादकों की व्यक्तिगत मिलकियत का समाजवादी रूपान्तर करने का कार्य बुनियादी रूप से पूरा हो चुका है। लेकिन मनुष्य का रूपान्तर करने के लिए अभी एक लम्बा रास्ता तय करना है, यद्यपि इस कार्य में कुछ प्रगति अवश्य हुई है। समाजवादी रूपान्तर का कार्य एक दोहरा कार्य है, एक तरफ तो व्यवस्था का रूपान्तर करना है और दूसरी तरफ मनुष्य का। व्यवस्था में न केवल मिलकियत शामिल है, बल्कि ऊपरी ढांचा, मुख्य रूप से राज्य-मशीनरी और विचारधारा भी शामिल है। उदाहरण के लिए, समाचारपत्र विचारधारा के क्षेत्र में आते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि समाचारपत्रों का वर्ग-स्वरूप नहीं होता और वे वर्ग-संघर्ष के साधन नहीं होते। ये बातें गलत हैं। कम से कम जब तक साम्राज्यवाद का खात्मा नहीं हो जाता, तब तक समाचारपत्रों में और विचारधारा के क्षेत्र में अन्य सभी चीजों में वर्ग-सम्बन्ध प्रतिबिम्बित होते रहेंगे। विद्यालयों की शिक्षा और कला-साहित्य, ये सब विचारधारा के क्षेत्र में आते हैं, ये सब ऊपरी ढांचे से सम्बन्धित हैं और इन सबका अपना वर्ग-स्वरूप होता है। जहां तक प्राकृतिक विज्ञान का ताल्लुक है, इसके दो पहलू हैं। प्राकृतिक विज्ञान का खुद अपना वर्ग-स्वरूप नहीं होता, लेकिन जो लोग उसका अध्ययन और इस्तेमाल करते हैं उनका वर्ग-स्वरूप अवश्य होता है। विश्वविद्यालयों में एक तो चीनी भाषा-साहित्य विभाग में और एक इतिहास विभाग में आदर्शवाद का प्रभाव अत्यन्त गम्भीर रूप से मौजूद है। समाचारपत्रों में काम करने वालों की भी ऐसी ही हालत है। यह नहीं समझना चाहिए कि केवल सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में ही आदर्शवाद का बोलबाला है, प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में भी

वह काफी मात्रा में विद्यमान है। प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में काम करने वाले बहुत से लोगों का विश्व दृष्टिकोण आदर्शवादी है। जब आप उनसे पूछते हैं कि पानी किस चीज से बनता है, तो भौतिकवादी होने के नाते वे जवाब देते हैं कि वह दो तत्वों के योग से बनता है। यह जवाब वास्तविकता से मेल खाता है। लेकिन जब समाज के रूपान्तर का सवाल आता है तो वे आदर्शवादी बन जाते हैं। जब हम यह कहते हैं कि दोष-निवारण के जरिए कम्युनिस्ट पार्टी को सुदृढ़ बनाना चाहिए, तो उनमें से कुछ लोग कहते हैं कि उसे खत्म कर दिया जाए। मौजूदा आन्दोलन से यही जाहिर हुआ है।

जब दक्षिणपंथी हम पर प्रहार कर रहे थे तो हमारी नीति थी सुन लेना और खामोश रहना। कुछ हफ्तों तक हम लोग अपनी कपाल-त्वचा को पुख्ता बना कर और कान खोलकर सुनते रहे तथा चुप्पी साधे रहे। साथ ही, हमने नौजवान संघ और पार्टी के साधारण सदस्यों को सूचना नहीं दी, यहां तक कि पार्टी-शाखाओं के सचिवों और पार्टी की शाखा कमेटियों को भी सूचना नहीं दी, बस सब लोगों को आजादी से आपस में भिड़ने दिया और अपनी मरजी से काम करने दिया। विश्वविद्यालयों की पार्टी-कमेटियों और प्रधान पार्टी-शाखाओं में दुश्मन मौका पाकर घुस गया था; उदाहरण के लिए छिङह्वा विश्वविद्यालय की पार्टी कमेटी के अन्दर भी दुश्मन मौजूद था। जब वहां कोई मीटिंग होती, तो वह फौरन दुश्मन के खेमे को खबर देता कि मीटिंग में क्या हुआ है। ऐसे लोगों को ''बागी'' की उपाधि दी गई। क्या किसी समय बागी सेनापति मौजूद नहीं थे ? अब ये ''बागी विद्वान'' भी पैदा हो गए। इस बात से दुश्मन और हम दोनों ही खुश थे। दुश्मन यह देखकर बहुत खुश था कि कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों ने ''बगावत'' कर दी है और कम्युनिस्ट पार्टी ''धराशायी'' होने वाली है। इस बार कितने पार्टी-सदस्य धराशायी हुए हैं ? शांघाई के बारे में मुझे साफ-साफ मालूम नहीं है। पेकिङ के विश्वविद्यालयों में पार्टी के लगभग 5 प्रतिशत सदस्य और नौजवान संघ के इससे ज्यादा, शायद 10 प्रतिशत या कुछ ज्यादा सदस्य धराशायी हो गए हैं। मेरा खयाल है कि उनका धराशायी होना बिलकुल न्यायोचित है। संक्षेप में, चाहे वे लोग 10 प्रतिशत हों अथवा 20, 30 या 40 प्रतिशत, मुझे बहुत खुशी है कि वे धराशायी हो गए हैं। उनके दिमाग पूंजीवादी विचारों और आदर्शवाद से भरे हुए हैं और वे लोग कम्युनिस्ट पार्टी या नौजवान संघ में चुपचाप घुस आए हैं। वे लोग नाममात्र के लिए ही कम्युनिज्म का पक्षपोषण करते हैं, मगर वास्तव में कम्युनिज्म का विरोध करते हैं या डांवाडोल होते रहते हैं। यही वजह है कि हम लोग भी उनकी ''बगावत'' देखकर बहुत खुश हुए। पार्टी और नौजवान संघ की पांतों की इतनी अच्छी सफाई हमने पहले कब की है ? हमारे द्वारा उन्हें निकाल दिए जाने के पहले ही वे खुद-ब-खुद भाग खड़े हुए हैं। लेकिन अब परिस्थिति बदल गई है और पासा पलट चुका है। जब हमने दक्षिणपंथियों को अपनी घेरेबन्दी में जकड़ना शुरू किया और जब बहुत से लोग जो खुद तो दक्षिणपंथी नहीं थे लेकिन दक्षिणपंथियों के साथ सम्बन्ध रखते थे, आगे बढ़कर उनका पर्दाफाश करने लगे, तो ''बगावत'' बन्द हो गई। अब दक्षिणपंथियों को भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है और उनमें से कुछ लोगों ने बगावत कर दी है। मैंने यहां मार्च में कार्यकर्ताओं को सम्बोधित किया था। तब से अब तक इन सौ दिनों के अन्दर परिस्थिति कितनी बदल गई है !

दक्षिणपंथियों के खिलाफ मौजूदा संघर्ष का स्वरूप मुख्य रूप से राजनीतिक है।

वर्ग-संघर्ष भिन्न-भिन्न रूप धारण करता है। वर्तमान संघर्ष मुख्य रूप से एक राजनीतिक संघर्ष है, न कि सैनिक या आर्थिक संघर्ष। क्या यह कुछ अंश में विचारधारात्मक संघर्ष भी है ? हां, जरूर है, लेकिन मेरे विचार से यह मुख्य रूप से एक राजनीतिक संघर्ष ही है। अगली मंजिल में यह मुख्य रूप से एक विचारधारात्मक संघर्ष बन जाएगा तथा तब इसे मन्द-मन्थर बयार और हल्की फुहार की तरह चलाना होगा। कम्युनिस्ट पार्टी और नौजवान संघ में चलाया गया दोष-निवारण आन्दोलन एक विचारधारात्मक संघर्ष है। यह जरूरी है कि हम अपना स्तर उन्नत करें और सचमुच मार्क्सवाद की कुछ शिक्षा प्राप्त कर लें। हमें सच्चे दिल से एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। जहां तक खामियों का ताल्लुक है, क्या हम मनोगतवाद और नौकरशाही से पूरी तरह मुक्त हो चुके हैं ? यह जरूरी है कि हम सच्चे अर्थों में गहराई से सोच-विचार करें, कुछ सामग्री नोट करें और कुछ महीनों तक कोशिश करके अपना मार्क्सवाद विषयक समझदारी का स्तर और राजनीतिक व विचारधारात्मक स्तर उन्नत कर लें।

हो सकता है कि दक्षिणपंथियों पर जवाबी हमला करने में कुछ हफ्तों या एक महीने से कुछ ज्यादा समय और लग जाए। लेकिन यह सम्भव नहीं होगा कि इस वर्ष के बाकी महीनों में, अगले वर्ष और उससे अगले वर्ष भी समाचारपत्रों में दक्षिणपंथियों के विचार प्रकाशित किए जाएं, जैसा कि इस समय किया जा रहा है। दक्षिणपंथी इतने ही तो हैं और समाचारपत्रों में उनके कथन काफी मात्रा में प्रकाशित किए जा चुके हैं, तथा भविष्य में प्रकाशित करने के लिए ज्यादा सामग्री नहीं रह गई है। अब से हम किसी न किसी रूप में कुछ और सामग्री छापते रहेंगे, लेकिन जब प्रकाशित करने लायक कोई चीज नहीं होगी तो नहीं छापेंगे। मेरा खयाल है कि जुलाई का महीना दक्षिणपंथियों पर पुरजोर जवाबी हमला करने का महीना होगा। दक्षिणपंथी प्रचण्ड आंधी और मूसलाधार वर्षा को बेहद पसन्द करते हैं तथा मन्द-मन्थर बयार और हल्की फुहार बेहद नापसन्द करते हैं। क्या हमने मन्द-मन्थर बयार और हलकी फुहार का पक्षपोषण नहीं किया है ? लेकिन वे लोग कहते हैं, ''क्या कहा ? मन्द-मन्थर बयार और हल्की फुहार ? अगर कई दिनों तक रोजाना हल्की बूंदाबांदी होती रही, तो धान के पौधे सड़ जाएंगे और अकाल पड़ जाएगा। प्रचण्ड आंधी और मूसलाधार वर्षा का आगमन इससे बेहतर होगा''। क्या आपके शांघाई के किसी आदमी ने 'भरी दोपहरी में' ''कौवे की कांव-कांव'' शीर्षक लेख नहीं लिखा है ? यह ''कौआ'' वही आदमी है जिसने प्रचण्ड आंधी और मूसलाधार वर्षा का प्रस्ताव रखा था। वे यह भी कहते हैं, ''तुम कम्युनिस्ट लोग सरासर बेइंसाफी बरतते हो। पहले जब तुम लोग हम पर प्रहार कर रहे थे तो प्रचण्ड आंधी और मूसलाधार वर्षा चाहते थे और आज जब तुम्हारी अपनी बारी आई है तो मन्द-मन्थर बयार और हल्की फुहार चाहते हो।'' तथ्य यह है कि विचारधारात्मक नव रूपान्तर, जिसमें हू शि और ल्याङ शू-मिङ की आलोचना करना भी शामिल है, सम्बन्धी अपने पिछले अन्तःपार्टी निदेशों में हमने हमेशा मन्द-मन्थर बयार और हल्की फुहार का आवाहन किया है। दुनिया में सब चीजें टेढ़े-मेढ़े रास्ते से विकास करती हैं। उदाहरण के लिए, जब आप चलते हैं तो बिलकुल सीधी लीक पर कभी नहीं चल पाते। क्या आप लोग कभी ओकान पर्वत पर गए हैं ? वहां जाने वाले रास्ते में नीचे से ऊपर तक कुल अट्ठारह घुमावदार मोड़ हैं। समाज भी अनिवार्य रूप से टेढ़े-मेढ़े रास्ते से आगे बढ़ता है। अब यह जरूरी हो गया है कि हम दक्षिणपंथियों को ढूंढ़ निकालने

के संघर्ष में शिथिलता न आने दें और प्रचण्ड आंधी व मूसलाधार वर्षा जारी रखें। चूंकि इस आंधी-वर्षा की शुरुआत उन्होंने ही की थी, इसलिए देखने में यह लग सकता है कि हम उनसे बदला लेने की कोशिश कर रहे हैं। दक्षिणपंथियों को यह बात सिर्फ अभी महसूस होने लगी है कि मन्द-मन्थर बयार और हल्की फुहार कितनी अच्छी चीज है। किसी तिनके को देखते ही वे लोग उसे पकड़ने की कोशिश करते हैं, क्योंकि वे तेजी से डूबते जा रहे हैं, मानो हवाङफू नदी में डूबने वाला कोई आदमी तिनका हाथ आते ही उसका सहारा लेने का प्रयास कर रहा हो। मैं अनुमान कर सकता हूं कि वह ''कौआ'' अब मन्द-मन्थर बयार और हल्की फुहार के लिए जरूर बेचैन होगा। लेकिन इस समय तो आंधी-तूफान का मौसम है। जुलाई के बाद, अगस्त के महीने में मन्द-मन्थर बयार और हल्की फुहार शुरू होगी, क्योंकि उस समय ढूंढ़ निकालने लायक चीजें ज्यादा नहीं रह जाएंगी।

दक्षिणपंथी लोग नकारात्मक उदाहरण से शिक्षित करने वाले बहुत अच्छे शिक्षक हैं। चीन में हमेशा सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के उदाहरणों से शिक्षित करने वाले शिक्षक मौजूद रहे हैं। लोगों को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रकार के उदाहरणों से शिक्षित करने की आवश्यकता होती है। जापानी साम्राज्यवाद नकारात्मक उदाहरण से शिक्षित करने वाला हमारा प्रथम सर्वश्रेष्ठ शिक्षक था। इसके पहले छिङ सरकार, य्वान श-खाए और उत्तरी युद्ध-सरदार तथा बाद में च्याङ काई-शेक, ये सभी नकारात्मक उदाहरण से शिक्षित करने वाले अच्छे शिक्षक थे। उनके बिना चीनी जनता कभी सबक नहीं सीख सकती थी। कम्युनिस्ट पार्टी सकारात्मक उदाहरण से शिक्षित करने वाले शिक्षक की भूमिका निभाती रही है, लेकिन केवल ऐसे ही शिक्षक का होना काफी नहीं है। यह बात आज भी लागू होती है। ऐसे लोग भी हैं जो हमारी बहुत सी बातें मानने से इनकार कर देते हैं। ये आखिर कौन लोग हैं ? ये बहुत से मध्यवर्ती तत्व और खास तौर पर दक्षिणपंथी लोग हैं। मध्यवर्ती लोग हमारे प्रति आधे विश्वास और आधे सन्देह का रुख अपनाते हैं। दक्षिणपंथी तो हमारी बात बिलकुल सुनते ही नहीं। हमने बहुत से मसलों के बारे में उन्हें अपनी राय बता दी, लेकिन उनके कान में जूं तक नहीं रेंगी और उन्होंने हमारी राय के विपरीत आचरण किया। उदाहरण के लिए, हमने ''एकता – आलोचना – एकता'' का पक्षपोषण किया, लेकिन उन्होंने हमारी एक न सुनी। हमने कहा कि प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने में उपलब्धियां मुख्य चीज हैं, लेकिन उन्होंने यह मानने से इनकार कर दिया। हमने कहा कि जनवादी केन्द्रीयता और सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में जनता का जनवादी अधिनायकत्व आवश्यक है, लेकिन उन्होंने यह मानने से इनकार कर दिया। हमने कहा, यह जरूरी है कि हम समाजवादी देशों और सारी दुनिया की शान्तिप्रिय जनता के साथ एकता कायम करें, लेकिन उन्होंने यह मानने से भी इनकार कर दिया। संक्षेप में, हमने ये सब बातें उन्हें पहले ही बता दी थीं, लेकिन उन्होंने हमारी एक न सुनी। एक और बात जिसे सुनने से उन्होंने खास तौर पर इनकार किया, यह थी कि जहरीली खरपतवार को उखाड़ फेंकना जरूरी है। दैत्यों व दानवों को बाहर निकलने दो और आत्म-प्रदर्शन करने दो, ताकि बाद में लोग कह सकें कि ये दैत्य व दानव अच्छे नहीं हैं और इनका सफाया कर दिया जाना जरूरी है। जहरीली खरपतवार को अंकुरित होने दो और बाद में उसे उखाड़कर जमीन के नीचे दबा दो तथा खाद के रूप में इस्तेमाल करो। क्या हमने

यह सब पहले ही नहीं बता दिया था ? निस्सन्देह, हमने सब कुछ बता दिया था। फिर भी जहरीली खरपतवार अंकुरित होती ही रहती हैं। किसान हर साल खरपतवार से कहते हैं कि वे लोग उसे साल में कई बार उखाड़ फेंकेंगे, लेकिन खरपतवार उनकी एक नहीं सुनती और पनपती रहती है। खरपतवार को उखाड़ फेंकना भले ही दस हजार साल तक जारी रहे, वह फिर भी उगती रहेगी। अब से दस करोड़ साल बाद भी उगती रहेगी। जब मैंने खरपतवार को उखाड़ फेंकने की बात कही थी, उस समय दक्षिणपंथी भयभीत नहीं हुए थे, क्योंकि मैंने केवल बात कही थी और खरपतवार को उखाड़ फेंकना दरअसल अभी शुरू नहीं हुआ था। इतना ही नहीं, दक्षिणपंथी यह भी सोचते थे कि वे लोग जहरीली खरपतवार नहीं बल्कि सुगन्धित फूल हैं, जहरीली खरपतवार तो हम लोग हैं और उनकी जगह हमें उखाड़ फेंका जाना चाहिए। उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि खुद वही लोग ऐसी वस्तु हैं जिसे उखाड़ फेंका जाना चाहिए।

उपरोक्त तीन प्रश्नों के बारे में इस समय वाद-विवाद किया जा रहा है। समाजवादी क्रान्ति इतनी तेजी से आ गई कि संक्रमण-काल के लिए पार्टी की आम कार्य दिशा पर न तो पार्टी के भीतर पूरी तरह वाद-विवाद हो पाया और न समाज में ही। इसकी उपमा गाय के घास खाने की क्रिया से दी जा सकती है। वह पहले घास को जल्दी-जल्दी निगल कर अपने पेट में भर लेती है और फिर उसे मुंह में उगलकर धीरे-धीरे जुगाली करती है। हम व्यवस्था में, पहले उत्पादन के साधनों की मिलकियत में और दूसरे ऊपरी ढांचे, राजनीतिक व्यवस्था और विचारधारा के क्षेत्र में, समाजवादी क्रान्ति चलाते रहे हैं, लेकिन इस सवाल के बारे में पूरी तरह कभी वाद-विवाद नहीं किया गया। अब हम अखबारों, गोष्ठियों, आम सभाओं और बड़े अक्षर वाले पोस्टरों के जरिए यह वाद-विवाद आरम्भ करने जा रहे हैं।

बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लगाना एक अच्छी चीज है, और मेरा विचार है कि यह तरीका पीढ़ी-दर पीढ़ी जारी रहेगा। 'कनफ्यूशियस का सूक्ति संग्रह', 'पांच क्लासिकी रचनाएं', 'तेरह क्लासिकी रचनाएं' और 'चौबीस राजवंशों का इतिहास' ये सब हमारी पीढ़ी तक प्रचलित रहे हैं। क्या बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लगाने का तरीका पीढ़ी-दर-पीढ़ी नहीं रहेगा ? मेरा विचार है जरूर प्रचलित रहेगा। उदाहरण के लिए, भविष्य में जब कारखानों में दोष-निवारण किया जाएगा, तो क्या इस तरीके का प्रयोग नहीं किया जाएगा ? मेरा विचार है इसका प्रयोग करना अच्छा है, और जितना ज्यादा प्रयोग किया जाए उतना ही अच्छा है। भाषा के ही समान इसका भी वर्ग-स्वरूप नहीं होता। हमारी आधुनिक भाषा का वर्ग-स्वरूप नहीं है। हम सब आधुनिक भाषा बोलते हैं और च्याङ काई-शेक भी वही भाषा बोलता है। हम इस प्रकार की प्राचीन भाषा कभी नहीं बोलते : ''अध्ययन एवं अध्ययन-सामग्री के नित्य मनन-चिन्तन से असीम आनन्द की उपलब्धि होती है'' और ''दूर-दूरान्तर से आगत मित्रों के स्वागत-सत्कार से अपार सुख की अनुभूति होती है''। सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग दोनों ही आधुनिक भाषा का प्रयोग करते हैं। बड़े अक्षरों वाले पोस्टरों का प्रयोग सर्वहारा वर्ग भी कर सकता है और पूंजीपति वर्ग भी। हमें विश्वास है कि अधिकांश लोग सर्वहारा वर्ग के पक्ष में हैं। इसलिए बड़े अक्षरों वाले पोस्टर एक साधन के रूप में सर्वहारा वर्ग को फायदा पहुंचाते हैं न कि पूंजीपति वर्ग को। कुछ समय तक, लगभग दो-तीन हफ्ते तक, धरती और आकाश में अन्धकार ही अन्धकार

फैला हुआ था तथा चांद-सूरज की रोशनी कहीं नजर नहीं आती थी। यह स्थिति देखने में पूंजीपति वर्ग के लिए अनुकूल मालूम होती थी। जब हमने यह कहा था कि हमें अपनी कपाल-त्वचा को पुख्ता बनाकर उसे बर्दाश्त करना चाहिए तो हमारा मतलब यह था कि उन दो-तीन हफ्तों में हमारी नींद हराम हो जाए और भूख गायब हो जाए। क्या आपने यह नहीं कहा कि आप तपना चाहते हैं ? चन्द हफ्तों के लिए नींद हराम होना और भूख गायब होना भी एक तरह का तपना ही है। इसके लिए आप लोगों को धमनभट्ठी में डालकर पिघलाने की जरूरत नहीं है।

बहुत से मध्यवर्ती तत्त्व डांवाडोल हो रहे हैं, यह भी एक अच्छी बात है। उन्हें डांवाडोल होने से सबक मिलेगा। डांवाडोल होना मध्यवर्ती तत्त्वों की विशेषता है, अन्यथा उन्हें मध्यवर्ती तत्त्व कैसे कहा जा सकता है ? एक सिरे पर सर्वहारा वर्ग है और दूसरे सिरे पर पूंजीपति वर्ग तथा बीच में विशाल संख्या में मध्यवर्ती तत्त्व हैं; दोनों सिरे छोटे हैं और बीच का हिस्सा बड़ा है। लेकिन अन्ततोगत्वा मध्यवर्ती तत्त्व अच्छे लोग हैं, वे सर्वहारा वर्ग के संश्रयकारी हैं। पूंजीपति वर्ग भी उन्हें अपने पक्ष में करके अपना संश्रयकारी बनाना चाहता था और एक समय वे लोग देखने में कुछ ऐसे ही मालूम होते थे। कारण, मध्यवर्ती तत्त्वों ने भी हमारी आलोचना की लेकिन यह आलोचना अच्छी नीयत से की गई थी। जब दक्षिणपंथियों ने देखा कि मध्यवर्ती तत्त्व हमारी आलोचना कर रहे हैं तो वे गड़बड़ी पैदा करने बाहर निकल आए। शांघाई में आपने चाङ चाओ-श, लू ई, छन रन-पिङ और फङ वन-इङ तथा साथ ही ऊ इन जैसे दक्षिणपंथियों को गड़बड़ी पैदा करते देखा। जब दक्षिणपंथी गड़बड़ी पैदा करने लगे तो मध्यवर्ती तत्त्व भ्रम में पड़ गए। दक्षिणपंथियों के पूर्वज चाङ पो-च्युन, ल्वो लुङ-ची और चाङ नाए-छी हैं तथा पेकिङ उनका उद्गम-स्थल है। पेकिङ में जितनी ज्यादा बड़ी अव्यवस्था फैलेगी उतना ही अच्छा होगा, जितनी ज्यादा गम्भीर अव्यवस्था फैलेगी उतना ही अच्छा होगा। हमारे अनुभव से यह साबित हो चुका है।

अभी-अभी मैंने बड़े अक्षरों वाले पोस्टर की चर्चा की। यह तरीके से सम्बन्धित सवाल है, लड़ने के तरीके से सम्बन्धित सवाल है। बड़े अक्षरों वाला पोस्टर लड़ने के काम आने वाला एक हथियार है, राइफल, पिस्तौल और मशीनगन जैसा एक छोटा हथियार है। जहां तक विमानों और तोपों का ताल्लुक है, उनकी उपमा शायद 'वन ह्वेइ पाओ', 'क्वाङमिङ दैनिक' और कुछ अन्य अखबारों से दी जा सकती है। दक्षिणपंथियों के कथन कुछ समय तक कम्युनिस्ट पार्टी के अखबारों में भी प्रकाशित होते रहे। हमने आदेश दिया कि दक्षिणपंथियों के सभी कथनों को अक्षरशः प्रकाशित किया जाना चाहिए। यह तरीका और कुछ अन्य तरीके इस्तेमाल करके हमने व्यापक जन-समुदाय को सकारात्मक और नकारात्मक उदाहरणों से शिक्षा प्राप्त करने में सहायता दी। उदाहरण के लिए, 'क्वाङमिङ दैनिक' और 'वन ह्वेइ पाओ' के कर्मचारियों को इस बार बहुत गहरी सीख हासिल हुई है। पहले वे यह नहीं बता सकते थे कि सर्वहारा वर्ग के अखबारों और पूंजीपति वर्ग के अखबारों के बीच तथा समाजवादी अखबारों और पूंजीवादी अखबारों के बीच क्या फर्क है। कुछ समय के लिए इन दोनों अखबारों के दक्षिणपंथी कर्ताधर्ताओं ने इन्हें पूंजीवादी अखबार बना दिया। ये दक्षिणपंथी कर्ताधर्ता लोग सर्वहारा वर्ग और समाजवाद से घृणा करते थे। ये लोग विश्वविद्यालयों को सर्वहारा दिशा में

नहीं बल्कि पूंजीवादी दिशा में ले जा रहे थे।

क्या पूंजीपति वर्ग और पुराने समाज से आए बुद्धिजीवियों का नव रूपान्तर करने की जरूरत है या नहीं ? वे लोग नव रूपान्तर से बेहद डरते हैं और कहते हैं कि इससे एक खास तरह की भावना पैदा हो जाती है, जिसे ''हीनता की भावना'' कहते हैं, तथा जितना ज्यादा नव रूपान्तर किया जाता है उतनी ही ज्यादा यह भावना भी बढ़ती जाती है। यह विचार गलत है। सही विचार यह है कि एक आदमी का जितना ज्यादा नव रूपान्तर किया जाता है उसका आत्म-सम्मान भी उतना ही ज्यादा बढ़ता जाता है। इसके परिणामस्वरूप केवल आत्म-सम्मान की ही भावना पैदा होनी चाहिए, क्योंकि आदमी को अपने नव रूपान्तर की जरूरत केवल जागृत होने पर ही महसूस होती है। वे लोग सोचते हैं कि उनकी ''वर्ग-चेतना'' का स्तर बहुत ऊंचा है, इसलिए उन्हें अपने नव रूपान्तर की जरूरत नहीं है, उल्टे वे सर्वहारा वर्ग का नव रूपान्तर करना चाहते हैं। वे लोग चाहते हैं कि दुनिया का रूपान्तर पूंजीपति वर्ग की परिकल्पना के अनुरूप किया जाय, जबकि सर्वहारा वर्ग चाहता है कि दुनिया का रूपान्तर उसकी अपनी परिकल्पना के अनुरूप किया जाय। मेरा विचार है कि अधिकांश लोग, यानी 90 फीसदी से ज्यादा लोग कुछ हिचकिचाने, पुनर्विचार करने, अनिच्छा प्रकट करने और डांवाडोल होने के बाद अन्त में अपना नव रूपान्तर करना स्वीकार कर लेंगे। जिसका जितना ज्यादा नव रूपान्तर होता जाता है, उसे नव रूपान्तर की उतनी ही ज्यादा आवश्यकता महसूस होती जाती है। कम्युनिस्ट पार्टी का भी नव रूपान्तर हो रहा है। दोष-निवारण का मतलब भी नव रूपान्तर ही है और भविष्य में दोष-निवारण जारी रहेगा। क्या आप यह सोचते हैं कि दोष-निवारण इस बार के बाद फिर कभी नहीं किया जाएगा ? क्या इस बार के दोष-निवारण के बाद नौकरशाही खत्म हो जाएगी ? केवल दो-तीन वर्ष बाद ही कुछ लोग इन सब बातों को भूल जाएंगे और नौकरशाही फिर लौट आएगी। लोग ऐसे ही होते हैं, उनकी याददाश्त कच्ची होती है। इसलिए समय-समय पर दोष-निवारण की जरूरत होती है। जब कम्युनिस्ट पार्टी के लिए भी दोष-निवारण की जरूरत है, तो क्या पूंजीपति वर्ग और पुराने समाज से आए बुद्धिजीवियों के लिए इसकी जरूरत नहीं है ? नव रूपान्तर की जरूरत नहीं है ? निस्सन्देह, उनके लिए दोष-निवारण और नव रूपान्तर की और भी जरूरत है।

क्या इस समय जनवादी पार्टियों में दोष-निवारण आन्दोलन नहीं चलाया जा रहा ? दोष-निवारण आन्दोलन को पूरे समाज में चलाया जाना चाहिए। इसे चलाने में क्या हर्ज है ? इसके जरिए छोटे-मोटे मामलों को नहीं बल्कि महत्वपूर्ण मामलों को, राजनीतिक कार्यदिशा से सम्बन्धित सवालों को निपटाया जाएगा। इस समय जनवादी पार्टियों के दोष-निवारण आन्दोलन में कार्यदिशा से सम्बन्धित सवाल पर या पूंजीवादी दक्षिणपंथियों द्वारा चलाई गई प्रतिक्रान्तिकारी कार्यदिशा के खण्डन पर जोर दिया जा रहा है। मेरा विचार है कि यह बिलकुल ठीक है। कम्युनिस्ट पार्टी के अपने दोष-निवारण में इस समय कार्यदिशा से सम्बन्धित सवाल पर नहीं बल्कि कार्यशैली पर जोर दिया जा रहा है। लेकिन जनवादी पार्टियों के लिए कार्यशैली का सवाल गौण है और मुख्य जोर इस बात पर ज्यादा दिया जाना चाहिए कि वे कौन सी कार्यदिशा अपनाएं। क्या वे चाङ पो-च्युन, ल्वो लुङ-ची, चाङ नाए-छी, छन रन-पिङ, फङ वन-इङ, लू ई और सुन ता-यू की प्रतिक्रान्तिकारी कार्यदिशा अपनाएं या अन्य कार्यदिशा ?

उनके लिए सबसे पहले यह जरूरी है कि इस सम्बन्ध में तथा मेरे द्वारा यहां उठाए गए तीन सवालों के बारे में एक स्पष्ट धारणा कायम कर लें : क्या समाजवादी क्रान्ति और समाजवादी निर्माण की उपलब्धियां तथा दसियों करोड़ जनता द्वारा पूरे किए गए कार्य अच्छे हैं या नहीं ? हमें कौन सा रास्ता अपनाना चाहिए, समाजवादी रास्ता या पूंजीवादी रास्ता ? समाजवाद के निर्माण में नेतृत्व किस पार्टी के हाथ में होना चाहिए, चाङ-ल्वो गठजोड़ के हाथ में या कम्युनिस्ट पार्टी के हाथ में ? कार्यदिशा के सवाल को स्पष्ट करने के लिए एक वृहद वाद-विवाद छिड़ने दिया जाय।

कम्युनिस्ट पार्टी में भी कार्यदिशा से सम्बन्धित सवाल मौजूद है। जहां तक उन ''बागियों'' यानी कम्युनिस्ट पार्टी व नौजवान संघ में मौजूद दक्षिणपंथियों का ताल्लुक है, यह सचमुच एक कार्यदिशा से सम्बन्धित सवाल है। इस समय कठमुल्लावाद कार्यदिशा से सम्बन्धित सवाल नहीं है, क्योंकि वह अभी एक कार्यदिशा के रूप में विकसित नहीं हुआ। हमारी पार्टी के इतिहास में कठमुल्लावाद कई बार कार्यदिशा से सम्बन्धित सवाल बन चुका है, क्योंकि तब यह एक व्यवस्था, नीति और प्रोग्राम के रूप में विकसित हो गया था। वर्तमान समय में कठमुल्लावाद का विकास इस सीमा तक तो नहीं हुआ, लेकिन उसके अन्दर कुछ कड़ापन अवश्य आ गया है, जिसे अब हथौड़े से पीट कर और गढ़ कर जरा नरम बनाया जा रहा है। क्या ऐसा नहीं है कि विभिन्न विभागों और संगठनों, स्कूल-कालेजों और कारखानों के नेतृत्वकारी व्यक्ति ''सीढ़ियां उतर रहे हैं''[2] ? वे लोग क्वोमिन्ताङ की कार्यशैली और रईसाना आदतों को छोड़ रहे हैं तथा पहले की तरह नौकरशाहों जैसा बरताव नहीं करते। अब सहकारी समितियों के निदेशक किसानों के साथ खेतों में श्रम करने लगे हैं, तथा कारखानों के निदेशक और पार्टी-कमेटियों के सचिव मजदूरों के साथ वर्कशापों में श्रम करने लगे हैं, जिसके फलस्वरूप नौकरशाही बहुत कम होती जा रही है। भविष्य में इस तरह का दोष-निवारण आन्दोलन फिर चलाया जाएगा। यह जरूरी है कि हम लोग बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लगाएं, गोष्ठियां बुलाएं तथा उन मसलों को अलग-अलग निपटाएं जिनमें दुरुस्त करने और आलोचना करने की जरूरत हो। इसके अलावा यह भी जरूरी है कि हम अपना स्तर समुन्नत करें और कुछ मार्क्सवाद का अध्ययन करें।

मुझे विश्वास है कि चीन के अधिकांश लोग श्रेष्ठ हैं और चीनी राष्ट्र एक श्रेष्ठ राष्ट्र है। हमारा राष्ट्र एक ऐसा राष्ट्र है जो विचारशीलता, सहृदयता, बुद्धिमत्ता और साहस से परिपूर्ण है। मैं आशा करता हूं कि एक ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी जाएगी जिसमें एकीकृत संकल्प और जिन्दादिली दोनों मौजूद हों, यानी केन्द्रीयता के साथ जनवाद भी हो और अनुशासन के साथ आजादी भी हो। दोनों पहलू मौजूद रहने चाहिए, केवल एक पहलू नहीं, न तो केवल अनुशासन रहना चाहिए और न केवल केन्द्रीयता। अगर केवल एक पहलू रहेगा तो लोगों के मुंह बन्द हो जाएंगे तथा वे अपनी बात नहीं कह पाएंगे और ऐसी बातों की भी आलोचना नहीं कर पाएंगे जो दरअसल गलत हैं। हमें चाहिए कि लोगों को अपनी बात कहने के लिए प्रोत्साहन दें और एक जिन्दादिली का माहौल पैदा करें। जो भी व्यक्ति अच्छी नीयत से हमारी आलोचना करता है उसे दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए। उसके द्वारा की गई आलोचना चाहे कितनी ही कटु क्यों न हो अथवा उसके द्वारा की गई निन्दा चाहे कितनी ही कड़ी क्यों न हो, उसे दोष

नहीं दिया जाना चाहिए या सजा नहीं दी जानी चाहिए अथवा तंग जूते नहीं पहनाए जाने चाहिए। तंग जूते पहनने से कष्ट होता है। तो तंग जूते किसे पहनाए जाने चाहिए ? वे दक्षिणपंथियों को पहनाए जाने चाहिए। उन्हें दक्षिणपंथियों को पहनाया जाना जरूरी है।

हमें जन-समुदाय से डरना नहीं चाहिए और उसके बीच रहना चाहिए। कुछ साथी जन-समुदाय से वैसे ही डरते हैं जैसे पानी से। क्या आप लोग तैरने जाते हैं ? मैं जहां भी जाता हूं लोगों को तैरने के लिए प्रोत्साहन देता हूं। पानी एक अच्छी चीज है। अगर आप रोज एक घण्टे तैरना सीखें और लगातार सीखते रहें, एक डुबकी आज लगाएं और एक कल, तो मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि सौ दिन बाद आपको तैरना जरूर आ जाएगा। पहली बात यह है कि आप उस्ताद को न बुलाएं, दूसरी बात यह है कि आप रबड़-ट्यूब इस्तेमाल न करें। रबड़-ट्यूब के इस्तेमाल से आपको तैरना हरगिज नहीं आएगा। "लेकिन मुझे अपनी जान का डर है, मुझे अभी तैरना नहीं आया !" अच्छा, यह बात है तो आप पहले छिछले पानी में सीखना शुरू कर सकते हैं। अगर आपको सौ दिन में तैरना सीखना है तो पहले तीस दिन तक छिछले पानी में सीखें, तब आपको इसकी तकनीक जरूर आ जाएगी। जब आपको तैरना आ जाएगा, तो चाहे आप याङत्सी नदी में तैरें या प्रशान्त महासागर में, इसमें कोई फर्क नहीं है, दोनों जगह पानी ही है, एक ही चीज है। कुछ लोग यह दलील देते हैं कि तैराकी ताल में आप डूब नहीं सकते, क्योंकि जब आप डूबने लगेंगे तो कोई न कोई आपको जरूर बचा लेगा; लेकिन याङत्सी नदी में तैरना बड़ा खतरनाक है, पानी का बहाव इतना तेज है कि एक बार डूब गए तो हमेशा के लिए खो जाएंगे ! ऐसे व्यक्ति यह दलील देकर लोगों को डराते हैं। मैं कहता हूं कि ऐसी बातें सिर्फ अनाड़ी लोग करते हैं। शुरू में हमारे बेहतरीन तैराकों, तैराकी-तालों के उस्तादों और माहिरों में से किसी को याङत्सी नदी में तैरने का साहस नहीं था, लेकिन अब वे लोग वहां तैर सकते हैं। क्या आजकल लोग आपकी ह्वाङफू नदी में तैरने नहीं जाते ? ह्वाङफू नदी और याङत्सी नदी ऐसे तैराकी ताल हैं जहां प्रवेश-शुल्क नहीं देना पड़ता। लाक्षणिक रूप से कहा जाए तो जनता पानी के समान है और विभिन्न स्तरों के नेतृत्वकारी व्यक्ति तैराकों के समान हैं, जिन्हें पानी के बीच रहना चाहिए और बहाव के साथ तैरना चाहिए, उसके विपरीत नहीं। जन-समुदाय को डांट-फटकार न लगाएं ! ऐसा किसी भी हालत में न करें। मजदूरों, किसानों व विद्यार्थियों के जन-समुदाय तथा जनवादी पार्टियों के सदस्यों व बुद्धिजीवियों की बहुसंख्या को डांट-फटकार न लगाएं। खुद अपने को जन-समुदाय के विरुद्ध खड़ा न करें, उल्टे हमेशा उसके साथ रहें। जन-समुदाय भी गलती कर सकता है। जब वह गलती करे, तो उसे बड़े धीरज के साथ दलीलें देकर समझाएं; अगर वह आपकी बात सुनने से इनकार करे, तो बात करने के अन्य अवसर की प्रतीक्षा करें। लेकिन उससे अलग-थलग न हो जाएं, जैसे तैरने में आप पानी से अलग नहीं होते। जब ल्यू पेइ को अपने सहायक के रूप में चूके ल्याङ मिल गया तो उसने कहा था, ऐसा लग रहा है "मानो मछली को पानी मिल गया हो"। यह बिलकुल सच है। उन दोनों के मछली-पानी जैसे सम्बन्धों का वर्णन न केवल उपन्यास में किया गया है, बल्कि ऐतिहासिक अभिलेखों में भी किया गया है। चूके ल्याङ जन-समुदाय है और ल्यू पेइ नेतृत्वकारी व्यक्ति। एक नेतृत्व करता है और दूसरा अनुसरण।

समस्त बुद्धि-विवेक का स्रोत जन-समुदाय ही होता है। मैं हमेशा कहता आया हूं कि बुद्धिजीवी सबसे अधिक अज्ञानी होते हैं। यह एक सारगर्भित बात है। आत्म-प्रशंसक बुद्धिजीवी जब अपनी दुम उठाते हैं तो वह वानरराज सुन ऊ-खुङ की दुम से भी ज्यादा लम्बी मालूम होती है। सुन ऊ-खुङ बहत्तर रूप धारण कर सकता है और एक बार वह अपनी दुम को एक ध्वजदण्ड में बदल देता है – इतना लम्बा बना देता है। जब बुद्धिजीवी अपनी दुम ऊपर उठाते हैं तो बड़े भयानक मालूम होते हैं। "मेरा नम्बर अगर दुनिया में पहला नहीं तो कम से कम दूसरा तो है ही।" "मजदूर और किसान आखिर किस खेत की मूली हैं ? वे तो निरे मूर्ख हैं ! मुश्किल से दो-चार अक्षर लिख-पढ़ सकते हैं।" लेकिन समूची परिस्थिति का निर्णय अन्ततोगत्वा बुद्धिजीवियों द्वारा नहीं बल्कि श्रमिकों द्वारा ही किया जाता है, श्रमिकों के सबसे आगे बढ़े हुए दस्ते सर्वहारा वर्ग द्वारा ही किया जाता है।

कौन किसका नेतृत्व करता है – सर्वहारा वर्ग पूंजीपति वर्ग का या पूंजीपति वर्ग सर्वहारा वर्ग का ? सर्वहारा वर्ग बुद्धिजीवियों का या बुद्धिजीवी सर्वहारा वर्ग का ? बुद्धिजीवियों के लिए यह जरूरी है कि वे अपना रूपान्तर करके सर्वहारा बुद्धिजीवी बन जाएं। इसके सिवाय उनके लिए कोई और रास्ता नहीं है। "खाल ही नहीं रही तो बाल कहां टिक सकते हैं ?"' अतीत काल में "बाल" यानी बुद्धिजीवी पांच "खालों" पर टिके हुए थे, अर्थात उन पर निर्भर रहकर जीवनयापन करते थे। पहली खाल साम्राज्यवादी मिलकियत, दूसरी खाल सामन्ती मिलकियत तथा तीसरी खाल नौकरशाही-पूंजीवादी मिलकियत थी। जनवादी क्रान्ति का उद्देश्य क्या साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाही-पूंजीवाद के इन तीनों बड़े-बड़े पहाड़ों को हटा देना नहीं था ? चौथी खाल राष्ट्रीय पूंजीवादी मिलकियत थी तथा पांचवीं खाल छोटे उत्पादकों की मिलकियत, यानी किसानों व दस्तकारों की व्यक्तिगत मिलकियत थी। अतीत काल में बुद्धिजीवी या तो पहली तीन खालों पर टिके हुए थे अथवा पिछली दो खालों पर, तथा उन्हीं पर निर्भर रहकर जीवनयापन करते थे। ये पांच खालें क्या अब भी मौजूद हैं ? "ये खालें अब नहीं रहीं।" साम्राज्यवाद का बोरिया-बिस्तर गोल हो चुका है और उसकी सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया गया है। सामन्ती मिलकियत को समाप्त कर दिया गया है और जमीन किसानों को लौटा दी गई है, तथा अब कृषि-सहकारिता पर भी अमल होने लगा है। नौकरशाही-पूंजीवादी कारोबारों का राष्ट्रीयकरण किया जा चुका है। राष्ट्रीय पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के कारोबार संयुक्त राजकीय-निजी कारोबारों के रूप में बदल गए हैं और बुनियादी तौर पर (पूरे तौर पर नहीं) समाजवादी कारोबार बन गए हैं। किसानों और दस्तकारों की व्यक्तिगत मिलकियत सामूहिक मिलकियत में बदल गई है, यद्यपि यह सामूहिक मिलकियत अभी सुदृढ़ नहीं हो पाई और इसे सुदृढ़ बनाने में कुछ वर्ष और लग जाएंगे। ये पांचों खालें अब मौजूद नहीं हैं, लेकिन इनका बचा-खुचा प्रभाव "बालों" पर, पूंजीपतियों और बुद्धिजीवियों पर, अब भी मौजूद है। ये लोग इन खालों को कभी नहीं भूल सकते और सपने में भी याद करते रहते हैं। जो लोग पुराने समाज से, पुराने परिक्रमा-पथ से आए हैं, वे पुरानी आदतों और पुराने जीवन-प्रणाली को बनाए रखने के लिए आतुर रहते हैं। इसलिए मनुष्य का नव रूपान्तर करने में कहीं ज्यादा लम्बा समय लगेगा।

इस समय बुद्धिजीवी किस खाल पर टिके हुए हैं ? वे सार्वजनिक मिलकियत की खाल

पर, सर्वहारा वर्ग पर टिके हुए हैं। उन्हें जीवनयापन के साधन कौन उपलब्ध कराता है ? मजदूर और किसान कराते हैं। बुद्धिजीवी एक प्रकार के अध्यापक हैं, जिन्हें मजदूर वर्ग और मेहनतकश जनता ने अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिए नियुक्त किया है। अगर वे मालिकों की इच्छा के विपरीत अपने ही माल को भिड़ाते रहे, घिसे-पिटे लेखन, कनफ्यूशियसवादी क्लासिकी रचनाओं या पूंजीवादी वाहियात बातों की ही शिक्षा देने पर अड़े रहे तथा कुछ प्रतिक्रान्तिकारियों को ही तैयार करते रहे, तो मजदूर वर्ग इसे बर्दाश्त नहीं करेगा तथा उन्हें बरखास्त कर देगा और अगले वर्ष उनके अनुबन्ध का नवीनीकरण नहीं करेगा।

सौ दिन पहले मैंने यहां कहा था कि पुराने समाज से आए बुद्धिजीवियों का अब कोई आधार नहीं रह गया है, वे अपने पिछले सामाजिक और आर्थिक आधार को यानी पांच खालों को गंवा चुके हैं तथा उनके सामने नई खाल पर टिकने के सिवाय और कोई उपाय नहीं रह गया है। कुछ बुद्धिजीवी अभी दुविधा की स्थिति में हैं। वे लोग अधर में लटक गए हैं, उनके लिए न तो ऊपर कोई चीज है जिसका सहारा ले सकें और न नीचे कोई जगह है जहां पांव टिका सकें। मेरे खयाल से उन लोगों को "अधर में लटके महानुभाव" कहकर पुकारा जा सकता है। अधर में लटके हुए वे लोग वापस लौटना चाहते हैं, लेकिन लौट नहीं पाते, क्योंकि उनके पुराने घरों, उन पांच खालों का अस्तित्व मिट चुका है। हालांकि वे लोग बेघर हो गए हैं, फिर भी सर्वहारा वर्ग पर निर्भर रहने को तैयार नहीं हैं। अगर वे लोग सर्वहारा वर्ग पर निर्भर रहना चाहते हों, तो यह जरूरी है कि वे सर्वहारा विचारों का अध्ययन करें, सर्वहारा वर्ग के प्रति कुछ सौहार्दभाव रखें और मजदूरों व किसानों के साथ दोस्ती कायम करें। लेकिन वे ऐसा नहीं करना चाहते। जो चीज चली गई है उसके जाने का एहसास होते हुए भी वे उसके लिए लालायित रहते हैं। इस समय हम उनमें जागृति पैदा करने के लिए उन्हें समझा-बुझा रहे हैं। मेरा खयाल है कि इस वृहद वाद-विवाद के बाद उन लोगों में जैसे-तैसे जागृति पैदा हो जाएगी।

मध्यवर्ती स्थिति वाले बुद्धिजीवियों को जागृत हो जाना चाहिए और ज्यादा अहंकार नहीं करना चाहिए, क्योंकि जो कुछ वे जानते हैं वह सीमित है। मैं कहता हूं, ये लोग बुद्धिजीवी हैं भी और नहीं भी, शायद इन्हें अर्ध-बुद्धिजीवी कहना ज्यादा उपयुक्त होगा, क्योंकि इनकी जानकारी इतनी कम है कि उसूल के मामले में मुंह खोलते ही बिना गलती किए ये कोई बात नहीं कह पाते। फिलहाल हम दक्षिणपंथी बुद्धिजीवियों को अलग छोड़ दें, क्योंकि वे प्रतिक्रियावादी हैं। मध्यवर्ती स्थिति वाले बुद्धिजीवियों की गलती यह है कि वे डांवाडोल हो जाते हैं, स्पष्ट दिशा का अनुसरण नहीं कर पाते और कभी-कभी भटक भी जाते हैं। अगर आपके अन्दर इतनी विद्वता है तो गलतियां क्यों कर बैठते हैं ? अगर आपके अन्दर इतनी विलक्षणता और अहम्मन्यता है तो ढुलमुलपन क्यों दिखाते हैं ? दीवार पर उगा घास का गुच्छा हवा में दाएं-बाएं हिलता रहता है। इन सब बातों से जाहिर होता है कि आप लोग ज्यादा जानकारी नहीं रखते। इस सिलसिले में ज्यादा जानकारी रखने वाले मजदूर लोग ही हैं और किसानों के बीच के अर्ध-सर्वहारा लोग ही हैं। वे लोग देखते ही बता सकते हैं कि सुन ता-यूवी का माल नकली होने के सिवाय और कुछ नहीं है। देखा आपने, कौन ज्यादा जानता है ? इसमें सन्देह नहीं कि जो लोग बहुत कम लिख-पढ़ सकते हैं उन्हें ज्यादा जानकारी होती है। समूची परिस्थिति और आम दिशा के बारे में महत्त्वपूर्ण निर्णय करते समय सर्वहारा वर्ग पर निर्भर रहना

जरूरी है। मैं खुद भी एक ऐसा आदमी हूं जो कोई महत्त्वपूर्ण काम करने अथवा महत्त्वपूर्ण निर्णय करने के पहले जरूर मजदूरों और किसानों से सलाह-मशविरा करता है, उनके साथ और उनसे घनिष्ठ सम्बन्ध रखने वाले कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत करता है तथा पूछता है कि मेरी राय ठीक है या नहीं। इसके लिए विभिन्न स्थानों का दौरा करना बेहद जरूरी है। केवल पेकिङ में बैठे रहना घातक सिद्ध हो सकता है। यह एक ऊसर स्थान है जहां आपको कोई कच्चा माल नहीं मिल सकता। समस्त कच्चा माल मजदूरों और किसानों से तथा देश के कोने-कोने से आता है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी एक प्रोसेसिंग कारखाने के समान है, जहां कच्चे माल को इस्तेमाल करके उत्पादन तैयार किए जाते हैं। तैयारशुदा उत्पादन अच्छे होने चाहिए, अन्यथा गलतियां होने लगेंगी। ज्ञान का स्रोत जन-समुदाय है। जनता के बीच के अन्तरविरोधों को सही ढंग से हल करने का मतलब आखिर क्या है ? इसका मतलब है तथ्यों के जरिए सत्य की तलाश करना और जनदिशा का अनुसरण करना। अन्ततोगत्वा जनदिशा ही सब कुछ है। यह जरूरी है कि हम जन-समुदाय से अलग-थलग न रहें, जन-समुदाय के साथ हमारा सम्बन्ध ऐसा है जैसा मछली और पानी के बीच अथवा तैराक और पानी के बीच होता है।

क्या इस बात की जरूरत है कि हम दक्षिणपंथियों को केवल एक ही प्रहार में खत्म कर दें ? उन पर दो-चार बार जोरदार चोट करना तो बिलकुल जरूरी है। अगर ऐसा न किया गया तो वे मरने का बहाना बना लेंगे। क्या इस बात की जरूरत नहीं है कि हम ऐसे लोगों पर प्रहार करें और उनका पीछा करें ? हां, प्रहार करने की जरूरत है। लेकिन इसका उद्देश्य है उन्हें सही रास्ते पर लौट आने के लिए मजबूर करना। प्रहार करते समय हमें हर सम्भव तरीका अपनाकर उन्हें पूरी तरह अलगाव की स्थिति में डाल देना चाहिए, केवल तभी हम उनमें से सबको नहीं तो कम से कम कुछ लोगों को अपने पक्ष में कर सकेंगे। वे लोग बुद्धिजीवी हैं और उनमें से कुछ लोग बड़े-बड़े विद्वान भी हैं; हमारे पक्ष में आने के बाद वे उपयोगी हो सकते हैं। उन्हें हमारे पक्ष में कर लिया जाए और कुछ काम दे दिया जाए। इसके अलावा, उन्होंने इस बार नकारात्मक उदाहरण से जनता को शिक्षित करने वाले शिक्षकों के रूप में हमारी बड़ी सेवा की है। इसलिए हम उन्हें ह्वाङफ़ु नदी में डुबोने नहीं जा रहे बल्कि अब भी उनके प्रति बीमारी का इलाज करके मरीज को बचा लेने का रुख अपना रहे हैं। शायद कुछ लोग हमारे पक्ष में नहीं आना चाहते। अगर सुन ता-यूवी जैसे व्यक्ति अपनी जिद पर अड़े रहते हैं और परिवर्तन से इनकार करते हैं, तो उन्हें अपने हाल पर छोड़ दिया जाए। इस समय हमें बहुत से काम करने हैं। यह कैसे हो सकता है कि हम इस तरह के लोगों पर अगले पचास वर्ष तक रोजाना प्रहार पर प्रहार करते जाएं ! कुछ लोग ऐसे हों जो अपनी गलतियों को सुधारने से इनकार कर दें, तो वे यमराज के दरबार में जाते समय भी उन्हें अपने कफन से चिपकाए रख सकते हैं और यमराज से कह सकते हैं, "मैं पांच खालों का रक्षक हूं। मैं एक 'सत्यनिष्ठ' व्यक्ति हूं। कम्युनिस्ट पार्टी और जन-समुदाय ने मेरी खूब मरम्मत की, लेकिन मैंने सिर नहीं झुकाया और हर कसौटी में खरा उतरा हूं।" लेकिन उन्हें यह मालूम हो जाना चाहिए कि आज यमलोक में भी परिवर्तन हो चुका है, वहां मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन का शासन है। आज यमलोक भी दो हैं, पूंजीवादी दुनिया के यमलोक का शासक शायद वही पुराना

यमराज है, जबकि समाजवादी दुनिया के यमलोक के शासक मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन हैं; मैं समझता हूं कट्टर दक्षिणपंथियों को आज से एक शताब्दी बाद भी जरूर सजा दी जाएगी।

नोट

[1] 'ल्वे च', 'ध्येन रुइ'।

[2] "सीढ़ियां उतर रहे हैं" का अभिप्राय यहां गलतियां करने वाले नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं द्वारा दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान जन समुदाय की आलोचना सुनकर आत्म-आलोचना के लिए किए जाने वाले उन प्रयत्नों से है, जिनके जरिए वे जन समुदाय के क्षमा पात्र बन जाते हैं।

[3] 'च्वो च्वान', 'राजा शी का चौदहवां वर्ष'।

1957 की गरमियों की परिस्थिति

जुलाई 1957

हमारे देश में समाजवादी क्रान्ति के काल में जनता और उन पूंजीवादी दक्षिणपंथियों के बीच का अन्तरविरोध जो कम्युनिस्ट पार्टी, जनता व समाजवाद का विरोध करते हैं, हमारे और दुश्मन के बीच का अन्तरविरोध है, एक शत्रुतापूर्ण, कभी हल न होने वाला और जीवन-मरण का अन्तरविरोध है।

पूंजीवादी दक्षिणपंथी, जिन्होंने मजदूर वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ बड़े पागलपन के साथ प्रहार किए हैं, प्रतिक्रियावादी या प्रतिक्रान्तिकारी हैं। उन पर ऐसे लेबिल लगाने के बदले उन्हें दक्षिणपंथी के नाम से इसलिए पुकारा जाता है क्योंकि इससे एक तो मध्यवर्ती लोगों को अपने पक्ष में करने में मदद मिलेगी और दूसरे, दक्षिणपंथियों को विभाजित करने में मदद मिलेगी तथा उनमें से कुछ लोगों के बदलकर हमारे पक्ष में आ मिलने की सम्भावना पैदा हो जाएगी।

जो पूंजीवादी दक्षिणपंथी अन्त तक नहीं बदलेंगे वे लोग कट्टरपंथी तत्व हैं, लेकिन उन्हें भी काम दिया जाएगा और नागरिक अधिकारों से वंचित नहीं किया जाएगा, बशर्ते कि वे खुफिया एजेण्ट न हों और फिर से तोड़फोड़ की कार्यवाही न करें। यह कार्यनीति इसलिए अपनाई जा रही है कि क्योंकि पहले की बहुत सी घटनाओं से यह धारणा कायम हो चुकी है कि अतिवादी नीति के बुरे नतीजे होते हैं। हमें दूरदर्शी होना चाहिए तथा अब से अनेक दशाब्दियों के बाद जब हम वर्तमान घटनाओं का सिंहावलोकन करेंगे, तो हमें मालूम हो जाएगा कि पूंजीवादी दक्षिणपंथियों के प्रति हमारे इस बरताव से सर्वहारा वर्ग के क्रान्तिकारी कार्य पर कितना गहरा व दूरगामी प्रभाव पड़ा है और उसका कितना बड़ा हित हुआ है।

हमारा उद्देश्य है एक ऐसी राजनीतिक परिस्थिति पैदा करना जिसमें केन्द्रीयता के साथ जनवाद भी हो, अनुशासन के साथ आजादी भी हो, एकीकृत संकल्प के साथ व्यक्तिगत इतमीनान व जिन्दादिली भी हो, ताकि हमारी समाजवादी क्रान्ति को और हमारे समाजवादी निर्माण को आगे बढ़ाया जा सके, कठिनाइयों को अपेक्षाकृत ज्यादा आसानी से दूर किया जा सके, हमारे देश में एक आधुनिक उद्योग व आधुनिक कृषि का अपेक्षाकृत तेज रफ्तार से निर्माण किया जा सके, हमारी पार्टी को और हमारे राज्य को अपेक्षाकृत अधिक सुदृढ़ बनाया जा सके तथा उनमें भीषण आंधी-तूफानों का मुकाबला करने की और अधिक क्षमता पैदा

जुलाई 1957 में छिङताओ में आयोजित प्रान्तीय और म्युनिसिपल पार्टी कमेटियों के सचिवों के सम्मेलन के दौरान लिखा गया लेख, जिसे छपवाकर सम्मेलन में वितरित किया गया था। उसी वर्ष अगस्त में इसे पार्टी के नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं के बीच भी वितरित किया गया था।

की जा सके। यहां मुख्य विषय है जनता के बीच के अन्तरविरोधों को तथा हमारे और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोधों को सही ढंग से हल करना। इसका तरीका है तथ्यों के जरिए सत्य की तलाश करना और जनदिशा पर अमल करना। इससे उत्पन्न होने वाले उपाय हैं प्रमुख नीतियों पर विचार-विमर्श करने के लिए ऐसी मीटिंगें बुलाना जिनमें पार्टी सदस्य और गैर-पार्टी लोग दोनों ही शामिल हों, खुले तौर पर दोष-निवारण आन्दोलन चलाना तथा पार्टी व सरकार की बहुत सी खामियों व गल्तियों की समाचारपत्रों में आलोचना करना। जनवादी पार्टियों में, शिक्षा, पत्रकारिता, विज्ञान व प्रौद्योगिकी, कला-साहित्य, सार्वजनिक स्वास्थ्य और उद्योग व वाणिज्य के दायरों में, तथा मजदूर वर्ग, किसान समुदाय की विभिन्न श्रेणियों, दस्तकारों और अन्य शहरी व देहाती श्रमिकों में भी अलग-अलग समूहों व अलग अलग मंजिलों में कदम-ब-कदम दोष-निवारण व समाजवादी-शिक्षा आन्दोलन चलाया जाना चाहिए। जहां तक पूंजीपति वर्ग और पूंजीवादी बुद्धिजीवियों का ताल्लुक है, समस्या उनके द्वारा समाजवादी रूपान्तर स्वीकार किए जाने की है, और यही बात निम्न-पूंजीपति वर्ग पर (जिसमें किसान और शहरों व देहातों में अपने खुद के रोजगार में लगे हुए श्रमिक शामिल हैं) और खास तौर से खुशहाल मध्यम किसानों पर भी लागू होती है; लेकिन जहां तक मजदूर वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी की बुनियादी पांतों का ताल्लुक है, समस्या उनकी कार्यशैली को सुधारने की है। ये समस्याएं स्वरूप की दृष्टि से भिन्न दो अलग-अलग सामाजिक दायरों से सम्बन्धित हैं। यह भिन्नता होने पर भी आखिर दोष-निवारण का नारा दोनों के लिए क्यों इस्तेमाल किया जाता है ? क्योंकि अधिकांश लोग इस नारे को अपेक्षाकृत आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। लोगों से हम कह सकते हैं : जब कम्युनिस्ट पार्टी और मजदूर वर्ग भी दोष-निवारण कर रहे हैं, तो क्या आपको ऐसा नहीं करना चाहिए ? इस प्रकार पहल पूरी तरह हमारे हाथ में रहेगी। दोष-निवारण का तरीका है आलोचना व आत्म-आलोचना करना, तथ्यों को पेश करना और तर्क-वितर्क करना। दोष-निवारण का उद्देश्य है संघर्ष का इस तरह मार्गदर्शन करना जिससे राजनीतिक दिशा दुरुस्त हो जाए, विचारधारात्मक स्तर ऊंचा किया जा सके, काम में मौजूद खामियों को दूर किया जा सके, व्यापक जन-समुदाय को एकताबद्ध किया जा सके तथा पूंजीवादी दक्षिणपंथियों व तमाम समाजवाद-विरोधी तत्वों को अलगाव में डाला जा सके और विभाजित किया जा सके। जिन पूंजीवादी दक्षिणपंथियों का उल्लेख यहां किया गया है उनमें वे लोग भी शामिल हैं जो मौका पाकर पार्टी व नौजवान संघ में घुस आए हैं और जिनका राजनीतिक रंग हू-ब-हू पार्टी व नौजवान संघ के बाहर के दक्षिणपंथियों जैसा है; इन लोगों ने सर्वहारा वर्ग के क्रान्तिकारी कार्य के साथ विश्वासघात किया है और पार्टी पर वहशियाना प्रहार किए हैं, इसलिए उन्हें पूरी तरह बेनकाब कर दिया जाना चाहिए और पार्टी से निकाल दिया जाना चाहिए, ताकि पार्टी और नौजवान संघ की पांतों की शुद्धता को कायम रखा जा सके।

जन-समुदाय की बहुसंख्या पर, सबसे पहले बुनियादी जन-समुदाय यानी मजदूरों व किसानों की बहुसंख्या पर दृढ़ विश्वास रखना – यह हमारा बुनियादी प्रस्थान-बिन्दु है। उद्योगपतियों व व्यापारियों और बुद्धिजीवियों में से भी अधिकांश लोग, जो शायद दक्षिणपंथियों के उन्मादपूर्ण प्रहारों के दौरान कुछ समय के लिए धोखे में आ गए थे और डांवाडोल होने लगे थे, चन्द हफ्तों के बाद दक्षिणपंथियों के खिलाफ जवाबी प्रहार शुरू किए जाने पर फिर

से होश में आ गए और हमारा पक्षपोषण करने लगे। इसलिए अन्ततोगत्वा इन दायरों के बहुसंख्यक लोग विश्वसनीय हैं और समाजवादी रूपान्तर को स्वीकार कर सकते हैं। ऐसे कामरेडों की संख्या कम नहीं है जिन्होंने किसी न किसी समय सर्वहारा वर्ग की शक्ति को कम करके आंकने और पूंजीवादी दक्षिणपंथियों की शक्ति को बढ़ा-चढ़ाकर आंकने की गलती की है। प्रिफेक्चरों, काउण्टियों, जिलों, श्याङों और कारखानों में अब भी बहुत से कार्यकर्ता ऐसा करते हैं, और हमें उनको बड़े धीरज के साथ समझाना-बुझाना चाहिए कि वे हमारे अपने पक्ष की शक्ति को कम करके और दुश्मन के पक्ष की शक्ति को बढ़ा-चढ़ाकर न आंकें। देहातों में जमींदारों और धनी किसानों का नव रूपान्तर किया जा रहा है; उनमें से कुछ लोग अब भी गड़बड़ी पैदा कर रहे हैं और उनके प्रति हमें अपनी सतर्कता बढ़ा लेनी चाहिए। अधिकांश खुशहाल मध्यम किसान सहकारी समितियों में रहना चाहते हैं; उनमें केवल थोड़े से लोग ऐसे हैं जो सहकारी समितियों से अलग होने का शोरगुल मचाते हैं और पूंजीवादी रास्ता अपनाने के लिए व्याकुल रहते हैं। हमें गुणावगुणों के आधार पर उनके साथ अलग-अलग किस्म का बरताव करना चाहिए। यह जरूरी है कि देहातों में वर्गदिशा पर ध्यान दिया जाए और पहले के गरीब किसानों व खेतिहर मजदूरों को नेतृत्वकारी निकायों में प्रभुत्वकारी स्थान दिया जाए, तथा साथ ही मध्यम किसानों के साथ एकता कायम करने की ओर भी ध्यान दिया जाए। मैं इस बात का समर्थन करता हूं कि केन्द्रीय कमेटी की तरफ से फौरन एक निर्देश जारी किया जाए, जिसके जरिए पार्टी में मौजूद दक्षिणपंथी अवसरवादी विचारों की, कुछ कार्यकर्ताओं में मौजूद विभागवादी विचारों की और खुशहाल मध्यम किसानों के पूंजीवादी व व्यक्तिवादी विचारों की आलोचना करने तथा जमींदारों व धनी किसानों की प्रतिक्रान्तिकारी गतिविधियों पर प्रहार करने के लिए देहातों की समूची आबादी में बड़े पैमाने का एक समाजवादी-शिक्षा आन्दोलन चलाया जाए। आलोचना का मुख्य निशाना डांवाडोल होने वाले खुशहाल मध्यम किसानों को बनाया जाए तथा उनके पूंजीवादी विचारों के खिलाफ तर्क-वितर्क के जरिए संघर्ष किया जाए। जिलों और श्याङों के कार्यकर्ताओं के दोष-निवारण आन्दोलन और तीसरी श्रेणी की सहकारी समितियों की जांच-पड़ताल व सुदृढ़ीकरण के साथ तालमेल कायम करते हुए, इस संघर्ष को अब से हर साल एक बार दृढ़ता से चलाया जाना चाहिए, ताकि सब सहकारी समितियां कदम-ब-कदम सुदृढ़ हो सकें। देहातों में भी पहले किसानों को "दिल खोलकर राय जाहिर करने" दी जाय, यानी आलोचना और टीका-टिप्पणी करने दी जाय। तब जो राय अच्छी हो उसे अपना लिया जाय और जो बुरी हो उसकी आलोचना की जाय। यह सब देहातों के दोष-निवारण आन्दोलन में, जिसे ऊपर से भेजे गए कार्यदल की मदद से स्थानीय कार्यकर्ताओं द्वारा चलाया जाता है, कदम-ब-कदम किया जाय। शहरों के ही समान देहाती इलाकों में भी दो रास्तों – समाजवाद और पूंजीवाद – के बीच का संघर्ष मौजूद है। इसमें पूर्ण विजय प्राप्त करने में बहुत लम्बा समय लगेगा। यह पूरे संक्रमण-काल का कार्य है। देहातों में घर-परिवार को और सहकारी समिति को मेहनत और किफायत से चलाने के काम को एक साथ प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए तथा देश को, सहकारी समिति को और घर-परिवार को प्यार करने की भावना को भी एक साथ प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। घर-परिवार को मेहनत और किफायत से चलाने की समस्या को हल करने के लिए हमें विशेष रूप से महिला संगठनों के प्रयत्नों

पर निर्भर रहना चाहिए। आने वाले कुछ वर्षों में हर साल औसतन 3,500 करोड़ चिन अनाज टैक्स के रूप में और 5,000 करोड़ चिन अनाज राजकीय खरीद के रूप में अवश्य प्राप्त कर लिया जाना चाहिए। लेकिन फसल अच्छी होने या न होने के अनुसार इस मात्रा में कुछ कमी या बढ़ोतरी भी की जा सकती है। देहातों में उत्पादन प्रतिवर्ष बढ़ता जा रहा है और अनाज की कमी वाले परिवार प्रतिवर्ष कम होते जा रहे हैं, इसलिए देहातों में बिकने वाले अनाज की मात्रा प्रतिवर्ष कुछ घटाई जानी चाहिए। शहरों में भी, जहां अनाज की बिक्री ज्यादा होती है, उसमें समुचित मात्रा में कटौती की जानी चाहिए। केवल इसी तरह सम्भावित संकट का मुकाबला करने के लिए राज्य द्वारा अपने अनाज भण्डार को प्रतिवर्ष बढ़ाया जा सकता है। अगर वह 8,500 करोड़ चिन अनाज जमा करने में असफल रहा, तो बाजार-भाव पर प्रभाव पड़ेगा, समूची राष्ट्रीय आर्थिक योजना को सुचारु रूप से पूरा करने में बाधा पड़ेगी और संकट की घड़ी आने पर हम निरुपाय हो जाएंगे तथा यह एक बहुत खतरनाक हालत होगी। इस साल शरद की फसल के पहले देहातों में व्यक्तिवाद और विभागवाद इन दोनों के खिलाफ, जो राजकीय और सामूहिक हितों की परवाह नहीं करते, संघर्ष छेड़ना आवश्यक है।

जहां कहीं भी प्रतिक्रान्तिकारी मौजूद हों, उनका सफाया कर दिया जाना चाहिए। वध कम लोगों का किया जाना चाहिए, लेकिन मौत की सजा हरगिज रद्द नहीं की जानी चाहिए अथवा आम माफी हरगिज नहीं दी जानी चाहिए। जो लोग जेल से छूटने के बाद नए अपराध करें, उन्हें फिर से गिरफ्तार करना और सजा देना जरूरी है। हमारे समाज में गुण्डों, बदमाशों, चोर-डाकुओं, हत्यारों, महिलाओं की इज्जत लूटने वालों, गबनकारियों और ऐसे अन्य घोर अपराधियों को सजा दी जानी चाहिए जो सार्वजनिक व्यवस्था को हानि पहुंचाते हैं और कानून का गम्भीर रूप से उल्लंघन करते हैं; उन लोगों को भी सजा दी जानी चाहिए जिन्हें आम जनता बुरे तत्व समझती है। इस समय न्याय विभाग व सार्वजनिक सुरक्षा विभाग के कुछ कार्यकर्ता अपने कर्तव्य से विमुख हो रहे हैं और ऐसे लोगों को खुला छोड़ रहे हैं जिन्हें पकड़ा जाना चाहिए और सजा दी जानी चाहिए; यह गलत है। जिस प्रकार छोटे अपराधों के लिए भारी सजा देना ठीक नहीं है, उसी प्रकार भारी अपराधों के लिए हल्की सजा देना भी ठीक नहीं; और वर्तमान काल में भारी अपराधों के लिए हल्की सजा दिए जाने का खतरा बना हुआ है। जुआ खेलने पर प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिए। प्रतिक्रियावादी गुप्त सोसाइटियों पर लगाए गए प्रतिबन्ध को दृढ़ता से लागू किया जाना चाहिए। दक्षिणपंथी विद्यार्थियों के नेताओं की पूरी तरह आलोचना की जानी चाहिए, लेकिन उन्हें आम तौर पर उन्हीं प्रतिष्ठानों में रहने दिया जाए जहां वे पढ़ते थे, जिससे वे लोग दूसरों के निरीक्षण में अपने को सुधार सकें और "शिक्षकों" की भूमिका अदा कर सकें। उपरोक्त सब बातें संक्रमण-काल के लिए उपयोगी हैं और उन्हें लागू करने की जिम्मेदारी प्रान्तों, म्युनिसिपलटियों और स्वायत्त प्रदेशों की पार्टी-कमेटियों के कन्धों पर है। केन्द्रीय प्राधिकरणों की नीतियों व कानूनों के अन्तर्गत, न्याय व सार्वजनिक सुरक्षा तथा संस्कृति व शिक्षा का काम करने वाले स्थानीय विभागों को अनिवार्य रूप से प्रान्तों, म्युनिसिपलटियों और स्वायत्त प्रदेशों की पार्टी-कमेटियों और जन-परिषदों के निदेशन में काम करना चाहिए।

हमारा आम विषय है जनता के बीच के अन्तरविरोधों को सही ढंग से हल करना। इसकी

तब तक लगातार चर्चा करते रहें जब तक लोग इससे परिचित न हो जाएं; इससे जो बात उन्हें पहले विचित्र मालूम होती थी वह अब वैसी नहीं मालूम होगी। जनता के बीच के अन्तरविरोधों से सम्बन्धित सवाल का अपने दिमाग में स्पष्टीकरण करें, उसकी स्थूल तौर पर साफ साफ व्याख्या करें, ऐसे अनेक अन्तरविरोधों को सही ढंग से हल करें और जब आप नतीजे हासिल कर लेंगे और अनुभव प्राप्त कर लेंगे तो पहले की तरह हरगिज भयभीत नहीं होंगे।

मैं इस बात को फिर एक बार दोहरा दूं। जनता के बीच के अन्तरविरोधों को सही ढंग से हल करने का मतलब है जनदिशा पर अमल करना, जिस पर हमारी पार्टी लगातार जोर देती आई है। पार्टी-सदस्यों को अपने काम में जन-समुदाय से सलाह मशविरा करने में निपुण होना चाहिए और किसी भी समय जनता से अलग-थलग नहीं होना चाहिए। पार्टी और जनता के बीच सम्बन्ध मछली और पानी के बीच के सम्बन्धों के समान होते हैं। पार्टी और जनता के बीच अच्छे सम्बन्धों के बिना समाजवादी व्यवस्था कायम करना सम्भव नहीं है और अगर वह कायम भी हो जाए तो इसे सुदृढ़ नहीं बनाया जा सकता।

सशस्त्र सेनाओं में अनेक बार दोष-निवारण आन्दोलन चलाया गया है; अनुशासन के तीन मुख्य नियमों और ध्यान देने योग्य आठ बातों को लागू किया गया है; फौजी, राजनीतिक और आर्थिक मामलों में जनवाद पर अमल किया गया है, युद्ध के समय स्क्वाडों में आपसी सहयोग दल कायम किए गए हैं; अफसर सिपाहियों के साथ घुलमिल कर रहते हैं और सेना जनता के साथ; लोगों को मारने-पीटने और डांट-फटकार लगाने की मनाही है और भगोड़ों को प्राणदण्ड देने पर पाबन्दी लगा दी गई है। इसके फलस्वरूप सैनिकों का मनोबल बहुत ऊंचा हो गया है और हमारी सेना अपराजेय बन गई है। जब यह सब शस्त्रधारी सैनिकों के बीच किया जा सकता है तो भला कारखानों, गांवों, दफ्तरों और विद्यालयों में जनवाद पर अमल क्यों नहीं किया जा सकता तथा उनकी समस्याओं (अन्तरविरोधों) को जोर-जबरदस्ती के बदले समझाने-बुझाने के तरीके से हल क्यों नहीं किया जा सकता ?

जब हम साम्राज्यवादियों से भी नहीं डरते तो भला अपनी जनता से क्यों डरने लगे ? जो व्यक्ति आम जनता से डरता है तथा यह समझता है कि जन-समुदाय तर्क को नहीं मानता, इसलिए उसे समझाने बुझाने के बदले उसे दबाव डाला जाना चाहिए, वह एक सच्चा कम्युनिस्ट नहीं है।

दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान हमें गद्दारों और गम्भीर रूप से कानून का उल्लंघन करने वाले लोगों को छोड़कर, पार्टी और नौजवान संघ के तमाम सदस्यों की रक्षा करनी चाहिए तथा उन्हें अपनी खामियों व गल्तियों को दूर करने में, अपनी कार्यशैली को सुधारने में तथा अपनी कार्यक्षमता को और अपने राजनीतिक व विचारधारात्मक स्तर को उन्नत करने में मदद देने की पुरजोर व सच्ची कोशिश करनी चाहिए। एक पार्टी-सदस्य के लिए यह जरूरी है कि वह ओजस्विता से ओतप्रोत हो, सुदृढ़ क्रान्तिकारी संकल्प से लैस हो, तमाम कठिनाइयों की परवाह न करके उनका डटकर सामना करने की भावना से परिपूर्ण हो तथा अपने को व्यक्तिवाद, विभागवाद, निरपेक्ष समानतावाद और उदारतावाद से मुक्त रखने का पक्का इरादा रखता हो; अन्यथा वह सच्चे अर्थों में एक पार्टी-सदस्य नहीं है। जो पार्टी सदस्य अपनी ओजस्विता और क्रान्तिकारी संकल्प को खो बैठते हैं और अपनी गलतियों पर अड़ रहते हैं,

वे अगर बारम्बार चेतावनी दिए जाने पर भी अपने को सुधारने से इनकार करें तो पार्टी-कमेटी को उनसे समुचित ढंग से निपटना चाहिए तथा गम्भीर मामलों में अनुशासनात्मक कार्यवाही का सहारा भी लेना चाहिए।

यह जरूरी है कि छः महीने से एक साल के भीतर प्रान्तों, म्युनिसिपलटियों और स्वायत्त प्रदेशों की पार्टी कमेटियों के प्रथम सचिव (अन्य सचिव भी) किसी एक सहकारी समिति, एक कारखाने, एक दुकान या एक विद्यालय में जाकर खुद जांच-पड़ताल करके कुछ जानकारी और "बोलने का अधिकार" प्राप्त कर लें, तथा इस प्रकार अपने यहां के सामान्य कामकाज का और ज्यादा अच्छी तरह मार्गदर्शन करें। प्रिफेक्चरों, काउण्टियों और जिलों की पार्टी-कमेटियों के सचिवों को भी ऐसा ही करना चाहिए।

पूंजीवादी दक्षिणपंथियों की हमारे द्वारा की गई वर्तमान आलोचना के महत्त्व का मूल्य कम करके न आंका जाए। यह राजनीतिक व विचारधारात्मक मोर्चों पर चलाई गई एक महान समाजवादी क्रान्ति है। केवल आर्थिक मोर्चे पर (यानी उत्पादन के साधनों की मिलकियत के क्षेत्र में) चलाई गई 1956 की समाजवादी क्रान्ति ही काफी नहीं है और न वह सुदृढ़ हुई है। हंगरी की घटना इसका सबूत है। राजनीतिक व विचारधारात्मक मोर्चों पर भी एक मुकम्मिल समाजवादी क्रान्ति चलाने की जरूरत है। निस्सन्देह, जनवादी पार्टियों, बुद्धिजीवियों और उद्योग व वाणिज्य के दायरों में यह सवाल ही नहीं उठता कि कुछ लोगों (दक्षिणपंथियों) पर कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व लागू किया जाए, क्योंकि वे लोग हमारे दुश्मन हैं, और अधिकांश लोगों (मध्यवर्ती लोगों) पर पार्टी का नेतृत्व दृढ़ता से कायम नहीं हो पाया है; कुछ सांस्कृतिक व शैक्षणिक इकाइयों में पार्टी का नेतृत्व बिलकुल कायम नहीं हुआ है। यह जरूर है कि मध्यवर्ती लोगों पर यह नेतृत्व दृढ़ता से कायम किया जाए और यह काम जितनी जल्दी किया जाए उतना ही अच्छा होगा। पूंजीपति वर्ग और पूंजीवादी बुद्धिजीवी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व को दिल से नहीं मानते और उनके बीच मौजूद दक्षिणपंथी तो हमारे साथ ताकत-आजमाई करने पर भी तुले हुए हैं। जहां एक बार उन्हें ताकत-आजमाई में हार खानी पड़ी, तो उन्हें यह एहसास हो जाएगा कि पूरी स्थिति उनके लिए बिलकुल प्रतिकूल और निराशाजनक बन चुकी है। केवल तभी उनमें से अधिकांश लोग (मध्यवर्ती और कुछ दक्षिणपंथी लोग) कदम-ब-कदम अपना आचरण ठीक करने, अपना पूंजीवादी रुख छोड़ने, सर्वहारा वर्ग के पक्ष में आने और उस पर निर्भर रहकर जीवनयापन करने का निर्णय करेंगे। जहां तक उन थोड़े से लोगों का ताल्लुक है जो मरते दम तक परिवर्तन से इनकार करते रहेंगे, उन्हें अपना प्रतिक्रियावादी दृष्टिकोण अपने कफन के साथ कब्र में ले जाने दिया जाए। लेकिन हमें अपनी सतर्कता बढ़ा लेनी चाहिए और यह समझ लेना चाहिए कि मौका पाते ही वे लोग जरूर फिर से तूफान खड़ा कर देंगे। अब से यह संघर्ष शायद दस-पन्द्रह साल तक जारी रहेगा। अगर मामलों का प्रबन्ध अच्छी तरह किया जाए, तो इस समय में कटौती भी की जा सकती है। निस्संदेह, इसका मतलब यह नहीं है कि दस-पन्द्रह साल के बाद वर्ग-संघर्ष समाप्त हो जाएगा। जब तक हमारी इस दुनिया में साम्राज्यवाद और पूंजीपति वर्ग का अस्तित्व बना रहेगा तब तक हमारे देश के प्रतिक्रान्तिकारियों और पूंजीवादी दक्षिणपंथियों की गतिविधियां न केवल हमेशा वर्ग-संघर्ष का रूप लेती रहेंगी बल्कि अनिवार्य रूप से विदेशी प्रतिक्रियावादियों की गतिविधियों के साथ भी तालमेल कायम

करती रहेंगी। एक अनिवार्य अवधि के बाद, मौजूदा संघर्ष को चाहिए कि वह भीषण आंधी तूफान और मूसलाधार वर्षा की जगह मन्द-मन्थर बयार और हल्की फुहार का रूप धारण कर लें, ताकि विचारधारा की दृष्टि से इसमें और ज्यादा गहराई और मुकम्मिलपन आ सके। पिछले कुछ महीनों में, मुख्य रूप से पिछले दो महीनों में, हमने पहली निर्णायक मुहिम में विजय प्राप्त कर ली है। लेकिन पूर्ण विजय प्राप्त करने के लिए और कुछ महीनों तक गहराई से प्रयास करना जरूरी है, और हमें इस संघर्ष को जल्दबाजी से हरगिज समाप्त नहीं कर देना चाहिए। यह समझ लेना चाहिए कि अगर इस संघर्ष में विजय प्राप्त न हुई तो समाजवाद की प्राप्ति असम्भव हो जाएगी।

समूचे देश की जनता के बीच चलाए जा रहे इस वृहद वाद-विवाद के जरिए कुछ भारी महत्त्व के सवाल हल किए जा चुके हैं या हल किए जा रहे हैं, जैसे क्रान्ति और निर्माण की प्रक्रिया के दौरान हमारा काम ठीक रहा है या नहीं (यानी क्रान्ति और निर्माण के काम में मुख्य चीज उपलब्धियां रही हैं या नहीं), समाजवादी रास्ता अपनाया जाए या नहीं, कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व, सर्वहारा अधिनायकत्व और जनवादी केन्द्रीयता की आवश्यकता है या नहीं तथा हमारी विदेश नीति सही है या नहीं। इस तरह का जनव्यापी वृहद वाद-विवाद चलाया जाना बिलकुल स्वाभाविक है। इस शताब्दी के तीसरे दशक में सोवियत संघ में इस तरह का वाद-विवाद (किसी एक देश में समाजवाद का निर्माण किया जा सकता है या नहीं, इस सवाल के बारे में त्रात्स्की और अन्य लोगों के साथ किया गया वाद-विवाद) चलाया गया था, और छठे दशक में इस वर्ष यह वाद-विवाद हमारे देश में चलाया जा रहा है। अगर हम इस वाद-विवाद में पूर्ण विजय प्राप्त करने में असफल रहे, तो हमारे लिए आगे बढ़ना असम्भव हो जाएगा। जब हम इस वाद-विवाद में विजयी हो जाएंगे, तो हमारे समाजवादी रूपान्तर और समाजवादी निर्माण के काम को भारी प्रोत्साहन मिलेगा। यह वाद-विवाद विश्वव्यापी महत्त्व की एक महान घटना है।

हमें यह समझ लेना चाहिए कि चीन में आधुनिक उद्योग और आधुनिक कृषि की बुनियाद तैयार करने के लिए अब से दस-पन्द्रह वर्ष के समय की आवश्यकता होगी। केवल दस-पन्द्रह वर्ष बाद जब हमारे समाज की उत्पादक शक्तियां पर्याप्त रूप से विकसित हो जाएंगी, तो यह समझा जा सकेगा कि हमारी समाजवादी आर्थिक व राजनीतिक व्यवस्था का अपेक्षाकृत पर्याप्त भौतिक आधार (जो अभी पर्याप्त भौतिक आधार से बहुत दूर है) तैयार हो गया है, और यह समझा जा सकेगा कि हमारा राज्य (ऊपरी ढांचा), पूरी तरह सुदृढ़ हो गया है और हमारे समाजवादी समाज का निर्माण बुनियादी तौर पर पूरा हो गया है। समाजवादी समाज का निर्माण अभी पूरा नहीं हुआ, इसके लिए दस-पन्द्रह वर्ष की अवधि और चाहिए। समाजवाद का निर्माण करने के लिए लिए मजदूर वर्ग के पास अपने तकनीकी कार्यकर्ताओं तथा अपने प्रोफेसरों, अध्यापकों, वैज्ञानिकों, पत्रकारों, साहित्यकारों, कलाकारों, और मार्क्सवादी सिद्धान्तकारों की फौज होना जरूरी है। यह एक विशाल फौज होनी चाहिए; केवल थोड़े से आदमी काफी नहीं हैं। इस काम को अगले दस-पन्द्रह वर्ष के अन्दर बुनियादी रूप से पूरा कर लिया जाना चाहिए। इसके बाद का कार्य होगा उत्पादक शक्तियों का विकास करने और मजदूर वर्ग के बुद्धिजीवियों की फौज का विस्तार करने की दिशा में और अधिक प्रयास करना, समाजवाद से कदम-ब-कदम

कम्युनिज्म में संक्रमण करने के लिए आवश्यक स्थितियां तैयार करना और आठ-दस पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान आर्थिक दृष्टि से अमरीका के बराबर पहुंचने और उससे आगे निकल जाने का प्रयास करना। कम्युनिस्ट पार्टी व नौजवान संघ के सभी सदस्यों और समूची जनता को इस कार्य से परिचित हो जाना चाहिए और हर आदमी को मेहनत से अध्ययन करना चाहिए। जहां कहीं सम्भव हो, हमें तकनीकी व व्यावसायिक जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए तथा मार्क्सवादी सिद्धान्त का अध्ययन करना चाहिए। इस प्रकार मजदूर वर्ग के बुद्धिजीवियों की एक नई फौज (जिसमें पुराने समाज से आए वे सभी बुद्धिजीवी शामिल होंगे जो सच्चे अर्थों में नव रूपान्तर होने के बाद दृढ़ता के साथ मजदूर वर्ग का रुख अपनाएंगे) तैयार हो जाएगी। यह इतिहास द्वारा हमें सौंपा गया एक महान कार्य है। मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी कार्य को तब तक पूर्ण रूप से सुदृढ़ नहीं बनाया जा सकेगा जब तक मजदूर वर्ग के बुद्धिजीवियों की एक विशाल नई फौज तैयार नहीं हो जाएगी।

दोष-निवारण करने, दक्षिणपंथियों की आलोचना करने और जन-समुदाय में मौजूद मध्यवर्ती लोगों को अपने पक्ष में करने के इन तीन कार्यों में केन्द्रीय और प्रान्तीय व म्युनिसिपल स्तरों पर अनुभव प्राप्त करना एक भारी उपलब्धि है। ये अनुभव प्राप्त होने के बाद समस्याओं का समाधान करना पहले से ज्यादा आसान हो जाएगा। अगले कुछ महीनों का कार्य है प्रिफेक्चर और काउण्टी स्तर के कार्यकर्ताओं को यह सिखाना कि ये अनुभव कैसे प्राप्त किए जाएं। अब से इस वर्ष के जाड़ों और अगले वर्ष के वसन्त तक का कार्य है जिला व श्याङ स्तर के कार्यकर्ताओं को कदम-ब-कदम यही बात सिखाना। शहरों में क्षेत्रीय स्तर के कार्यकर्ताओं को, कारखानों व खानों में बुनियादी स्तर के कार्यकर्ताओं को तथा मोहल्ला-कमेटियों के कार्यकर्ताओं को भी यही बात सिखानी है। नतीजे के तौर पर बहुत से लोगों की आंखें खुल जाएंगी, उनके लिए जनदिशा महज एक खोखली बात नहीं रह जाएगी और जनता के बीच के अन्तरविरोधों को हल करना भी ज्यादा आसान हो जाएगा।

प्रान्तों, म्युनिसिपलटियों और स्वायत्त प्रदेशों की पार्टी-कमेटियों के प्रथम सचिवों और अन्य सदस्यों के लिए यह जरूरी है कि वे इस महान संघर्ष की कमान पूरी तरह अपने हाथ में रखें। उनके लिए यह भी जरूरी है कि जनवादी पार्टियों (राजनीतिक दायरों) तथा शिक्षा, पत्रकारिता (जिसमें सभी समाचारपत्र और पत्रिकाएं शामिल हैं), विज्ञान-प्रौद्योगिकी, कला-साहित्य, सार्वजनिक स्वास्थ्य और उद्योग व वाणिज्य के दायरों के राजनीतिक रूपान्तर और विचारधारात्मक नव रूपान्तर के काम को पूरी तरह अपने नियंत्रण में ले लें। हर प्रान्त, म्युनिसिपलटी और स्वायत्त प्रदेश के पास अपने खुद के मार्क्सवादी सिद्धान्तकार, वैज्ञानिक व तकनीकी कर्मचारी, साहित्यकार, कलाकार, साहित्य-समालोचक तथा समाचारपत्रों और पत्रिकाओं के प्रथम श्रेणी के सम्पादक व संवाददाता होने चाहिए। प्रथम सचिवों के लिए (और अन्य सचिवों के लिए भी) यह जरूरी है कि वे समाचारपत्रों व पत्रिकाओं पर खास ध्यान दें और इस सिलसिले में सुस्ती न दिखाएं। हर एक को चाहिए कि वह तुलनात्मक अध्ययन के लिए कम से कम पांच समाचारपत्र और पांच पत्रिकाएं पढ़ें, ताकि वह अपने प्रकाशनों में सुधार कर सकें।

दक्षिणपंथियों की जो आलोचना हमने की है उससे जनवादी पार्टियों में तथा बुद्धिजीवियों और उद्योग व वाणिज्य के दायरों में हर व्यक्ति को भारी धक्का लगा है। इस बात पर गौर

किया जाना चाहिए कि उनमें अधिकांश लोगों (मध्यवर्ती लोगों) का झुकाव समाजवादी रास्ते और सर्वहारा नेतृत्व को स्वीकार करने की ओर है। अलग-अलग किस्म के लोगों में यह झुकाव भी अलग-अलग स्तर का है। इस बात पर भी गौर किया जाना चाहिए कि यद्यपि अब उनका झुकाव केवल इन बुनियादी बातों यानी समाजवादी रास्ते और सर्वहारा नेतृत्व को सचमुच स्वीकार करने की ओर है, फिर भी इस झुकाव से यह मालूम होता है कि यह पूंजीवादी दृष्टिबिन्दु से सर्वहारा दृष्टिबिन्दु तक पहुंचने की उनकी लम्बी यात्रा में पहला कदम है। एक वर्ष (इस वर्ष मई से अगले वर्ष मई तक) के दोष-निवारण के बाद वे लोग एक लम्बा डग आगे बढ़ा सकेंगे। विगत काल में उन्होंने समाजवादी क्रान्ति में भाग लेने की मानसिक तैयारी नहीं की थी। उन्हें इस क्रान्ति का अचानक सामना करना पड़ा था। कम्युनिस्ट पार्टी के कुछ सदस्यों को भी ऐसी ही हालत का सामना करना पड़ा था। दक्षिणपंथियों की आलोचना करने और दोष-निवारण आन्दोलन चलाने से उन लोगों को और व्यापक जन-समुदाय को गहरी समाजवादी शिक्षा प्राप्त होगी।

दुकानों के बिक्री-कक्षों, देहाती क्षेत्रों (जिलों और श्याङों), प्राइमरी स्कूलों और सेना की बटालियनों व कम्पनियों को छोड़कर बाकी सभी जगह बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लगाए जा सकते हैं। यह हमारे देश की स्थितियों में संघर्ष का एक ऐसा रूप है जो सर्वहारा वर्ग के लिए अनुकूल और पूंजीपति वर्ग के लिए प्रतिकूल है। बड़े अक्षरों वाले पोस्टर से डरना बेबुनियाद है। बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लगाना, गोष्ठी बुलाना और वाद-विवाद करना, उच्च शिक्षा प्रतिष्ठानों में, केन्द्रीय, प्रान्तीय, म्युनिसिपल, प्रिफेक्चर और काउण्टी स्तर के विभागों व संगठनों में तथा बड़े-बड़े शहरी कारोबारों में अन्तरविरोधों पर से पर्दा हटाने और उन पर काबू पाने तथा आगे बढ़ने में लोगों की मदद करने के तीन बेहतरीन उपाय हैं।

दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान किसी भी समय उत्पादन और दूसरे कामों की जरा भी अवहेलना नहीं की जानी चाहिए। विभिन्न स्थानों के अधिकारियों को चाहिए कि वे अपने मातहत सभी इकाइयों में दोष-निवारण आन्दोलन एक ही समय में शुरू न करें, बल्कि उसे मंजिल-दर-मंजिल और अलग-अलग समूहों में चलाएं।

भीषण तूफानों व प्रचण्ड लहरों से न डरें, अपने को मजबूत बनाएं और उनका मुकाबला करें। हर इकाई में प्रचण्ड लहरों का उफान दो-तीन सप्ताह में समाप्त हो जाएगा और तब वह इकाई दक्षिणपंथियों पर जवाबी प्रहार करने की नई मंजिल की ओर बढ़ सकेगी। इन दो-तीन हफ्तों में हर इकाई के नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे दक्षिणपंथियों के वहशियाना प्रहारों के समक्ष अपने को मजबूत बनाएं, प्रतिवाद किए बिना उनकी बातें सुनें, स्थिति का विश्लेषण व अध्ययन करने के काम पर ध्यान केन्द्रित करें। जवाबी प्रहार करने के लिए अपनी शक्ति बटोरें, वामपंथी शक्तियों के साथ एकता कायम करें, मध्यवर्ती शक्तियों को अपने पक्ष में करने की कोशिश करें और दक्षिणपंथियों को अलगाव में डाल दें – यह मार्क्सवादी कार्यनीतियों का एक बेहतरीन समूह है।

दिल खोलकर राय जाहिर करने (साथ ही सुधार भी करते जाने) की मंजिल, दक्षिणपंथियों पर जवाबी प्रहार करने (साथ ही सुधार भी करते जाने) की मंजिल, सुधार, पर जोर देने (साथ ही दिल खोलकर राय जाहिर करते जाने) की मंजिल तथा हर व्यक्ति द्वारा

सम्बन्धित दस्तावेजों का अध्ययन किए जाने और आलोचना व आत्म-आलोचना के जरिए अपनी राजनीतिक चेतना का स्तर उन्नत किए जाने की मंजिल – ये मंजिलें केन्द्रीय, प्रान्तीय व म्युनिसिपल, प्रिफेक्चर और काउण्टी इन चार स्तरों पर दोष-निवारण आन्दोलन की चार अपरिहार्य मंजिलें हैं। इसके अतिरिक्त शहरों और देहातों की बुनियादी इकाइयों में भी दोष-निवारण आन्दोलन चलाया जाना आवश्यक है। यह निश्चित है कि इस तरह के आन्दोलन के बाद समूची पार्टी और सारे देश की जनता एक नया रूप धारण कर लेगी।

प्रान्तों, म्युनिसिपलटियों और स्वायत्त प्रदेशों की पार्टी-कमेटियों तथा प्रिफेक्चर पार्टी-कमेटियों के प्रथम सचिवों से अनुरोध किया जाता है कि वे सितम्बर में आयोजित होने वाले केन्द्रीय कमेटी के पूर्ण अधिवेशन की तैयारी के तौर पर अगस्त में कुछ समय निकालकर देहाती इलाकों में सहकारी समितियों की जांच-पड़ताल व सुदृढ़ीकरण तथा उत्पादन, अनाज और अन्य मामलों से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन करें। कृपया कृषि-विकास के चालीस सूत्री कार्यक्रम की हर धारा का अध्ययन करें और देखें कि उसमें सुधार करने की आवश्यकता है या नहीं।

नोट

[1] 'सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोलशेविक) का इतिहास, संक्षिप्त कोर्स', अध्याय 9, भाग 5 ।

क्रान्ति को आगे बढ़ाने में सक्रिय तत्त्व बनो

9 अक्तूबर 1957

यह सम्मेलन सफल रहा है। प्रान्तीय और प्रिफेक्चर पार्टी-कमेटियों से आए कामरेडों के शामिल होने से केन्द्रीय कमेटी का यह विस्तृत पूर्ण अधिवेशन, वास्तव में तीन स्तरों के कार्यकर्ताओं का सम्मेलन बन गया है तथा नीतियों का स्पष्टीकरण करने, अनुभवों का आदान-प्रदान करने और संकल्प का एकीकरण करने वाला एक लाभकारी सम्मेलन बन गया है।

इस प्रकार का सम्मेलन शायद साल में एक बार आयोजित करना जरूरी है। कारण, हमारे जैसे विशाल देश का काम बड़ा पेचीदा है। पिछले वर्ष हमने ऐसा सम्मेलन नहीं बुलाया; फलस्वरूप हमें हानि उठानी पड़ी और दक्षिणपंथी भटकाव का सामना करना पड़ा। पिछले से पिछले वर्ष एक ऊंचा ज्वार आया था, मगर पिछले वर्ष वह कुछ नीचा रहा। निस्सन्देह, पिछले वर्ष हमने आठवीं कांग्रेस का आयोजन किया था और हमें समय नहीं मिल पाया था। अगली बार जब ऐसा सम्मेलन बुलाया जाए तो उसमें काउण्टी पार्टी-कमेटियों और चन्द बड़े शहरों की क्षेत्रीय पार्टी-कमेटियों के कुछ सचिवों को शामिल किया जा सकता है; मिसाल के लिए यह हो सकता है कि उसमें भाग लेने वालों में कई सौ लोगों की बढ़ोतरी कर दी जाए। मेरा सुझाव है कि समस्याओं को सुलझाने के लिए हर प्रान्त में भी तीन या चार स्तरों के कार्यकर्ताओं का प्रान्तीय सम्मेलन बुलाया जाना चाहिए, जिसमें सहकारी समितियों के कुछ कार्यकर्ता भी शामिल हों। यह पहली बात है।

दूसरे, मैं दोष-निवारण के बारे में कुछ कहना चाहता हूं। लोगों को दिल खोलकर राय जाहिर करने देने और अपने काम को सुधारने में निर्भीकता, पूर्णता और दृढ़ता का रुख अपनाया जाना चाहिए। हमें ऐसे संकल्प से लैस हो जाना चाहिए। तो क्या यह जरूरी है कि दक्षिणपंथी-विरोधी आन्दोलन को भी इसके साथ जोड़ दिया जाय और उसे जोर-शोर से चलाया जाय ? नहीं, यह जरूरी नहीं है। कारण, दक्षिणपंथी-विरोधी आन्दोलन सही रास्ते पर चल रहा है और कुछ स्थानों में वह समाप्त भी हो चुका है। अब बुनियादी इकाइयों में यानी काउण्टी, जिले और श्याड़ के इन तीन स्तरों में दिल खोलकर राय जाहिर करने और अपने काम को सुधारने पर जोर दिया जाना चाहिए। केन्द्रीय, प्रान्तीय और म्युनिसिपल स्तरों के कुछ विभागों में दिल खोलकर राय जाहिर करना जारी रखना चाहिए, लेकिन जोर काम को सुधारने पर दिया जाना चाहिए।

इस वर्ष जन-समुदाय ने क्रान्ति को चलाने के एक तरीके का, जन-संघर्ष को चलाने के एक तरीके का सृजन किया है, यानी आजादी से अपनी बात कहना, दिल खोलकर राय

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की आठवीं केन्द्रीय कमेटी के तीसरे विस्तृत पूर्ण अधिवेशन में भाषण।

जाहिर करना, वृहद वाद-विवादों का आयोजन करना और बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लिखना। अब हमारी क्रान्ति ने एक ऐसा तरीका खोज निकाला है जो उसकी अन्तर्वस्तु के बिलकुल अनुरूप है। पहले इस तरीके का जन्म होना असम्भव था। चूंकि उस समय हम लड़ाइयों में, पांच प्रमुख आन्दोलनों में और तीन महान रूपान्तरों में लगे हुए थे, इसलिए उतावलापन दिखाए बिना वाद-विवाद करने के तरीके का जन्म होना सम्भव नहीं था। उस समय उतावलापन दिखाए बिना वाद-विवाद करने, तथ्यों को पेश करने और तर्क-वितर्क करने के लिए पूरा एक वर्ष लगाने की इजाजत नहीं दी जा सकती थी, आज यह मुमकिन हो गया है। हमने जिस तरीके को खोज निकाला है वह मौजूदा जन-संघर्ष की अन्तर्वस्तु से, मौजूदा वर्ग-संघर्ष की अन्तर्वस्तु से तथा जनता के बीच के अन्तरविरोधों को सही ढंग से हल करने के काम से मेल खाता है। इस तरीके को मजबूती से गिरफ्त में रखने के फलस्वरूप अब से मामलों को निपटाना ज्यादा आसान हो जाएगा। सही और गलत से सम्बन्धित छोटी-बड़ी समस्याओं को तथा क्रान्ति और निर्माण के दौरान पैदा होने वाली अन्य समस्याओं को दिल खोलकर राय जाहिर करने और वाद-विवादों का आयोजन करने के तरीके के जरिए हल किया जा सकेगा और अपेक्षाकृत तेजी से हल किया जा सकेगा। वामपंथियों को न सिर्फ मध्यवर्ती लोगों के साथ बल्कि दक्षिणपंथियों के साथ और देहातों में जमींदारों व धनी किसानों के साथ भी दिल खोलकर राय जाहिर करनी चाहिए और वाद-विवाद करना चाहिए। हम "प्रतिष्ठा खो बैठने" से नहीं डरते। हमने अपने समाचारपत्रों में ऐसी बेहूदा बकवास भी प्रकाशित की है, जैसे "कम्युनिस्ट पार्टी हर चीज पर अपना इजारा कायम कर लेती है", "कम्युनिस्ट पार्टी को गद्दी छोड़ देनी चाहिए", और "पालकी से नीचे उतर जाना चाहिए"। हम अभी "पालकी पर चढ़े ही हैं" कि दक्षिणपंथी चाहते हैं हम "नीचे उतर जाएं"। आजादी से अपनी बात कहने, दिल खोलकर राय जाहिर करने, वृहद वाद-विवादों का आयोजन करने और बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लिखने का तरीका जन-समुदाय की पहलकदमी को उजागर करने और उसके अन्दर उत्तरदायित्व की भावना को बढ़ाने के लिए अत्यन्त उपयुक्त है।

हमारी पार्टी की एक जनवादी परम्परा है। इस परम्परा के बिना इस तरह आजादी से अपनी बात कहने, दिल खोलकर राय जाहिर करने, वृहद वाद-विवादों का आयोजन करने और बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लिखने की बात स्वीकार करना नामुमकिन है। येनान में दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान, लोगों ने मुद्दे नोट किए थे, आत्म-आलोचनाएं की थीं और एक दूसरे की सहायता की थी। हर ग्रुप में सात या आठ आदमी थे, और यह सिलसिला कई महीनों तक चलता रहा था। जिन लोगों से मैं मिला हूं वे सभी इस दोष-निवारण आन्दोलन के आभारी हैं। वे कहते हैं कि केवल तभी उन्होंने मनोगतवाद से अपना पिण्ड छुड़ाना शुरू किया। भूमि-सुधार के दिनों में जब भी कोई समस्या खड़ी होती तो हम दिमाग में मौजूद गुत्थियां सुलझाने के लिए जन-समुदाय से सलाह-मशविरा करते थे। हमारी फौजी यूनिटों में कम्पनी कमाण्डर रात में सिपाहियों के पास स्वयं जाकर यह देखते थे कि उन्होंने लिहाफ अच्छी तरह ओढ़ रखे हैं या नहीं, तथा उनके साथ समानता का बरताव करते हुए मैत्रीपूर्ण वार्तालाप करते थे। येनान में चलाए गए दोष-निवारण आन्दोलन में, भूमि सुधार में, फौजी यूनिटों के जनवादी जीवन में, तीन जांच-पड़तालों और तीन सुधारों में तथा बाद में "तीन बुराई"-विरोधी व

"पांच बुराई"-विरोधी संघर्षों में और बुद्धिजीवियों के विचारधारात्मक नव रूपान्तर के दौरान जनवाद के विविध रूप मौजूद थे। लेकिन आजादी से अपनी बात कहना, दिल खोलकर राय जाहिर करना और वृहद वाद-विवादों का आयोजन करना तथा इसके बाद "मन्द-मन्थर बयार और हल्की फुहार" के रूप में सलाह-मशविरा करना और समझाना-बुझाना – ये सब बातें केवल आज ही मुमकिन हो सकती हैं। हमने जिस तरीके की खोज की है वह हमारे कार्य के लिए बेहद फायदेमन्द है, तथा उससे मनोगतवाद, नौकरशाही और फरमानशाही (फरमानशाही से हमारा तात्पर्य है लोगों को मारना-पीटना या गाली देना अथवा उन्हें हुक्म की तामील करने के लिए मजबूर करना) को दूर करना तथा नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं के लिए जन-समुदाय के साथ एकरूप हो जाना हमारे लिए आसान हो गया है।

इस वर्ष हमारी जनवादी परम्परा का भारी विकास हुआ है, तथा आजादी से अपनी बात कहने, दिल खोलकर राय जाहिर करने, वृहद वाद-विवादों का आयोजन करने और बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लिखने का यह तरीका आने वाली पीढ़ियों को सौंप दिया जाना चाहिए। इससे समाजवादी जनवाद पूर्ण रूप से विकसित हो जाता है। इस किस्म का जनवाद केवल समाजवादी देशों में ही सम्भव है, पूंजीवादी देशों में नहीं। ऐसे जनवाद पर आधारित केन्द्रीयता कमजोर होने के बजाय और मजबूत हो जाती है और सर्वहारा अधिनायकत्व भी पुख्ता बन जाता है। सर्वहारा वर्ग के लिए यह जरूरी है कि वह अधिनायकत्व लागू करने में अपने व्यापक संश्रयकारियों पर निर्भर रहे, केवल अपने पर निर्भर रहने से काम नहीं चलेगा। चीन में सर्वहारा वर्ग संख्या की दृष्टि से काफी छोटा है और उसकी तादाद केवल एक करोड़ से कुछ ही अधिक है। उसका अधिनायकत्व लागू करने के लिए यह जरूरी है कि वह दसियों करोड़ गरीब व निम्न-मध्यम किसानों, निर्धन नगरवासियों, गैर-खुशहाल दस्तकारों और क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों पर निर्भर रहे, वरना यह असम्भव हो जाएगा। चूंकि अब हमने उनमें उत्साह जगा दिया है, इसलिए सर्वहारा अधिनायकत्व सुदृढ़ होता जा रहा है।

तीसरे, कृषि। कृषि-विकास के चालीस-सूत्री कार्यक्रम में संशोधन किया जा चुका है और इस दस्तावेज को जल्दी ही जारी किया जाएगा। साथियो, कृपया आप लोग देहातों में इसके बारे में वाद-विवादों और विचार-विमर्शों का आयोजन करने का काम अच्छी तरह करें। मैंने कुछ साथियों से पूछा कि क्या प्रिफेक्चरों को कृषि योजनाएं बनानी चाहिए अथवा नहीं। उन्होंने जवाब दिया, हां, बनानी चाहिए। क्या जिलों को भी ऐसा ही करना चाहिए ? जवाब मिला, हां, ऐसा ही करना चाहिए। तो क्या श्याडों को भी ऐसा ही करना चाहिए ? एक बार फिर जवाब मिला, हां, ऐसा ही करना चाहिए। और सहकारी समितियों को भी ऐसी ही योजनाएं बनानी चाहिए। इस प्रकार कुल मिलाकर छः स्तर हो जाएंगे, प्रान्त, प्रिफेक्चर, काउण्टी, जिला, श्याङ और सहकारी समिति। कृपया आप लोग ऐसी कृषि योजनाएं बनाने की ओर ध्यान दें और वक्त न गंवाएं। योजना और कार्यक्रम दोनों एक ही चीज हैं, और चूंकि हम आदतन योजना शब्द का इस्तेमाल करते आए हैं इसलिए उसे भी हम योजना की संज्ञा दे सकते हैं। यह जरूरी है कि हम चौतरफा योजनाएं बनाने, अधिक कारगर ढंग से नेतृत्व करने, पार्टी-सचिवों के खुद मैदान में उतर जाने और सभी पार्टी-सदस्यों के सहकारी समितियों के संचालन में हाथ बंटाने के तरीके पर कायम रहें। जाहिर है कि पिछले साल की दूसरी छमाही

में ऐसा नहीं था कि सभी पार्टी-सदस्यों ने सहकारी समितियों के संचालन में हाथ बंटाया हो और सभी पार्टी सचिव खुद मैदान में उतर गए हों। यह जरूरी है कि इस साल हम वे सभी काम अविचल रूप से करते जाएं जिन्हें पहले से करते आए हैं।

योजनाएं कब तैयार होंगी ? मैंने कुछ कामरेडों से पूछा है और पता चला है कि कुछ जगहों में तो वे तैयार हो चुकी हैं और कुछ अन्य जगहों में अभी पूरी तरह तैयार नहीं हो पाईं। आज जबकि प्रान्त, प्रिफेक्चर, काउण्टी इन तीन स्तरों पर जोर दिया जा रहा है, क्या उनकी योजनाएं इस वर्ष जाड़ों में या अगले वर्ष वसन्त में तैयार हो सकेंगी ? अगर नहीं तो उन्हें अगले वर्ष सभी छः स्तरों पर हर सूरत में तैयार कर लिया जाना चाहिए। कारण, हमारे पास कई वर्षों का अनुभव मौजूद है और कृषि-विकास का चालीस-सूत्री राष्ट्रीय कार्यक्रम भी लगभग तैयार हो चुका है। इस कार्यक्रम पर तथा प्रान्तीय स्तर व अन्य स्तरों की सभी योजनाओं पर गांवों में विचार-विमर्श किया जाना चाहिए। लेकिन चूंकि इन सातों योजनाओं पर एक ही समय विचार-विमर्श करना बहुत ज्यादा हो जाएगा, इसलिए बेहतर होगा कि जन-समुदाय को एक-एक योजना पर अलग-अलग राय जाहिर करने दिया जाय और वाद-विवाद करने दिया जाय। यहां हम दीर्घकालीन योजनाओं की चर्चा कर रहे हैं। अगर कोई योजना भविष्य में अनुपयुक्त साबित होगी तो क्या किया जाएगा ? तब हमारे पास कुछ अधिक वर्षों का अनुभव होगा और हम उसमें सुधार कर सकेंगे। मिसाल के लिए चालीस-सूत्री कार्यक्रम में हमें कुछ वर्षों के बाद फिर सुधार करना होगा। यह अनिवार्य है। मेरे विचार से शायद उसमें हर तीन वर्षों में छोटा सुधार और हर पांच वर्षों में बड़ा सुधार करने की जरूरत होगी। किसी न किसी योजना का होना किसी भी योजना के न होने से हमेशा बेहतर होता है। यह कार्यक्रम कुल 12 वर्ष का है, अब दो वर्ष गुजर चुके हैं और केवल दस वर्ष बाकी रह गए हैं। अगर हम इस मामले को मजबूती से गिरफ्त में नहीं रखेंगे, तो चालीस-सूत्री कार्यक्रम में तीन अलग-अलग क्षेत्रों के लिए निर्धारित अनाज-उत्पादन के लक्ष्य, यानी प्रति मू चार सौ, पांच सौ और आठ सौ चिन अनाज पैदा करने के लक्ष्य प्राप्त करने में असफल होने का खतरा पैदा हो जाएगा। इस मामले को मजबूती से गिरफ्त में रखकर ही ये लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते हैं।

मेरा विचार है कि चीन को अपनी खाद्य समस्या हल करने के लिए सघन-सूक्ष्म खेती पर निर्भर रहना होगा। चीन एक दिन दुनिया में प्रथम श्रेणी का ऊंची उपज वाला देश बन जाएगा। हमारी कुछ काउण्टियां आज भी प्रति मू एक हजार चिन अनाज पैदा करती हैं। क्या आधी शताब्दी की अवधि में प्रति मू दो हजार चिन तक पहुंचना सम्भव हो सकेगा ? क्या भविष्य में पीली नदी के उत्तर में फैले इलाके में प्रति मू आठ सौ चिन, हवाए नदी के उत्तर में फैले इलाके में प्रति मू एक हजार चिन और उसके दक्षिण में फैले इलाके में प्रति मू दो हजार चिन अनाज पैदा करना सम्भव हो सकेगा ? इक्कीसवीं शताब्दी के शुरू तक ये लक्ष्य प्राप्त करने में अभी कुछ दशक और बाकी रह गए हैं, और यह भी हो सकता है कि इतने लम्बे अरसे की जरूरत न पड़े। अपनी खाद्य समस्या को हल करने के लिए हम सघन-सूक्ष्म खेती पर निर्भर रहते हैं, और हमारे पास काफी बड़ी जनसंख्या होने के बावजूद पर्याप्त खाद्यान्न मौजूद है। मेरा विचार है कि हर व्यक्ति के लिए औसतन तीन मू भूमि काफी ज्यादा है। भविष्य

में एक मू से कम जमीन पर पैदा होने वाला अनाज एक व्यक्ति के खाने के लिए पर्याप्त होगा। निस्सन्देह, परिवार नियोजन अब भी जरूरी है, और मैं सन्तानवृद्धि को प्रोत्साहन नहीं दे रहा हूं।

कृपया यह तो पता लगाइए कि किसानों में अनाज की खपत दरअसल कितनी है। हमें घर-गिरस्ती चलाने में मेहनत और किफायत को प्रोत्साहन देना चाहिए और अनाज का इस्तेमाल करने में कमखर्ची बरतनी चाहिए, ताकि अनाज को संचित किया जा सके। जब राज्य के पास अनाज का संचित भण्डार हो जाएगा तथा हर सहकारी समिति और परिवार के पास भी अनाज का संचित भण्डार हो जाएगा, तो इन तीन किस्मों के भण्डार से हम काफी खुशहाल हो जाएंगे। इसके विपरीत, यदि हम सारा का सारा अनाज खा लेंगे तो समृद्धि भला कैसे आ सकेगी ?

इस वर्ष अनाज का संचय अन्य स्थानों में थोड़ा-बहुत बढ़ाया जाना चाहिए जहां शानदार फसल प्राप्त हुई है या प्राकृतिक विपत्तियों का सामना नहीं करना पड़ा। यह निहायत जरूरी है कि अतिरिक्त अनाज के जरिए अभाव की पूर्ति की जाए। कुछ प्रान्तों की सहकारी समितियों में संचित कोष (5 प्रतिशत) सार्वजनिक कल्याण कोष (5 प्रतिशत) और प्रबन्ध-व्यय के अलावा, उत्पादन-व्यय कुल उत्पादन-मूल्य का 20 प्रतिशत बनता है और पूंजीगत निर्माण पर होने वाला व्यय उत्पादन-व्यय का 20 प्रतिशत बनता है। मैंने अन्य प्रान्तों से आए कामरेडों के साथ इस मामले पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने कहा कि पूंजीगत निर्माण के लिए होने वाला व्यय शायद कुछ ज्यादा है। जो बातें मैं आज कह रहा हूं वे सब सुझाव मात्र हैं, अगर वे व्यवहार्य हों तो उन पर अमल कर सकते हैं, वरना उन पर अमल न करें। इसके अलावा सभी प्रान्तों और काउण्टियों के लिए भी यह जरूरी नहीं वे बिलकुल एक जैसा तरीका अपनाएं। इस मामले को मैं विचारार्थ आपके लिए छोड़ देना चाहता हूं। कुछ इलाकों में सहकारी समितियों के प्रबन्ध-व्यय का अनुपात बहुत बड़ा रहा है। उसे घटाकर एक प्रतिशत तक पहुंचा देना चाहिए। प्रबन्ध-व्यय का तात्पर्य है सहकारी समितियों के कार्यकर्ताओं को दिए जाने वाले भत्तों और प्रशासनिक कामों में होने वाला खर्च। उसे घटाया जाना चाहिए और खेतिहर भूमि के पूंजीगत निर्माण पर होने वाले व्यय को बढ़ाया जाना चाहिए।

चीनी जनता को उच्च आकांक्षाओं से प्रेरित होना चाहिए। हमें देश के शहरों और देहातों में हर आदमी को यह शिक्षा देनी चाहिए कि वह अपने-सामने एक महान लक्ष्य रखे और उच्च आकांक्षाओं से प्रेरित हो। क्या जी भर कर खाने-पीने का आनन्द लूटना और सब कुछ सफाचट कर देना उच्च आकांक्षाओं से प्रेरित होना कहला सकता है ? नहीं, बिलकुल नहीं कहला सकता। अपनी घर-गिरस्ती चलाने में हमें मेहनत व किफायत बरतनी चाहिए और दीर्घकालीन योजनाएं बनानी चाहिए। लाल या सफेद वस्त्र धारण करने के मौकों पर, यानी विवाह या अंत्येष्टि के मौकों पर, शानदार दावतें देना बिलकुल अनावश्यक है। हमें इन बातों में किफायत बरतनी चाहिए और शाहखर्ची नहीं करनी चाहिए। यह पुराने रीति-रिवाजों में परिवर्तन लाने से सम्बन्धित मामला है। इन रीति-रिवाजों को बदलने के लिए यह जरूरी है कि बड़े पैमाने पर अथवा शायद छोटे पैमाने पर दिल खोलकर राय जाहिर करके तर्क-वितर्क किया जाय। एक और बुराई है जुआ खेलना। अतीत काल में इस पर रोक लगाना असम्भव

था। इसे केवल दिल खोलकर राय जाहिर करने और वाद-विवाद के जरिए ही बदला जा सकता है। मेरे विचार से पुराने रीति-रिवाजों में परिवर्तन लाने के काम को भी योजनाओं में शामिल किया जाना चाहिए।

इसके अलावा चार हानिकारक जन्तुओं का सफाया करने और स्वास्थ्य से सम्बन्धित कार्य पर ध्यान देने का सवाल भी मौजूद है। चार हानिकारक जन्तुओं यानी चूहों, गौरैयों, मक्खियों और मच्छरों का सफाया करने के काम में मेरी गहरी दिलचस्पी है। चूंकि केवल दस वर्ष बाकी रह गए हैं, तो क्या यह नहीं हो सकता कि इस वर्ष हम कुछ तैयारी करें तथा प्रचार करें और अगले वसन्त में काम शुरू कर दें ? कारण, यही वह समय है जब मक्खियां बाहर निकलती हैं। मेरा विचार है कि हमें इन हानिकारक जन्तुओं का सफाया कर देना चाहिए और समूचे राष्ट्र को स्वास्थ्य से सम्बन्धित कार्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए। यह सभ्यता से सम्बन्धित सवाल है, जिसका स्तर पर्याप्त रूप से उन्नत किया जाना चाहिए। एक होड़ चलाई जानी चाहिए; इन हानिकारक जन्तुओं का सफाया करने की हर मुमकिन कोशिश की जानी चाहिए और स्वास्थ्य से सम्बन्धित कार्य पर हर व्यक्ति को ध्यान देना चाहिए। विभिन्न प्रान्तों और काउण्टियों में प्रगति सम्भवत: असमान रूप से होगी, मगर जैसे भी हो, हमें देखना यह है कि चैम्पियन कौन बनता है। चीन को ''चार हानिकारक जन्तुओं से मुक्त'' देश, यानी चूहों, गौरैयों, मक्खियों, और मच्छरों से मुक्त देश बन जाना चाहिए।

परिवार-नियोजन के लिए भी एक दस-वर्षीय कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए। मगर अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के क्षेत्रों या बिखरी आबादी वाले इलाकों में इसे लागू नहीं किया जाना चाहिए। घनी आबादी वाले इलाकों में भी यह जरूरी है कि पहले इसे केवल कुछ चुने हुए स्थानों में ही प्रयोग के तौर पर लागू किया जाए, और बाद में कदम-ब-कदम फैलाया जाए, ताकि परिवार-नियोजन को कदम-ब-कदम सर्वव्यापी बनाया जा सके। परिवार-नियोजन लागू करने के लिए खुले रूप से शिक्षा देना आवश्यक है, जिसका मतलब है दिल खोलकर राय जाहिर करने देना और वृहद वाद-विवादों का आयोजन करना। जहां तक प्रजनन का सम्बन्ध है, इस क्षेत्र में मानव जाति अब भी पूरी अराजकता की स्थिति में है और नियंत्रण लागू करने में असमर्थ रही है। भविष्य में परिवार-नियोजन पर पूरी तरह अमल करना तब तक सम्भव नहीं हो सकेगा जब तक उसे पूरे समाज का समर्थन प्राप्त नहीं हो जाएगा, यानी जब तक आम लोग इससे सहमत नहीं हो जाएंगे और इसके लिए संयुक्त प्रयास नहीं करेंगे।

चौतरफा नियोजन का सवाल भी है। मैंने अभी कृषि से सम्बन्धित योजनाओं की चर्चा की है, लेकिन उद्योग, वाणिज्य, संस्कृति और शिक्षा से सम्बन्धित योजनाएं भी हैं । यह निहायत जरूरी है कि एक चौतरफा योजना बनाई जाए, जिसमें उद्योग, कृषि, वाणिज्य, संस्कृति और शिक्षा को एक साथ शामिल किया गया हो और उनके बीच समन्वय कायम किया गया हो।

प्रयोगात्मक खेतों में फसल उगाना एक ऐसा अनुभव है जो हर जगह प्रचार-प्रसार करने योग्य है। काउण्टी, जिले, श्याङ और सहकारी समिति के नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे एक छोटे खेत में फसल उगाने के प्रयोग करके यह देख लें कि उसमें ऊंची उपज प्राप्त की जा सकती है या नहीं, और उसे प्राप्त करने के लिए कौन से उपाय अपनाए जाने चाहिए।

हमें कृषि-तकनीक की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। यह नामुमकिन है कि हम लोग

तकनीक की जानकारी प्राप्त किए बिना कृषि कार्य में लगे रहें। राजनीति और व्यवसाय के बीच विपरीत तत्वों की एकता है। जिसमें राजनीति का स्थान सर्वोपरि व प्रधान है। जहां एक ओर हमें राजनीति की उपेक्षा करने की प्रवृत्ति का अवश्य विरोध करना चाहिए, वहां दूसरी ओर अपने को केवल राजनीति तक ही सीमित रखने और तकनीकी व व्यावसायिक ज्ञान प्राप्त न करने से भी काम नहीं चलेगा। हमारे सभी साथियों को, चाहे वे उद्योग, कृषि और वाणिज्य के क्षेत्र में काम करते हों या संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में, कुछ तकनीकी व व्यावसायिक ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए। मेरा विचार है कि इस सम्बन्ध में भी एक दसवर्षीय योजना बनाई जानी चाहिए। सभी पेशों व व्यवसायों में काम करने वाले हमारे कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे तकनीकी व व्यावसायिक काम में महारत हासिल करने की कोशिश करें, काम में निपुण बन जाएं, तथा लाल भी बन जाएं और विशेषज्ञ भी। लाल बनने से पहले विशेषज्ञ बनने की बात करना गलत है। यह लाल बनने से पहले श्वेत बनने के समान है। जो लोग ऐसी बातें करते हैं, वे दरअसल अन्त तक श्वेत बने रहना चाहते हैं। बाद में लाल बनना महज एक थोथी बात है। आज कुछ कार्यकर्ता लाल नहीं रहे और वे धनी किसानों की विचारधारा के आगे घुटने टेक चुके हैं। कुछ लोग श्वेत हैं, जैसे पार्टी में मौजूद दक्षिणपंथी, जो राजनीति की दृष्टि से श्वेत हैं और तकनीक की दृष्टि से भी माहिर नहीं हैं। कुछ अन्य लोग भूरे हैं और कुछ लोग गुलाबी। केवल वामपंथी ही ऐसे हैं जो सचमुच लाल हैं, और उनका रंग हमारे पांच सितारों वाले लाल झण्डे की तरह लाल सुर्ख है। लेकिन केवल लाल होने से ही काम नहीं चलेगा, हमें व्यावसायिक व तकनीकी ज्ञान भी अच्छी तरह प्राप्त कर लेना चाहिए। आज बहुत से कार्यकर्ता केवल लाल हैं, विशेषज्ञ नहीं हैं, व्यावसायिक या तकनीकी ज्ञान से अनभिज्ञ हैं। दक्षिणपंथी कहते हैं कि हमारे अन्दर नेतृत्व करने की योग्यता नहीं है, यानी ''अनभिज्ञ लोग विशेषज्ञों का नेतृत्व नहीं कर सकते''। हम उनकी इस बात का खण्डन करते हैं और कहते हैं कि हम नेतृत्व कर सकते हैं। जब हम यह दावा करते हैं कि हम उनका नेतृत्व कर सकते हैं, तो इसका मतलब यह होता है कि हम राजनीतिक रूप से उनका नेतृत्व कर सकते हैं। जहां तक तकनीकी ज्ञान का ताल्लुक है, हम अब भी बहुत सी बातों से अनभिज्ञ हैं और उन पर जरूर महारत हासिल कर सकेंगे।

सर्वहारा वर्ग अपने तकनीशियनों व सैद्धान्तिक कार्यकर्ताओं के विशाल दस्ते के बिना समाजवाद का निर्माण नहीं कर सकता। हमें अगले दस वर्षों में सर्वहारा बुद्धिजीवियों के दस्ते की स्थापना कर लेनी चाहिए (वैज्ञानिक विकास योजनाओं की अवधि भी 12 वर्ष है, और अभी 10 वर्ष बाकी हैं)। हमारे सभी पार्टी-सदस्यों और गैर-पार्टी सक्रिय तत्वों को सर्वहारा बुद्धिजीवी बनने की कोशिश करनी चाहिए। सभी स्तरों पर, खास तौर से प्रान्त, प्रिफेक्चर और काउण्टी इन तीन स्तरों पर, सर्वहारा बुद्धिजीवियों को प्रशिक्षित करने की योजनाएं बनाई जानी चाहिए। वरना ऐसे व्यक्तियों को प्रशिक्षित किए बिना ही समय गुजर जाएगा। एक पुरानी चीनी कहावत है, ''पेड़ की परवरिश करने में दस वर्ष लगते हैं, जबकि आदमी की परवरिश करने में सौ वर्ष लग जाते हैं''। सौ वर्ष में से 90 वर्ष घटा दें और केवल दस वर्ष में आदमी की परवरिश करें। यह सच नहीं है कि पेड़ की परवरिश करने में केवल दस वर्ष लगते हैं, दक्षिण में उसकी परवरिश करने में 25 वर्ष लगते हैं और उत्तर में इससे भी ज्यादा लम्बा समय लग

जाता है। लेकिन दस वर्ष में आदमी की परवरिश करना मुमकिन है। आठ वर्ष तो बीत चुके हैं और अगर हम इनमें दस वर्ष और जोड़ दें, तो हमारे पास अट्ठारह वर्ष हो जाएंगे; यह अपेक्षा की जा सकती है कि तब तक मार्क्सवादी विचारों से लैस मजदूर वर्ग के विशेषज्ञों का दस्ता बुनियादी रूप से तैयार हो जाएगा। इसके बाद अगले दस वर्षों में इस दस्ते का विस्तार किया जाएगा और स्तर उन्नत किया जाएगा।

जहां तक कृषि और उद्योग के बीच के सम्बन्धों का सवाल है, इसमें सन्देह नहीं कि हमें अपनी कोशिशें भारी उद्योग पर भी केन्द्रित करनी चाहिए और उसके विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए; यह एक ऐसा उसूल है जिसके बारे में कोई भी सवाल नहीं उठाया जा सकता या ढुलमुलपन नहीं दिखाया जा सकता। लेकिन यह जरूरी है कि हम इसे पूर्वशर्त मानकर उद्योग और कृषि का साथ-साथ विकास करें तथा आधुनिक उद्योग और आधुनिक कृषि का कदम-ब-कदम निर्माण करें। हम अक्सर चीन को एक उद्योग-प्रधान देश बनाने की बात करते हैं, जिसमें दरअसल कृषि का आधुनिकीकरण भी शामिल है। अब प्रचार-कार्य में कृषि पर जोर दिया जाना चाहिए। कामरेड तेङ श्याओ-फिङ भी इसकी चर्चा कर चुके हैं।

चौथे, दो तरीकों के बारे में। काम करने के कम से कम दो तरीके होते हैं। एक तरीका ऐसा होता है जिससे अपेक्षाकृत धीरे और अपेक्षाकृत मामूली नतीजे हासिल किए जाते हैं तथा दूसरा तरीका ऐसा होता है जिससे अपेक्षाकृत जल्दी और अपेक्षाकृत अच्छे नतीजे हासिल किए जाते हैं। इसमें रफ्तार और गुण दोनों शामिल हैं। केवल एक ही तरीके पर नहीं बल्कि हमेशा दोनों तरीकों पर विचार किया जाना चाहिए। रेलवे के निर्माण की ही मिसाल लीजिए। कई योजनाएं होनी चाहिए, ताकि कई रास्तों में से एक को चुना जा सके। तुलना के लिए कई तरीके, और कम से कम दो तरीके हो सकते हैं। मिसाल के लिए, बड़े पैमाने पर दिल खोलकर राय जाहिर करने दी जाए या छोटे पैमाने पर ? बड़े अक्षरों वाले पोस्टर होने चाहिए या नहीं ? इन दोनों में कौन सा तरीका बेहतर है ? इस तरह के सवाल अनगिनत हैं, लेकिन आजादी से दिल खोलकर राय जाहिर करने की इजाजत नहीं दी गई। पेकिङ के चौंतीस उच्च-शिक्षा प्रतिष्ठानों के पदाधिकारियों में एक भी ऐसा नहीं जिसने इस बात की इजाजत दी हो या बिना किसी हिचकिचाहट के और बिना किसी संकोच के इस बात की इजाजत दी हो। उनके लिए यह आग को अपनी ओर ले जाने के समान है ! वे लोग जन-समुदाय को आजादी से दिल खोलकर राय जाहिर करने दें, इसके लिए उन्हें बहुत समझाने-बुझाने की जरूरत होती है, यही नहीं, उन पर काफी दबाव डालने की जरूरत भी होती है, यानी खुले तौर पर आवाहन करने और बहुत सी मीटिंगें बुलाने की जरूरत होती है, ताकि उनके सामने बच निकलने का कोई रास्ता न रह जाए और उन्हें ''ल्याङशान पर्वत के विद्रोहियों में जा मिलने के लिए मजबूर होना पड़े'' [4]। अतीत काल में जब हम लोग क्रान्ति चला रहे थे, तो पार्टी में इस तरीके या उस तरीके के बारे में, इस नीति या उस नीति के बारे में अलग-अलग रायें मौजूद थीं। लेकिन अन्त में जब हमने तत्कालीन स्थितियों से मेल खाने वाली नीति अपना ली, तो जापानी आक्रमण-विरोधी युद्ध के काल में और मुक्ति-युद्ध के काल में पहले के मुकाबले कहीं ज्यादा प्रगति हुई। इसी प्रकार निर्माण के लिए भी इस तरह की या उस तरह की नीति अपनाई जा सकती है, और इस सम्बन्ध में भी हमें वास्तविक स्थितियों से मेल खाने वाली नीति ही अपनानी चाहिए।

निर्माण-कार्य के बारे में सोवियत अनुभव अपेक्षाकृत पूर्ण है। जब मैं पूर्णता की बात करता हूं तो मेरा मतलब यह होता है कि उनमें गलतियां करना भी शामिल है। अगर उनमें गलतियां करना शामिल न हो तो उन्हें पूर्ण नहीं माना जा सकता। सोवियत संघ से सीखने का मतलब यह नहीं है कि वहां की सभी बातों की यांत्रिक रूप से नकल की जाए। कठमुल्लावादी ठीक ऐसा ही करते हैं। हमने कठमुल्लावाद की आलोचना करने के बाद ही लोगों को सोवियत संघ से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया, इसलिए ऐसा कोई खतरा पैदा नहीं हुआ। हमने येनान में दोष-निवारण आन्दोलन चलाने और पार्टी की सातवीं कांग्रेस का आयोजन करने के बाद ही सोवियत संघ से सीखने पर जोर दिया था। यह हमारे लिए हानिकारक होने के बजाय लाभदायक सिद्ध हुआ है। क्रान्ति के क्षेत्र में हम अनुभवी हैं। निर्माण के क्षेत्र में हमने अभी-अभी शुरुआत की है, और हमारे पास केवल आठ वर्ष का अनुभव है। हमारे निर्माण-कार्य में उपलब्धियां मुख्य हैं, लेकिन हम गलतियों से भी नहीं बच सके हैं। भविष्य में भी गलतियां होंगी, लेकिन आशा है तब हमारी गलतियों की मात्रा कम हो जाएगी। सोवियत संघ से सीखते समय उसकी गलतियों के अध्ययन को शामिल करना जरूरी है। उनका अध्ययन करने से हमारा रास्ता अपेक्षाकृत कम टेढ़ा-मेढ़ा होगा। क्या हम सोवियत संघ के टेढ़े-मेढ़े रास्ते से बच नहीं सकते और अपना काम ज्यादा तेजी से और ज्यादा अच्छी तरह पूरा नहीं कर सकते ? बेशक, हमें ऐसा करने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए। मिसाल के लिए इस्पात के उत्पादन को ही लीजिए। क्या हम इसे तीन पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में या इससे कुछ अधिक समय में 2 करोड़ टन तक नहीं पहुंचा सकते ? अगर कोशिश करें तो अवश्य पहुंचा सकते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमें ज्यादा से ज्यादा छोटे इस्पात कारखाने खोलने होंगे। मेरा विचार है कि हमें ऐसे इस्पात कारखाने ज्यादा से ज्यादा कायम करने चाहिए जो प्रति वर्ष 30 हजार से 50 हजार टन या 70 हजार से 80 हजार टन इस्पात तैयार करते हों, क्योंकि ये बड़े उपयोगी साबित होंगे। यह भी जरूरी है कि 3 लाख या 4 लाख टन वार्षिक क्षमता वाले मध्यम आकार के इस्पात कारखाने स्थापित किए जाएं।

पांचवें, पिछले वर्ष कई चीजों का सफाया कर दिया गया था। उनमें ज्यादा से ज्यादा, जल्दी से जल्दी, अच्छे से अच्छे और कम से कम खर्च में नतीजे हासिल करने का उसूल भी शामिल था। ज्यादा से ज्यादा और जल्दी से जल्दी नतीजे हासिल करने की मांग छोड़ दी गई थी और साथ ही अच्छे से अच्छे और कम से कम खर्च में नतीजे हासिल करने की मांग का भी सफाया कर दिया गया था। मेरे विचार से ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं जो अच्छे से अच्छे और कम से कम खर्च में नतीजे हासिल करने का विरोध करता हो; जिस चीज को लोग पसन्द नहीं करते, वह है ज्यादा से ज्यादा और जल्दी से जल्दी नतीजे हासिल करना, और कुछ साथी इसे ''दुस्साहस'' के नाम से पुकारते हैं। वास्तव में ''अच्छे से अच्छे'' और ''कम से कम खर्च में'' नतीजे हासिल करने का मकसद है ''ज्यादा से ज्यादा'' और ''जल्दी से जल्दी'' को परिसीमित करना। ''अच्छे से अच्छे'' नतीजे हासिल करने का मतलब है अच्छी क्वालिटी। ''कम से कम खर्च में'' नतीजे हासिल करने का मतलब है कम पैसे खर्च करना। ''ज्यादा से ज्यादा'' नतीजे हासिल करने का मतलब है ज्यादा से ज्यादा काम करना। ''जल्दी से जल्दी'' नतीजे हासिल करने का मतलब भी ज्यादा से ज्यादा काम करना ही है। यह नारा आत्म-परिसीमनकारी

है, क्योंकि यह अच्छे से अच्छे और कम से कम खर्च में नतीजे हासिल करने का आवाहन करता है, यानी बेहतर क्वालिटी और कम लागत का आवाहन करता है; यह ऐसे नतीजों को ज्यादा से ज्यादा और जल्दी से जल्दी हासिल करना असम्भव बना देता है जो अव्यावहारिक हों। मुझे खुशी है कि मौजूदा अधिवेशन में एक-दो साथियों ने इस सवाल का जिक्र किया है। साथ ही मैंने अखबार में इसके बारे में एक लेख भी पढ़ा है। ज्यादा से ज्यादा, जल्दी से जल्दी, अच्छे से अच्छे और कम से कम खर्च में नतीजे हासिल करने की हमारी मांग व्यावहारिक है, वास्तविक स्थितियों से मेल खाती है, और मनोगतवादी नहीं है। हमें हमेशा ज्यादा से ज्यादा और जल्दी से जल्दी नतीजे हासिल करने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए; जिस चीज का हम विरोध करते हैं वह है केवल ज्यादा से ज्यादा और जल्दी से जल्दी नतीजे हासिल करने के लिए की जाने वाली मनोगतवादी मांग। पिछले वर्ष की दूसरी छमाही में हवा के महज एक झोंके ने इस नारे का सफाया कर दिया था। मैं इसे पुनर्स्थापित करना चाहता हूं। क्या यह सम्भव है ? कृपया इस मामले पर गौर करें।

कृषि-विकास के चालीस-सूत्री कार्यक्रम का भी सफाया कर दिया गया था। पिछले वर्ष चालीस-सूत्री कार्यक्रम को पुराना समझा जाने लगा था। लेकिन अब उसकी ''पुनर्स्थापना'' की जाने लगी है।

प्रगति को प्रोत्साहन देने वाली कमेटियों का भी सफाया कर दिया गया था। मैंने एक बार इस सवाल का जिक्र किया था : क्या कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी, सभी स्तरों की पार्टी-कमेटियां, राज्य-परिषद और सभी स्तरों की जन-परिषदें – संक्षेप में, ये अधिसंख्य ''कमेटियां'' जिनमें पार्टी-कमेटियां प्रमुख हैं – सारूप में प्रगति को प्रोत्साहन देने वाली कमेटियां हैं अथवा प्रतिगमन को प्रोत्साहन देने वाली ? उन्हें प्रगति को प्रोत्साहन देने वाली कमेटियां होना चाहिए। मेरे विचार में क्वोमिनताङ प्रतिगमन को प्रोत्साहन देने वाली कमेटी है और कम्युनिस्ट पार्टी प्रगति को प्रोत्साहन देने वाली कमेटी है। क्या हम अब प्रगति को प्रोत्साहन देने वाली उन कमेटियों की पुनर्स्थापना कर सकते हैं जिनका पिछले वर्ष हवा के झोंके ने सफाया कर दिया था ? अगर आप सब लोग उनकी पुनर्स्थापना के खिलाफ आवाज उठाएं और प्रतिगमन को प्रोत्साहन देने वाली कमेटियों को संगठित करने पर डटे रहें और इतने ज्यादा लोग प्रतिगमन का पक्षपोषण करें, तो इस सम्बन्ध में भला मैं क्या कर सकता हूं। लेकिन मौजूदा अधिवेशन से मालूम होता है कि सब लोग प्रगति को प्रोत्साहन देना चाहते हैं, और ऐसा भाषण किसी ने नहीं दिया जो प्रतिगमन का पक्षपोषण करता हो। वह केवल दक्षिणपंथी चाङ-स्वो गठजोड़ ही था जो यह चाहता था कि हम पीछे की ओर चले जाएं। जहां तक उन मामलों का सम्बन्ध है जिनमें चीजें सचमुच बहुत तेजी से बढ़ रही हैं और समुचित सीमाओं से आगे निकल गई हैं, उनमें अस्थायी और आंशिक प्रतिगमन की इजाजत दी जा सकती है, यानी हमें अपना कदम पीछे की ओर हटाना होगा या आगे कदम बढ़ाने की अपनी रफ्तार को धीमा करना होगा। लेकिन हमारी आम नीति हमेशा प्रगति को प्रोत्साहन देने की रही है।

छठवां, सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच का अन्तरविरोध, समाजवादी रास्ते और पूंजीवादी रास्ते के बीच का अन्तरविरोध, निस्सन्देह वर्तमान चीनी समाज का प्रधान अन्तरविरोध है। हमारा मौजूदा कार्य पहले के कार्य से भिन्न है। पहले सर्वहारा वर्ग के सामने प्रधान कार्य

था साम्राज्यवाद-विरोधी और सामन्तवाद विरोधी संघर्षों में जन-समुदाय का नेतृत्व करना, जो अब पूरा हो चुका है। आखिर आज प्रधान अन्तरविरोध कौन सा है ? इस समय हम समाजवादी क्रान्ति चला रहे हैं, जिसके प्रहार का निशाना पूंजीपति वर्ग है, और साथ ही इस क्रान्ति का उद्देश्य छोटे पैमाने की व्यक्तिगत उत्पादन व्यवस्था का रूपान्तर करना, यानी सहकारिता को कार्यान्वित करना है; इसलिए समाजवाद और पूंजीवाद के बीच का, सामूहिकतावाद और व्यक्तिवाद के बीच का, अथवा सारांश में समाजवादी रास्ते और पूंजीवादी रास्ते के बीच का अन्तरविरोध आज प्रधान अन्तरविरोध है। आठवीं कांग्रेस के प्रस्ताव में इस सवाल का कोई जिक्र नहीं किया गया। उसके एक अंश में यह कहा गया है कि समुन्नत समाजवादी व्यवस्था और पिछड़ी हुई सामाजिक उत्पादक शक्तियों के बीच का अन्तरविरोध प्रधान अन्तरविरोध है। यह प्रस्थापना ठीक नहीं है। सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन में हमने यह कहा कि राष्ट्रव्यापी विजय के बाद देश के भीतर मजदूर वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच का अन्तरविरोध और देश के बाहर चीन और साम्राज्यवाद के बीच का अन्तरविरोध प्रधान अन्तरविरोध होगा। हालांकि हमने इस अधिवेशन के बाद खुले तौर पर इस बात का जिक्र नहीं किया, लेकिन तब से हम इस पर अमल करते आ रहे हैं, क्योंकि हमारी क्रान्ति एक समाजवादी क्रान्ति में विकसित हो गई है और हम उसमें जुटे हुए हैं। तीन महान रूपान्तर ही वस्तुतः समाजवादी क्रान्ति हैं, एक ऐसी क्रान्ति जिसे मुख्य रूप से उत्पादन के साधनों की मिलकियत के क्षेत्र में चलाया गया है; ये तीनों ही रूपान्तर बुनियादी तौर पर पूरे हो चुके हैं। ये सभी तीव्र वर्ग-संघर्ष के द्योतक हैं।

पिछले वर्ष की दूसरी छमाही में वर्ग-संघर्ष में ढील आ गई थी। ऐसा हमने जानबूझ कर किया था। लेकिन जब हमने उसमें ढील आने दी तो पूंजीपति वर्ग, पूंजीवादी बुद्धिजीवियों, जमींदारों और धनी किसानों ने तथा खुशहाल मध्यम किसानों के एक हिस्से ने हम पर प्रहार करना शुरू कर दिया। यह इस वर्ष हुआ। हमने ढील आने दी और उन्होंने प्रहार करना शुरू कर दिया – यह हमारे लिए अच्छा रहा, इससे पहल हमारे हाथ में आ गई। जैसा कि 'जन दैनिक' के एक सम्पादकीय में कहा गया है, ''पेड़ शान्त होना चाहता है, लेकिन हवा बन्द होने का नाम ही नहीं लेती''। उन्होंने आंधी चलानी चाही, एक छोटा-मोटा तूफान बरपा करना चाहा ! ऐसी स्थिति में हमने ''वृक्षों की रक्षापंक्ति'' बनाना शुरू कर दिया। यही हमारा दक्षिणपंथी विरोधी संघर्ष था, दोष-निवारण आन्दोलन था।

दोष-निवारण में दो कार्य शामिल हैं : एक है दक्षिणपंथियों के खिलाफ संघर्ष करना, जिसमें पूंजीवादी विचारधारा के खिलाफ संघर्ष करना भी शामिल है, तथा दूसरा है सुधारों को कार्यान्वित करना, जिसमें दो कार्यदिशाओं के बीच का संघर्ष भी शामिल है। मनोगतवाद, नौकरशाही और संकीर्णतावाद ये सभी पूंजीवादी चीजें हैं, हमारी पार्टी में जिनकी मौजूदगी के लिए पूंजीपति वर्ग को दोषी ठहराया जाना चाहिए। क्या अब से एक शताब्दी या दो शताब्दी बाद भी इसके लिए पूंजीपति वर्ग को ही दोषी ठहराया जा सकेगा ? तब शायद ऐसा करना मुश्किल होगा। क्या उस समय तक नौकरशाही और मनोगतवाद का अस्तित्व बना रहेगा ? हां, बना रहेगा, लेकिन इसके लिए दोषी पिछड़ेपन को ठहराया जाएगा। समाज में वामपक्ष के लोग, मध्यवर्ती लोग और दक्षिणपक्ष के लोग हमेशा मौजूद रहेंगे तथा आगे बढ़े हुए, दरमियानी और

पिछड़े हुए तत्व हमेशा मौजूद रहेंगे। उस समय अगर आप नौकरशाही और मनोगतवाद के दोषी होंगे तो आप पिछड़े हुए तत्व कहलाएंगे।

दोष-निवारण आन्दोलन अगले वर्ष पहली मई तक जारी रहेगा। उसके लिए इतना ज्यादा समय है। क्या पहली मई के बाद फिर एक बार ढील आने दी जाएगी ? मैं समझता हूं, हां, ढील आने दी जाएगी। क्या ऐसी ढील आने देना दक्षिणपंथी भटकाव कहला सकता है ? मैं समझता हूं, नहीं कहला सकता। मिसाल के लिए एक मीटिंग को ही लीजिए। अगर वह लगातार जारी रहती है, दिन-रात आधे साल तक लगातार जारी रहती है, तो मुझे डर है कि बहुत से लोग नदारद हो जाएंगे। इसलिए हमें परिस्थिति के अनुसार काम करना चाहिए, कभी रफ्तार को बढ़ा देना चाहिए तो कभी उसे धीमा कर देना चाहिए। पिछले वर्ष हमने इतनी बड़ी विजय प्राप्त की कि पूंजीपतियों ने ढोल-नगाड़े बजाकर अपनी निष्ठा व्यक्त की; अगर हमने ढील न दी होती तो हमारे लिए अपने काम का औचित्य साबित करना मुश्किल हो जाता, क्योंकि हमारे पास उसका पर्याप्त कारण नहीं था। हम कह चुके हैं कि मिलकियत का सवाल बुनियादी तौर पर हल किया जा चुका है, लेकिन मुकम्मिल तौर पर हल नहीं किया गया। वर्ग-संघर्ष अभी समाप्त नहीं हुआ। इसलिए ढील देना उसूल से सम्बन्धित रियायत देना नहीं बल्कि परिस्थिति का तकाजा है।

मेरा विचार है कि दोष-निवारण आन्दोलन को अगले वर्ष पहली मई तक जारी रखना चाहिए और अगले वर्ष की दूसरी छमाही में बन्द कर देना चाहिए। उस समय देहातों में एक अन्य दोष-निवारण आन्दोलन चलाने या एक अन्य वाद-विवाद का आयोजन करने की जरूरत होगी अथवा नहीं, यह उस समय की परिस्थिति पर निर्भर होगा और इसके बारे में विचार-विमर्श अगले वर्ष किया जाएगा। लेकिन अगले से अगले वर्ष हर हालत में दूसरा दोष-निवारण आन्दोलन चलाना जरूरी है। अगर हम तब भी दूसरा दोष-निवारण आन्दोलन नहीं चलाएंगे अथवा उससे भी बुरी बात कई वर्षों तक नहीं चलाएंगे, तो पुराने और नए दक्षिणपंथी फिर एक बार कुलबुलाने लगेंगे; साथ ही मध्यवर्तियों के दक्षिणपक्ष में मौजूद कुछ तत्व, कुछ मध्यवर्ती तत्व, यहां तक कि कुछ वामपंथी तत्व भी बदल सकते हैं। दुनिया में कुछ लोग इतने अजीबोगरीब होते हैं कि आप चाहे कितने ही लम्बे समय के लिए ढील क्यों न दें, उनकी दक्षिणपंथी भटकाववादी भावना जरूर प्रकट हो जाती है तथा वे हानिप्रद समीक्षाएं और दक्षिणपंथी टिप्पणियां जरूर करने लगते हैं। यह भी जरूरी है कि हमारी फौजी यूनिटों में अनुशासन के तीन मुख्य नियमों और ध्यान देने योग्य आठ बातों की लगातार शिक्षा दी जाए। अगर आप कुछ महीनों के लिए इसे रोक देंगे तो सैनिकों के मनोबल में शिथिलता आ जाएगी। मनोबल को एक वर्ष में कई बार बढ़ाया जाना चाहिए। नए रंगरूटों को शिक्षित किया जाना चाहिए। दोष-निवारण के बिना पुराने सिपाहियों और वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की विचारधारा में भी तब्दीली आ जाएगी।

यहां मैं सोवियत संघ से हमारे मतभेदों के बारे में भी कुछ बता दूं। सबसे पहले, स्तालिन के सवाल के बारे में हमारे और ख्रुश्चोव के बीच अन्तर्विरोध मौजूद है। उन्होंने स्तालिन की इतनी ज्यादा काली तस्वीर पेश की है, और हम उनसे सहमत नहीं हैं। उन्होंने स्तालिन को इतना ज्यादा बदसूरत बना दिया है ! यह अकेले उनके देश से नहीं बल्कि सभी देशों से सम्बन्धित मामला है। हमने थ्येनआनमन मैदान में स्तालिन की तस्वीर लगाई हुई है। यह बात सारी दुनिया की मेहनतकश जनता की अभिलाषाओं से मेल खाती है और इससे ख्रुश्चोव और हमारे बीच के बुनियादी मतभेद जाहिर हो जाते हैं। जहां तक खुद स्तालिन का ताल्लुक है, आपको उनका कम से कम 70 प्रतिशत और 30 प्रतिशत अनुपात वाला मूल्यांकन करना चाहिए, 70 प्रतिशत उपलब्धियों के लिए और 30 प्रतिशत गलतियों के लिए। यह मूल्यांकन शायद सौ फीसदी ठीक न हो; यह भी हो सकता है कि उनकी गलतियां केवल 20 प्रतिशत या केवल 10 प्रतिशत ही हों, अथवा 30 प्रतिशत से भी कुछ ज्यादा हों। सारी बातों पर विचार करने के बाद स्तालिन की उपलब्धियां मुख्य चीज हैं और उनकी खामियां व गलतियां गौण चीज हैं। इस बात के बारे में हमारा दृष्टिकोण ख्रुश्चोव से भिन्न है।

दूसरे, शान्तिपूर्ण संक्रमण के सवाल के बारे में भी हम ख्रुश्चोव और उनके साथियों से सहमत नहीं हैं। हमारा विचार है कि किसी भी देश की सर्वहारा पार्टी को शान्ति और युद्ध इन दोनों ही सम्भावनाओं के लिए तैयार रहना चाहिए। पहले, कम्युनिस्ट पार्टी लेनिन के उस नारे का अनुसरण करते हुए जिसे उन्होंने फरवरी क्रान्ति से अक्तूबर क्रान्ति तक की अवधि में पेश किया था, शासक वर्ग से शान्तिपूर्ण संक्रमण की मांग करती है। हमने भी च्यांग काई-शेक के सामने शान्ति-वार्ता का प्रस्ताव रखा था। यह पूंजीपति वर्ग के खिलाफ, दुश्मन के खिलाफ, एक रक्षात्मक नारा है, जिससे यह जाहिर होता है कि हम युद्ध नहीं बल्कि शान्ति चाहते हैं, और इससे हमें जन-समुदाय को अपने पक्ष में करने में मदद मिलेगी। यह एक ऐसा नारा है जिससे पहल हमारे हाथ में आ जाएगी; यह एक कार्यनीतिक नारा है। लेकिन पूंजीपति वर्ग राजसत्ता को खुद-ब खुद हरगिज हस्तान्तरित नहीं करेगा, बल्कि हिंसा का सहारा लेगा। तब दूसरी सम्भावना पैदा हो जाती है। अगर वे लड़ना चाहें और पहली गोली दाग दें तो हम भी उनका मुकाबला करने के लिए लड़े बगैर नहीं रह सकते। सशस्त्र शक्ति के जरिए राजसत्ता हथियाना – यह एक रणनीतिक नारा है। अगर आप शान्तिपूर्ण संक्रमण के बारे में जिद करते हैं, तो आपके और सोशलिस्ट पार्टियों के बीच कोई अन्तर नहीं रह जाता। जापानी सोशलिस्ट पार्टी एक ऐसी ही पार्टी है, वह केवल एक ही सम्भावना के लिए तैयार है, यानी वह हिंसा का प्रयोग कभी नहीं करेगी। दुनिया की सभी सोशलिस्ट पार्टियां ऐसी ही हैं। आम तौर पर कहा जा सकता है कि सर्वहारा वर्ग की राजनीतिक पार्टियों के लिए बेहतर यह होगा कि वे दोनों सम्भावनाओं के लिए तैयार रहें : पहली सम्भावना यह है कि कोई शरीफजादा केवल जबान का इस्तेमाल करे और मुक्के का इस्तेमाल न करे, लेकिन दूसरी सम्भावना यह है कि अगर किसी हरामजादे ने मुक्के का इस्तेमाल किया तो मैं भी अपने मुक्के का इस्तेमाल करूंगा। मामले को इस तरह पेश करके दोनों सम्भावनाओं को ध्यान में रखा जा सकेगा और उसमें कोई कमी नहीं रह जाएगी। इसके सिवाय कोई और चारा नहीं है। आज कुछ देशों की कम्युनिस्ट पार्टियां, जैसे ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी, केवल शान्तिपूर्ण संक्रमण का नारा पेश कर रही हैं। हमने इस मसले पर ब्रिटिश पार्टी के नेता के साथ वार्ता की है, लेकिन सफल नहीं हो पाए। उनका घमण्ड में चूर होना स्वाभाविक है, क्योंकि उन्होंने कहा है, ''शान्तिपूर्ण संक्रमण का नारा पेश करने का दावा भला ख्रुश्चोव कैसे कर सकते हैं ? उसे तो मैंने बहुत पहले ही पेश कर दिया था !''

इसके अलावा, सोवियत कामरेड सौ फूल खिलने देने और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने देने की हमारी नीति को नहीं समझ पाते। जो चीज हम लोग चाहते हैं, वह है समाजवाद के अन्तर्गत और जनता की पांतों के भीतर, न कि प्रतिक्रान्तिकारियों के दायरे में, सौ फूल खिलने देना और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने देना। बेशक, जनता के बीच फिर से पांतबन्दी हो सकती है, उसका एक भाग हमारा दुश्मन बन सकता है। उदाहरण के लिए दक्षिणपंथियों को ही लीजिए। पहले वे जनता की पांतों में थे, लेकिन आज मेरे विचार से उनका केवल एक-तिहाई अंश ही जनता की श्रेणी में है और दो-तिहाई अंश प्रतिक्रान्तिकारियों की श्रेणी में है। क्या हम उन्हें चुनाव के अधिकार से वंचित कर दें ? उन चन्द लोगों को छोड़कर जिन्हें कानून के मुताबिक सजा दी जाएगी या जिनका श्रम के जरिए नव रूपान्तर किया जाएगा, बाकी लोगों के साथ आम तौर पर ऐसा न करना ही बेहतर होगा। उनमें से कुछ लोगों को राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की राष्ट्रीय कमेटी का सदस्य भी बनाया जा सकता है, क्योंकि यदि इस कमेटी के सदस्यों की संख्या एक हजार भी हो जाए तो भी ठीक ही होगा। दक्षिणपंथी तत्व बाहर से देखने में अब भी जनता की पांतों में मालूम होते हैं, मगर वास्तव में वे लोग हमारे दुश्मन हैं। हम खुलेआम ऐलान करते हैं कि वे हमारे दुश्मन हैं, तथा हमारे और उनके बीच के अन्तरविरोध जनता और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोध हैं, क्योंकि वे समाजवाद का विरोध करते हैं, कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व का विरोध करते हैं और सर्वहारा अधिनायकत्व का विरोध करते हैं। संक्षेप में, उनकी कथनी और करनी छः मापदण्डों[6] से मेल न खाती ! वे जहरीली खरपतवार हैं। जनता के बीच कभी न कभी कुछ जहरीली खरपतवार अवश्य पैदा होती रहेंगी।

अन्त में, हमें चाहिए कि अपने काम में मुस्तैदी दिखाएं और अध्ययन में कठोर परिश्रम करें। इन तीनों शब्दों पर गौर करें – ''कठोर'', ''परिश्रम'', ''करें''। यह जरूरी है कि हम अपने काम में मुस्तैदी दिखाएं और कठोर परिश्रम करें। अब हमारे बहुत से कामरेड कठोर परिश्रम नहीं कर रहे, और कुछ लोग तो काम के बाद अपनी अतिरिक्त शक्ति को मुख्य रूप से ताश और 'माच्याङ' खेलने तथा डांस-पार्टी में व्यय कर देते हैं। मेरे विचार में यह अच्छा नहीं है। हमें काम के बाद अपनी अतिरिक्त शक्ति को मुख्य रूप से अध्ययन में लगाना चाहिए और अध्ययन की आदत डाल लेनी चाहिए। हमें आखिर किन चीजों का अध्ययन करना चाहिए। हमें एक तो मार्क्सवाद-लेनिनवाद का, दूसरे प्रौद्योगिकी का और तीसरे प्राकृतिक विज्ञान का अध्ययन करना चाहिए। इसके अलावा साहित्य का, खास तौर पर साहित्य के सिद्धान्तों का भी अध्ययन करना चाहिए। इनके बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करना नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं के लिए जरूरी है। उन्हें पत्रकारिता और शिक्षा की भी कुछ न कुछ जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। संक्षेप में, ज्ञान-विज्ञान का दायरा बड़ा व्यापक होता है, जिसके बारे में हमें आम जानकारी हासिल कर लेनी चाहिए। कारण, हमें इन तमाम मामलों का नेतृत्व करना है ! हम जैसे लोग किस किस्म के विशेषज्ञ कहला सकते हैं ? हम राजनीतिक विशेषज्ञ कहला सकते हैं। जानकारी प्राप्त किए बिना और इन मामलों का नेतृत्व किए बिना कैसे काम चलेगा ? सभी प्रान्तों के अपने-अपने अखबार हैं, जिनकी पहले उपेक्षा की गई थी, कला-साहित्य विषयक पत्रिकाएं व संगठन हैं, जिनकी पहले भी उपेक्षा की गई थी। संयुक्त

मोर्चे, जनवादी पार्टियों और शिक्षा की भी ऐसी ही हालत थी। इन सभी मामलों की उपेक्षा की गई थी और ठीक इन्हीं क्षेत्रों में उपद्रव हुए। लेकिन जहां एक बार इन मामलों पर ध्यान दिया जाने लगा, तो कुछ ही महीनों के अन्दर समूची हालत बदल गई। ल्यो लुङ-ची ने पूछा था कि सर्वहारा वर्ग के छोटे बुद्धिजीवी निम्न-पूंजीपति वर्ग के बड़े बुद्धिजीवियों का नेतृत्व भला कैसे कर सकते हैं ? उनकी यह बात गलत है। वे अपने को निम्न-पूंजीवादी कहते हैं, लेकिन दरअसल वे पूंजीवादी हैं। सर्वहारा वर्ग के ''छोटे बुद्धिजीवी'' पूंजीपति वर्ग के बड़े बुद्धिजीवियों का नेतृत्व अवश्य करेंगे। सर्वहारा वर्ग के पास उसकी सेवा करने वाले बुद्धिजीवियों का एक ग्रुप रहा है, जिसमें पहले व्यक्ति मार्क्स और उसके बाद एंगेल्स, लेनिन व स्तालिन हो चुके हैं, और अब हम जैसे लोग और बहुत से अन्य लोग हैं। सर्वहारा वर्ग सबसे आगे बढ़ा हुआ वर्ग है और वह समूची दुनिया में क्रान्ति का नेतृत्व करेगा।

नोट

[1] पांच प्रमुख आन्दोलन ये थे : भूमि सुधार आन्दोलन, अमरीकी आक्रमण का प्रतिरोध करने और कोरिया की सहायता करने का आन्दोलन, प्रतिक्रान्तिकारियों का सफाया करने का आन्दोलन, ''तीन बुराई''-विरोधी और ''पांच बुराई''-विरोधी आन्दोलन तथा विचारधारात्मक नव रूपान्तर आन्दोलन।

[2] यहां कृषि, दस्तकारी और पूंजीवादी उद्योग व वाणिज्य के समाजवादी रूपान्तर का उल्लेख किया गया है।

[3] 'सेना में जनवादी आन्दोलन', नोट 1, 'माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं' ग्रन्थ 4 ।

[4] शानतुङ प्रान्त का ल्याङशान पर्वत सुङ राजवंश में विद्रोही किसानों का एक अड्डा था। क्लासिकी उपन्यास ''कछार के वीर'' में ज्यादातर विद्रोही नेता अधिकारियों और निरंकुश जमींदारों के उत्पीड़न से मजबूर होकर शरण लेने ल्याङशान पर्वत पर जा पहुंचते हैं। ''ल्याङशान पर्वत के विद्रोहियों में जा मिलने के लिए मजबूर होने'' का मतलब है किसी के दबाव में आकर कोई काम करने के लिए मजबूर हो जाना।

[5] हान इड (पश्चिमी हान राजवंश), 'गीत-संग्रह की टीका', अध्याय 9 ।

[6] देखिए इस ग्रन्थ में पृष्ठ 388

मुक्ति के बाद उसका नया जीवन शुरू हुआ। उसके परिवार की स्थिति बेहतर हो गई और वह जिला स्तर का कार्यकर्ता बन गया। लेकिन उसे समाजवाद से सख्त शिकायत थी और उसने कृषि-सहकारिता का भारी विरोध किया; उसने "आजादी" की मांग की और अनाज की खरीद-फरोख्त के राजकीय एकाधिकार का विरोध किया। वर्ग-शिक्षा देने के उद्देश्य से इस व्यक्ति के जीवन के बारे में अब एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। उसने दुख के आंसू बहाते हुए कहा कि बाद में वह अपनी गलतियों को सुधार लेगा। समाजवाद की परीक्षा में खरे उतरना कठिन क्यों है ? क्योंकि समाजवाद का मतलब है पूंजीवादी मिल्कियत को खत्म करके उसे समूची जनता की समाजवादी मिल्कियत में बदल देना और व्यक्तिगत मिल्कियत को खत्म करके उसे समाजवादी सामूहिक मिल्कियत में बदल देना। बेशक, यह संघर्ष अनेक वर्षों तक चलता रहेगा और आज निश्चित रूप से यह कहना कठिन है कि संक्रमण-काल कितना लम्बा होगा। इस वर्ष संघर्ष की लहरों में उभार आ रहा है। क्या हर वर्ष उसमें पीली नदी की लहरों की ही तरह उभार आता रहेगा ? मेरा विचार है शायद ऐसा नहीं होगा। लेकिन बाद में इस तरह के उभार फिर भी आते रहेंगे।

इस समय सारे देश में ऐसे लोग कितने हैं जो समाजवाद को स्वीकार नहीं करते ? बहुत से स्थानीय कामरेडों के साथ मिलकर मैंने एक अनुमान लगाया है। इसके मुताबिक हमारी कुल आबादी में लगभग दस फीसदी लोग या तो समाजवाद को पसन्द नहीं करते अथवा उसका विरोध करते हैं। इसमें जमींदार वर्ग के लोग, धनी किसान, खुशहाल मध्यम किसानों का एक हिस्सा, राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग का एक हिस्सा, पूंजीवादी बुद्धिजीवियों का एक हिस्सा, शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग की उच्च श्रेणी का एक हिस्सा, यहां तक कि इने-गिने मजदूर और गरीब व निम्न-मध्यम किसान भी शामिल हैं। 60 करोड़ आबादी का दस प्रतिशत कितना होता है ? छः करोड़। यह कोई छोटी संख्या नहीं है और इसे कम नहीं समझना चाहिए।

जब हम कहते हैं कि जन-समुदाय की बहुसंख्या पर पक्का भरोसा रखना जरूरी है, तो इसके दो कारण हैं। पहले, हमारी कुल आबादी में 90 प्रतिशत लोग समाजवाद को स्वीकार करते हैं। इनमें सर्वहारा वर्ग, देहाती क्षेत्रों के अर्ध-सर्वहारा गरीब किसान, निम्न-मध्यम किसान, निम्न-पूंजीपति वर्ग की उच्च श्रेणी के बहुसंख्य लोग, पूंजीवादी बुद्धिजीवियों के बहुसंख्य लोग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग का एक हिस्सा शामिल हैं। दूसरे, समाजवाद को स्वीकार न करने या उसका विरोध करने वालों में आखिर ऐसे लोग कितने हैं जो बेहद कट्टरपंथी हैं, यानी जो अति-दक्षिणपंथी, प्रतिक्रान्तिकारी, तोड़-फोड़ करने वाले, और इस प्रकार के हैं जो तोड़-फोड़ की कार्यवाही तो नहीं करते लेकिन बेहद जिद्दी हैं और शायद अपने कट्टरपन को मरते दम तक नहीं छोड़ेंगे ? ऐसे लोगों की संख्या शायद लगभग दो प्रतिशत है। कुल आबादी का दो प्रतिशत कितना होता है, एक करोड़ बीस लाख। ये एक करोड़ बीस लाख आदमी इकट्ठे होकर और बन्दूकों से लैस होकर एक बड़ी सेना का रूप ले सकते हैं। लेकिन देश में भारी अव्यवस्था क्यों पैदा नहीं होगी ? क्योंकि ये लोग विभिन्न सहकारी समितियों, गांवों, कारखानों, स्कूलों तथा कम्युनिस्ट पार्टी, नौजवान संघ व जनवादी पार्टियों की विभिन्न शाखाओं में बिखरे हुए हैं। चूंकि वे हरेक स्थानों में बिखरे हुए हैं और इकट्ठे नहीं हो सकते, इसलिए कोई भारी अव्यवस्था पैदा नहीं हो सकेगी।

समाजवादी क्रान्ति का दायरा कहां तक है, इस संघर्ष में कौन-कौन से वर्ग शामिल हैं ? समाजवादी क्रान्ति सर्वहारा वर्ग द्वारा मेहनतकश जनता का नेतृत्व करके पूंजीपति वर्ग के खिलाफ छेड़ा गया एक संघर्ष है। यद्यपि चीन का सर्वहारा वर्ग संख्या की दृष्टि से अपेक्षाकृत कम है, फिर भी उसके संश्रयकारियों की संख्या बहुत विशाल है; उनमें सबसे महत्वपूर्ण गरीब और निम्न-मध्यम किसान हैं, जिनकी संख्या देहातों की आबादी का 70 प्रतिशत या इससे कुछ ज्यादा है। खुशहाल मध्यम किसानों की संख्या लगभग 20 प्रतिशत बनती है। इस समय खुशहाल मध्यम किसानों को आम तौर पर तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है : जो लोग सहकारिता को स्वीकार करते हैं उनकी संख्या 40 प्रतिशत है; जो लोग दुविधापूर्ण मानसिक स्थिति में हैं उनकी संख्या 40 प्रतिशत है; जो लोग विरोध करते हैं उनकी संख्या 20 प्रतिशत है। पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा और नव रूपान्तर के परिणामस्वरूप जमींदारों और धनी किसानों की पांतों में भी विभाजन हो गया है, उनमें से कुछ लोग अब समाजवाद का पूरा विरोध नहीं करते। पूंजीपति वर्ग और पूंजीवादी बुद्धिजीवियों के प्रति भी हमें विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए और यह नहीं समझना चाहिए कि वे सभी लोग समाजवाद का विरोध करते हैं, क्योंकि वास्तविक स्थिति ऐसी नहीं है। हमारी कुल आबादी में से 90 प्रतिशत लोग समाजवाद के पक्ष में हैं। हमें इस बहुसंख्या पर भरोसा रखना चाहिए। हम अपने प्रयत्नों और वृहद वाद-विवादों के जरिए 8 प्रतिशत लोगों को अपने पक्ष में और ला सकते हैं, जिससे कुल संख्या 98 प्रतिशत हो जाएगी। इस प्रकार समाजवाद का दृढ़ता से विरोध करने वाले कट्टरपंथी लोग केवल 2 प्रतिशत रह जाएंगे। बेशक, हमें सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि ये लोग अब भी एक काफी बड़ी शक्ति हैं, जैसा कि कामरेड तेङ श्याओ-फिङ अभी-अभी कह चुके हैं।

धनी किसान देहातों का पूंजीपति वर्ग हैं, जहां उनकी बात बहुत कम लोग सुनते हैं। जमींदार तो और भी ज्यादा बदनाम हैं। दलाल-पूंजीपति वर्ग बहुत पहले ही बदनाम हो चुका है। जहां तक पूंजीपति वर्ग और पूंजीवादी बुद्धिजीवियों, देहाती निम्न-पूंजीपति वर्ग की उच्च श्रेणी (खुशहाल मध्यम किसानों), शहरी निम्न पूंजीपति वर्ग की उच्च श्रेणी (अपेक्षाकृत खुशहाल छोटे-छोटे मालिकों) और इन दोनों श्रेणियों के बुद्धिजीवियों का सवाल है, उनका कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य है। बुद्धिजीवियों की सभी जगह पूछ होती है, उनकी सभी क्षेत्रों में जरूरत होती है। विश्वविद्यालयों में प्रोफेसरों की जरूरत होती है, प्राइमरी व सेकण्डरी स्कूलों में अध्यापकों की जरूरत होती है, अखबारों में सम्वाददाताओं की जरूरत होती है, थिएटरों में अभिनेता-अभिनेत्रियों की और निर्माण-परियोजनाओं के लिए वैज्ञानिकों, इंजीनियरों व तकनीशियनों की जरूरत होती है। इस समय बुद्धिजीवियों की संख्या पचास लाख और पूंजीपतियों की संख्या सात लाख है, कुल मिलाकर यह संख्या साठ लाख के करीब है। अगर हर परिवार में पांच व्यक्ति हों, तो साठ लाख को पांच से गुणा करने पर यह संख्या तीन करोड़ बन जाती है। अगर तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो पूंजीपति वर्ग और उसके बुद्धिजीवियों का शिक्षा व तकनीकी जानकारी का स्तर ऊंचा होता है। यही कारण है कि दक्षिणपंथी इतनी शेखी बघारते हैं। क्या ल्वो लुङ-ची ने यह नहीं कहा कि सर्वहारा वर्ग के छोटे बुद्धिजीवी निम्न-पूंजीपति वर्ग के उसके समान बड़े बुद्धिजीवी का नेतृत्व करने में असमर्थ हैं। वह इस

बात की जिद करता रहा कि वह पूंजीपति वर्ग का नहीं बल्कि निम्न-पूंजीपति वर्ग का व्यक्ति है, निम्न-पूंजीपति वर्ग का एक बड़ा बुद्धिजीवी है। मेरा विचार है कि सर्वहारा वर्ग के छोटे बुद्धिजीवियों की बात तो दूर रही, केवल कुछ ही अक्षर जानने वाले मजदूर व किसान भी लो लुङ-ची से कहीं ज्यादा बुद्धिमान हैं।

पूंजीपति वर्ग और उसके बुद्धिजीवियों तथा निम्न-पूंजीपति वर्ग की उच्च श्रेणी और उसके बुद्धिजीवियों के दक्षिणपंथी व मध्यवर्ती तत्त्व कम्युनिस्ट पार्टी और सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व को दिल से नहीं मानते। वे लोग कहते हैं कि वे कम्युनिस्ट पार्टी और संविधान का समर्थन करते हैं। वे लोग उनका समर्थन तो करते हैं और उनके पक्ष में हाथ भी उठाते हैं, लेकिन दिल से नहीं मानते। यहां दक्षिणपंथियों, जो शत्रुतापूर्ण होते हैं, और मध्यवर्ती तत्त्वों, जो आधे दिल से मानते हैं और आधे दिल से नहीं, के बीच फर्क करना भी जरूरी है। क्या ऐसे लोग नहीं हैं जो यह कहते फिरते हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी न तो इस काम का नेतृत्व करने में समर्थ है और न उस काम का ? यह विचार न केवल दक्षिणपंथियों का है, बल्कि मध्यवर्ती तत्त्वों में भी कुछ लोगों का है। संक्षेप में, उनके तर्क के अनुसार हम अब चन्द दिनों के मेहमान रह गए हैं, तथा कम्युनिस्ट पार्टी के सामने किसी अन्य देश में शरण लेने और सर्वहारा वर्ग के सामने किसी अन्य ग्रह में शरण लेने के सिवाय और कोई चारा नहीं रह गया है। कारण, आप लोग सभी बातों में निकम्मे हैं ! दक्षिणपंथी कहते हैं आप किसी भी व्यवसाय के लायक नहीं हैं। मौजूदा वाद-विवाद का मुख्य उद्देश्य है आधे दिल से मानने वाले मध्यवर्ती तत्त्वों को अपने पक्ष में कर लेना, जिससे वे यह समझ सकें कि सामाजिक विकास का नियम आखिर क्या है और अच्छा यह होगा कि वे सर्वहारा वर्ग की, जिसका शैक्षणिक स्तर ऊंचा नहीं है, बात सुनें और देहातों में गरीब व निम्न-मध्यम किसानों की बात सुनें। जहां तक शैक्षणिक स्तर का ताल्लुक है, सर्वहारा वर्ग और गरीब व निम्न-मध्यम किसान उनसे अच्छे नहीं हैं, लेकिन जब क्रान्ति करने का सवाल आता है तो सर्वहारा वर्ग और गरीब व निम्न-मध्यम किसान ही इस काम में सचमुच निपुण साबित होते हैं। क्या इस दलील से लोगों की बहुसंख्या को, कायल किया जा सकता है ? हां, किया जा सकता है। इससे पूंजीपति वर्ग की बहुसंख्या को, पूंजीवादी बुद्धिजीवियों की बहुसंख्या को और निम्न-पूंजीपति वर्ग की उच्च श्रेणी की बहुसंख्या को कायल किया जा सकता है। इससे विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों, प्राइमरी व सेकण्डरी स्कूल के अध्यापकों, कलाकारों, साहित्यकारों, वैज्ञानिकों व इंजीनियरों की बहुसंख्या को कायल किया जा सकता है। जो लोग अभी पूरे दिल से नहीं मानते, वे कुछ वर्षों के बाद कदम-ब-कदम मानने लगेंगे।

जब लोगों की बहुसंख्या समाजवाद का समर्थन कर रही हो, ऐसे समय इस नए तरीके – आजादी से अपनी बात कहने, दिल खोलकर राय जाहिर करने, वृहद वाद-विवादों का आयोजन करने और बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लिखने – का जन्म होना बहुत फायदेमन्द साबित हुआ है। इस तरीके का कोई वर्ग-स्वरूप नहीं होता। दक्षिणपंथी भी इसका प्रयोग कर सकते हैं। हम दक्षिणपंथियों के आभारी हैं जिन्होंने ''वृहद'' जैसे शब्द का आविष्कार किया है। इस वर्ष 27 फरवरी को मैंने अपने भाषण में इस शब्द का प्रयोग नहीं किया, मैंने आजादी से अपनी बात कहने, दिल खोलकर राय जाहिर करने और वृहद वाद-विवादों का आयोजन करने के बारे में कुछ भी नहीं कहा। पिछले वर्ष मई में यहां आयोजित की गई एक मीटिंग में जब हमने सौ फूल खिलने देने और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने देने की चर्चा की थी तो हमने ''दिल खोलकर राय जाहिर करने'' और ''आजादी से अपनी बात कहने'' का जिक्र किया था, लेकिन इन दोनों ही मौकों पर ''वृहद'' जैसे शब्द का प्रयोग नहीं किया था। इसके अलावा, हमारे विचार से सौ फूल खिलने देने का प्रयोग केवल कला-साहित्य के क्षेत्र में होना चाहिए था और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने देने का प्रयोग केवल विद्याध्ययन सम्बन्धी मामलों में। बाद में दक्षिणपंथियों ने यह चाहा कि इसका प्रयोग राजनीतिक मामलों में भी किया जाए। दूसरे शब्दों में, उन्होंने यह चाहा कि सभी मामलों में दिल खोलकर राय जाहिर करने दी जाय, ''दिल खोलकर राय जाहिर करने का एक निश्चित काल'' निर्धारित किया जाय। इतना ही नहीं, उन्होंने यह भी चाहा कि बड़े पैमाने पर राय जाहिर करने दी जाय। स्पष्ट है कि इस नारे का प्रयोग सर्वहारा वर्ग भी कर सकता है और पूंजीपति वर्ग भी; इसका प्रयोग वामपंथी, मध्यवर्ती और दक्षिणपंथी सभी लोग कर सकते हैं। आजादी से अपनी बात कहने, दिल खोलकर राय जाहिर करने, वृहद वाद-विवादों का आयोजन करने और बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लिखने के नारे से आखिर किस वर्ग को लाभ होता है ? इससे अन्ततोगत्वा सर्वहारा वर्ग को ही लाभ होता है, पूंजीवादी दक्षिणपंथियों को नहीं। कारण यह है कि समूची आबादी में 90 प्रतिशत लोग यह नहीं चाहते कि देश में अव्यवस्था पैदा हो, वे लोग समाजवाद का निर्माण करना चाहते हैं। बाकी 10 प्रतिशत लोगों में, जो समाजवाद को स्वीकार नहीं करते या उसका विरोध करते हैं, बहुत से लोग दो मतों के बीच डांवाडोल होते रहते हैं, तथा समाजवाद का सख्त विरोध करने वाले कट्टरपंथी तत्त्व केवल 2 प्रतिशत हैं। ये लोग देश में अव्यवस्था भला कैसे पैदा कर सकते हैं ? इसलिए अन्ततोगत्वा आजादी से अपनी बात कहने और दिल खोलकर राय जाहिर करने का नारा तथा आजादी से अपनी बात कहने, दिल खोलकर राय जाहिर करने, वृहद वाद-विवादों का आयोजन करने और बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लिखने का उपाय या तरीका जनता की बहुसंख्या के लिए लाभदायक है और उसका नव रूपान्तर करने में सहायक है। रास्ते दो हैं -- समाजवाद का रास्ता तथा पूंजीवाद का रास्ता, और यह नारा समाजवाद के लिए ही लाभदायक है।

हमें अव्यवस्था से नहीं डरना चाहिए और अपने अन्दर यह डर पैदा नहीं होने देना चाहिए कि हम कठिन स्थिति से छुटकारा नहीं पा सकेंगे। दूसरी तरफ, दक्षिणपंथियों के लिए कठिन स्थिति से छुटकारा पाना मुश्किल हो जाएगा, हालांकि उनके छुटकारा पाने की सम्भावना भी बनी रहेगी। मेरा विचार है, द्वन्द्ववादी नियम के अनुसार दक्षिणपंथी दो भागों में विभाजित हो जाएंगे। हो सकता है घटनाओं के आम रुझान से प्रभावित होकर बहुत से दक्षिणपंथियों के विचार ठीक हो जाएं, तथा वे अपना रुख बदल दें, ठीक ढंग से आचरण करने लगें और उतने कट्टरपंथी न रह जाएं। जब ऐसा हो जाएगा कि उनका दक्षिणपंथी का लेबिल हटा लिया जाएगा, उन्हें दक्षिणपंथी के नाम से नहीं पुकारा जाएगा और उन्हें काम भी दिया जाएगा। मुट्ठीभर अत्यन्त कट्टरपंथी व्यक्ति शायद अन्त तक गलती नहीं मानेंगे और दक्षिणपंथी का लेबिल मरते दम तक लगा रहने देंगे। यह कोई बड़ी बात नहीं है, ऐसे व्यक्ति हमेशा होते रहेंगे।

चूंकि दक्षिणपंथियों ने गड़बड़ी पैदा की है, इसलिए हम स्थिति का मूल्यांकन कर सकते

हैं : एक तरफ कुल आबादी में 90 प्रतिशत लोग समाजवाद को स्वीकार करते हैं, और हम अपनी कोशिशों से यह संख्या 98 प्रतिशत तक बढ़ा सकते हैं, दूसरी तरफ 10 प्रतिशत लोग समाजवाद को स्वीकार नहीं करते या उसका विरोध करते हैं, जिनमें समाजवाद का सख्त विरोध करने वाले कट्टरपंथी व्यक्ति केवल 2 प्रतिशत हैं। इस मूल्यांकन से हमें मालूम हो जाता है कि हम कहां खड़े हैं। सर्वहारा वर्ग की राजनीतिक पार्टी के नेतृत्व में और लोगों की बहुसंख्या द्वारा समाजवाद के समर्थन के आधार पर हम आजादी से अपनी बात कहने, दिल खोलकर राय जाहिर करने, वृहद वाद-विवादों का आयोजन करने और बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लिखने के तरीके का इस्तेमाल कर सकते हैं तथा ऐसी घटनाओं से बच सकते हैं जैसी एक बार हंगरी में हो चुकी है और अब पोलैण्ड में हो रही है। हमें इस बात की जरूरत नहीं कि एक पत्रिका के प्रकाशन पर पाबन्दी लगा दें, जैसा कि पोलैण्ड में किया गया है।[1] हमें केवल इस बात की जरूरत है कि पार्टी के समाचारपत्र में एक दो सम्पादकीय प्रकाशित कर दें। 'वन हुवेइ पाओ' की आलोचना करने के लिए हमने दो सम्पादकीय लिखे। पहला सम्पादकीय पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं था और समस्या के मर्म को नहीं छूता था, लेकिन दूसरे सम्पादकीय के प्रकाशन के बाद 'वन हुवेइ पाओ' ने खुद-ब-खुद अपनी गलतियां सुधारना शुरू कर दिया। 'शिन मिन पाओ' ने भी ऐसा ही किया। पोलैण्ड में ऐसा नहीं हो सका, क्योंकि वे लोग प्रतिक्रान्तिकारियों और दक्षिणपंथियों से सम्बन्धित समस्याओं को और इस समस्या को कि कौन सा रास्ता अपनाया जाय, अभी हल नहीं कर पाए और पूंजीवादी विचारों के खिलाफ संघर्ष पर भी जोर नहीं दे पाए। इसलिए एक पत्रिका पर पाबन्दी लगाने की नजह से एक घटना हो गई। मेरा विचार है कि चीन में मामलों को निपटाना ज्यादा आसान है और मैं कभी निराशावादी नहीं रहा हूं। क्या मैंने यह नहीं कहा कि अव्यवस्था पैदा नहीं हो सकती और हमें डरने की जरूरत नहीं है। अव्यवस्था को अच्छी चीज में भी बदला जा सकता है। जहां कहीं मुकम्मिल तौर पर राय जाहिर की जाएगी तथा बुरी तरह चीखने चिल्लाने और भारी अव्यवस्था की हालत पैदा हो जाएगी, वहां मामलों को निपटाना पहले से कहीं ज्यादा आसान हो जाएगा।

मुक्ति के पहले चीन में केवल चालीस लाख औद्योगिक मजदूर थे और अब उनकी संख्या एक करोड़ बीस लाख हो गई है। यद्यपि यह संख्या ज्यादा नहीं है, फिर भी मजदूर वर्ग का, और केवल मजदूर वर्ग का ही भविष्य उज्ज्वल है। बाकी सभी वर्ग संक्रमण करने वाले वर्ग हैं, उन सबको मजदूर वर्ग में संक्रमण करना होगा। किसान इस संक्रमण के पहले दौर में सामूहिक किसान बन जाएंगे और दूसरे दौर में राजकीय फार्मों के मजदूर बन जाएंगे। पूंजीपति वर्ग को खत्म कर दिया जाएगा, लेकिन शारीरिक रूप से नहीं; उसे एक वर्ग के रूप में तो खत्म कर दिया जाएगा, लेकिन व्यक्ति के रूप में इस वर्ग के लोगों का नव रूपान्तर किया जाएगा। पूंजीवादी बुद्धिजीवियों का नव रूपान्तर करने की जरूरत है, इसी तरह निम्न-पूंजीवादी बुद्धिजीवियों का नव रूपान्तर करने की भी जरूरत है। उनका कदम-ब-कदम नव रूपान्तर किया जा सकेगा और अन्त में उन्हें सर्वहारा बुद्धिजीवी बनाया जा सकेगा। मैं एक बार इस कहावत का उल्लेख कर चुका हूं कि "अगर खाल ही न रही तो बाल कहां टिक सकते हैं ?" अगर बुद्धिजीवी सर्वहारा वर्ग से नाता नहीं जोड़ेंगे तो उन्हें "अधर में लटके रहने" का जोखिम उठाना पड़ेगा। अब बहुत से लोग ट्रेड यूनियनों में शामिल हो गए हैं। कुछ लोग पूछते हैं, "हम

ट्रेड यूनियनों में शामिल हो गए हैं तो क्या हम मजदूर वर्ग के सदस्य नहीं बन गए ?" नहीं, ऐसा नहीं है। कुछ लोग कम्युनिस्ट पार्टी में तो शामिल हो गए हैं, मगर फिर भी कम्युनिस्ट-विरोधी हैं। क्या लिङ लिङ और फङ श्वे-फङ ऐसे कम्युनिस्ट नहीं हैं जो कम्युनिस्ट-विरोधी हैं ? ट्रेड यूनियनों में शामिल होने से एक आदमी खुद-ब-खुद मजदूर वर्ग का सदस्य नहीं बन जाता, उसे नव रूपान्तर की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। जनवादी पार्टियों के सदस्यों, विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों, साहित्यकारों और लेखकों ने मजदूरों और किसानों के बीच अपने दोस्त नहीं बनाए हैं। यह एक गम्भीर कमी है। फेइ श्याओ थुङ का ही उदाहरण लीजिए। ऊंचे दर्जे के बुद्धिजीवियों के बीच उसके दो सौ से ज्यादा दोस्त हैं, जो पेकिङ, शांघाई, छङतू, ऊहान और ऊशी जैसी जगहों में फैले हुए हैं। वह इस ग्रुप से नाता तोड़ ही नहीं सकता; इतना ही नहीं, उसने इन लोगों को संगठित करने का जागरूक प्रयास भी किया है और उनकी तरफ से दिल खोलकर राय भी जाहिर की है। यही उसकी मुसीबत का कारण है। मैं पूछना चाहता हूं, क्या तुम जरा भी नहीं बदल सकते ? दो सौ आदमियों का अपना ग्रुप छोड़ दो और मजदूरों व किसानों में से अन्य दो सौ आदमियों को दोस्त बना लो। मेरी राय है बुद्धिजीवियों को चाहिए कि वे मजदूर-किसान समुदाय के बीच ही अपने दोस्त बनाएं, जहां उन्हें सच्चे दोस्त मिल सकते हैं। वयोवृद्ध मजदूरों को दोस्त बनाओ। किसानों के बीच खुशहाल मध्यम किसानों को बिना सोचे-समझे दोस्त न बनाओ, बल्कि गरीब व निम्न-मध्यम किसानों के बीच अपने दोस्त बनाओ। कारण, दिशा के सवाल पर वयोवृद्ध मजदूर और इसी तरह गरीब व निम्न-मध्यम किसान बहुत जागरूक होते हैं।

दोष-निवारण आन्दोलन की चार मंजिलें हैं – दिल खोलकर राय जाहिर करना, जवाबी प्रहार करना, गलतियों को सुधारना और अध्ययन करना। इसका मतलब है दिल खोलकर राय जाहिर करना, दक्षिणपंथियों पर जवाबी प्रहार करना, जांच-पड़ताल व सुदृढ़ीकरण करना और गलतियों को सुधारना तथा अन्त में कुछ मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन करना और "मन्द-मन्थर बयार और हल्की फुहार" के तरीके से ग्रुप मीटिंगों में आलोचना और आत्म-आलोचना करना। इस वर्ष 1 मई को जब चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा दोष-निवारण के बारे में जारी किए गए दस्तावेज में पहली बार "मन्द-मन्थर बयार और हल्की फुहार" का जिक्र किया गया, तो बहुत से लोगों ने, मुख्य रूप से दक्षिणपंथियों ने, उसका प्रतिवाद किया और "भीषण झंझावात और मूसलाधार वर्षा" की कामना की, जो बाद में हमारे लिए लाभदायक सिद्ध हुआ। हमारा यही अनुमान था। कारण, येनान के दोष-निवारण आन्दोलन में भी ठीक ऐसा ही हुआ था; हमने मन्द-मन्थर बयार का प्रस्ताव रखा था, जिसकी जगह भीषण झंझावात उठ खड़ा हुआ, लेकिन अन्त में मन्द-मन्थर बयार उस पर हावी हो गई। जब कारखानों में बड़े अक्षरों वाले हजारों पोस्टर लगाए गए, तो नेतृत्वकारी पदों पर काम करने वाले लोगों को कठिन स्थिति का सामना करना पड़ा। लगभग दस दिन के अन्दर ही कुछ लोग पद छोड़ने या इस्तीफा देने को तैयार हो गए और कहने लगे कि वे और अधिक बर्दाश्त नहीं कर सकते तथा उनके लिए खाना-पीना और सोना हराम हो गया है। पेकिङ के विश्वविद्यालयों की पार्टी-कमेटियों के सचिवों की ठीक ऐसी ही हालत थी। उनकी भूख गायब हो गई थी और नींद हराम हो गई थी। दक्षिणपंथियों ने कहा कि उन्हें बेरोकटोक दिल खोलकर राय जाहिर

करने दिया जाए और उनका बिलकुल प्रतिवाद न किया जाए। हमने भी कहा कि हम उन्हें खूब खुलकर बात कहने देंगे और जवाब नहीं देंगे। इसलिए मई में हमने उन्हें अपने हाल पर छोड़ दिया और 8 जून तक उनका बिलकुल खण्डन नहीं किया। इस तरह सभी रायों को बेरोकटोक दिल खोलकर जाहिर किया जा सका। इनमें आम तौर पर 90 प्रतिशत से ज्यादा रायें सही थीं, और केवल कुछ ही रायें दक्षिणपंथी थीं। जवाबी प्रहार करने के पहले हमें अपनी खोपड़ी की खाल को पुख्ता बनाकर सुनना पड़ा था। हर इकाई को यह मंजिल पार करनी होती है। हर कारखाने और हर कृषि-उत्पादक सहकारी समिति को दोष-निवारण आन्दोलन चलाना चाहिए। इस समय उसे सेना में चलाया जा रहा है। यह आन्दोलन चलाना निहायत जरूरी है। अगर आप इसे नहीं चलाएंगे, तो ''स्वतंत्र बाजार'' का विकास हो जाएगा। यह एक अजीब दुनिया है, क्योंकि अगर यहां तीन वर्ष तक दोष-निवारण नहीं किया गया, तो कम्युनिस्ट पार्टी, नौजवान संघ और जनवादी पार्टियों के अन्दर तथा विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों, प्राइमरी व सेकण्डरी स्कूलों के अध्यापकों, संवाददाताओं, इंजीनियरों व वैज्ञानिकों के बीच फिर से बहुत सी अजीबोगरीब दलीलें उठने लगेंगी और पूंजीवादी विचारों का फिर से आविर्भाव होने लगेगा। मेरा विचार है, जैसे हर आदमी को रोजाना अपने घर की सफाई करनी चाहिए और रोजाना अपना मुंह धोना चाहिए, उसी तरह दोष-निवारण भी आम तौर पर साल में एक बार लगभग एक महीने तक किया जाना चाहिए। शायद इस आन्दोलन में उभार आते रहेंगे। मौजूदा उभार के लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं, इसके लिए दक्षिणपंथी ही जिम्मेदार हैं। क्या हमने यह नहीं कहा कि कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर भी काओ काङ मौजूद रहा है ? क्या ऐसा हो सकता है कि जनवादी पार्टियों के भीतर एक भी काओ काङ मौजूद न रहा हो ? मुझे तो इस बात पर कतई विश्वास नहीं है। यही नहीं, अब कम्युनिस्ट पार्टी में भी तिङ लिङ, फङ श्वे-फङ और च्याङ फङ जैसे लोग निकल आए हैं, तो क्या जनवादी पार्टियों में ऐसे लोग मौजूद नहीं हैं ?

पूंजीपति वर्ग और पूंजीवादी बुद्धिजीवियों को यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि उनके लिए अपना नव रूपान्तर करना जरूरी है। दक्षिणपंथी ऐसा करने से इनकार करते हैं, और उनके प्रभाव में कुछ अन्य लोग भी अपना नव रूपान्तर करने के इच्छुक नहीं हैं और यह दावा करते हैं कि उनका नव रूपान्तर हो चुका है। चाङ नाए-छी कहता है कि नव रूपान्तर एक भयंकर चीज है, आदमी की मांसपेशियां खींचने और खाल उतारने के समान बुरी चीज है। हम कहते हैं कि आदमी को अपना सांगोपांग रूपान्तर करना होगा। यह कहता है कि इसका मतलब है आदमी की मांसपेशियां खींचना और खाल उतारना। आखिर ऐसा कौन है जो इस शरीफ आदमी की मांसपेशियां खींचने और खाल उतारने जा रहा है ? बहुत से लोग यह भूल गए हैं कि हमारा उद्देश्य क्या है, हम यह सब क्यों करना चाहते हैं और समाजवाद की अच्छाई क्या है। विचारधारात्मक नव रूपान्तर आखिर क्यों आवश्यक है ? क्योंकि हम चाहते हैं कि पूंजीवादी बुद्धिजीवी सर्वहारा विश्व-दृष्टिकोण अपना लें और अपने को सर्वहारा बुद्धिजीवी बना लें। पुराने बुद्धिजीवियों को अपने को बदलना ही होगा, क्योंकि नए बुद्धिजीवी सामने आते जा रहे हैं। आप कह सकते हैं कि ज्ञान के क्षेत्र में ये नए बुद्धिजीवी अभी काफी ऊंचे स्तर तक नहीं पहुंच पाए, लेकिन अन्त में ये अनिवार्य रूप से उस स्तर तक पहुंच जाएंगे। इन नई शक्तियों के उदय से पुराने वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, प्रोफेसरों व अध्यापकों को एक चुनौती का

सामना करना पड़ेगा और वे आगे बढ़े बिना नहीं रह सकेंगे। हमारा अनुमान है कि अधिकांश लोग प्रगति कर सकेंगे और कुछ लोग तो अपने को सर्वहारा बुद्धिजीवी भी बना सकेंगे।

सर्वहारा वर्ग को भी पूंजीपति वर्ग की ही तरह अपने बुद्धिजीवियों का दस्ता तैयार कर लेना चाहिए। अपने बुद्धिजीवियों के बिना किसी भी वर्ग का शासन नहीं चल सकता। अगर अमरीका के पास खुद अपने बुद्धिजीवी न हों, तो वहां भला पूंजीवादी अधिनायकत्व लागू करना कैसे सम्भव हो सकता है ? हमारे यहां एक सर्वहारा अधिनायकत्व है, और सर्वहारा वर्ग को चाहिए कि वह अपने बुद्धिजीवियों का दस्ता तैयार कर ले, जिसमें पुराने समाज से आए वे सभी बुद्धिजीवी शामिल हों जिन्होंने नव रूपान्तर के बाद सचमुच मजदूर वर्ग का रुख दृढ़ता से अपना लिया है। शायद चाङ नाए-छी की गिनती उन दक्षिणपंथियों में की जा सकती है जो अपने को बदलने से इनकार करते हैं। जब उसे अपने को बदलकर एक सर्वहारा बुद्धिजीवी बन जाने के लिए प्रेरित किया जाता है तो वह इनकार कर देता है और कहता है कि वह बहुत पहले ही बदल चुका है और अब एक ''लाल पूंजीवादी'' बन चुका है। अच्छा तो अब हम अपना मूल्यांकन खुद करने और सार्वजनिक वाद-विवाद करने का तरीका अपना लें; आप अपना मूल्यांकन स्वयं जरूर कर सकते हैं, लेकिन उसे वाद-विवाद के लिए जन-समुदाय के समक्ष रखा जाएगा। हम कहते हैं कि आप सभी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुंच पाए; चाङ नाए-छी, तुम एक श्वेत पूंजीवादी हो। कुछ लोग कहते हैं कि वे पहले विशेषज्ञ बनेंगे और बाद में लाल। पहले विशेषज्ञ बनने और बाद में लाल बनने का मतलब है पहले श्वेत और बाद में लाल बनना। इस समय नहीं बल्कि बाद में लाल बनेंगे – अगर वे इस समय लाल नहीं हैं तो उनका रंग इस समय कौन सा है ? निश्चय ही इस समय उनका रंग श्वेत है। बुद्धिजीवियों को लाल और विशेषज्ञ एक साथ बनना चाहिए। लाल बनने के लिए उन्हें अपने पूंजीवादी विश्व-दृष्टिकोण पूरी तरह बदलने का पक्का इरादा कर लेना चाहिए। इसके लिए उन्हें बहुत सी किताबें पढ़ने की जरूरत नहीं है, बल्कि निम्नोक्त प्रश्नों को सचमुच आत्मसात कर लेना चाहिए : सर्वहारा वर्ग क्या है ? सर्वहारा अधिनायकत्व क्या है ? केवल सर्वहारा वर्ग का ही भविष्य उज्ज्वल क्यों है, जबकि अन्य सभी वर्ग संक्रमणशील हैं ? हमारे देश को केवल समाजवादी रास्ता ही क्यों अपनाना चाहिए, पूंजीवादी रास्ता क्यों नहीं ? कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व अनिवार्य क्यों है ?

मैंने जो बातें 30 अप्रैल को कहीं वे बहुत से लोगों के दिमाग में नहीं बैठ पाईं।[2] ''अगर खाल ही न रही तो बाल कहां टिक सकते हैं ?'' मैंने कहा था कि चीन में पांच खालें चली आ रही हैं। इनमें तीन खालें पुरानी हैं, यानी साम्राज्यवादी मिलकियत, सामन्ती मिलकियत और नौकरशाही-पूंजीवादी मिलकियत। पुराने समाज में बुद्धिजीवी इन तीनों खालों पर निर्भर रहकर जीविका चलाते थे। इसके अलावा वे लोग राष्ट्रीय पूंजीवादी मिलकियत और छोटे उत्पादकों की मिलकियत यानी निम्न-पूंजीवादी मिलकियत पर भी निर्भर रहते थे। हमारी जनवादी क्रान्ति का लक्ष्य था पहली तीन खालों को उतार देना, और यह क्रान्ति लिन च-श्वी[3] के जमाने से सौ वर्ष से ज्यादा समय तक चलती रही थी। बाद की दो खालों को, यानी राष्ट्रीय पूंजीवादी मिलकियत और छोटे उत्पादकों की मिलकियत को, समाजवादी क्रान्ति के प्रहार का निशाना बनाया गया। अब इन पांचों खालों का अस्तित्व नहीं रह गया है। पहली तीन खालें बहुत पहले

ही गायब हो गई थीं, बाकी दो अब गायब हो गई हैं। इस समय कौन सी खाल मौजूद है ? समाजवादी सार्वजनिक मिलकियत की खाल। बेशक, यह दो भागों में विभाजित है, समूची जनता की मिलकियत और सामूहिक मिलकियत। ये लोग किस पर निर्भर रहकर जीविका चलाते हैं ? चाहे जनवादी पार्टियों के सदस्य हों, या प्रोफेसर, वैज्ञानिक व संवाददाता, ये सभी लोग मजदूर वर्ग पर, सामूहिक किसानों पर, समूची जनता की मिलकियत पर और सामूहिक मिलकियत पर निर्भर रहते हैं। संक्षेप में, ये सभी लोग समाजवादी सार्वजनिक मिलकियत पर निर्भर रहकर जीविका चलाते हैं। उपरोक्त पांच खालों के न रहने की वजह से बाल अधर में लटक रहे हैं और जब नीचे गिरते हैं तो भी कहीं नहीं टिक पाते। बुद्धिजीवी अब भी इस नई खाल की अवहेलना कर रहे हैं। वे सर्वहारा वर्ग और गरीब व निम्न मध्यम किसानों को कुछ नहीं समझते और कहते हैं कि वे न तो नक्षत्र विज्ञान जानते हैं और न भूगोल। वे सोचते हैं कि "तीन धर्मों और नौ विचारशाखाओं"* के लोग उनकी तुलना में बिलकुल तुच्छ हैं। बुद्धिजीवी मार्क्सवाद-लेनिनवाद को अंगीकार करने को तैयार नहीं हैं। अतीत काल में बहुत से लोग मार्क्सवाद-लेनिनवाद का विरोध करते थे। साम्राज्यवादी उसका विरोध करते थे। च्याङ काई-शेक आए दिन इसका विरोध करता था और कहता था कि "कम्युनिज्म चीन की स्थिति के अनुकूल नहीं है", जिससे लोगों में कम्युनिज्म के प्रति डर पैदा हो गया। बुद्धिजीवियों द्वारा मार्क्सवाद-लेनिनवाद को अंगीकार किए जाने और अपने पूंजीवादी विश्व-दृष्टिकोण को सर्वहारा विश्व-दृष्टिकोण में परिवर्तित किए जाने के लिए समय की और एक समाजवादी विचारधारात्मक क्रान्तिकारी आन्दोलन की जरूरत होती है। इस वर्ष के आन्दोलन का उद्देश्य है उसके लिए मार्ग प्रशस्त करना।

दक्षिणपंथियों पर जवाबी प्रहार करने के बाद अब कुछ विभागों, संगठनों और कालेजों में बिलकुल शान्ति छा गई है; नेतृत्वकारी पदों पर काम करने वाले लोग चैन से दिन बिता रहे हैं और यह नहीं चाहते कि जो सही रायें पेश की गई हैं, उनके अनुसार सुधार किए जाएं। पेकिङ के कुछ विभागों, संगठनों और कालेजों में ऐसी ही हालत है। मेरा विचार है कि सुधार के मौजूदा दौर में दिल खोलकर राय जाहिर करने का एक ऊंचा ज्वार फिर आना चाहिए। बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लगाइए और पूछिए, "आप लोग सुधार क्यों नहीं करते ?" उन्हें चुनौती दीजिए ! यह चुनौती बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकती है। सुधार की मंजिल के लिए कुछ समय की जरूरत है, महीने-दो महीने की जरूरत है। इसके बाद एक अध्ययन का काल होगा, कुछ मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन किया जाएगा तथा "मन्द-मन्थर बयार और हल्की फुहार" के रूप में आलोचना और आत्म-आलोचना की जाएगी। यह चौथी मंजिल होगी। निस्सन्देह, इस तरह का अध्ययन महीने-दो महीने की बात नहीं है। मेरा मतलब है जैसे-जैसे यह आन्दोलन समाप्त होता जाए, वैसे-वैसे अध्ययन में लोगों की दिलचस्पी भी बढ़ती जानी चाहिए।

दक्षिणपंथियों पर जवाबी प्रहार किसी न किसी दिन जरूर बन्द करना होगा। कुछ दक्षिणपंथियों ने इसका अनुमान लगा लिया है। उन्होंने कहा कि यह तूफान कभी न कभी जरूर शान्त हो जाएगा। यह बिलकुल ठीक है। दक्षिणपंथियों का विरोध आप हमेशा नहीं कर सकते, आए दिन और आए साल नहीं कर सकते। उदाहरण के लिए, पेकिङ में दक्षिणपंथियों के विरोध के वातावरण में पहले जैसी उग्रता नहीं रह गई है, क्योंकि जवाबी प्रहार का दौर लगभग समाप्त

हो गया है। लेकिन यह अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ और हमें अपने प्रयत्नों में शिथिलता नहीं आने देनी चाहिए। कुछ दक्षिणपंथी अब भी आत्मसमर्पण करने से हठपूर्वक इनकार कर रहे हैं, जैसे ल्वो लुङ-ची और चाङ नाए-छी। मेरा विचार है कि हमें उनको कई बार और समझाना-बुझाना चाहिए और अगर फिर भी वे अपनी गलती स्वीकार करने से इनकार करें तो भला हम क्या कर सकते हैं ? क्या उन्हें रोजाना मीटिंगों में बुलाएं ? कुछ कट्टरपंथी व्यक्ति अपने को हरगिज नहीं सुधारेंगे और हमको उन्हें छोड़ना पड़ेगा। ऐसे लोग मुट्ठीभर हैं। हम उन्हें अपने हाल पर छोड़ देंगे और कुछ दशकों तक उसी हालत में रहने देंगे। तथापि अधिकांश लोग आगे ही बढ़ते जाएंगे।

क्या हम दक्षिणपंथियों को समुद्र में डुबोने जा रहे हैं ? नहीं, एक को भी नहीं। दक्षिणपंथी एक शत्रुतापूर्ण शक्ति हैं, क्योंकि वे कम्युनिस्ट पार्टी, जनता और समाजवाद का विरोध करते हैं। लेकिन अब हम उनके प्रति जमींदारों व प्रतिक्रान्तिकारियों जैसा बरताव नहीं करते और इस फर्क का बुनियादी संकेत यह है कि उन्हें मतदान के अधिकार से वंचित नहीं किया गया है। शायद इनेगिने लोगों को ही इस अधिकार से वंचित करना होगा और उन्हें सुधारने के लिए श्रम में लगाया जाएगा। हम एक ऐसा तरीका अपनाते हैं जिसमें न तो उनमें से किसी को गिरफ्तार किया जाता है और न मतदान के अधिकार से वंचित किया जाता है, इसके विपरीत उन्हें सही रास्ते पर लौटने का मौका दिया जाता है, और इस तरह उन्हें विभाजित करने में मदद मिलती है। क्या मैंने अभी-अभी यह नहीं कहा कि दक्षिणपंथी दो किस्म के हैं ? एक किस्म के वे हैं जो अपनी गलतियां सुधार लेने के बाद दक्षिणपंथी के लेबिल से मुक्त हो जाएंगे और जनता की पांतों में लौट सकेंगे। दूसरी किस्म के वे हैं जो यमराज के दर्शन होने तक भी अपनी गलतियों से चिपके रहेंगे। वे कहेंगे : "हम आत्मसमर्पण करने वाले लोग नहीं हैं महाराज ! जरा देखिए तो, हम कितने 'सत्यनिष्ठ' हैं" ! ऐसे लोग पूंजीपति वर्ग के वफादार चाकर हैं। दक्षिणपंथी लोग सामन्ती अवशेषों और प्रतिक्रान्तिकारियों के साथ गठजोड़ और घनिष्ठता बनाए रखते हैं तथा उनके साथ मिलकर कार्यवाही करते हैं। 'वन हुवेइ पाओ' अखबार को देखकर जमींदार खुशी से फूले न समाये। उन्होंने किसानों को पढ़कर सुनाने और डराने-धमकाने के लिए अखबार की कुछ प्रतियां खरीद लीं और कहा, "देख लो, यह सब अखबार में छपा है !" उन्होंने बदला लेना चाहा। साम्राज्यवादियों और च्याङ काई-शेक के भी दक्षिणपंथियों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। उदाहरण के लिए, थाइवान और हाङकाङ के प्रतिक्रियावादियों ने छु आन-फिङ के "सब चीजों में कम्युनिस्ट पार्टी का इजारा होने" के आरोप का, चाङ पो च्युन की "राजनीतिक योजना मण्डल" की मांग का और ल्वो लुङ-ची के "राजनीतिक पुनर्प्रतिष्ठापन कमेटी" के आवाहन का भरपूर समर्थन किया है। अमरीकी साम्राज्यवाद भी दक्षिणपंथियों से सहानुभूति रखता है। एक बार मैंने आप लोगों से पूछा था, "अगर अमरीकियों ने पेकिङ पर चढ़ाई कर दी, तो आप लोग क्या करेंगे ? कैसा रवैया अपनाएंगे ? कैसा व्यवहार करेंगे ? अमरीका के साथ मिलकर कठपुतली शासन का गठन करेंगे या हमारे साथ पहाड़ों पर जाएंगे ?" उस समय मैंने कहा था कि मेरा इरादा तो पहाड़ों पर जाने का है, पहले चाङच्याखओ और फिर येनान जाने का है। मैं अतिशयोक्ति का सहारा ले रहा था और बुरी से बुरी सम्भावना पर विचार कर रहा था। हम लोग अव्यवस्था से नहीं

डरते। अमरीका भले ही आधे चीन पर कब्जा कर ले, हम भयभीत नहीं होंगे। क्या जापान ने चीन के अधिकांश भाग पर कब्जा नहीं कर लिया था ? क्या हमने बाद में युद्ध के जरिए एक नए चीन की स्थापना नहीं कर ली ? कुछ जापानियों के साथ बातचीत करते समय मैंने अनेक बार कहा था कि हमें जापानी साम्राज्यवाद को धन्यवाद देना चाहिए, क्योंकि उसके आक्रमण के कारण ही हमारे समूचे राष्ट्र में विरोध की लहरें उमड़ने लगीं और हमारी जनता जाग उठी, जिसके परिणामस्वरूप यह आक्रमण हमारे लिए वरदान सिद्ध हुआ।

दक्षिणपंथी झूठे हैं, बेईमान हैं और हमारी पीठ पीछे बुरे काम करते हैं। कौन सोच सकता था कि चाङ पो-च्युन इतने कुकर्म करेगा ? मैं देखता हूं कि इस तरह के लोग जितने ऊंचे पद पर होते हैं उतनी ही बड़ी गद्दारी करते हैं। चाङ-ल्वो गठजोड़ दीर्घकालीन सह-अस्तित्व और पारस्परिक निरीक्षण तथा सौ फूल खिलने दो और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने दो के इन दो नारों से बहुत खुश हुआ। उन लोगों ने इन दोनों नारों का फायदा उठाकर हमारा विरोध किया। हमने कहा कि हम दीर्घकालीन सह-अस्तित्व का पक्षपोषण करते हैं, लेकिन उन्होंने इसे एक अल्पकालीन सह-अस्तित्व में बदलने की कोशिश की। हमने कहा कि हम पारस्परिक निरीक्षण का पक्ष-पोषण करते हैं, लेकिन उन्होंने किसी भी प्रकार का निरीक्षण स्वीकार नहीं किया। एक समय वे बिलकुल पागल से हो गए और अन्त में वस्तुस्थिति का विकास उनकी इच्छा के बिलकुल विपरीत हो गया। इस प्रकार दीर्घकालीन सह-अस्तित्व अल्पकालीन सह-अस्तित्व में बदल गया। चाङ पो-च्युन के मंत्रिपद का क्या होगा ? मेरा विचार है शायद भविष्य में वह इस पद पर नहीं रह सकेगा। एक दक्षिणपंथी का मंत्रिपद पर नियुक्त किया जाना जनता हरगिज स्वीकार नहीं करेगी ! कुछ कुख्यात दक्षिणपंथी राष्ट्रीय जन-प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि भी हैं। उनके बारे में क्या किया जाए ? मेरा विचार है उन्हें भी इस पद पर बनाए रखना शायद मुश्किल होगा। उदाहरण के लिए तिङ लिङ भविष्य में जन-प्रतिनिधि नहीं हो सकेंगी। कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हें कोई पद न देना और कोई काम न देना भी शायद अच्छा न होगा। उदाहरण के लिए, छ्येन वेइ-छाङ भविष्य में शायद प्रोफेसर के पद पर तो रह सकता है, लेकिन विश्वविद्यालय के वाइस-प्रेसिडेण्ट के पद पर नहीं। कुछ अन्य लोग तो कुछ समय के लिए शायद प्रोफेसर भी नहीं रह सकेंगे, क्योंकि विद्यार्थी उनके लेक्चर सुनने नहीं जाएंगे। तब वे लोग क्या काम कर सकते हैं ? हम विश्वविद्यालय में उन्हें कुछ अन्य काम दे सकते हैं; साथ ही उन्हें अपने को सुधारने का मौका दे सकते हैं और कुछ वर्षों के बाद फिर से अध्यापन के काम में लगा सकते हैं। इन सब सवालों के बारे में सोच-विचार करने की जरूरत है। यह एक बड़ा पेचीदा मामला है। क्रान्ति खुद भी एक पेचीदा मामला है। इसलिए मुझे आशा है कि आप लोग इस मसले पर विचार-विमर्श करेंगे कि दक्षिणपंथियों से कैसे निपटा जाय और उनके लिए कैसी व्यवस्था की जाय।

विभिन्न जनवादी पार्टियों और उनकी बुनियादी इकाइयों की हालत कैसी है ? मेरा विचार है शायद इसके बारे में आप लोग, जो जिम्मेदार पदों पर काम कर रहे हैं, स्पष्ट जानकारी नहीं रखते। कट्टर दक्षिणपंथी कुछ समय के लिए किन्हीं संगठनों में पानी को गंदला कर सकते हैं, ताकि हम पेंदे तक न देख सकें। जांच-पड़ताल से मालूम हुआ है कि उनकी संख्या वास्तव में केवल एक-दो प्रतिशत ही है। पानी में थोड़ी सी फिटकिरी डाल दीजिए और आपको पेंदा

साफ नजर आने लगेगा। मौजूदा दोष-निवारण आन्दोलन फिटकिरी डालने के ही समान है। दिल खोलकर राय जाहिर करने और वृहद वाद-विवादों का आयोजन करने के परिणामस्वरूप हम पेंदे तक देख सकते हैं। हम कारखानों, गांवों और कालेजों में हर चीज के पेंदे तक देख सकते हैं तथा कम्युनिस्ट पार्टी, नौजवान संघ और जनवादी पार्टियों में हर चीज के पेंदे तक देख सकते हैं।

अब मैं कृषि-विकास के चालीस-सूत्री कार्यक्रम के बारे में कुछ कहना चाहता हूं। दो साल के अनुभव के बाद भी बुनियादी लक्ष्य अभी चार सौ, पांच सौ और आठ सौ ही निर्धारित किए गए हैं, यानी अनाज का प्रति मु वार्षिक उत्पादन पीली नदी के उत्तर में चार सौ चिन, ह्वाए नदी के उत्तर में पांच सौ चिन और ह्वाए नदी के दक्षिण में आठ सौ चिन ही निर्धारित किया गया है। यह लक्ष्य बारह वर्ष की अवधि में प्राप्त कर लिया जाना चाहिए, मुद्दे की बात यह है। चन्द धाराओं के अलावा पूरे कार्यक्रम में कोई बुनियादी परिवर्तन नहीं किया गया है। कुछ सवाल हल हो चुके हैं, उदाहरण के लिए, सहकारी रूपान्तर का सवाल मुख्य रूप से हल हो चुका है, अतएव उससे सम्बन्धित धाराओं में यथोचित संशोधन किया गया है। कुछ चीजों पर पहले जोर नहीं दिया गया था, जैसे कृषि-मशीनरी और रसायनिक खाद। चूंकि अब इन पहलुओं में भारी प्रयास किए जा रहे हैं, इसलिए सम्बन्धित धाराओं में इन चीजों पर जोर दिया गया है। धाराओं के क्रम को भी कुछ पुनर्व्यवस्थित किया गया है। राष्ट्रीय जन-प्रतिनिधि सभा की स्थायी समिति और राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की राष्ट्रीय कमेटी की स्थायी समिति की संयुक्त मीटिंग में विचार-विनिमय के बाद कृषि-विकास के लिए तैयार किए गए इस कार्यक्रम के संशोधित मसौदे को समूचे देहातों में वाद-विवाद के लिए प्रसारित किया जाएगा, उसी तरह जैसे उसके पुराने मसौदे को प्रसारित किया गया था। इस पर कारखानों में अलग-अलग दायरों में और जनवादी पार्टियों में भी वाद-विवाद किया जा सकता है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के इस कार्यक्रम का मसौदा हमारे राजनीतिक योजना मण्डल ने, यानी चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने तैयार किया था, न कि चाङ पो-च्युन द्वारा परिकल्पित "राजनीतिक योजना मण्डल" ने।

इस कार्यक्रम पर वाद-विवाद करने के लिए किसानों को प्रेरित करना अत्यन्त आवश्यक है। हमें जनता की ओजस्विता और उत्साह को बढ़ाते रहना चाहिए। पिछले वर्ष की दूसरी छमाही में और इस वर्ष की पहली छमाही में उसका उत्साह ठण्डा पड़ गया था, तथा बाद में दक्षिणपंथियों द्वारा शहरों व देहातों में पैदा की गई गड़बड़ी की वजह से उसका उत्साह और ज्यादा ठण्डा पड़ गया था। दोष-निवारण और दक्षिणपंथी-विरोधी आन्दोलन ने इस उत्साह को फिर से बढ़ा दिया है। मेरा विचार है कि कृषि-विकास का यह चालीस-सूत्री कार्यक्रम आम तौर पर चीन की स्थिति से मेल खाता है और मनोगतवाद की उपज नहीं है। इस कार्यक्रम में पहले कुछ मनोगतवाद अवश्य मौजूद था, लेकिन उसे हमने दूर कर दिया है। पूरे तौर पर विश्लेषण किया जाए तो इस कार्यक्रम को साकार रूप देना सम्भव है। चीन को अवश्य बदला जा सकता है, अज्ञान को ज्ञान में बदला जा सकता है और शिथिलता को सक्रियता में बदला जा सकता है।

कार्यक्रम में चार हानिकारक जन्तुओं का सफाया करने के बारे में, यानी चूहों, गौरैयों,

मक्खियों और मच्छरों को खत्म करने के बारे में भी एक धारा मौजूद है। मैं इस मामले में भारी दिलचस्पी रखता हूं, आप लोग इसके बारे में न मालूम क्या सोचते हैं ? शायद आप लोगों को भी इसमें दिलचस्पी हो। चार हानिकारक जन्तुओं का सफाया कर देना एक व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य आन्दोलन है और साथ ही यह अन्ध-विश्वास दूर करने का आन्दोलन भी है। उनका सफाया करना आसान नहीं है। चार हानिकारक जन्तुओं को खत्म करने के लिए भी दिल खोलकर राय जाहिर करना, वृहद वाद-विवादों का आयोजन करना और बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लिखना जरूरी है। अगर समूची जनता को गोलबन्द करके इस काम में लगा दिया जाए और कुछ सफलताएं प्राप्त की जाएं, तो मुझे विश्वास है कि जनता की मानसिक स्थिति में जरूर परिवर्तन आ जाएगा और चीनी राष्ट्र के मनोबल में जरूर भारी बढ़ोतरी होगी। हमें अपने राष्ट्र को अत्यन्त तेजस्वी बना देना चाहिए।

परिवार नियोजन में सफलता प्राप्त करना भी सम्भव है। इसके बारे में भी वृहद वाद-विवादों का आयोजन किया जाना चाहिए और कई वर्ष की अवधि तक प्रयोग किए जाने चाहिए, कई वर्ष की अवधि तक प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए और कई वर्ष की अवधि तक लोकप्रचलित करने का काम किया जाना चाहिए।

हमारे सामने अभी बहुत से काम बाकी हैं। हमें अभी कृषि-विकास के चालीस-सूत्री कार्यक्रम में निर्धारित बहुत से काम पूरे करने हैं। यह केवल कृषि की योजना है; उसके अलावा उद्योग, संस्कृति और शिक्षा के काम की भी योजनाएं हैं। तीन पंचवर्षीय योजनाएं पूरी होने के बाद चीन की शक्ल जरूर बदल जाएगी।

हमारा अनुमान है कि तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त में हमारा वार्षिक इस्पात उत्पादन दो करोड़ टन तक पहुंच जाएगा । इस वर्ष हमारा इस्पात उत्पादन 52 लाख टन है और दस वर्ष में उक्त लक्ष्य शायद प्राप्त कर लिया जाएगा। 1952 में भारत का इस्पात उत्पादन 16 लाख टन था और इस वर्ष 17 लाख टन से कुछ ज्यादा है; पांच वर्ष में केवल एक लाख टन से कुछ ज्यादा की वृद्धि हुई है। हमारी स्थिति क्या है ? 1949 में हमारा इस्पात उत्पादन केवल 1 लाख 90 हजार टन था, तीन वर्ष के पुनर्स्थापना काल में वह 10 लाख टन से कुछ ज्यादा हो गया और पांच वर्ष बाद अब 52 लाख टन तक पहुंच गया है; पांच वर्ष में 30 लाख टन से कुछ ज्यादा की वृद्धि हुई है। अगले पांच वर्ष बाद हमारा वार्षिक उत्पादन एक करोड़ टन को पार कर जाएगा या इससे भी ज्यादा बढ़कर 1 करोड़ 15 लाख टन तक पहुंच जाएगा। तो क्या हम अपनी तीसरी पंचवर्षीय योजना पूरी करने के बाद उसे दो करोड़ टन तक नहीं पहुंचा सकेंगे ? अवश्य पहुंचा सकेंगे।

मैं कहता हूं कि हमारे देश की स्थिति आशाओं से परिपूर्ण है। दक्षिणपंथी कहते हैं कि वह निराशाजनक है, वे बिलकुल गलत हैं। उन्हें विश्वास नहीं है; चूंकि वे समाजवाद का विरोध करते हैं, इसलिए उन्हें विश्वास न होना स्वाभाविक है; हम समाजवाद के रास्ते पर डटे हुए हैं और विश्वास से ओतप्रोत हैं।

नोट

[1] अक्तूबर 1957 में पोलैण्ड सरकार ने साप्ताहिक 'पो प्रोस्तू' पर पाबन्दी लगा दी थी, जिसके परिणामस्वरूप वहां विद्यार्थियों के उपद्रव हुए।

[2] यहां उस भाषण का उल्लेख किया गया है जिसे कामरेड माओ त्सेतुङ ने 30 अप्रैल 1957 को जनवादी पार्टियों के नेतृत्वकारी सदस्यों और गैर-पार्टी गण्यमान्य जनवादी व्यक्तियों की एक मीटिंग में दोष निवारण आन्दोलन और बुद्धिजीवियों के विचारधारात्मक नव रूपान्तर के बारे में दिया था।

[3] लिन च-श्वी (1785-1850) प्रथम अफीम-युद्ध के दौरान क्वाङतुङ और क्वाङसी प्रान्तों में छिङ राजवंश के वाइसराय थे। उन्होंने बरतानवी आक्रमण का दृढ़ता से विरोध किया था।

[4] प्राचीन काल में चीन में ये तीन धर्म मौजूद थे – कनफ्यूशियसवादी धर्म, ताओ धर्म और बौद्ध धर्म, तथा ये नौ विचारशाखाएं मौजूद थीं – कनफ्यूशियसपंथी, ताओ पंथी, इन-याङ, विधानवादी, तर्कवादी, मोवादी, राजनीतिक रणनीतिवादी, सर्वमतसंकलनवादी और कृषिविज्ञानवादी। बाद में "तीन धर्मों और नौ विचारशाखाओं" का व्यापक अर्थ लगाया जाने लगा और वे विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों और विद्याध्ययन सम्बन्धी मतों के द्योतक बन गए। पुराने समाज में इस कथन का प्रयोग सन्दिग्ध व्यवसायों में लगे हुए लोगों के अर्थ में भी किया जाता था।

अन्त:पार्टी एकता का द्वन्द्वात्मक तरीका

18 नवम्बर 1957

एकता के सवाल पर मैं तरीके के विषय में कुछ कहना चाहता हूं। मेरा विचार है कि हमें हर कामरेड के प्रति, चाहे वह कोई भी क्यों न हो, एकता कायम करने का रवैया अपनाना चाहिए, बशर्ते कि वह शत्रुतापूर्ण या तोड़फोड़ करने वाला तत्व न हो। हमें उसके प्रति एक द्वन्द्ववादी तरीका अपनाना चाहिए, न कि अधिभौतिकवादी तरीका। द्वन्द्ववादी तरीके का क्या अर्थ है ? इसका अर्थ है हर वस्तु का विश्लेषण करना, यह मान कर चलना कि हर आदमी कोई न कोई गलती जरूर करता है, तथा किसी व्यक्ति का केवल इसलिए पूर्ण निषेध न करना क्योंकि उसने गलतियां की हैं। लेनिन ने एक बार कहा था कि दुनिया में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो गलतियां न करता हो। हर व्यक्ति को सम्बल की आवश्यकता होती है। हर सुयोग्य व्यक्ति को तीन अन्य व्यक्तियों की सहायता की आवश्यकता होती है, हर बाड़ को तीन खूंटों के सम्बल की आवश्यकता होती है। कमल का फूल चाहे कितना ही सुन्दर क्यों न हो, उसे अपने सौन्दर्य में निखार लाने के लिए हरे पत्तों की आवश्यकता होती है। ये सब चीन की कहावतें हैं। एक और चीनी कहावत यह है कि अगर तीन मोची एक साथ मिलकर अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करें, तो वे अद्भुत प्रतिभाशाली चूके ल्याङ की तरह कमाल दिखा सकते हैं। अकेला चूके ल्याङ एक सर्वगुणसम्पन्न व्यक्ति नहीं हो सकता, उसकी अपनी सीमाएं हैं। बारह देशों के हमारे इस घोषणापत्र को ही देखिए, हम इसका पहला, दूसरा, तीसरा और चौथा मसौदा तैयार कर चुके हैं और अब भी इसे मांजना जारी है। मेरे विचार से यदि कोई यह दावा करता है कि वह ईश्वर की तरह सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है, तो यह उसकी गुस्ताखी होगी। तो हमें गलतियां करने वाले कामरेड के प्रति कौन सा रवैया अपनाना चाहिए ? हमें विश्लेषण करना चाहिए और द्वन्द्ववादी तरीका अपनाना चाहिए न कि अधिभौतिकवादी तरीका अपनाना चाहिए। हमारी पार्टी किसी समय अधिभौतिकवाद की, कठमुल्लावाद की दलदल में फंसी हुई थी, तथा जो व्यक्ति उसे पसन्द नहीं होता था उसे पूरी तरह नष्ट कर दिया जाता था। बाद में, हमने कठमुल्लावाद का खण्डन किया और कदम-ब-कदम थोड़ा-बहुत द्वन्द्ववाद सीख लिया। विपरीत तत्वों की एकता द्वन्द्ववाद की एक बुनियादी धारणा है। इस धारणा के अनुसार हमें गलतियां करने वाले कामरेड के साथ आखिर कैसा बरताव करना चाहिए ? पहले, हमें उसे गलत विचारों से पूरी तरह मुक्त कराने के लिए संघर्ष चलाना चाहिए। दूसरे, हमें उसकी

कम्युनिस्ट पार्टियों और मजदूर पार्टियों के प्रतिनिधियों की मास्को मीटिंग में दिए गए भाषण के कुछ अंश।

सहायता करनी चाहिए। पहला मुद्दा है संघर्ष करना और दूसरा मुद्दा है सहायता करना। हमें गलतियों को दुरुस्त करने में उसकी सहायता करने की अच्छी नियत से प्रस्थान करना चाहिए, ताकि उसे अपने को सुधारने का मौका मिल सके।

लेकिन दूसरे किस्म के व्यक्तियों के साथ हमारा बरताव भिन्न प्रकार का होता है। त्रात्स्की जैसे और चीन के छन तू-श्यू, चाङ क्वो-थाओ व काओ काङ जैसे व्यक्तियों के प्रति सहायता करने का रवैया अपनाना असम्भव था, क्योंकि वे लाइलाज हो चुके थे। हिटलर, च्याङ काई-शेक और जार भी ऐसे ही लाइलाज व्यक्ति थे और उन्हें धराशायी करना जरूरी था, क्योंकि हम और वे एक दूसरे का पूर्ण बहिष्कार करते थे। इस मायने में, उनके स्वरूप का सिर्फ एक ही पहलू है, दो नहीं। अन्ततोगत्वा, यह बात साम्राज्यवादी व्यवस्था और पूंजीवादी व्यवस्था के लिए भी सच साबित होती है, जिनका स्थान अन्त में अनिवार्य रूप से समाजवादी व्यवस्था ले लेगी। उसी तरह यह बात विचारधारा के क्षेत्र में भी लागू होती है, आदर्शवाद का स्थान भौतिकवाद ले लेगा और ईश्वरवाद का स्थान निरीश्वरवाद। यहां हम रणनीतिक उद्देश्य की बात कह रहे हैं। लेकिन कार्यनीतिक मंजिलों की बात अलग है, जिनके दौरान समझौते किए जा सकते हैं। क्या हमने कोरिया में 38वीं अक्षांश रेखा पर अमरीकियों के साथ समझौता नहीं किया था ? क्या वियतनाम में फ्रांसीसियों के साथ समझौता नहीं किया गया था ?

प्रत्येक कार्यनीतिक मंजिल में यह जरूरी है कि हम संघर्ष चलाने में निपुण होने के साथ-साथ समझौता करने में भी निपुण हों। अब हम कामरेडों के बीच के सम्बन्धों पर लौट आएं। मेरा सुझाव है कि जिन कामरेडों में गलतफहमी है, उनके बीच वार्ता का आयोजन किया जाए। मालूम होता है कि कुछ व्यक्ति यह सोचते हैं कि जो लोग कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो जाते हैं वे सब महात्मा बन जाते हैं, उनमें न तो मतभेद रह जाता है और न गलतफहमियां, तथा कम्युनिस्ट पार्टी का विश्लेषण नहीं किया जा सकता, यानी उसमें अखण्डता और एकरूपता मौजूद है, इसलिए वार्ता की आवश्यकता ही नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि जो लोग पार्टी में शामिल होते हैं उन्हें सौ फीसदी मार्क्सवादी हो जाना चाहिए। वास्तव में मार्क्सवादी नाना प्रकार के होते हैं, उनमें 100 फीसदी मार्क्सवादी भी होते हैं तथा 90 फीसदी, 80 फीसदी, 70 फीसदी, 60 फीसदी या 50 फीसदी मार्क्सवादी भी होते हैं, और कुछ लोग तो सिर्फ 10 फीसदी या 20 फीसदी ही मार्क्सवादी होते हैं। क्या हममें से दो या कुछ ज्यादा व्यक्ति एक छोटे से कमरे में वार्ता नहीं कर सकते ? क्या हम एकता की इच्छा से प्रस्थान करके एक दूसरे की सहायता करने की भावना से वार्ता नहीं कर सकते ? निस्सन्देह, यहां मैं कम्युनिस्ट पार्टों के बीच होने वाली वार्ता की चर्चा कर रहा हूं, न कि साम्राज्यवादियों के साथ (यद्यपि हम उनके साथ भी वार्ता करते हैं)। मैं एक उदाहरण देता हूं। क्या इस समय हमारे बारह देशों के बीच वार्ता नहीं हो रही ? क्या साठ से अधिक पार्टियों के बीच भी वार्ता नहीं हो रही ? वास्तव में ये वार्ताएं अवश्य हो रही हैं। दूसरे शब्दों में, मार्क्सवाद-लेनिनवाद के उसूलों को क्षति पहुंचाए बिना हम दूसरों की कुछ ऐसी रायों को स्वीकार कर लेते हैं जो हमारे लिए स्वीकार करने योग्य हैं, और अपनी कुछ ऐसी रायों का परित्याग कर देते हैं जो हमारे लिए परित्याग करने योग्य हैं। इस प्रकार हम गलतियां करने वाले कामरेडों के साथ अपने दो हाथों से दो अलग-अलग किस्म का बरताव करते हैं। एक हाथ से उनके खिलाफ संघर्ष करते हैं और

दूसरे हाथ से उनके साथ एकता कायम करते हैं। संघर्ष का उद्देश्य है मार्क्सवाद के उसूलों पर कायम रहना, जो उसूलों पर डटे रहना भी कहलाता है; यह एक हाथ से किया जाने वाला बरताव है। दूसरे हाथ से हम उनके साथ एकता कायम करते हैं। एकता का उद्देश्य है उन्हें सुधरने का मौका देना, उनके साथ सुलह-समझौते करना, और इसी को हम लचीलापन कहते हैं। उसूल और लचीलपन का एकीकरण एक मार्क्सवादी-लेनिनवादी उसूल है, और यह विपरीत तत्त्वों की एकता है।

हर प्रकार का विश्व, निस्सन्देह विशेष रूप से वर्ग-समाज, अन्तरविरोधों से परिपूर्ण होता है। कुछ लोग कहते हैं कि अन्तरविरोध समाजवादी समाज में भी "ढूंढ़े" जा सकते हैं, लेकिन मैं समझता हूं कि समस्या को इस तरह पेश करना उचित नहीं है। मुद्दा यह नहीं कि अन्तरविरोधों को ढूंढ़ा जा सकता है अथवा नहीं, बल्कि यह है कि समाजवादी समाज अन्तरविरोधों से परिपूर्ण है। ऐसा कोई भी स्थान नहीं जहां अन्तरविरोधों का अस्तित्व न हो, ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं जिसका विश्लेषण न किया जा सकता हो। यह सोचना कि उसका विश्लेषण नहीं किया जा सकता एक अधिभौतिकवादी विचार है। जरा गौर कीजिए, एक परमाणु में भी विपरीत तत्त्वों की एकता का समुच्चय मौजूद होता है। उसमें नाभिकेन्द्र और इलेक्ट्रॉन इन दो विपरीत तत्त्वों की एकता मौजूद है। एक नाभिकेन्द्र में भी प्रोटोन और न्यूट्रॉन इन दो विपरीत तत्त्वों की एकता मौजूद है। जहां तक प्रोटोनों का सवाल है, उनमें भी प्रोटोन और ऐन्टीप्रोटोन मौजूद हैं, तथा इसी तरह न्यूट्रॉनों में भी न्यूट्रॉन और ऐन्टीन्यूट्रॉन मौजूद हैं। संक्षेप में, हर जगह विपरीत तत्त्वों की एकता मौजूद है। विपरीत तत्त्वों की एकता की धारणा का, द्वन्द्ववाद का, व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार किया जाना जरूरी है। मेरी राय है कि द्वन्द्ववाद को दार्शनिकों के छोटे दायरे से बाहर निकालकर व्यापक जन-समुदाय के बीच ले जाना चाहिए। मेरा सुझाव है कि विभिन्न पार्टियों के राजनीतिक ब्यूरोओं की मीटिंगों, उनकी केन्द्रीय कमेटियों के पूर्ण अधिवेशनों तथा उनकी सभी स्तरों की पार्टी-कमेटियों की मीटिंगों में इस सवाल पर विचार-विमर्श किया जाना चाहिए। वास्तव में हमारी पार्टी-शाखाओं के सचिवगण द्वन्द्ववाद को समझते हैं, क्योंकि जब वे पार्टी-शाखा की मीटिंगों के लिए रिपोर्ट तैयार करते हैं, तो अक्सर अपनी नोटबुक में दो मुद्दे जरूर लिख लेते हैं : पहला, उपलब्धियां और दूसरा, खामियां। एक का दो में विभाजित होना – यह एक सार्वभौमिक परिघटना है, और यही द्वन्द्ववाद है।

तमाम प्रतिक्रियावादी कागजी बाघ हैं

18 नवम्बर 1957

जब च्याङ काई-शेक ने 1946 में हमारे खिलाफ आक्रमणात्मक कार्यवाही शुरू की, तो हमारे बहुत से साथियों और सारे देश की जनता को इस बात की बहुत चिन्ता थी कि क्या हम युद्ध में विजय प्राप्त कर सकेंगे अथवा नहीं। मुझे खुद भी इस बात की चिन्ता थी। लेकिन हमें एक बात का विश्वास था। उस समय एन्ना लुईस स्ट्रौंग नामक अमरीकी पत्रकार येनान आईं। एक इण्टरव्यू में मैंने उनसे बहुत से सवालों के बारे में बातचीत की, जिनमें च्याङ काई-शेक हिटलर, जापान, अमरीका और परमाणु बम वगैरह भी शामिल थे। मैंने कहा था कि तमाम प्रतिक्रियावादी, जिन्हें शक्तिशाली समझा जाता है, महज कागजी बाघ हैं। इसका कारण यह है कि वे जनता से अलग-थलग रहते हैं। जरा सोचिए तो, क्या हिटलर कागजी बाघ नहीं था ? क्या हिटलर का तख्ता पलट नहीं दिया गया था ? मैंने यह भी कहा था कि रूस का जार एक कागजी बाघ था, चीनी सम्राट एक कागजी बाघ था, जापानी साम्राज्यवाद एक कागजी बाघ था। आप जानते ही हैं, उन सबका पतन हो चुका है। अमरीकी साम्राज्यवाद का अभी तक पतन नहीं हुआ और उसके पास परमाणु बम मौजूद है। मैं समझता हूं कि वह भी एक कागजी बाघ है और उसका भी पतन होकर रहेगा। च्याङ काई-शेक बहुत शक्तिशाली था, क्योंकि उसके पास चालीस लाख से ज्यादा सैनिकों वाली एक नियमित सेना थी। उस समय हम येनान में थे। येनान की आबादी कितनी थी ? सात हजार। हमारे पास कितने सैनिक थे ? हमारे पास नौ लाख छापामार सैनिक थे और वे सब च्याङ काई-शेक द्वारा दर्जनों आधार-क्षेत्रों में विभाजित किए जा चुके थे। लेकिन फिर भी हमने कहा था कि च्याङ काई-शेक महज एक कागजी बाघ ही है और हम उसे अवश्य पराजित कर देंगे। काफी लम्बी अवधि के अनुभव के आधार पर हमने दुश्मन के खिलाफ संघर्ष के लिए इस धारणा की स्थापना की है : हमें रणनीति की दृष्टि से अपने सभी दुश्मनों को नाचीज समझना चाहिए, लेकिन कार्यनीति की दृष्टि से उनका पूरा-पूरा ब्यौरा नजर में रखना चाहिए। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि हमें समग्र रूप से तो दुश्मन को अवश्य नाचीज समझना चाहिए, लेकिन हर ठोस सवाल पर विचार करते समय उसका पूरा-पूरा ब्यौरा अवश्य नजर में रखना चाहिए। अगर हम समग्र रूप से दुश्मन को नाचीज नहीं समझेंगे, तो अवसरवादी गलतियां कर बैठेंगे। मार्क्स और एंगेल्स सिर्फ दो व्यक्ति थे। फिर भी उन्होंने अपने ही समय में कह दिया था कि पूंजीवाद का तख्ता

कम्युनिस्ट पार्टियों और मजदूर पार्टियों के प्रतिनिधियों की मास्को मीटिंग में दिए गए भाषण के कुछ अंश।

सारी दुनिया में पलट दिया जाएगा। लेकिन ठोस समस्याओं पर और एक-एक दुश्मन से सम्बन्धित समस्याओं पर विचार करते समय अगर हम दुश्मन का पूरा-पूरा ब्यौरा नजर में नहीं रखेंगे, तो दुस्साहसवाद की गलतियां कर बैठेंगे। लड़ाइयां सिर्फ एक-एक करके ही लड़ी जा सकती हैं और दुश्मन को सिर्फ अंश-अंश करके ही नेस्तनाबूद किया जा सकता है। कारखाने सिर्फ एक-एक करके ही बनाए जा सकते हैं। किसान जमीन को सिर्फ एक-एक खेत करके ही जोत सकते हैं। यही बात भोजन करते समय भी लागू होती है। अगर रणनीति की दृष्टि से विचार किया जाए, तो हम भोजन करने को नाचीज समझते हैं – हम भोजन को निश्चित रूप से खत्म कर सकते हैं। लेकिन जब हम सचमुच भोजन करने लगते हैं, तो सिर्फ एक एक कौर ही खाते हैं। एक ही निवाले में पूरी दावत निगल जाना असम्भव है। यह तरीका एक-एक करके हल करने का तरीका कहलाता है। फौजी साहित्य में यह दुश्मन की सैन्य-शक्तियों को एक-एक करके तहस-नहस करने का तरीका कहलाता है।